

॥ विज्ञापनम् ॥



इस स्थानादि स्थानतः संचार में स्थानादि काल से वारंवार जन्म मरण करते करते जीव यावर योनि में रहा, किसी एक अशुचि कर्मकी लघुता से जैसे पहाड़ी नदी में पत्थर गूँदते गूँदते आपस चिक्कना और गोल हो जाता है, तैस जीव भी जन्म मरण करते करते पुण्यप्रकृतिरूप यथाप्रयत्नि नाम करण से यावरपणे को ठीक त्रसपने वरिन्दित्रयादिक में उपजता है, अथवा पञ्चाद्रपतियंचयोनि में, फेर किसी एक कर्मकी लघुता से मनुष्ययोनि में पैदा हाता है, उसमें भी शक यवन स्वेच्छ देवको ठीक आर्य मगधादि जो साठे पचीस देव हैं उनमें जन्म होना-आर्यदेव में जन्म होने पर भी अल्पजाति जाति को ठीक उष्ट्रमजाति और कुल में जन्म होना-उत्तम जाति और कुल पाने पर भी सध अगोपाग सुंदर प्रमाण सहित होना, शरीर के सुंदर होने पर भी दीर्घायु होना-सध अशुचिकर्म के कम होजाने और शुचिकर्म के बढजान से होते हैं, नहीं

दोहे श्यायवाला पुरुष इसलोकसंबन्धी वा परलोकसंबन्धी काम कुछ कर सकता है, इसी कारण जगदान् वीत
 रागने श्री हे अयुष्मन् (हे यन्ने श्यायवाले) गौतम ऐसा कहके श्यायको सब गुणों सथना दिखलाया है,
 और श्री अयुष्मन् क उद्युता से और शुनकर्मक उद्य से धर्मकी स्त्रि, धर्म का उपदेश करने वाला गुरु
 और उसके वचन का सुनना मिलजाने पर श्री देव गुरु धर्म रूप तत्त्व पर सच्ची प्रज्ञा होना यज्ञत दुर्लभ
 है, जिनोक्त तत्त्व पर सच्ची प्रज्ञा होना यही सम्पत्त है, और सब तो मियाहृष्टियों की श्री होता है, यह
 सब अयुष्मन् क काम हाजाने और शुनकर्म बढने से जीय को मिलते हैं, इस हेतु अयुष्मन् क काम का द्य और
 शुनकर्म क बढने से यज्ञ करना अयुष्मन् है, अयुष्मन् क काम द्य और शुन को बढाने के लिये धर्म के नया
 य और कोइ भी यज्ञ नहीं है, इस हेत धर्म करो २ धर्म ही का सेवन करो, जैसा क घरके कार्य निरु
 करने में अनेक तरह से परिश्रम करत हा कुछ काल धर्म के वास्ते श्री परिश्रम करते रहो, कारण के धर्म
 धर्म सेवन करने वाल पुरुष) की इद्र आदि देवता श्री केवल प्रज्ञा, अनुमोदना और नत्तिक करके अय
 ना जन्म सफल करत हैं, इतनी श्रद्धि पाके श्री उन को धर्म का सेवन करना दुर्लभ है और श्री धर्म को
 प्रिनुवन की लक्ष्मी, कल्पवृक्ष, चितामणि और कामधेनु आपसे दास हो मिलते हैं, ता पुत्र मित्र कलत्र
 घर सवारी और राज्य मिलजाना क्या बली चीज है २ धर्म सेवन करने वाले का दो बली का जीना श्री
 सफल और कार्यकारक है, परन्तु धर्महीन (अर्थोत्पेय, अर्थ, कृत्य, अकृत्य, गम्य, अगम्य, नदय

और स्वयं इत्यादि विचार रहित) का झोटा कोटि धर्म जीना ही निष्फल और व्यक्तिचिस्कर है, पशुधन
 अपना आयु पूर्ण कर भरता है, इन्द्रिय का निग्रह कराने वाला, सकल कल्याण और सुगति का कारण,
 जगत्सागर तरन के लिये नौका रूप तीर्थंकरों का कहा हुआ धर्म ही है और धर्म का भूत दया "वि
 ना मतलब परायें दुख को दूर करने की इच्छा" है दया से धर्म की प्राप्ति और धर्म से जीव मुक्त होते हैं,
 इसलिए दया सर्वोत्कृष्ट पदार्थ है। जैनदर्शन में दया के स्वरूप "स्वदया परदया द्रव्यदया ज्ञाघदया नि
 श्रयदया व्यग्रहारदया स्वरूपदया अनुयधदया," भेद विस्तार से वर्णन किये हैं सर्वदर्शनी दया का उपयोग
 रखते हैं परन्तु सदा जो दया का उपयोग तो जैनदर्शन ही में स्वीकार है इसवास्ते जैनमत श्रेष्ठ ही कहाता
 है, वयाकें सर्वांग उपयोग होनेकी रीति यही है कि जैसे जीवन के वास्ते कोई एक पक्षान्त बनाया जाय
 तो घृत पिष्ट घीनी इत्यादि सामग्री अवश्य उपेक्षित होती है सामग्री होनेपर ही यथाविधि यथार्थ ए
 कदा होने से तथाविध स्यादिष्ट पक्षान्त तयार होता है परन्तु हीनाधिक वस्तु होजाने से कदापि विसा
 पक्षान्त नहीं होता तै न ही यथाविधि दया पालीजाय तो तथाविध धर्मोपलब्धि होय, यद्यपि सर्वदर्शनी
 में दयाका मान है परन्तु उसके स्वरूप में फेरफार कर देने से गतप्राय (स्यार्थात् व्यक्तिचिस्कर दया) है, जब
 के उनका स्वरूप ही या खानुनार अथार्थ नहीं जानमस्के हैं तो पालन करना कैसे हो सके, फेरफार श्रिया के
 कोई कहते हैं पशुप्राणघात स्यार्थात् पशुजन्म से लोछाना दया है, कोई जिस शरीर को धारण करके जीय

सुखी न होय प्रत्युत दुःखित होय व्याधिग्रस्तादि दीप युक्त होय तो ऐसे प्राणीको तादृश शरीर से मुक्तकर दाना भी दिया ही है, कोई सूक्ष्म अथवा स्थूल प्राणी जो मनुष्यको दुःख दत्त हैं उनका नाश करना दिया है, कोई बलि यागादिक में प्राणिघटने से भी पुण्य मानत हैं और कोई स्थूल प्राणिरक्षामात्र को दिया कहत हैं, इस तरह दिया का उपयोग अन्यदर्शनी रखते हैं लेकिन यह भ्रम है, और एकरीत से—आचारधर्म दिया धर्म क्रियाधर्म और वस्तुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारो धर्मों के दान शील तप और ज्ञाव चार कारण हैं, जय घनयल होय तो दान होय, मनयल होय तो शील पाळा जाय, शरीरयल होय तो तप होय, और सम्यग्ज्ञान होय तो ज्ञाव होय, यह ज्ञावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के ज्ञावधर्म का कारण ज्ञानयल है “जिस्से वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उसको ज्ञान कहत है”, ज्ञानसे जैसी आत्मधर्म की वृद्धि और सरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नहीं, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमाण, चारों अनुयोग का विचार, समनगी, पुरुषार्थविचार, आदिक सर्व ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त होत है। दशवैकालिक में लिखा है के—ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्षेपारूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी दासी है, और मरुदेवी तथा अरत महाराज वैसी अवस्थामे भी रहके जो कर्म विमुक्त जाए यह ज्ञानहीका माहात्म्य है, ज्ञानकी जो तीक्ष्णता सोही अवधारित्र है, जो निष्काचित कर्म कोटियर्पपर्यंत दानादि कर नसे भी नष्ट नहीं होता वह ज्ञानी के एक स्वासोत्स्वास में नष्ट होशक्ता है इसीलिये ज्ञानीगुरु को रक्षाकर

और क्रियागुरु को पीपल के पान शैसा कहा है, ज्ञान विना सम्यक्त अहिंसा और सिद्धान्तोक्त समस्तक्रिया का मूल अष्टा नहीं होते यह कारण ज्ञानोपार्जन के लिए अथर्वय यज्ञ करना चाहिए ज्ञानके पाद्य अन्न-म ति श्रुत अथर्वधिन मनपर्यय और केवल हैं परन्तु श्रुतज्ञान सधरे अथर्वोपयोगी है क्यों कि यह पदार्थमात्र लौकालोक स्वमत परमत का प्रकाशक अज्ञानोत्तमिर को दूर करने के वास्ते सूर्य और दुस्समकालरूप रात्री में दीप सदुश है, उद्देश्य समुद्देश्य अज्ञा इत्यादि व्यवहार का लाभ भी श्रुतज्ञान सेही होता है इस श्रुतज्ञान के सुनने से शुद्ध स्वरूप विशुद्ध अष्टान को प्राप्ति होती है इससे शुद्धात्माका आवरण असेवन अनुभवन होता है और इत्से परमपदप्राप्ति होती है, यही श्रुतज्ञान से पूर्वक ल में श्रीगीतमादिक केवली हो ससार से मुक्त हुए यत्तमान में महाविदेहक्षेत्र से विरहमान जिनेंद्रा से सुनके जीय मुक्त होते हैं, आगामिकालमें पद्मनाभ आदि तीर्थंकरोंसे सुन अनेक जीय मुक्त होंगे, इस श्रुतज्ञान की वाचना पृच्छना परायर्हना अनु प्रेता और धर्मकथा होती है, श्रीउवाई सुत्रमें धर्मकथा चार प्रकार की कही है-आक्षेपिणी विक्षेपिणी निर्देदिनी और सयदिनी, जिसे तत्यमार्ग से प्रवृत्ति होय उसको आक्षेपिणी, जिसे मिथ्यात्व की निवृत्ति होय उसको विक्षेपिणी, जिसे मोक्ष की अभिलाषा होय उसका निर्वेदिनी, जिसे वैराग्य की भावना होय उसको सवेदिनी कहते हैं यह श्रुतज्ञान रूप कथा श्री अरिहन्त देवाधिदेय तीर्थकर परमेश्वर समवसरणमें बैठ "उपन्नीइवा विगमेइवा धुवेइवा", त्रिपदी उच्चारण पूर्वक करते हैं और त्रिपदी से ही गणधर द्वादशाग

सुखी न होय प्रत्युत दुःखित होय व्याधिग्रस्तादि दीप युक्त होय तो ऐसे प्राणीको तादृज शरीर से मुक्तकर दाना भी दिया ही है, कोई सूक्ष्म अथवा स्थूल प्राणी जो मनुष्यको दुःख दत्त हैं उनका नाश करना दिया है, कोई बलि यागादिक में प्राणियधकरने से भी पुण्य मानत हैं और कोई स्थूल प्राणिरक्षामात्र को दिया कहत हैं, इस तरह दिया का उपयोग अन्यदर्शनी रखते हैं लेकिन यह ज्ञम है, और एकरीत से—आचारधर्म दिया धर्म क्रियाधर्म और वस्तुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारों धर्मों के दान शील तप और दानाचार कारण हैं, जब धनग्रह होय तो दान होय, मनबल होय तो शील पाला जाय, शरीरबल होय तो तप होय, और सम्यग्ज्ञान होय तो दान होय, यह त्रावधर्म दान शील तप से श्रष्ट है किस्वास्ते के त्रावधर्म का कारण ज्ञानग्रह है “जिसे वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उसको ज्ञान कहते हैं”, ज्ञानसे जैसी आत्मधर्म की वृद्धि और सरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नहीं, क्योंकि नय, निदोष, प्रमाण, चारों अनयाग का विचार, सप्तजगी, पञ्चद्रव्यविचार, आदिक सर्व ज्ञानहीसे जीयको परिपूर्ण प्राप्त होत हैं। द्वात्रैकालिक में लिखा है के—ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्लेशरूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी दासी है, और मरुदेवी तथा भरत महाराज वैसी अवस्थामे भी रहके जो कर्म विमुक्त जाए यह ज्ञानहीका माहात्म्य है, ज्ञानकी जो तीक्ष्णता सोढी अवधयारित्रि है, जो निकाचित कर्म कोटियर्पपर्यंत दानादि कर नसे भी नष्ट नहीं होता यह ज्ञानी के एक स्वासोत्स्थास में नष्ट होजाक्ता है इसीलिए ज्ञानीगुरु को रत्नाकर

भूमिका।

—०—

परावर्णा, इसकी प्रकृति प्रज्ञापना है, प्राकृत शब्द ससृजत शब्दको आदेश निर्वेज करने से सिद्ध होता है। प्रज्ञापना शब्द का समुदायाय यह है कि (प्र) प्रकरणसे (ज्ञा) जानिये (प) पदार्थ जिसे सो प्रज्ञापना अर्थात्—समस्त दर्शनी जिसरीति से पदार्थ का निरूपण नहीं करसके केवल तीर्थकर ही यथावस्थित स्वरूप से पदार्थ निरूपण करसके हैं तो, यथावस्थितस्वरूप निरूपण करके शिष्योंकी बुद्धि में आरोपण कियाजाय जीवाजीय आदिक पदार्थ जिसे यह प्रज्ञापना कहाती है। यद्यपि अन्यदर्शनी भी जीवाजीवादि पदार्थोंको त्रिष्य की बुद्धि में आरोपण करते हैं परन्तु यथार्थ स्वरूप “जैसा २ जिस २ पदार्थ का स्वरूप है वैसाही ठीक ठीक स्वरूप”, निरूपण तीर्थकर सर्वज्ञ ही करसके हैं अन्यका सामर्थ्य नहीं और वह पदार्थ का यथावस्थित स्वरूप इस ग्रन्थ के द्वारा शिष्यों की बुद्धि के गोचर होता है इससे इस का प्रज्ञापना यह नाम सार्थक है।

समयायाङ्ग में कहे जाए पदार्थों का निरूपण इसमें है इससे समयायाङ्ग चतुर्थ अङ्ग का उपाङ्ग है ॥
कहे का फिरसे कहना निरर्थक है औसा नहीं, ध्यो कि कहे पदार्थों को भी फिरसे विस्तार पूर्वक कहना

की रचना करते हैं (उस्को सूत्र कहते हैं) इस कालमें जितने सूत्र है सब श्रुतज्ञान के भेद हैं यह श्रुतज्ञान सर्वोपकारी है इसलिये इसकी दृष्टि और सरक्षण के हेतु अथत्रय यत्न करना चाहिये वर्तमान कालमें जितने ज्ञानवृद्धि के उपाय हैं सब से उत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कारण पुस्तक सुलभता ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अस्ति सुगम रीति को स्वीकार करना जो के पूर्वाचार्योंने बड़े परिश्रम से परोपकार के हेतु मध्य बनाये हैं छपत्राके प्रसिद्ध करना हर एक विद्वानोंको दाना इससे अधिक और कोई श्रेष्ठ कार्य नहीं है, यही सब कारण शीघ्र श्रीमुर्चिदायाद त्रिवासी श्रीराय घनपतिसिंह धन्नादुर ने १५ आगम छपत्राके हर एक जगें भंडार स्थापन किये हैं आप लोग भी यथाशक्ति इसके करने को प्रवृत्त होय के जिस्से पुनर्जैनमत सुशायवस्था को प्राप्त होय इति शम् ॥

॥

॥

॥

धनारस जैनप्रभाकर

नानक चन्द्र यती

का परिश्रम भी व्यर्थ है बिनाप्रयोजन मूर्ख भी किसी कार्य में प्रयत्न नहीं होता तो तीर्थंकर कैसे प्रवृत्त हुए कोइ प्रयोजन इनकी भी कहना चाहिये जैसा न कही, कारण के अर्थरूप से कहने का परिश्रम तीर्थंकर नामकर्म के विपाक का उदय से होता है “कहा है के-तीर्थंकरनामकर्म अगलान धर्मद्वाना के देने ही से भोगजाता है”, अर्थात्-तीर्थंकरनामकर्म आधीनता से धर्मद्वानाव्यापार होता है उसकर्म का यह भोगही है ॥

कोइ प्रयोजन अम्मदादिवत् उनको नहीं है ।

श्रोता का अनन्तर प्रयोजन जो अध्ययन कहा जायगा उसके अर्थ का ज्ञान है और परम्परप्रयोजन मोक्षप्राप्ति है, श्रोता विद्यद्वित अध्ययन को अर्थ से अच्छीतरह सुनकर सत्तार से विरक्त होते हैं, विरक्त होकर सत्तार से निकलने की इच्छा से समयमार्ग में यथागम प्रवृत्त होते हैं, यथागम समय मार्ग में प्रवृत्त होने से समय का प्ररूप होता है उससे सकल कर्मद्वय और उत्सं मोक्षप्राप्ति होती है, लिखा है के-सम्यक् पदार्थ ज्ञान से जीव विरक्त होते हैं, विरक्त हो क्रिया में आशक्त और क्रिया में आशक्त होने से परमगति की पञ्चवर्ते हैं ॥ इस ग्रन्थ में अजिधेय जीव अजीव पदार्थ का स्वरूप है ।

सम्यग्ध दो प्रकार हैं उपायोपेय चायलक्षण दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण, तथा पहिला नैयायिक के-जैसे कि यचनरूपापन्त प्रकरण उपाय और उस प्रकरण का परिज्ञान उपेय है । दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण केवल अद्वानुसारि के-जैसा के सुप्रकार आगे कहेंगे, जानना चाहिये ॥

मन्दबुद्धि वाले शिष्य लोगो के अनुग्रह के लिये होता है इससे सार्थक है निरर्थक नहीं ।

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग भी सद्य जीय अजीय आदिक पदार्थों के ज्ञातन (कहने) से ज्ञात है और ज्ञात की आदि में बुद्धिमान् पुरुषों की प्रवृत्ति के लिये प्रयोजन आदि तीन और मङ्गल अवश्य कहना चाहिये नहीं तो बुद्ध्या कटकजाखामर्दन की तरह कोई भी इसमें प्रवृत्त न होगा ॥

इहा प्रयोजन दो प्रकार है, एक पर और दूसरा अपर है, पर भी दो प्रकार और अपर भी कर्त्तागत प्रो तागत होने से दो प्रकार है, तथा व्रथास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम नित्य है और आगम के नित्य होजाने से कर्त्ता का अभाव ही है “जैसा के कहा है—यह द्वादशांगी कथी नहीं यी कथी है कथी न हागी ऐसा नहीं (किन्तु) ध्रुव है नित्य है शास्त्री है” ॥

पर्यायास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम अनित्य है अनित्य का सद्भाव अवश्य होगा, तत्त्वद्रष्टिसे देखिये तो आगम सत्र और अर्थ उभयरूप है इसलिये अथ की अपेक्षा से नित्य और सत्र की अपेक्षा से अनित्य होने से कर्त्ता का अवश्य सद्भाव है ॥

ग्रन्थकर्त्ता का अनन्तर प्रयोजन सत्त्वानुग्रह और परम्पर प्रयोजन अपवर्गप्राप्ति है “कहा है—के जो दुखी जीवों को सर्वज्ञ के कहे उपदेश का उपदेश देके कृपा करते हैं वो योसेही काल में मुक्त हो जाते हैं” अर्थ से कहनेवाले श्रिरिहन्त की क्या प्रयोजन है क्यों के यह तो कृतकृत्य हैं और प्रयोजन बिना अर्थरूप से कहने

॥ विज्ञापनम् ॥



स्वाद्यौदूमकमोवज-पुच्छयक्षाः श्रीगौरदासाक्षिचकारुमुक्षुधासिद्धकान्तैतयथासूनुत्तटीयोदको । अथातःश्रीसप्तमापसिद्धविजयी प्राप्योत्तरीयासुवी
 तस्यश्रीमहतावनामविदिताकुक्कुक्षदीपावज्जन् ॥ १ ॥ उद्यारकोर्त्तैरुदारचमदृढधी लेखीपते संहर श्रीमद्वायव्यहावुरोचनपतिः सिद्धोगुहयामबी ।
 श्रीजैताममसदृहचमकरोल्लोकोपकल्पैचिरम् टीकाकांतिकसंपुष्टकुक्षिपतिः संमुद्रोपत्ताद्युजम् ॥ २ ॥ अत्वापव्यस्यतस्यसुबुधमुसस्तावत्यहोपुत्तका ग
 रास्येपुच्छपुस्तकानिसुबलान्वत्यापवसादरम् । कुवत्स्वागमपाठमन्वपठनं सत्वापवःसावकाः त्वरयेद्रीमिमद्यासनस्यस्युमविज्ञाभभसर्गये ॥ ३ ॥
 ज्ञायःपञ्चवक्ष्यतस्यगुहकः प्रज्ञापनास्म्योबुभा नामाचुक्कपाठजेदवपुलोलेखममादादपि । दुर्वाप्य-सुनुवृत्तिवागतकपूतपाठस्यथामाखनं श्रीमत्पूखित
 रामचन्द्रगदिद्विघातन्यपुष्यामया ॥ ४ ॥ सद्योप्यातिपरिभ्रमेकनितरां यावदरेमुद्रते स्यात्तथापिचबिम्बिरीसुखगतोन्मादादङ्गुदपदि । आम्बरा
 द्योप्यमुदात्तुद्विविमवैविधैः कृपादृष्टयो मिष्यानुष्ठतमकुनवववसावम्प्रायेये खल्लमान् ॥ ५ ॥



वभारस

जैमप्रभाकर

जामकवम् यती

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग सम्यग्ज्ञान का कारण है, इसी हेतु परपरा से मुक्तिपद को देनेवाला है, इसीसे स्वयं श्रेयो वृत्त है सोनी विघ्न की शान्ति के लिये आदि मध्य और अन्त में मगल कहा जाता है ॥ ग्रन्थ की आदि में मङ्गल निर्बिघ्न शास्त्रपरिसमाप्ति के लिये है, मध्यमगल अथगृहीतशास्त्र की स्थितिके लिये है, और अन्तमगल शिष्य प्रतिषेधों के शास्त्र अव्यवच्छेद हो इसलिये है ॥

तृतीय पदात्मक यह प्रज्ञापना सूत्र है इसमें जीव अजीव आश्रय वन्ध सयर निर्जरा और मोक्ष का प्ररूपण किया है तथा प्रज्ञापना ब्रह्मयत्तव्यता विशेष चरमपरिणाम सङ्गक पाच पदमें जीव अजीव की प्रज्ञापना, प्रयोगपद और क्रियापदमें आश्रय (काय सचन मन कर्मगंग) की प्रज्ञापना, कर्मप्रकृतिपदमें वन्ध प्रज्ञापना, समुद्घातपद में सयर निर्जरा वन्ध और मोक्ष की प्ररूपणा, याकी स्थान आदि पदोंमें कहीं किसी कीसी प्रज्ञापना की है, ॥

अथवा इसमें द्रव्य क्षेत्र काल और भाव की प्रज्ञापना है क्योंकि इन चारपदार्थों के संशय और कोई प्रज्ञापनीय पदार्थ नहीं है इसी पदार्थों के जानने से तत्त्वज्ञानरूप पञ्चमपुरुषार्थ सिद्ध होता है इस कारण इसके पठन पढ़ाने में अवश्य यत्न करना चाहिये, परन्तु पठने का आग्रह उस्को है जोके मोक्षमार्ग का अन्तिम लापी और गुरुका आज्ञाकारी हो, और इसके देने का अवसर भी यही है। इतिश्राम् ॥

यनारस जैनप्रभाकर प्रेस नानकचत यती ।

धीमस्मिन्नवरप्रसादसन्धयसद्गुप्तिप्रकाशितवर्तमानु श्री ५ रायपन
पतिसिंहबहादुरपु सविनयमावेदनम् ।

आगे मैंने सुनाई आप की ऐसी इच्छा है कि पैतासियों जैनागम
की पुस्तकें मूल टीका और व्यापटीका सहित पांच २ सौ कापी छपें
और साठ भावकों के पठन पाठन के लिये पाँचसौ स्वामयें पुस्तकास
य स्थापित हों तो यह अति आनंदकी बात है परंतु जिन महाशयों
को इस ऐसे पुस्तक सनें की इच्छा हो उनसे लोगों के निमित्त श्री यदि
आप की साहाय्यी तो बेचने के वास्ते पाँचसौ कापी जैनयुक्तसुसाहटी
की ओरसे श्री आपका ही नाम है यह पुस्तकें मैं अभीमर्षन से प्रकाश

कर्तृता अये मुद्रम्, सम्बद् । १८९३ । मि० । क्र० । ११

५० जैन मुक्त सुसाहटी

ग्रहर मुरसीदाबाद

आयेसम्पादक

अभीमर्षन

सुबद्धि सेठ

श्रीविधिविधिविद्याविचारतत्परपु जैनयुक्तसुसाहटी कायसम्पादक
महाशयेपु प्रतिनिवेदनम् ।

जोकि यह आपका दृष्ट्य देखे खरीदनवाले लोगों के लिये सुसाहटी
की ओरसे पैतासियों जैनागम की पाँचसौ पुस्तकें आपका नाम की
आशा के विषय मैं आपा को मैं स्त्रीकार करता हूँ कि आप जैनयुक्त
सुसाहटी की तरफ से आगम की प्रत्यक्ष पांच २ सौ पुस्तकें बेचने से
वास्तव आपका सौं परंतु पाँचसौ से अपिक्त आपकी आशा मैं नहीं
देता, यदि और कोई आपका चाहें तो उचित है कि पहले मुद्र
स आशा सेलेवे क्योंकि इस ग्रन्थोंपर रजस्वरी हुई है, अये मुद्रम् ।

सम्बद् । १८९३ । मि० । क्र० । ५० । १३

५० रायपनपतिसिंह बहादुर

ग्रहर मुरसीदाबाद

अभीमर्षन

ना ॥ दिग्मंस निष्ठुदेवतास्तवस्य परममङ्गलत्वात् उपयोगपदगत्येन कश्चिदेवप्रते ! उवायोगे यत्नते ? इत्यादिना मध्यमङ्गल मुपयोगस्य ज्ञानरूपत्वात् ज्ञानस्य कमण्यप्रति प्रधानकारकताया मङ्गलत्वात् नच कमण्यप्रति प्रधानकारकता तस्य अग्रविद्या तस्या साक्षादामने त्रिपाना मयाबाग मः संप्रख्याबीकर्मं शुद्धइष्टयुगादिंवासकोप्रीतिं ॥ तंनयीतिविगुतो खवेइच्छसासमितेव ॥ १ ॥ तथासमुद्भातपदगत्यन केवलिसमुद्भातपरिसमाप्त्यनारबासप्रतिविना विद्यापिप्रकारप्रतिबद्धेन निष्किलसमुद्भूता जाइअरामरखबषाविमुक्ता सासयभिद्याबाई बिठंतिसुहीसुहृपता ॥ १ ॥ इत्यादिना उपसाममङ्गल मचुना दिनङ्गलसूत्र व्याख्याते ॥ ववययइत्यादि ॥ वित वद्व मष्टप्रकार कर्मयने ज्ञातं दग्धं काष्ठस्यमानमुद्भूत्यानामलन येस्ते निहलविधिना विद्या अथवा विष्णुगतौ सेषतिस्य अपुनरायुष्या निर्वेत्तिपुरी मन्त्रान्, यदिवा विषयरादौ विचरन्ति स्म निष्ठिताथौ भवन्ति स्म यद्वा ; विष्णुशाले माङ्गल्येच सेषतेस्म प्रासितारो अत्रान् मङ्गल्यरूपता वामुप्रवर्तन्तिस्मेति विद्याः अथवा विद्या नित्याद्यपर्यवधानस्थिति जात्वात् प्रत्यातावाप्रव्यै रूपसम्पन्नबुधबोइत्वात् उक्तञ्च - ज्ञातचितयेनपुरावकन योवागतोनिर्देतिसीपमूदि स्यातोऽनुवास्तापरिमिष्टितार्थो य सोऽनुचिदुःकृतमङ्गलोमे ॥ १ ॥ विद्याय नामादिनेदतो नेकथा ततो ययोजसिद्धप्रतिपत्त्यर्थे विद्येयञ्च माइ-अपपतकरामरखमयान्, जरावयोइा मितसुखा मरकंभाबल्यानरूप मयमिह लोकादिनेदरा स्वसप्रकार मुक्तञ्च-इपरलोपादरा मकराद्याबीवमरखमविलोय ॥ इति विद्ययतोऽपुन प्रावत्यागरूपतया अयगतानि अष्टाभि जराभरखमयानि येभ्यस्ते तथा तान् त्रिविधेन ममसा वाचा कायेन अनेन योगत्रयव्यापारविकल इव्यवन्द न नित्याइ अत्रियन्य अभिमुक्तं वन्दित्वा प्रकम्येत्यथाः अनेन समानकर्तृकतया पूर्वकाले ज्ञाप्रत्ययविधानात् नित्यामित्येकान्तपक्षव्यवच्छेद

यवगयजरमरणज्ञा सिद्धेष्टत्रिविद्विजणथारिद्व तेछोक्तागुरुमहाधीर ॥ १ ॥

वारिचमुप रक्षाद्यै त्रिवि तोनयाने निवसञ्चित पीचपटने मर्म, दिवे यवगयजरमरखमय सिद्धेष्टत्रिविद्विजणथारिदे विम्वारमुप महाधोर ॥ १ ॥ जरम तोबजर मासुन वत्तमान तेहमबो मसस्कारकरीजेइ व्यपयत ययगाणै जराभरख ८ कमरूपयेरौ ते पाठकमखपावो सिद्ध

द्विनिश्चिनमिपवः सुयमाच्छन्ति यथागमं सुखं प्रवृत्तिं मातन्वते प्रवृत्तानां च सुयमप्रकार्यवत्त उपजायते सुकलकर्मणया श्रिययसावाप्तिरिति उक्तं
 च-सुयमावपरिज्ञाना द्विरक्षाप्रवतोदनाः । ज्ञियासुखाद्यविज्ञेन मच्छन्तिपरमांगतिमिति ॥ १ ॥ अत्रिषेय जीवावीवस्तु य तच्च प्राक्प्रदक्षितना
 मव्युत्पत्तिरामप्यमात्रा द्यवगत सुखं न्यो मिया उपायोपेयप्राप्तसखो गुरुपयकमस्तसख तत्राद्य स्तार्कानुसारिणः प्रति तद्यथा-वचनरूपापय प्रक
 रचमुपाय स्तत्परिज्ञानं बोधेयं गुरुपयकमस्तसखः प्रेयससद्गुणानुसारिणः प्रति तदाये स्वयमेव सूत्रक वज्रिपास्यति इत्यत्र प्रज्ञापमास्य मुपाङ्ग सम्यग्
 ज्ञानहेतुत्वा इतएव परस्परया मुक्तिपक्षमापकत्वात् श्रेयोभूत मतो मानू इत्य विज्ञ इति विज्ञविनायकोपज्ञाभावाय शिष्याणां मङ्गलसुदुपरिपहाय
 स्वतो मङ्गलभूतस्या व्यस्त्यादिमप्यावधानेषु मङ्गलमजिपातव्य भाविमङ्गल अविज्ञेन छात्रपारगमनाय मध्यमङ्गल भवयद्गीतशास्त्रस्विकरिणरुण्ये
 सन्तमङ्गलं शिष्यमश्रियपरस्परया छात्रस्या अव्यवच्छेदनाय मुक्त्य-तर्मगलभावात् नज्जेपल्लतयसत्वरस्य । पढमसत्यत्याविग्य पारगमकायनिदि
 ठ ॥ १ ॥ तत्सेवयचिज्जत्वं मच्छिमयमतिमपितरसेव कर्त्तव्यमिति निमित्तं सिद्धपसिस्साहवस्य ॥ २ ॥ तत्र प्रथमपदगतेन ॥ ववगयमरमरवज्रये त्यादि

प्रबाल्योमकाशोर नताशेपरेखरन् प्रज्ञापनाच्छूणव वच्छेदेकाकभावया ॥ १ ॥ अतिसूत्रिष्ठशोका उवाचं बामनोदरा स्वभावपरमिष्याना दि
 नाडावकपेस्यङ्गम् ॥ २ ॥ सद्गुरुविविदल्ला विमवाविमवाभिधम् अपरस्यामयोपाय श्रवकाविज्जतेमवा ॥ ३ ॥ परित्त १ पसरोर २ पावाव ३ उपा
 व्याव ४ मनि ५ वदना चादि पदरा पाचा षोकार भोपणे तित्ते पर्थुदोने नमस्काररुजिषो साक्षतापद विज्ञाते । वमापरिहृताच । परिहृतामर्षो
 नमस्कार उपा माहुरा जेगव १२ गुण सहितरत्नाः गुणे विवमहित । वमोसिवाच । विवामर्षो नमस्कार इवा गुणे ८ रत्नवर्च मखेत्रये विवसहित ।
 वमापावरिवाच । नमस्कारइया पाचावामर्षो सोत्रवच ११ गुणे गतामांदि ज्ञानकरे विविसहित । वमोदवल्कावाच । नमस्कारइवो उपाप्यावामर्षो
 भोजवने शिष्यामादि ज्ञानकर जिबरी ११ गुणेसहित । वमोदोएवल्कावाच । नमस्कारइवो सर्वगुणसहित साधुषे जिबामर्षो ज्ञामवच २० मुचस

ब्रह्म माह ननु ब्रह्मपन्नादीन् ह्युदस्य किमर्थं जगत्सो महावीरस्य वर्धन ? उच्यते जगत्मानतीर्याधिपतित्वेना सञ्जोपकारित्व दृश्यते ॥ सुपरय
 वत्यादि ॥ अत्र प्रष्टव्येति विज्ञाय ज्ञेय सामानाधिकरस्येन वैयर्थ्यपरस्म्येन विज्ञेय ॥ जिनवरवति ॥ जिना सामान्यकेवलिन स्नेयामपि वर
 उत्तम स्त्रीचरुत्वात् जिनवरस्तेन सामर्थ्यात् महावीरेण न्यस्य वर्तमानतीर्याधिपतिस्वाभावात् इह ब्रह्मस्पष्टीकृतो जनिभाषेयया सामान्यकवलि
 भोवि जिनवरा उच्यते तत सत्त्वपयाद्यासी द्विनेयजन इति तीचरुत्वाप्रतिपत्तये विज्ञापकान्तर माह जगत्ता जग समीक्ष्यार्थादिरूप उत्तर-ये
 यस्यसमपस्य रूपस्यपराधमियः ॥ पमस्याधमपस्य पक्षाजग इतीहना ॥ १ ॥ जनो स्वासीति जगत्ताम् अतिशयन यतुप्रत्ययो ऽतिशायीच जगो
 ब्रह्ममानस्त्राग्निं ज्ञेयप्रथिमवापयया प्रेक्षायाधिपतिस्वात् तन जगत्ता परमाहृत्यमहिमोयेतेने त्ययः पुनः कथजनेने त्याह-जग्यजननिवृत्तिकरे
 च मय सप्यायिपानादिपरिफासिकतावात् सिद्धिगमयोग्यः सुवासो जगय जग्यजनः, निवृत्तिनिर्वाय सकलजममसापगमनन स्वस्वरूपसाप्रतः
 परमस्थारय्य तद्वेतुः सम्यक्दक्षानाद्यपि कारवेकार्योपचारा विवृति स्तस्करजगोसो निवृत्तिकर मयजनस्य निवृत्तिकरो जग्यजननिवृत्तिकर स्तेन
 माह जग्यप्रपञ्च मज्जमय्यवच्छेदाय मन्यना तस्य वैरथ्यप्रसङ्गात् तत इह मापतितं जग्यानामव सम्यग्दर्शनादिव करोति भाजग्याना नर्षत दुप
 पर्व जगवतो धीतरागत्वेन पक्षपातासम्भवात् नैतत्सार सम्यग्धस्तुतत्वापरिष्ठानात् जगवान्नि सचितव प्रकाश मविज्ञेयैव प्रयचनाय मातभोति
 केवल मज्जयानां तथास्त्राजग्या इव तामसगुणकुलानामिव नूयप्रकाशो मप्रवचनाय उपदिबयमानोपि उपकाराय प्रजवति तथावाह वादिमुस्य-
 सदुर्मवीजवपमानयकौशलस्य यज्ञोक्त्वात्थवतवापिकितान्यब्रूवन् ॥ तकाहुतकयकुलेपुष्टितामसपु सूयाकुबोमपुकरोपरकावदाताः ॥ १ ॥ ततो जग्या

सुपरयगनिर्दणजिण वरेणजविचजणिसुइकरेण ।

वर्धमान ताम सावना गच्छे ते महाभोरत्तामो मति प्रासनाधोस प्रति ॥ १ ॥ सवरवतिज्ञाच विषवरेभविजजपनिष्कररेण । उवदसियाभगवया
 पक्षवयासवभावाच २ ॥ सिर्वातरस तेहना जिधान घरवे ते भन्वत योवीतरगे भविजजीवगे माय सुखनाह्वयार कप्पा भगवते परिहते प्रप्रा

माह एवाप्तनित्यामित्यपदे ज्ञाप्रत्ययस्या सम्ययात् तथा ह प्रचुतानुत्पन्नत्विदैकस्यजाय मित्य तस्य कथं त्रिज्ज्जाज्ञाक्रियाद्वयकृतृत्वोपपत्ति
 राक्तास मेकस्यजावत्वं नै कस्यायव कस्याचित् क्रियाया यदाजावप्रसङ्गात् अजित्य मपि प्रकृत्येकस्यकृत्यतिथिमक तत सास्यापि त्रिज्ज्जाज्ञाक्रिया
 द्वयकृतृत्वोपपत्तिरिति विस्तरेण विस्तरेण न्यत्र सुषुषितत्वात् ज्ञाप्रत्ययस्यो तदक्रिया सापेक्षत्वा युक्तरा क्रिया माह-यदाभिमित्यिवार
 दमित्यादि ॥ मूर्ध्वीरविज्ञानो धीरयतिस्स कयायादिशब्दुन् प्रति विज्ञाभतिस्मति वीरः महायावी वीरय महावीर इदञ्च महावीर इतिनाम
 नवावृष्टिः किन्तु यथावस्थित मनस्यसाधारण परीयहायसर्गोदिविषय वीरत्वमयेत्य सुरासुरकृत मुक्तञ्च-अयत्तेनयनेरवाक सतिस्ममेपरीस
 हावसमाक देवर्षि कस्य महावीरे इति अनेना पायापनमातिशयो च्यन्त तदपभ्रूत मित्याह जिमवरेन्नु वयस्ति रासादिशब्दु नमिज्जवन्ति
 जिना स्तेव वतुविषा साद्याप्य सुतजिना अवचिचिनाः भगपयोयजिना खेवमिजिना सप्त खेवसिजिनत्यप्रतिपत्तये वरयइवं जिनाना यरा उ
 त्तमा नूतमवज्ञाविजावस्त्रजावविबेवज्ञानकस्तितात्वात् जिनवरा स्तेवा तीयकरा अपि सत सामान्यकेवसिनो भवन्ति तत स्तीयङ्कृत्यप्र
 तिपत्त्यय सित्प्रप्रइवं जिनवराका मिज्जो जिनवरेन्नु प्रकटपुस्तकन्यत्रपतोयेकरनामकर्मोवया तीयकर इत्यर्थं अनेन ज्ञाभातिशय पूजातिशय
 बाह ज्ञानातिशयमन्तरं जिनपु मध्ये उत्तमत्वस्य पूजातिशयमन्तरं जिनवराकामपि मध्ये इन्द्रत्वस्या योगात् तपुनः किन्तु नित्याह-त्रैल्लो
 क्यपुं इकति यथावस्थितं प्रवचमायमिति नुरु त्रैलोक्यस्य गुरु त्रैलोक्यगुरु सायाच प्रगवाण् अत्रैल्लोकनिवासिजननपतिदेवेस्य क्षियग्लो
 कनिवासिजननरपमुविद्याधरन्मोतिष्ठन् त्रैलोक्यनिवासिदेवमजिदेवज्यस्य यम विदेय ते अनेन यागतिशय माह सतथा पायापनमातिशयादय
 यत्वारोप्यतिशया देवर्षीरग्न्यादीना मतिशयाणा मुपलब्ध तावन्तरं तेषामसुभवा तत द्युतिश्च वृत्तिश्रुपोपेतं प्रगयन्त महावीर यन्वे इत्युक्त

यथा तैश्च साहसा बह वीरौ न सन यवन काह्योकरौ सिद्धाने वीरूष सामान्यकेवलोर्माहि प्रधान इन्द्रप्रमान त त्रिबेद परिहृत केवलोर्माह वीर

वाचस्पत्याना स्तपां वंशः प्रवाही वाचकरवर्षश्च स्तस्मिन् सूत्रेण पंचमीनिर्देशः प्राकृततयात्, प्राकृतं हि सर्वासु विप्रक्षिप्तु सर्वांश्चपि विप्रक्षय्यो यथा
 योगं प्रयत्नते तथाचाह पाणिनिः स्वप्राकृतव्याकरणे-यत्ययोप्यासाभिति, प्रयोविश्रुतितमेन तथाच सुधमस्याभिन चारज्य प्रगयानायेरयाम स्वयो
 विकृतिमएव विंश्रुतेन चीरपुरुषेण, योबुद्धि क्षया राजत इतिचीरः पीरबासी पुरुषश्च चीरपुरुष स्तन, तथा दुर्द्वाराणि प्राणानिपालाविभिवृत्ति
 लक्षणाणि पञ्चमहाव्रताभि धारयतीति दुर्द्वारपर स्तम तथा मन्यते जगतलिङ्गालावस्था मिति मुनि स्तेन यिश्रिष्टसवित् समन्विसेनेत्यथः पुनः
 कथमूतेनत्याह-पूषधुतसवधुदुना पूर्वाक्षिप्त तत्पूतच पूषधुतं तन सधुदा बुद्धिमुपागता युद्धि येस्य स पूषधुतसधुदुद्धि स्तेन, आह यो वा
 चकरवंशान्तमत स पूषधुतसधुदुद्धिरेव प्रवति ततः किमनन विशेषेभ ? सत्यमेतत् किन्तु पूर्वविदोपि पदस्यामकपतिता प्रवन्ति, तथाच न
 तुदुजपूययिदामप्य चिकृत्य पदस्यामक वक्ष्यति तत आचिक्रयप्रवर्धनाये मिदं विज्ञापय नित्यदोषः, समिद्धयुद्धिरेत्यत्र वाशब्दस्य द्रष्टव्य द्विष्ट
 अस्याव दीपता आपत्वात्, तथा धुतममर्वाङ्गपारत्वा समुपापितरवधुक्तत्वाच्च सागररश्मि क्षुत्सागरः व्याघ्रादिति गीर्षि सधुशानुक्तावितिसमा
 न तस्मात् ऽ विदुर्भवति ॥ दशीवचनमेतत् साम्प्रतकालीनपुरुषयोग्य वीनयित्वाहृत्यर्थः यनेद प्रज्ञापनारूपं धुतरव मुत्तम प्रधानं, प्रापान्यच न
 शेषधुतरवापेक्षया किन्तु स्वरूपतो, दत्त विषयगन्धाय तस्मै भवते ज्ञानेयमर्थमर्वादिवते धारात् सवधेयमर्थज्यो यातः प्राप्तो गुणै रित्यायः सपासी
 इयामश्च आयइयाम सत्सै सूत्रेणपृष्टी चतुर्थ्यर्थे द्रष्टव्या ऽ कृष्टिविजतीएनकश्चतर्थीतिवचनात् अपुनोक्तसर्ववैषयं वाधा ॥ अक्रयणमित्यादि ऽ

वायगत्रयसाद्यं तैवीसहमेणधीरपुरिसेण । दुश्चरधरेणमुणिणा पुष्टसुयसमिच्छुयुष्टीण ॥ ३ ॥ सुयसागराविपु
 ज्जण जेणसुययणमुत्तमदिश । सीसगणस्सजगवज्जु तस्सणमोश्चज्जसामस्स ॥ ४ ॥ अज्जकयणमिणिचिच्च सुय

च प्रधान वंशानुक्रमे सुधमोस्वामी चारज्य तेनोसमा धीर पुष्टय स्वामाचार्य दुश्चर मज्जागतना भरवचर मुनि तिष्ठ पूर्वकूप द्रुत तिष्ठे सज्जितच्छे वशिष्ठि
 चातो ॥ ३ ॥ सुयवायराभिवेज्ज च असुययणमुत्तमदिश । सोमगच्छभयवयो तच्छानमापज्जसामप्य ॥ ४ ॥ द्रुत सागरमार्हिधो वीचने काप्यो जिप्पे ए

नामेव जगद्वचना रुपकारो जायते इति जगद्वचननिर्गुणिकरेणे त्पुच्छं किमित्याह ॥ उचदसियति ॥ उपसामीप्येन यथाभोग्युवा भटिति यथायस्थित
वस्तुसत्त्वावबोधो प्रवति तथा इष्टद्वयवचने रित्यर्थः इक्षिता अवबोधरंगीता उपदिष्टा इत्यथ , का सी प्रज्ञापना ? प्रज्ञाप्यन्ते जीवादयो ज्ञावा
चमया शब्दसंहत्या इतिप्रज्ञापना किंविशिष्टे स्यात् आह-श्रुतरजनियानं इष्ट रजानि द्विविधानि प्रवन्ति तद्यथा द्रव्यरजानि प्रायरजानि तत्र द्रव्यर
जानि वैद्यूपमरकतेन्द्रनीसादीनि ज्ञावरजानि श्रुतप्रतादीनि तत्र द्रव्यरजानि ज्ञातस्विकामीति ज्ञावरजै रिराधिकार एत एवसमाशः श्रुतान्यवरजानि
श्रुतरजानि ज्ञानु श्रुतानिजरजानिच अपि श्रुतानि रजानीवेति कुत इतिचे ? बुध्यते प्रथमपदे श्रुतव्यतिरिक्तं द्रव्यरजै रिराधिकाराज्ञावात् द्वितीयप
देतु श्रुतानामेव तात्विकरजत्वात् शेषरजै रुपमाया उपयोग विधानमिष निषाम श्रुतरजानां निषाम श्रुतरजनियानं कया प्रज्ञापने त्यत आह
सर्वभावानां सर्वत्र ते ज्ञावाच सर्वज्ञावा जीवाजीवाश्रयवत्संवरनिकरामोक्षा , तथा इत्यां प्रज्ञापमायां यद्विज्ञा त्पदानि तत्र प्रज्ञापनायद्रव्यकथ्य
विज्ञेयवरमपरिकामसञ्ज्ञेपु पंचसु यदेपु जीवाजीवानां प्रज्ञापना प्रयोगपदे क्रियापदेवाश्रयस्य कायवाक्यान-कर्मयोग आश्रय इतिवचनात् कमप्रक
तिपदे कथ्यमप्रकृता अनुष्ठातपदकेवसिचमुष्ठातप्रकृताया सुवरनिर्भरामोक्षायां यथावा क्षेयेपुतु स्थानादिपु यदपु क्षापि हस्त्यचिदिति अथवा
सर्वभावाना मिति द्रव्यज्ञेकालमावाभा भेदज्ञातिरकृता न्यस्य प्रज्ञापनीयस्या ज्ञावात् तत्र प्रज्ञापनापदे जीवाजीवद्रव्याक्षा प्रज्ञापना , स्थानपदे
जीवाचारस्य क्षेत्रस्य स्थितिपद नारकादिस्थितिभिरुपजात् कालस्य क्षेत्रपदेपु सकृदाज्ञानादिपर्यायव्युत्क्रात्युत्क्रासादीना भावाना मिति अस्याय
गाथाया अकृपकभिरितिस्त्वनया सञ्ज्ञाजिज्ञेय-कथनयनेयं सत्त्वानुग्रहाय श्रुतसागरादुद्गता अथाय व्यासयत्तरोपकारित्या वस्मद्विधानां ममस्वा
राहं इति तन्ममस्कारविषय निदमपान्नारालेखा न्यक्तुं क गाथाद्वय-वायगजवरसाठं इत्यादि ॥ वाचका पूर्वविदोः वाक्याद्य तेवराद्य वाचकवरगः

उचदसियानगवया पत्रधणाससृजनावाण ॥ २ ॥

यना ज्ञावाचका सप्रभाव जीवादिपदाव ॥ २ ॥ वाचमपरसंसाधा ते दोसरमेवबोधोरुपुलिखेन । दुष्टरवेरुपमभिवा पृथसुयसमिभुशोच ॥ २ ॥ वाच

नवम योगिः । ८ । दक्षम परमादि परमार्थीति प्रसमुद्दिश्य प्रवृत्तत्वात् । १० । एकादश प्राया । ११ । द्वादश शरीर । १२ । त्रयोदश परि
 श्रामः । १३ । चतुर्दश कषाय । १४ । पञ्चदश मिन्द्रिय । १५ । षोडश प्रयोग । १६ । सप्तदशं त्रेधा । १७ । अष्टादशं कायस्थितिः । १८ ।
 एकानविंशतितमं सव्यक्तम् । १९ । त्रिंशतितमं सन्नक्तिया । २० । एकविंशतितमं सव्यक्तान्नास्थान । २१ । द्वविंशतितमं क्रिया । २२ ।
 त्रयोविंशतितमं क्रम । २३ । चतुर्विंशतितमं कर्मको व्यक्तः तस्मिन् च यथावीथ कर्मको व्यक्तो जयति तथा प्रवृत्त्यति इति तथानाम । २४ ।
 पञ्चविंशतितमं क्रमवेदकः । २५ । षड्विंशतितमं वेदस्य व्यक्तवृत्ति वेदयते अनुवृत्तिरिति वेद सस्य व्यक्तव्य व्यक्तं किमुक्तमव्यति कति
 प्रकृतौ यदयमानस्य कतिप्रकृतीको व्यक्तो प्रवृत्तिरिति तत्र निरूप्यते तत्र लक्ष्येदस्य व्यक्त इति नाम । २६ । एव कति प्रकृतिं वेदयमानः कतिप्रकृती वे
 दयत इत्ययमतिपादकं षड्वेदकनाम सप्तविंशतितम । २७ । अष्टाविंशतितमं माहारप्रतिपादकत्वा दाहारः । २८ । एव सकोनत्रिंशतमं सुपयोग-

परिणा, म १३ कसाय १४ इदिय १५ प्युर्गेय १६ । त्रिसा १७ कायठिइया १८, सम्मत्ते १९ स्युताकिरियाय २०
 वेयव्ययए २७ ॥ ३ ॥ आहारं २८ उयुर्गे २९, पासण्या ३० सखि ३१ सजने ३२ वेद । तृही ३३ पयियारण ३४

वाकडिइया सन्नक्तपतकिरियायः ० । तत्रको भायापद ११ शरीरकारपद १२ परिरागपदाधिकार १३ कषादपद १४ इन्द्रियपद १५ प्रयागहारपद
 १६ निम्बापद १७ कायस्थितिपदहार १८ सम्मक्तनामपद १९ सतकिवाधिकारपद २० । उयुर्गेयस्य २१ इन्द्रियपद २२ प्रयागहारपद
 २३ वेदव्यक्त कतकोमज्जतिबधि २४ वेदना केनभा वेदकरे क्रमप्रवृत्तिवरे, वेदने बाधीने वेदकिम २० । २८ । आहारं उयुर्गेयं पासण्यासविमज्जमेव । आहो
 पयियारववेव वासतनासमुग्याए २८ । आहारपद २८ उपयागपद २९ सज्जापद ३० सखि ३१ सज्जमपद ३२ त्रिंशे पयधिमनामपद ३३ प्रविवाः रयापद ३४

अध्ययनमिदं प्रज्ञापनात्सं भन्तु यदीयमध्ययन किमित्यस्यादा वन्त्योनादिद्वारोपन्यासो नक्रियते ? उच्यते नाप्यनियमो यदेवश्य मध्ययनादा घप क्रमाद्युपन्यासं क्रियत इति अनियमोपि कुतोऽस्योयत इति चेत् ? उच्यत मध्यम्ययनादि घदर्थेनात् तथा चित्रार्थोपि कारयुक्तत्वा चित्र मुतमय रज सुतरत्वं दृष्टिवादस्य द्वावक्षस्याङ्गस्य नित्यसम्बन्धव दृष्टिवादमित्यस्यः सूत्रमपुस्तकतामिर्द्वेष्टाः प्राकृतत्वात् यथायचित्त जगवता श्रीमन्महावीरवद्वृमा मस्यामिता इन्द्रभूतिप्रचतीना मध्ययनार्थस्य वक्षितत्वात् अध्ययन वक्षितमित्युक्त भ्रममपि तथा वक्षयिष्यामि ष्याङ् -कथमस्य उच्यस्यस्य तथायशयितु शक्ति ? सौपदोयः सामान्येना द्विरेयपदाधवर्धनमात्र मधिकृत्यैव मभियानात् तथाच अहमपि तथावक्षयिष्यामीति किमुक्तमवति तदनुसारण वष धियामि नखमनीयिक्येति अस्याच प्रज्ञापनायो पद्विच्छत्यद्वानि प्रवर्ति पद प्रकरव मर्योपि कारइति पर्याया स्तानिच पदाम्यमूनि ॥ पक्षव केत्यादि नापाचतुष्टये ० तत्र प्रथमस्यद प्रज्ञापनाविषयं प्रसमचिक्त्य प्रवृत्तत्वा त्रप्रज्ञापना १ १ । यव द्वितीय स्थानानि १ २ । तृतीयं धनुवक्तव्यं १ ३ । चतुर्थे स्थितिः १ ४ । पञ्चमं विक्षेपः १ ५ । षष्ठं व्युत्क्रान्तिः व्युत्क्रान्तिलक्षणाधिकारपुक्तत्वात् १ ६ । सप्तमं मुष्काव १ ७ । अष्टमं सञ्ज्ञा १ ८ ।

रयणविधिधायणीसिद्ध । जडवस्त्रियजगयया व्युहमवितहवस्यहस्सामि ॥ ५ ॥ पशुत्रणा १ ठाणाइ २, यज्जय तव ३ ठिड ४ विसेसाय ५ । वक्कती ६ उस्सास, ७ सखा ८ जोणीय ९ चरिमाइ १० ॥ १ ॥ ज्ञासा ११ सरीर १२

इवा द्रुतबागर मीचिबो द्रुतरव उत्तमदोषा शिव समूहने भगवत निच पाय आमाचार्दने नमस्कार ककडू ॥ ४ ॥ अस्मवचमिचचित्त सुयरयण दिदिशमबोमद । अहमचिर्बभगवता अहमरितहवचरसायामि ॥ ५ ॥ अध्ययन प्रज्ञापनाभासे धमेकाधिकार यज्ज द्रुतरव दृष्टिवाद धारव भंगमो रज्ज रयमूत विम वषवा भगवत बोतरामे चू निवे तेहने चतुसरि तिम वषवज्ज ॥ ६ ॥ पक्षवताठाचाई वक्षुवत्त्वठिद्विसेमाव । वक्षोवत्त्व समकोत्रा बोयचरमार ॥ ७ ॥ जीनादि प्रज्ञापनापद १ तेहमो ठाममो बीजीयव २ अस्मवज्ज ३ वक्षो तेहना क्तिपव ४ तेहना विधियपद प्रकपवा ५ व्युत्क्रान्ति लपवाधिकारपद ६ उत्प्यासपद ७ सञ्ज्ञाचारपद ८ वोजिपद ९ चरमवर्धेयोने प्रवर्तवा १० ॥ ११ ॥ मायामरीरपरिचा मकसाएइ विगपयोगिय । नेमा

॥ २८ ॥ त्रिंशत्तम पासक्यपत्ति दक्षनता ॥ ३० ॥ एकत्रिंशत्तम समयः ॥ ३२ ॥ द्वयत्रिंशत्तम समयः ॥ ३३ ॥ पतुलिशत्तमं प्रविचारय ॥ ३४ ॥ पञ्चत्रिंशत्तमं वेदना ॥ ३५ ॥ यद्विंशत्तमं समुद्रातः ॥ ३६ ॥ तदेव मुपन्यस्तानि पदानि ॥ साम्प्रत यथाक्रमं पदगतानि सूत्राणि वक्तव्यानि तत्र प्रथमपदगतं भिद आदिम सूत्र-सेकित पक्षवशा इति ॥ अथास्य सूत्रस्य क्रमः प्रस्ताव १ उच्यते प्रथमसूत्रमिदमेतच्चादा मुपन्यस्त भिदं प्रापयति पृच्छतो मध्यस्थबुद्धिमतो चित्तो प्रगवदं बुपदिष्टतत्त्वप्रकृपाकार्यो मद्योपस्य तथा बोक्त-मध्यस्थो बुद्धिमानधी श्रोतापात्रभितिस्युत । तत्र सेगच्छी मागवदेशीप्रसिद्धिमपात सत्र सस्वार्थं अथवा अथशब्दार्थं सच वाक्योपन्यासाद्यः किमितिपरमसे तन्ति तावदितिदृष्टव्यं, तत्र क्रमो द्योतने तत एवः समुदायार्थं तिष्ठन्तु स्वाभादीनि पदानि प्रष्टव्यानि वाचकमवतिस्वात् प्रज्ञापनानन्तरञ्च तेषा मुपन्यस्तत्वात् तत्र तावदे तावत् पृच्छामि किमिच्छापनेति ? अथवा प्राकृतशेषा अत्रिचयेवसिद्धवचनानि योजनीयानीति त्वाया देवत्प्रष्टव्यं । तत्र काताय त्प्रज्ञापनेति ? एव सामान्यन केनचि त्रम सतेवति प्रगवान् गुरु शिष्यवचनानुरोधेना वरायै किञ्चि चिद्योक्त प्रत्युदायार्थ-पक्षवशादुचिहा पक्षताइति ॥ अने नवापुद्गीतशिष्यामिषानेन निवचनसूत्रेकैतदाष्टेन सर्वमेवसूत्र गवदप्रसतीर्षकरनिर्वचनरूपं किन्तु किञ्चिद्व्यन्यापि दादुस्येनतु तथारूप यत उक्त-अथप्रासदश्वरहा सुतगवतिगवदश्वरानिठञ मित्यादि ॥ तत्र प्रज्ञापनेति पूर्ववत् द्विविधा द्विप्रकारा प्रज्ञप्ता प्रकृपिता यदा तीर्थकरायय निर्विकार स्तदा पमर्ची वसयो ज्यैरपि तीर्थकरै यंवा पुन रस्य कश्चि वाचायं सम्मतानुसारी तदा तीर्थकरगवदरै रिति द्विविध्यमेवो पदार्थपति तज्ज्ञा जीवपक्षवकाय अजीवपक्षवकाय ॥ तद्यथेति वक्ष्यमाकनेदक्षयनप्रकाशनायः जीवन्ति प्राचान् चारयन्तीति जीवाः प्राणाय द्विचा द्रव्यप्राणा

वै, यणा ३५ यतसोसमुग्धाए ३६ ॥ ४ ॥ से कित पण्यणा ? पण्यणा दुयिहा पण्यता, तज्ज्ञा-जीवपण्य

वदनापत्र १५ तिचारपक्षः समवातपद १६ । सचितपक्षवका २ दुविहापक्षता तवका । ते पुन ते १६ चारप्रज्ञापना स्रष्टव्य जिताववाजीवपक्षाराभिदं दोयप्र चारै वद्या तेकिम । जीवपक्षवका अजीवपक्षवका । जीवता आप्यपयो ते जीवप्रज्ञापना, वसो अजीवको ज्ञातपक्षो प्रकायवा ते अजीवप्रज्ञापना । सेकित प

[illegible]

कायस्सपासा आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्सदेसे आगासत्थिकायस्सप्पदेसा अरु। समए१० सेत्तअरुवि

प्रदेय कथेय । अधस्तात्कारे अधस्तात्कारात्प्रतिपक्षे ते अधस्तात्कारात्प्रतिपक्षे इम
 अधस्तात्कारात्प्रदेय कथेय । अधस्तात्कारात्प्रतिपक्षे ते अधस्तात्कारात्प्रतिपक्षे इम
 अधस्तात्कारात्प्रदेय कथेय । अधस्तात्कारात्प्रतिपक्षे ते अधस्तात्कारात्प्रतिपक्षे इम

अरूप्यजीवप्रज्ञापना दक्षविद्या दक्षप्रकारा प्रज्ञा अरूप्यजीवाना दक्षविषयत्वात् तदप्रकृत्यादिदक्षविद्योक्ता तदेव दक्षविषयत्वं दर्शयति-सञ्ज्ञेत्या
 दि ॥ तद्योयेति यत्प्रमात्रेदकथनोद्योतनार्थं त इक्षविषयत्व यद्विद्या तदिह स्वभावं सर्वेक्षिभूषणेषु, सा दक्षविद्या अरूप्यजीवप्रज्ञापना यथाप्रवर्तित
 सचादर्शयते ॥ अन्तर्लक्षिकायइति ॥ जीवामा पुद्गलानाम् सञ्ज्ञावतएव गतिपरिणामपरिणताना तत्प्रमावपरत्वात् तत्प्रज्ञावपीयसा दमे प्रसूतपद्येष्ट
 प्रदेष्टा स्तोपा कायः सङ्कृताः यककाएयन्त्रिकाये खंयेव्यतयेवरासीय इतिवचनात् ॥ अस्तिकायः प्रदयसङ्कृत इत्यर्थं समधासी अस्तिकायद
 धर्मास्तिकायः अनेमश्च सकलमेव धर्मास्तिकायकूप मययविद्वज्जमाश्च अवयवीकान् अवयवार्थं तद्यारूपसङ्कृतपरिणामविज्ञापयय नपुन दययव
 त्रयेभ्यः पृथगर्थात्तरद्वय तथानुपलम्भात् तन्मव एवहि आतानोवितामकूपं सङ्कृतपरिणामविज्ञापनापन्ना लोह पटव्यपदेशनाञ्च उपलभ्यन्ते न
 तदतिरिक्तं पटाक्षंनाम उच्यन्तान्येति-तत्त्वादित्येरेकेव नपटाद्युपलम्भनं तन्त्वादयोविशिष्टादि पटादिभ्यपदेशिनः ॥ १ ॥ कृत प्रसङ्गेना ल्यत्र
 चिन्तितत्वा देतद्वादस्य तथाधर्मास्तिकायस्य दक्षइति तस्यैव धर्मास्तिकायस्य बुद्धिविकल्पितो व्यादिप्रदक्षात्मको विभागः ॥ धर्मस्तिकायस्सपदे
 वा इति ॥ धर्मास्तिकायस्य प्रदक्षा इति प्रकृष्टा देशा प्रवेशा निर्विजागाजागा इतिमाव सेषा सङ्केपा लोकाकायप्रमासत्त्वा तथा अतएवय
 पुवचन धर्मास्तिकायप्रतिपक्षभूतो अधर्मास्तिकायः किमुच्य प्रवति जीवपुद्गलानां स्थितिपरिणामपरिणताना तत्परिणामोपलभको मूर्तोऽवङ्कृत
 प्रदेष्टवङ्कृतात्मको अधर्मास्तिकायः अधर्मास्तिकायस्य देस इत्यादि पूर्ववत् तथा आकृति मर्यादया स्रज्जनावाऽपरित्यागरूपया काशान्ते स्र

धर्मस्तिकाए धर्मस्तिकायस्सदेसे धर्मस्तिकायस्सपएसा, अधर्मस्तिकाए अधर्मस्तिकायस्सदेसे अधर्मस्ति

अथ-आरभमेतदेत सूक्ष्मान्तिव्यवहतिपरमाश्च। एकरसगन्धस्पर्शो विस्मयोकार्यसिंघय ॥१॥ सेवितमर्पिष्यजीवपक्षवच २ दसविज्ञापयता तज्जहा। ति
 वव धर्मोवपज्ञापना चरूपीना दयमेव कक्षावै, ते विम शिञ्जने गव कक्षै-धर्मयिक्ताए धर्मस्तिकायस्सदेसे धर्मस्तिकायस्सपएसा। १। धर्मास्तिकाय पुत्र
 वादिमव सम रक्षरतो साहाय्यदे ते धर्मास्तिकाय, देगसमप सवदेशानो जेकोइ विभाग ते देगवहिये, द्वि पदेय धर्मास्तिकायनो प्रदेग निर्निभाग सूक्ष्म

मासुं इत्यादि ॥ तेरुन्पादयो यथाशब्दय समासतः सङ्क्षेपेण पञ्चविधाः प्रकृताः साद्यथा-वर्धपरिचिता वर्धतः परिचिता वयमात्र इत्यर्थः एवं गणप
 रिचिताः रसपरिचिताः स्पष्टपरिचिताः इत्यादिपरिचिताः परिचिता इति श्रुतीतकालनिर्वक्षो यत्तन्मात्रागतकालोपलब्ध यत्तन्मात्रागततत्त्व
 मनरणा तीतत्वस्या सुभवात् तथाहि-योवर्तमानत्वं मतिज्ञानाः श्रुतीतो भवति वर्तमानत्वं च सो भुजयति योभगतात्क मतिज्ञानत्वा
 नुक्तम्-प्रवृत्तिसमाप्तीता यामाप्नोमामवर्तमानत्वं ॥ एष्यद्यमाभसप्रवृत्ति यामाप्स्यतिवर्तमानत्वं ॥ १ ॥ ततो वक्ष्यपरिचिता इति वर्धरूपतया
 परिचिताः परिचयमानीति परिचयमिच्छतीति द्रष्टव्यं मेवं गणपदसपरिचिता इत्याद्यापि परिचयवर्णीयं ॥ जेयसुपरिचिता इत्यादि ॥ येवर्धपरिचिता स्ते
 पञ्चविधाः प्रकृताः साद्यथा-रूपवर्धपरिचिता कल्पवर्धपरिचिता भीष्मादिवत्, लोहितवर्धपरिचिता चिहुलकादिवत् इतिद्वय
 वपरिचिता इतिद्वयदिवत् इत्युक्तवपरिचिताः स्फुटवत् येगणपपरिचिता स्ते द्विविधाः प्रकृता साद्यथा-सुरभिगन्धपरिचिताश्च सुरभिगन्धपरिचिताश्च
 चमदौ परिचयमवर्तनं प्रति विज्ञपानावस्थापनायौ तथाहि-यथाकर्चविवस्थिताः सामर्थीव्ययताः सुरभिगन्धपरिचितासं प्रवृत्ते तस्या कर्चविवस्थिति

परिणया फासपरिणया सहागपरिणया । जेवसुपरिणया ते समासते पञ्चविधा पक्षज्ञा, तजहा-कालवसु
 परिणया नीलवसुपरिणया छोहियवसुपरिणया हालिहवसुपरिणया सुक्लिहवसुपरिणया । जेगधपरिणया

वक्षपरिचिता वक्षपरिचितासं भाव इत्यत्र, साद्यथास्त्वस्तिद्वयति १ नम्यपरिचिता २ रसपरिचिता ३ अयपरिचिता ४ सुखानपरिचिता ५ जेवक्षपरिचिता ते पंचवि
 हा पञ्चता तजहा । द्विजे जे वक्षपरिचितास्ते तिके पाषण्डकारना कक्षा ते जिम वक्षे-कावक्षवक्षपरिचिता ओसवक्षपरिचिता साद्वियवक्षपरिचिता हा
 दिद्वयवक्षपरिचिता सवित्रवक्षपरिचिता ५ । साद्यथावक्षपरिचिता ते कावक्षनोपरे सामवक्ष परिचिता, ओसवक्ष परिचिता छंगवक्षनोपरे, रसवक्षपरिचिता द्विमसू
 नोपरे पोतवक्ष परिचिता वक्षद नोपरे, स्ते पञ्च परिचिता यंश्च नोपरे । जेमवक्षपरिचिता ते दुविहा पञ्चता तजहा । द्विजे नम्यपरिचिता ते इमा हावमेवक्षज्ञा
 ते वक्षे-सुभिगधपरिचिता दुभिगधपरिचिता । सुगन्ध परिचिता योखडनोपरे, दुग्धवक्षपरिचिता सपुन्यनोपरे । जेरसपरिचिता ते पंचविहा पञ्चता तज

हेतुं चर्मोभर्मोक्षिकाया विव्यत्ययो राधावुपादानं नानाविधा साङ्गतिबलात् प्रथमतो चर्मोक्षिकायस्य तत्प्रतिपक्षत्वा ततो ऽधर्मोक्षिकायस्य ततो
 मोक्षालोक्यपित्वा दाक्षाद्याक्षिकायस्य तदन्तरं लोके समयोपसमयेष्वयस्याकारित्वा द्वाया समयस्य, एव मागमाभूषारेका म्यदपि युत्सपनुपा
 ति यत्तस्य मित्यस्तं प्रसङ्गं महतोपसहारमाह-सेतुं यत्तस्य विद्यमानवका ॥ सेया अरूप्यजीवप्रज्ञापना पुन राह विनेय-सेवितमित्यादि ॥
 यथावा कूप्यजीवप्रज्ञापना १ धूरि राह-कूप्यजीवप्रज्ञापना तत्तुर्विधा प्रज्ञता तद्वा-स्कन्धा स्कन्धमिति धीयमेव पुण्यस्ते पुद्गलानां
 विचरन्तेन चरनेमेवेति स्कन्धाः पूर्वाहरावय इतिरूपमिष्यति, यत्तद्वचन पुद्गलस्कन्धाना मागस्य स्यापताये च, न चा मस्यमनुपपन्न मागमे
 निचाना तथा च वक्ष्यति-द्वलोक्युत्पत्तिबाणवतादहावत्यादि ॥ स्कन्धेष्टाः स्कन्धानामेव स्कन्धत्वपरिधानमवहन्तो युद्धिपरिक्रियता द्यादि
 प्रदेष्टालका विज्ञाना यथापि बहुवचन मनस्तमादेष्टिकपु तयाविषयु स्कन्धेषु प्रदेष्टालकत्वसम्भावनाये स्कन्धानां स्कन्धत्वपरिधानपरिक्रियताया
 बुद्धिपरिक्रियताः प्रकृष्टादेष्टा निविज्ञानाज्ञाना परमावय इत्यर्थः, स्कन्धप्रदेष्टा यथापि बहुवचनं प्रदेष्टालकत्वसम्भावनाये परमापुपुद्गला इति
 परमायते अवयव परमावयो निविज्ञानावयवकया को च ते पुद्गलाय परमापुपुद्गलाः स्कन्धत्वपरिधानाभरहिताः केवलाः परमावय इत्यर्थः तेच

ध्यजीवपस्रवणा ॥ सेकिंत क्विद्यजीवपस्रवणा क्विद्यजीवपस्रवणा चउद्धिहा पस्रता तजहा-स्वधा स्वधदे
 सा स्वधप्यएसा परमाणुपोगला ४ । तेसमासठ पचविहा पस्रता, तंजहा-यस्रपरिणया गद्यपरिणया रस

पचवका । ते त्रिम चक्यो पचोव प्रज्ञापना जाचयो । सेकिंत तं दूषोपचोवपचवका २ चउद्धिहा पस्रता तजहा । ते त्रिमचक्ये क्वच रूपो त्रिम चकोवपच
 पना चदि मुदकचै पचोव प्रज्ञापनारा चारिदे कक्षा ते त्रिम चक्यं । चंका स्वधदेया क्वचयएसा परमाणुपुण्यका ४ । स्वध ते समस्तवसु, देय ते को
 ण्णव विभाम प्रदेय ते चदिने निविमान सूज ते प्रदेय परमावय ते निविमानरूप यजन्तयदेये त्रिमच ते परमावयपुण्य चदिने । ते समासया पचविहा प
 चना तजहा । ते परमाणुपुण्य पाचैप्रचरिचक्षा ते परमाणुकार त्रिम चक्ये-यस्रपरिणया गद्यपरिणया सताचपरिणया ५ ।

[illegible]

परिणया फासपरिणया सठाणपरिणया । जेवसुपरिणया ते समासते पंचयिहा पसुत्ता, तजहा—कालवसु
परिणया नीलवसुपरिणया छोहियवसुपरिणया हालिहवसुपरिणया सुक्लित्रयसुपरिणया । जे गधपरिणया

[illegible]

हेतू यमोपमोक्षिकाया वित्यनयो रादावुपादानं नात्रापि भाङ्गलिकत्वात् प्रथमतो यमोक्षिकायस्य तत्प्रतिपक्षत्वा ततो ऽयमोक्षिकायस्य ततो
 सोकासोक्त्यापित्वा दाकाद्याक्षिकायस्य तद्वन्नरं लीढे समयासमयेष्वथवस्थाकारित्वा दृष्टा समयस्य, एव भागभागसारेका म्यदपि युक्त्यनुपा
 ति घट्टव्य मित्यतं प्रसङ्गेन प्रशस्तोपसहारसाह-सेत्तचक्रविष्णवीवपलवका ऽ सौया अक्षयवीवमञ्चापना पुन राह विनेयः-वेक्षितमित्यादि न
 ययकाया रूप्यत्रीवप्रज्ञापना ? सूरि राह-रूप्यवीवमञ्चापना चतुर्विधा प्रज्ञाया तद्याया-स्कन्धा स्कन्धिना भूपयति नीपलोच पुप्यन्ते पुद्गलानां
 विषदमेन चटनेनवेति स्कन्धाः पूर्णोदरादय इतिरूपयित्वाति चक्रवर्चसवर्णं पुद्गलस्कन्धाना भागकस्य व्यापनाये च, न चा मन्थमनुपपन्न भागमे
 निषाना तथा च वक्ष्यति-श्वेतोवपुष्पस्तत्त्विकाण्यतादद्यादस्यादि ऽ स्कन्धवेद्याः स्कन्धानामेव स्कन्धत्वपरिधानमजहन्तो बुद्धिपरिकल्पिता द्यादि
 प्रदेष्टात्मका विज्ञानाः यत्रापि यदुवचन मनसाप्रादेशिकेषु तथाविधेषु स्कन्धेषु प्रदेष्टात्मकत्वसम्भावनायै स्कन्धानां स्कन्धत्वपरिधानमपरिचितानां
 बुद्धिपरिकल्पिताः प्रकृष्टादेष्टाः निविजानाजानाः परमाकव इत्यर्थः स्कन्धप्रदेष्टाः यत्रापि श्रुतवचन प्रदेष्टात्मकत्वसम्भावनायै परमावुपुद्गला इति
 परमायते अववच परमाकवो निर्विजागद्व्यकृता को च ते पुद्गलाय परमावुपुद्गलाः स्कन्धत्वपरिधानमरहिताः केवलाः परमाकव इत्यर्थः, तेव

श्रुतीवपस्यावणा ॥ सेकित कविश्रुतीवपस्यावणा कयिश्यजीवपस्यावणा यजिह्वा पस्यावणा तंजहा-स्वधा स्वधदे
 सा स्वधप्यपसा परमाणुपीगला ४ । तेसमासठ पद्यजिह्वा पस्यावणा, तंजहा-यस्यापरिगया गंधपरिगया रस

पद्यवचा । ते विम यकवी यमोव मञ्चापना काचवो । वेक्षितं तूरोपवीवपस्यावणा २ वक्षविद्या पस्यावणा तंजहा । ते यिष्यवै कृच रूपो विम यवीवमञ्चा
 पना यदि सुनवै यमोव मञ्चापनाया चामेव कञ्चा ते विम कर्तुम् । कथा यत्रवेद्या वक्ष्यपसा परमावुपुष्का ४ । स्वध ते समस्तवच, देय ते को
 रणव विमान प्रदेय ते कविने निविमान सूत्रतेप्रदेय परमावुते निविमानरूप यमनाप्रदेये निषव ते परमावुपुष्क कविने । ते समासयो पद्यविद्या प
 सना तजहा । ते परमावुपुष्क पात्रेप्रकारेवञ्चातेपीकमकार विम कविने-यस्यापरिगया रकपरिगया सठावपरिगया ५ ।

मामृदइत्यादि ॥ तेरङ्गपादयो यथाशुभर्वं सुभासताः प्रकृष्टा साध्याः सङ्ख्येव पञ्चविधाः यद्येवपरिचिता धर्मेतःपरिचिता यद्यभाज इत्यर्थः एव गण्यपरिचिताः रसपरिचिताः स्पद्रपरिचिताः संस्थाभपरिचिताः परिचिता इति श्रुतीतकालमिदंश्री धनमानागतकासोपकृत्य यत्मानागतत्वमन्तर्यानीतत्वस्या सम्भवात् तथाहि-यौवर्त्तमात्रत्व मतिक्लान्तः सोतीतो भवति वर्त्तमानस्य च श्री कुभ्रवति योभागतस्त्व मतिक्लान्तया मुक्तश्च-भवतिमुभामानीता यमातोनामवर्त्तमानत्वं ॥ यद्यद्युभाभसुप्रवति यमाप्स्यसतिवर्त्तमानत्वम् ॥ ९ ॥ ततो यवपरिचिता इति वक्तरूपतया परिचिताः परिवर्त्तमानोति परिवर्त्तमिष्यतीति द्रष्टव्य मेवं वण्परसपरिचिता इत्याद्यापि परिजानवीर्यं ॥ जेयस्यपरिचया इत्यादि ॥ येवर्त्तपरिचिता स्ते पञ्चविधाः प्रकृष्टा, साध्या-कृजवर्त्तपरिचिताः कञ्जसादिवत् नीसववपरिचिता भीस्यादिवत्, लोहितवर्त्तपरिचिता चिद्रुसकादिवत्, हारिद्रव्यपरिचिता हरिद्रादिवत् अक्षयवपरिचिताः अक्षुदिवत् येनग्न्यपरिचिता स्ते त्रिविधाः प्रकृष्टा साध्या-सुरभिगण्यपरिचिताश्च सुरभिगण्यपरिचिताश्च वक्ष्यौ परिवर्त्तमानत्वं प्रति विद्येयाप्राक्स्थायनाद्यौ तथाचि-यथावर्त्तचिद्वस्थिताः सामयीव्यसतः सुरभिग्न्यपरिचितां प्रवर्त्तते तथा कपञ्चिद्वस्थि

परिणया फासपरिणया सठाणपरिणया । जेवयसपरिणया ते समासतु पंधयिहा पसुता, तजहा-कालवसु
परिणया नीलयसपरिणया छोहियसपरिणया हालिहवसपरिणया सुक्लिहवसपरिणया । जे गधपरिणया

[illegible]

ता एव सामग्रीयमन्तो दुरजिक्त्वपरिक्ताम भवीति, दुरभिक्त्वपरिक्ता य यथाशील्यहाटयः दुरभिगन्धपरिक्ता लघुनादिवत्, येरसपरिक्ता से पञ्चविधाः प्रष्टा साध्या-तिक्तरसपरिक्ताः शोभातत्त्वादिवत् कटुकरसपरिक्ताः शुब्ध्यादिवत् कषायरसपरिक्ता अपक्वपित्त्यादिवत् साध्वरसपरिक्ता साध्वतसादिवत् मधुररसपरिक्ताः शार्करादिवत् ॥ ये रसपरिक्ता से अष्टविधाः प्रष्टा साध्या-शर्कराशरसपरिक्ता पायाद्यादिवत् शदुस्पर्शपरिक्ता हंसधतादिवत् गुल्फरसपरिक्ता पञ्चादिवत् लघुकरसपरिक्ता क्षीतरसपरिक्ता ता मुक्तास्तादिवत् उज्जरसपरिक्ता वज्रादिवत् क्षिप्तरसपरिक्ता पूतादिवत् शरपरसपरिक्ता प्रस्मादिवत् ॥ ये सस्यानपरिक्ता,

ते दुग्धिहा पक्वता, तजहा-सुस्निग्धपरिक्ता दुस्निग्धपरिक्ता ते पचविहा पक्वता तजहा तित्तरसपरिक्ता कटुयरसपरिक्ता कसायरसपरिक्ता स्थविलरसपरिक्ता मज्जररसपरिक्ता । जेफासपरिक्ता ग्या ते अष्टविहा पक्वता, तजहा-कस्करासपरिक्ता मउयफासपरिक्ता गयफासपरिक्ता लज्जयफा सयरिक्ता सीयफासपरिक्ता उसिणफासपरिक्ता णिद्रफासपरिक्ता लुक्कफासपरिक्ता । जेसंठाणपरि

क्ता । जे रस परिक्तत्वे तजहा पांच प्रकारकहा तहीक करीये-तिक्तरसपरिक्ता कटुकरसपरिक्ता कसायरसपरिक्ता अपक्वरसपरिक्ता मधुररस परिक्ता । तीकारस परिक्तत्वे कासातकीपरि कृत्तित्रय जं कासात ते कुत्तित्रय, कटुकरस परिक्ता कटुनोपरि, कसायरस परिक्ता कानो खोख नोपर साध्वरस परिक्ता साध्वरसपरिक्ता, मधुररस साध्वरसपरिक्ता, जेफासपरिक्ता तेपहविहा पक्वता तजहा । बिजे करसवको परिक्ताये तेइभा सेनकहा त जिम करीये-कषायफास प मउयफास प मयफास प लघुयफास परिक्ता । कषाय फास पायाकनोपरि, शदु कामस फास जं जं मोरग गदव्यय परिक्ता वज्जनापरि तिम लघुशर्श परिक्ता चर्कनोपरि । सीयफास प उसिणफास प लुक्कफास परिक्ता । ग्रीत फा ग परिक्ता सागननापर उज्जरस परिक्ता पवित्रोपरि क्षिण्ड सवित्रसस्य परिक्ता हुगनोपरि कसस्य परिक्ता भक्कनोपरि । जे सठाण प

स्ते पञ्चविधाः प्रथमा काप्रथा-परिमलसंस्थापनपरिहता यलपयत्, वृत्तसंस्थानपरिहताः कुसालज्जादिवत्, अस्मत्स्थानपरिहताः अङ्गटकादिवत्, चतुरस्रसंस्थानपरिहता कुम्भिकादिवत् आयतसंस्थानपरिहता दशकादिवत्, एतानि च परिमलसादीनि संस्थानानि पञ्चप्रतरेवेन द्विधिपानि प्रवन्ति पुन परिमलस मपहाय शेषाणि ठंजप्रदेशजनितानि युग्मप्रदेशजनितानि इति द्विधा तत्रोत्कृष्टं परिमलसादि सर्वमन्ताबु निव्यक्त मशुभप्रदेशावगाढ चेति प्रतीतमेव जपन्य तु प्रतिनियतसङ्कपरमाख्यात्मक मतां नानिर्दिष्ट छातु क्षुब्धते इति विनियमनानुपहाय तदुप पदवर्णत-तत्रौ काः प्रदेशप्रतरवर्ण पञ्चपरमाबुनिव्यक्त पञ्चाक्षाक्षप्रदेशावगाढा तद्यथा-एकः परमाबुमर्ष्ये स्थाप्यते त्वारः क्रमेण पूर्वविद्यु तवस्तुपु दिना युग्मप्रदेशप्रतरवृत्त द्वादशपरमाख्यात्मक द्वादशप्रदेशावगाढा तत्र निरन्तर त्वारः परमाबुव द्युतुर्पाक्षाक्षप्रदेशेषु रुच काकारेण व्यवस्थाप्यन्ते तत सत्परिच्छेदेन शेषा ज्ञेया ज्ञेया ॥ ठंजः प्रदेशपनवृत्तं सप्तपरमाख्यात्मकं सप्तप्रदेशावगाढा तच्चैव पञ्चप्रदेशं प्रतरवृत्तमप्य स्थितस्य परमाबो रुपरिहता वपस्ता च एकैकोषु रवस्थाप्यते तत एवं सप्तप्रदेशं प्रवर्ति ॥ युग्मप्रदेशं धनवृत्तद्वात्रिंशत्प्रदेशं द्वात्रिंशत्प्रदेशावगाढा तथैव-पूर्वोक्तद्वादशप्रदेशात्मकस्य प्रतरवृत्तस्योपरि द्वादश तत उपरिहता वपया ज्येष्ठत्वारश्चत्वारः परमाबुव इति ॥ ठंजः प्रदेशं प्रतरश्चत्वारं त्रिंशद्देशं त्रिंशद्देशावगाढा तच्चैव-पूर्व नियगबुद्ध्य स्वस्यते तत आद्यस्या च एकैकोषु ॥ युग्मप्रदेशप्रतरश्चत्वार पदपरमाबुनिव्यक्त पदप्रदेशावगाढा तत्र नियमनिरन्तर त्रयः परमाबुवः स्थाप्यन्ते तत आद्यस्या च उपर्येणोनादेना बुद्ध्य द्वितीयस्या च एकैकोषुः स्थापना ॥ ठंजः प्रदेशं पञ्चप्रदेशं पञ्चभि

गया ते पचयिहा पणुप्ता, तंजहा-परिमळसठाणपरिणया बहुसठाणपरिणया तससठाणपरिणया चउर

रिचदा ते पंचविदा पकता तंजडा। जिके सलान परिचत तेइना पाचप्रकार काझा तेहीण कपीवे—परिमळसठाच प वहसठाच प तससठाच प चउरसमठाच प भावसमठाच परिचदा। परिमळसठ्याग परिचत वलवभौपरे, हुत्तसलान परिचत कुडासठ्यनोपरे, शक्य बिळूचो सुखानपरिचत सवाडाभोपरे चतुरस्र बोखूना सलानपरिचत कुओपरे, भावतसंलानपरिचत दळनोपरे, पळपरमाणु निष्कव पचाकाशमदेगावभाठ इन सव

भ्रतः सुस्वानतव वाच्या ॥॥ द्वौगथौ पण्डरसाः अष्टौस्पृष्टाः पण्डसस्यानाभि एतेषु भीसिता विघ्नतिरिति ॥ कृम्रवर्षपरिणता यत्तायन्तो
 मङ्गानुलभर्ते २०, एव नीलवर्षपरिणताअपि २० लोहितवर्षपरिणता अपि २० शरिद्रव्यवर्षपरिणता अपि २० सुक्लवर्षपरिणता अपि २० एवं

संस्थाणं परिमलसंस्थाणपरिणतां च द्रुसंस्थाणपरिणतां तसंस्थाणपरिणतां च उरससंस्थाणपरिणतां च
 व्यायतसंस्थाणपरिणतां च । अत्र संह नीलवर्णपरिणता त गंधं सुस्निग्धपरिणतां दुस्निग्धपरिणतां च,
 रसं तिस्रसपरिणतां च कटुरसपरिणतां च अथिलरसपरिणतां च मज्जररसपरिण
 तां च, फलं कस्करुफासपरिणतां च मउयफासपरिणतां च गरुयफासपरिणतां च लङ्कायफासपरिणतां च
 सौतफासपरिणतां च उसिणफासपरिणतां च गिम्हफासपरिणतां च लुक्कफासपरिणतां च, संहानं परिमल

[illegible]

सठाणपरिणतायि बहुसठाणपरिणतायि तससठाणपरिणतायि चउरससठाणपरिणतायि श्यायतसठाणपरि
 णतायि । जे यखने लोहियवखपरिणता ते गथने सुस्मिगधपरिणतायि दुस्मिगधपरिणतायि, रसने तिसरस
 परिणतायि कन्दुरसपरिणतायि कसायरसपरिणतायि सुथिलरसपरिणतायि मझारसपरिणतायि, फासने
 करकनफासपरिणतायि मउयफासपरिणतायि गऊयफासपरिणतायि लऊयफासपरिणतायि सीतफासपरिण
 तायि उखिणफासपरिणतायि निरुफासपरिणतायि लुक्कफासपरिणतायि, सठाणने परिमल्लसठाणपरिण
 तायि बहुसठाणपरिणतायि तंससठाणपरिणतायि चउरससठाणपरिणतायि श्यायतसठाणपरिणतायि ।

बवा । सज्जनबकी परिमल्लसज्जन परिणतइवे । कउसठाण प तससठाण प० चउरससठाण प० पाविसठाणपरिणतायि । इह एकामपरिणत
 इवे काह पयससज्जनपरिणतइवे काह चउरससज्जनपरिणतइवे पावतसज्जनपरिणतइवे । जेवबवा कीरिवबपरिणता । जेवबबकी कोहितवई
 परिणतइवे । ते गऊय । ते गऊयकी । समिगध प दुमिगध परिणत पविणतइवे । मुत्तय परिणत पविणतइवे । रसको । रसबकी । तिसरस
 प कबवरस प कसायरस प कीरिवरस प मझारसपरिणतायि । निरुसपरिणतइवे कटवरसपरिणतइवे कायावरसपरिणतइवे पाविवरसपरिण
 तइवे मझारसपरिणतइवे । कासवा । रमयबकी । कल्लककास प० मल्लकास प० मल्लकास प० मल्लकास प० मल्लकास प० मल्लकास
 प० सज्जाम परिणतायि । कज्जरपर्यप/एणतइवे चउरससपरिणतइवे यवरपयपरिणतइवे कज्जरपर्यपरिणतइवे मोतरपर्यपरिणतइवे लल्लपर्यप
 रिणतइवे चिउरससपरिणतइवे पूठरससपरिणतइवे । सठाणकी । समिगधकी । परिमल्लसठाणपरिणता । परिमल्लसज्जन परिणतइवे । इहम
 ठाण प तमर्मठाण प चउरसपायसठाण परिणतायि । काह मल्लसज्जन परिणतइवे काह पयससज्जनपरिणतइवे चउरसपायसठाण
 सज्जनते परिणतइवे । कासवा । क इवबकी । शालिहरसपरिणता । शालिहरस पोतनई परिणतइवे । ते मधकी । ते मधबकी । सुभिग्गध सुभिग्ग

अपि मीनधनपरिवृताद्यपि सोदितयथपरिवृताद्यपि शूलयथपरिवृताद्यपि ८ एवं रसतः ५ स्पष्टान्तः ५ एतेष्व
मीसिता खयोरियथति रिति सुरप्रिगणपरिवृता खयोरियथति प्रहृष्टमूलनन्ते, एवं तुरप्रिगणपरिवृताद्यपि २५ ततो गण्यपर्यन्तं सन्ध्या मङ्गलानां पदेष्व
स्वारिवात् रसमधिकृत्याह—ये रसतो रसमधिकृत्य तित्तरसपरिवृता सा धर्मेतः ५ गण्यतः २ स्पष्टान्त ८ संख्यामन्तः ५ एत सर्वेपि एकत्र मीसिता
विशतिरिति । तित्तरसपरिवृता विंशतिप्रह्ला लभन्ते २० एवं कदुकरसपरिवृता २० कपायरसपरिवृताः २० अन्नरसपरिवृताः २०, मधुररसप

फासपरिवृतात्रि णिरुफासपरिवृतावि लुक्फासपरिवृतावि, सठाणन्तु परिमरुलसठाणपरिवृतावि बहसठा
णपरिवृतावि तससठाणपरिवृतावि चउरससठाणपरिवृतावि श्यायतसठाणपरिवृतावि । जेरसन्तु कदुयरसप
रिवृता ते वयान्तु कालयसपरिवृतावि नीलयसपरिवृतावि लोहितयथापरिवृतावि हालिद्वयसपरिवृतावि
सुक्लितयथापरिवृतावि, गयन्तु सुस्निग्धपरिवृतावि दुस्निग्धपरिवृतावि, फासन्तु कक्कफासप० मउयफा
सपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीयफासपरि० उस्निग्धफासपरि० णिरुफासपरि० लुक्फासपरि०
तात्रि, सठाणन्तु परिमरुलसठाणपरि० बहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० श्यायतसठाणपरि०

को परिमरुलसठाणपरिवृताहे इम यावत् श्यायतसन्धान परिवृता भवे । जे रसथा कक्कयरसपरिवृता । जिके रसयको कटकरस परिवृता भव । तयस्यो
खामयपरिवृतावि । ते यकसको काह कासिक्क परिवृता भवे । जायसज्जिक्कपरिवृतावि । यावत् काह सुल्लवण परिवृता भव । गधया सुभिगव प
दुभिगव परिवृतावि । गन्धको सुगन्ध मन्ध परिवृता भवे दुग्ध परिवृता भवे । फासया कक्कफास प जायससफास परिवृतावि । रयगन्धको कर्कश
रयमपरिवृता भवे इम यावत् कक्करयपरिवृता भवे । सठाणया परिमरुलसठाण प० जाय श्यायतसठाणपरिवृतावि । सन्धानयको परिमरुलससन्धान परि
वृता विचक्कवे यावत् मग्ने त्रिहासिगे श्यायतसन्धान परिवृता सन्धान भवे । जे रसया कसायरस परिवृता भवे । जे रसयको कपायरस भा

पञ्चविंशोऽध्यायः १०० गणपमधिकृत्याह—नेगन्धर्षद्वय्यादि ॥ ये गणपयोग्यमधिकृत्य धुरप्रिगणपरिणामपरिणता स्ते वर्तन्तः कालवर्षपरिणता

नीलवस्त्रपरिणतायि लोहितवस्त्रपरिणतायि हालिह्ववस्त्रपरिणतायि सुक्लिप्तवस्त्रपरिणतायि, रसतु तिस्ररसप
रिणतायि कद्रुयरसपरिणतायि कसायरसपरिणतायि अयिलरसपरिणतायि मञ्जरसपरिणतायि, फासतु क
स्कण्डफासपरिणतायि मउयफासपरिणतायि गरुयफासपरिणतायि लङ्कायफासपरिणतायि सीतफासपरिणता
यि उसिणफासपरिणतायि गिन्द्रफासपरिणतायि लुक्फासपरिणतायि, सठाणतु परिमल्लसठाणपरिणता
यि बहुसठाणपरिणतायि तससठाणपरिणतायि चउरससठाणपरिणतायि आयतसठाणपरिणतायि । जेरस
तु तित्तरसपरिणता ते वसतु कालवस्त्रपरिणतायि नीलवस्त्रपरिणतायि लोहितवस्त्रपरिणतायि हालिह्ववस्त्र
परिणतायि सुक्लिप्तवस्त्रपरिणतायि, गंधतु सुस्निग्धपरिणतायि दुस्निग्धपरिणतायि, फासतु कस्कण्डफासप
रिणतायि मउयफासपरिणतायि गरुयफासपरिणतायि लङ्कायफासपरिणतायि सीतफासपरिणतायि उसिण

यायि । ते वर्तन्तः कालवर्षपरिणतपुत्रे इम यावत् कार यज्जव परिणतपुत्रे । रसपा तित्तरस प आव मङ्गररसपरिणतायि । रसवको तित्तर
स परिणतपुत्रे इम यावत् कारंय मङ्गररसपरिणतपुत्रे । फासपा कल्लडकाय प० आवकुल्लकासपरिणतायि । स्यावको आवयसपय परिणतपुत्रे यावत्
कचरसय परिणतपुत्रे । सठावपा परिमल्लसठाव प आव भावयसठावपरिणतायि । सस्यामको परिमल्लसस्याम परिणतपुत्रे यावत् भावतसस्याम
परिणतपुत्रे । जे रसपौ तित्तरसपरिणता । जे रसवको तित्तरस परिणतपुत्रे । तेवको कासवस आवसुक्लिप्तवसपरिणता । ते वयवको कासवस परि
णतपुत्रे इम यावत् यज्जव परिणतपुत्रे । जवपौ समिर्गव नृभिग्गव परिणतायि । मवको मुग्गव दुरगव परिणतपुत्रे । फासपौ कल्लडकाय आवसुव
पाय परिणतायि । कवायसपय परिणतपुत्रे इम यावत् कचरसय परिणतपुत्रे । सठावपौ परिमल्लसठाव प० आवपायवसठावपरिणतायि । सस्यामको

अपि नीलमयपरिचयतामपि सोद्विगतवर्णपरिचयतामपि शुद्धवर्णपरिचयतामपि ८ एवं रसत ५ रस्यसंतः ८ संस्थानत ५ एतेष्व
मीलितान् खयोपियंगति रिति सुरजिगम्यपरिचयता खयोपिविज्ञप्ति नङ्गानुसन्ते एव दुरजिगम्यपरिचयतामपि २३ ततो गम्यपदेन लब्ध्या मङ्गलानां पट्टेष्व
स्यादिशम् रसमपि तत्प्राप्तये रसतो रसमधिकृत्य तिस्रसरसपरिचयता सा वर्जितः ५ गम्यताः २ रस्यसंतः ८ संस्थानतः ५ एते सर्वेपि एकत्र मीलितान्
विश्रुतिरिति ॥ तिस्रसरसपरिचयता विज्ञप्तिमङ्गलानां अमन्ते २० एवं फलुवरसपरिचयताः २०, अक्षरसपरिचयताः २० मधुररसम

फासपरिणतायि णिष्ठफासपरिणतायि लुक्फासपरिणतायि, सठाणन् परिमल्लसठाणपरिणतायि बहसठा
णपरिणतायि तंससठाणपरिणतायि चउरससठाणपरिणतायि श्यायतसठाणपरिणतायि । जेरसन् कङ्कुरसप
रिणता ते वणन् कालयसपरिणतायि नीलमणपरिणतायि लोहितमणपरिणतायि हालिद्वसपरिणतायि
सुक्षित्वयणपरिणतायि, गधन् सुस्निग्धपरिणतायि दुस्निग्धपरिणतायि, फासन् कस्करफासप ० मउयफा
सपरि ० गरुयफासपरि ० लङ्कयफासपरि ० सीयफासपरि ० उंसिणफासपरि ० णिष्ठफासप ० लुक्फासपरिण
तायि, सठाणन् परिमल्लसठाणपरि ० बहसठाणपरि ० चउरससठाणपरि ० श्यायतसठाणप

को परिमल्लसठाणपरिचयतद्वे इम यावत् प्रायतसक्कान परिचयतद्वे । ते रसभा कङ्कुरसपरिचयता । विजे रसवको कटसरस परिचयतद्वे । तवस्यो
कान्नरसपरिचयतायि । ते वज्रवको वारं कावेवच परिचयतद्वे । आवसज्जिज्जवसपरिचयतायि । यावत् वारं शुक्लवच परिचयतद्वे । मधया सधिभमव प
दुभिन्नव परिचयतायि गम्यवको सगन्ध मध परिचयत द्वे । फासभा कल्लवकास प आवसससफास परिचयतायि । रपग्रवको कर्कश
रसमपरिचयत इवे इम यावत् कचरपयपरिचयतद्वे । सठाणया परिमल्लसठाण प आव प्रायससठाणपरिचयतायि । सक्कानवको परिमल्लसक्कान परि
चयत विचयतवे यावत् गन्ते जिह्वाङ्गे प्रायतसक्कान परिचयत सक्कान द्वे । जे रसभा कसायरस अविज मधुररस परिचयता । जे रसवको कसायरस या

पृष्ठत्रि वर्षैर्सेव्यं शतं १०० गन्धनपिकृत्याह-जेगन्धैर्हत्यादि ॥ ये गन्धतोगन्धमधिकृत्य सुरभिगन्धपरिणामपरिचिता स्ते वर्तन्तेः कासवर्धपरिचिता

नीलवस्त्रपरिणतावि लोहितवस्त्रपरिणतावि हालिद्वयस्त्रपरिणतावि सुक्लिप्तवस्त्रपरिणतावि, रसन्ति तिस्रसुप
रिणतावि कन्दुरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अथिलरसपरिणतावि मज्जरसपरिणतावि, फासन्ति क
स्कन्धफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लङ्कायफासपरिणतावि सीतफासपरिणता
वि उसिणफासपरिणतावि गिरुफासपरिणतावि लुरुकफासपरिणतावि, सठाणन्ति परिमन्तुलसठाणपरिणता
वि वहसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि श्यायतसठाणपरिणतावि । जेरस
न्ति तित्तरसपरिणता ते वसन्ति कालवस्त्रपरिणतावि नीलवस्त्रपरिणतावि लोहितवस्त्रपरिणतावि हालिद्वयस्त्र
परिणतावि सुक्लिप्तवस्त्रपरिणतावि, गन्धन्ति सुम्निगधपरिणतावि दुस्मिगधपरिणतावि, फासन्ति करकन्धफासप
रिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लङ्कायफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिण
तावि । ते वर्धन्तेः काटं कञ्चनपरिचतद्भुवे इम यावत् काटं शुक्लवर्ण परिचतद्भुवे । रसपा तित्तरस प जाय मज्जरसपरिचयावि । रसवर्धो तित्तर
स परिचतद्भुवे इम यावत् काटं मज्जरसपरिचतद्भुवे । फासपा कस्मन्धफास प० जायतु क्कासपरिचयावि । स्वयम्बुको क्कायरपय परिचतद्भुवे वायव्य
रुचस्यम परिचतद्भुवे । सठाणपा परिमन्तुलसठाण प जाय वायव्यसठाणपरिचयावि । सुस्मान्नको परिमन्तुलसस्मान्न परिचतद्भुवे यावत् धावतमन्तान्न
परिचतद्भुवे ॥ जे रसपा तित्तरसपरिचया । जे रसवर्धो तित्तरस परिचतद्भुवे । तेववर्धो कासवर्ण जायतु क्कासपरिचया । ते यववर्धो कासवर्धं परि
चतद्भुवे इम यावत् शुक्लवर्ण परिचतद्भुवे । मयवर्धो सुम्निगध परिचयावि । मयवर्धो मुगध दुरगन्ध परिचतद्भुवे । फासपो कस्मन्धफास जायतु क्कास
पास परिचयावि । क्कायरपय परिचतद्भुवे इम यावत् रुचस्यम परिचतद्भुवे । सठाणपो परिमन्तुलसठाण प० जायतु वायव्यसठाणपरिचयावि । सुस्मान्नको

अपि नीमवजपरिणताद्यपि लोहितयवपरिणताद्यपि शूलयवपरिणताद्यपि शुण्ठयवपरिणताद्यपि ८ एवं रसतः ५ रपक्षतः ८ सख्यान्तः ५ एतेषु
मीसिता खयोविशति रिति सुरभिगणपरिणता खयोविंशति प्रज्ञानूलनन्ते, एवं दुरभिगणपरिणताद्यपि २३ ततो गन्धवर्गेन सध्या मङ्गानां पदेषु
स्थारिज्ञत् रसमपि कृत्याह—ये रसतो रसमधिकृत्य तिक्तसुपरिणता सप्त वर्गतः ५ गण्यतः २ रपक्षतः ८ सख्यान्तः ५ एते सर्वेपि एकत्र मीसिता
विंशतिरिति ॥ तिक्तसुपरिणता विंशतिप्रज्ञा क्षमन्तः २० एवं बहुकरसुपरिणता २० कषायरसुपरिणता २० अक्षरसुपरिणता २० मधुररसप

फासपरिणतायि गिद्धफासपरिणतायि लुक्फासपरिणतायि, सठाणन् परिमलसठाणपरिणतायि बहुसठा
णपरिणतायि तंससठाणपरिणतायि चउरससठाणपरिणतायि ध्यायतसठाणपरिणतायि । जेरसन् कठुयसप
रिणता ते यथानु कालयसुपरिणतायि नीलयसुपरिणतायि लोहितयसुपरिणतायि ह्यालिद्वयसुपरिणतायि
सुक्लिप्तयसुपरिणतायि, गधन् सुस्निग्धपरिणतायि दुस्निग्धपरिणतायि, फासन् कस्करुफासप० मउयफा
सपरि० गरुयफासपरि० लङ्गयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० गिद्धफासप० लुक्फासपरिण
तायि, सठाणन् परिमलसठाणपरि० बहुसठाणपरि० चउरससठाणपरि० ध्यायतसठाणप

को परिमलसठाणपरिणतश्चे इमं वाच्यं भायतसञ्ज्ञानं परिणतं भवेत् । के रसधा कठयसुपरिणता । जिह्वे रसधको कटकरस परिणत इव । तवसुधो
कालयसुपरिणतायि । ते यववर्गको काल कालेयसु परिणतं भवेत् । जायसुक्लिप्तयसुपरिणतायि । वायत् काई सुक्लिप्तय परिणत इव । गधधा सभिगव प
दुभिगव परिणतायि । गन्धधको मुग्धय गन्ध परिणतं भवेत् दुग्धय परिणतं भवेत् । फासधा कस्करुफास प जायसुक्लिप्तयसुपरिणतायि । रपयवको ककय
रपयपरिणत इव इमं यावत् कस्करुपयपरिणतं भवेत् । सठाणधा परिमलसठाण प जाय भाययमठाणपरिणतायि । सञ्ज्ञानयको परिमलसठाणय परि
णतं पिण्डवर्गे वायत् मण्डे त्रिदोषगे भायतसञ्ज्ञानं परिणतं सञ्ज्ञानं भवेत् ॥ के रसधा कठयसु अविज्ञ मधुररस परिणता । व रसधको अयानरस धो

रिणतावि । जे रसत कसायसपरिणता ते वसत कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहितवसपरि० हालि
 द्वयपरि० सुक्लिष्वसपरिणतावि, गचत सुस्निगधपरिणतावि दुस्निगधपरिणतावि, फासत कस्कृफा
 सपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लङ्कायफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिछफासपरि०
 लुक्कफासपरिणतावि, सठाणत परिमळसठाणपरि० यहसंठाणपरि० तससठाणप० चउरससठाणप०
 आयतसठाणपरिणतावि । जे रसत आंयिलरसपरिणता ते वसत कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहितव
 सपरि० हालिद्वयसपरि० सुक्लिष्वसपरिणतावि, गचत सुस्निगधपरिणतावि दुस्निगधपरिणतावि, फासत
 कस्कृफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लङ्कायफासपरि० सीयफासपरि० उंसिणफासपरि०
 णिछफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि । सठाणत परिमळसंठाणपरि० यहसंठाणपरि० तससठाणपरि०
 चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जे रसत मऊरपरिणता ते वसत कालवसपरि० नीलवसपरि०
 लोहितवसपरि० हालिद्वयसपरि० सुक्लिष्वसपरिणतावि, गचत सुस्निगधपरिणतावि दुस्निगधपरिणता
 वि, फासत कस्कृफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लङ्कायफासपरि० सीतफासपरि० उंसिण

निरस मपुरस परिबतदुने । ते वसता काकवस प जाव सुक्लिष्वसपरिणतावि । ते वसतको काकवस परिबत पिबदुने यावत सुक्लिष्व परिबत
 दुने । मयपा सभिमांय प दुग्निमयपरिबतावि । ते मयवको सुगंधपरिबत पिबदुने दुर्गंधपरिबत पिबदुने । फासतो कस्कृफास प
 जाव मयवकायपरिबतावि । रपयवको कययसपरि परिबत पिबदुने यावत कययस परिबत पिबदुने । संठाचत्रो परिमळसठाण प जाव

रिचिताः २० एवं रसपञ्चकसंयोगे सार्यं मङ्गलानां द्युत १००, रस्योर्मधिकृत्याह-य फासतोऽकल्लस्र्वासासपरिचयाहत्यादि ३ ये स्पष्टोक्त लक्ष्येण स्वप्नोपरि

फासपरि० निरुफासपरि० लुक्फासपरिणतायि, स्र्वाणन् परिमल्लस्र्वाणपरि० वहस्र्वाणपरि० तसस
ठाणपरि० चउरसस्र्वाणपरि० श्वायतस्र्वाणपरिणतायि ॥ जे फासन् करकल्लफासपरि० ते वस्र्वाण कालय
स्र्वापरि० नीलयस्र्वापरि० लोहितयस्र्वापरि० हालिद्वयस्र्वापरि० सुक्लिषयस्र्वापरिणतायि, गघन् सुस्निगधपरि०
दुस्निगधपरिणतायि, रसन् तिसरसपरि० कसायरसपरि० श्वायिलरसपरि० मञ्जरसपरिण
तायि, फासन् गरुयफासपरि० लज्जायफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० निरुफासपरि० लुक्
फासपरिणतायि, स्र्वाणन् परिमल्लस्र्वाणपरि० वहस्र्वाणपरि० तसस्र्वाणपरि० चउरसस्र्वाणपरि०
श्वायतस्र्वाणपरिणतायि । जे फासन् मलयफासपरि० ते यस्र्वाण कालयस्र्वापरि० नीलयस्र्वापरि० लोहितयस्र्वा

पादयस्र्वापरिचयादि । परिमल्लस्र्वाणको परिचत पिचपुने बावत् पायतस्र्वाणपरिचत पिचपुने । जे फासया कयल्लफास प० ते वस्र्वा
कालयस्र्वा प । जे रसगवको कयस्र्वा परिचतपुने ते वस्र्वाको कासेवर्ष परिचत पिचपुने । कायल्लस्र्वायस्र्वापरिचयादि । कावत् मल्लवर्ष परिचत पुने । ग
धया मुनिगंध प० दुस्मिगंध परिचयादि । मगधवको सरभिगंध परिचतपुने दुरभिगंध परिचतपुने । रसयो तिसरस प० कायमङ्गरस परिचयादि । रस
वको तिसरस परिचतपुने बावत् मङ्गरस परिचत पुने । फासयो मययास प कङ्कयफास प ससिचफास प बिचफास प सुवस्र्वा
सपरिचयादि । रसयवको गुधरपर्म परिचतपुने कपुसपय परिचत पुने लक्षरपय परिचतपुने खिगधरपय परिचतपुने रूचरपय परि
चतपुने । मडावया परिमल्लमठाव प काव पायतस्र्वाणपरिचयादि । स्र्वागवको परिमल्लस्र्वाणपरिचत पिच पुने यावत् पायतस्र्वाणपरिच
तपुने । जेवावयो मलयफास प । जे रसगवको सुदुरपय परिचतपुने । ते वस्र्वा कालयस्र्वा प काव मुक्लिषयस्र्वा परिचयादि । ते वस्र्वाको कासेवर्ष परिच

रिणतावि । जे रसत कसायसपरिणता ते वखनु कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालि
 हवखपरि० सुक्लिष्वखपरिणतावि, गघत सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, फासत कस्कृफा
 सपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लङ्कयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्रुफासपरि०
 लुक्फासपरिणतावि, सठाणत परिमळलसठाणपरि० यहसंठाणपरि० तससठाणप० चउरससठाणप०
 आयतसठाणपरिणतावि । जे रसत आयितरसपरिणता ते वखत कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितव
 खपरि० हालिहवखपरि० सुक्लिष्वखपरिणतावि, गघत सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, फासत
 कस्कृफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लङ्कयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि०
 णिद्रुफासपरि० लुक्फासपरिणतावि । सठाणत परिमळलसंठाणपरि० यहसंठाणपरि० तससठाणपरि०
 चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जे रसत मऊरपरिणता ते वखत कालवखपरि० नीलवखपरि०
 लोहितवखपरि० हालिहवखपरि० सुक्लिष्वखपरिणतावि, गघत सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणता
 वि, फासत कस्कृफासपरि० मउयफासपरि० लङ्कयफासपरि० सीतफासपरि० उसिण

विवरस मयुररस परिचतदुने । ते वखणा कासवख प काव सुक्लिष्वखपरिणतावि । ते वखबको कावेवख परिचत पिचदुने यावत् वखवख परिचत
 दुने । अवषा सुग्निगव प दुग्निगवपरिचतावि । ते मयवको युग्निगवपरिचत पिचदुने दुर्गवपरिचत पिचदुने । फासथो कस्कृफास प
 आय लवखफासपरिचतावि । रपयवको कवयपरपय परिचत पिचदुने यावत् कवरपय परिचत पिचदुने । सठावथो परिमळलसठाव प काव

यता स्तो यवतः ५ गन्धतः २ रसतः ५ रस्यतः ६ प्रतियक्षस्वस्थयोगाज्वात् संस्थानतः ५ एते सर्वैरुक्तमोक्षिता स्वयोजिंक्षति एतायन्तो पाद्माक्षमन्ते

परि० हालिद्वयस्परि० सुक्लिप्तवस्परिणतावि, गधत् सुस्निग्धपरिणतावि, रसत् तित्त
रसपरि० कक्रुयस्परि० कसायस्परि० अंधिलस्परि० मज्जरस्परिणतायि, फासत् गरुयफासपरि०
लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उमिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणत् परि
मरुलसठाणपरि० वहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाण० श्यायतसठाणपरिणतावि। जे फासत्
गरुयफासपरिणता त वस्त् कालवस्परि० नीलवस्परि० लोहितवस्परि० हालिद्वयस्परि० सुक्लिप्तव
स्परिणतावि, गधत् सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसत् तित्तरसपरि० कक्रुयस्परि० कसायस्
परि० अंधिलस्परि० मज्जरस्परिणतायि, फासत् कस्करफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि सीय

त इवे। वावत् एउरव परिणतइवे। मंषपा सुभिषय प अधिमयपरिणतावि। मयषको सुरभिषय परिणतइवे दूरभिषय परिणतइवे। रसयो तित्तर
म प जावमहररस परिणतावि। रसको तित्तरस परिणतइवे वावत् मज्जरस परिणतइवे। फासयो गरुयफास प सङ्गुयफास प सोवफास प
वमिषफास प बिषफास प कबकफास परिणतावि। रसयोको गुबरमय प कसुरमय प योतरमय प कोरि उखरमय प कोरि बिग्वमय प
कोरि रूउरमय परिणतइवे। मठाषपा परिमंडलसठाव प जावपायतसठावपरिणतावि। सुक्लानयको परिमंडलसक्लान यरिणतइवे वावत् भायतस
क्लान परिणतइवे। जेवासपा गरुयफास प ते मयषा काकवस प जाव सज्जितवस्परिणतावि। जेस्पयको गुबरमय प ते वयको कासकर्ण प
यावत् सुउरव परिणतइवे। गधपा सुभिषय दुग्निग्ध परिणतावि। मयषको समय दुग्गव परिणत इवे। रसयो तित्तरस प जाव मज्जरस परि
णतावि। रमदको तित्तरस प वावत् मज्जरस परिणतइवे। फासयो कबकफास प मउयफास प सोवफास प अधिमयफास प बिषफास प

ફાસપરિણતાયિ ડસિગફાસપરિ૦ ગિરુફાસપરિ૦ લુસ્કફાસપરિણતાયિ, સઠાણનું પરિમઠ્ઠસઠાણપરિ૦
 વહસઠાણપરિ૦ તસસઠાણપરિ૦ ઘરસસઠાણપરિ૦ શ્યાયતસઠાણપરિણતાયિ । જેફાસનુંલજ્ઞાયફાસપરિ
 ગતા તે યચન કાલયણપરિ૦ નીલયણપરિ૦ લોહિતયચપરિ૦ હાલિધ્વચપરિ૦ સુક્ષિલ્લયણપરિણતાયિ,
 ગચન સુસ્નિગધપરિ૦ દુસ્નિગધપરિણતાયિ, રસનું તિત્તરસપરિ૦ કઠુયરસપરિ૦ કસાયરસપરિ૦ શ્વચિલ્લર
 સપરિ૦ મજ્જરસપરિણતાયિ, ફાસનુંકસ્કઠ્ઠફાસપરિ૦ મડયફાસપરિ૦ સીતફાસપરિ૦ ડસિગફાસપરિ૦
 ગિરુફાસપરિ૦ લુસ્કફાસપરિણતાયિ, સઠાણનું પરિમઠ્ઠસઠાણપરિ૦ વહસઠાણપરિ૦ તસસઠાણપરિ૦
 ઘરંતસઠાણપરિ૦ શ્યાયતસઠાણપરિણતાયિ । જે ફાસનું સીતફાસપરિણતા તે યચન કાલયચપરિ૦ ની

नृपावकासपरिचयादि । रपयवकी जकयरपग प सुदुरपग प श्रोतरपग प छरपर्यं प काइ शिगधरपग प रूचरपग परिचतहुवे । सठावपा प रिमडसठाव प वाय थावतमठावपरिचयादि । सखानबकी परिमडसखान प यावत् थायतसखानपरिचतपिबहुवे । जेफासपी छड ग्कास पर ते बषपा कालवष प आनसखिन्नवषपरिचयादि । जे रपयवकी सुवरपर्यं परिचतहुवे । ते वर्यकी काववषं प यावत् शक्तवषपरिचतहुवे । गंधपा सभिगव दुभिगव परिचयादि । गवकीसुगव दुमगव परिचतहुवे । इसपी तिमरस प काव मधुररसपरिचयादि । रसको तिमरस प यावत् मधुररस परिचतहुवे । फासपा कसडफास प मलयफास प सोयफास प छनिबफास प निबफास प सखफासपरिचयादि । रपगब की जकयरपग प सुदुरपर्यं प श्रोतरपग प छरपर्यं प काइ शिगधरपग प रूचरपग परिचतहुवे । सठावपी परिमडसठाव प खावपायस ठावपरिचयादि । संखानबकी परिमडसखान प यावत् थायतसखान परिचतपिबहुवे । जेफासपा सोयफास प ते वषपा कासपय प कावसखिन्नव

लवसपरि० लोहितवसपरि० ह्यालिङ्गवसपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गधत्तं सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरि
 रिणतावि, रसत्तं तिप्तपरि० कन्दुरसपरि० कसायरसपरि० अथिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि,
 फासत्तं कक्कलफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लङ्कायफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्कफासप
 रिणतावि, सठाणत्तं परिमल्लसठाणपरि० बहसठाणपरि० तंससठाणपरि० अउरससठाणपरि० अयायत
 सठाणपरिणतावि । जेफासत्तं उसिणफासपरि० ते वसत्तं कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहितवसपरि०
 ह्यालिङ्गवसपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गधत्तं सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसत्तं तिप्तपरि०
 कन्दुरसपरि० कसायरसपरि० अथिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासत्तं कक्कलफासपरि० मउयफा
 सपरि० गरुयफासपरि० लङ्कायफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणत्तं परिमल्लसठाण

वपरिणतावि । जे स्पयवको मोतरपयपरिणत ते बर्बवकी कावेवर्ब प यावत् गुळवर्ब परिणतहुने । गंधपा सुस्निग्ध दुस्निग्धपरिणतावि । वसव
 को सुगंध दुग्गंध परिणतहुने । रसको तिप्तरसपरिणता जाव मज्जरसपरिणतावि । रसवको तिप्तरस प यावत् मज्जरसपरिणतहुने । फासको कक्कल
 फास प मउयफास प गरुयफास प बिहफास प लङ्कायफासपरिणतावि । स्पयवको कज्जयसय प सुवृत्तय प गुहयय प अ
 वरयय प स्निग्धरयय प रूक्षरययपरिणतहुने । सठाणको परिमल्लसठाण प जाव भाववसठाणपरिणतावि । लङ्कायको परिमल्लसंज्ञान प
 यावत् पावतसंज्ञान परिणतहुने । जेफासको उसिणफास प तेववको कालवस प जाव सुक्लिप्तवसपरिणतावि । जे स्पयवको उप्परसय प
 ते वसवकी कावेवर्ब प यावत् गुळवर्ब परिणतहुने । गंधपा सुस्निग्ध परिणतावि । मज्जरको सुगंध दुग्गंधपरिणतहुने । रसको तिप्तरस
 प जाव मज्जरस परिणतावि । रसवकी तिप्तरस प यावत् मज्जरस परिणतहुने । फासपा कक्कलफास प मउयफास प गरुयफास प लङ्काय

પરિ० વહુસઠાણપરિ० તસસઠાણપરિ० ચરસસઠાણપરિ० આયતસઠાણપરિણતાવિ । જે ફાસનું ણિઠ
 ફાસપરિણયા તે વચનું કાલવચપરિ० નીલવચપરિ० હોહિતવચપરિ० હાલિદ્વચપરિ० સુક્ષિણવચપ
 રિણતાવિ, ગદ્યનું સુસ્થિગધપરિ० દુસ્થિગધપરિણતાવિ, રસનું તિસ્તરસપરિ० કદુરસપરિ० કસાયરસપ
 ઞ્ચવિલરસપરિ० મન્દરસપરિણતાવિ, ફાસનું કસ્કઠફાસપરિ० મઝયફાસપરિ० ગરુડફાસપરિ० લઙ્ગ
 ફાસપરિ० સીયફાસપરિ० ઉચ્ચિણફાસપરિણતાવિ, સંઠાણનું પરિમઝલસઠાણપરિ० વહુસઠાણપરિ० તસ
 સઠાણપરિ० ચરસસઠાણપરિ० આયતસઠાણપરિણતાવિ । જે ફાસનું લુસ્કફાસપરિણતા તે વચનું કાલ
 વચપરિ० નીલવચપરિ० હોહિતવચપરિ० હાલિદ્વચપરિ० સુક્ષિણવચપરિણતાવિ, ગદ્યનું સુસ્થિગધપ

યામ પ ચિદ્દ્યામ પ સુલ્લપ્તપાસ પરિણતાવિ । રમયગ્ધકો કર્કમરપમ્પદુવે ધરુરપમ્પ પ ગુરુરપમ્પ પ સિગ્ધરપમ્પ પ દૂરરપમ્પ પરિણતા
 વુવ સઠાણપરિમઝલસંઠાણ પ આમ પાજલસઠાણપરિણતાવિ । સંસ્થાનગ્ધકો પરિમઝલસંસ્થાન યાવત્ પાચતસંસ્થાનપરિણતાવુવે । જ્ઞાસપો ચિદ્દ્યા
 મ પ ત રસપા જ્ઞાસવચ પ જ્ઞાવમ્પજિજ્ઞવચપરિણતાવિ । જ્ઞાવ જ રમયગ્ધકો જિજ્ઞવરપમ્પ પરિણતાવુવે તે રસપાકો જ્ઞાસવચ પ યાવત્ શુદ્ધવચ પરિ
 ચતરુવે । મંચપા ત/તગદ દુશ્મિગધપરિણતાવિ । ગદ્યગ્ધકો સુચ પુત્રપરિણતાવુવે । રસપા તિત્તરસ પ જ્ઞાવ મન્દરસપરિણતાવિ । રસપાકો તિત્ત
 રસ પ યાવત્ મન્દુરસપરિણતાવુવે । જ્ઞાસપા જ્ઞાસવચ પ મઝયપ્તપામ પ મઝયપ્તપાસ પ સુલ્લપ્તપાસ પ સીવપાસ પ હસિપ્તપાસપરિણતાવિ ।
 સ્વયમ્પદો જ્ઞાવમ્પગરિણતાવુવે સ્વુચ્ચપરિણતાવુવે ગુરુકાર્ય પ જ્ઞાવમ્પ પ યોત્તપ્તપામ પ હસિપ્તપરિણતાવુવે । સઠાણપા પરિમઝલસઠાણ પ જ્ઞા
 વ પાચતમઠાણપરિણતાવિ । સંસ્થાનગ્ધકો પરિમઝલસંસ્થાન પરિણતાવુવે યાવત્ પાચતસંસ્થાનપરિણતાવુવે । જેજ્ઞાસપા સુલ્લપ્તપાસ પ તે રસપો જ્ઞાસ
 વચ પ જ્ઞાવમ્પજિજ્ઞવચપરિણતાવિ । જે સ્વયમ્પદો રુવમ્પ પરિણતાવુવે તે રસપાકો જ્ઞાસવચ પરિણતાવુવે યાવત્ શુદ્ધવચપરિણતાવુવે । ગદ્યપા સુશ્મિ

विष्णुपरपञ्चपरिचिताः ३३ रुद्रपरपञ्चपरिचिताः २३ यतथा येऽव्यमीक्षते जात प्रजापतीं पतुरासीत्यधिकं ज्ञात १८४ संस्थाममचिह्नत्वात्-असंस्थाकृष्टं प रिमयकृतसंस्थापरिचयादित्यादि ॥ ये संस्थामत परिमयकृतसंस्थामपरिचिता स्ते वदन्त ५ गन्धताः २ रसताः ५ स्पष्टताः ८ एते सर्वे व्येक्य मीलिताः

दुस्निगधपरिणतावि, रसते तित्तरसपरि० कसायरसपरि० क्षुधिलरसपरि० मज्जररसपरिण तावि, फासते करकण्ठफासपरि० मउयफासपरि० लङ्कायफासपरि० सीतफासपरि० उंसिण फासपरिणतावि, सठाणते परिमल्लसठाणपरि० बहसठाणपरि० तससठाणपरि० खउरससठाणपरि० श्यायतसठापरि० । जे सठाणते परिमल्लसठाणपरिणता ते वसुते कालयसपरि० नीलवसपरि० लोहित वसपरि० हालिद्वयसपरि० सुस्निगधसपरिणतावि, गधते सुस्निगधपरिणतावि दुस्निगधपरिणतावि, र सते तित्तरसपरि० कक्रुयरसपरि० क्षुधिलरसपरि० मज्जररसपरिणतावि, फासते करकण्ठ फासपरि० मउयफासपरि० लङ्कायफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिष्ठफास

मं ३ दुस्निगधपरिचितावि । यस्यको सगन्ध दुग्धवपरिचितावे । रसयो तित्तरस प जावमधुररस परिचितावि । रसको तित्तरसपरिचितावु बावत् मधुररसपरिचितावे । फामयो कण्ठव्यास प मउयफास प गुहयफास प लङ्कायफास प नीलवस प खउरस प रसयको कसाय रस प गुहयस प मउयस प श्रोतवस प लङ्कायस परिचितावे । सठाणयो परिमल्लसठाण प० जाव पाययसठाणपरिचितावि । सस्यामवको परिमल्लसस्यामपरिचितावे बावत् पावतसस्यामपरिचितावु ३ जे सठाणयो परिमल्लसठाण प ते वसुयो कायवस प जाव सुस्निगधस परिचिता वि । ते यस्यको खासेद्वयपरिचितावे बावत् खातवर्ष परिचितावे । गंधयो सुस्निगध दुस्निगधपरिचितावि । गंधको सुगन्ध दुर्गन्धपरिचितावे । रसयो तित्तरस प बावत् मज्जररसपरिचितावि । रसको तित्तरस बावत् मधुररसपरिचितावे । फासयो कण्ठव्यास प मउयफास प मज्जररस प खउ

विगति २० यतावन्तो भङ्गान् परिमलसंस्थानपरिणता सज्जो यव वृत्तसंस्थानपरिणता २० ॥ रज्यसर्वस्थानपरिणताः २० चतुरस्रसंस्थान
परिणता २० चापतसंस्थानपरिणताः २० ॥ यमीयो वैद्वनीतनन सञ्च भङ्गानां धृतं यपां यवयन्तरसंस्थानपरिणताः सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां

परि० लुक्फासपरिणतावि । जेसंठाणहं यहसंठाणपरि० ते वसुहं कालवसुपरि० नीलवसुपरि० लोहि
तवसुपरि० हालिह्वसुपरि० सुक्लिषपरिणतावि, गधनं सुक्लिषपरिणतावि, रसनं ति
त्तरसुपरि० कद्रुयसुपरि० कसायसुपरि० अथिलरसुपरि० मञ्जरसुपरिणतावि, फासनं ककळफासुपरि०
मउयफासुपरि० गुरुयफासुपरि० लङ्कयफासुपरि० सीतफासुपरि० उसिणफासुपरि० णिद्रुफासुपरि० लुक्
फासुपरिणतावि । जेसंठाणहं तससंठाणपरि० ते वसुहं कालवसुपरि० नीलवसुपरि० लोहितवसुपरि०
हालिह्वसुपरि० सुक्लिषवसुपरिणतावि, गधनं सुक्लिषवसुपरिणतावि, रसनं ति
त्तरसुपरि० कद्रुयसुपरि० कसायसुपरि० अथिलरसुपरि० मञ्जरसुपरिणतावि, फासनं ककळफासुपरि०

वदसु प मोयवाम प उमिबकान प बिद्रफान प सल्लफान परिणतावि । रज्यसर्वस्थानपरिणताः सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां
तद्वत् सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां
जे सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां सञ्च भङ्गानां
इति । गधनं सुक्लिषवसुपरिणतावि । रसनं ति
त्तरसुपरि० कद्रुयसुपरि० कसायसुपरि० अथिलरसुपरि० मञ्जरसुपरिणतावि, फासनं ककळफासुपरि०

धातामि विंशदधिकानि पञ्चदशानि इह यद्यपि बावरेषु स्त्रायेषु पञ्चापि वडा हावपिगन्ती पञ्चाविरहा प्राप्यन्ते ततोवपीकृतवर्णविव्यति
रेनेका प्रीयववादिभिरपि त्रङ्गाः सुलबन्ति तथापि तेधिव यादरेषु स्त्रायेषु ल्यवहारतः सेवसकृजवर्णव्युयेता अपान्तरातस्कन्वा यथावेहस्त्रान्यएव
साधनस्त्रायाः रुज स्रदन्तमन्तएव कथिन्नोचितोऽन्य स्रदन्तमन्तएव ध्रुक्रुहत्यावि ते इहविवक्ष्यन्ते तेपाञ्चा म्यह्वर्णान्तरादि मसम्भवति स्पष्टीचिन्ताया

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लङ्गयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लु
रक्फासपरिणतावि । जे सठाणह चउरससठाणपरिणता ते वखत कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहि
ययखपरि० हालिइयखपरि० सुक्लिप्तवखपरिणतावि, गवह सुस्निगधपरि० दुस्निगधपरिणतावि, रसह
तिसरसप० कक्रुयरसपरि० कसायरसपरि० ख्यिलरसपरि० मजररसपरिणतावि, फासह कक्कफासपरि०
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लङ्गयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुस्क
फासपरि० । जे सठाणह ख्यायतसठाणपरिणता ते वखत कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितयखप०

लोनववपरिचतहुवे । यवपा सविभमव दुग्मिभनवपरिचतहुवे । मवखको सुगन्ध दुगन्धपरिचतहुवे । रसधो तितरस जाव मजररसपरिचतहुवे । रस
वको तितरस यावत् मजररसपरिचतहुवे । फासधो कक्कफास प जाव कक्कफासपरिचतहुवे । ख मवको कक्कयस्य प कक्कयस्यपरिचतहुवे ।
जे सठाणका चउरससठाणपरिचतहुवे । जे सलानवको चउरससलानपरिचतहुवे । ते यवधोकाकवखपरिचतहुवे जाव सक्लिप्तवखपरिचतहुवे । ते बवं
वको कासेववपरिचत यावत् मुळवर्णपरिचतहुवे । गंधधो सुस्निगंध दुग्मिगंधपरिचतहुवे । रसवको सुगन्धदुगन्धपरिचतहुवे । रसधो तितरस प
जाव मजररसपरिचतहुवे । रसवको तितरस यावत् मजररसपरिचतहुवे । फासधो कक्कफास जाव कक्कफासपरिचतहुवे । खमयको कक्कयस्य
परिचतहुवे यावत् कक्कयस्यपरिचतहुवे । ख सठाणका यावतसठाणपरिचतहुवे । जे मखानवको यावतसलानपरिचतहुवे । ते बवधो काकवख प

त्वयपीकृतस्पर्शमिति प्रतिपद्यत्यतिरेकान्दो स्पष्टांलोक्यविरोधिनी दृश्यन्ते ततो यथोक्तैव प्रहसन्तु सापि च परित्युरन्यायमङ्गीकृत्या त्रिहिता
 ऽव्यया प्रत्येक मयेयां तारतम्येना मत्तत्वात् घनताप्रह्लाःसम्भवति एवाप्य दूर्वादिपरिहामाना जपन्त्यतो वस्यान मेक समय मुह्यन्ततो सङ्क्षेपं
 काले सम्प्रत्युपसंहारमाह—सेतंरुयिष्यजीयलवडा ॥ सेतप्रजीवपक्षवडा सेया रूप्यजीयप्रज्ञापना ॥ सेया ऽजीवप्रज्ञापना ॥ साम्प्रत ज्जीवप्रज्ञापना ममि
 चित्सु सादृश्यं प्रभसूत्र षाच—सञ्चितमित्यादि ॥ अथ का सा जीवप्रज्ञापना ? सूरिराह—जीवप्रज्ञापना द्विविधा तद्यथा—ससारसमापक्षजीवप्र
 ज्ञापनाच अससारसमापक्षजीवप्रज्ञापनाच तत्र असर ससारो नारकतिर्यग्यमरभरजवानुजवसतश्च सा सम्यग्नेजीजावेनापका ससारवर्तिनश्च इत्य

हालिद्वयसपरि० सुक्षिप्तवसुपरिणतावि, गद्यते सुक्षिप्तवसुपरिणतावि, रसते तिस्रस
परि० कद्रुयसपरि० कसायसपरि० स्थितिरसपरि० मञ्जरसपरिणतावि, फासते कस्कफासपरि० म
उयफासपरि० गुरयफासपरि० लङ्कायफासपरि० उसिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुस्कफा
सपरि० ॥ सेतु क्रयिञ्चुजीवपसुवणा ॥ सेतु स्थुजीवपसुवणा ॥ से कित जीवपसुवणा ? जीवपसुवणा दुवि
हा पसुता, तजहा—ससारसमाद्यस्थजीवपसुवणाय स्थससारसमाद्यस्थजीवपसुवणाय । से कित स्थससार

आवसुबिब्रजपपरिचर्यावि । ते वचनको वासवस्य यावत् यज्ञवर्णपरिचर्यादुवे । गंधर्वाः सन्निर्गंध दुर्निर्गंधपरिचर्यादुवे । गन्धर्वकी समन्वयुग्मपरिचर्यादुवे । रसघो तितरस जाव मधुररसपरिचर्यावि । रसको तितरस यावत् मधुररसपरिचर्यादुवे । वासवा वासव्यास प मरुतप्रास प मरुतप्रास प मरुतप्रास प सीरप्रास प तिस्रप्रास प बिहप्रास प० सत्सप्रासपरिचर्यावि । अर्यकी वाक्यसमं परिचर्यादुवे सुमुख्यपरिचर्यादुवे सुमुख्यपरिचर्यादुवे सुमुख्यपरिचर्यादुवे श्रोतरपर्यपरिचर्यादुवे उच्छस्पर्यपरिचर्यादुवे सिग्धस्पर्यपरिचर्यादुवे कश्चरपर्यपरिचर्यादुवे । सतकवोषणोपपन्नवशा सतपञ्चोपपन्नवशा । ते जिम सव कपो पञ्चोपपन्नपञ्चो वतसे कपोका भाव पञ्चोका भावमेव प्रकाश्या । तेजिम इति पांचसीवीस ५१ भेदे

ज्ञातानि त्रिंशत्त्रिंशानि पञ्चदशानि इह यद्यपि बादरेषु स्तम्भेषु पञ्चापि यदा द्वयपिगन्धो पञ्चापिरसा प्राप्यन्ते ततोवचीकृतघर्षो दिव्यति
 रकोषा दीपत्रयादिभिरपि त्रिंशत्सम्भवादिना तयापि तेष्वेव बादरेषु स्तम्भेषु व्यावहारतः कोषलक्षणवर्षाद्युपेता अपान्तरालस्कन्धा यथावेहस्कन्धस्य
 सोधनस्कन्धः कृष्ण स्रवन्तर्गतस्य कविज्ञोद्दिष्टोऽन्य स्रवन्तर्गतस्य तेषाम्ना व्युद्घातारादि नसम्भवति स्पष्टोचित्वापां

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लङ्गयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लु
 स्फफासपरिणतावि । जे सठाण्ठ चउरससठाणपरिणता ते वसन्त कालवसुपरि० नीलवसुपरि० लोहि
 ययसुपरि० हालिङ्गयसुपरि० सुक्लिप्तवसुपरिणतावि, गधन्त सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसन्त
 तित्तरसप० कङ्कुरसप० कसायरसपरि० सुधिलरसपरि० मङ्गरसपरिणतावि, फासन्त कस्करफासपरि०
 मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लङ्गयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुस्क
 फासपरि० । जे सठाण्ठ श्यायतसठाणपरिणता ते वसन्त कालवसुपरि० नीलवसुपरि० लोहितयसुप०

सौम्यवपरिचतद्भवे । गवपा सन्धिमय दुस्निग्धपरिचतद्भवे । मधवको सुगन्ध दुर्गन्धपरिचतद्भवे । रसपो तित्तरस जाव मङ्गरसपरिचतद्भवे । रस
 बको तित्तरस जावत् मङ्गरसपरिचतद्भवे । फासपो कस्करफास प जाव कस्करफासपरिचतद्भवे । अ मधवको सन्धिमय प कस्करफासपरिचतद्भवे ।
 जे मठावपा कस्करसठावपरिचतद्भवे । जे सङ्कागवको कस्करसङ्कागपरिचतद्भवे । ते वसुपो जावसवसुपरिचतद्भवे । ते वसुपो जावसुपरिचतद्भवे । ते वसु
 बको जावसवपरिचतद्भवे । जे सङ्कागवको सुस्निग्धपरिचतद्भवे । मधवको सन्धिमयपरिचतद्भवे । रसपो तित्तरस प
 जाव मङ्गरसपरिचतद्भवे । रसवको तित्तरस जावत् मङ्गरसपरिचतद्भवे । फासपो कस्करफास जाव कस्करफासपरिचतद्भवे । मङ्गवको कस्करफास
 परिचतद्भवे जावत् कस्करफासपरिचतद्भवे । जे सठावपा जावत् सठावपरिचतद्भवे । जे सङ्कागवको जावत् सङ्कागपरिचतद्भवे । ते वसुपा जावत् वसु प

परम्पराय तन्निदुः। य परम्परसिद्धा विधिविहितसिद्धस्य प्रथमसमयादप्राक् द्वितीयादिसमये घटीतादुं यावत्तमाना इतिप्रायः, सोऽपि ते असंसारसम्मा
पन्ना य परम्परसिद्धासंसारसमरपन्ना सत्तत्तत्तीवा य तेषां प्रज्ञापना परम्परसिद्धासंसारसंभाव्यजीवप्रज्ञापना अत्रापि य शुद्धः स्वमलानेक
जदसूचक ॥ मुक्तिमित्यादि ॥ अथ का सा भक्ततरसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरि राह-अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना
पञ्चदशविधा प्रज्ञा यनन्तरसिद्धाना मुपापिजदतः पञ्चदशविधत्वात् तदेव पञ्चदशविधत्वतोपामाह-तत्रैतेत्यादि ॥ तद्यथेति । पञ्चदशमेवे
पदज्ञानसूचकं तीर्थसिद्धाः तीर्थते संसारसागरो जनेनेति तीर्थं यथावस्थितसकलजीवादिभेदार्थसाधप्ररूपक परमगुरुमयीत प्रवचन तच्चमिराचार
नन्वती तिसृषः प्रथमनक्षत्रोवा वदितव्यः उक्तच-तिर्यजतेतिर्यं तिर्यकरोतिर्यं भूँ ? अदिहाताव तिर्यकरो तिर्य पुत्र चातवक्तो सम
वर्षपा पदमगकडरो वा इति तस्मिन्नुत्पले ये सिद्धा सा तीर्थसिद्धाः । १। तथा तीर्थस्याऽप्रावोऽतीर्थः, तीर्थस्या प्राचवा नुत्पावोऽपान्तरासे व्यव
ज्जदो वा तस्मिन् य सिद्धा सोऽतीर्थसिद्धा सात्र तीर्थस्या नुत्पाद सिद्धा भवदवीमनृतया, मदि उ-देव्यादिसिद्धिगमनकाले तीर्थं मुत्पक मासीत्
तथा तीर्थस्य व्यवज्जदः सुविषक्याम्पापान्तरासपु तत्र य जातिसरकादिना उपवयमाणमवाप्य सिद्धा सोऽतीर्थव्यवज्जदसिद्धाः । २। तथा तीर्थं
करा सक्तो ये सिद्धा सा तीर्थकरसिद्धाः । ३। सामान्यकवसिना सता ये सिद्धा सोऽतीर्थकरसिद्धाः । ४। स्वयम्भुदा संतो ये सिद्धा सोऽस्वयम्भुद
सिद्धाः । ५। प्रत्यक्षुद्भुदसंतो ये सिद्धा सा प्रत्यक्षुद्भुदसिद्धाः अथ स्वयम्भुदप्रत्यक्षुद्भुदानां क-प्रतिविशेषः ? उच्यते बोधुपचिमुतसिद्धकृतोविशेषः,
तथाचि-अव्यम्भुदा यादप्रत्यय भन्तरवैव निजजातिसरकादिना बुद्धाः स्वयम्भुदा इति व्युत्पत्ते ते च विषा तीर्थकरा साधकरव्यतिरिक्ताय

यणा ? शुभतरसिद्धसंसारसमावणजीवप्रज्ञापना परम्परसिद्धा पञ्चज्ञा, तजहा-तित्यसिद्धा १ अतित्य
मिद्धा २ तित्यगरसिद्धा ३ अतित्यगरसिद्धा ४ सययुद्धसिद्धा ५ पत्तिययुद्धसिद्धा ६ युद्धयोहिहयसिद्धा ७

नोपरे ते प्रवचन १ गकारद्वयपू सवेगन तथा प्रचनन द्रव्योकातिरमरच आगमी करकद्रुममिधर्मगार बुद्धविधितसिद्ध ० आचार्यगणधरेमतिवाच्या

च तेचते जीवाद्य तेषां प्रज्ञापना सुसारसमापकजीवप्रज्ञापना मससारी उवसारो मौख स समापना अरुसारसमापना मुक्ताएत्यर्थं तेचते जीवाद्य तेषां प्रज्ञापना अरुसारसमापकजीवप्रज्ञापना अक्षर्यौ प्राणत् तत्रालयकथात्वा तदप्रमतो उरुसारसमापकजीवप्रज्ञापना मप्रिप्रित्तु स द्विपयं प्रमनूजमाह-सेकितमित्यादि ॥ अथ आसा अरुसारसमापकजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह-अरुसारसमापकजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञासा त द्या-अनन्तरसिद्धाउरुसारसमापकजीवप्रज्ञापनाच परम्परसिद्धाउरुसारसमापकजीवप्रज्ञापनाच तच्च भविद्यते उत्तरं व्यवधान भर्ग्यं त्समयेन ये पाते अनन्तरा स्तेचते सिद्धा ध्यानन्तरसिद्धा सिद्धत्वप्रमसमये वक्षमासा इत्यर्थं स्तेचते अरुसारसमापकजीवाद्य अनन्तरसिद्धाउरुसारसमापक जीवा सयां प्रज्ञापना अनन्तरसिद्धाउरुसारसमापकजीवप्रज्ञापना अक्षर्य समतानेकमेवसूचक साया विवक्षिते प्रथमसमये यसिद्ध सत्य यो द्वितीयसमयसिद्धः सपर सत्यापि यस्तृतीयसमयसिद्धः सपरत्यत्र मध्येपिवाध्यान् परेचपररेवेति वीप्यायां, सुयोवरादय इति परम्परसम्बन्धनिष्यतिः

समावण्णजीवपणवणा अस्ससारसमावण्णजीवपणवणा दुयिहा पणसा, सज्जहा—अणतरसिद्धअस्ससारसमाव
ण्णजीवपणवणा परपरसिद्धअस्ससारसमावण्णजीवपणवणा । से किंत्त अणतरसिद्धअस्ससारसमावण्णजीवपण

पञ्चोक्तप्रापना आरभ्यते कश्चि । १ । भक्तिज्योत्पन्नवशा आनन्दवशा दुःखिहा यत्नता तज्जहा । हिवे यथा प्रागे पञ्चोक्ताभेदकज्ञा पदे जीवरा जायपना मिथपदेहे जीवप्रज्ञापनाभाभेद गुणवर्णैः—ते जीवप्रज्ञापना दास्यकारे तेजिन । ससारसमावशजीवपन्नवशा । ससारप्राप्त ते संसारो जीव सभारमोहिरैव ते जीवप्रज्ञापना । अथभारसमावशजीवपन्नवशा । असंसारप्राप्त धर्मसारीजीव ते सिद्धका जीव अमरवित ते पससारसमापदजीवप्रज्ञापना । सेवितपससारसमावशजीवपन्नवशा २ दुःखिहा यत्नता तज्जहा । ते जिमन्न तिमं असंसार सम्प्राप्त जीवप्रज्ञापनामा शयमेदकज्ञा तेहीजवर्णैः—ससारसमावशजीवपन्नवशा । ते ससारक जीवप्रज्ञापना । अससारसमावशजीवपन्नवशा । अससारव्य जीवप्रज्ञापना येवितपसमारसमावशजीवपन्नवशा । ते कुंच असंसारसमाप्त जीवप्रज्ञापना । अससारसमावशजीवपन्नवशा इतिहा य तज्जहा । असंसार समाप्त

यदः शरीरनिर्वाणः नेपथ्येन तत इव शरीरनिर्वाणः प्रयोक्तृत्वा प्रयोक्तृत्वं न ददनेपथ्याभ्यां वेदेति सिद्धत्वाभावात् नेपथ्यस्य वा प्रमादत्वात् प्राक्-
नन्दाप्यपमपूजितत्वं-इत्यपीय स्निग्ध इत्यपि न इत्यपीय उक्तत्वात् ननु तं च तिविधं यदो शरीरनिर्वाणः मेवत्येव इव शरीरनिर्वाणः
पदिगारो न येननवत्येवति । ततः सस्मिन् सिद्धत्वाभावाः सतो ये सिद्धा एते स्त्रीसिद्धसिद्धाः यतेन यदाहु राशाबरा नक्षीकानिवोक्तमिति
तद् प्राप्तं द्रष्टव्यं स्त्रीनिर्वाणस्य साक्षा दनेन मूत्रेण निषागतात् त एतत्तियेयस्य मुत्स्यनुपपन्नत्वा तथाहि-मुक्तिपयो शानदक्षगपरिश्रान्ति स
म्यग्दक्षनज्ञानवारिज्ञानि मोक्षमात्र इतिवचनात् स्वयग्दक्षमादीनि पुरुषावाग्विव स्त्रीका न प्ययिक्तमिति वृत्त्यने तथाहि-दृश्यते स्त्रियोपि सक
समपि प्रवचनाय मन्निरोचयमाना जानते च यन्तावश्यकसात्त्विकोत्सासिकादिनेत्येवमिति श्रुत परिपालयमिति वसदक्षप्रकार मकलङ्क संयमं पारय
न्ति च देवासुराणामपि दुर्गुरं प्रक्रमय त्वयंत च तयोनि मासद्यप्यादीनि ततः कथं पितृ न तासा मोक्षसंभवः ? (नन्वाप्राह) स्या देतद स्ति स्त्रीकां स्वयग्

दशनं ज्ञान वा न पुनद्यादित्रं संयमाभावात् तथाहि-स्त्रीका मवश्य वलपरितोनेन मविष्य मव्यथा चितृतांग्य सा स्तिर्येकस्त्रियद्व पुरुषाका
मन्निमयनीया जययुः, लोकेच नर्ही पञ्चायते ततो यदय ताजि वल परितोनेन वलपरितोने च सपरियद्वत्वा, सपरियद्वत्वा च संयमाभाव
इति (मैदानिकः) तदसमीचीनं स्वयग् सिद्धत्वापरिज्ञानात् परिग्रहो हि परमावतो मूक्षां निषीयते मूक्षा परिग्रहो वृत्तो इतिवचनात् तथा
हि-मूक्षारहितो मरत यज्ञधर्मी शान पुरो व्या दर्शकगृहे वसितुमानो मिय्यरिग्रहो गीयत, कस्यथाकवलोत्पादो न सज्जयेत् अपिच-यदिमूक्षाया
यनावेपि वलमसगमात्र परिग्रहो मदे ततोत्रिजगत्प्रतिपन्नस्य कस्यचि त्वापो सुपारकवानुपक्ते प्रपतति ज्ञीते केना प्यविषयो पनिपात मद्य
ज्ञीत मिति विनाप्य पर्माप्यमा धारमि वल्ले प्रणिते तस्य मपरियद्वत्वा जवेत् नर्ही तद्विष्ट तस्मा च वलमसगमात्र परिग्रहः किं तु मूक्षां सा
च स्त्रीकां यत्वादिपु न विद्यात पर्माप्यकरमात्रतया तस्यो पादानात् न खनु ता वल मंतरेका स्नान रक्षयिषु मीयते नापि ज्ञीतकाम्यादिपु

इद्वितीयकृत्यातिरिक्ते रपिकार आश्रय गन्धार्थपयनभूविज्ञान-दुविज्ञा अयमुद्धा तिरथपरवहरिता य इव वहरिते हि अहिगारो इति, प्र
त्यक्षयुद्धा स्तु पाश्चात्प्रत्यय मयस्य प्रत्येक बाह्य वृषभादिक कारक मभिधमीस्य युद्धा प्रत्येकमुद्धा इतिव्युत्पत्तेः तथाच श्रूयते बाह्यप्रत्ययस्यापेक्षा
प्रकरणद्वितीयां योपि- यद्विप्रत्यय भवेत्य च तेमुद्धाः सतो नियमताः प्रत्येक मेव विहरन्ति न गन्धार्थसिद्धय सहताः आश्रय गन्धार्थपयनभूविज्ञान-
पत्तेय याध्यं वृषभादिक कारक मभिधमीस्य युद्धाः यद्वि-प्रत्ययप्रतिबुद्धाना पत्तेयं नियमा विहारो जगद्वातम्भाय त न पत्तेयमुद्धा इति तथा
स्वयम्युद्धाना मूपचि द्वौगुणविषय पात्रादिकः प्रत्येकमुद्धानास्तु द्विधा अपत्यत सप्तो त्वपत्यत तत्र अपत्यतो द्विविधः सत्कर्पतो भवविधः
प्रावरकवज उक्तं-पत्ययमुद्धाक जगत्कव दुविज्ञो उक्तोमेवं भवविज्ञो नियमा पावरकवजो प्रवह ति तथा स्वयमुद्धाना पूर्वोक्तं सुत भव
ति धानवा यदिप्रवति ततो सिङ्गं दवतावा प्रपच्छति गुरुसक्तिर्षीवा गत्वा प्रतिपद्यते यदिचे काष्ठी विहरकसमयं इच्छन्वा तस्य तथाकृपा जा

यते तत एकाब्दी विहरति अन्यथा गच्छन्वासे उवतिष्ठते अथ पूर्वोक्तं सुत तस्य भवति तदिं निर्देभा गुरुसन्निधौ भत्वा सिङ्गप्रतिपद्यते गच्छ
न्वा वश्य ममुच्छति तथाचोक्त-पुष्पाश्रीय मय से इव द धान वा अह से भस्मि तो सिङ्ग, नियमा गुरुसक्तिवि पञ्चिविज्य मध्येय विहरइति
अह पुष्पापीय सुपर्वमवो इत्यि तो सस्मि न देवया पञ्चिविज्य गुरुसक्तिदेवा पञ्चिविज्य इत्यु य एगविहारविहरकसमयो इच्छन्वा से तो एको
देव विहरइ अत्रात्र गच्छ विहरइति । प्रत्येकयुद्धानास्तु पूर्वोक्तं सुतं नियमतो भवति, तत्र अपत्यत एकादशाङ्गान्मु त्वपत्य किञ्चिन्मूनानि
नृतापूयाणि तथा सिङ्गं तस्मै देवता प्रपच्छति सिङ्गरहितोवा कदाचि भवति तथाचोक्त-पत्तेयमुद्धा पुष्पाश्रीय मय नियमा इव द जगत्कव एका
रमर्षणा उक्तोभव निकटसपुष्पी भिन्नच से दयया पयच्छइ भिगवज्जिठं वा प्रवह जठं जडिय रूप्य पत्तेयमुद्धा इति । ६ । तथा युद्धा आश्रयो स्ते
योपिताः सतो य सिङ्गा स्ते युद्धयोपितानिद्धाः । ७ । यतेच सर्वपि केचि त्व्योसिङ्गसिद्धाः सिङ्गासिङ्ग योसिङ्ग खीत्स्वस्यो पल्लवकमित्यर्थ- तद विद्या

त्यानाबोद्ध स्ततो आ वसीयते ननु यदि तत्र दृष्ट क्षर्षिं कथं मन्वावसीयते न तस्यु यदि ध्यासिमात्रेण हेतु नेमको प्रवर्तति किं स्वस्तव्योऽस्या, उक्त
 भ्यांसि च प्रतिवन्ध्यस्तन न वा न प्रतियत्यो विद्यते न तस्यु सप्तमपुष्पिवीनमनं निर्वाहगमनस्यकारण नापि सप्तमपुष्पिवीनमनाविमानावि नि
 र्वाहगमनं चरमदारीरिकां सप्तमपुष्पिवीनमन मन्तरचे च निर्वाहगमनाज्जावात् न च प्रतिवन्ध्य भस्मरेण एकस्या भावे, न्यस्या वक्ष्य भजावो माप्राप
 त् यस्या तस्य वा कस्यचिद् भावे सर्वस्या भावप्रसङ्गः यद्ये च तर्हि कथं समुच्छिमादियु निर्वाहगमनाज्जाव इति? उच्यते-तथाप्रवक्ष्यामि जाव्यात् त
 दाहि-समुच्छिमादयो जवस्तन्नाववयव न सम्यग्दर्शनादिकं यथाव ह्यतिपत्तुं शक्यते ततो न तयो निर्वाहसप्तजः स्त्रिय स्यु प्रागुक्तप्रकारेण च
 याव हसम्यग्दर्शनादिद्वयत्रयसम्प्रदोऽस्या काल साक्षां न निर्वाहगमनाभावाः अपि च मुक्तपरिसर्यां द्वितीया मेव पुर्यिची याव द्रुक्कन्ति न परतः
 परपुष्पित्रीगमनहेतुतावास्तूपमनोवीपंपरिक्त्यज्जावात् तृतीयोयावत्पुष्पिच द्रुत्तुचीं कतुप्यदा पञ्चमी सुरगा अप्य च सर्वं प्यु हे मुत्कर्पताः
 सङ्चार याव द्रुक्कन्ति तत्रा चागतिवियव मनीवीयंपरिक्तित्वेवम्यदर्शना दूदुगतव पि च न त त्वेयम् छाह च-विपमगतयो व्यपक्ता दुपरिहा
 नुस्यामासङ्कार । गच्छन्ति चतिये च सदभोगत्वनतादुः ० १ ४ तथाचसति सिद्ध क्षीपुसा भोगतिवैपम्ये पि निर्वाहं समं, यद् प्यु च अपि च
 यासां भावस्तथा वित्यादि तद् प्यप्तीस यादिविकुवं चत्वादिसिद्धिचिरहे पि विशिष्टपूवगतनुताभावे पि मानुषादीना निमेषसपदापिचमभ्रवका
 दा इव-वादाविकुचत्वादिसिद्धिचिरहे द्रुते क्षनीयसि च क्षिणकल्पमल पयैवचिरहे पि न सिद्धिचिरहे स्ति अपि च यदि वादादिसम्प्रज्ञाववत्
 निःशेषसामावा पि क्षीका मन्त्रविष्यत् तत क्षयेव सिद्धिंते प्रत्यपावयिष्यत् यथा चक्षुगो दारात् केवस्तज्ञानाभावो न च प्रतिपाद्यते तस्या दु

इत्थील्लिगसिद्धा ८ पुरिसल्लिगसिद्धा ९ नपुसकल्लिगसिद्धा १० सल्लिगसिद्धा ११ स्यसल्लिगसिद्धा १२ गि

उपदेष्टेयदेवैवरो जडवत् । इत्थास्तिमसिद्धा ८ । स्तोत्रियेनिधर्षाग्रोर तेजोसिद्ध । पुरिमसिद्धा ८ । पुपुवचिद्धिचिरहे गणधरसाधुसपाध्याय । नपुसक
 सिगनिद्धा १ । क्षपिम क्षीपाद्यानपुमक तेसिद्धवत् । सल्लिगसिद्धा ११ । सल्लिगोसिद्धपामेने । चत्तसिद्धिचिरहे १२ । पयैवैवैवरोदिद्ध । गिद्धिसिद्धा १२ ।

[illegible][illegible]

त्याजावोवृष्ट हाती या बघीयते मनु यदि तत्र दृष्ट साक्षिं कथं मन्त्रावसीयते, न खलु अहि व्योसिमात्रेण हेतु यमको प्रावति किं स्वत्तव्योऽस्याः, उक्त
 व्योसि यं प्रतिबन्धयन्न न या न प्रतिबन्धो विद्यते न खलु सप्तमपृथिवीगमन निर्वाहगमनस्यकारणं नापि सप्तमपृथिवीगमनाविभाजावि नि
 र्वाहगमनं चरमस्मरीतिवा सप्तमपृथिवीगमन मन्त्ररथे न निर्वाहगमनाजावात् न च प्रतिबन्ध मन्त्ररेण एकस्या भावे, व्यस्या अर्थं मन्त्रावो साम्राप
 त् यस्य तस्य वा कस्यचिद् प्रादे सर्वेसा प्राचप्रसङ्गः यद्ये यं सविं कथं धभूषिमाविषु निर्वाहगमनाजाव इति? उच्यते-तथाप्रवस्थाभाष्यात् त
 माहि-समूच्छिमादयो त्रवस्त्रजावतएव न सम्यग्दक्षिणादिकं यथाच एप्रतिपत्तुं कल्पते ततो न तयां निर्वाहसप्तव स्त्रियं सु प्रानुसप्तकारेण य
 प्राव तस्यग्वक्षमादिरवत्रपसम्ययोग्या क्तत साक्षां न निर्वाहगमनाजाव अपि च मुखपरिसर्यो द्वितीया मेव पृथिवी याव द्रुच्छन्ति न परतः
 परपृथिवीगमनहेतुजायाकूपमनोवीपपरिकृत्यजावात् सुतोयायावत्पुच्छेण द्युयो यत्तुप्यदा यन्मसी मुरगा, अथ च सर्वे प्यु न मुक्कपेतः
 चखलार याव द्रुच्छन्ति तथा योगतिथियय मनोवीपपरिकृतिवैषम्यदक्षिणा दृढगताय प्यि च न त द्वैपस्यु आह च-विषमगतयो प्यचला दुपरिष्टा
 नुस्वभाववत्कारं। गच्छन्तिपतिपेन्म सादयोगत्पूजनादुः ॥ १ ॥ तथाचसति सिद्ध लीपुसा मयोगतिवैयम्ये प्यि निर्वाहं समं यद प्यु च अपि च
 याथा वादसम्भा वित्यादि तद व्यक्तीनं वादिविकुर्वत्वाविसिद्धिविरहे प्यि विविष्टपूवगतसुताप्रावे प्यि मानुषादीना निर्मेयसपदाधिवमभवत्वा
 दा इव-वादविक्षुयत्वाविसिद्धिविरहे भूत कनीयसि च विनक्षपमनःपर्यवचिरहे प्यि न सिद्धिविरहो हि अपि च यदि वादाविसम्भवाववत्
 निःश्रेयसामावा प्यि लोका मन्त्रवियत् तत सम्येव सिद्धाते प्रत्युपावयिष्यत् यथा अतुपुनो दारात् केवलज्ञानामावा न च प्रतिपाद्यते तस्या दु

दृष्ट्यीलिगसिद्धा ८ पुरिसलिगसिद्धा ९ नपुसकलिगसिद्धा १० सलिगसिद्धा ११ व्यसलिगसिद्धा १२ नि

उपदेप्रदेवेचरो अनुदत्त। द्वाविमसिद्धा ८। शोचिमेनिमर्णागरोर तेखीविह। पुरिससिद्धिपदिता ८। पुरुपविहविहसिद्धिग यचधरसाधुतपाध्याय। नपुसक
 सिमिमिदा १। अविम कीयोदानपुसक तेविहदृष। चलिगसिद्धा ११। अलिगसिद्धा १२। अविमसिद्धा १२। अविमसिद्धा १२। अविमसिद्धा १२।

पपद्यते स्त्रीया निर्वाह मिति कृतं प्रसङ्गेन ॥ तथा पुच्छिङ्गे छरीरनिर्देतिरूपे व्याख्येयता सन्तो ये सिद्धा सो पुच्छिङ्गसिद्धा एव ननुसकसिद्धसि
 द्धाः ॥ १० ॥ तथा स्वतिङ्गे रजोहरबादिरूपे व्याख्येयता संतो ये सिद्धा सो स्वसिद्धसिद्धाः ॥ ११ ॥ तथा अन्यसिङ्गे परित्राजकादिसम्बन्धिनि यस्य
 सक्तयायादिरूपे द्रव्यसिङ्गेव्यवस्थिता संतो ये सिद्धा सो अन्यसिद्धसिद्धाः ॥ १२ ॥ यद्विस्मिङ्गसिद्धा यद्विस्मिङ्गसिद्धा मरुदेवीप्रज्जुतया, तथा एकस्मिन् स
 मये एककायवसन्तः सिद्धा एकसिद्धा इति ॥ एकस्मिन् समये ओष्क सिद्धा चनेकसिद्धाः चनेके च एकस्मिन् समये सिद्धान्त उत्पन्न
 यतो ऽष्टोत्तरयत्तवद्वा धदितव्या यस्मा दुल्लं-वस्तीवा जलयाता सही वातहरीय बोधद्वा ॥ बुलसीध छन्नसह दुरधिषमहुत्तरसर्वं च ॥ ११ ॥ य
 स्या विनयजकानुपहाय व्याख्या-बही समयान् याव बिर्लत्तर मेकादयो द्वाविद्यत्ययन्ताः सिद्धान्तः प्राप्यन्तः सिद्धान्तः किं मुक्तं जवति? प्रथम समय अथम्यत
 रजो ह्रीं वा उत्कथतो द्वाविद्यतिरिक्त्यन्ता प्राप्यते द्वितीये पिय समये कथम्यत एको ह्रीं वा उत्कथतो द्वाविद्यत् एवं यावदष्टमे पिय समये एको
 द्वा वुत्कथतो द्वाविद्यत् ततः परम वक्ष्य मन्तरं तथा प्रयत्निकदादयो एवत्वारिद्यत्ययन्ता निरन्तर सिद्धान्तः सप्तसमयान् याव द्वाप्यन्तो परतो
 नियमा इकार तथा एकोनपञ्चाद्वदादयः यद्विषयेना निरन्तरं सिद्धान्तः षट्समयान् यावद व्याप्यन्त परतो जवत्य मन्तर तथा एकपञ्चादयो द्वि
 सप्ततिपयन्ता निरन्तरं सिद्धान्त उत्कथतः पञ्चसमयान् यावद व्याप्यन्तो ततः परम भवं त्रिसप्तत्यादय यतुरधीतिपयन्ता निरन्तरं सिद्धान्त उत्कथ्यतः
 यतुरःसमयान् याव सप्तञ्च मन्तर, तथा पञ्चाधीत्यादयः पञ्चत्रति पर्यन्ता निरन्तरं सिद्धान्त उत्कथत स्त्रीन्समयान् याव त्परतो नियमा दन्त
 रं तथा सप्तमवत्यादयो द्युत्तरसप्तपयन्ता निरन्तरं सिद्धान्त उत्कथ्यतो ह्रीं समयी परतो वक्ष्यमन्तर तथा द्युत्तरसप्तपयन्ता ऽष्टोत्तरसप्तपयन्ताः
 सिद्धान्तो नियमा एकमेवसमयं यावद व्याप्यन्तो न द्विष्यादिसमयान् तद व मकस्मिन् समये उत्कथतो ऽष्टोत्तरयत्तवद्वाः सिद्धान्त प्राप्यन्तो इत्य

द्विलिगसिद्धा १३ ध्वंगसिद्धा १४ सप्तं अणतरसिद्धसंसारसमाग्रसुजीवपञ्चवया । से कि

यद्विस्मिङ्गसिद्ध प्रथमजिनमातामरुदेवीपरे । एगसिद्धा १७ एकमेवमेनिङ्गसिद्धा ते एकसिद्ध । चनेकसिद्ध एकमेवमेनिङ्ग ते । सेतपञ्चम-रुदिसि

स्या विनयजनानुग्रहाय व्याख्या-अहो समयान् याव निरन्तर मेकादयो द्वित्रिंशत्सयन्ताः सिद्धान्तं प्राप्यन्ते किं भुक्तं प्रवर्तति ? प्रथम समय अथन्यत यको ह्यो या उत्कपतो द्वित्रिंशत्सिद्धान्तः प्राप्यन्ते द्वितीयं पि समये अथन्यत एको ह्यो वा उत्कपतो द्वित्रिंशत्, यव यावदष्टमे पि समये यको ह्यो पुरस्कपतो द्वित्रिंशत् तत पर मवश्य मन्तर तथा त्रयस्त्रिंशदादयो सुषत्वारिंशत्सयन्ता निरन्तरं सिद्धान्तः सप्तसमयान् याव त्प्राप्यन्ते परतो नियमा दमारः तथा यकानपञ्चाशदादयः पट्टिपयन्ता निरन्तरं सिद्धान्तं पट्समयान् यावद वाप्यन्त परतो अवश्य मन्तरं तथा एकपञ्चादयो द्वि सप्ततिपयन्ता निरन्तरं सिद्धान्त उत्कपन्तः पञ्चसमयान् याव द्वाप्यन्ते ततः पर मन्तर त्रिसप्तत्वावयव द्यसुर्यतिपयन्ता निरन्तरं सिद्धान्त उत्कपन्त द्यतरममयान् याव ततत्रसु मन्तर तथा पञ्चाशीत्यादयः पञ्चसतिपयन्ता निरन्तरं सिद्धान्त उत्कपन्त रत्नीन् समयान् याव त्परतो नियमा दन्त र तथा सप्तमवयवत्यादया द्युत्तररक्षतपयन्ता निरन्तरं सिद्धान्त उत्कपन्तो ह्यो समयो परतो वश्यमन्तरं तथा द्युत्तररक्षतादयो ऽष्टोत्तररक्षतपयन्ताः सिद्धान्त नियमा शकमेवममयं यावदवाप्यन्ता न द्विभ्राविसमयान् तद व मकस्मिन् समये उत्कपन्तो ऽष्टोत्तररक्षतसङ्ख्याः सिद्धान्तं प्राप्यन्ते इत्य त्कानिदृशः उत्कपन्तो ऽष्टोत्तररक्षतप्रमाणा वेदितव्याः आह-तीर्थसिद्धातीर्थसिद्धज्जपनेदद्वय यव शेषमदा यन्त प्रवर्तन्ति त त्किमयं शेषमेवापा दार्मं ० यन्तमवर्तन्ति पर न तीर्थसिद्धाऽतीर्थसिद्धज्जद्वयोपादानमात्रा ष्वेयनेदपरिह्वानं प्रवर्तन्ति विद्वदपरिह्वानार्थेय एव द्वास्तरात्मप्रयास इति अथ प्रदयादात्म उपसहारमाह- सेत मित्यादि ॥ से पा यन्तरसिद्धाऽवसारसमापकबीजप्रस्थापना ॥ सक्तिममित्यादि । अथ का सा परम्परसिद्धा

त परपरसिद्धश्चसत्सारसमायसुजीवपणव्रणा ? परपरसिद्धश्चसत्सारसमायसुजीवपणव्रणा स्युणेगयिहा प०
तंजहा-स्युपठमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाय सखेज्जासमयसिद्धा स्युसखेज्जा

इपममारनमावषज्जावपणव्रणा ततिकाहोत्र जिम यन्तरसिद्धसत्सारसमायसुजीवपणव्रणाअहो ॥ सेति त । गिष्यपक्षे सुवर्ततेअ तिकाहोत्रटरमा वेहे । पटपरसिद्धजनसारसमायसुजीवपणव्रणा २ । परपरसिद्धवसत्सारसमायसुजीवपणव्रणा । अथगजिहापत । त यन्तप्रमदः २५५०तेकहे । पपठमस

उभेनारममापत्रभीवमप्रापना ? मूरिराह-परम्परसिद्धाससारसमापकजीवप्रज्ञापना एवेकविधा प्रज्ञा परम्परसिद्धाना ममेकयिषत्वा त देवा
 नकयिषत्वा माह-तत्रते त्यादि ॥ तद्यथे त्यजेकविषयत्वोपदक्षणे अप्रथमसमयसिद्धाहति न प्रथमसमयसिद्धा अप्रथमसमयसिद्धाः परम्परसिद्धविक्रिय
 अप्रथमसमयवर्तिनाः सिद्धत्वमप्या द्वितीयसमयवर्तिन इत्यर्थः आदिपुस्तकमप्यु द्वितीयसमयसिद्धादय उच्यते-यद्वा सामान्यतः प्रथम समयसिद्धा
 वत्पूतं तत एत द्वितीयेतो व्याचष्टे द्वितीयसमयसिद्धा स्तिप्रथमसमयसिद्धा यतःसमयसिद्धाहत्यादि यावच्छृङ्खरकात् पञ्चसमयसिद्धादयः परिरञ्जन्ते
 सप्तमित्यादिनिगमनद्वयमुक्तं तदव नुक्ता असेसारसमापकजीवप्रज्ञापना । सम्यक्सिद्धसारसमापकजीवप्रज्ञापनामज्जिचित्तु स्तद्विषय प्रज्ञसूत्र माह
 मकितमित्यादि । अथ का सा संसारसमापकजीवप्रज्ञापना ? मूरिराह-संसारसमापकजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञा तद्यथा-एवेकत्रियससार
 ममापकजीवप्रज्ञापना इत्यादि तत्रैव स्पष्टंनलसवन्निर्दिष्टं यथान्ते एकस्त्रियाः एयिष्यन्त्युक्तजीवायुवमरुतयो वक्ष्यमावक्ष्यका स्ते एते संसारस

समयसिद्धा व्युत्पन्नसमयसिद्धा, सेत परपरसिद्धश्चससारसमायसुजीवपशुवणा । सेत अससारसमायसुजी
 वपशुवणा । से कित संसारसमायसुजीवपशुवणा ? संसारसमायसुजीवपशुवणा पञ्चविहा पशुत्ता तजहा
 एगिदियससारसमायसुजीवपशुवणा येद्विदियससारसमायसुजीवपशुवणा तेद्विदियससारसमायसुजीवपशुव

मयसिद्धा । अथतत्समयसिद्ध मध्यमसमयवदा वायैवमवे सोवात अथमसमयसिद्धा । पुनमवसिद्धा । इमवीकाममयनासिद्ध । तिसमयसिद्धा । तोचासमयना
 सिद्ध । अथमयसिद्धा । इमवीकाममयनासिद्ध । कावमयसिद्धमयसवसिद्धा । इमवीकाममयनासिद्ध । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । इमवीकाममयनासिद्ध ।
 माभिः अथमा मयसमयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा ।
 तदमयसमयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा ।
 पायैगिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा । अथतत्समयसिद्धा ।

नापञ्चमीयात् तेषामप्रापना एकस्मिन्प्रसंसारसमाधसुजीवप्रपञ्चापना, एवं सुषपदे दधरपटमा कार्यां मवरं द्वेस्पर्शनरसमाप्तच्छे इन्मित्रिये येया ते
 द्वीन्द्रियाः सुंरुष्टास्त्रिकादयः श्रीदि स्पर्शनरसमाप्राप्तसत्त्वानि इन्द्रियाणि ययां ते श्रीन्द्रियायूकामस्तुबादय यत्त्वारि स्पर्शनरसनाप्राप्तसत्त्वानि
 ज्ञानि इन्द्रियाणि ययां ते चतुरिन्द्रियाः दधमज्ञाकादय पञ्च स्पर्शनरसनप्राप्तसत्त्वानि इन्द्रियाणि यया त पञ्चन्द्रियाः महस्यमकरमनु
 बादयः प्रमीयाण्ये कादि सङ्क्रान्ता मिन्द्रियाणां स्पर्शादीनां मसंख्यवहारराक्षो रारस्य प्रायोमेवैव क्रमेण साज इति सम्प्रत्ययार्थं मित्य क्रमेणै
 केन्द्रियाद्युपपन्नाः इन्द्रियाणिचिद्विषया-इत्येन्द्रियाणि मावेन्द्रियाणि च तत्र इत्येन्द्रियाणि निवृत्युपकरणरूपाणि तानि च सविस्तारं लक्ष्ययमटी
 काया व्याख्यातानीति भद्रयो व्याख्यायते प्रावेन्द्रियाणि सुयोपलभोपयोगरूपाणि तानि च नियतानि एवेन्द्रियाणामपि सुयोपलभोपयोग्यो
 मद्रूपं प्रावेन्द्रियपञ्चकसम्भवः केवाचित्तत्त्वसद्वानात् तथापि-बहुसादयो भक्तकामिनीगीतपञ्चमिववसविसावकटाचनिरीचकमुकितिसुरागरभूय
 तस्याप्रावरसास्वादपदाद्यवयवरपञ्चमतः प्रमोदप्रावेमकासरोप मुपलभ्यन्ते पुष्पकतानिप्रपञ्चन्ते रुक्म - लंकिरवतसाइवं दीसइसेवेदितवस्तजोवि
 तेवत्यितहायरव स्वठवसमसंभवोतेसि ॥ १ ॥ ततो भद्रावेन्द्रियाणि लौकिकव्यवहारपथायतीर्कैकस्त्रियादिव्यपदेशनिबन्धनं किन्तु द्रव्यस्त्रियाणि,
 तथापि-येयामेक बाह्य इत्येन्द्रियरूपकमसकनिति ते एवेन्द्रियाः येया द्वे तेद्वीन्द्रिया एव यावत् यया पञ्च तेपञ्चेन्द्रियाः बाह्य-पञ्चिद्विषयि

णा चउरिदियससारसमाधसुजीवपसुत्रणा पचिदियससारसमाधसुजीवपसुत्रणा । से कित एगिदियससार
 समावसुजीवपसुत्रणा ? एगिटियससारसमाधसुजीवपसुत्रणा पचविहा पसुत्रा , तजहा - पुढयिकाइया

श्लोक १ । बर्दिवमसारसमाधसुजीव । बर्दिवमसारसमाधसुजीवपसुत्रणा २ । तद्विदियससारसमाधसुजीवपसुत्रणा । तद्विदियससारसमाधसुजीवपसुत्रणा
 चो १ । चउरिदियससार पचिदियससारसमाधसुजीवपसुत्रणा ३ । चउरिदियससारसमाधसुजीवपसुत्रणा ४ । चउरिदियससारसमाधसुजीवपसुत्रणा ५ ।
 पचविहापत । तेदियपदे व्यानोत्रोतिम ३३ चहा ते एकेगिदियस ॥ १ ॥ तजहा तेद्वीन्द्रियाणो चो १ तेतिमशोच । पुढ

उभेभ्योऽप्यत्रोपपन्नयोः परस्परसिद्ध्याः परस्परसिद्ध्याः प्रकृता परस्परसिद्ध्याः मनेकविधत्वात्, न देया
 मनेकविधत्वात् माह-तत्र चेत्त्यादि । तद्यथा त्वेनेकविधत्वोपपत्तये अप्रथमसमयसिद्ध्या अप्रथमसमयसिद्ध्याः परस्परसिद्धिविधेय
 अप्रथमसमयसिद्धिः सिद्धत्वमप्यत्र द्वितीयसमयसिद्ध्याः द्वितीयसमयसिद्ध्याः द्वितीयसमयसिद्ध्याः द्वितीयसमयसिद्ध्याः
 इत्यन्ते तत एत द्वितीयसमयसिद्ध्याः द्वितीयसमयसिद्ध्याः द्वितीयसमयसिद्ध्याः द्वितीयसमयसिद्ध्याः
 सप्तमित्यादिनिगमनस्यसुखं तद्वत् भूत्वा अर्थसंसारसमापकजीवप्रज्ञापना । सम्यक्तिसंसारसमापकजीवप्रज्ञापनाः प्रथमसूत्रं माह
 मनेकविधत्वात् । अथ का मा संसारसमापकजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह-संसारसमापकजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रकृता तद्यथा-एकस्मिन्निवससार
 ममापकजीवप्रज्ञापना इत्यादि तत्रैव स्पष्टमन्तरमिदं येषां एकस्मिन्निवससारसमापकजीवप्रज्ञापनाः पञ्चविधत्वात् तेषां संसारसमापकजीवप्रज्ञापनाः

समयसिद्धाः अणतसमयसिद्धाः, सेत परपरसिद्धसंसारसमापकजीवप्रज्ञापना । सेत अणतसंसारसमापकजीव
 प्रज्ञापना । से कित संसारसमापकजीवप्रज्ञापना ? संसारसमापकजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रकृता तजहा
 एगिदियसंसारसमापकजीवप्रज्ञापना येद्विदियसंसारसमापकजीवप्रज्ञापना तेद्विदियसंसारसमापकजीवप्रज्ञापना
 मनेकविधा । अथ मनेकविधत्वात् मनेकविधत्वात् मनेकविधत्वात् मनेकविधत्वात् मनेकविधत्वात् मनेकविधत्वात्
 सिद्धाः । अथ मनेकविधत्वात् मनेकविधत्वात् मनेकविधत्वात् मनेकविधत्वात् मनेकविधत्वात् मनेकविधत्वात्
 नाति । अथ मनेकविधत्वात् मनेकविधत्वात् मनेकविधत्वात् मनेकविधत्वात् मनेकविधत्वात् मनेकविधत्वात्
 तप्यन्तारममापकजीवप्रज्ञापना । तेतिमएतत्संसारसमापकजीवप्रज्ञापना इति संपूर्ण । सेतिसंसारसमापकजीवप्रज्ञापना इति । से
 पात्रेति च इति कुतिसंसारसमापकजीवप्रज्ञापना । पञ्चविधत्वात् पञ्चविधत्वात् पञ्चविधत्वात् पञ्चविधत्वात् पञ्चविधत्वात् पञ्चविधत्वात्

काय मूर्त्तनामकर्माद्व्याससूक्ष्मा यादरमाभकर्माद्व्यादादरा कर्माद्वयवर्जित सस्यते मूर्त्तमवादर्त्त ना पेशके घट्टरभक्तयो रिय मूर्त्ताय ते पृथिवीकायिका य मूर्त्तमपृथिवीकायिकाः पञ्चाशुः स्वगतपयासाऽपर्यासजैवपूषकः वादरा य ते पृथिवीकायिकाय वादरपृथिवीकायिका अत्रापिचद्वाशुः स्वगतशब्दरायाशुकादिजैवससूषकः तत्रमूर्त्तमपृथिवीकायिकाः समुद्रकपर्णसामप्रक्षिप्तगन्धाययववत् सक्तलोकाप्यापिनो वादराः प्रतितनिय तदेवञ्चारिण क्षुद्रप्रतितनियतद्वञ्चारिण द्वितीयपदेशप्रकटयिष्यन्ते तत्र मूर्त्तमपृथिवीकायिकाना स्वरूपं जिज्ञासु रिवमाह-संक्षितमित्यादि ॥ अथ कृतमूर्त्तमपृथिवीकायिकाः ? दूरिराह-मूर्त्तमपृथिवीकायिका द्वित्विषा प्रकृता-पयाससूक्ष्मपृथिवीकायिका द्वा पर्याससूक्ष्मपृथिवीकायिकाय तत्रपयासितास आङ्गारादिपुद्गलतद्वञ्चारिणमनहेतु रात्मनः शक्तिविशेष स च पुद्गलापघया दुपत्रापते, किं मुक्त प्रवर्तते - उत्पत्तिदेवमागतैन प्रथमसमये ये यश्चिन्ताः पुद्गला स्तयो तथा न्यथा नर्णपि प्रतिबन्धस्य गृह्यमाकाशो त रसम्पर्कत समुपतया जातानो यः शक्तिविशेष आङ्गारादिव

द्रुतउत्तरमरूपतापादनञ्च नु यथा वराभनताना पुद्गलसिद्ध्यावा माहारपुद्गलकनरसकृपतापरिब्रमणतुः सा च पर्याप्तिर्योडा-आहारपर्याप्तिरिति
जरीरपर्याप्तिरिति द्विपर्याप्तिरिति प्राणायामपर्याप्तिरिति मनःपर्याप्तिरिति यत् तत्र यथा बाह्यमाहारमादाय कनरसकृपतया परिब्रमयति साह्य
रपर्याप्तिरिति यथा रवीन्द्रतमाहार रसासृग्मासमेदास्त्रिजन्मशुक्लसफस्रसहस्रधातुसकृपतया परिब्रमयति साह्यरीरपर्याप्तिरिति यथा प्रातुरुपतया परित्य
मित माहार मिद्विपरूपतया परिब्रमयति सा इन्द्रियपर्याप्तिरिति अपञ्जलसुषुम्णमुहविभाषया तथा वा य मर्या उच्यते पित्तमयतरङ्गास्त पञ्चा
ना मिन्द्रियाणां प्रायोग्यान् पुद्गलान् शृङ्गत्वा आश्रोगनिवर्तितत्वेन धीर्यं तद्वाक्यमपनङ्गतिरिति यथा पुन कण्ठासप्रायोग्यान्
पुद्गलानां दायो ऋासकृपतया परिब्रमयत्या सख्य च मुच्यते सा कण्ठासपरापर्याप्तिरिति यथा तु माथाप्रायोग्यान् पुद्गलानां दाय प्रायात्यन परिब्रमय्या
सख्य च मुच्यते सा माथापरापर्याप्तिरिति यथा पुन मन्त्रप्रायोग्यान् पुद्गलानां दाय ममस्त्वेन परिब्रमय्या सख्य च मुच्यते सा मन्त्रपर्याप्तिरिति यथा य

यदुना मराधुसुविमयायमप्राप्तं महयिममज्जपप विष्टितिविष्किदिद्याप्रावा ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ कासा एकन्त्रियससारसमापन्नखीवमप्रापना ॥
 मूरिराह—एकन्त्रियससारसमापन्नखीवमप्रापना पञ्चविधा प्रकृता एकन्त्रिपाका पण्यविषयत्वात् तदवपञ्चविषयमाह ॥ तत्रैवेत्यादि ॥ पृथिवी
 काठिन्यादिलक्षणा प्रतीता नैव कायाः क्षरीरं येयाते पृथिवीकायाः एव पृथिवीकायिका स्मार्थेवकप्रत्यय अपो ब्रूवा स्ताद्य प्रतीता एव
 ताः कायः क्षरीरयेयाग्नप्रकायाः श्वाकाया एव श्वाकायिकाः तेना वज्रि संदेयकाय क्षरीरयेया त तेजस्त्रायाः तजस्त्राया एव तजस्त्रायाकाः
 वायुः पवन संव वायो यपान्ते वायकायाः वायुकायायय वायुकायिकाः वनस्पतिलेतादिरूप संव वाय क्षरीर यपान्ते वनस्पतिकायाः व
 नस्पतिकायाएववनस्पतिकायिकाः इहसवभूताधारत्वात् पृथिवीकायिकाना प्रथममुपादानं तदनन्तरं तत्प्रतिष्ठितत्वा दृक्कायिकानां श्वाकायि
 काय तत्राःप्रतिपक्षभूता सदनन्तरं तजस्त्रायिकाना मुपादानं तेवद्य वायुसम्बन्धेन प्रवृद्धिमुपयाति तत एतदनन्तरं वायुकायिकयइव वायुयदूर
 न्विता युक्त्यागारिकस्यमता तत्पत ता सदनन्तरं वनस्पतिकायिकोपादानं सम्प्रतिपृथिवीकायिकं ममवबुध्यमानं साद्विषयं विषयः प्रस्र करो
 ति—मेकितमित्याह—अथ क ते पृथिवीकायिकाः? मूरिराह—पृथिवीकायिका द्विविधा प्रकृता साद्यथा—सूक्ष्मपृथिवीकायिकाद्य धादरपृथिवीकायि

श्याउकाडया तउकाडया वाउकाडया वणस्सइकाडया । से कित पुढविकाडया पुढविकाडया दुविहा प०,
 तजहा—सुज्जमपुढविकाडया यादरपुढविकाडया । से कित सुज्जमपुढविकाडया सुज्जमपुढविकाडया दुविहा
 पणसा, तजहा—पज्जससुज्जमपुढविकाडयाय अण्णससुज्जमपुढविकाडयाय, सेससुज्जमपुढविकाडया । से

विचारवा पाउकाडया तउकाडया वाउकाडया वणस्सइकाडया । पुणोकाडयाकोव १ अण्णकाडयाकोव २ वाउकाडयाकोव ३ वाउकाडयाकोव वनस्पतिकाडया ५ । मेकितपठवि
 चारवा २ । तयिषण्णकपूकाडयाअभाभेदकेतमेपकार । द्विविहापत । गुणकैदावप्रकार । सङ्गमपठविचारवा । मूक्ष्मपुढविकारवा । वादरपुढ
 वीकार २ । सेविममपुढविचारवा ५ । त यिषण्ण मूक्ष्मपुढविकारवा ५ । अण्णकाडया ५ । अण्णकाडया ५ । अण्णकाडया ५ । अण्णकाडया ५ । अण्णकाडया ५ ।

पते ते सङ्ख्योपपादकाः ये पुनः करणानि क्षरीरेन्द्रियादीनि न साव क्रियार्तयन्ति अथ वा यदयं निवर्तयिष्यति ते करणाऽप्याप्ताः, उपसंहार मा
इ-सप्त भित्त्यादि ॥ त एत मूलमपुचिबीजायिका सार व मूलमपुचिबीजायिकानमिषाय सप्रति वादरपुचिबीजायिका भन्निधिस्तु सान्निध्यं प्रमसूच
माह-सुक्तिमित्यादि ॥ अथ क ते वादरपुचिबीजायिकाः ? सूरिराह-वादरपुचिबीजायिका द्विविधाः प्रज्ञा सा यथा-संख्यावादरपुचिबीजायिका स
गदवादरपुचिबीजायिका य तत्र संख्या नाम भूषितलोष्टरूपा यदुपुचिबी तदात्मका जीवा यं व्युपचारतः संख्या सते च त वादरपुचिबीजायि
काय संख्यावादरपुचिबीजायिका, अथवा संख्याचयावादरपुचिबीजायिकाः क्षरीरेयेयात संख्यावादरपुचिबीजाया सारव सान्निध्ये क प्रत्यय विचा
नात् संख्यावादरपुचिबीजायिका य उद्धो वस्तुमात्रसंगतानकमेदसूचकः, एता नाम पुचिबीजाङ्गतविद्यपङ्काठिभ्यधिशेष आ यथा तदात्मकाजीवा
यपि एता सते च त वादरपुचिबीजायिका य एतावादरपुचिबीजायिका अथवा पूर्ववत् प्रकारात्तरव समास य शब्द संगतवस्तुमात्रसङ्ख्यारिक्ते
दसूचकः ॥ संक्तिमित्यादि ॥ अथ के तसंख्यावादरपुचिबीजायिकाः ? सूरिराह-संख्यावादरपुचिबीजायिकाः सप्तविधा प्रज्ञा सा देयसप्तविधत्वं त
द्यप्यस्यादिनो पदसप्तयति-रूपमसुप्तिका कामसुप्तिका एवमीत्युक्तिका साहितसुप्तिका हारित्रसुप्तिका शुक्रसुप्तिका इत्यवयवज्ञानपञ्चविधत्वं
कम् पाश्चात्त्युक्तिकानाम दयविक्षयेयाचरीरूपासतीपावशूइतिप्रविद्धा तदात्मकाजीवा अप्यनेवोपचारात् पाश्चात्त्युक्तिके त्युक्ता ॥ पञ्चगमहिंयति ॥ नद्यादि

लोढियमत्तिया हालिदमत्तिया सुक्लिप्तमत्तिया पन्नुमत्तिया पणगमत्तिया । सेत्त सग्गयादरपुढाविकाइया ।

गुणकदेशे, भवद्वयवत्पुटविकाश्याय खरबाधवत्पुटविकाश्याय । सूक्ष्मात्मकमोक्षयो सुखमाश्वाधरद्वयविकाय प्रयिवीकाय कठिननामकमौक्षयोवाधर
तेष्वरबाधद्वयविकाय । सेवितंस्वद्वयवत्पुटविकाश्याय सप्तविधा परं तन्महा । बाधरप्रयिवीकायमाभेदोऽस्मिन्नेतद्वेपकारे गुरुवत् ते सातप्रकारे कश्चवा येकैष्वे,
त्रिवद्वयविकाश्याय चान्वयस कान्तिद्वय सुखिद्वय परंभुम पञ्चगमद्वया । काश्वीमद्वो १ रातोमद्वो २ रातोमद्वो ३ योकोमद्वो ४ योकोमद्वो ५ रसेतरत्नद्वय
विमोमाटो धूस १ पननमाटो ० । मत्तनवत् भायवत्पुटविकाश्याय ते तिमद्वो ३ कोमद्वयवत्पुटविकाश्याय ० सेवितंस्वद्वयवत्पुटविकाश्याय २ पञ्चगमद्वय

यथाक्रम मेरुन्निपाको सुम्भिदवर्वाणा द्वीन्निपादीना सुम्भिर्ना चतुःपञ्च यद् सुङ्गा नवन्ति, तत्रैव प्रश्नापनाभूतटीकास्ता-एकन्निपाका वसको विक्सेन्निपाकां पञ्च सद्भिना यद्वि ति उत्पत्तिप्रथमसमयएव ता यथातथसर्वाश्चापिमुपनिष्यादयितु भारज्यन्ते तमव च निष्ठामु पयान्ति, त द्वापा-प्रथम माहारपर्योहि स्तः क्षरीरपर्योहि स्तः, इन्द्रियपर्योहि रित्यादि आहारपर्योहि स्तः प्रथमसमयमेव निष्पत्ति मुपपद्यते क्षेपा सु प्र त्येव यन्तमुद्भूतैर्न कालेन अथाहारपर्योहिः प्रथमसमय एव निष्पद्यत इति कथं मवसीयते ? उच्यते-यत आहारपदे द्वितीयोद्देशके सूत्रं भिद आहारपर्योहिः अपञ्चएव नते कि आहारएव च आहारए गो० नोचाहारए गो० नोचाहारए इति, तत आहारपर्योस्ता अपर्योशोविपङ्गता ववो पप द्यते नो पपातत्र मागता पि उपपातचेव मानतस्य प्रथमसमय एवा हारकत्वात् तत एकसामयिकी आहारपर्योस्तिभिर्वृत्ति यदि पुन रूपपात क्षेत्रनामतो पि आहारपर्योस्ता पर्योःस्ता तत एवं कति व्याकरवबूब मित्य वक्तुं "वियथाहारएविपङ्गताहारए यथा क्षरीराविपर्योस्तिपु वि यथाहारएविपङ्गताहारए इति सर्वोक्तान पि च पर्योःतीनां परिसमाप्तिकालो तन्मुद्भूतमव पर्योःतयो विद्यते ययान्ते ययोःता अज्जादिभ्य इ ति मत्वर्चोयो अपत्य पर्योःस्ता य तेपूज्यपुचिबीकायिका य पर्योःस्तकवूस्त्वपुचिबीकायिका च द्वाधो स्त्वियपर्योस्तकरपर्योस्तकपक्षगतसेदद्वयवूब को, ये पुनः स्वयोग्यपर्याप्तिसमाप्तिकाला स्त अपयोःता य ते वूस्त्वपुचिबीकायिका य अपयोःस्तवूस्त्वपुचिबीकायिका य द्वाधः करव तन्विनिषयनस्वगतजदद्वयवूबः तथा दि-द्विषिणाः वूस्त्वपुचिबीकायिका अपयोःता स्त द्वापा-सख्या करवै च, तत्र ये अपयोःस्तका एव सतो व

किंतु यादरपुढविकाइया यादरपुढविकाइया दुविहा पणता, तजहा—सगहयादरपुढविकाइयाय स्वरथादर
पुढविकाइयाय । से कित सगहयादरपुढविकाइया २ सत्रविहा पणता, तजहा—किण्हमहिंया नीलमहिंया

का. इत्या अपत्यतमश्च २ । एवैन्द्रियपर्याप्तान् सन्नाप्रतिबोधाय अपर्णास सन्ना प्रतिबोधाय २ । सन्नासुसुप्तपुठविकाराया ते तिमशोभ सक्प्रप्रविबोकायना सोयसेत्
बद्धा तिम, द्विरबादरना । सेभिन्तबायस्पुठविकाराया २ पुत्रिणा पञ्चता । द्विवे ते प्रिन्पूले गुहमते कुत्र ते बादरतेनुवाद्दर पुत्रिविबोकायना द्वात्रभेद्विज्ञा ते

त्वन घातव्या तान्ते य मन्त्रिविधानानि दशयति-योमन्त्राय इत्यादि ॥ योमेष्टकाः २३ च-समुद्यये तस्य २५ शकाः २५ स्वरटिका २६ च-मूत्रमन्त्र-लोचि-
 ताः २७ मरुता २८ मसारगन्ध २९ मूत्रमोक्षक ३० इष्टमोक्षक ३१ चण्डो ३२ गेरिको ३३ ईश्वरगजः ३४ पुलकः ३५ सीनचिकित्सा ३६ चण्डप्रती ३७ च-
 मूर्ध्नी ३८ कस्तकास्ताः ३९ मूत्रकास्ताः ४० तद्व च माद्यायव्या पृथिव्यादयस्तथा दानुर्वज्रमहा द्वितीयगाथया उष्ट्री इतिगाथादय स्मृतीयगाथया गो
 मशकादयो मव नृपयानायया मये तिसहस्रा इत्यादिशतं जयायजतहृष्यगाराइति ॥ ये पि वा न्ये तथा प्रकारा मयिजिदगाः पञ्चरागादय को पि
 उर्यादरपृथिवीकायत्येन सदितव्या ॥ तेसवाष्टौ इत्यादि ॥ तसामाथ्यतो बाहरपृथिवीकायिका-सवासतः कहुपेच द्विखिवा प्रकृता, कटका-प्रयोग
 का मपर्यास्ता य तत्र ये उपर्यास्ता को लयेग्या-पयोसी/शाकव्या समामा इति निशिष्टान् बर्बादीन् समुपगता
 लवादि-बर्बादिमेवविवाया मेते न ह्यन्यन्ते कज्जालिकर्बमेव व्यपेक्षुं किंकारकमि ति चेत् १ उच्यते इष्टरीरिदियर्पयित्यु परिपूर्वोषु सतीपु
 बादराको बर्बादिविनागः प्रकटो भवति भापरिपूर्वोषु ते वा पर्याप्ता उक्तासपर्यास्याऽपर्याप्ता एव विपल्ले ततो न स्पष्टतरवर्गोविक्रिन्नग इत्य

मरगयमसारगन्धे नृपमोयगह्दनीलंय ॥ ३ ॥ चवणगेरुयहसे पुलणसोगिचिण्यथोचधे । चदप्यनवेखलिण ज
 उकतसूरकतय ॥ ८ ॥ जेयावखेततहृष्यगारा ते समासठे दुविहा पयस्ता, तजहा - पञ्चसगाय श्रुपज्जास

विदे मन्त्रिनाम भेद-वर्षे-गामिन्मन्त्राय भवेच्छिष्टेयकाहिकेय ॥ मरुतमसारगन्धे सुवभावग १ दधोसिच १ १ ॥ योमेष्टमन्त्रि १ दधकमन्त्रि २ ये
 कमन्त्रि १ चटिकाकमन्त्रि ३ काहिकाकमन्त्रि ४ मरुतमन्त्रि ५ मसारगन्ध ६ मुखभाषकार ७ इष्टमोक्षक ८ ८ ॥ चदवणगेरुयहसे पुलणसामिचिण्यथोचधे । चद
 यमवदुलि ८ कस्तकाते मूरकतेय ९ ९ ॥ चदनर १ गेरिकर १ १ पुठकर १ १ सोगिचिण्य १ १ एष्टमोक्षे काचवा चण्डप्रमर १ १ चूच कस्तकाकनर
 मूत्रकाकनर १ १ ॥ जेयावखेततहृष्यगारा तममाकभा दुविहा पयस्ता तजहा । जेयाव चनराही तथा प्रकारगा ते सजेयवको हायमेदे कजा ते कहेदे ।
 पञ्चसगाय चपञ्चसगाय, तजवं जते चपञ्चसगाय तेच चपञ्चसगाय । पर्याप्ता भपञ्चसगाय । पर्याप्ता तथा तिर्वा वा पर्याप्ता एतकमिद मयो

पूरमावितद्वो नद्यादिपूरेऽपगतं यो जूमी स्रष्टव्यदुक्तो जलमलापरपर्याय पङ्क्तुः सापनकसृजिका तदात्मकावीवा स्रष्टव्यदोपचारात् पनकसृजि
 का भिगमनमाह-सेतस्रष्टव्यापरपुढविकाइया ॥ तुम्य सक्तितमित्यादि ॥ अथ कते खरयावरपृथिवीकायिका ? खुरिराह-खरबावरपृथिवीकायिका
 यनेकायिपाः प्रप्रसा दत्वारिअङ्गेवा मुस्यतः प्रप्रसा इत्यथः तानेवषत्वारिअङ्गेदाना ह-तण्णहा पुढीवीय इत्यादिमाथाचतुष्टय पृथिवी ति भ्रामा
 सत्यजमायत् पुढपृथिवी नदीतटमित्यादिरूपा चक्षुष्टतरनेवायेकया समुच्चय छकरा संपुपसल्लकसरूपाः ॥ २ ॥ वामुकाः सिकताः ॥ ३ ॥ उपल
 द्दुकापुपकखपरिकर्मकायोग्ग पायाः ॥ ४ ॥ क्षिता पटमयोग्या दवकुसपीठायुपयीनी मद्राभ्यापाकविक्षेप ॥ ५ ॥ सवबंसामुद्रादि ॥ ६ ॥ ख
 मोयहृशादूरसेव ॥ ७ ॥ अयस्तावजपुढीसकल्प्यसुखर्वाभिप्रतीतानि ॥ १३ ॥ वज्रोरीरकः ॥ १४ ॥ हरितासहिमुक्तमनःप्रिस्ताःप्रतीताः सीसयं
 पारदजः ॥ १८ ॥ अज्जन सौवीराज्जनादि ॥ १८ ॥ प्रवाल विद्रुन ॥ २० ॥ अज्जपटस अरिद्रु ॥ २१ ॥ अज्जवालुका अज्जपटसमिभावालुका ॥ २२ ॥ बापरका
 य इति ॥ बादरपृथिवीकाये कनी मेवा इति छेया मखिविवाहा इति च इदस्य मय्यमानत्वात् मखिविवाभानिचमखिनेवाय वादरपृथिवीकायनेव

से कित खरथादरपुढविकाइया ? खरयावरपुढविकाइया अणेगविहा पससा , तजहा-पुढवीयसक्करावा
 तुयापउयलेसिलायलोणूसे । अयतयतउयसीसे रुप्पसुयस्येयवइरेय ॥ १ ॥ हरियालेहिगुलुपु मणोसिलासास
 गजणपवाले । अस्सपणलस्सवालुय यादरकाएमणिविहाणा ॥ २ ॥ गोमेज्जाएयरुयए अकेफलिहेयलोहिहरकेय

प त । ते दिवे अथतेअईसे खरएविबोवठिनवाएरएविबोतेविम खर वठिनवाएर एविबोवायना अनेकमेवदवज्जाते अईसे पुढबोयसक्करावा खयावउ
 वनमिवायसावुमे । अरतंतवतउयसीसे रुप्पसुयस्येयवइरेय ॥ १ ॥ एविबो वाकरासचित १ वातू २ उपस टाकवाबोणू ३ यिवायववायाप्य ४ सेव ते मोटापावाच
 बिया १ पयवाइआति ६ तावा ७ तवयो ८ सोसा ८ रुपा १ साना ११ वण ते बोरा १२ ॥ १३ ॥ हरिवासेहिगुलुए मणोसिलासासगजणपवासे । अथपणलस्य
 वातुय बादरवाएमणिविवाहा ॥ २ ॥ हरिताव ११ रोगलू १४ मणसिल १५ पवाबो पववक नाम भोजस पटस पसवेवू ए बादर एविबोवायवज्जी २ ॥

खन दानव्याः । ताम्ये म मङ्गिचिपामानि दणयति-गोमज्जय इत्यादि ॥ गोमेद्याक-२१ य उमुहये सवक-२४ यक २५ इष्टिक २६ य पुबवल् सोचि
 ताचः २७ मरुताः २८ मसारगह २९ शुक्मोषकाः ३० इद्रभीसिद्य ३१ चम्पुनो ३२ गैरिको ३३ वसुजः ३४ पुलकः ३५ धीगपिकव ३६ चन्द्रप्रभो ३७ जे
 नूर्मो ३८ कस्तकाः ३९ मूयकास्त ४० तद्व माद्याभाषया पूयिकादयस्तथा बहुवचनसदृश द्वितीयभाषया एतौ हरितासार्य स्तूतीयभाषया गो
 मद्याकादयो नव तुपयाभाषया भवे तिसङ्ख्या सात्वारिक्तात् जेयाकस्तद्व्यागारइति ॥ ये पि नर भे तथा प्रकारा भविदेताः मन्तराकादय स्ते पि
 सरयाइरपृथिवीकापत्येन इदित्तव्याः ॥ तेषुमासहइत्यादि ॥ तेषामाव्यतो काइरपृथिवीकायिका-उमाकस्त सङ्गुपेव द्विविधा-प्रमसा, साप्राधा-यर्पोस
 का प्रपयासका य, तत्र ये उपयोसका स्ते खयोग्या पर्योसोः साकस्तेषा सध्यासा इति जयवा उपभासा इति विविष्टात् वकोदीन् अनुपगता
 सावादि-वर्गादिभेदविनशाया भेते न प्रकृत्यो कजादिर्बोभदेन व्यपदेशुं किंकारवमि ति चेत् ? उच्यते इष्टस्तरादिपर्यायित्यु परिपूर्वाहुं वतीयु
 मादराकां वर्गादिविभागः प्रकृतो भवति नापरिपूर्वायु ते वा पर्याया उष्ठासपर्यायाऽपर्याया एव विद्यन्ते ततो न स्पष्टतरवर्गादिविभाग इत्य

मरगयमसारगहं नुयमोपगहं नोछिय ॥ ३ ॥ चदणगेवयहसे पुलएसोर्गधिणयधोधे । चदप्यनवेकलिपु ज
 लकंतेसूरकतय ॥ ४ ॥ जेयावखेयतहप्यगारा ते समासतु दुविहा पसस्ता, तजहा - पञ्जतगाय झपञ्जस

द्विमे सविनाम भेद करिहे-गामिज्जदवयव पर्यवर्तिहेववाहिवन्नेव । मरसमसारवहे सुवमावयव दधेहेय ॥ १ ॥ आमेदमन्वि ॥ चपकमन्वि २ य
 वमन्वि ३ छटिकमन्वि ४ साहितारमन्वि ५ मरकतमन्वि ६ यकारवन्वि ७ मुकभाषकत्वा ८ इन्द्रोषावन्वि ९ चदणगेपुपहसे पुलएसोर्गधिणयधोधेयत्वे । चद
 यममेद्विग अवयवते सूरकतय ॥ ४ ॥ चन्दनरत्न १ गैरिकरत्न २ पुसवरत्न ३ सौमन्धिकरत्न ४ यज्वेनामे जायवा चन्द्रप्रभरत्न ५ वृक्ष जम्बकादारत्न
 मूवबान्तरत्न ६ ७ जेवानवेतहप्यगारा तमसासथा दुविहा पञ्जता तजहा । जेववा धनेराहो यवा प्रकारना ते यथेपवको दोकमेदे जहा ते करिहे ।
 पञ्चतगाय पपञ्चतगाय तजह जते पपञ्चतगा तेव पसपता तजह जते पञ्चतगाय । पर्याया अपर्यासा तजह तिर्हा का पर्यासा एतकामिद नयो

मम्राप्ता इत्युक्तं ननु कस्मा दुष्कृत्यमपर्याप्तौ वा उपर्याप्ता धियन्ते नो वर्णश्च शरीरेन्द्रियपर्याप्तिरप्या मपर्याप्ता अपि? उच्यते तस्मा वागभिप्राया
यु वसुा प्रियन्त सय एव दृष्टिनो ना यच्चा तच्च शरीरेन्द्रियपर्याप्तिरप्या पर्याप्ताना बन्धमा यान्ति ना न्यथा इति अन्ये तु व्याचरन्ते सामा
न्यता वर्णादी नष्टम्राप्ता इति तच्च न युक्तं यतः शरीरभात्रजाविनो वर्णादयः शरीरं च शरीरपर्याप्त्या सुञ्जात इति ॥ तस्य च जे ते पञ्चत
गा इत्यादि ॥ सद्य य त पर्याप्तकाः परिसमाप्तस्तस्ययोग्यसमस्तपर्याप्तप एतयां वर्णादेशेन वचनदधिवचनया एव गत्यादेशेन रसादेशेन स्पश्यादेशेन
सहस्राग्रतः सहस्रमनुष्याविधानानि सदा साद्याना-वर्णाः कृपादिप्रदात्यन्त गन्धौ सुरभीतरजवा द्वौ रसा स्निग्धादय पञ्च स्पश्यां सुदुर्लभा
दयो ऽपौ एकैकस्मि य वर्णादी सारतम्यप्रेदना जेके वातरज्रेदा स्यादहि-ध्वनरकोकिस्रकृत्ताविषु तरतमभावा दित्यादिकृततया जेके कृप
प्रदा मवनीतादिय प्या योस्य तथा अन्यरसस्पञ्च पितृ तथा परस्परं वर्णाना सयोगतो पुरस्कृतवुरत्वादयो जेके सङ्कात्रेवा एव मन्वादीमान
पि परस्परं तपादिति समाधाना वतो जलनि वर्णाद्यावर्णौः सहस्राग्रयो जेवः ॥ सकेळाह कोविप्यमुहसयसहस्साह इति ॥ सङ्केयानि योनिग्रन्
तावि योनिद्वारावि इतसहस्रावि तथाहि-एकैकस्मिन् वर्णं गन्ध एवे स्पश्यां च सवृतायोगिनिः पृथिवीकायिकाना सा पुन कृष्या सचिप्ता कचिप्ता

गाय, तत्यण जेते श्यपञ्चगगा तेण श्यसपसा तत्यण जेते पञ्चत्तगा एतंसि वसुादेशेण गद्यादेशेण रसादे
सेण फासादेशेण सहस्सगसीविहाणाइ सस्विज्जाइ जोणिप्यमहुसयसहस्साइ पञ्चत्तगणिस्साए श्यपञ्चगगाय

पाप्मा विविदि इत्येव एव रस एव यथात प्रौ ब्रह्माविना न प्रगटे । तेसिच वचाएसेव । तिर्थाभाहि वर्णादेशेकरी । गंधाएसव रसाएसेव । यथा
रसइते रसादेशेकरी । पासाएसेव महुसयसविधाना सविज्जाइ । रसयदेशेकरी वर्णा देशेकरी सङ्कात्रयो भेदद्वये वर्णादि २५ भेदना वर्णाधि तर
तमभेदे पनेकभेदइते ते विन प्यामवचनद्वये स्वरर काकिल तेइवकी बळ्ळस इम व्याम मयसभदे कचदा २ कचिबान सुख्याते भेदेकरी । कोविप्यमहुस
यमहुसां पञ्चतमईसाए मपस्यतयावचमति । काच याणि यतसहस्रकइता जायगमेइते पर्याप्ताना मित्राचे अपर्थाप्ताएपले ते केरयानामु कचैवे ।

मिथ्या च, पुन रैकैकाग्रिणा शीतादीना अपि प्रत्येक तारतम्यजेवा दमेकमेदत्त ' केवल मेव विभिन्नवर्णवियुक्ता सस्याऽ
तीता अपि स्थाने व्यक्तित्वेन योग्यो जातिमपिक्त्यै केव योनि रस्यते, ततः सङ्ख्यानि सप्तपृथिवीकायिकामां योनिभ्यतसहस्रादि मवन्ति
तानि च मूलमवादरसतसर्वसङ्ख्या सप्त॥ पञ्चतन्त्रविस्मया अपर्याप्तका मुक्ताभिन्नि उत्पद्यन्ते क्रियन्त इत्या इ-यन्त्री कः पर्याप्त
सप्त नियमा तद्विभया चसङ्ख्याः भङ्गतीता अपर्याप्तकाः सप्तसङ्ख्यारमाह-सप्त मित्यादि॥ नियममत्रय सुगम तवे च मुक्ताः पृथिवीकायिकाः स
म्रत्य प्कायिकप्रतिपादनापमाह-से कि त मित्यादि सुगम सप्त इत्य वक्ष्यामः यः किम स्स्यातीदक मष्टिका गर्भमासेषु मूलमवर्गे कश्चो य

क्षमति, जत्य एगो तत्य गियमा सप्तस्वेज्जा । सप्तयादरपुठविकाइया ॥ सप्तपु
ठविकाइया ॥ से कित स्याउकाइया ? स्याउकाइया दुयिहा पन्ना, तजहा-सुजमस्याउकाइयाय यादर
स्याउकाइयाय । से कित सुजमस्याउकाइया ? सुजमस्याउकाइयां दुयिहा पन्ना, तजहा-पज्जत्तसुजम
स्याउकाइयाय स्यपज्जत्तसुजमस्याउकाइयाय ॥ से कित यादरस्याउकाइया ? यादर

असपमातद्विबमा चसखेज्जा । विहा एकजोवपर्याप्ता सपने तिहा निवे चसख्याया चपर्याप्ता सपने । सेतखरकावरपठविकाइया । तेकईये । कठि
मयादर द्रविनीकाय । सेतयादरपुठविकाइया । एतखे यादर द्रविनीकायमनिवे कम्मा । सेतपुठविकाइया । एतखे सप्तद्रविनीकायना मेदकम्मा द्विवे ।
चरकायकईये । सेकितपयकाइया २ दुविहा पन्ना तजहा । ते शिख पुछे कुन चरकाय सुव कईये-हेमहाभुभाव । पण्णाय होयमेदकही ते कहे
हे-इन्पाठकाइया यादर पाठ । मूला चरकाय १ यादरपण्णाय २ द्विवे । सेकि त सुहमपाठकाइया २ दुविहा यत । ते कुच ते कहे खामोक्षी स
पण्णाय तिहा मुदकईये-सेदेवाभुमिच । मयाभुभाव यादरकारे कम्मा ते कहेइ-पज्जत्तसुजमपाठकाइया । पर्याप्ता सप्तपण्णाय १ । पयज्जत्तसु
मपाठकाइया । चपर्याप्ता मूलापण्णाय ते द्विवे । सेतसप्तमपाठकाइया । तेच मूलापण्णाय कम्मा । भठा योगी यादरकईये-सेकित यादरपाठका

नोपत्तः इतरतु यो नुव मुद्रित्य गोपूमाकुर्वन्वायादियु बह्वो विष्णु रुपवापत्ते, सुहोदक मत्तरिससमुद्रय नद्याविगतं च त स स्पर्शरसादिप्रेदा
 दनेकमेवं त दवा नेकप्रदत्वदर्शयति-श्रीतोदकं नदीसक्रागायटवापीपुष्परिस्पादियु श्रीतपरिचामं उष्णोदकं स्नानावल एव क्षुधि विचरंरादा
 बुप्रपरिचाम शारोदक मीपक्षपक्षत्रावं यथा साठदेयादी नोपुचिदवटेपु सहोदक मीपदक्षपरिचामं अक्षोदक मतीविस्रजावल एवा सुपरि
 चामं कान्तिरुक्तम् सवकोदकं सवकसमुद्रे, वारुवं वारुबसमुद्रे, क्षीरोदकं क्षीरसमुद्रे खोदादक मिश्रसमुद्रे रसोदकं पुष्करवरसमुद्रादियु ये प्यि
 वा म्ये तया प्रकारा रसरपणीदिनेदमिवा प्रतोवकावयो पादराप्तायिका से सर्वे पादराप्तायिकतया प्रतिपत्तव्या से समासतो इत्यादि

स्याउकाहया श्रुणेगत्रिहा पञ्चत्ता, तजहा-उंसहिमए महिया करए हरतणए सुहोदए सीसीदए उंसिगोदए
 खारोदए सुहोदए श्रुथिओदए छवणोदए वारुणोदए खीरोदए रसोदए जेयाथसेतहप्यगारा तेसभा
 सत्त दुयिहा पञ्चत्ता, तजहा-पञ्चासगाय श्रुपञ्जत्तगाय, तत्यण जेते श्रुपञ्जत्तगा तेण श्रुसपत्ता, तत्यण जेते
 पञ्चत्ता एतेसिगवसादेसेण गघादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्वगसोविहाणाइ सखेज्जाइ ओणियप्पमु

इया १ पचेमविहा यत्त । ते विहे कुववाहरमज्जाव यजममकारकहे-तिकाओ इरसावेहे । उव्वादिमयमिहिवा । ठार मज्जेवेह १ पिन २ धूइर ३
 करण इतरतए मुवावए सोइवए । मज्जानापाओ ४ इरीनेपओवे ककदिन्दु करसातना ५ यवपाओ ६ ग्रीतजस ७ । उंसिगोवए खारोवए खोवए अवि
 वाइव खववावए बुवावए वीरोवए वपावए इस्वावए रसोवए । उव्वाजस ८ खाटी ९ पाविकरसपाओ ११ क्षण वेववा १२ गारुकोसम
 दना पाओ हाठ वेइयो १३ दूभसरोखापाओ १४ वृत्तसरोखापाओ १५ इइरस सेइइओरस १६ रस यटरस तेइवापाओ १७ । जेवावेतेतहप्यमारा ते स
 मानयोइविहा यत्त । ते एइवा यनेरा तथा प्रकारना तेइ सव ससेपओ वायव्यारे कम्माते कचे जे-एव्वतया उम्वज्जत्तगाव । परीप्पा १ पयवर्वाप्पा २ ।
 ततइवेतेपपञ्चत्तया । जेते पपर्याप्ता । तेउपसंयप्ता । तेवे नहोपाप्पा यवीदिनओ वज्जता ३ । तज्जेतेपपञ्चत्तया । तिइते जेते परीप्पा । एवविचवववा

प्राग्वात् नवरं, महेयानि यानिप्रमुखाणि शतसहस्राणी त्यक्त्वा पि सप्तवदितव्यानि, उक्त्वा श्रव्यायिक्त्वाः सप्रति तेजस्कायिक्त्वाम् प्रतिपिपाद
पिपु राह-संक्षितमित्यादि ॥ सुयस मकर मङ्गरो विगतपुमः क्वालो जाज्वल्यमानः, खादिरादिष्वालासम्बन्धादीपक्षिणे त्यन्ने मुमुुर पुम्पुका

हसयसहस्साइ पञ्जस्रगणिस्साए अपञ्जस्रगा यक्षमति, जत्य एगो तत्यनियमा अ्सखेज्जा । सेस थादर
अ्जाउकाइया ॥ सेस अ्जाउकाइया ॥ से कित तेउकाइया ? तेउकाइया दुयिहा पक्ष्ता, तजहा-सुजमतेउ
काइयाय थादरतेउकाइयाय, से कित सुजमतेउकाइया सुजमतेउकाइया दुधिहा पक्ष्ता, तजहा-पञ्जस्र
गाय अपञ्जस्रगाय । सेत सुजमतेउकाइया । से कित थादरतेउकाइया २ अ्जगेगयिहा पक्ष्ता, तजहा
डगाळे जाला मुमुरे अ्ज्जी अ्ज्ज्जाए सुद्रागणी उक्त्वा यिज्जु अ्जसणी णिग्घाए सघरिससमुठ्ठिए सूरकंतमणिणि

० मेव गंधापमेव रसापमेव फासापमेव । इधारा वधादेयकरो गंधादेयकरो रसादेयकरो वरसादेयकरो । सहस्रस्य सप्तस्य एतदे
वाप्त एहदेवमे । सविज्जाः आदिव्यनृहसयसहस्रार । सव्याता सतसहस्रवाजिप्रमुखपुवे । पञ्चतगचोसाय । पर्याप्ताभौ निश्वे । अपञ्चतगापञ्चमति
पयप्यन्ता धावो उपवे । अत्रएगोतव्यधियमापसखेज्जा । जिहो एवजोवतिहा नियाये अरंस्याताजोव कइवा । सेतवावरपाठकाइया । ते थादर अ
व्यायमा मेदकज्जा । सतपाठकाइया । एतदे ते सूक्काभादर सर्वपञ्चाय कज्जा ॥ इवे सेक्षित तेवकाइया २ दुविहा परं त । तेवकाव पूरैधिय कुष ते तद
गुष कइ दोयपकारे कज्जा तेकइवे-सुदुमतेवकाइया वायरते । सूक्ष्मतेवकाय १ वायरतेवकाव २ । सेक्षितसदुमतेवकाइया २ दुविहा य त । इवे यि
अकइवे अत्र तेमृषकइ मूप्प तेवकाव तेकमा दोयमेदकज्जा ते गुषकइवे-पञ्चतगाय अयपञ्चतगाय । पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ । सेतमुमुमतेवकाइया । ते तिम
मूप्पतेवकाय १ सेक्षितवावरतेवकाइया २ अवेगविहा य त । यिअण्णे कुषवादरतेवकाय गुषकइवे अनेअयकारेकज्जा तेकइवे-इ मासे जासमुधुरे । अगा
रा वभूतरहित १ ज्वाला दोपसिहा यमि प्रतिब २ वभूतमिवा यमि कइ । यप्रतिबज्ज्वाला मुह । म्नि । उक्त्वा यिज्जु । उक्त्वा

नीपत्तः इतनु यो जुय मुद्रिय भीषमाहुसवकागदियु धुहो विगु रुपलायते, शुद्धोदक भन्तरिखलमुद्रय भयादिगतं च त च स्पष्टरसादिप्रदा
 दनेकमेदं त दया नकजेदस्वर्दायति-शीतोदक शरीतलागावटवापीपुष्करिण्यादियु क्षीतपरिक्ताम लणोदकं स्वजावत एव क्षुचि किर्करादा
 वुष्मपरिणामं चारोदक मीपक्षवद्वज्राय पया साटदेगावौ केपुचिवटये शुद्धोदक मीयदसुपरिक्ताम अक्षोदकं मतीषस्वजावत एवा सुपरि-
 क्तं कान्जिकवत्, तवकोदकं सवदसमुद्र, वाठव वाठवसमुद्रं क्षीरोदक क्षीरसमुद्रं, शोदोदकं मिश्रसमुद्रं रसोदकं पुष्करवरसमुद्रादियु ये वि
 वा न्ये तथा प्रकारा रसस्वर्गादिभेदविक्ला पृतीदकादयो वादराज्यायिका को सर्वे वादराज्यायिकतया प्रतिपत्तव्या को समावर्तो इत्यादि

श्याउकादया श्रुणेगविहा पसत्ता, तजहा-ठंसाहिमए महिया करए हरतणू सुस्रोदए सीतीठए उस्सिगोदए
 खारोदए खहोदए अथिलोदए लवणीवए वारुणीवए स्त्रीरोदए रसोदए जेयायसेतहप्यगारा तेसमा
 सत्तदुविहा पसत्ता, तजहा-पज्जसगाय अथपज्जसगा तेंण अथसपत्ता, तत्थण जेतें
 पज्जत्ता एतंसिणवसादेसणं गधादेसेण रसादेसेण सहस्सगसोविहाणाइ ससंजाइ ज्येणिय्यमु

इया २ पचेमविहा पत्तं । ते द्विये सुब वादरपत्ताव पत्तकप्रकारकचे-तिकाओ इरसावे । उक्तादियमिद्विया । ठार मन्वेक १ थिन २ धूइ १
 वरत इरतए युवाए सोडए । मठानापाओ ४ इरीजिपचोवे जलविन्दु वरसातको ५ खबपाओ ६ श्रोतकस ७ । उविचोदए पारोदए अहोदए अवि
 सादए लववादए वुषावए पौरादए अथाठए इक्कादए रसोदए । उक्ताक ८ वारक ८ काठो १० धाविकरसपाओ ११ सुब जेवो १२ वारुचोसम
 इना पाओ काठ जेवो १३ दूषवरोणापाओ १४ नुतसरोणापाओ १५ इहुरस सेवहोरेस १६ रस बटरस तेहवापाओ १७ । जेरावसेतहप्यगारा ते स
 मानपाहुविहा पत्तं । जे एहवा जेरा तथा प्रकारा तेह सव सवेपचोदीयप्रकारे कथातेकचेवे-पत्तकतया उपपत्तकनाक । पर्वीप्ता १ पयवीप्ता २ ।
 तयचजेतेपपत्तव्या । जेतें पयवीप्ता । तेपपत्तव्या । तेचे महीपात्ता बर्षादिनयो बहता ग । तयचजेतेपपत्तव्या, तिहा जेतें पयवीप्ता ३ एहमिचवका

प्रायश्चित् नवरं सङ्केयानि योनिप्रमुखाणि वातसङ्ख्यानी त्यत्रा पि सप्तयेदित्युच्यते, सक्ता अष्ठाधिक्याः, सप्तति त्रेकस्त्राधिक्यान् प्रतिपिपाद
विष्णु रात्र-सेकितमित्यादि ॥ सुगम नवर भद्रारो विगतपुन्र क्वालो जाज्जस्यमान, खादिरादिष्वालामलसम्बद्धादीपक्षित त्व न्ये मुमुंर पुष्पुका

हसयसद्वस्साद् पञ्जास्रगणस्साए अ्यपञ्जास्रगा यक्षमति, जल्य एगो तत्यनियमा अ्यसखेज्जा । सेत यादर
अ्याउकाइया ॥ सेत अ्याउकाइया ॥ से कित तेउकाइया ? तेउकाइया दुत्रिहा पयप्ता, तजहा--सुजमतेउ
काइयाय यादरतेउकाइयाय, से कित सुजमतेउकाइया सुजमतेउकाइया दुत्रिहा पयप्ता, तजहा--पञ्जास्र
गाय अ्यपञ्जास्रगाय । सेतं सुजमतेउकाइया । से कित यादरतेउकाइया २ अ्युणगयिहा पयप्ता, तजहा
इगाले जाला मुमुंर अ्यस्त्री अ्यलाए सुद्रागणी उक्ता विज्जू अ्यसणी णिग्वाए सयारिससमुठिए सूरकतमणिणि

० भेवं नवाएमेव रसाएसेवं । इवारा ववादेयेकरी गवादेयेकरी रसादेयेकरी । सङ्ख्यस्यसोविद्यायाः । सङ्ख्याप एतस्ये
भात् एङ्गेनामे । संविद्याः । आविष्यमृदमसङ्ख्याः । सख्याता सतसङ्ख्यानिप्रमुमुवे । यज्जसमसोसाए । ययोवानी नित्यदे । ययज्जसवावज्जमति
ययबीप्ता यावी उपवे । जल्यएगोतलविबनायसङ्ख्या । विहा एङ्गीवतिहा नित्यये ससंख्याजीव कइया । सेतवावरभाउकाइया । ते वादर अ
ज्वावना भेदकया । सतंभाउकाइया । एतस्ये ते सुकवादर सवभाकय कया । इवे सेकित तेउकाइया २ दुविहा पं त । तेउकाव पूखैयिप्य कुब ते तद
गुब कइ वीयपकारे कया तेकइहे--सुजमतेउकाइया यावते । सूफतेउकाय १ वावरतेउकाय २ । सेकितसङ्ख्यमतेउकाइया २ दुविहा पं त । विवे मि
यकइ केव तेगसङ्ख्ये मूप्ता तेउकाय तेइना वीयभेदकया तेगुबकइहे--यज्जसनाय अ्यज्जसगाय । ययोपता १ अ्यपयाप्ता २ । सेतमुमुंरतेउकाइया । ते तिम
मूप्तातेउकाय १ । सेकितवावरतेउकाइया २ यवेगविहा पं त । यिथपूले कइवादरतेउकाय गुबकइ भनेकप्रकारेकया तेकइहे--इगासे जाउमुमुंर । अंभा
रा यभूतरहित १ ज्वासादीपमिहा अम्मि पतिव २ यभूतमिथा अम्मि कइ । ययोपताएसुहायको । यप्रतिवतयासा सुहाम्मि । उक्ता विज्जू । उक्ता

नोपतः- इतनु यो सुव मुद्रिय भोपूपाङ्गुलवायादियु बहो बिन्दु रूपभायते सुहोदक मन्तरिचसमुद्भूय प्रद्याविगत ॥ त व स्पार्शरसादिभेदा
 दनेकभेदं त दवा ननजदत्वद्वयपति-शीतोदक नदीतिकागावटवायीपुफरिख्यावियु शीतपरिणाम उग्रोदकं सज्जावत एव क्षिपि चिकेरादा
 वुजपरिणामं, शारोदक मीप्लवबलज्जावं यथा साठदेमावी केपुविदवटेपु बहोदक मीपद्वयपरिणामं बहोदक मतीवसज्जावत एवा सुपरि
 णामं कान्जिकवट् सवयोदकं सवबसमुद्रं, वारुव वारुवसमुद्रं शीरोदकं शीरसमुद्रं शोदोदकं मिष्टसमुद्रं, रवोदकं पुष्करवरसमुद्रादियु ये म्यि
 वा न्ये तथा प्रकारा रसस्पर्शादिभेदविषया पूतोदकावयो वादराष्कायिका सो सर्वे वादराष्कायिकतया प्रतिपत्तव्या सो समासतो इत्यादि

स्थाउकादया अणेगविहा पखसा, तजहा-उंसाहिमए महिया करए हरतणए सुहोदए सीतोदए उंसिगोदए
 स्वारोदए स्वहोदए अथिलोदए लवणोदए वारुणोदए स्त्रीरोदए रवोदए जेयावसुतहप्यगारा तेसमा
 सठ दुविहा पखसा, तंजहा-पज्जसगाय अणपज्जसगाय, तत्थण जेतें अणपज्जसगा तंण अणसपत्ता, तत्थण जेतें
 पज्जसा एतेसिणवखादेसेणं गघादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसोविहाणाइ सखेज्जाइ अणेणियमु

इवा २ अयेमविहा यत्तं । त द्विं कुव वादराष्काव अणकप्रकारकये-तिकाहो हरसावेहे । उक्खादियमिद्विहा । ठार मज्जेवह १ पिम २ धूवर १
 बरय इरतसए बुहादए मोठदए । गहानापावो ४ इरीनेपचोके जलविन्दु भरसातना ३ खडपावो ६ मीतकक ० । उविबोवए प्परोटए खोदए अवि
 हादए खबबादए वुबोदए कीरोदए कपाठए इखादए रवोदए । उक्खव ८ वारणव ८ काटो १० धाविवरसपावो ११ खू जेवो १२ वाटुवोसम
 इना पावो काठ जेवो १३ इमसरोथायावो १४ वुतसरोथायावो १५ इरस सवबोरोस १६ रस पटरस तेइयोपावो १० । जेवावयेतइयमारो ते स
 नामपोडुविहा यत्तं । जे एववा जेवरा तथा प्रकारना तेइ सव सखेपवोरोबाप्रकारे कट्ठातेकहे-पण्यसगा अणज्जसबाक । परीप्ता १ अणवर्णाया २ ।
 तलवजेतेपपज्जसमा । जेतें पपर्याप्ता । तेणप्रसंपया । तेणे महोपाप्पा बचीदिनवो कइतां ३ । तज्जवेतेपपज्जसगा । तिहा जेतें पर्याप्ता । पयपिबबका

कायिरुप्रतिपादनार्थं माह—वेदितमित्यादि॥ प्रसीत नवर॥ पादववाए इति॥ यः प्राच्यादिवाः समागच्छति यातः सप्राचीनयात एवं प्रतीचीनवातो दनिबयात उदीचीनवात य दक्ष्य ऊर्ध्वद्रव्यं यो जाति वात स्य ऊर्ध्वयात एव मथोवात तिर्यग् वातावपि परिजातनीयो विदिग्यातोयो विदिग्युन्यो याति यातो द्वाभो जनवस्थितो यातो वातोत्कलिकाः समुद्रस्ये य यातोत्कलिकाः वातयद्वासी वातोसी उरवसिकायातउरवसिकान्नि-प्रपुरतरन्निः समिधितो यो वातो मंडलिकायातो मळसिक्कामि मूलत धारण्य प्रपुरतरन्नि समुत्थोयो वात गुण्जावातो यो गुण्जनशब्दं कुर्वन्

हा पयाप्ता, तजहा—सुक्कमवाउकाइयाय यादरवाउकाइयाय, से कित सुक्कमवाउकाइया? सुक्कमवाउकाइया दुविहा पयाप्ता, तजहा—पज्जसगसुक्कमवाउकाइयाय व्यपज्जसगसुक्कमवाउकाइयाय । सेत्त सुक्कमवाउका इया । से कित यादरवाउकाइया? यादरया० व्यणेगविहा पयप्ता, तजहा—पाईणवाए पदीणवाए दाहि णवाए उदीणवाए उहुवाए व्यहोवाए तिरिययाए विदिसीवाए वाउज्जामेया उक्कुलिया वायमऊलिया उ

विहा य त । मियपूजे कुचगुचकहे वाउक्कामना दावभेइक्कया ते कहेहे—मुग्गमवाउकाइया । मूक्कमवाउकाय । वादरवाउकाइया । वादरवाउकाय । सेविर्तममुमवाउकाइया र देविहा ये तं । द्विजे कुच मूक्कमवाउकाय तेइया दावभेइ कया ते कहेहे—पज्जसमुग्गमवाउकाइया पपज्जसमुग्गम ययाप्ता नूप्पमाउकाय पययाप्ता मूक्कमवाउकाय । नेत्तमुग्गमवाउकाइया । एतत्ते सुक्कमगुकायना मेदक्कया । सेविर्तवादरवाउकाइया र पयमेविहा ये तं । द्विजं यादर वाउक्कामना मेदक्करो मेदक्करो—एमेक्कपकारे कया वाउकायवाउरना ते कहेहे—पाईणवाए पयपकाय दाहिणवाए उदीण वाए । पूवदिगिना उपमा पयिमविगिना उपमा दाचिपदिगिना उपमा वायु । उठउवाए पयोवाए तिरियवाए विदिगिना प वाउभाण । उठोदिगिनाउपमा नोचोदिगिना वायु तिरकोदिगिना विदिगिवाय ऊवाममत्तोवाय । वाउज्जामि वायमऊलिया । सम्वसवायु समु द्दना मण्डलिकावायु मास । उरवसियवाए मळसियवाए । नेन् उरवसोपाजे मण्डलिकावत्तवानु । गुंजावाए प्पक्कावाए संवइवाए घववाए मळवाए सुववाए ।

री प्रस्ममिभितामिङ्गप्ररूपः सचि रभसामतिपद्माब्जासा पासात भूभुङ्क शुद्धरन्नि रय पियहारी उक्ता बुभुक्षी विष्णु द्यतीता ब्रह्मनि राधादे
 परतदन्विमयः फल निर्पातो वैकिपादीनिप्रपातः सङ्कल्पमुपस्थितो ऽरस्यादिकासुनिर्मलसमुद्भूतः सूर्यकाममविनिवृत्तः सूर्यवरकिरकसम्बद्ध
 मूर्यकाममवे य समुपमायते ॥ सेपावकेतव्यगारा इति ॥ ये पि ना म्ये तथाप्रकारा एकप्रकारा सप्तस्कायिका स्ते पि भादरसेजस्कायिकतया से
 दितव्या सोसमाधेतो इत्यादिप्राण्यम् एव यथापि सङ्केपाणि योगिप्रमुखाणि क्षतवक्ष्याणि सखेदितव्यानि उक्ता सोजस्कायिकाः सम्प्रतिवायु

स्तिसए, जेयाद्येतेतहप्यगारा ते समासने दुखिहा पछता, तजहा-पञ्जसगाय व्यपञ्जसगाय, तत्यण जेत
 व्यपञ्जसगा तेण असपता, तत्यण जेत पञ्जसगा एएसि यथादेसेण गथादेसेण रसाएसेण फासादेसेण सह
 स्वगसीनिहाणाह सखिजाह जोणिप्यमुहसयसहस्साह पञ्जसगणिस्साए व्यपञ्जसगा वक्कमति, जत्यएगो
 तत्यणियमा असखेज्जा ॥ सेस यादरतेउकाइया ॥ सेस तेउकाइया ॥ ये कित वाउकाइया ? वाउकाइया दुवि

यात नीवनी । सविबोविहाए । पाकाये पळिययो कच बोडिबपनि । सवरिसससङ्गि । परबोयादिककवो जमनी । सूरिवातमविनिस्सिए ।
 मुवने तापेकरी जपने मविबो जपने त पणि । वेदावकतव्यगारा ते समसया दुविहा पं त । जे बवो पजवा एनेरा उक्ता प्रकारमिद तेसर्व स
 सेरवो दोदपकारेकया ते कवे-पञ्जसगाय पपञ्जसगाय । परगिता वयवोप्ता । तत्वकलेतेपपञ्जसगा तेवपसपता । निहाविते पपर्याप्ता बबोदि
 केमवो पात्ता पूरा । तत्वबनेतेपपञ्जसगा । निहा जेत ववोप्ता । पविच ववाएसेव गथाएसेव रसाएसेव पासाएसेव । एवारा बबोदेमिकरी मवादेमो
 करो रबोदेमिकरी मवादेमिकरी । वक्कज्जमलोविहापाए । सक्कसाण एतणे सातजाव मेदेकरी । सखिज्जा जोविष्णुसयसव्यार पपञ्जसगोसाए
 संबवाता मतमवसयानि प्रमस जपने ववोप्तामोनिहाये । पपञ्जसगावक्कमति । पपर्याप्ता जपने । जत्यएवोतवविहमा । विहा एकजोव तिहा नि
 वे । पसविहा । पसपतातजीव जपने । वेमकाएतेवकाएवा । एतणे भादर तेउकाय । सेसतेवकाएवा । ते कच तेउकायवक्का । सेमितवावकाएवा २ पु

कायिकप्रतिपादनार्थं साह—वेक्षितमित्यादि ॥ प्रतीतं नवर ॥ पादद्वयाए इति ॥ यः प्राच्यादिशः समागच्छति वातः सुभाभीनवात एव प्रतीचीनवातो
 दक्षिणवात उदीचीनवात यः पश्चिम्य उच्छुद्धश्च यो वाति वात सः उच्छुवातः, एव मपीवात तिर्यग् वातावपि परित्रावमीपी विदिन्यातोयो
 विदिग्न्यो वाति वातो द्वाभ्यो जनस्थितो वातो वातोत्कलिकाः समुद्रस्ये य वातोत्कलिकाः वातमहली वातोत्सी, उत्कलिकावाततल्लसिकाग्नि-
 प्रपुरतराग्निः सन्निमित्तो यो वातो महलिकावातो मल्लसिकाग्नि मूलत आरभ्य प्रपुरतराग्निः समुत्थोपो वात गुल्मावातो यो गुल्मनशब्दं कुर्वन्

हा पयस्ना, तजहा—सुक्ष्मवातकाहयाय, से कित सुक्ष्मवातकाहया ? सुक्ष्मवातकाहया
 दुविहा पयस्ना, तजहा—पञ्जतगसुक्ष्मवातकाहयाय अपञ्जतगसुक्ष्मवातकाहयाय । सेतं सुक्ष्मवातका-
 हया । से कित वादरवातकाहया ? वादरवा० अणेगविहा पयस्ना, तजहा—पाईणवाए पदीणवाए दाहि
 णवाए उदीणवाए उट्टवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसीयाए वाउज्जामेया उक्कालिया वायममालिया उ

विहा वं त । मियपूजे कुचमदकचै वातकाजना वातभैरवकजा ते कहेहे—सुक्ष्मवातकाहया । सूक्ष्मवातकाहया । वादरवातकाहया ।
 सेविंत्तं सुक्ष्मवातकाहया २ विविहा प त । विवे कृष सूक्ष्मवातकाहया तेहना होउतेइ कजा ते कहेहे—पञ्जतगसुक्ष्मवातकाहया अपञ्जतगसुक्ष्म वा-
 पयस्ना सूक्ष्मवातकाह पयस्ना मूक्ष्मवातकाह । नेतमसुक्ष्मवातकाहया । एतहे सुक्ष्मवातकाहना भैरवकजा ॥ सेविंत्तं वादरवातकाहया २ पयमेविहा
 प त । विवे वादर वातकाहना भैरवकरो भैरवकहे—पयमेविहा कजा वाउज्जामेयाहया ते कहेहे—पाईणवाए पदीणवाए वाहिणवाए उट्टो-
 वाए । पयदिमिनी उपपत्ता पयिमदिमिना उपपत्ता वायु उत्तरदिमिना उपपत्ता वायु । उट्टवाए पयोवाए तिरियवाए विदिसिया
 ए वातभाण । अचोदिमिनाउपपत्ता ओचोदिमिना वायु तिरकोदिमिना विदिमिनाउपपत्ता अचाममतोवाय । वाउज्जामेया वायमेविहया । उत्कलिका
 द्रमो मण्डिकावायु वाह । उक्कालियाए मंडिकियाए । सेतं उक्कलीपाहे मण्डिकावतवायु । गुल्मावाए अहोवाए समुद्रवाए पयववाए मण्डिकाए सुहवाए ।

हो प्रसन्नमिप्रिताम्बिरूपरूपः अचि रमसाम्रतिवद्गवासा आसात मुहुक मुहुग्लि रय पियदादो उक्ता बुद्धिो विद्यु रप्रतीता अक्षुनि राकादो पतदग्निमय मयः निर्पातो वैदिक्याशानिप्रपातः अर्धसमुपस्थितो ऽरस्यादिकाहमिर्मनसमुद्भूतः सूर्यकान्तमखिनिवृतः सूर्यसरकिरबसम्पन्नं सूर्यकान्तमणे यः समुपजायते ॥ अथाययेतद्व्यगारा इति ॥ ये पि वा म्ये तथाप्रकारा एवमकारा सन्वस्कायिका स्ते पि आदरसोवस्कायिकतया ये दितव्या स्तेसमार्गतो इत्यादिप्राण्यत् नवर मथापि सङ्केयानि योनिप्रमुखादि द्वातसहस्राणि सप्तवेदितव्यानि उक्ता सोवस्कायिकाः सम्प्रतिवायुः

स्सिए, जेयायणेतहप्यगारा ते समासने दुखिहा पखसा, तजहा-पज्जसगाय अ्पज्जसगाय, तत्पण जेतें अ्पज्जसगा तेण अ्सपत्ता, तत्पण जेतें पज्जसगा एणसि वखादेसेण गधादेसेण रसाएसेण फासादेसेण सहस्सगसोत्रिहाणाड सखिज्जाड जोणिप्यमुहसयसहस्साइ पज्जसगणिस्साए अ्पज्जसगा वक्कमति, जत्थएगो तत्थणियमा अ्सखेज्जा ॥ सेत्त आदरतेउकाइया ॥ सेत्त तेउकाइया ॥ से कित वाउकाइया ? थाउकाइया दुवि

पाग भोजनी । पन्निबोविग्गए । पाकाये पन्निबो न च नत्तिवपनि । सधरिसवसट्ठिए । धरणीयादिदववो अपनो । सूरिवातमच्चिन्निस्विए । भवने तापेक्करो अपवे मच्चिबो अपजे त पन्नि । जेवाक्कनेतव्यमारो ते समानथा दुविक्का पं तं । जे एवो एववा पजेता तथा प्रकारमिद तेसवं स सेववो दोपयकारेक्कना ते कवेक्के-पज्जसगाय पयज्जसगाय । पर्याप्ता पर्याप्ता । तत्तज्जेतेपयज्जसगा तेक्कसपत्ता । तिक्काजेते पर्याप्ता नबोदि जेनवो पाप्पा दूरा । तत्तज्जेतेपयज्जसगा । तिक्का जेतें पर्याप्ता । एविक्कं वखाएसेव गधाएसेव रसाएसेव फासाएसेव । इत्थारा वषादेयेक्करो नन्नादेये क्करो रसादेयेक्करो अर्धदेयेक्करो । सवस्यम्वमोविक्कावार । सवसाय यतसे सातवाव भेदेक्करो । सुखिज्जाइ जोविप्यमुहसयसहस्यार पज्जसगसोसाए संपवाता मतमहस्योनि प्रमक्क अपजे पर्याप्ताभोजियासे । पयज्जसगावक्कमति । पर्याप्ता अपजे । वत्तएवोतत्तविदमा । विक्का एववोव तिक्का नि ये । पचविक्का । पमपवातत्रीय अपवे । जेतवाययेतववाइया । एतसे आदर तउक्काय । सेत्ततेउकाइया । ते सय तेउक्कायक्का । सेक्कितवाइयाइवा २ दु

त सुगुणवत्सङ्कादया ॥ सेवितमित्यादि ॥ छय के ते वादरवणस्पतिकारिका २ द्विविधाः प्रथमा का दया-प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकारिका य साधारणशरीरवादरवणस्पतिकारिका य तत्रै क मेक जीव म्रसिगत म्रत्येक शरीर येयान्ते प्रत्येकशरीरा स्ते य ते वादरवनस्पतिकारिका य प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकारिका य शब्दः स्वगतानेकमेवभूषणः समान नृत्त्य प्राणापानाद्युपजीव यथाप्रवर्ति एव भासमन्ता वेकीनाडेना न नाना जन्तूनां साधारणं सङ्ग्रहं येस त त्वाधारणं शरीर येयां ते साधारणशरीरा स्ते य ते वादरवणस्पतिकारिका य साधारणशरीरवादरवणस्पतिकारिकाः य मन्त्रो वा पि स्वगतानेकमेवभूषण ॥ सेवितमित्यादि ॥ छय के त प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकारिकाः १ मूरि राह-प्रत्ये

तजहा-सुज्जमवणस्सङ्कादयाय वादरवणस्सङ्कादयाय, से कित सुज्जमवणस्सङ्कादया २ दुविहा पयसता,
त ०-पज्जत्तसुज्जमवणस्सङ्कादयाय अ्यपज्जत्तसुज्जमवणस्सङ्कादयाय । सेत्त सुज्जमवणस्सङ्कादया । से कित
वादरवणस्सङ्कादया २ दुविहा पणत्ता, तजहा-पत्तेयसरीरवादरवणस्सङ्कादयाय साहारणसरीरवादरव

मइमवणस्सङ्कादया । सूदमवणस्पतिकार । वायरवणस्पतिकार १ । वादरवणस्पतिकार २ । सेवितसुज्जमवणस्सङ्कादया २ दुविहा प त । द्विवे ते यि
द्यपते न्दू समभावेणै म्भस्ववणस्पतिकारका दोयप्रकार कक्षा ते कहे-पणत्तसुगुणवत्सङ्कादया । पयोत्ता सूदमवणस्पतिकार । अपणत्तसुगुण
वत्सङ्कादया । अपयत्तिता सूदमवणस्पतिकार । एतत्ते सूदमवणस्पतिकार कक्षा । सेवितवायरवणस्सङ्कादया २ दुविहा प
त । ते यिपडै कव वादरवणस्पति कक्षा काभोको तदयुद् कषे-वेमिय । वायप्रकारेकक्षा ते कहे-पत्तेयसरीरवादरवणस्सङ्कादया । मल्लेव
प्ररोर वादरवणस्पतिकार पणिका । साहारणसरीरवायरवणस्सङ्कादया । पूला साधारणशरीर वादरवणस्पतिकार । सेवितं पत्तेयसरीरवायरवणस्स
ङ्कादया २ दशासमविका पं त । यिपत्तेयप्रति कहे म्भस्वतेप्रत्येकशरीर वादरवणस्पतिकार यिपत्तेय गे गृहकहे-प्रत्येकशरीर वादरवणस्पतिकार
१२ नारै भेदकथा ते कहंछ । दुस्सगुणध्यानुया सयाधवलोचपणयाणेव । तथवण्यहरियाधदि जसुरुदकुडवायवोवध्या १ १ १ नृप धास्वादि १ गुण्ठावृन्ता

याति ऊभावातः सृष्टि रमुमनिपुर इत्य न्ये' सम्यक्कवात क्षुब्धादिसयत्नस्यप्राक्', एतवातो घमपरिभामो रत्नप्रभापुपिव्याद्य भोवतो तनुवा
तो गिरमपरिभामो एतवातस्या प र्वायाक्षुब्धवातो भवस्तिमितो घस्त दृत्पादिगत इत्य न्ये ॥ ते समासता इत्यादि प्राग्वत्, अत्रा पि सङ्केयानि
योनिप्रमुगावि इतमस्रश्चावि म्मा वसेयानि सत्ता वायुकायिका सम्प्रति वमस्पतिकायिकाप्रतिपादनार्थे माह-संज्ञितमित्यादि ॥ मुगम यावत् से

क्षौरियाथाए मन्त्रलियाथाए गुजाथाए ऊजाथाए सत्रह्वाए घणथाए तणुथाए सुधुवाए, जेभावन्ते तहप्यगा
रा ते समासन्ते दुविहा पणत्ता, तजहा-पज्जसगाय अ्पज्जसगाय, तत्पण जेते अ्पज्जसगा तण अ्पसप
त्ता, तत्पण जेते पज्जतगा एतेसिण वग्गादेसेण गधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसोविहाणाइ
सखिज्जाइ जेणिप्यमुहसयसहस्साइ पज्जसगणिस्साए अ्पज्जसगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ नियमाअ्पस
सेज्जा ॥ सेन वाटरथाउकाइया ॥ से कित वणस्सइकाइया वणस्सइकाइया दुविहा प०,

मुन्धारव वावता पद्यम पनित्वायु सक्कत्तायु वक्कत्तावे ते वायु वज्जवात तनुवायु पक्के रत्नप्रभा इहे यत्तवायु । जेवावसेतत्तप्यगादातेसमासचो वविहा
प त । ये वक्कवा वनेरा तत्ता पक्कारजावाय ते वसेपक्की दीयप्रकारेकत्ता ते कहेवे-पक्कत्तगाय अ्पज्जत्तगाय । पर्यासा अ्पर्यासा । तत्थजेतेअप
ज्जत्तमा तेवपमपत्ता । तिहा जेते अ्पर्याप्या ते कर्णादिकने पक्कपाभवेकरी । तत्थवजेते पक्कत्तमा एएसिण । तिहाजेते पर्याप्ता इवारा । वक्काएसेण
मवाएसेण फासाएसेण । कर्णादिगे नग्गादेमे एमयसिणे । सक्कत्तसोविहावाह । सतसइस एतके सातत्ताख योनिने भेदेकरी । सक्केज्जाइ आविप्यमुहस
यवइग्गाइ । मातेसाये सक्काताओभिविप्ये । पक्कत्तयओसाए । पर्याप्ताओ निगये । अ्पज्जत्तगावक्कमति । अ्पर्याप्ता छयजे । जत्थएगोतत्त्वविद्यमाअस
पेमा । अज्जा एवकओव तिहां निदे पक्कत्ताता । सेत्ताथरवाउकाइया । ते तिमक्कओ ज्जिम वाउक्काव । सेत्तपाउकाइया । इतसे सब सुस्समाइर वायु
भेदेकरी कम्मा ॥ से कित वक्कत्तइकाइया २ दुविहा पं त । इविये वमस्पतिकायना भेदकहेके गुह गिष्मपते कहेके हेमिक्क । दीवपक्कारे कहेके, तेजिम ।

ने इतिहा प्रचारा सा द्याया-निर्वहे इत्यादि ॥ याया पर्य तत्र नियायजम्भू कोसम्भाः प्रतीताः शाल' सञ्ज ॥ यकोसति ॥ अङ्कोठः प्रारुतत्या १ सुत्रे च
 ठकारस्य सादेश अङ्कोठेन इति वचनात् पीनुः प्रतीतः येषुः सस्यात्क शालाबी यजप्रिया माविष्मी मालकी देशोयिज्ञापप्रतीती, यदुलः केसरः, प
 सागः किमुन करजो मन्मालः पुत्रजीवको देशविज्ञापप्रतिबद्धः, अरिष्टः पिनुमन्द्, विचीतकोद्यः, इरीतकाकोरुणदेशप्रसिद्धः क्षपाययङ्गुलः मझात
 को यस्य विज्ञातकाभिधानानि कलानि लोकाप्रसिद्धानि, उम्बेज्रिकाहीरबीपातकीप्रियासपूतिकरजस्रक्षशिंशपाठमपुत्रागनागमीपस्यंसीका
 साकप्रतीताः जे या यत्क तद्व्यगारा इति ॥ ये पि वा ज्ये तथाप्रकारा एव स्यकारा सततव्यविज्ञापमाविन हा सर्वे ज्ये कात्यिका वदितव्या, एते
 या मन्मालस्विकानां मूलान्य प्य सर्वेयजीवकानि अचङ्गेयमत्येकछरीरजीवात्मकानि ॥ एव कस्या अपि स्वयो पि शाला अपि प्रवाला

यजयुक्तोस यसालश्चकोसपेनुसुडया । सप्तइमोयडुमालुय यउल्लगलासेकरजेय ॥ १ ॥ पुतंजीवश्चरिठे थिनेल
 एहरिऊण्यजज्ञाण । उयेजरियास्वीरिणि ओधखेधायइपियले ॥ २ ॥ पूहयनियकरए सरहातहसीसवायश्चस
 गय । पुयागनागरकं सिरिवसीतहश्चसोगेय ॥ ३ ॥ जेयायन्नेनहप्यगारा एतेसिणमूलायिश्चसस्विजजीविया
 कडायि खधावि तयायि सालायि पयालावि, पहापस्ययजीविया, पुष्पा श्यंगेगजीवा, फला एगठिया ॥ सेतं

१८ भावको १ नासक ११ कसर १२ पकास कसम १२ कवगव ११ पुतजीवपरिठि बिभसएहरिउयभगाए । चवेभरिवासीरगि काधवेधायइपिया
 स ११ जीवापाता रोगोभाया अगरी या काठानोबाको चारीठा वहेडा इरुके मिलासा उदभरिका चोरचो जाबिवा धातको प्रियाल ॥ २ ॥ पूरव
 निवकरजे सरहातहसीमवायपमवाय । पुयागनागनकं सिरिवसीतहश्चसोगेय ॥ ३ ॥ पुतिका नीव करज सवहा मगवदेग प्रसिद्ध तिम भोगम टीर
 २ पुयागवच भागवृत्त ओपर्वी तिम अयाकवृत्त ॥ ३ ॥ अयाकवृत्तहप्यगारा । जे एववा अमरा तवाप्रकारना । एएसिबंमसावि असखिज्ज जीविया । एइ
 ना मन्मालेये पयकाला वाउद्यामाओरहुण । अद्यावि खधावि तयावि सालावि । मन्मयधि हेठना उपरिला कद सन्मनेनउ त्वधा साकममुष । पनाथा

कदादीरयादरपनरपतिकारिणः प्रशस्ता सा द्रष्टा-रुक्मिणीति ॥ भृशं भूतादयः शुष्का वृतादीप्रचलतः, गुरुमानि नवमासिकाप्रचलीनि
 सता घंषकसतादयः, इह यया स्वयंप्रदेशे विवर्धितोर्गतेक्याकाव्यतिरेकेण न्यात् आरुण्यं परित्युक्तं न निगच्छति ते सता विज्ञेया सा च दम्प
 कादय इति यतः नूमादीशुप्रीप्रचलतः, पर्वणा इत्यादयः, वृषानि कुशलेषुकार्जुनादीनि, वसयानि केतकीकदल्यादीनि तेषां हि स्वभावसमाका
 रेण व्यवस्थित इति इतितामि तदुत्तरीयकसुप्रचलीनि, तुष्यन्त यस्यान्ता, को न शास्त्रादयः जले सुशुक्लीति जलरुहा, उदकावकापनकाद
 यः कुशुका नूमिस्कोटा मिषाला को वा यस्याप्रचलतः तत्र ययोर्दृष्टं निर्वृत्त इति ध्यायात् प्रथमतो वृषप्रतिपादनार्थमाह-से किं त मित्या
 दि ॥ अथ न ते पृष्ठाः? नूरि राह-रुषा द्विविधा प्रशस्ता सा द्रष्टा-रुक्मिणीति यः वृषवीजका यः, तत्र जल २ प्रसिद्धं मस्य येयान्ते रुक्मिणी
 का यः शब्दो वस्यमायस्यगतानेकजनेद्वयूचकः, तथा प्रायो स्विन्नं मन्तरेणै व कसामन्तर्वेत्तीति बहुमि धीकानि येयान्ते वृषवीजकाः, ज्ञेयाहे ति
 काः प्रत्यया, यत्रा पि न शब्दो मत्स्यमायस्यगतानेकजनेद्वयूचकः, तत्रै कास्त्रिकप्रतिपादनार्थमाह-से किं त मित्यादि ॥ अथ को त रुक्मिणीका यः

गतसङ्काटाय, से कितं पत्तेयसरीरयादरवणस्सङ्काटया २ दुयालसविहा पशुता, तजहा-रुक्मागुच्छा
 गुम्मा उतायवक्षीयपह्णगाचेय । तणवल्लयहरियन्तसहि जलरुहकुहणाययोधह्ण ॥ १ ॥ से कित रुक्मा २ तु
 विहा पशुता, तजहा-एगठियाय वज्रवीयगाय, से कित एगठिया २ छुणेगविहा पशुता, तजहा निय

वादि १ नवमासिकादि १ सता अपकवृष १ नामरवस १ देवदहो १ निवे दवकाय ० पञ्चमेतको ८ इतिमाक ८ भोयवि १० पायोर्मासिके ११
 भूषो १२ मासिग । सेकितरुक्मा २ रुक्मिणी पं त । विष कुशसा मेदकाया वचना मुक्कसे के विष । दोबभेदकाया ते कहेते-एगठियाय वृषवीज
 व । रुक्मिणी पशुता पत्तेय वृषवीज २ । सेकितएगठिया २ पत्तेयविहा प तं । ते द्विवि एगठियायाना यमेकभेदकाया ते कहेते-विषवज्रवीज
 सायं पशुतागौतुमेव । सङ्काटमायस्यगतानेकजनेद्वयूचक ११ ॥ गोव १ पाय २ वन १ कासव ३ सावक ५ र्धकोट ६ पोस ० विषोडा ८ वाक

मे भविष्या प्रपन्ना एव दया-निर्दये इत्यादि ॥ गायत्र्या च तत्र नित्याद्यजन्मसोऽस्माभ्याः प्रतीता शाला सञ्ज ॥ यन्कोषमिति ॥ अङ्गोष्ठः प्राकृतत्वात् ॥ यन्त्रे च
 ठकारस्य सादृश्यं अङ्गोष्ठ इति वचनात् पीतुः प्रतीत शैलुः स्यात्तत्र शालाकी यजप्रिया माविष्मालाकी देशविद्यायप्रतीती, बहुल केसरः प
 साञ्जः किदुक्क. करजो मरुमाल पुत्रजोक्को देशविद्यायप्रतिबद्ध अरिष्ट पिपुमन्व पिप्रीतकोच, इरीसकः कोङ्कचदेवप्रसिद्धः सयाययपुलः, मद्रात
 को यस्य निम्नातकाप्रिचानानि कलानि सोऽवसिद्धानि, उन्म्येजरिकाकीरबीपातकीप्रियासपूतिकाजलक्ष्मिंशपाशमपुकागनागकीपक्ष्मशोका
 लाकाप्रतीताः, जे या वक्क तद्वप्यगारा इति ॥ ये पि वा ज्ये सयाप्रकारा एव स्यादारा एव स्यादारा एव सर्वे ज्ये कालिका वदितव्या, एते
 या नकास्तिकानां मूलान्य एव सर्वेयजिष्ठानि अवच्छेद्यमत्येककररीरजीवालकानि ॥ एव कम्पा अपि इत्यादी अपि इत्यादी अपि प्रवासा

यजयुक्तोत्त यसालक्ष्मिकोषपेत्तुसलया । सप्तदशमोयदुमालुय यउन्मपलासेकरजेय ॥ १ ॥ पुर्वजिवस्थरिठे यिनेल
 एहरिऊएयनज्ञाग । उयेजरियास्त्रीरिणि श्रोथस्त्रेधायद्विपियले ॥ २ ॥ पूढयनित्रकरए सण्हातहसीसवायस्थस
 गय । पुशागनागरकरके सिरियस्त्रीतहअसोगेय ॥ ३ ॥ जेयावन्तेतहप्यगारा एतेसिणमूलायस्थसस्त्रिजजीविया
 कडात्रि स्वधावि तयायि सालात्रि पयालावि, पत्तापत्तयजीविया, पुष्पा छुणंगजीवा, फला एगठिया ॥ सेत

र ८ माचजो १ साल ११ कर १२ पलास जसम ११ कनक ११ पुत्तवोत्रयतिष्ठे विभक्तएहरिऊयभक्ताए । उयेजरियास्त्रीरिणि श्रोथस्त्रेधायद्विपियले ॥ २ ॥ पूढय
 ल १ १ जीधापाता देगोभाया चगरा या काठानोबाको चाटोठा वहेगा इत्ये गिलासा उयेजरिया कोरको वाचिवा भातको प्रियास ॥ २ ॥ पूढय
 नित्रकरत्रे सर्वहातहसीमवायपसनाव । पुशागनागरकरके सिरियस्त्रीतहअसोगेय ॥ ३ ॥ पुत्तिका जीव करज सखा मगधदेग प्रसिद्ध तिम शोभम टीव
 र पुवागउच नागवृक्ष योपनी तिम ययावृक्ष ॥ २ ॥ जयावन्तेतहप्यगारा । जे एहवा यभरा तयाप्रकारना । एएसिर्बम्हावि पसस्त्रिज जीविया । एह
 मा मन्त्रत्रिमे पसम्भाता चाउठामाजोवृक्ष । सदादि स्वधावि तयावि सासावि । मन्त्रमपि जेठमा उपरिका यद स्त्रस्त्रेनेबुव लवा सालममृष । पयासा

ऊनीरयादरयनस्पतिरायिका हादक्षायिका प्रकृता सा दया-इत्येत्यादि ॥ वृद्धा दूतादयः शुष्का दूतादीप्रचलतः, गुरुमानि नवमासिकाप्रचलीनि सता दयवसतादयः, इह यया स्वन्मप्रदत्तो विवक्षितोर्गतेक्याकाव्यातिरेकेषा न्यत् शाकान्तरं परित्युक्तं म निगच्छति ते सता विद्येया सा च वस्य कादय इति यस्यः कूष्मांडीयपुत्रीप्रचलतः, पर्वणा इत्यादयः, दुर्वाणि कुण्डलुकार्जुनादीनि वसयानि केतवीकदस्वादीनि, तेषां हि स्वभावसयाका रेव व्यथित्यत इति इतितामि तदुत्तरीयस्वसुप्रचलीमि शुष्य वसयाकान्ता, सो च द्वास्यादय जले रुहन्तीति वसतुहा, उदकावकपनकाद यः, कुडुवा दूमिस्त्रोठा त्रिपाना सो वा यकायप्रचलतः तत्र ययोद्देशं निर्वैष इति व्यापार प्रथमतो वृक्षप्रतिपादनार्थमाह-से किं त मित्या दि ॥ अथ ये ते वृक्षाः ? मूरि राह-दृष्टा द्विविधा प्रकृता सा दया-एकास्त्रिका य वपुवीरका य, तत्र कल २ प्रति एक मस्त्रि येयान्ते एकास्त्रि का य अन्तो वस्त्रमावस्त्रगतानेकनेदसूचकः, तथा प्रायो स्थित्य मन्तरेणै व वसाम्मर्वर्तानि वृद्धानि बीजानि ययान्ते वपुवीरकाः, दोषाहे ति कः प्रत्ययः, यथा पि च गृध्रो वस्त्रमावस्त्रगतानेकनेदसूचकः तन्ने कास्त्रिकप्रतिपादनार्थमाह-से किं त मित्यादि ॥ अथ के त एकास्त्रिका य

णस्सहकाइयाय, से किंत पत्तेयसरीरयादरवणस्सहकाइया २ दुयालसविहा पकृता, तजहा-रुकागुच्छा गुम्ता उतायवर्षीयपहगावेय । तणवल्लयहरियत्तसहि जलरुहकुहणाययोचह्वा ॥ १ ॥ से कित रुक्का २ दु विहा पकृता, तजहा-एगठियाय वज्जयीयाय, से कित एगठिया २ छुणेगविहा पकृता, तजहा निव

वादि १ मरमासिकादि १ कृता वपवपुष ४ भागरव १ वेववही १ निवै वरकास ० वज्जयेतको ८ हरियास ८ पोपधि १० पाचोमासिकमे ११ भूपा १२ वाविना । सेकितरुका २ दुविहा यं त । मिय कुरुसा मेदकका वपना गुरुवसे वे मिय । दोयमेद कका ते कहेवै-एगठियाय वपुवीया य । ववस्त्रिता एववीय पने वहुवीका २ । सेकितएगठिया २ पवेगविहा यं त । ते हिने एववीयवाकाना पनेकमेदकका ते कहेवै-चिदवज्जुकोस य वासपंकावगीनुमेवु । वरमावदमानुय वरवपकासेकरजेय ॥ १ ॥ मोव १ पोव २ कनु १ कासव ४ वासव ४ पोव ० विरोडा ८ वाव

ने नविषा मद्यता हा द्रव्या-निर्घर्षे इत्यादि ॥ नाथा धर्म तत्र निधायज्यु मोक्षम्या प्रतीता आसः सज ॥ अर्कोक्षति ॥ अङ्गुठः प्राकृतत्वा रसुये च ठकारस्य लादजः चङ्कोटेव इति वचनात् योलुः प्रतीतः जोलु अमानकः, शास्त्री गजप्रिया मोचिकीमासकी देसाविज्ञापप्रतीती वपुसः केसरः प लागः भिक्षकः फरजो भक्तमालः पुत्रजीवकी देसाविज्ञापप्रतिबधुः धरिएः पिपुमन् विप्रीतकोषः, इरीतकाकोडूचदेवाप्रसिद्धः कपायधनुसः भद्रात को यम्य चिन्नातकाप्रिधानानि फसानि लोकप्रसिद्धानि उम्मेन्नरिकाणीरीवातकीप्रियासपूतिकरजसस्तुत्रिशापाशुनपुष्पागनागभीपस्यशोका लोकाप्रतीताः, जे या वल तद्व्यवारा इति ॥ ये पि वा म्मे तथाप्रकारा एव म्मेकारा सप्तदेशविज्ञापमाविन सत सर्वे ये कास्तिका वदितव्या एते वा म्कालिकाविकानां वृक्षान्य एव सङ्केतपरीविकानि असङ्केतप्रत्येकशरीरीवात्मकानि ॥ एव कन्दा अपि स्कन्धा अपि त्यक्ती पि शाला अपि प्रवाला

यजयुकोस वसालश्चकोक्षपेहसङ्ख्या । सप्तहमो यदुमालुय द्रउलपलामेकरजेय ॥ १ ॥ पुष्टंजीयश्चरिठे विभ्रेल एहरिरुणयनज्ञाप । उयेन्नरियास्वीरिणि योधेध्वेधायद्वपियले ॥ २ ॥ पुहयनियकरए सएहातहसीसवायश्चस गाय । पुष्पागनागरुकें सिरियसीतहश्चसोगेय ॥ ३ ॥ जेयावन्नेतहप्यगारा एतेसिणमूलाविश्चसस्विज्जजीविया कडावि स्वधावि तथावि सालावि पयालावि, पुष्पा छुण्णेगजीवा, फला एगठिया ॥ सेस

२८ भावको १ माच ११ कसर १२ पढास कसम ११ कनक ११ पुतवीवपत्ति विभ्रएहरियभक्षाए । उवेभरिवाखीगवि भावमेधायद्वपिबा स १ १ जीवापाता देगीभाया चनरी या काठानोबाको चारोठा मनेवा इरुणे भिक्षामा उवेभरिका चोरको जास्तिवा धातको प्रियास ॥ १ ॥ पूरेव निवकरजे मवहातहसीमवायचमवाय । पुष्पागनागकळे सिरिवसीतहश्चसोगेय ॥ १ ॥ पूतिका नीव करज सेववा मयभदेग प्रसिद्ध तिम यीमम टीव २८ पदागसुव नागद्वय यीपनी तिम चयाद्वय ॥ १ ॥ ज्ञापयितव्यगारा । जे एववा चनरा तमाप्रकारना । एएसिणमूलावि चसविष्ण्व कोविवा । एव ना मन्मनिये पयस्याता प्राउणागाजोवपुन । अर्धावि स्वाधि तथावि साधावि । मूलमधि जेठहा उपरिवा खद स्तब्धयेधुव तथा सालप्रमुख । पत्राका

अपि प्रत्येक गसद्वयप्रत्ययस्यैव श्रुतिः तत्र भूतानिपानिकस्य घसा झुमे रत्न प्रसरन्ति तथा सुपरि वज्रा स्ते च लोकप्रतीताः स्वभा
 न्मुद्राः, त्वयः सस्यः शास्ताः शाखाः प्रयासाः पञ्चधातुराः ॥ यथापत्तेयनीययति ॥ यथापि प्रत्येकजीवकानि एकैकं पत्र मेकैकेन जीवेना चिह्नितं मि
 ति प्रायः, पुण्यास्य गन्धजीवानि प्रायः प्रतिपुण्यपत्र जीवप्राया त्वसाभ्यो काल्यकानि उपसहारसाह-से न एगहिता ॥ सुगम बहुवीजकप्रतिपि
 दनायमाह-सेचित्तमित्यादि ॥ अथ क त यदुपजीवकाः ० सूरि राह-यदुपजीवकाः अनेकविधाः प्रप्रासा सा द्या-अन्यजत्यादिगाथाश्रयं ॥ एते च धर्म्म
 कतिगुरुकविपत्याम्याकृतानि विद्वद्भिन्वाभसकनसदक्षिमाद्यत्वादुम्भरवटन्ययो धमन्निवृत्तपिप्पलीक्षलावरीप्रसक्तदुम्भरिक्तुसुम्भरिदेयदालितिलकाल
 स्रकच्छत्रीपशरीपमसपक्षदपिपयसोभ्रपववन्दनाभुमनोपकुट्टकदम्बकाणां मध्य केचिदतिमसिद्धा कचि देशविशेषता वेदितव्या नवर मिहा

एगठिया ॥ से कित यज्ञश्रीयगाः २ अङ्गं गविहा पशुसा, तजहा-अस्त्ययतेऽकविठे अत्राळगमाउलिराधिल्लेय
 अमलगफगसदालिम आसीत्येउग्रवक्रये ॥ १ ॥ गङ्गोहणदिरुके पिप्परिसयरीपिलुक्करकेय । काउग्रि
 कुत्तुन्नरि शोधछादेयदालीय ॥ २ ॥ तिलएलउपच्छन्नी हसिरीसेसप्तत्रयादहिवन्ते । लोरुधयचदणज्जुण गीसेकु

वि यसापलवश्रीविहापुष्पापचयश्रावा वराएगविहा । प्रताव प्रमुक्त यदरा पप्रमख प्रलेखजोवहदे एकेकपत्रे एकेकजान् शुवे एकफले एकेकवहुवे पु
 वविदे एकेकजोवहदे । मलएगविहा । एतव एकविना जीव कक्षा । सेकितवश्रीवगा २ एकेगविहा पं तं । विवे मियवहै गवप्रते खन वदुबोव तद
 गववहै वदुबोवना एकेकभेदे ते कक्षा तिम । यत्तिरतिदुर्कविहे । यत्तिरकवासाहय १ तिंदुक्कवृत्त १ कोठ । यथाकथमाद्यविभिन्नये । यथाकथमोरो
 दित्त । यामनजवमदालिम यामारोव वरवहरे ॥ १ ॥ यामका यथाय दालिम यथाय पोपर वट । यिजोव गदिवस्ते पिप्परिसयरीपिलुक्करकेय ।
 काउग्रि कुत्तुन्नरि वापसा देवदालीय ॥ १ ॥ यथाय गदिवस्ते पोपर सतावर एकेकवह कादुवरी यविवा काविवा देवदाक ॥ १ ॥ तिमणकठणज्जु
 दमिरोदेयतिअद्विपये । काउग्रिअद्विपये । तिलकटो पाकादुक्क वन सरीय सप्तपञ्चमासाहय दपिपठे कावठव ५५ पञ्चन ।

मसत्रादयो न लोके प्रविष्टाः प्रतिपत्तव्या स्तेषा मेकाल्लिङ्गत्वात् किन्तु देशविशेषप्रसिद्धा ययुवीजका यय कर्तन ॥ जे या वले तष्टप्य नारति ॥ य वा न्य तथाप्रकारा स्यं प्रकारा सः पि ययुवीजका मन्तव्या, एतया मपि मूसक्यस्वल्पकृशाका प्रवासाः प्रत्यक्ष मसङ्केयं प्रत्येकसरीरजीवकाः पञ्चादि प्रत्येकजीवकाभि पुण्यास्य मकभ्रीवकानि फलानि ययुवीजकानि उपलब्धारमाह—स न मित्यादि ॥ निगमनह

ऋणकथयेय ॥ ३ ॥ जेयाधयो तहप्यगारा एतसिणमूलावि अस्खिज्जजीविया, कंदावि स्वधावि तमात्रिसालावि पञ्चाडावि, पक्षा पत्तेयजीविया, पुष्पायस्थंगजजीविया, फलायज्जवीया, सेस अज्जधीयगा ॥ सेत्त रुक्का ॥ से कित गुच्छा २ स्थंगेगविहा पणसा, तजहा—याडगिणिस्थइपुणु ईयतहकच्छरीयजासुमणा । रुवीअठ इणीछी तुलसीतहमाउलिगाय ॥ १ ॥ फुलुनरिपिप्पलिया अतसीविह्वीयकायमाईय । चुसपकोलाकदलि वाउद्धाचल्युलेयदे ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवडतहजवासएयभोधे ॥ णिग्गुमिअक्कतूयरि अठइचैयतलउ

पञ्चम नाव कटअ कदवय ॥ कयावकतएगाराएपसिक्कमूलादिफसिक्खिज्जजीविका । जे वली पनेरा तवाप्रकारा एक्का मूत्रपिच पसंस्वावओवसधि त इवे काईववनामूत्र पमजओपइवे । कडावि खंकावि तवावि सावावि एवाकावि । कटमवि खन्नेविवे स्वचनेविवे प्राखानेविवे प्रवाह पक्कनेवि वे । यता पत्तेवओडिया मसा वइयोहा । पक्केविवे प्रवेकओवइवे फलमे वइयोअइवे तेजभाभेठअसा । सेतवइयोअगा । एतसे वइयोअनाभेद कडा । सत्तवका । त तिम रुम ॥ मेकितगच्छा २ पक्केगविहा प तं । शिवे, गन्धानाभेद दिक्कइवे गवकइवे—गच्छानाभेद पनेक प्रकारे कडा ते वइवे—सा र गिबिइइएव ईवतककच्छरीयजामुमका । कयोथाउइयोओ तुममोतहमाउसिगीय ॥ १ ॥ येगव राङ्गओ सक्को तिम कछुरीना यक्का काविवा र्पो पाटो ओमफओ तुममो तिम ओजारा मनोरन ॥ १ ॥ कटवभरिपिप्पलिया पससोवओवकायमाइया । चुसपकासाकंसियाभाभायावत्युसेवये ॥ २ ॥ वटारी पोपरव पससो वसोयवाइयामावि जम पओस करसिका वाउखिजा वावका कदवय २ ॥ पत्तउरसीयउरए इवडतहजवासएयवोपखे ॥

य मुमय, मम्मति गध्यप्रतिपादनायमाह-सकि । मित्यादि ॥ मते गुहमादिदेवा प्राय स्वर्गपत एव प्रतीता ऋषि देगविषया दधगना
स्या च नृणादिषु मल्ले कस्य नाम गृहीत्वा परत्रा वि त काम गृहीत तथा म्यो निबन्धाताय सदृग् नामा प्रतिपत्तव्य भयथा एकोपि क

॥ ३ ॥ सणपाणकासमद्गुग शृगघाफगसामसिदुधारय । करमद्वष्टहसग करीरएरायणमहत्ये ॥ ४ ॥
जाउलतमालापिरली गयमारिणकुक्षुकारियोचेनी । जावडकेचडतहग जपाफलादासिष्टुकीक्षे ॥ ५ ॥ जेया
यणे तहप्पगारा सेत्त गुच्छा ॥ से कित गुम्मा २ शृणगेविहा पयत्ता, तजहा-सेरियएणोमालिय कोरिटय
यत्युजीयगमणोज्जे । पीक्षियपाणकणडुर कुज्जयतहसिदुधारय ॥ १ ॥ जाईमोगगरतहजू हियायतहमसियायवा
ती । यत्युलकच्छुलसेया लगठिमगदतियांचेव ॥ २ ॥ चपगजाईणवणी इयायकुदतहमहाजाई । एवमणेगागारा

विगमुडिपट्टूरि पाठरचेरतनपाठा २ ॥ पयनूच उरलो उरल पुवे तिम जवास जाचिवा भिगुं हो चक पाठ तूरकौभिवे तेलाकावृच ॥ १ ॥ सब
पायकामममम पयवाडनमामसिदुधारये । करमपयडूरुसम करीरएरायणमहत्ये ॥ ४ ॥ सब पान कामसमपूच पाषाढो जाम सिदुवार कर पडू
मा चेर कठाना रायन ॥ ३ ॥ काउकतमाकपरिको गबमारिविक्कमकारिवा भेडो । सावडकेचडतहग जपाफलादासिष्टुकीक्षे ५ ॥ काउल तमास परि
मोवेयेयिमेय मन्नारवो कडकारिका भो हो यावत् कतौ तिम गडपाळल एहवा चकोस ॥ १ ॥ जेयावसेतहप्पगारा । ज घनेरा तबाप्रकारना ।
जेत मच्छा । ते तिम गुच्छाकछा ॥ सेकित गुच्छा २ पचेगविहा प त । ते कुन यल्ल गहवई ते घनेअप्रकारे कथा । ते कहैछे-सेरियए
जामाविच काठवचवोशममपय ॥ पोरवपाचकवर कज्जयतहसिधुधारये ॥ १ ॥ सेरीयनामा नयमानिका कोरटक यधुओवक विपचुरिया
पू न मगाअनामा मुक्क पौतिकर पाथर प्रमिह कण्ठर कज्जकनामा तिम भिगुं हो ॥ १ ॥ जाड मुक्करतहग हियायतहमसियायवासो । करमुसवच्छु
म ॥ भगडिमगदतियांचे ॥ २ ॥ सायनाण्डुन यागरा तिम जू ॥ तिम माकलीगुल्ल पासतो पत्युन च च्छाकगल्ल सेनासगुल्ल गठिमगनामे इतिमग ॥ २ ॥

हवतिगुम्नामुनेयक्षा ॥ ३ ॥ सेस गुम्ना ॥ से कित लयाने लयाने अणेगधिहाने पखसाने, तजहा—पउमल
 यानागलया आसोगचपयलयायधूतलता । वणलतवासतिलता अउमुत्तयकुवसामलता ॥ १ ॥ जेयायसेत
 हप्यगारा सेत लयाने ॥ से कित यहीने २ अणेगधिहाने पखसाने, तजहा—पूसफलीकालिगी तयीतपुसोय
 एउयालुकी । घोसालहुपफोला पचगुलिआयणालीय ॥ १ ॥ वगूलयाकटुइया वक्कोऊइकारियईसुजगा ।
 कुयवाययगलीपा यावसीतहदेवदाडीय ॥ २ ॥ अफ्फोआअइमुसय नागलयाकरहसूरवहीय सधहसुमिण
 सायि जायसुमणकुविदयहीया ॥ ३ ॥ मुहियअधावही यीरविरालीजियतिगोयाली । पाणीसामायही गुजा

पयवसाइववकी यावकुदातहामहाभाई । एवइवेगगारा ववतिगआसुवेववा ॥ १ ॥ वपव जातो नवरगौ सववद तिम महाकाय इम पनेबभेद
 पाकारहै मुख्यमतित्राविवा ॥ १ ॥ मत्तगुआ सेकित सवार पचेमविवा य तंजहा । ते तिम गख ॥ ते हिवे शिव सताआतिपूजेगट्टुहै देमकातुभाय ।
 सुताजाति पनेव पकारनो वकी तेवहै—पठमखडानामसया पमोनपवसवायभूवसवा । वनखवासतिलहा यइमुत्तयकुवसामलता ॥ १ ॥ पप्रसता
 नागलता पगावसता पंयवसता भूतसता वनसता वासतोसता पतिमलवसता कुदसता आमसता ॥ १ ॥ जयावसेतइत्पमारा । ज पचि चीर तवा
 प्रकारना ते जता कहिये । सेतवताची । जता वनजति वकी । सेकित यकीपा वकीपा पचगविवापा य त । हिवेमिचपूख कुव ते वकी वकी पनेव
 पकारनो वकी तेवहै—पूमफवीआसियो तयोतठमोयएलवालकी । वासावइपडाला पंयगविवायगलोय ॥ १ ॥ कगुवाकडवा ककोसावखियईसु
 भगा । कुयवाययगलिपावे यकीतइवेवदासीव ॥ २ ॥ यप्यायापइमत्तय नागलतावइसूरवहीय । सवइसुमिचसाविय आसवपकुविदयहीय ॥ १ ॥ सु
 तिवपशवही बेराकीएकर्यतिमावाही । वाचोमासावकी गंजावकीयवताची ॥ ४ ॥ सेसिविदुगोतफसिया गिरिखसरमासयायपचवई । दइफुजयकी
 गसिमा मभीयतइपचवीदोवा ॥ ५ ॥ पूसफवीका सिगी गुवो तीठची एउथी चोभकी घासातकी पटान पचागुलो भासिवा ॥ १ ॥ वम् कटुकी खकोडा

पि दमेकप्रातीपक्षो प्राति यमानासिकेरीनह रेकास्थिक शखचो वसयाकारखा ॥ वसय सतो मेकप्रातीपखा दमेकत्वा दपि त खाम निर्दिश्य

यादीययत्याणी ॥ ८ ॥ ससविदुगोत्तफुसिया गिरिकण्डमालुयायथ्यजणई । वहफुस्यकागलिमा गलीयतह
 थ्यक्रायेदीया ॥ ५ ॥ जेयात्रयो तहप्यगारा सेसं वधीति ॥ से कित पव्गमा २ थ्युणगेविहा पखसा, तजहा—
 इरूयाइरूयनये वीरुणातहहक्कनेयमासेय । सुठेसरेयवेसे तिमिरसतपोरगणले ॥ १ ॥ वसेवेलूकणए कंकम
 यंसयययसेय । उदएकुरुणियमए कमायेलूककाणे ॥ २ ॥ जेयात्रसे तहप्यगारा सेस पव्गमा ॥ से कित
 तणा १ तणा थ्युणगेविहा पखसा, तजहा—सेअगतिथहोसिय वस्रकुसेपव्गएयपोनइला । थ्यज्जुणथ्यसाठए
 रा हियसिसुयवेयखीरनुसे ॥ १ ॥ एरनेकुरुविदे करकरसुठेतहाविजगूय । मऊरतणतुरयसिप्यिय बोधसु
 सुकलितणय ॥ २ ॥ जेयात्रयो तहप्यगारा सेस तणा ॥ से कितयलया २ थ्युणगेविहा पखसा, तजहा—ताले

बरेना यभवा कबधा बामडा पडडा तिमत्र दवण्णसो ॥ २ ॥ पपीक पतिमुक्का नागरवण कणवहा सवय स्मजहा कासपवं कुविटवसो ॥ ३ ॥ मुट्टि
 बा पंधा बिरानो जयतो पापावो बाचो मामावसो मत्रापत्री बत्तावो ॥ ४ ॥ ऐमवतो दुमाचा करसो गिरिकर्चो मासुका पंजना द्रष्टो प्राप्तिका कर्
 मचो मामतो तिम पक्कावोदो ॥ ५ ॥ जेयात्रसे तहप्यगारा सेसं वधीति । जे पय पिय तहा प्रकमना तेबलोविदे एतसेवलोवहो । खिंजित पव्गमा २
 पचेमविहा प तं—तेकुप पर्यंत पर्यंत पमेज प्रकारनाकळा तेकईजे—सेअही थ्यवाटिका भोसवो इकाड मासा सुठ समरिस पोरयच बोध सेअव
 वा यडावसो मात्रवसो उदक कुठव विसुक्क अठवस कळायो ॥ १ ॥ खेवा । जेएडवा पमेरा बिच ते पर्यंत कचिदे । सेत पव्गमा । एतजे पयग कळ्या ।
 मेजित तथा तथा पचेमविहा प त । तेकुप तूण तूण पमेजप्रकारना कळ्या ते कचिदे । मेठिववति ॥ सेटित मतिना मोतिना काय सुय पवग पोडव
 पत्रुन पापाठ रादिच सुरवक नीप्पुस ॥ १ ॥ एरव कुवविद करवच सुठ विष्णू मधुरतूण कुरव थिप्पव मुळतण २ ॥ अथा १ ॥ अजयविच एडवा ते

भाग न विरुध्यते साम्यं तमुक्तानुसंगीयैश्चैव नानाविधैरुपाधिभिः ॥ श्रीमाध्विधं नामोपेकारं सत्त्वात् नानाकारित्वेन तानि नामानि विधेयं

तमाउतकृत्ति, तेयालीसालिसारकज्ञाणे । सरलेजायतिकेयइ, कंदलितहपउमरुकेय ॥ १ ॥ नुयसरुकाहिं
गुरुके, लर्धगरुकेयहोइयोधे । पूयफलीसज्जरी, योधहानालिपरीय ॥ २ ॥ जेयायणे तहप्पगारा सेस
यलया । से कित हरिया ? हरिया अणेगीयहा पसासा, तजहा—अज्जोरुव्वीदाणो, हरितगतहत्तवुल्लेज्ज
गतणेय । यत्तुलपोरगमज्जा, रपोइव्वीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदव्वी सोत्थियसाएतहेयमनुक्की ।
मूलगसरिसअयिड, साएयजियतएवेव ॥ २ ॥ तुलसीकरइठराले फणज्जुएअज्जाएयनुयणए । चीरगदमण

जे एववा जनेरा तवाप्रकारणा दव्वकदिवा द्योमावासे । सेरतवा । ते तिम दव्व कववा २ अयेगविवा पं तं । तेप्रिय पूवे कुव व
वव मेइ, वव गुव ववपनामेइ अनेवप्रकारे कक्षा ते कव्वे—ताव तमावेवदलि तेयविसासयसारकक्षाचे सरलेजायतिकेयइ कदसतवधसकव्वेव । १ ।
ताववच तमावच तमावित सासिका सारकव्वाच सरले जावनी वितकी कव्वी तथा वमवच । भुयवक्कडिगुवेक्के अवंगवक्कडिवाइवोधवे पूयमको
खल्लोवोववा नाविपरीव । २ । मूतवच जोववच लव्ववच एववेनामे ते नाविवा पूयोवस विक्कूरी नाविवा । २ । अयावसतवपमारा ।
एववा ववनी तवाप्रकारे जनेरा । सेतववयी २ सेकिते हरिया अयेगविवा पं तं । एतले वनफतोना ववयानामेइ कक्षा ते द्विवे हरितगामेइ पूवे मि
च तद गुवववे हरितमेइ तिम वेप्रिय हरितमेइ अनेवप्रकारे कक्षा तेवववे—अज्जोरुव्वीदाणोचे हरिवमतवर्तवुल्लेज्जगतयेय वत्तुलपोरगमज्जार पोखव
लीवपालक्का । १ । पञ्चाव्व वाठाव हरित तथा तदुल्लवववक्कच पोर माज्जोर पायवजी पासका । २ । द्यपियविवाइवो सातोवसरयेतहेवमकको
मूतवसरिववपाविद साववजियतिववेव । १ । द्यपोपव एवी सेसिका तिगव्वोज मूको मूतग सरुव नाविवा सावत जयेतो निवे । तुलसीकरणेव
राव प. विज्जएपयवयमूवए चारदगमवमवपग सयपुण्णोवेववतथा । २ । तुलसी कव्वे वदर फोविज अर्जुन मूवव चारदग ममव दुवव संव

चि दनेकजातीपक्षी प्रगति यमानासिकेरीतह रेकास्थिक स्वकी बरपाकारखा ॥ वसय सती नेकजातीपखा दनेकखा दचि त काम निर्दिश्य
 घाडीयवत्याणी ॥ ४ ॥ सुसविदुगोतफुसिया गिरिकसुडमालुयायश्चजणई । दहफुल्लयकागठिमा गलीयतह
 अक्षर्योदीया ॥ ५ ॥ जेयात्रस्ये तहप्पगारा सेसं वधीति ॥ से कित पखगा २ अणुगेगविहा पखसा , तजहा—
 इरुफाईस्कुन्नये वीरुणातहइक्केनेयमासेय । सुटेसरेयवेसे तिमिरसतपोरणले ॥ १ ॥ वसेवेसुक्कणए कंका
 यसेयययवसेय । उदएकुनएयिमए कनावेलयकक्षणे ॥ २ ॥ जेयात्रस्ये तहप्पगारा सेस पखगा ॥ से कित
 तणा ? तणा अणुगेगविहा पखसा , तजहा—सेन्जियगतियहोसिय दसकुसेपखएयपोळइहा । अजुणअसुसाठए
 रो हियसिसुयवेयसीरनुसे ॥ १ ॥ एरनेकुसविदे करकरसुटेतहाविजगूय । मळरतणबुरयसिप्यिय बोधवे
 सुकलितनेय ॥ २ ॥ जेयावयो तहप्पगारा सेस तणा ॥ से किंतयलया २ अणुगेगविहा पखसा , तजहा—ताले

बरेवा समग वृक्षदा वायडा पक्षी निमज ददाया ॥ १ ॥ यपाव फतिमुळा नागरवळ कृष्णबही स्वयं समनवा जायपच कुपिंदक्यो ॥ १ ॥ मुडि
 का पंथा बिरानो खयतो बोपासी बानो मामावको मजावयो बधानी ॥ ३ ॥ येमवतो पुगाचा फरमो गिरिकर्षी माकुका पजना इडो फाखिका बर
 गनी मावटो तिम पकादीसी ॥ १ ॥ जेयावने तकरपगार सेसवकीची । जे यव पिय तहा प्रकारना तेवकीचिइये एतकेवकीचडो ॥ सेकिंत पखया २
 पचेयविहा पं तं—तेकुप परवंग परवंग येनेक प्रकारनाकखा तेकईजे—सेकी इखवाटका बोसबो इखड माकी सुंठ वमरिस पोरयच बौच सेखड
 या खडावसो बायबसो छडळ कुठळ विसुळ खंठवेळ बान्याचो ॥ १ ॥ जेया । जेएडवा येनेरा पिय ते परवंग कचिडे । येत पखगा । एतके पवय कखा ॥
 नेजित तथा तथा पवेगविहा प० त । तेकुप गुण गुण येनेकप्रकारना कखा ते कईजे । सेठिबबति ॥ सेठित मृत्तिका होतिथ जाभ कृप पवग पोटाभ
 पत्रुन पापाठ रोदिस सुयवळ लीरुम ॥ १ ॥ एरड कुडविड करवच सुंठ विण्णु मधुरतुष कुरळ विण्णव मुखतुष ॥ २ ॥ जेया । सम्यपिच एडवा ते

भाग न विरुध्यते, साम्प्रतमुक्तानुसारायंस्तुहार्थनिर्देशात्-साक्षाद्विदेत्यादि ॥ मोनाविष नानाप्रकारं संस्थान साकृतिर्यथा तानि मोनाविषवर्षे

तमाखेतकृत्ति, तेयालीसालिसारकक्षाणे । सरलेजात्रतिकेयह, कंदलितहपुमरुरकेय ॥ १ ॥ नृयसुरकाहि
गुरुके, छयंगरुरकेयहोदयोधे । पूयफलीखज्जुरी, ओधछानालिपरीय ॥ २ ॥ जेयात्रणे तहप्यगारा सेत
द्युछया । से किंत हरिया ? हरिया छ्यणेगयिहा पयाधा, तजहा-छ्यज्जोसहयोदाणो, हरितगतहतहुलेज्ज
गतणेय । दत्युछपोरगमज्जा, रपोइवप्पीयपाछक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयवप्पी सॉल्ययसाएतहेयमहुक्को ।
मूलगसरिसत्रय्यिल, साएयजियतएवेव ॥ २ ॥ तुलसीकयहंतसले फणज्जुएय्यज्जएयनूयणए । खोरगदमंग

जे एददां जनेरा तवाप्रकारणा ददकजिवा दयोभापाये । सेततका । ते तिम लप कइवा । सेकित वलवा २ एवेगविदा पं तं । तेग्रिय पूछे कुंय व
कव भेद, तव गुद वसवनाभेद एनेकप्रकारे कइवा ते कइये-ताव तमासेतयसि तेयसिवाथयसारकक्षाचे एरखआवाकयइ कदकतहधम्मवलय । १ ।
ताकसुद तमाकसुद तमासित सासिका एारकळाथ सरले द्यावपी वितकी कदसो तया वमहव । गुदवकजिगुदको खवंगवस्ववटोइवाधवे पूयफली
पप्पूरोबोववा नादिरौय । २ । मूलसुद र्गोगसुद एवसुद एववेनामे ते नाबिवा पूओफव एवप्पूरो नासिकर । २ । जेयावसेतकयमार ।
वदवा पवा तवाप्रकारे पनेरा । सेतववया २ ऐजिते हरिया एवेगविदा पं तं । एतसे वलमओना वलयानाभेव कइवा ते द्विरे हरितगाभेद पूछे मि
य तव गुदकदे हरितभेद तिम जेग्रिय हरितभेद एनेकप्रकारे कइवा तेकइये-एकहादइवाठाके हरियमतहतदुसिधंगतवेय वलुवपोरगमज्जार एपोयव
सोवपासववा । १ । पञ्चादइ वाठाथ हरित तथा तंदुल तंयवच्छव पोए माल्लीर पायवली पासववा । २ । दगपिप्पलीयवप्पी सॉल्ययसाएतहेयमहुक्को
मूलगसरिएवपाविल सायबलितिववेव । १ । दगपीपथ एवो खसिका तिगहोअ तंहुको मूलग सरयव नाबिवा सायत एवतो जिते । एवलो कइयेत
रास पा.विज्जएपल्लुवयभूवए वारदगमममकयग खवपुप्पोदेवरवववा । २ । एवसो छयं ठदार फाबिज थर्जुन मूयन वारदग मंनक रुपव संय

न्यासानि पुराणानि पुराणप्रमुखादयः तेन गुणगुणमादीनामपि द्रष्टव्य, यत्रादि एकजीवना लोकादीनामपि स्थितानि वेदितव्यानि, स्कन्धोपि

गमक्यग सतपुष्पिदीयरेपतहा ॥ ३ ॥ जेयावये तहप्यगारा सेस हरिया । से कित ठसहीठ ? ठसहीठ
 शुणंगधिहाच पयासाच, तजहा-सालीवीहीगोक्लिम जवाकलमसूरतिलमुगा । मासणिष्कात्रकुलस्य शुलिस
 दमतीणएलिधा ॥ १ ॥ अयसीकुसुनकीद्वय कंगूरालगथरदकीद्वसा । सणसरिसवमूलगथीया जेयायये तहप्य
 गारा नत्त ठसहीठ । से कित जदरुहा २ शुणंगधिहा पयसा, तजहा-उदए अयए पणए सेवाले कलधुया
 हठे कमेरया कल्पनाणी लप्पदे पउमे कुमुदे णलिणे सुनए सुगधिए मोररीए महापोररीए सयवसे सह

इत्यादयः तिम । जेयावसतव्यकारा नेत उरिया । किंसे येनेरा तवाप्रकारे ते तिमहं तिम उरितवावमेव ज्ञा । सेकित पाविही २ अयेगविहा
 प त । ते दिव्य सीमधिमेद न्ने गुह सीपरीभेद यमप्रकारे ज्ञा तिम--सावोवोहीमात्र मय्यवकमसूरतिलमुस मासनिपावकतवा पळीसदस
 नीवमनिमहा । १ । पयसीवसमकद कंगूरालगथरद कीद्वसा सणसरिसवेये मूलगथीवातहावेव । २ । सावो वीही गाकम जव कदय मसूर तिमज ति
 न मग वदद भ्रातर कदय पळी दमती वमिमवक पसावीया कमथा काद्वय काग राक माध कोद्वय सामय उरिव मूलावीक तिमजीक निते ।
 त्रवावसतव्यकारा सत पावही । जे येनेरा तवा प्रकारे ते सीपरीनाम ज्ञा । सेकित लवकहा २ अयेगविहा पयसा । किंसे ते सुव जदरुहमेद पूरे
 जे गुह उमरवनाभद यमेकप्रकारे ज्ञा ते कहेवे--उदयपयएपय सेवसेवसमुयाद्वे सकयाकलमावो जपसेपउमेमुग । १ । उदक सय पाव से
 वाज कर्मवक देव भेरव कण्ठमावो उत्पन्न पय कुमद । निजिमेमभयोमधिए पंढरीएमहापंढरीए सबसेसकथासे कवशरिव जणए । १ । नखिप
 यमय भीर्मधिक पुण्डरीक महापुण्डरीक यतपण मकसयण कपहार काकमद । परविदेतामरिसे तिमोतिसमथासेपुल्लसपुल्लसखिभए । परविद तास
 एव तिजेतिप मुवाध पुल्लस पुल्लसिभ । १ । जेपावसेतव्यकारा सतवकहा । जे येनेरा तयाप्रकारे ते सब जदरुहमाभेद ज्ञा ते गिय कहे ।

पुत्रजीव यक्षजीवापिपित्तः किं सर्वेषां मपि ने त्याग-तालसरलनासिकेरीया ताससरमनासिकेरीयायपुत्रमुपसर्षणं तेना न्येषा मपि यथागत भेक
 जीवापिपित्तस्य रक्तस्य प्रतिपत्त्यं कस्येषां तु रक्त्याः प्रत्येक मन्त्रप्रत्यक्षरीरित्रीयात्मका इति सामर्थ्यां द्रवस्य ॥ रक्त्यापिपित्तगजीविया इति
 पूर्वमभिप्रायमात् अथ यदि प्रत्येकमन्त्रक्षरीरिजीवापिपित्ता क्षतः कथं येकयुक्तक्षरीराकारा उपलभ्यन्ते इति तदवस्थानस्वरूपमाह-अहसगले
 त्मादि ॥ यथा सक्तस्यपपाकां भेषमिद्याका अस्मभ्यविभिन्नतामा धालितावतिरक्कपा प्रवति अथ ते सक्तसर्पपाः परिपूषक्षरीराः सक्तः
 पुण्यं अस्त्रायणाश्नया विध्वंसि यथा नया एवमेव पमया प्रत्यक्षक्षरीरिखा जीवानां शरीरसङ्गताः पुण्यं स्वस्वावगाहना जयन्ति, इति इह जीवा

रसवत्से करदारे कीकणदे अुराविदे तामरसे जिमे निसमुगालो पोस्कले पोस्कळिच्छुलए जेयात्रयो तहप्य
 गारा सेत जलरहा । से कित कुहणा ? कुहणा अ्युंगविहा पक्ष्मा, तजहा-आए व्हाए कुहणे कुणक्षो
 दव्वहदिया अ्युफाए सज्जाए लत्ताए वसीगहिया कुरए १ जेयात्रसे तहप्यगारा सेत कुहणा । पाणाधिहस
 ठाणा रस्काणएगजीवियापत्ता । खद्योविण्णजीवां तालसरलनालिएरीण ॥ १ ॥ जहसगलसरिसयाण सिडेस

सर्वितं कुपडा २ पजेमविहा प० त । यत्र गुहकहे ते पनेकमकारे कहेहे, कुपडानामा वनसतोनाभेहे तिके गुह भिन्न कहेहे खरी । पावकाएकहके
 कश्चटपक्षिया सपभाएवेताए कृतापवसोवहियाः कुपड । पाव काव कडव कडव द्रव्यवहिया समम सेताव क्काव यसोवहित कुपडरक्तनासा ।
 जेवावपतजव्यगारा सेत कश्चडा । जे पतरा तथामकारे सब कुहस कहिये । पावाविहसठावाकलाव एमजीविया पत्ता । नानाप्रकारे सक्कान प
 नेकपाकारे सधादिवना मन्त्रपदादि एमजीवसे तेकथा--अुवाविपगखोवा ताससरमनासिकेरीव जहसगलसरिसवाव सिडेममिच्छापवहियावही । ख
 य पिच एमजीवसे ताक एवरी नासेरो खडेहट सवा गावा कहेहे, जिम सक्क सरसव क्का द्रव्य पीखयोद्वय तेके मियकोपा एकठावाय जिम ।
 पनेकखरीरावं तहजीतिसरीरसधाया कश्चातिसपण्णिया यएवहितिखिसधधाम्तो । प्रत्येक शरीरपते तिमइवे शरीरसंघात एकठाके जिम तिसपा

हलिदासिगधरेय, श्यालुगमूलएइ यकेंतुय कणकरुतमजपोगलईतहेव मज्जासिगी विरुहा सय्यसुगधा वि
 न्तरुहा चेव थायरुहा पाढामियथालुकी मज्जारसा चेव रायवल्ली य पउमा य माठरी वति धाकिहाति
 यायरामासपणी मग्गपयि जीयियारिसिके य रेणुया चेव कान्ठली खीरकान्ठली तथा जगीणहाइयाकिमिरा
 सिन्नदमुल्याणगलईपेलुगाइय किरुहे पउले य हठहरतणुया चेव लोयाणी कण्हकदेवज्जो सूरणकदे तहेव
 खल्लुने एए अणतजीया जेयावणो तहायिहा ॥ तणमूलकदमूलो वसीमूलिस्त्रियावरे । सखेज्ज मसखिज्जा घोघ
 हाअणतजीवाय ॥१॥ सिघारुगरुसुगुच्छो अण्णेगजीवीउ होंति जायव्वो । पप्पा पसेयजिया दोणियजीयाउ फले

टो हाविद नुइवेर पादु रत्तालू मूखो वंक्क खल्लव मपुया पाखव तिमभोज । मुहसिबोविरुहा एण्डुवधाविसिरुहाचेव बोधवहापाठामिय बावुबोम
 इररसवेव । मपुसिगी विरुटी कपमाएन्ना विरुहहा निवे बोधवहा पाठारहा मितवाहुवा मधुररस निवे । रावबोसपउमाय माठवंतापठोकि
 ठित्तिववराए माठपविसलपवो कोविदरसइवरुपाचव । रायवेव पप्पा माठरी दीनो वणो किहिसत्तिमरा मायपवी मूत्तपवी कोविदरसभ रेणुवा
 निवे । वापासिपीरबावो तउमयोवनिदोवय विमरासिमइमुखाव गुहाएणिओयपिक्कए । काठो चोरकाठो तण तिम भंग निवे कमरा
 नि भद्रमाव सुखो मिलाय वणुवा । विसेपवसइवे इरतववावेमकोववोकरवे कवेवलीनूरव नदेवरेवएइरे । खल्लपटाव वल्लवन्द इरतए निवे खावा
 वो खल्लवन्द वणुवन्द सूरवन्द तिमभोज विलाहा । ए धवंतलीवा जेवावसेतहाविहाव । इवा कम्पामाहि धमत्तलीवहे जे पइवा धनेराओण तवा
 प्रहारता । तवमूलवइमूखे वंयोमूखेतिवावरे सखिज्जामसखिज्जा बोधवावंतकोवाव । तवमूल वन्तमूल वंयोमूल इवामाहि सुखाता पवप्पताता जा
 विवा पनत्ताओव । सिघारुमएगुच्छो पसेयकोबोठरोरचायवो पत्तापसेवजिया दोणियकोवाफेभविवा । सिघोखामो जे गुच्छइवे तेवमाहि पनेक
 मोव जाविवा इवे पातडे २ प्रत्तके वेवे जोपपुवे एतमाहि कप्पा । खल्लमूलधमंणव समभगोवदोशरे धमत्तलीवेउसेमूखे जेवावसेतहाविहा १२ ।

पिबारे सेमस्रव्यत्यानीये रात्रयेयीपचितं तथोविधं कर्णे शुक्लसंयुपं पस्याभीयाः प्रत्येकधारीराः शुक्लसंयुपं पस्याभीयाः पुराणं ह्य
 स्तावनाहवप्रत्येकधारीराधैवित्तपप्रतिपत्त्यये, अग्निव दृष्टान्ताकार साह-जस्येत्यादि ॥ यावद्यो वृष्टान्ताकारसूचने यथा तिलस्रज्जुलिका तिलप्रपाता
 विमुगथी उपपत्तिः कतिचित् निर्दिष्टा गतो यथा पुण्यं २ श्रद्धायगावृत्तिसात्तिका जयति, अथपि देवकृपा ॥ तथा अग्रे यो यस्या
 प्रत्येकधारीरिवां औपागो हरीरस्रहाताः अथ प्यि देवकृपाः पुण्यं श्रद्धायगावृत्तिसात्तिका जयति, अथपि देवकृपा ॥ पुनर् ॥ य गति
 वाचारकयनस्थितिकापिक्वप्रतिपादनायेमाह-वेकितमित्यादि ॥ अथ न ते सापारकधारीरयादरयनस्थितिकापिक्व अनेकविधाः प्रपन्ना साध्या-अथ
 यत्यादि ॥ एतेष्वेभिर्द्विप्रसिद्धत्वा स्वपि हेतुविशेषाः शय मेव प्राप्त्याः ॥ अथपि अनेकविधाविशेषाः ॥ ये चि ता म्ये सत्त्वव्यतिरिक्ता साया प्रभा

मिरुखागदाह्याग्रहा । पसेयसरीराणं तहर्हेतिसरीरसंधाया ॥ २ ॥ जह्वातिलपम्पक्रिया यज्जगृह्णितिलेहि
 सहतासती । पसेयसरीराणं तहर्हेतिसरीरसंधाया ॥ ३ ॥ सेत पसेयसरीरयावरयणपम्पकाह्या । से कित
 साहारसरीरयावरयणसस्रकाह्या २ ॥ अथपिहा पण्ना, तजहा-अथपि पण्ण सेवाले लोहिणी निह
 त्यिन्ना अस्सकणी सिहकणी सिठठातसेमुसंठीय ॥ १ ॥ कुरुकुरुहरियाजरा, छीरविराजितहेवकिहरीया ।

परो बहुततिहा एकठवाये पाकेदेवे । पसेयसरीराणं तहर्हेतिसरीरसंधाया सेतपसेयसरीर यावरयणपम्पकाह्या । प्रत्येकधारीरा तिमपुवे प्ररोरंधपात
 भवा वतसे तिग प्रत्येकधारीरा आह वनस्यतोकायना भेदकथा । तर्किते साधारकधारीरयावरयणपम्पकाह्या २ ॥ अथपिहा यं. तं. । ते विवे याधारन
 मरीर वनस्यतोनाभयं वेतना, तद् सुवचने साधारकधारीरा आदरयनस्यतोना यमेकभद कथा ते केहे -- अथपि पण्ण सेवाले काहिबोसिप्रपोप्रस्थिता
 परोविविधोदकको विरठितनामसं डीय वक्रकुरिया । यव पमव सेवास रापिबो मियुनो अविश्रमगापमवर्धे विपवर्धे य अठिततवद मुसंठ व
 अथ कधरो । योकोरीरमिराको तहर्हेतिसंधाया सिहकणी सिठठातसेमुसंठीय । अथपि अनेकविधाविशेषाः ॥ ये चि ता म्ये सत्त्वव्यतिरिक्ता साया प्रभा

समनानि तथाप्रकाराणि व्यविहृतमूषममसमप्रकाराणि तान्यप्यमन्त्रीयानि द्वातव्यानि, यथ कम्पस्वस्थस्वस्थस्वासाप्रवाहपप्रपुष्पफलवीजवि
पया अयि नव व्याख्याः सम्मतिं प्रत्येकद्वीरसकृदाविधानार्थं गायदशक माष्ट-जस्वत्यादि ॥ यस्य मूलस्य जन्मस्य सतो नङ्क जङ्गमदश हीरो

जस्वपत्तस्सजगस्स समोज्जगीवउसेपहे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्वपत्तस्सजगस्स
समोज्जगीपदीसइ । अणतजीउसेपुण्णे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्वपत्तस्सजगस्स समोज्जगीपदीसइ ।
अणतजीवफलेसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्ववीयस्सजगस्स समोज्जगीपदीसइ । अणतजीवेउसेत्रीए
जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्वमूलस्सजगस्स हीरोनगीपदीसइ । परित्तजीवेउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा १
जस्वकदस्सजगस्स हीरोनगीपदीसइ । परित्तजीवेउसेकदे जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्वसस्वधस्सजगस्स

माभया अचतजीवकासहे जेयावन्नेतहाविहा । जे हासमागेकके समाभय दोसे तेमास अन्तकावम इव खि यइवा अनरा वयाप्रकारे । अणपत्त
भगव समम अचतजीवसेपत्त जेयावन्नेतहाविहा । जिअ पावहे भागतायका समाभंग दोसे ते पव अनन्तजीव इवे जे अनेरा पिअ तिवप्रकार
अविहा । अणपुण्णखमभरस समाभंगदोसर अचतजीवेउसेपुण्ण जयावन्नेतहाविहा । विअ मूलकागेवस समाभंगदोसे ते अनन्तजीव इमे मूल
जे अनेरा तथाप्रकारे । अरमफसरसमभरस समाभ अचतजीवकफसेच जयावन्नेतहाविहा । तिवप्रस भागतेचजे समाभंग दोसे ते प्रस अनन्तजीवमे
इव जे एइवा तथाप्रकारे । अरमदोदरसमभरस समाभ अचतजीवेउसउ ए जयावन्नेतहाविहा । अ बीअ भागेवके समाभंग दोसे ते अनन्तजीव दोज
पनेराप्रकारे तथाविध इवे । अरममूकरमभरस दोरामगावदीसए परित्तजीवउसमस जयावन्नेतहाविहा । जेमस भागेवके पिपसमय इ से रगम प्रत्य
अ जोरमहित कश्चिजे अ अनरा तथाप्रकारे । अरमकउदसभरस दोरामगावदीसए परित्तजीवउसेकदे जयावन्नेतहाविहा । ज अरमगागेवके विव
तमग दोसे ते अरमपि प्रत्येक जोरमादि इव जे अनरा तथाप्रकार । अरमक, रसभारस दोराम परित्तजीवेउसउथ जयावन्नेतहाविहा । ज

रा उत्तमप्रकारा स्त्रीप्य मन्त्राधीना प्रातःकाला ॥ तथैत्यादि ॥ यद्यन्मूलं कन्दमूलं यथा पर वल्लीमूल एतेषा मध्ये क्वचि ज्ञातिभेदतो वेद्यनेवतो वाचस्पति
ता स्त्रीयाः क्षत्रिदसङ्गताः क्षत्रि वृमन्ता य प्रातःकाला ॥ सिंघाद्वनस्तेत्यादि ॥ अङ्गुष्ठकस्य यो गुच्छः सो ऽनेकलीलो अवति ज्ञातव्यः । त्यङ्गुष्ठाद्यादी
नाममन्त्राधीनास्तस्यात् वेदस्य तस्यापि याति पथादि ताभिः प्रत्येकलीनाभिः फले पुनः प्रत्येकमन्त्रेकस्मिन् द्वौ २ लीनी प्रविर्तौ ॥ जस्समूलस्सत्यदि ॥
यस्यमूलस्य जगस्य सतः समन्यकान्तरूपं यथाकारो जङ्घ्रः प्रकर्ष्येण दृश्यते तन्मूलमनन्तजीवमवस्य ॥ जेयावयेतद्वादि ॥ यान्य ऽपि चान्यानि

नर्णिना ॥ २ ॥ जस्समूलस्सजगस्य समोजेगोयदीसए । झणतजीवेउसेमूले जेयावयेतद्वादिहा ॥ १ ॥ जस्सकदस्स
जगस्य समोजेगोयदीसई । झणतजीवेउसेकदे जेयावन्तेतद्वादिहा ॥ २ ॥ जस्सस्वधस्सजगस्य समोजेगोय
दीसई । झणतजीवेउसेस्वधे जेयावन्तेतद्वादिहा ॥ ३ ॥ जस्ससयाएजग्गाए समोजेगोयदीसई । झणतजीया
तयासाउ जेयावन्तातद्वादिहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सजगस्य समोजेगोयदीसई झणतजीवेउसेसाले जेयावन्ते
तद्वादिहा ॥ ५ ॥ जस्सपयाउस्सजगस्य समोजेगोयदीसई । झणतजीवेपवालसे जेयावन्तातद्वादिहा ६ ॥

इति साधारण प्रवेकरो वस्य द्रुवे विजगन्तमानी वक्ते समानस्य दीसे ते मूलं यमन्तलोव ते ज्ञात्रिबो जे वसो यनेरा तथाप्रकारे इम १० । जस्सकदस्स
मूलस्य समोजेगोयदीसई यमन्तलोवेउसेकदे जेयावयेतद्वादिहा ११ । ज्ञिब कन्दमूलं समोजेगोयदीसे ते कन्दने यमन्तलोव द्रुवे ते कन्दनेविबो जे
यनेरा तथाप्रकारेना विबद्वादिहा । जस्सपयाउस्सजगस्य समोजेगोयदीसेस्वधे जेयावयेतद्वादिहा । ज्ञिब कन्दमाये वक्ते यद्योभाजतो भगदीसे ते
वस्य यमन्तलोव मित्रद्रुवे इत स्सन्ध ज्ञिबे यनेराप्रकारेना ज्ञात्रिबा । जोसेतद्वाएमागएसमाभ यमन्तलोवतयासाया जेयावयेतद्वादिहा । ज्ञिब
जो लववा मायवक्ते माजता समोजेगोयदीसे ते लववा यमन्तलोवेने द्रुवे एवढो यनेरोलववा ज्ञात्रिबो तथाप्रकारे । जस्ससालस्सजगस्य समोजेगोयदीसे
सेवाव जेयावयेतद्वादिहा । एव मयासटोसो सागेवक्ते समोजेगोयदीसे ते प्रवाह यमन्तलोव दीसे जे एवढा यनेरा तथाप्रकारे । जस्सपयाउस्सजगस्य स

व्या यस्य कन्दरूपसाधयिषया अपि तिष्ठती गच्छा परिनाम्नीयाः, यदुना सामामे य खल्लीमा प्रमेयजीग्यपरिज्ञानाय सायकमात्र-अस्मन्मू
नस्सत्वादि ॥ गायाचतुष्टय यस्य मूलस्य साधुता मध्यसाराद् खल्ली वरुणरूपया लघुतराजयति सा परितजाया प्रत्यक्षरोरमीवात्मिका द्रष्टव्या
त्रयायत्रतदाहति ॥ या पि चास्या अपिष्ठता प्रत्यक्षररीरजीवात्मकत्वन निदितया दस्य्या समानरूपा दल्ली सा पि तथाविधा प्रत्यक्षगरीर
जीवात्मिका अयनगच्छा यस्य कदादिविषया अपि तिष्ठती गच्छा नायनीयाः यदुक्त-अस्मन्मूलस्यलङ्कारसमाप्तपदीसङ्ग ॥ इत्यादि तद्वत् सायक

रम् हीरोजगेपटीसङ्ग । परित्तजीवेउसेर्यफे जेयात्रयेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सन्नगस्स हीरोजगेपटीस
ङ्ग । परित्तजीवेफलसेउ जेयाययेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सनीयस्सन्नगस्स हीरोजगेपटीसङ्ग । परित्तजीवेउसे
धीग जेयात्रयेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकठान् लखीग्रहलत्तरीजने । धुणतजीयाउसाळखी जायान
यातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकदस्सकठान् लखीग्रहलत्तरीजने । धुणतजीयाउसाळखी जायावखातहाविहा २ ॥

ख पूर सांभतायका समाममदाये ते पूर पनक्तजीवन इवे ते पनेरा नामाप्रकारे त विष लखिवा । लखणखल्लभाग समामं । इदोत्तर पञ्चतखीवे
उत्तमस जयावयनहाविहा । जे फल भांतिबवे समामगदीसे ते फल पनक्तजीवे इवे जे पट्टवा पनेरा तथा नामाप्रकारे इम लखिवा । लखवोवख
भग्न समामागदीस पञ्चतवीवेउमदीप जवावयेनहाविहा । ज बोखभांगतायका समामग दीसे तेबीज पनेरा त नामप्रकारना तेपिच इमदोज
अविहा । अरममन्नरमसगम हीराभाण्टोसण परित्तजीवेउसेमूल जवावयनहाविहा । इवे मूलभागवका विषममग दासे ते मूल प्रत्येवखीव सङ्गि
त लखिये पनेरा तथाप्रकारना तेपिच इम लखिवा । अरसकदरसमगस हाराभाण्टोसण परित्तजीवेउसेकदे जयावयेतहाविहा । जे लख् पांजिबकी
विषममग दीसे तेकन्दमदि प्रत्येवकीव इवे जे पनेरा तथाप्रकारना ते पिच इम लखिवा । अरसकदरममगस हीराभगा परित्तजीवेउसेखपे जेया
पयेतहाविहा । स खयभाजवख विषममगदीसे ते खग्न प्रत्यक्षगरीर लखिये पट्टवा पनेरा तथाप्रकारना ते पिच इम लखिवा । जोसेतरियाएमगाए

यिपमच्छमुद्वन्त वा प्रद्वपते प्रकर्षेण स्पष्टरूपतया सत्यते ततो मूल परिमजीय प्रत्येकसरीरश्रीयाग्न तास्य ॥ शाययन्नेततायिनाहति ॥ या
न्य पि ॥ स्यामि चन्तमान तथाप्रकारादि अपिष्ठतसरीरमन्ममभुवृत्तानि मूलानि ता न्यपि प्रत्येकसरीरजायासाकानि सत्त्वव्यानि एवं चन्द्रा
दिविषया अपि नय गाथा प्राशनीया यत्र बुद्धापि सिद्धव्यन्ययः स प्राकृतमसृष्टाऽऽवसय ॥ अथुना मूलादिगतानां घटकलरूपाणां क्लीगामन
लश्रीयास्यपरिज्ञानाचललभ माह-अस्समूलस्सत्त्वादिगाथाचतुष्टय ॥ यस्य मूलस्य काष्ठात् मध्यधारात् क्लीग्रलरूपका पश्यति सा पश्यन्त
प्राया प्रातत्या ॥ अयायव्यहति ॥ यापि सा न्या अपिक्तया चान्तज्ञावस्यन निदिनया समानरूपा ठल्ली सापि तथाविचा चान्तजीवात्मका प्रात

हीरोजगेपदीसई । परित्तजीउसेखधे जेयावणतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएजग्गाए हीरोजगेपदीसई । परि
त्तजीयातयासाउ जयावणातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्समालस्सजग्गस्स हीराजगेपदीसई । परित्तजीउसेसाले
जेयाववेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपयालस्सजग्गस्म हीरोजगेपदीसई । परित्तजीउसेपयालेज्ज जंयानन्ततहाविहा
६ ॥ जस्मपत्तस्सजग्गस्स हीरोजगेपदीसइ । परित्तजीउसेपत्ते जेयावणेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सजग्ग

पुग्धात्रैवे दिवसमग दामै ते शुभ प्रत्येकगरारे कदिय पङ्कज ए पनरा तथापकारे ते पित्त आविषो । औसतइयापभगए होराभगा परित्तऔषो
 तथासापा जयावज्जतडाविडा । अइमो त्वरा भाजतायका विपसभमदोसे त्वरा प्रत्येकऔषमे कदिये पङ्कजा ए पनेरा ते पित्त इस आववा । अछसा
 नवभनन होराभमा परित्तऔषकेसासे जयावज्जतडाविडा । असासमाजकले विपसमग दामै ते साज प्रत्येक औषमे इवे ए पङ्कजा पनेरा पित्त इ
 मडोस आविडा निवपकारे । अणुमानकमनन होराभमा परित्तत्राविपसामन जयावज्जतडाविडा । असास भगिबले विपसभमग दामै तिसास प्रत्येक
 त्रोगमे इव पङ्कजा ए पनरा ते पित्त इसडोस आविषा । अणुपतकभगण मममनायदीसर् पणतऔषमेपले जयावज्जतडाविडा । अपन मांगतासर्
 यमममग दोसे तपप पननात्रोषमे इव ले पनरापित्त इसडोस आविषा । अणुपणकभगण समामगायदीसर् पणतजाविषेपुण्ड लीयावज्जतडाविडा ।

जीवाउसाळी जायाययातहायिहा ॥ २ ॥ जस्सखधस्सकठानं लक्ष्मीतणुयरीजवे । परिस्सजीवाउसाळी
 जायाययातहायिहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाइकठानं लक्ष्मीतणुयरीजये । परिस्सजीवाउसाळी जायाययातहावि
 हा ॥ ४ ॥ चक्कागजज्जमाणस्स गठीचुण्णधणोजवे । पुढयीसरिसणुणजेदेण धुणतजीवविवाणाहि ॥ १ ॥

दिखो कास जाओइवे ते खिचिमांदि भनत्तालोव खास वणुतजाओइवे भनत्तालोवमे हुवे इस भनेरा तयाप्रकारे पिय कइवा । अखकण्ठकडाया
 खनीबइसतरीभवे पबंतजीवाउसाळी जेयावखतहाविहा । अइमनी काटनीइ तेहमे भनत्तालोव इवे जेवही भनेरा तयाप्रकारे तेपिय
 इमहीज कइवा । अणुसंदरसकडाया खनीबइसतरीभवे भनत्तालोववाउसाळी जेयावखतहाविहा । जे कण्ठ काटकाउजाओ हुवे ते खिचिमे भनत्ता
 नीवइवे जे खही भनेरा तयाप्रकारे इमहीज जांविहा । जिसेसासाएकडाया खनीबइसतरीभवे पबंतजीवाउसाळी जेयावखतहाविहा । जे सासना
 काटनी खास जाओइवे बाकुस रूप इवे ते कास भनत्तालोवमे कइय तयाप्रकारे । जोससासाएकडाया खनीबइसतरीभवे पबंतजीवाउसाळी जेया
 वखतहाविहा । जेसासकाटने जासकाओइवे तेसाळने भनत्तालोव खिचिमे एइवा भनेरा पिय इमहीज जांविहा । अइमनुवसकडाया खनीतखवरीभवे
 परित्तजीवाउसाळी जवाइ । अइमना काटनासख घबरे हुवे बाहिरको खास पातली हुवे ते प्रत्येकरूप जांविही ज एइवा भनेरा पिय इमहीज
 खिचिवा । अइसकंदरसकडाया खनीतखवरीभवे परित्तजीवाउसाळी जेयाव । जेकम्पना काटनीखास पातलीइवे ते खिचि प्रत्येकगरीरमे खिचिमे ए
 इवा भनेरा पिय इमहीज । अइसखंधरसकडाया खनीतखवरीभवे परित्तजीवाउसाळी जेयावखतहाविहा । जे कण्ठ काटनीखास प्रत्येकगरीरमे क
 दिमे एइवा भनेरा पिय इमहीज । अइसेसासाएकडाया खनीतखवरीभवे परित्तजीवाउसाळी जेयाव । जे सासना काटनीखास पातलीइवे तेखा
 स प्रत्येकलोवमे खिचिमे एइवा जे भनेरा पिय इमहीज । यळाभ जमावरस गठीचुण्णधणोभवे पढबोसविसेभेएण पबंतजावविवापधि । जे भान्जनेप
 जे पञ्जाकार हुवे समाव, खानकमसु कम्पादिक हुवे ज गठिभांजते खिचित हुवे धिचिनीपरे पव बर्षभदे रंगहुवे ते पिय भनत्तालोवमे हुवे ते फल

रपट प्रतिपिपादयिषु रिदमाह-वक्त्राभिमत्यादि ॥ वक्त्रं वक्त्राकारमहाक्लेमं क्षमं प्रकृत्याम यस्य जन्यमानस्य मूलकन्दरक्तप्लवङ्गशायिप्रपुष्पादि
 त्रयति त म्भूमादिकम मलत्राव विजागीह इति सम्यग्य तथागटीबुक्कपोत्रवेइतिपिचि पवसामाभ्यतो प्रकृत्याम या स यस्य जन्यमानस्य
 पूर्वत रत्रधा पनो ध्यासा त्रयति शयथा यस्य पत्रये मन्यमानस्य वक्त्राकार प्रकृ रत्रसा पन्मिस्थान ध्यासि व विना पृथिवीसिद्धनन प्रदंन प्रकृत्या

जस्ससधम्सकठान् ठस्वीयहल्लतरीजने । अणुतजीवाउसाठस्वी जायावखातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाहक
 ठान् ठस्वीयहल्लतरीजय । अणुतजीवाउसाठस्वी जायावखातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्समूलस्सकठान् ठस्वीतु
 यरीजने । परिसज्जीवाउसाठस्वी जायावखातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकदस्सकठान् ठस्वीतणुयरीजये । परिस

धोरी परितत्रावोतवायाया उवावयेतहाविहा । जेहनी स्वभाभीगता विपममगदासे खवा प्रच्छन्नजीवमे कदिये एहवा जे पनेरा पिब इमहोज
 त्रविहा । उरमवावरममगरम होराम परितजावेउसेछासे जेवावणतहाविहा । जेसाख मज्जेवके विपममंग दोसे ते साख प्रत्येकजीवमे हुवे जे एह
 वा पनेरा तेपिब इमहोज त्रविहा । उरमवावरममगरम होराम परितजीवेववासेसे जेवावणतहाविहा । जे प्रवाकमनेवके विपममंग दोसे ते
 एवाउ प्रत्येकजीवमे कदिये जे पनेरा तथाप्रकारे इमहोज त्रविहा । जस्सपतस्समगख होरामगोवदोसई परितजीवेउसेपलेजेवावयेतहाविहा । जे प
 न मज्जेवके विपममंग दोमे ते एव प्रत्येकजीवमे हुवे एहवा जे पमरा ते पिब इमहोज त्रविहा । जस्स पुच्छमगख होराम परितजीवेउसपुच्छे की
 रावणतहाविहा । ज पुन मज्जेवके विपममंग दासे ते कल प्रत्येकयरीमे कदिय जे एहवा जे पनेरा पिब तिसहोज त्रविहा । जस्सफल्लमगख होराम
 पाएतत्रोपजेनउ उरावणतहाविहा । ज फल्ल भांगताववा विपममंग दासे प्रत्येकफल्ल कहीजे जे पनेरा पिब तथाप्रकारे प्वाविवा इमहोज । जस्स
 मंगल्लमगख होराम पाएतत्रोवेउसेछोय जेवावणतहाविहा । जेवोख भांगतावका विपममंग दोसे ते वीज प्रत्येकयरीमे कहीजे एहवा पनेरा पिब
 तथाप्रकारे मज्जेव । जस्समगदाया छलीवइत्यतरीभव पचतकोवाउसाठस्वी जेवणयेतहाविहा । जे मूलता काठनामज्जेववा गभइत वाजा पनेरा

जीवाउसाळक्षी जायाथयातहायिहा ॥ २ ॥ जस्सखधस्सकठासु लक्ष्मीतणयरीजवे । परिसुजीवाउसाळक्षी
 जायाथयातहायिहा ॥ ३ ॥ जस्ससाहाइकठासु लक्ष्मीतणयरीजवे । परिसुजीवाउसाळक्षी जायाथयातहायि
 हा ॥ ४ ॥ अक्कागनज्जमाणस्स गठीचुयधणोजवे । पुठ्ठीसरिसणुणनेवेण व्युणतजीवविवाणाहि ॥ १ ॥

इत्थो काय आओइवे ते छाविमाहि भगन्ताओव खास बहुतआओइवे भगन्ताओवमे बुवे इस पनेरा तयाप्रकारे पिय कहवा । अस्सखधस्सकठासु
 लक्ष्मीतणयरीभवे पदतजीवाउसाळक्षी जेवावसतहाविहा । अक्कानी काइनोऊ स काओइवे तेइमे पनतजीव इवे जेवली पनेरा तयाप्रकारे तपिय
 इसओऊ कहवा । अस्सखधस्सकठासु लक्ष्मीतणयरीभवे पनतजीवाउसाळक्षी जेवावसतहाविहा । जे अस्स काइछाअआही बुवे ते छाविमे भगन्ता
 ओइइवे जे अस्सो पनेरा तयाप्रकारे इसओऊ जाविहा । जिसेसाहाएकडाया लक्ष्मीतणयरीभवे पनतजीवाउसाळक्षी जेवावसतहाविहा । जे सासना
 काइनो छास आओइवे वावुसाकप इवे ते कासा भगन्ताओवमे कहिय तयाप्रकारे । ओसेसाहाएकडाया लक्ष्मीतणयरीभवे पनतजीवाउसाळक्षी जेवा
 वयेतहाविहा । जेवाउबाइमे जाउआओइवे तेसाळमे भगन्ताओव अइवे एइवा पनेरा पिय इसओऊ जाविहा । अस्सखधस्सकठासु लक्ष्मीतणयरीभवे
 परित्तजीवाउसाळक्षी जेवाव । अमूकना काइनाइस वरी बुवे बाहिरको छास पातली बुवे ते प्रत्येकरूप आविबो अ एइवा पनेरा पिय इसओऊ
 जाविहा । अस्सखधस्सकठासु लक्ष्मीतणयरीभवे परित्तजीवाउसाळक्षी जेवाव । अमूकना काइनाइस पातलीबुवे ते छास प्रत्येकगरीमे कहिये प
 र्ना पनेरा पिय इसओऊ । अमूकधरसकडाया लक्ष्मीतणयरीभवे परित्तजीवाउसाळक्षी जेवाव । अमूकना काइनाइस पातलीबुवे ते छास
 इये एइवा पनेरा पिय इसओऊ । जिसेसाहाएकडाया लक्ष्मीतणयरीभवे परित्तजीवाउसाळक्षी जेवाव । अमूकना काइनाइस पातलीबुवे ते छास
 स प्रत्येकजीवमे कहिये एइवा जे पनेरा पिय इसओऊ । अमूकना काइनाइस पातलीबुवे ते छास प्रत्येकजीवमे कहिये एइवा जे पनेरा पिय
 जे पनाकार बुवे समार्वरसानकमस अमूकदिह बुवे ज गांठभांजते चूचधित दुवे एविबोनीपरे पंच वर्षमंदे रंगभुवे ते पिण्ड भगन्ताओवस इवे ते प्रत्ये

न प्रयाति मयकरनिबरप्रपन्नकेदारतरुणेश्वरस्ये च समो ब्रह्मो प्रकतीति भावस्तपनमभायं विजानीहि ॥ पुनरपि सप्तशतकमाह-गूढसि
रागमित्यादि ॥ एतस्य सचीर निःसीवत्या गूढसिराजस्तस्यभावाधाराविशेष मयपि च प्रमत्तसन्धि सर्वथा भुपमस्यमाख्यपत्रादुद्भूयस्य तदऽन्त
मीय विजानीहि सम्प्रतिपुण्यादिगत विज्ञापमप्रविशतु राह-पुण्यानि चतुर्विधानि तद्यथा-जलजानि सहस्रपत्रादीनि स्थलजानि कोरस्टकादीनि
पताभ्यपिच प्रत्येकं द्विधा तद्यथा-कानिचित् यूगलबहुनि क्षतिमुक्तप्रचलनीनि क्षतिपुष्पप्रचलनीनि क्षत्रे तथा मध्ये कानिचि

गूढमिरागपत्त सच्छीरजचहीठनिच्छीर । जपियपणठसधि श्रुणतजीवत्रियाणाहि ॥ २ ॥ पुष्काजलयाथलया
थितयद्यायणालिन्दाय । ससिज्जमसवेज्जा योधव्हाणतजीत्राय ॥ ३ ॥ जेकंहनालियावद्धा पुष्काससंज्जजी
त्रिया । णिज्जयाथ्रुणतजीवा जेयावणेत्तहाविहा ॥ ४ ॥ पउमुप्यल्लिणीकन्दे श्रुत्तरकन्देतहेयज्जिह्वी य । एते

पत्र परतो । गूढसिरागपत्त सच्छीरजचहीठनिच्छीर क्षतिपत्रकर्मधि श्रवतकोवविद्याकाहि । गूढ सिरगवि दोखेनही चौरसहित इवे वे चौरविना
इवे जहमो प्रतिदा गुमसविहुरे ए कयवेकरो भनगतकायना जीव क्षतिवा , इव फूल फलनासक्याकयव कसेहे-पुष्काजलयाथलया थितयद्याय
याकबहाय सपिज्जामसपिज्जामा मोधव्याणतकोनाय । फूल चारमेदुव जल कमकादि जलज संपकादिव एहवा वेभेद इवे वाटवव सपकादिव तासन
आर्ज्जा पादिव एहनविहै क्काताओव पिरकन्दे पसक्याया पिरकन्दे पनकजोव पिर क्षतिवा । जेकोनालियावद्धा पुष्कासखिज्जोवियामबिसाह
निहुर्यापकतलोवा जयावसेत्तहाविहा । ज कोर मासवठ चारि जूरे पादिव ते फूल सस्यात कोवातक कद्धा चोतरागे खिम्ब फूलमे पनकजोव इवे य
रगा पनरा पिर एहवे जयवे सव क्षतिवा । पउमुप्यल्लिणीकन्दे पनरकन्देतहेयज्जिह्वी एगणवतकोवा एगाओवासिसनपासे । पद्मनोनामकवट कत्यव
नामक पनरकन्द जलवगगतो तिमहीज जलकार वनकालो सवकोय पनन्ता क्षतिवा पद्मनोजेविपे क्काकमेविपे एगकोव । पउकववसपकन्देय कद
ओयकुडए परपरितओवा जेयावसेत्तहाविहा । पउकावन्दे वससकन्द वनकालो कुटववनकालो निविशय एसव प्रलेखओवाअद क्षतिवा पनरा पिर

त्यत्रादिगतजीवापेक्षया सद्रूपयत्रीयानि कतिचिद् सद्रूपयत्रीयानि कानिचिद्वनस्तजीवानि यथायम योदुष्यानि, अत्रैव किञ्चिद्विद्योषमात्र-लेकोदस्यादि ॥
 यानि कानिचित् नासिकावदुनि पुण्यादि वास्यादिगतानि तानि सवास्यपि सङ्गतजीवकानि ज्ञातानि तीर्थहरगणपरैः स्मिन् विद्युत्पुष्प पु
 भरनन्तजीयं यान्यपि वा स्यानि स्मिन्पुष्पकल्पानि ताभ्य वि तथाविधानि यमन्तजीवात्मकानि ज्ञातव्यानि ॥ परमुष्पस्मिन्निक्षेप्यादि ॥ पट्टिनी
 कम् सत्यस्मिन्निक्षेपः अन्तरकम् असत्यवश्यमिति विज्ञापः कल्पः त्रिभिन्ना वनस्पतिविज्ञापकता एते सर्वे व्यमन्तजीवा मन्त्र पट्टिन्मादीना विभो मृणाल
 वपकजीवात्मक विषयुक्ता इति ज्ञात ॥ परद्रुहत्यादि ॥ परद्रुहकम् लघुनकम् कर्तुको वनस्पतिविज्ञाप, कुलुम्बको व्यमन्त एत सर्वे पि प
 रितजीवाः प्रत्यक्षरीरजीवात्मकाः प्रतिपत्तव्याः, य पि वा न्य एव प्रकारा वनन्तजीवात्मकस्य विरदिता स पि तथाविधाः प्रत्यक्षरीरजीवा
 त्मका यदि तव्याः, परद्रुह्यतेत्यादिगाथाद्वय ॥ पट्टाना मूल्यताना नलिनाना सुनवानां सौगन्धिकाणा अरविन्मा कोकमदाना जलपत्राणा सह
 स्वपत्राणां प्रत्यक्षं पट्टन प्रसववर्धनं यानि च वास्यपत्राणि प्रायो हरितरूपानि पत्रकावका पत्राचारधूता एतानि त्रीश्व व्यमन्तजीवात्मकानि या

स्मृतजीवा एगोजीवो जिनसमुगाले ॥ ५ ॥ पलद्रुहसुणकवेय क्वलीयमुद्रुवए । एणपरिसजीवा जेयावन्तेत
 हायिहा ॥ ६ ॥ पउमुष्पलणालिणाण सुजगसोगाधियाणय । अरविदकुकणाणं सतवत्तसहस्सपत्ताण ॥ ७ ॥
 थिठयाहिरपत्ता यकणियाचिन्वएगजीवस्स अस्मितरग्गपत्ता पत्तेयैकेसरमिज्जा ॥ ८ ॥ वेणुनलहरेकुवाफिय

तयाप्रकारे प्रत्य ज्ञाविवा । परद्रुहसुणकमन्त्रिण सभगसौयधियावन्न अरविद्विज्ञावन्नाच सययत्तसहस्रवत्त, च । परं उत्पन्न मन्त्रिण सभग सोगविध
 परविद्व ज्ञावन्न वनस्योदियेय यत्तपन्न सहस्रपन्न । विठवा हरपत्ता यकणियाचिन्वएगजावच्छ अस्मितरगापत्ता पत्तयकमरामन्त्रा । एवमा सुत्त वा
 प्रपन्न प्राय रूपसहित ज्ञाविवा ए पिबन्तावये पन्नजीवकवे वाज्ञापन्न ज्ञापिकाविधे एवलोच ज्ञापिवा मोदिकापन्न पाण्डो कवराभिजी एतानि प्रत्यक्षज
 वद्भवे । वेचनउत्तुगादि य सवसासराकारवरे करकवन्तुनिविष्टू वपानमन्त्रपञ्चनावध । वकुवग । सुवाटिकादि सह वनस्पती एतत् स्यादि यक्ता ज्ञा

नि पुनरत्यन्तराणि पञ्चानि ॥ अमरगणि या दामिञ्ज फलानि गगानि प्रत्येक भक्षेन्न क्षीयाऽपिष्टिमानि ॥ यदुनलसत्त्वादिगाथादय ॥ येन यक्षो
 नक्तः दृग्विज्ञापः दन्तु वाग्लियादया लोकात् प्रत्येतया दृक्वानि दूबाद्रीनि यानि य पवगानि पर्वापेमानि यतया यवनि यक्ष पव यय यतिमोडति-
 पयपरिचयग वन्नाकार यतानि यक्षजीवस्य सुम्बधीनि अवन्ति ऐकजीवात्मकानि अवन्तीति ज्ञावाः, यत्राणि यतपार मेकजीवाधिष्ठानानि पुण्यास्य
 नमत्रायात्मकानि ॥ पुष्पकर्ममित्यादि ॥ पुष्पफल यय काद्रिग मुय ग्रपुय ॥ एतथास्तुति ॥ चिन्तटविष्णुपरूप कास्तुक चिन्तट तथा घोषातक पटोल त
 स्तुक तत्तुन न्य य रफल यतपु प्रत्येक वृक्ष सर्व ॥ सकटादिति ॥ समास सगिर तथा कटाद यतानि श्रीस्य कस्य जीवस्य अवन्ति एकजीवात्मका
 न्यमानि श्रीणि तयस्तीत्यय तथा यतया मेव पुष्पफलवादीना सन्तुक्कपयन्तामा यत्राणि पुष्पक् प्रत्येक मिति प्रत्येकक्षरीराधिष्ठिता न्यैकैकजीवाधिष्टि

समासदुरदूयइक्कनेरुते । करकरसुठिचिहग तगाणतहपङ्गुगाणच ॥ १ ॥ अचिक्कपल्लपलिमो रुत्तयएगस्सही
 तिजीयन्त्स । पत्तयपत्ताइ पुष्पाइव्युगगजीयाह ॥ १० ॥ पुस्सफलकालिग तुयतउसेलुवालुक । वीसालय
 पनोउ तिदूयचेवतिदूस ॥ ११ ॥ येटमसककाह एयाइहवतिएगजीवस्स । पत्तयपत्ताइ सकेसरमकेसरमिजा

र इवे ते मन्त्रोव वसन्तो पव जालिवा । सम दव तथा पवे करो सहित । अचिक्कपल्लपलिमा कऊवएगम्भोतिक्कोइस्य पत्तयपत्ताइ पुष्पदमसगको
 गाइ । यच्चिक्कपल्लपलिमा कऊवएगम्भोतिक्कोइस्य पत्तयपत्ताइ पुष्पदमसगको
 वनाइरपटान् तिदूयचमदूस । दूयमस कऊका कान्तिवा तूवा चिन्तट वायातक कलविशय पटान् तिदक्क टिडवो । चिटमसकडाइ एयाइमव
 तिगजीवस्य पत्तयपत्ताइ सजमरमससरमिज्जा । समे समास गिर कटाइ पव मिसे एकजीवजन येगरा चकेगरा एके ओवादिद्वित । सग्गासेमज्जाए
 इनेइविद्यायकवचदुवे एउउचन्तजीवा कडदेइइमवकाए । सप्प त मज्जातवा उग्गेइइलिका कइव कदुक्क लक्खणो चयन्ताओवाभाअ कदुक्कदुवे भ
 जनाये मज्जातोविमप एउव चमसकाय । आचिक्कपल्लोए लोवावकमरसाविपणावा आविमम्भजोवा साविपत्तयपत्ताइ । चितारे लोवयानि पव

तामीत्ययः तस्याऽऽसुरा रसवेसुरा या मित्रापीत्रानि प्रत्येक मन्त्रेऽभीशाचिष्ठिनानि ॥ सृष्ट्याएत्यादि ॥ एते क्रूरगादिवनरूपतियिक्षोपा श्लोक
 सः प्रश्यतयाः एते वा मन्त्रभीशास्मका नवरं कद्रुगे प्रथमा स हि का पि दशविंशत्या दनलोऽमन्त्रजीवो भवति को प्य सङ्ख्येजीवास्मका इति
 द्वाद्-किं पीजजीव यय मूलादिजीवो प्रवर्तते इति परप्रश्नमाह्वयः यीएजोविष्ट्रयूइत्यादि ॥ बीज योनि
 पूने याम्यस्थो प्राप्त योनिपरिणाम मूलादिजीवो ति प्राधः योत्रस्य हि द्विविधाऽग्रस्या तद्विधा-योन्मयस्था योन्मयस्था च तत्र यदा बीजं यो
 न्यवस्थान् नृणांति सद्यर्थां स्थितं जन्तुना तदा तत् योनिनूतं नित्यस्तिपायत तस्मिन् वा जन्तुना नित्ययतो ना यगन्तुं शक्यते ततोऽमन्त्रिणां यिना
 तस्मिन्ति सुयेतनं भवेतनं वा सविध्यस्तयोनि योनिनूतं भवति व्ययिष्ठियते विध्यस्तयोनि तं नियमा दृष्टतस्या दयोनिनूतं भवति अथ योनिरिति
 किमन्विषीयतः दृष्ट्यत-अजन्तोऽहर्त्यातस्यान सविध्यस्तस्मिन्किञ्च तद्व्यवस्थितपरिचयमगच्छिष्यमय नितितायः तस्मिन् योन्मे योनिनूतं जीवो व्युत्सक्त
 मन्ति उद्यते स एव पूयको पीजजीवोऽस्यो वा आगत्य तत्रा त्यद्यत किं मुक्तं प्रवर्तते तदा द्योनिनित्यतर्कं जीवत स्वायुषं दयात जीवपरित्यागः
 स्तो प्रवर्तते तस्य च योत्रस्य पुनं रन्त्युक्ताऽऽनिचयोगद्रूपसामग्रीसम्पद्य सादा कदापि रश् एव प्राचतो दीवकीवो मूलादिनामगोत्रं नियम्य
 तत्रा गत्य परिवर्तमन्ति कदाचिदस्यः एयिपीवायिकादिजीवः यो पि च मूल बीव इति य एव मूलतया परिवर्तत जीवः यो पि पत्र प्रयत्नतये
 ति च स यय प्रयत्नपत्रतया पि च परिवर्तत इत्येकजीवकर्तृत्वमूलप्रयत्नपत्रे प्रति आह-मद्योय ॥ सर्वोविद्विस्तसृष्टुलु उगममाद्योऽवस्तसृष्टुलु ॥

१२ ॥ सप्ताएसज्जाए ल्हेहलियायकहणकुडुक्को । एएण्णतजीवा कुडुक्कोहोइजयणात्तं ॥ १३ ॥ जांगिष्णूएवीए
 जीवीवक्कमइसोवञ्जणोवा । जोयिच्चमूलजीवो सोविज्जपत्तेपढमयाए ॥ १४ ॥ सर्वोऽपिकिसल्लुखलु उगम

किमकावो तिर्वा ते पूज्योऽस्य साधारण जीव योने यनेजीवमां चाभीषा तपये मूससाधारण इव यज्ज एकजीव । सग्राविद्विस्तसृष्टुलु उगममाद्यः
 चर्वतपाभविषा चापेवनिष्ठतना आपरणापणताया । सर्व विस्तस्य निये जगता यनस्यावाय कश्चिये तद्वीजं यततवत्ते एवे यत्तमुत्तुग पक्षे प्रत्येक

इत्यादि वक्ष्यमाणं कथं न विदुष्यते ? उच्यते इहवीकजीवो ज्ञानो वा वीजमूलत्वेनो त्वेदं संतुष्टमनाद्यस्यां दुरीतिं ततः सौ उद्दमन्तरं प्राविनी किं
 मसयाद्यसौ नियमतो जनतादावाः भुवन्ति युगं च तपु स्थितिषया त्वरिततपु यथा वेव मूलजीवो जनकोयतनु स्वशरीरतया परिणमय्य ताव
 द्दत्तं याव रमयमपत्रमिति न विरोधः अतो नु व्याख्यातो-प्रथमपत्रमिह या सौ वीजस्य समुत्पन्नावस्था तत्र एकजीवकतुल्यं मूलप्रथमपत्र इति
 किं मुक्तं प्रवर्ति-युगसमुच्चमावस्थ एकजीवकतुल्ये एतं च नियमप्रदशयाच मुक्तं मूलसमुच्चनावस्थे एकजीवपरिवर्तिने युव क्षुपं तु किंशसयादिना
 उच्यते मूलजीवपरिकामाये भोदितमिति ततः ॥ सर्वो जिवि क्लेशलो कलु उच्यमानो कलुतश्च प्रवर्ति ॥ इत्यादि वक्ष्यमाणमविवक्षुं मूलसमु
 च्यमाणस्याभिमतमारम्भकाले क्लेशस्यत्वाभावा इति आह-प्रत्यक्षशरीरवन्नरपतिकायिकानां स्वकालशरीरावस्थानमधिकृत्य किं प्रत्यक्षशरीरस्त्वमु
 त कस्मिन्पदवत्यादिनाये जनजीवत्वमपि सम्भवति तथा साधारणवन्नरपतिकायिकानामपि किं सर्वकालमनन्तजीवत्वमुक्तं कदाचिदप्रत्येकशरी
 रत्वमपि प्रवर्ति ततः आह-सर्वोपि क्लेशलक्षणैरे प्रवर्ति ॥ इह स्वयमुच्यो परिसरवाची सर्वोपि वन्नरपतिकाय प्रत्येकशरीरः साधारण एव क्लेश
 यावत्स्यामुपगतं सन् जनन्तकाय क्षीयकदण्डवद्रे प्रवर्ति ॥ स एव क्लेशस्य रूपं जनन्तकायिण प्रवृद्धिं गच्छन् जनतो वा भवति परितोवा कथं ?
 उच्यते-यदि साधारणं शरीरं भिन्नत्पते तदासाधारण एव प्रवर्ति यद्य प्रत्यक्षशरीरं ततः प्रत्यक्ष इति, क्लेशः काला दूद्वे प्रत्येको प्रवर्ति ? इति
 चे दुष्यते-जनमुद्गुर्लक्षणं निमोदना मुत्कपतो ज्येष्ठमुद्गुर्लक्षणं कालं यावत् स्थिति इच्छा ततो जन्मैर्बुद्धौ त्वरतो विवर्तमानः प्रत्येको प्रयती
 ति सम्प्रति साधारणवन्नरमाह-धमयमित्यादिगाथाद्वयं ॥ समयं युगपद्भुत्कालानां मुख्यानां सतां तथा साधारणजीवानां समकर्मककालं शरीर

माणीश्रुणतश्च निगच्छे । सोचयेद्यथ्यहुतो होहपरितोश्चुणतोया ॥ १५ ॥ समययक्ताण समयतेसिसरीरणे

प्रत्यक्ष इवे साधारणं ते साधारणं बुद्धे साधारणजीव तेमते ममकालं जपनेयके । समययक्ताण समयतेसिसरीरनिष्पत्तौ समयपापुनश्च समयक्षमास
 रोमाये । सामयको तेहमा, यरीरनो निगच्छिहुते समयकाय साक्षाद्भास ग्राह्यं करे समकाले जसाय भोवाय मुक्ता करे । इहयथायगइवं मङ्गलि

नित्यं नवति सुमनसः प्रसाधनयोग्यं पुद्गलोपादानं ततः सुमनसकालं तदुत्तरकालं विना युष्मासमिच्छासौ तथा एव
 यदाहारादिपुद्गलानां ग्रहणं तद्वत् वद्भूता अपि साधारणजीवानां मवसयं किमुक्तं भवति यदाहारादिकं भेदो यस्मात्ति क्षीया अपि तच्छरीरा
 मितं यद्वदो यि तदेव यस्मात्ति तथा च यद्भूता यद्वत् तत्सङ्ख्या दक्यच्छरीरं समावेष्टात एकस्यापि ग्रहणं, समस्त्युक्ताद्योपसहारमाह-साधार
 णत्वादि ॥ सर्वेषामप्यवधारोद्विक्तानां जीवानामुक्तप्रकारं यत्साधारणं साधारणसूत्रं नपुसवतानिर्देशः कार्यत्वा दाहारसाधारण्यपुद्गलोपादान
 मव साधारणं आधापानयोग्यपुद्गलोपादानं उपलब्धं भवत् यी साधारणवच्छ्वासाभिधासौ या व साधारणवच्छरीरनिर्वृतिं रत त्साधारणजीवाना
 लवचं सम्रातिपदे कस्मिन् निगोदधरीरे भवता जीवाः परिचिताः प्रतीति पयं भवतस्ति तथा प्रतिपादय काह-जहयमोसोद्वत्वादि ॥ यथा-
 अपोमोसो ज्मातः सन् स तप्तपनीयसङ्काशं सर्वोक्तिपरिचतो जवति तथा निगोदजीवान् जानीहि निगोदकप्यं ये कौकस्मिन् शरीरे तच्छरीराल्म

वृत्ती । समयस्थानग्राहणं समयउत्सासनीसासो ॥ १६ ॥ एकस्त्वजगहणं वद्वगसाहारणतत्वेन । जयज्ज
 याणगहणं समासठतपिएगस्व ॥ १७ ॥ साहारणमाहारी साहारणमाणगहणव । साहारणजीवाण सा
 हारणलस्कणएय ॥ १८ ॥ जहस्थयगोलीधतो जार्ततप्ततथणिज्जसंकासो । सद्धोस्थगणिपरिणतं णित्तयजीवे

साधारणविविधैव जहद्भुतावनवचं समासठतपिएगस्व । इच्छा साधारणं प्रतिगृह्य करे समकालकवे यथा साधारणता तिमहीन निपञ्चापो य।
 य ज्यो तैवता यथा साधारणविविधैव ते निगोदीयाजीव ते समास एवठो रचिता किमहुं सूक्ष्ममस्मिन्ने तेनैव यननमरोर एवकाचोवे विम र
 नेवे तिहा जहा यगमासाधती एगमा खंय करिवा । साधारणमाणगहणव साधारणजीवाव साधारणवच्छय जहयगसाधता । साधार
 यात्रबीना साधारणपाहार समबीधमै साधारणवै यमुपाग सासास सना सवा सवखीय साधारण एवठाले ए साधारणमो सवचकक्षा विवे हटीत
 कट्टे - विम कोदना मासा धम्याधका जाय ता तपनीय दाता सोनमरीया ते वयं यन्मिहारी परिचतहुवे । जापातततवविष्यसकासा सश्वापग

[illegible]

मार्गोऽप्युणतर्तनणिर्द्ध । सोऽप्ययिष्यहृतो होहपरितोऽप्युणतोया ॥ १५ ॥ समययक्कृताण समयतोऽसिसरीरण

પવેલ કહે સાધારણ તે સાધારણજીવ તેમજ મગધન કાપેલજો । સમયજતાવ સમયતેસરોરનિજનો સમયપાવુવ્યજ સમયકસાધ પોમાને । સાયરજો તેદમા,યરીરજો નિઠતિફુલે સમયકાજ સાસાજાવ મજબ કરે સમકાલે જસાધ જોસાસ મુકયા કરે । રજાખાંજગજવ જનિય

मानः प्रत्येकतस्त्रीया असङ्ख्येयलोकाकाशाग्रदेशप्रमाणा भवन्ति सुस्मृतिपर्योसाऽप्योसमेव न प्रत्येकसाधारण्यमस्पर्षिणीवानो प्रमाणाश्च-पतेपाप
 न्नाहत्यादि ॥ परास्ताः प्रत्येक्यनस्पर्षिणीयाः पत्नीकृतस्य लोकास्य सुस्मृतिः प्राण यावत् व्याकाशप्रवृत्ता स्ताय ह्यप्रमाणा प्रत्य
 न्ति अपर्योसाना पुनः प्रत्येकतस्त्रीयाना असङ्ख्येया लोकाः परिमाद पर्योसापर्योसानां च साधारण्यबीवानामनन्तलोकाः किं सुक्त नवति असङ्ख्येयलोका
 काशाग्रमाणा अपर्योसाः प्रत्येकतस्त्रीयाः उनन्तलोकाकाशाग्रमाणाः पर्योसा अपर्योसा य साधारण्यबीवा इति ॥ ज्ञायावत्तद्विज्ञा इति ॥ योपि वाग्य ऽनुक्तद्रुपा
 क्षयाप्रकाशः प्रत्येकतस्त्रीया य ते पि यत्तस्पर्षित्वापत्त्यन प्रतिपत्तव्याः तेसमासठ्ठइत्यादि प्राग्बल् मवर ग्रये को व्यादरपमास स्ताय तन्निश्रया
 सापर्योसाः कदाचि सङ्ख्येयाः कदाचिद सङ्ख्येयाः कदाचिद सङ्ख्येयाः । प्रत्येकतस्त्रीयाः सङ्ख्येया असङ्ख्येया वा, साधारणा तु नियमा दन्ता इति ज्ञाय ,

नागमिहोक्तं । लोकाश्चसंख्याश्चप ज्ञातयागसाहारगमनता ॥ २३ ॥ एतद्विस्तरिरेहि पञ्चस्कतेपकथितयाजीया
 सुज्जमाश्रुणागिज्जा चरकुप्फासनतेइति ॥ २४ ॥ जेयायथो तदहण्यगारा ते समासनु दुयिहा पखसा, तं
 पज्जसगा य श्यपज्जसगा य, तत्थण जे ते श्यपज्जसगा तेण श्यसपप्ता, तत्थण जेते पज्जसगा तेसिण यन्ना

हारबमवता । पर्वति अपर्याप्त साधारण्यबीव इवे एकैके साक्षात्ताग्रदेशे प्रत्येकबीव एकैक वापि ये प्रतरना असंख्यातभागनो मानावे इम
 वापताः कदा असंख्यात साक्षात्ताग्रदेशे वाव असंख्यातासाक्षात्ताग्रदेशे पर्वति प्रत्येकबीव वनस्यतोनाये नाचतसाव प्रतरने असंख्यातमेभाग जेतवा
 पाकाग्र प्रदग्गमान अपर्याप्ता प्रत्येक तद अनगताकाग्र प्रदग्गप्रमाण पयासाचपवापता साधारण्यबीवति, साक्षात्ता असंख्याता अपवापतमोहि साधा
 रवे पनगतबीव । एतद्विस्तरिरेहि पञ्चस्कतेपकथितयाजीया सुज्जमाश्रुणागिज्जा चरकुप्फासनतेइति । पर्वति अनगतग्रथारे खरो एववा प्रत्येकबीव प्रकथ्या
 ते मय्य ऽइहा यनानिज्जसगा चसु ते गुणा भवाए नैवे दोसेमही । ज्ञायावत्तद्विज्ञा ते समासया दुविहा य त । ज एववा अनैरा तयापकारे
 ते संसपपको दावमकार कप्पा ते कवेहे-पज्जसगाय अपर्याप्ता । तत्थण जेते यज्जसगा तेनें पर्वपत्ता । तिहा य अपर्या

[illegible]

तद्वाजाण ॥ १९ ॥ एगस्सदोएहतिएहव सखेज्जाणयपासिउसक्का । दीसतिसरीराइ णिन्नेयजीवाणणताण २०
लोगागासपएसे णिन्नेयजीवठवेहिएक्केक्का । एवमविज्जामाणा हवतिलोयाच्चणतान् ॥ २१ ॥ लोगागासपदेसे
परित्तजीयठविन्नुएक्केक्का । एवमविज्जामाणा हवतिलोगाच्चसखेज्जा ॥ २२ ॥ पसेयापज्जन्ता पयरस्सच्चसख

विपरिचया नियाजजागतकाया । तत्तम अदेकरो व्याप्तिपूवे तिचे दृष्टति हेमिष्य निमाद्वज्जोव आचरा । एतज्जदावदतिबद्ध सखिख्यावदिपासिषा
मन्ना सोमसिसाराद निमाद्वज्जोवाचराता । एव पे विच मप्यता लोवभा गरीरजा सेखोजको वादरनिमादना पिवनघो दोसता, एवजो निगादना
जोय नूय पनकापमाच कडेवे—आगागासपयेसे । नगापजीवठवेदिदिविच एवमविज्जमाया क्ववतिसायायसद्विख्या । एवेके साकाकागपदगे एवेक
निमादनाजोव आपिचे दम यापतायका पूवे धर्मतसावाकागमयेग सरोखा । पतेनापय्यता पररसुभसकभागमिताभा आगासखपपञ्जति याचरा

तत्रा पदेन्द्रियाः सम्प्रतिद्वीन्द्रियप्रतिपादनाय भाष-संक्षिप्तमित्यादि ॥ अथ क से द्वीन्द्रिया ? सूरिराष्ट-द्वीन्द्रिया अनेकविधाः प्रपञ्चसाः । तद्यथा पु
 साक्षिमियाइत्यादि ॥ पुलाकिमयानाम पायुप्रदेशात्पक्षाः कमयः कुक्षिप्रदेशोत्पत्त्याः बाहुगः समुद्रोद्गथाः प्रतीताः अङ्गुलपदा स्त एव सपयः पुष्पा
 पुष्पिकाः पुष्पा सपयः दाहूगः सामुद्रसङ्काकाराः वराटाः कपटकाः ॥ सिष्पिसुष्ठति ॥ समुद्रकृपा शुक्तयः शब्दनका कथाः शया स्त पथासम्प्रदाय
 पाप्याः ॥ जयायवतडाप्यगाराइति ॥ य पि वा न्य तथा प्रकारा एव प्रकारा भुवकाप्रयसम्भूतकम्पादयः ॥ यवै द्वीन्द्रिया प्रातव्याः तेवाम्बुकि

तयत्वक्षिपयथालेसुय पक्षपुष्कलेसुय । मूलगमज्जयीएसु जीणीकस्सहकेसिया ॥ ३ ॥ सेस साहारणसरीर
 द्यावरयणस्सइकाइया । सेसयावरयणस्सहकाइया ॥ सेस एगिदिया ॥ से कित येइदिया २ येइदिया २ येइदिया २ येइदिया २
 यिहा पणप्ता, तजहा-पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गङ्गयलगा गोलोमा गेउरा सीमगलगा वसीमुहा सू
 इमुहा गोजलोया जलोया जालाउया सखा सखगगा पुष्पा खुष्पा सखा वराफा सीधिया मोत्तिया कहुया
 यासा एगठयप्ता दुहठयप्ता यदियावप्ता सयुक्ता माइयाहा सिप्पि सपुफा चदणा समुद्रल्लिस्का, जेयावसे

यथा पक्ष पक्षक मूलक पक्षक जलभाषी २ पक्षमे कडुका प १८ । तयकक्षिपयथालेस पक्षपक्षकलसय मूलमममममोएसु अनिच्छबिबित्तिया । खरा
 खास काद्रतीप्रवाह पान फल फल मूलाग काइनामज्ज बोज यानिकज्जभो कड्या । सेत साहारबसरीरबायसखखरकाइया । ते पक्षयो साधारणवतरप
 ती फर बाहरवतरपति पिनकडो । सत मासरवण सत नच सेन एमिदिया । सेकित येइदिया २ यथेगविहा प त । ते एतसे दाय वनरपतीनामेव
 साधारण बाहरनामेन यथिबार कडो पांवा एवेद्रियमाति उविप्यादि कड्या, किंवे जिय बेगिदिया विवरा एवेक ते वेद्रियना भनेनभेन ते ते कडे
 गुह । पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया मूलवखगा गाळाया वेजरोसा संनसगा वंनोमडा । पलाकिमिया कुच्छिकिमिया गङ्ग गोलासा निवरास ममस यथो
 मुय । मोमहा गोजलोया कथावा कूष्पाया पसया सखयया । म्भीमस गोपशाक जसावा जलजुयस सखनक । पुष्पा पुष्पा कथा परडा सीति

गुणविशेषादि ॥ यतवा साधारणप्रत्येकतरुस्वरूपानि वनस्पतिविशेषाणां यस्यगाढानामिमा विशोषप्रसृतिपादिकवक्ष्यमाणानां गन्धाः प्र
सृतपत्रव्यास्ता यथाह-तज्जहा-कंदायत्यादि ॥ गाथायथ कन्दाः मूरबकन्दार्द्रयः कम्बूमूलानि दृक्मूलानि वनस्पतिविशेष गुच्छा गुग्गुला वल्लपश्च
प्रतीता यद्युक्ता यद्वा स्यूका न्यूनादीनि पट्टोत्पन्नभङ्गाटकानि प्रतीतानि बूढी जलजवनस्पतिविशेषः सुवास प्रसिद्ध कप्पञ्च पनक्त भवमक
कच्छत्राणि खड्डुकाः साधारणवनस्पतिविशेषाः एतया मकोर्भवितिसङ्ख्यानं स्वगादिषु मध्य कस्यापि क्षापि योजिनः किमुक्त स्मरति-कस्यापि
त्वन् योजिनः कप्यापि यमो याव त्रकस्यापि भूम कस्या प्यगु कस्यापि मध्य कस्यापि दीप्त मिमिति चेत्तमित्यादिभिर्गमनवत्तएव मुग्न ॥ तदेव मु

देसेण गथादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसो विहाणाइ सखेज्जाइ ओणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जा
त्तगणिस्साए अणपज्जसगा यक्कमत्ति, जत्थ एगो तत्थ सिय सखिज्जा सिय अणसखिज्जा सिय अणत्ता एणसिण
डुमात्त गाहात्त अणुगतत्तात्त तज्जा—कदायकवमलाय करुमूलाइयावरे । गुच्छायगुम्भग्रहीय वलुयाणित्तणा
णिय ॥ १ ॥ पउमुप्पलसिथाने हठेयसेयालकिण्हएणए । अणएयकच्छन्नाणी कदुक्कोकणवीसइमे ॥ २ ॥

पता ए नयो पाप्या बर्हादिह । तत्तत्तं ज्ञानं पञ्चतमा तत्तत्तत्ता एतेषु मवाएसेव रसांगेन प्कासांगेन सहस्रस्यसाविद्यायाः सखिज्जाह । तिष्ठति ज्ञेय
 भापुता बर्हादय मत्यादय रमादय रपयदिये यतमज्ज प्रमज्ज एतस्य नाम । कायवप्यमज्जससङ्काह पञ्चसन्नोसाए अपञ्चतभावज्जमति । प्रत्येकं प
 नरता दमन्थानुपानि साधारण १३ खास पक्षपित्तानिवाये छपत्रे अपर्यापित । ज्ञयपणा तस्य सियसखिज्जा सिधपसखिज्जा निय ज्ञयता ए० सिधर
 माथा पाङ्कापा पदगतत्वापा । जिह्वं एककीव तिष्ठति इवे सज्जाता विचारे वसेज्जाता विचारे भजगता इवे द्विवे साधारण वनरपतो पोसखयानाजी
 बहवे तद्विम तद्विम । ज्ञायउदममाय बन्धमवाद्यावरे गुण्यायगुण्यन्नोय वेणयावित्ताविय । काश्च मूरबकव कट्ठम्ब सप्तमस एववा योज गु
 ष्टा गुनम वसुजो ववुधा बया । पञ्चमुपसखथावे इवेयसवासखिज्जएपएव यवएपकत्ताभावी मनुजेल्लयनोचरमे । ज्ञान पञ्च ज्ञपञ्च सवपाङ्काङ्क सेपाण ङ

एतन्ने द्वीन्द्रियाणां समजातिभूतबोटीना अतसद्विधाया मुपसहार माह-सेतमित्यादि ॥ से वा द्वीन्द्रियससारसमापन्नशोयप्रसापना सम्प्रति श्रीन्द्रि
 यससारसमापन्नशोयप्रसापनाय माह-सक्तमित्यादि ॥ अथ का वा श्रीन्द्रियससारसमापन्नशोयप्रसापना-श्रीन्द्रियससारसमापन्नशो
 यप्रसापना अनेकादिना प्रसृता । तानेव तद्यथादिनो परस्पर्यापति-एते च शीपचक्रप्रवृत्तय श्रीन्द्रिया द्वाविशपतो लोकत या मग्नलब्धाः नवर ॥
 माग्नीष्वक्शिवियासिना अयावदेतदव्यगार ॥ ये पि वा न्ये तथा मकारा से सर्वे श्रीन्द्रिया ज्ञातव्या इति शेषः ॥ तेषां समुच्चिन्मनपुसकाइत्यादि ॥

सेत येइदियससारसमापन्नशोयप्रसृता ॥ से कित तेइदियससारसमापन्नशोयप्रसृता २ ? शृणोयिहा
 पणसा, तजहा-उयाइया रोहिण्या कुयू पिपीलिया उइसगा उइहिया उक्कलिया उप्पाया उप्पका तण
 हारा कठहारा पत्तहारा मालुया तणयिटिया पत्तयिटिया पुप्फयिटिया फलयिटिया धीययिटिया तेपुरु
 णमिजिया तउसिमिजिया कप्पासठिमिजिया हिंसिया ज्जिसिया किगिरिका याक्कया लज्जया सु
 जगा सोवत्थिया सुयथेठा इदकाइया इदगोथया तुरतुयगा कोत्थलयाहगा जूया हालाहला पिसुया सत

मुसकादि बुने तिम आविये ते एतत्ते । सेत येइदियससारसमापन्नशोय प्रसृता । येन येइदियससारसमापन्नशोय प्रसृता । सेकित तेइदियससारसमा
 पन्नशोय प्रसृता २ पण्येयविहा प त । इव तेदियससारसमापन्नशोय प्रसृता । ते पण्येयकारि वज्जा तेयवेइ ।
 उवाइया राहियेया कट्टु पिप्पिखियाया वरसगा उइहिया उक्कलिया उप्पाया याप्पका । इत्यादिना राहियेया कट्टुया पिप्पिखिया वरसगा उइहिया व
 त्थविता उत्पत्ता उत्पत्तानाम । तकाहारा काहारा मनाहारा पत्ताहारा । उवाहारा काहारा मनाहारा पत्ताहारा । तत्तेवटिया पत्तवेटिया प
 त्तेवटिया पत्तवेटिया येववेटिया ते मुरवमिजिया । उवाहारा मनाहारा । तपोसिमिजिया कप्पा
 सठिमिजिया । तेपासमज्जिता कप्पासठिमिजिया । इतिहा भक्तिया किगिरिका । इतिहा भक्तिया किगिरिका । इतिहा भक्तिया किगिरिका । इतिहा भक्तिया किगिरिका ।

माः समुच्छिन्ना देव नपुसुद्धा शुभच्छिन्नानाम उवय नपुसुद्धायाद् भारकसम्च्छिन्ना नपुसुद्धा इतिवचनात् ॥ ते समापठे इत्यादि ॥ ते
 द्वीन्द्रियाः समासतः सद्रूपव द्विदिधाः प्रथमा साद्यथा-पर्यायका सापयोसका द्यव्ययी योनिभुलज्रेहन खगलानेकज्रेदसूचकी एतया द्वीन्द्रियाणां
 मयमादीनां पुलकस्यादीनां द्वीन्द्रियाणां पर्यायसापयादीनां सर्वसङ्ख्या सवधातिभुलकोटोना योनिप्रमुखाभि योनिप्रवादाभि योनिप्रवतसदस्याधि
 तयानि सप्तत्रातिभुलकोटितला प्रवन्तीति प्रावः इत्याख्यातं तीयकाङ्क्षि मन्त्राया साद्यधिकः इयमत्र प्रावता इह-जातिभुलयादीनां परिधामाये
 मिहं परिस्पूर सुहदरव पूषाचार्ये उपदक्षित तद्यथा-जातिरिति किल तिर्यग् गतिः तस्याः कुलानि कृमिबीटवृष्टिकादीनि इमानि च कुला
 नि योनिप्रमुखाभि तया इत कस्या मव योनीं कनकानि कुलानि मयन्ति यथा द्यव्ययोनीं कृमिभुलं बीटभुल वृष्टिभुल मित्यादि वयवा जाति
 भुल मित्य कं पद जातिभुलयोमो द्य परस्पर विशेषः एकस्या अपि योनीं कनेकजातिभुलसम्भवात् यथा एकस्या मव योनीं कृमिजातिभुलं बीट
 जातिभुलं वृष्टिजातिभुल मित्यादि यव च एकस्यामव योनावधान्तरजातिजप्रावाद् अनेकानि योनिप्रवादाणि जातिभुलानि सम्भवन्तीत्यु पप

तदप्यगारा सहे ते समुच्छिन्ना नपुसुगा ते समासतं दुयिहा प०, त०-पञ्जस्रगा य ह्यपञ्जस्रगा य एणसिण
 एयमादियाण येइदियाण पञ्जस्रगा सप्तजाइकुलकोनीजोणिप्यमुहसयसहस्सा जवतीति मरकाय ॥

या मतिता बभुगादावा । पुहा यत्रा यत्रा कदा सातिन कोजिब कलुवावासा । एगदावता इहपावता नदियावता । एगोपयुक्ता विधीपयुक्ता
 मय्यावता । नपुगा माइदाडा सिनिमुपका वदथा ममइकिता । मयवा माइदाडा सोप वदना समद्रकोष । वेतावयेतव्यगारा सहे ते समच्छिन्ना
 मयस्रगा त समासया दुविदा पं त । व येनेरा तयाप्रकारना सब त समच्छिन्न मयस्रकखिनी ते सचेपयकी दोयप्रकारे कथा तेअहेवे-पञ्जस्रगा
 र पवच्छलनाय । पयावता । यगदीपता । एगमिच एवमार्गिच वेर दियार्च पच्छतापच्छताच सप्तजाइकुलकोनी । इयम इवतरे यादिदेरे वेरमिन्नकोम
 पयावता यमदीपता सातसाय कुलकाणे । काविचमुहसयसहस्सा मवतीति मरकाय । वेकाय यानि एइनी कपतिपञ्जानम इवे किम कापाना येनेक

पूयपत् ॥ एतेमिदमित्यादि ॥ एतेया श्रीन्निष्ठाया मेवमादिकानामौपचयिकप्रच्युतीनां पर्यासाऽप्यासाया सर्वसङ्ख्या षष्टी आसिक्कुसकोटीना योनि
प्रमुत्तानि योनिप्रवादावि श्रुतसङ्ख्यावि भवन्ति अष्टौ कुसकोटिसङ्ख्या प्रवन्तीति श्रावः इत्याख्यातं तीर्थहस्तः उपसहस्रमाह-सेषमित्यादि ॥
तदत्र मुक्ता श्रीन्निष्पससारसमापद्यश्रीप्रज्ञापना ॥ सम्प्रतिषत्तुरेन्द्रियससारसमापद्यश्रीवप्रज्ञापना माह-साकाममित्यादि ॥ एत वि चतुरिन्द्रिया
सोक्तः प्रत्येतद्याः एतेया च पर्यासाऽप्यासाया सर्वसङ्ख्या चातिकुसकोटीना नवसङ्ख्या प्रवन्ति क्षेपाक्षरयमनिका प्राणवत् उपसहस्रमाह-सेत

धाड्या गोम्ही हत्यिर्सोक्ता जेयावस्ये त० सव्वे ते समूच्छिमनपुसगा ते समासन्तु दुविहा पस्यसा, तजहा-
पज्जतगा य श्यपज्जसगा य । एएसिण एवमाइयाण तद्धदियाण पज्जतापज्जसाण स्युठजाइकुलकीणिजोणि
प्पमुहमयसहस्सा हयतीति मस्काय । संस तेइदियससा० । से कित खउरिदियससारसमाथस्यजीवपस्य
णा२ १ श्युणेगविहा पस्यसा, तजहा-श्यधिय पोसिय मेच्छिय, भगसिरकीणि तेहा पयगे य । ठकण कु

सभना भावशिया मुवेढा र दकाया र दकाया । माइवा सङ्ख्या समग सोवसिक्क मुक्कविट इच्छेतिक्का इच्छगाया । तुवत्तवगा कुसव्यमाइगा ख्या
हानाइमा विमुया मयवाइवा भावो इतिसाका । तुवत्तवग कुसव्यमाइग ख्या हाकाइस पियक्क सतवाइक्क कामसिक्का र इत्तिसेठ । खेवावसेतइय
यारा मावे ते समच्छिन्ना मपुसगा । खे यमेरा तथाप्रकारे सर्वे ते समूच्छिम मपुसक्क जीविक्का । ते समासप्यो कुविहा प० त । ते समेपयको दोमका
र कक्षा ते कइसे-पज्जतमाय पपज्जतगाइ । पर्यासा अपर्यासा । एसिक्क एवमाइयाव तेर दिवाक्क पज्जतापज्जसाच । इया ते इवेयादि तेद्विक्ककु
कादि पयात्ता पपयात्ता । चट्ठासिक्ककोटि आरिप्पमुहसयसङ्ख्या भवन्तिनिमस्काय । पाठसाक्क कुसकोटि कुवे खेसाक्क यानि उत्पत्तिस्सान कुवे । से
तेर दिव खसारसमापद्यश्रीव पयवका । एतसे तेद्विपससार संगारतकोव प्रज्ञापना षष्टी । सेक्क ते चतरिदिय ससारसमापद्यश्रीव पयवका २ पचेगवि
हा प त० । ते चतरिदिय भेइपूवे यिण, एव इयक्क चतरिदिय संगारतकोव प्रज्ञापना यमेवप्रकारे कक्षा तेकइसे-अपियपुच्छियच्छिय मइयाको

नेरयिचप्रतिपादमाये प्रसन्नित्वसमूहे चाह-सेकितमित्यादि ॥ समधिपत्य नेरयिकाको पृथिवीपत्रेना उप्यथा प्रज्जसनेदत्तमपि पटते तत पृथि
 योमदत ख सप्तविपत्य तद्यप स्यादि नापत्तस्यति-रयानि वज्जवैशूय्यादीनि प्रजाद्यको अ सवथा अपि खनाववाची रथानि प्रजा स्वरूप यस्या
 सा रवयहुता रवमयो तित्रायाद्यः सा वा उषी पृथिवी च तस्य नेरयिका रजप्रभापृथिवीभेरयिका, यथ स्वरूप्यना पुढविमरइयाइत्यादि य प्रावमी
 यमुपसहारमाह । अत मरइया ॥ यपुना हस्यत्तममास्यामुसरत्त स्तियेव्येवैद्विपान् प्रति पादयिपु राइ ॥ सक्तिमित्यादि ॥ अयकेतपवेद्वियेतियम्
 योनिक्ता १ मूरिराह-यवेद्वियतियग्योनिक्ता ख्लिक्ताः प्रकृता सद्यथा ॥ जलयर त्यादि ॥ असवरति पर्यटतीति जलवरा आचारादितित्तमत्यये । तथ
 तपञ्चन्द्रियतियग्योनिक्ता य जलवरपञ्चन्द्रियतियग्योनिक्ताः स्वलवरत्तीति स्वलवरः स आकाशो वरत्तीति मवरः ॥ प्राकृतत्वादा यत्या

रयणप्यजा पृथयिनेरइया सक्करप्यजापुढयिनेरइया आलुयप्यजापुढयिनेरइया धूमप्यजापुढयिनेरइया तम
 प्यजापुढयिनेरइया तमतमप्यजापुढयिनेरइया । ते समासतु दुविहा पयत्ता, तजहा-पज्जमगा झपज्जस
 गा य । संस गेरइया । स कित पचिद्वियतिरिस्कजोगिया २ ? तिविहा पयत्ता, तजहा-जलयरपचिदि
 यतिरिस्कजोगिया यलयरपचिद्वियतिरिस्कजोगिया स्वहयरपचिद्वियतिरिस्कजोगिया । से कित जलयरप

तमतमप्यजो मारको १ मवरप्रभापृथिवी २ वासुगभ ३ पंचमभा ४ धूममभा ५ तमतमभा ६ तमतमभा ७ । ते समासथा दुविहा प त । ते ससेपथ
 को दायपचार कक्षा तेकवे ॥ पञ्चतगा यपञ्चतगाय । पर्याप्ता यपर्वाप्ता । मेना केरइया । सेकित पचेद्विय तिरिक्कजावया २ तिविहा य त ० ।
 पतसे योतेपकारे मारकोकक्षा विव तिवीच पूछे पचेद्विव तियक्कजिया सेकना तोमभद् कक्षाः तेकवे ॥ ते विव । जलयर पचेद्विय तिरिक्कजाविया २
 पञ्चवर पं स्वयरप । जलयर पचेद्विय तियक्कजिया पचेद्विय तिवीच यमवर खयर पचे इय तिवीच २ पूछे जिय जलयरभद् गुनकवे । सेकित
 जलयरपचेद्विय तियेनरा पंचपकार कक्षा ते कवे ॥ मय्या कप्या यादा मगरा भंमनारा । मवर कप्य गुण मगर सुसमार ५ । सेकित मय्या

स्नेहा प्रसापना तथाप-चम्पगतौ तिरोप्य सीति तिर्येव्यः तिरसः तिर्यादेशः तेषां योनिस्तत्पत्तिस्थानं तिर्येय्योति स्तत्र सवास्ति यत्पानिकाः तेषां
पच्यन्ति प्रससारसमापयन्तीना य तथा प्रसापना स्ति यत्पत्तिस्थानं तिर्येय्योति स्तत्र सवास्ति यत्पानिकाः तेषां योनिस्तत्पत्तिस्थानं तिर्येय्योति
स्ते रात्रस्याग्निपायिकं यतोऽपत्याति मनुष्याः मनायोऽपीपदिति यः प्रत्ययः प्रकारेण उपसर्गः स्या ययः प्रत्ययो काता यिति मनुष्यस्योऽपि त्रिति
तापी रात्रम्यस्यद्वयत् तेषां ते पच्यन्ति प्रससारसमापयन्तीना य तथा प्रसापना मनुष्यपच्यन्ति प्रससारसमापयन्तीना य तथा प्रसापना मनुष्यपच्यन्ति
या क्रीकृति इतिहवाः प्रवसपत्यादयः ते च त पच्यन्ति प्रससारसमापयन्तीना य तथा प्रसापना मनुष्यपच्यन्ति प्रससारसमापयन्तीना य तथा प्रसापना

स्माद् नयतीति मस्काय तप्त चउरिन्द्रियससारसमायसजीवपस्यणा । से कित पचिन्द्रियससारसमायस
जीवपस्यणा ? पचिन्द्रियससारसमायसजीवपस्यणा चउत्रिहा पस्यणा, तजहा-नेरुडयपचिन्द्रियससारस
मायसजीवपस्यणा तिरिस्कजोगियपचिन्द्रियससारसमायसजीवपस्यणा मनुसपचिन्द्रियससारसमायस
जीवपस्यणा दैवपचिन्द्रियससारसमायसजीवपस्यणा । से कित नेरुडया ? सप्तत्रिहा पस्यणा, तजहा

स्माद् भवति मस्काय । चउरिन्द्रियससारसमायसजीवपस्यणा तजहा-नेरुडयपचिन्द्रियससारसमायसजीवपस्यणा । से कित पचिन्द्रियससारसमायस
जीवपस्यणा ? पचिन्द्रियससारसमायसजीवपस्यणा चउत्रिहा पस्यणा, तजहा-नेरुडयपचिन्द्रियससारसमायसजीवपस्यणा मनुसपचिन्द्रियससारसमायस
मायसजीवपस्यणा तिरिस्कजोगियपचिन्द्रियससारसमायसजीवपस्यणा मनुसपचिन्द्रियससारसमायसजीवपस्यणा । से कित नेरुडया ? सप्तत्रिहा पस्यणा, तजहा

जसवरपरद्विगुणितियग्यानिता समासतः सङ्गुपण द्विविधा प्रज्ञप्ताः-सम्मुखिमा य गजलुत्कान्तिता य मूर्च्छा मोहसमुप्राययोः यस्मात् स्वस्युवा
स्वस्युपम मूर्च्छा उक्तरीति प्राय यञ् प्रत्यय गर्त्रोपपातव्यतिराकण एवमव प्राप्तिना मृत्याद् इतिप्राय स्तन नियुता सम्मुखिमानाया दिम
इति इमप्रत्ययः गर्त्रे व्युत्कान्ति कल्पति येषा व्युत्कान्तिशब्दो ऽत्रो त्यतिवाची तथा पूर्वार्थायप्रसिद्धे य दि वा गता द्विजावासात् व्युत्कान्ति
निःश्रमण यपान्न गजलुत्कान्तिताः, क्षोपाद् इति कथ समासान्तः यद्यर्थो प्रत्यय स्वगतान्नमदसूचको तत्र ये त सम्मुखिमा स्त सर्वे नपुसकाः
सम्मुखिजनानस्य नपुसकत्वा ऽविना प्रावितत्वात् य तु गजलुत्कान्तिता सो त्रिविधाः प्रज्ञप्ता कष्टाया-ल्लिय पुरुषा नपुसकाः, एतया वा
व्यपरा अपि क्षरीरायगाइनादिषु य क्षिप्त य च गजलुत्कान्तितामां स्त्रापुनपुसकाणा परस्पर मल्पबहुत्वचित्तम त स्त्रीवाजिगमटीकाया कल

से कित गाहा २ ? पचत्रिहा पणज्ञा, तजहा देडीवेठगा मुहुया पुलगा सीमागारा । सेत्त गाहा ॥ स
कित मगरा २ ० दुत्रिहा पणज्ञा, तजहा-सीरुमगरा मच्छुमगराय । सेत्त मगरा । से कित सुसुमारा २
एगागारा ५०, सेत्त सुसुमारा । जेयावन्ते तहप्पमगरा ते समासत्त दुत्रिहा पणज्ञा, तजहा-सम्मुखिमा य
गस्रवक्कतिया य तत्थण जे ते सम्मुखिमा ते सध्वे नपुसका, तत्थण जे त गस्रवक्कतिया ते त्रिविहा ५०,

अना पीवन्ति कक्षा ते कश्चैः । विही वेठगा महरा पणज्ञा सीमागारा । विही बाटका मुह पणञ्जलसीमागारा । सेत्तगाहा सेवित मगरा २ दुान
प त । एतसमुप्राय कक्षा दिसे मगरा ते मगरा दायभेद कक्षा ते कश्चै । सीरुमगरा मच्छुमगरा । कण्ठमगर मच्छुमगरा । सेत्त मगरा सक्तिम
मसुमारा २ एसामारा य त । एतसे मगर कक्षा, इध्वे स एमारना एकभद कक्षा तेवित्तम । सुसुमारा सेत्तसुसुमारा । सुसुमारा एतसे सुसुमार कक्षा ।
सयावन्तेतहपणारा ते समासयो दुानका प तजहा । जे पजेरा तथाप्रकारे ते एवेपयो दावप्रकारे ते । सम्मुखिमाय यमभवतियाय । सम्मुखिम गम
अपने यमत्र पिब । तत्तर्प जते सम्मुखिमा ते सध्वे नपुसका । तिहा जेते सम्मुखिम तेसर्वे नपुसका । तत्थण जत गमभवतियाय ते त्रिविहा ५० त ।

ए गच्छरा इति मूत्रे पाठे ॥ ततः सप्त यत्रापि पचेन्नियमित्युक्त्यानिर्णयदेव सः विज्ञापकसमासः । सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते कलशपरपथेन्द्रियतिपग्योनिष्ठाः ? भूरि राह-मत्स्यपरपथेन्द्रियतिपग्योनिष्ठाः पथविधाः प्रपञ्चः । तद्वयपथविधाय तद्यथेत्यादिभिः पदार्थमिति मत्स्याः कच्छपाः मूत्रपकारस्य प्रकारः प्राकृततयात् पादाः ३ मकराः । सिन्धुभारा ५ प्राकृतत्वात्सूत्रसुभारा इतिपाठः मत्स्यादीनां च विधाया लोकता ववितव्या । मयम उन्मिषकच्छपा माम्बलच्छपा इति, यदस्थिषुलाः कच्छपास्त उन्मिषकच्छपाः, यमांसषुलास्त मांसकच्छपाः ॥ त समाससु इत्यादि ॥ त

चिद्वियतिरिक्तजोगिया २ १ पथविहा पन्तज्ञा, तजहा मच्छा कच्छहा गाहा नगरा सुसुभारा । सेकिं त मच्छा २ ? धृणगत्रिहा पणज्ञा, तजहा सरहमच्छा स्वयहमच्छा जुगमच्छा विज्जिक्कियमच्छा हलिहमच्छा मगरिमच्छा रोहियमच्छा हलीसागरा गागरा वज्जा तिमिगिठा गक्का तदुलमच्छा क यिक्का मच्छा सालिसिक्कियामच्छा लज्जणमच्छा पन्नागा पन्नागाइपन्नागा । जेयायन्ते तहप्यगारा । सेस मच्छा । से कित कच्छना २ दुविहा पणज्ञा, तजहा छुठिकच्छना य मसकच्छना य । सेसं कच्छना ।

पथविहा प त । द्विमे मच्छना पनेकभद कच्छे तेमच्छ पनेकभदे कच्छा तेकच्छे । सरहमच्छा छुतकयच्छा जुगमच्छा विज्जिक्कियमच्छा हाकिद मच्छा मगरिमच्छा रोहियमच्छा । मगरिमच्छा छुतकयच्छा जुगमच्छा हाकिदमच्छा मगरिमच्छा राहितमच्छा । वज्जी सागरा गागरा वज्जा व ज्जा रज्जा वज्जारा तिमितिनिमक्का । इल्लोमच्छा सागरमच्छा गागरमच्छा वज्जामच्छा वज्जारा तिमितिनिमक्का १५ । नक्का तदुल मच्छा कण्ठिका साधि मच्छिगा लज्जणमच्छा पयम पन्नागाइ । मत्स्य तदुलमच्छा कलकमच्छा साधि मच्छिक्क लज्जण पतक पतावानामे २३ । जेयायन्ते १५ मारा येतकच्छा । पदथा जे पनेराकाळ तयापकारे त कच्छा । मकित कच्छा दुविहा प त । द्विमे त कच्छना बोयमेद कच्छा ते कच्छे । पदुक्क पदुक्क मायकच्छा । पदुक्क पदुक्क हाउपपाम मांसकच्छना माणच रेने । सेत कच्छया सकिं गाहा पथविहा प त । त कच्छय कच्छा, द्विमे गाहा

अस्य परंपराविश्रुतियन्यायान्तिकाः समासतः संक्षेपेण द्विविधाः प्रचक्षताः—सम्मुखिमा य गजयुत्क्रान्तिका य मूच्छा मोहसमुच्चाययाः यस्मा रगुम्युदा
रसम्मुखिमा मसूच्छोऽकतरिति प्राठ यज् प्रत्ययः गर्जोपपातव्यतिरेकेण एवमेव प्राणिमा मुत्पाद इतिप्राठ स्थान मितुताः सम्मुखिमात्राया विम
इति एवमप्रत्ययः गर्जे युत्क्रान्ति इत्यपि र्दया युत्क्रान्तिप्राठोऽथो त्यतिप्राथो तया पूर्वोचामयसिद्धे य दि वा गत्रा द्वजोयासास् व्युत्क्रान्ति
निःक्षणं ययास गजयुत्क्रान्तिकाः, क्षयादिति कच समासान्ताः यद्यर्थो प्रत्यय स्वगतानकमदसूचको तत्र ये स सम्मुखिमा स्ते सर्वे नपुसकाः
सम्मुखिमन्तावस्य नपुसकत्वा उचिमा प्रावितत्वात्, य तु गजयुत्क्रान्तिका स्ते त्रिविधाः प्रचक्षता क्षयाथा-त्रियः पुण्या नपुसकाः, यस्या या
प्रयेया अपि क्षारीरावगाहनदिपु य विज्ञानं य स गजयुत्क्रान्तिकाना स्तापुनपुसकानो परस्पर मस्यवद्व्यवहितान त लीवात्रिगमटीकाया ज्ञान

सं कित गाहा २ ? पचविहा पणहा , तजहा देखियेढगा मुहुया पुलगा सीमागारा । संत्त गाहा ॥ सं कित मगरा २ ? दुविहा पणहा , तजहा—सोळमगरा मच्छमगराय । संत्त मगरा । सं कित सुसुमारा २ एगागारा प० , मत्त सुसुमारा । जेयावन्ते तहप्यगारा ते समासले दुविहा पणहा , तजहा—समुच्छिमा य गप्पवक्कतिया य तत्थण जे ते समुच्छिमा ते सवे नपसका , तत्थण जेत गप्पवक्कतिया ते तिविहा प० ,

जना पाँचभेन कछा ते कह्यै । विप्रो बैठग मइया पुसवा सोमागारा । विप्रो वाढका मुव पसव(सोमागारा) । सत्तगाइया सेकित मगरा २ पुअइ
प त । एतस गुअइ कछा, बिबे मगरना ते मगरना दायभेइ कछा ते कह्यै । सोइमगरा नइमगरा । काण्डमगर मइमगरा । सेत मगरा सकित
मसुमारा २ एमागारा प त । एतसे मगर कछा, बिबे ससुमारना एकभइ कछा तेकिस । ससुमारा सेतसुसुमारा । सुसुमार पतये सुसुमार कछा ।
जगारलेतइपथारा ते समासथा कुबिइ प तअइ । के चमेरा तबाप्रकारे ते ससेपयो दायप्रकारे ते । समुखिमाय यभइकतियाय । समुखिइम गभ
अपने गभअ पिब । तत्पयं सते समुखिमा ते ससे मपेसगा । तिई जते समुखिमा तेसयं मपेसुअ । तत्पय जत यभइकतियाय ते तिबिइ ५० त ।

कनदसूचकौ । तदधानैकनेदस्व अमय प्रतिपिपादयिषु राक्ष-सैकितमित्यादि ॥ अथ के ते बहुप्यदस्यलक्षरपरिच्छिन्नित्यन्मीनिका' सूरिराक्ष-
 बहुप्यदस्यलक्षरपरिच्छिन्नित्यन्मीनिका यतुयिषाः प्रपन्ना सद्यथा-एगसुरा इत्यादि ॥ तत्र प्रतिपद मेका सुरा शक्नो यथा नो एकसुराः अद्याद-
 यः द्वी २ सूरौ प्रतिपद ययान्ते द्विसुराः अग्नय सथा च-एकैकलिङ् पदे द्वौ द्वौ शक्नो दृश्यते गच्छी च सुयवकाराः पिकरचित्यान् मित पद

पखुप्ता, तजहा एगसुरा दुसुरा गन्नीपया सणफ्फया । से कित एगसुरा २ ? अण्णेगविहा पखुप्ता, ते०
 अस्सा अस्सतरा धीरुगा गहुजा गीरस्करा कदलगा सिरिकलगा अ्यायत्ता । जेयावन्ते तहप्यगारा । सेत्त
 एगसुरा । से कित दुसुरा २ ? अण्णेगविहा पखुप्ता, तजहा-उहु गीणा गयया रोज्जा ससया महिसा
 सयरा वराहा अ्या एलगा रुरु सरज खमर कुरग गोफ्यामार्द्धं सेत्त दुसुरा । से कित गन्नीपया २ ? अण्ण
 गविहा पखुप्ता, तजहा हत्थी हत्थीयणा मकुणहत्थी खगा गन्ना । जेयावन्ते सहप्यगारा । सत्त गन्नीपया

अद्या ते कहन्ते । एगसुरा दुसुरा गन्नीपया कलीपया । एकसुरा अद्यादि द्विसुरा चाष्टु च मन्थीपद गणादि सखोपद आत्र दि ४ । सेकित एगसुरा
 २ पचगविहा पं० त । द्विरे वकसुराणा पने० भेद अद्यान्ते ते सथा-अद्या अस्तुरा याङगा गदहा गारसुरा कदलगा । सिरिकलगा पखुप्ता । याडा
 पयनर घाटव गवम गावर कदसुम त्रीकन्दव आबन्त । अद्यावत्तकप्यगारा सप्त एगसुरा । एकवा क सूररा तयाप्रकारे त एकसुरा अद्या । सेकित
 दुसुरा २ पचमेमविहा पं० त । द्विरे ते दुसुरा कहन्ते त पचमप्रकारे कक्षा त सुवा । उहा गावा गयया रागन्ना ससया महिसा सभरा भराहा चा
 द । एकवा वत्त सरम वरम कुरग गावजमाह । कट गाव गवव राभ मय मयिज सभर वराह अद्या गाडर पमरीगाय सुग गावज । सेत्त दुसुरा सेकि
 तं गन्नीपया २ पचगविहा पं० त । एतत्ते यखुराणां भेद कक्षा द्विरे गन्नीपदना पचकभेद अद्या ते कहन्ते-इत्थी एयपया मकुवत्तो खगा । वाभी
 गेन्ना मुबनवाभी पड्डा । अद्यावत्तकप्यगारा सेत्तगविहा । अथमरा तयाप्रकारना गच्छोपद जीविवा । सेकित सखीपया २ पचगविहा पं० त ।

यथागते गच्छीपिना इत्थादय स्तथा समयाणि श्रीधनसुपरिफलिताणि पदानि येथान्ते समसुपदाः स्यादयः प्राकृतत्वात्सुसुखफयाइति सूत्रे निर्देशा
 मपुनायानम यच्चतुरादीन् प्रदत्त क्रमश्च प्रतिपिपादयिषु रिचमाइ सुक्तिमित्यादि ॥ सुगम नवर य कश्चि उजीवनश्च अप्रतीता से साकतो
 वदितव्याः ० तसमाससु दुविहा प इत्यादि सूत्र ० प्राण्ब्रह्मबर्णीयं भवरमश्च जातिभुक्तकोपीना योनिप्रमुखाणि वातमइत्यादि दश भवन्तीति वेदि
 तस्य सत्रापि च समुच्चिमासा भजस्युरफानिबार्ता च प्रत्यक य च्छरीरादिषु द्वारपु चिन्तन य च खीपुनपुसकाना परस्पर मल्यसङ्कुल्य तज्जीना

से कित सगणक्या २ ? व्युणगविहा पयुक्ता, तजहा सीहा वग्घा दीयिया शुक्का तरक्का परस्सरा सिया
 एा सुगगा कालसुगगा (ग्रया ५००) काकतिया ससगा चिह्णगा चिह्णलगा । जेयावयो तहव्यगारा ।
 नेस सगणक्या । तेसमासने दुयिहा पयुक्ता, तजहा समुक्किमाय गप्पवक्कतियाय । तस्यण जे त समुक्कि
 मा ते सवे णपुसगा, तस्यण जे त गप्पवक्कतिया ते तिविहा पयुक्ता, तजहा इत्थी पुरिसा नपुसगा ।

इति मन्त्रोपद भेद ब्रह्मा त भेद पनकप्रकारना कइहे—साहा वग्घा हाविहा पयुक्ता परस्सरा सियाका बिराहा सवगा काकमुक्का वाक्कि
 वा समगा चित्तया । सिह व व सीता पयुक्ता परहा परासर ए स विराह व्यान कास काक्कि मगगा विपव । जेयावन्तेतइपगारा सेत सवोपदा
 त समासया दुविहा प त च पनेरा तद्याप्रकार ते सवोपद कइय ते संसपवको हायपकारे ब्रह्मा ते कइहे । समच्चिमाय मग्गवक्कतियाय । समच्चि
 म मभक्क । तस्य जेते समच्चिमा ते सवे नपसगा । तिहा जेते समुक्किम तिहे सव नपसक्क । तस्य जेते गप्पवक्क तियाय ते तिविहा प त । तिहा
 जे र्मत्रका तीमभद् ब्रह्मा ते कइहे—इत्थी पुरिसा नपसगा ० एसिच उवमाइव । स्या पयव नपसक्क इत्था इत्थरे चादिहर । पयवपर पविटिय ति
 रिक्कवाचिसाच । जमवर पयोद्वव तिर्वेयानिया कयवरपवेद्विया । पयवतपयवत्ताच । पयोद्वहा अपकीना । दसकातिवसकोदि खाचिपमससय
 पयुक्ता भवतीतिमसकाय । समवाच कुलकोदि यानि गतसइसु षवे तीर्वेवर ब्रह्मा । सेत चउपयय यखवर पंचिदिय तिरियज्जोपिया । पतसे चउय

निगमटीकातो वदितव्य ० संसदवर्ष्यइत्यादि ५ संकेतमित्यादि ५ अथ के त परिसपस्थलवरपञ्चगिर्याः १ त्रियगपौनिका प्रकृताः २ घूरिराव-
परिसपस्थलवरपञ्चगिर्यातिगयानिका द्विविधाः द्विप्रकाराः प्रकृता साक्षा-वरपरिसर्वस्यादि ५ वरसा परिसपत्नीति वर परिसर्पो स्ते ५ ॥
स्थलवरपञ्चगिर्यातेपग्यानिका य वरपरिसपस्थलवरपञ्चगिर्यातिगयानिकाः प्रुभाज्या परिसर्पो त ५ त स्थलवरपञ्चगिर्या
तेपग्यानिका य ननपरिसपस्थलवरपञ्च गिर्यातिगयोनिका वक्ष्यो प्रत्यक्ष स्वगतानकनटसूचको । तन्नो रापरिसर्वस्थलवरपञ्च गिर्यातेय
यानिकनदानु पदिदक्षयिषु रिद माह संकेतवरपरिसपस्यादि ॥ अथ के त वर परिसपस्थलवरपञ्च गिर्यातिगपौनिकाः ३ घूरिराव-वर परिस
पस्थलवरपञ्च गिर्यातेपग्यानिका द्वाविधाः प्रकृता साक्षा-वरपञ्चो उचरता साक्षातिगा भवोरगा एतथा मेव वरगा मवगमाय प्रकृतिवचनसु

एएसिण एवमादियाण थलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पञ्जाप्तापञ्जाप्ताण दसजाडकुलकोक्रिजोणिप्यमुहु
सयसहस्सा हवतीति मस्काय । सप्त चउप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया । से कित परिसप्यथलयर
पचिदियतिरिस्कजोणिया २ ? दुविहा पणप्ता, तजहा उरपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया न्युय
परिसप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया य । से कित उरपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया २ ? स
उविहा पणप्ता, तजहा स्यही श्ययगरा स्यासांलिया महीरगा । से कित स्यही २ दुविहा पणप्ता, तजहा

[illegible]

प्रायपाद सेवितमित्यादि ४ अथ ने ते अहयो गुरुराह-अहयो द्विविधाः प्रथमा सद्यथा-द्वीकरा य मुमुक्षिनय । तत्र द्वीवदयोक्त्यातस्वरज्य
 सा द्वीकराः मुमुक्षं यथा विरहयोप्या स्त्रीरावयवविशेषाकृतिः सा विद्यत येषाम्ने मुमुक्षिनः फलाकरयस्यद्विविकला इत्यथः यथापि ३ अ
 धी स्वगताभेदजद्यूचकौ । तत्र द्वीकरजगान निधित्सु राह-संक्षितमित्यादि ० आशपो दग्ना सासु विषं येषाम्ने जा-ीविषाः, उक्त च-आसीदा
 दा तन्मयमहाविद्या आसीविद्या मुकयहा इति, दृष्टी विषं येषाम्ने दृष्टिविद्याः, अर्थं विषं येषा स्त उपविद्याः जोग-शरीरं तत्र विषं येषा स्त
 जोगविद्याः त्वच्चि विषं येषा स्ते त्वष्ट्रविद्याः, प्राकृतस्था य तथाविधाहविपाठः सासा मुखाभावाः तत्र विषं येषा स्ते सासाविद्याः नि ह्यासे
 विषं येषाम्ने निःश्रासविद्याः, कजसर्पादयो ज्ञातजदा लोकतः प्रतिपद्यन्त्या उपसहारमाह-सेत द्वीकरा । मुमुक्षिनःप्रतिविपादयिपुराह-से
 वितमित्यादि ० एतेपि लोकता वसयाः, अजगदाकामवाभरवातिनेदा न विद्यते तत उत्तमेकाकारा अजगदाः प्रथमाः ० आख्यातगान त्रिपि
 त्सु राह सेवित आवाहिना ४ अथ आ आवाहिना १ एव श्रेयश्च प्रप्ते कृते सति जगदान् आपस्यामो यवय ग्रन्थावरपु आयालिगप्रतिपादिक

द्वीकरा य मउलिणो य । से कितं दृष्टीकरा २ ? ध्युणंगयिहा पथमा, तजहा आसीत्रिसा विठीत्रिसा
 उगगयिसा जोगविद्या तयाविद्या छात्राविद्या उत्सासविद्या गिस्सासविद्या करहसप्या सेठसप्या कउदरा दस्र
 पुप्ता कीलाहा मेलिमिदा सेसिदा जेयाथसे तहप्यगारा । सेस दृष्टीकरा । से कित मउलिणो २ ? ध्युणंग

सपता दावभद बद्धा ते अहये-द्वीकराह मउलिवाय । द्वीकरा मउलिवाय । सेवित द्वीकरा अवेगविहा ये त । द्विसे दर्शित्वाना अमेकभेद
 बद्धा त अहये । आमाविद्या विद्वद्विद्या उण्यावसा आमाविद्या तयाविद्या आकाविद्या जयासविद्या जोषासविद्या । आसीविषं दाडेविषं जेवेविषं इति
 विषं इत्यदिदं याकराविषं आमाविषं आकाविषं उण्यासविषं आकासविषं । अजहसप्याह सेठसप्या काउदरा दस्रपुप्ता कीलाहा मेलिमिदा ।
 अजहसप सउसप दादुदरा दस्रपुप्ता कीलाहा मीकमद । जयावसतइण्यारा सत द्वीकरा । जे एहना अमेकभेदे ते दर्शित्व अमेकभेद । सेवित मउ

गीतममसं भगवद्विचक्षणरूप सूत्रमस्ति तदेवागमस्युपमानतः पठति ? कश्चिद्विदुः प्रते । इत्यादि ॥ कथं यमिति वाक्यासङ्गारे प्रयत्न । परममस्याप्ययोगिन् ।
 आशासिका समुच्चिति ? यया हि गमना न प्रवति किन्तु समुच्चिमैव तत एव समुच्चिति प्रगवानाह-गोयमेत्यादि ॥ गीतम । आत्ममैवो मनुष्यक्षेत्रस्य
 यद्विरेतावता मनुष्यक्षेत्रा इद्विरेत्या एत्याह न प्रवतीति प्रतिपादित तत्रापि मनुष्यक्षेत्रे स्वयमप्रवति कित्त्व द्रवतीययु द्वीपयु अद्व द्रवतीय यया न
 उद्वद्वनीया अथपथन यियह समदायः समासाय सेयु एतावता स्वयमसमुद्र काशोदे समुद्रे वा न प्रवतीत्या अद्वित निर्व्यापातम व्यापातस्या
 तापो निर्व्यापातं तन यदि पञ्चसु प्ररतयु पञ्चसुरावतयु सुपमसुपमाविरूपपदुःखमाविरूप य कालो व्यापातइत्युक्तात् व्यापातो न प्रवति तदा

विद्वा पयुक्ता, तजहा दिव्यागा गीगसा कसाहीया वउला चिह्नलिणो मरुलिणो अही अहिंसिठागा वाय
 ङागा । जेयाययं तहप्यगा । सेह मउलिया । सेह अही । से कित्त्व अयगरा ? एगागारा पस्सहा,
 सेह अयगरा । से कित्त्व आसालिया ? कहिण जते ! आसालिया समुच्चिति ? गोयमा । अतोमणुरसखे
 से अह्माहज्जेसु दीयंसु गिह्वाधाएण पणरससु कम्मज्मीसु आघातं पशुस पचसुमहाविदेहेसु चक्का गहीस्वधावा

विधा २ पचैगदिहा प त । द्विरे मुक्कलप र्नाना पनेकमद कडा ते कहेहे—दिव्यागा गावसा कसाहिवा परवसा चित्तिवा मउसिचो माविषापहो
 पादिमसमा वासठम । दिव्य गावस कसाधारक वउल विमसोमावसिन मावकोसपे सहावसप । जेयावनेतइयगारा सेत मउसिवा सेत पहो ।
 से पनरा तजामवारे ते पतल मउकलामद कडा । सेवितं अयगरा २ एगागारा प त । द्विरे ते पजगरमा पचमेद्वे—मन अयमरा सचित
 पावसोया । पतल पत्रगर द्विरे ते पवमिमाना एकम— । कइकभते पवसोया समरवति । किम कपवे हेमगवज् प समारा गीतम पूजेवे ४ —गा
 पमा पनामकमपण पठाइअसु दोकस विव्यासापल पणरससुअथमूमिसु आघातं पडव । हेगीतम मनुष्यचर्ममहि पठारहीपमगिये निवीच त पनरे
 भूम कम्ममूमेनेदिपे व्यापात न कपने । पचसु महाविदेहेसु पचवहिणवावारेसु वासुदेवकवावारेसु । पच महाविदहसेवमविदे पचवतीरा खच

आद्याह सेवितमित्यादि ० अथ ते ते अहयो भुवराह-आहयो द्विविधाः प्रज्ञा साद्या-द्वीकरा य मुकुतिनय । तत्र दधीयद्वीकरातत्करादुगी
 सा दधीकराः मुकुत्सं कदा विरहयोप्या घरीदावयवविशयाकृतिः सा विद्यत येषान्ते मुकुतिनः, कदाकरादुगीकृतिकला इत्यर्थः सात्रापि य अ
 व्धी स्तगतानेकप्रदवृत्तौ । तत्र दधीकरप्रदान विधिस्तु राह-संज्ञितमित्यादि ० आहयो दग्गा साह्य विषं येषान्ते आीविधाः, उक्त य-आसीदा
 हा तन्मयमहाविद्या आसीद्विद्या मुकयश्च इति, दृष्टौ विष येषान्ते दृष्टिविधाः उच विष येषा न्ते उचविधाः जोग घरीरं तत्र विष यया ०
 प्रोगविधाः, त्वचि विष यया न्त त्वचविधाः, प्राकृतत्वा च तयाविद्याइतिपाठः साहा मुकाप्राधः तत्र विष येषा न्ते साहाविधा निःश्राव
 विष येषान्ते निःश्रावविधाः कृत्स्नयोदयो काकप्रदा लोकत प्रतिपत्तया उपसङ्गरमाह-सत दधीकरा । मुकुतिनःप्रतिविषादप्यिदुराह-से
 त्वितमित्यादि ० एतेपि लोचता वसथाः अत्रगाराभयाभरत्वातिप्रदा न विद्यन्ते तत उक्तमेवाकारा अकनराः प्रज्ञाः ० आद्यालिगाम निधि
 स्तु राह सेवित आद्यालिगा ० अथ का आद्यालिगा ? एव श्रेष्ठ प्रश्ने कृते सति भगवान् आहयमासी यदय यन्मरतपु आद्यालिगप्रतिपादिक

दधीकरा य मउलिणो य । से कितं दधीकरा २ ? श्रृणंगविहा पस्य, तजहा आसीयिसा विठीत्रिसा
 उगविसा भोगविसा तयाविसा लालाविसा उरसासयिसा गिस्सासयिसा कइसप्या सेठसप्या कउदरा दग्गा
 पुप्फा कीलाहा मैलिमिदा सेसिदा जेयाय्ये तहप्यगारा । से कित मउलिणो २ ? श्रृणंग

मयग दाकभत कइते ते अहये-दधीकरा मउलिणः । दधीकरा मउलिणः । सेकत दधीकरा अवेगविहा पे त० । इति दधीकराता अनेकभेद
 कइता त कइत । आमात्रिया दिहाविसा कइताप्या भागविसा तयाविसा आकाविद्या अयासविद्या भोसासविद्या । आसीनिय दाठेविद्य जेकेविद्य दटि
 विद्य अयविद्य याकराविष भागविष तयाविष सासविष उच्छासविष नासासविद्य । कइसप्या काकनरा दग्गापुष्पा आकाहा मैलिमदा ।
 कइसप्य लउसप्य कादुनरा दग्गापुष्पा आकाहा मैलिमद । अयावयतइयमारा सत दधीकरा । जे एइता अनेकभेदे ते दधीकरा भेदकइता । सेकित मउ

गीतमग्नं मग्नविवस्वरूपं सुत्रमस्ति तद्वागममनुमानतः पठति? कश्चिन्ने जते? इत्यादि॥ कथं वमिति यास्यालङ्कारे नदत्त। परमकस्याप्योगिन्
 साक्षात्सिद्धा समुच्छति? मपर दि मपरया न जवति किन्तु समुच्छिमेयः तत घञ् समुच्छति प्रमवाणाह-गीयमेत्यादि ० गीतम। आत्ममप्ये मनुष्यदेवस्य
 यद्विरेतायता मनुष्यवेद्या हृदि रस्या उत्पाद्या न जवतीति प्रतिपादित तथापि मनुष्यस्ये स्ववन्न मजवति किन्तु दृढतीयपु द्वीपपु षट् दृढतीय ययान्ते
 उद्वृतीया अवयवन विपद्द समद्वय समासार्थे स्तेषु एतावता समवधमुद्र कालोदे समुद्र वा न प्रवतीत्या वदित निष्प्रापान्न व्यापातस्या
 प्रायो निष्प्रापान्न तन्न यवि पञ्चसु जरतपु पञ्चस्यैरावतपु सुपमसुपनाविरूपपुः सुमाविरूप य कालो व्यापातहेतुत्वात् व्यापातो न जवति तदा

विद्वा पयुक्ता, तज्ज्ञा दिङ्गागा गीणसा कसाहीया यउछा चिह्नलिणो मरुलिणो छुही छुहिसिङ्गागा वाय
 ङागा। जेयात्रयं तद्व्यगारा। सेस मउलिया। सेस छुही। से कित छुयगरा २? एगागारा पखसा,
 सेस छुयगरा। से कित आसाळिया समुच्छति? कहिण जते? गीयमा। अतोमणस्सखे
 से छुहाइज्जेसु दीविसु णिह्वाघाएण पखरस्सु कम्मजूमीसु याघात पणुस पचसुमहाविदेहेसु चक्कावहीस्वधावा

विद्या २ पवेगविद्या प त०। द्विरे मुद्रकवर्जना चनेकभर कछा ते कचेदे-दिङ्गागा गावसा असाविद्या वररखा वित्तविद्या मद्रविही मालिबायहो
 यद्विमलना वायव्य। दिङ्गा गावस असाधारक वररख विमलीमाळलिण मावलीसपे सखाकसर्प। केव मयतव्यगारा सेल मद्रविद्या सेल पडो।
 से यनरा तनाप्रकारे ते पतस मयवनामेद कछा। सेवित पयगरा २ एगागारा य तं। द्विरे ते यमयगरा पचमेदहे-मल ययगरा सवित
 पाखसीया। पसस पञ्चवर द्विरे ते यवसिङ्गाना एवमे-। एवकभते पखसीया समकवति। विम छपले हेमगमन् य मयाया गीतम पूजेदे य -गो
 यमा यनामनुसयत पठारव्यसु दोविस निङ्गाघाएण पखरस्सुपमसुमिसु भाषाये पखय। जेगीतम मनुष्यममालि पठारहीपमपिपे मि-वि त पमरे
 भूम कर्ममनेविपे व्याघात न छपमे। पचसु महाविदेहेसु पचवद्विषयाकारेसु वासुदेवस्यधारिरेसु। पच महाविदेहेस्यमविपे यमवर्भीरा सुधवा

पण्डितसुखमज्जुमिणु समुच्छति' व्यापारं प्रतीत्य किं सुखं प्रयाति ? यदि पण्डितु प्ररतेषु पण्डितैरवर्तेषु यथोक्तद्वये व्यापारो नयति ततः पण्डितु
महाविदेशेषु समुच्छति पतावता विद्यत्यस्य कर्ममूत्रिषु नो पत्रायते इति प्रतिपादित पण्डितसु कर्ममूत्रिषु पण्डितु यामहाविदेशेषु न सबत्र
समुच्छति किणु नञवतिस्वभावारुषु वा शब्दः सवत्रापि विकल्पार्थो इत्युच्यते वल्लदेवस्वभावारुषु मारुत्तिलक सामान्यराशौ, अल्पादिषु सामान्या
पठसिद्धः स यथा नेकद्वयपिपतिः ततः स्वभावारुषु यामानवक्ष्यपु इत्यादिः यस्यति युच्चादीन् गुणानिति याम' यदि च मय्यः शास्त्रप्रसिद्धानाम
प्राज्ञानां चराया निति यामः निमनः प्रमूतरवचिष्कर्णावाहः प्राज्ञप्रकारनिश्चयः सटः शुद्धप्रकारवैष्टिककदट, बहुवृत्तीयगण्यसामर्थ्यामास
ररहितं मज्जव ऽ पटुवति ऽ पटुन पतनं वा उभयत्रापि प्राकृतस्वतन्त्र निर्वैद्यस्य समानत्वात् तत्र य कौन्ति रव गम्य त त्वद्वन य त्वनः शकटै र्यो
टवै नीति वा गम्य तत्पटुन तथा जगुक्कव उक्त न-पतन शक्यते गम्य योटवै नीति रव च । नीति रव तु यद्वस्य पटुन तत्प्रवक्ष्यते ऽ १ ॥ इति

रेसु यासुदेवस्वधाथारेसु यलदेवस्वधाथारेसु मरुलियस्वधाथारेसु गामनिवेसेसु नगर
निवेसेसु निगमनिवेसेसु स्वेरुनिवेसेसु कस्रुनिवेसेसु मरुयनिवेसेसु दोणमुहनिवेसेसु पट्टणनिवेसेसु ध्याग
रनिवेसेसु ध्यासमनिवेसेसु सवाहननिवेसेसु रायहाणिनिवेसेसु एणसिण चैय विणासेसु । एत्थण ध्यासगलिया

वार बहिर्मे कटक बालदेवता कटकनविधै । बहदेवकथावारसुवा महविषयकथावारसुवा । बसभद्रना कटकनेविधै महाम
 सुखीकना कटकनेविधै । नामनिबसेसु नगरनिबसेस निगमनिबसेसु । ग्रामनिबसेसु विषै करविना नगर ते नगरनिबसेसु विधै । खेडनिबसेसु कण्डनिव
 सेय मकडनिबसेसु । घूरदठ ते खडनिबसेसु विधै । कायकडनिबसेसु पडबनिबसेसु पायरनिबसेसु पासमनिबसेसु । द्रापमण्ड
 सपन्न ते निबसेसु विधै । पादपागर ते निबसेसु विधै । सदाहनिबसेसु रथकाविबसेसु । संवाध साधारण । ननेविधै राजधानीनेविधै ।
 एतेविधै चैद विधासेसु पत्तन पदविधा समुप्यति । एष खानके विनायकने रङ्गा मकडियाखीव खपने । बहदेव चंगुणय पसकियमभागमिभीए ॥

मुर धातुन्येन जननिगमप्रवेष्टं ॥ आकरो द्विरव्याकरादिः चाभम सापसावसयोपलक्षितः, आश्रयः सधाथो यात्रासमागतप्रवृत्तघननिवेष्टः, राश्र
 पानी रात्रापिष्टान नगर ॥ एयसिधमिस्थादि ॥ एतथा भक्तवर्तितस्त्वन्वावादीना भव विनाशेषू परित्यज्य ॥ एतयु षष्ठवर्तितस्त्वन्वावा
 रादिदु स्थानपु आश्रासिका समुच्छंति, सा च लपयत्यो हुतासङ्गुयनागमादया अवगाहनाया समुत्तिष्ठतीति योगः, एतथोत्पावप्रथमसमयो वदि
 तव्यं, वृत्तपतो द्वादशयोजनानि तदगुरुप द्वादशयोजनप्रमापयेर्य्यांमुक्तं ॥ विषज्ज च द्वादस्य च विषज्जवाहस्य समाहा
 रो द्वद्व स्तन विषज्जो विस्तारो द्वादस्य स्थूलता ॥ भूमिदासितायति ॥ विषाय उपतिष्ठति च षष्ठवर्तितस्त्वन्वावादीना मपत्ता द्धुम रत सत्य
 धत इतिभावः सा वा सञ्चिनी आननस्कासमृच्चिमत्वात् मिष्यादृष्टिं सास्त्रावनसम्पन्नास्यापि तस्या अवस्रज्जत् अत एवा उच्चातिनी अतमुदू
 र्वापु रव कासं करोति तदवर्ग्योत्तरगतं सूत्र पठित्वा सूत्रक स्वप्रत्यु पचकारमाह सप्तधासासिया ॥ समविमहोरगानजिचिस्तुराह । सेकित

समुच्छति । जहन्तेन अंगुलस्स अस्सखिज्जाङ्गागमिष्ठाए उंगाहणाए, उक्कोसेण वारसजोयणाह । तहाणुरु
 द्य च ण विरुज्जत्राहंसेण भूमिदासिणाण समुठेति । असन्नी मिच्छदिठी अन्नाणी अतोमुज्जस्रउया
 चैव काळ करेइ । सेत्त असासालिया । से कित महोरगा २ ? अणगविहा पयात्ता, तजहा अत्यंगइया
 अंगुल पि अंगुलपुहत्तिया धि त्रियच्छिपि त्रियच्छिपुहत्त पि रयणी पि रयणीपुहत्तिया पि कुच्छपि कुच्छ

व्याहवाए । अवस्रज्जको पचकारमाह असुद्धने पचत्वातमेभाग प्रमावे । उक्कासच्च वारसज्जाववाह तत्ताकवचण । जहन्ते १२ वाजन पचगाहना पातत्ताय
 रोए ववीरुप । विरुज्जत्राहंसेण भूमिदासिणाण समह । विषज्ज आनपण १२ याजन भूमिदासी पचावारी पचावारी उठतोभूमिओ अपणे समविना कपपी ।
 पचथोमिच्छदिठी पचाथो पनामहत्तेहावचणैव काळकरेइ । पचथो मजरहित मिय हटो पचातो पत्तमुहत्त याअयावास मिये काळकरे । सेत्त च
 सविवा । एतस पचविवा चप्पा । सेकित महोरगा २ अणगविहा २ अणगविहा प तं० । दिवे ते मिय पुंवे कुच महोरग तदगुरु महोरगनाभद पनेचप्रकारे

मित्यादि ५ गुणः । मधुर चित्तिः ईदृशाङ्गप्रमाणा रश्मि इवा कुपि द्विदलमानो घन यतुर्लभ गण्यते द्विघन सप्तस्रप्रमाणं । चत्वारिगण्यमानि
योजन इव च वितस्त्र्यादि धृष्ट्याङ्गसापेक्षया द्रष्टव्य क्षरीरप्रमाणस्य परिचित्यमानत्वात् । तथा-अस्तीति निपाता य यदुत्पत्तिपायी प्रतिपद
एव सप्तप्यत ततो यमयः सन्त्य न कश्चन महोरगा ये अङ्गुलमपि क्षरीरायणाङ्गमया प्रवर्त्ति तथा सृष्टे के कोषन य सङ्कुलपृथक्क्रिया अपि अङ्गु
लपृथक् विद्यत ययान् अङ्गुलपृथक्क्रिया यतो मन्त्रस्वरादि ती ४ प्रत्यायः स पि क्षरीरायणाङ्गमया प्रवर्त्ति अङ्कुलपृथक्प्रमाणक्षरीरायणाङ्गमया अपि अ
ध्वनीतिनामः एव छापसूत्रास्यपि प्राक्कीर्णानि तच्च मित्यादि ४ ते अन्तर्गतोर्वितस्त्ररूपा मद्धारणाः स्थूलचरविभ्रंषत्वात् स्थलेजायन्ते स्थलेपजाता
सन्ता जलपि स्थलव चरन्ति तथा प्राक्स्थानाभावात् यद्यपि किं क्षस्मा दिव मद्ध्ययते इत्यागक्षायामाह-तनत्विहृष्टमित्यादि ४ ते ययोक्तस्त्ररू

पहस्रिया त्रि धणु पि धणुपुहस्रिया त्रि जाउय पुहस्रिया त्रि जीयण पि जीयण पुहस्रिया त्रि
जीयणसय पि जायणसय पुहस्रिया त्रि जीयणसहस्र पि तेण यले जाता जले त्रिचरति यले त्रिचरति ते
णल्यि इह धाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवति जीवावन्ती तहप्पगारा । सेस महोरगा । ते समासनु दुविहा प० ,

अष्टा ते कश्चै-पदमरया यगदपि जायणपुहस्रिया त्रि विहस्रपि विहस्रपदकान्त्यापि । केतवापव महोरग अङ्गुलनो अयणाङ्गना केतवापव य
गुन पुहस्रनो कश्च वसो केतवापव वेइतनो अयणाङ्गना तत्र अन्तर्गत विहस्र पुहस्रनो अयणाङ्गना । रयचपरियवपुहस्रियापि । केइ वावनी के
इ वाव पुहस्रनो अयणाङ्गना । कश्चपि कश्चपुहस्रियापि यत् पृथक्पुहस्रियापि । केइ वेइ वावनी केइ वेइ वाव पुहस्रनो केइ धनपनी केइ अङ्गुलपुहस्र
नो । यान्त्यपि गालकपुहस्रियापि । केइ गास्रनो केइ गाकपुहस्रनो । जावपि जायणपुहस्रियापि । केइ याजननो केइ याजनपुहस्रनो । का
वच कश्चपि जायणपुहस्रियापि । केइ काजन सयनी केइ याजन अयणपुहस्रनो । विजायण सहस्रपि जायणसहस्रपुहस्रियापि । का येयाजनम
इस्रनो केइ सहस्रवाचन पुहस्रनो । तेच कश्चवाया यत् निचरति कश्चवाया जले विचरति । तिक्ता अश्वमे कपना यस्मि विचरे कश्चमे अश्वमे जव

पा मरीरगा इह मानुषयेने न तिरहितसन्निविष्टुवाष्टेपु द्वीपसमुद्रेषु मन्मथानि समद्रेष्टपि य पर्यतदेवमगर्भोदेषु स्थलेषु त्यज्यते । न जलेषु
 स्वसंवरत्वात् तत इह न दृश्यन्त जपावकतदप्यगारा इति ये पि वा म्य अङ्गुलदंष्ट्रादि सरीरावगात्रमामा तथा प्रकाराः सन्ति स पि न
 द्वारगा घातव्या उपसंहारमाह-सप्तमित्यादि ॥ तसमासठीइत्यादिप्राणवृद्धावनीय यतथा मपि दद्याजगतिभुक्तकोटीणा योनिप्रभुशानि क्षतसङ्ख्या
 बि यतथा मपि च य च्छरीरादिषु द्वारेषु चिन्तय य च क्लीपुत्रपुसकाणा मलययुत्व तज्जीवाणिगमटीकालो जायनीय उरःपरिषपवक्ष्यतोपस
 द्वारमाह-सतउर परिषपाः सयुना भुजपरिसर्पाना मभिधिस्सुराह-सकिसमित्यादि ॥ सुगम नवर य भुजपरिविज्ञपा भ्रमतीता हो लोकतो वसे

त०-समृच्छिमाय गङ्गवक्त्रातिथा य । तत्यण जेते समृच्छिमा ते सहे नपुसगा, तत्यण जेते गङ्गवक्त्रातिथा
 तेण त्रियिहा प०, त०-इत्यो पुरिसा नपुसगा, एणसिण एवमाहुयाण पञ्जात्ता२ ण उरपरिसप्याण दसजा
 इकुलुकीनीजोगिप्यमुहसयसहस्सा हवती ति मरकाय । सेस उरपरिसप्या । से कित नुयपरिसप्या २ व्युणेग

ने विवरै । ते तत्रिहवद्विरिमु दावसमवमवति । इह मनुष्यवेकसे मरौ बाहिरसा बापममदमदि वदेवै । जेवावसे तद्वगारा सेने मकारगा
 ते समासपा बुविहा य त । जे पनेरा तत्राप्रकारे कछा त एतस मकारगा ते ससेपवको दासमकारे कछा ते कहेवै-समच्छिमाय मभ्रववतिवाय ।
 समृच्छि न मभ्र । तत्यव जत समृच्छिमा ते सगे नपमया । तिहा च समृच्छिम ते सब अर्पुसकाली बुवे । तत्यव जते गङ्गवक्त्रातिथा तेच त्रिविहा य
 तं । तिहा ज गर्मव त तीमप्रकारे कछा ते कहेवै इत्यो पुरिसा नपमगा । ज्यो पुसप अर्पमक । एणसिक एवमाइया पञ्जत नपमजाना च करपरिसप्या
 च दसजाति कचकादिजाबिपुमुहसवसकछा इवताति मरकाय । एणव इचनरे पानिठर पर्याता अपवर्ग्यागा उरपरिसप उमछाव कचकादिया निममुष
 यतसइस उमछाच योतरागे कछा । सत करपरिमया । एतस उरपरिसप कछा । सेकित मभपरिमया २ अकेगबिहा य त । ते विवे भत्रपरसप तेच
 मा पनेकमेद कछा ते कहेवै-एवस सहा सरका सहा सरता साराधारा वरीइसा निसमहा म्मुा दुगमा पयथाइवा ज्योरविरासिया लाहा चउपइ

याः श्रीमदीपं य नवधातिमुल्लसोटीया योनिप्रमुखाणि क्षतसङ्ख्याणि प्रवर्त्ति, य स्युः क्षरीराविषु विप्लवम श्रीपुसुकाना मस्यवृत्त्य तल्लीला
मिगमटीकातो वदितव्यं ॥ सेतमिन्यादि ॥ सम्यक्तत्वरपञ्चान्त्रियैयग्योनिका नञिचिरसुराह-सङ्कितमित्यादि ॥ अथ के ते स्वरपञ्चान्त्रियैय
ग्योनिकाः क्षुरिराह-स्वरपञ्चान्त्रियैयग्योनिका धनुर्बिधाः प्रकृता-सङ्ख्या-ब्रह्मपक्षीइत्यादि ॥ ब्रह्मात्मको पक्षी ब्रह्मपक्षीतो विद्योते ययाग्रे
ब्रह्मपक्षिः सोमात्मको पक्षी सोमपक्षी तद्वक्तो सोमपक्षिः तथा गच्छता मयि समुद्रकवत् स्थितोपक्षीसमुद्रकपक्षीतद्वक्तः समुद्रकपक्षिः वित
तो नित्य मनाङ्गुलिर्वी यया विततपक्षी पक्षी सङ्कतो विततपक्षिः के सङ्कितमित्यादि ॥ अथ के ते ब्रह्मपक्षिः ब्रह्मपक्षीको मेकविधाः सङ्ख्या-वर्ग
यः

विहा पण्डिता, तजहा-णउला सेहा सरका सक्षा सरंठा सारा खारा घरोइला विस्सजरा मूसा मगुसा प
इलाइया त्यीरियिरालिया जाहा वउप्याइया जेयाथकेतहप्यगारा । तेसमासहे दुविहा प०, त०-समुच्छि
मा य गङ्गवक्कतियाय, तत्यण जेते समुच्छिमा ते सहे नपुसगा, तत्यण जेते गङ्गवक्कतिया तेण तिविहा
पण्डिता, तजहा-इत्यी पुरिसा नपुसगा, एणसिण एवमाइयाण पज्जात्ता२ ण नुयपरिसप्याण नवजाइकुल

या । भोव सेइका सरट सङ्ग सरत्त सारकार वराएवा विस्मर मूसा हुमस प्रवकादि क्षीरविरो क्षोधा वउपद इयविमोय । जेबावके तइप्यगारा
ते समावथा दुविहा प त । एइथा ज धनेरा तवाप्रकारे ते सवेयवको दासप्रकार कथा ते कइहे-समुच्छिमाव वउपदतियाव । समुच्छिम गभज ।
तत्त्व जेते समुच्छिमा तेसव नपुसगा । विहा समुच्छिम धर्ब सदा नपुसकणि १ । तत्त्व जेते गङ्गवक्कतिया तेथ तिविहा प तजहा । तिहा जे ग
भज तेइका तोनमड कहे । इको पुरिसा नपुसगा । एणसिं एवमाइयाण पण्डिता अपण्डिताय भयपरिसप्याय नवजाइकुलकाको
आबोपमव सरसङ्ख्या इयतोतिसङ्ख्या । एणजे इवतेरे चादिइह पर्यासा अपण्डिता नवजाति कथाकादि बोनिप्रमस्य यतसपस्य पुजे बोत
राये कथा । सेतं मुयपरिसप्यवसर पण्डिय तिरिक्काविवा । ते एतके मुयपरिसप्य वउवर पवेइय तिरिय कथा । सेत परिसप्यवसर पवेइय

स्त्रीत्यादि-यस्ते च जना लोकोतो यत्तेषा, जेषावनेषष्ठप्यगारावति ॥ ये पि चा म्ये तथा प्रकारा एव कृपा स्ते चमपदिषो प्रपुण्याः, उपसङ्गारमा
द-सुतं चमपपञ्चो । स्तोमपदिप्रतिपादुमार्चमाङ्ग-सुक्षितमित्यादि ॥ यस्ते च स्तोमपदिजैरा लोकोतो वेदितव्याः, समद्वपदिप्रतिपादुमार्चमाङ्ग-सुक्षित
मित्यादिपाठसिद्धं ॥ यद्यं विततपदिस्मृन् मापि ते समासतो इत्यादि प्राग्वद्भाषनीयम्, एतेषां द्वावृणानातिशुलकोटीना योनिप्रमुखानि प्रवतसव

कोफ़िजोनिप्यमुहसयसहस्साह् हवती तिमस्काय । सेष ज्ञुपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया । सेस्त परिसप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया । से कित स्वहयरपचिदियतिरिस्कजोणिया २ षडविहा पसुहा, तजहा—चम्मपस्की लोमपस्की समुगपस्की यियतपस्की । से कित चम्मपस्की २ ह्युणगविहा ५०, त० वगुली जलोया ह्यफ़िहा नाररुपस्की जीवजीया समुह्वायसा कस्यस्यिया पस्किवेराली जेयावसेतहप्यगा रा ॥ सप्त चम्मपस्की ॥ से कित लोमपस्की २ ह्युणगविहा ५०, त० ठका कका कुरला वायसा चक्का

ति । इतसे सरपरिचय दखवर पवेदिय कइया । सेवित खडवर पवेदिय कइया २ वखबिद्या प त । इवे खडवरपयो पवेदो तियेवनी नि तेइमा ४ मेदबद्या ते कइये—बखपयो खामपयो समइकपयो दितनपयो बिखरीपोख । सेवित न पपयो पवनविद्या प त । इव बरीपयो, ते बमपयो पनेबपयो कइया ते कइये—बखुलो जहाया खंडरा मारपयो ओबजोवा समुदवायसा । बागुल बलाबा र्धिल मारणपयो ओवजोवा समुद्रवायस । कणतिवा पकविदाओया । जेयाबखेतबप्यभारा सेत बखपयो । जे पइवा पनराओन तबापकारे खबिद्या इवे ते बमपयो कइया । सेवित खोमपयो २ पवेगबिद्या ३ त । इवे कामपयोनाभेद पनबप्रकारे कइया ते कइये—छंदा खंडा कुराखा बायसा बखधारा ईसा ककइसा पाइईसा रायईसा पछासेही बग्गा बछोगा । छडपयो खड करारा खामस । बखबा ईस बखईस पाइइस रामइस भछासेही बग बासग । प्यारिणावा खुंवासारसा मेसरा मसरो मसरा सयबत्ता बइरा पौडरीया खामा खामिल

याः यमीपां च मन्त्रातिश्रुतबोटीना योनिप्रसूतानि इतस्तस्यादि प्रकृति य ह्युनः धरीराविपु वित्तन स्त्रीपुङ्गपुसकाना मस्ययदुत्त तच्छीया
मिममटीकातो यादवत्वं । सेतमित्यादि ॥ सम्यक्तिकरपञ्चिपतैपगयोनिना नत्रिपिष्टुराह-सकितमित्यादि ॥ अथ के ते रुपरपञ्चिपतैपे
न्योनिनाः धूरिराह-रुपरपञ्चिपतैपगयोनिना वतुविधाः प्रकृता-साद्या-वस्यपञ्चिपतैपगयोनिना ॥ यमीसकौ पक्षी यमंपक्षीतो विद्योते यपागते
यमपक्षिः। सोमात्मकौ पक्षी सोमपक्षी तद्वक्तो सोमपक्षिः तथा गच्छता अपि समुद्रवत् त्वितौपक्षीसमुद्रवत्तद्वक्तः समुद्रकपक्षिः वित
तौ नित्य ममाङ्गुलिपक्षी यपा विततपक्षी पक्षी सङ्गौ विततपक्षिः के सकितमित्यादि ॥ अथ के ते यमपक्षिः यमंपक्षिः नैकाविधाः तद्यथा-यस्य
तौ

विहा पक्षता, तजहा-णउला सेहा सरका सप्ता सरंठा सारा खारा घरोइला वित्सनरा मूसा मगुसा प
इलाइया त्यीरियरालिया जाहा वउप्याइया जेयाथ्वेतइप्यगारा । नैसमासतु दुविहा प०, त०-समुच्छि
मा य गङ्गवक्त्रतियाय, तस्यण जेतै समुच्छिमा ते सहे नपुसगा, तस्यण जेतै गङ्गवक्त्रतिया तेण तिविहा
पयत्ता, तजहा-इत्यौ पुरिसा नपुसगा, एएसिण एवमाइयाण पज्जत्ता २ ण नुयपरिसप्याण नवजाइकुल

ता । नौव वेइता सरट स सरल सारकार वराएणा विरुमर मूसा इमस मन्त्रादि वीरविराडो ओषा वरपद द्याविमेष । जेवावसे तइप्यगारा
ते समसथा दुविहा ॥ त । दइवा ज येनेरा तकाप्रकारे ते ससेपवको वीरपकार कथा ते कथे-समुच्छिमाव गङ्गवक्त्रतियाव । समुच्छिम यमत्र ।
तज्जं जेतै समुच्छिमा तेसवे नपुसगा । तिहा वसू प्यम सर्व सदा नपुसकवि- । तज्जण जेतै गङ्गवक्त्रतिया तेथ तिविहा पं तज्जहा । तिहा जे न
मज तेइना तोनमड कहे । इत्यौ पुरिसा नपुसगा । स्त्री पुत्रप नपुसक । एणसिण पज्जत्ता वराएणा वरपरिसप्याण नवजाइकुलकाओ
जावोपमस सइसइका इवतोतिसप्प्याय । पइजे इवतरे पाटिइ पज्जता सपयोमा मजपरसय नवजाति यककादि योनिप्रमस यतयदुत्त इवे योत
रागे कथा । सेतं मुवपरिसप्याववर पावसिय तिरिक्काकाविहा । ते यतकि मुवपरिसय पज्जत्ता येनेद्रव तिर्येक कथा । येत परिसप्याववर पंक्तिव

वि श्रीन्द्रियाणां मणौ, चतुरिन्द्रियाणां मणौ अलक्षरपञ्चाश्रियाणां मणौ मण्योवद्वाभि धतुःपदस्यलक्षरपञ्चाश्रियाणां मणौ अलक्षरपञ्चाश्रियाणां मणौ
 न्द्रियाणां दश पुनपरिसरस्यलक्षरपञ्चाश्रियाणां मणौ अलक्षरपञ्चाश्रियाणां मणौ अलक्षरपञ्चाश्रियाणां मणौ अलक्षरपञ्चाश्रियाणां मणौ
 यग्योनिः। सम्प्रतिमनुष्यान् त्रिपिण्डु राह-सकितमित्यादि ॥ यत्रापि सम्प्रष्टिमनुष्याविषय प्रथममनुष्याविषय द्वितीयावामपि च साक्षाद्भग

मासन्तु दुचिहा प०, त० समुच्छिमा य गस्रप्रकृतिया य । तत्पण जेते समुच्छिमा तेसखे नपुसगा तत्पण
 जेते गस्रप्रकृतिया तण तिविहा प०, त० इत्यो पुरिसा नपमगा । एएसिण एउमाटयाण खहयरपचिदि
 यतिरिक्कजाणिगयाण पज्जापज्जासाण वारसजाइकुलकोफिजोणिप्यमुहसयसहस्सा हवन्तीतिमरकाय, सस्रठ
 जाइकुलकोफिजतिनवधुत्तरसाइथ । दसदसयहोतिणयगा तहयारसचेवओधवा ॥१॥ संत खहयरपचिदिय
 तिरिक्कजोणिगया ॥ सस्र पचिवियतिरिक्कजोणिगया ॥ स कित मणुस्सा २ दुचिहा प० ,

तियाप । समुच्छिमा गभग । तत्पण जेते समुच्छिमा तेसय नपमगा । तिया जेते गभगकतियातव तिविहा प त ।
 तिया जेते गभग ते तोनभद कथा ते कहेवे—एतो पुरिसा नपमगा । एता पुवप नपमगा । एएसिण एवमागयाव खहयरपचिवियतिरिक्कजाविवाव
 पज्जापज्जासाण वारसजाइकुलकोफिजतिमयसाय । खवरपची पचद्विग तियखानिज पर्योसा अपयोसा योरसासु कस
 काँट यानिपमुपु व रेसापु वरे कथा योतराग- सस्रठजाइकुलकोफि जस्रठजापत्तरसाइव दमदसस्रठतिमयगा तहयारसचेवओधवा । येद्विसेने सा
 मभापुववकाटो तेद्विय पाठसाप योरिन्द्रिय मभापुववकाटो पचद्विग १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
 पु वनकाटि मभापरमप ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० तिया जेते गभगकतियातव तिविहा प त ।
 गभगकतिया सकित मणुष्या २ दुचिहा प त । जिन तियेवधानिया कथा ते जेने मनुष्यन भद पूज्जे, ते मनुष्यना दासभद कथा तेनेकेस—समुच्छि

स्त्राणि अमीषा मपि शरीरादिषु द्वारेषु चित्तमनं स्त्रीपुरुषयुक्तानां मत्स्यबुल्य च जीवाभिगमटीकातः प्रतिपत्तव्यं मिषुनु यद्यगीरघजया अ तिस्यत , येषुमा विनपञ्चमागुपयय द्वीन्द्रियप्रतिबोतिभूमकोटिगतसहस्रसङ्ख्याप्रतिपादिका सङ्ग्रहिण्याया माह-सप्तछजाइकुनका फलपञ्चपदुमयतरसा इव । दसपदोतिनवया सह्यारवचवकोपद्या ७१५ अत्र द्वीन्द्रियम्यः यथासक्तुन सङ्ख्यापदयोजना सा चैव-द्वीन्द्रियाका सप्तमातिदुलकाटिलजा

गा हसा कठहंसा पायहसा रायहसा व्यूहा सेलीथगा थलागा पारिष्यया कुचा सारसा मेसरा मसूरा मऊ रा सतयच्छा गहरा पौंठरीया कागा कामियुगा यजुलगा तित्तिरा अहमा लावगा कवीया कविजला पारे यया चिन्ना चासा कुकुठा सुगा घरहिणा मदणसला कीकिला सेयहा घरेयग मादी । सेस लोमपस्की । से कित समुगपस्की २ एगागारा ५०, तेण नल्य इह व्याहिरएसु दीवसमुहंसु भवति । सेस समुगपस्की । से कित थिततपस्की २ एगागारा ५०, तेण नल्य इह व्याहिरएसु दीवसमुहंसु इवति । सेस विततपस्की । तेस

या विवक्षता । पारिण्या कोइ साक मसर मसूरी मयूर मयतच गहर पावकरक काग कामजुगा विवक्षया । तित्तिरा वहागा कावगा कवीयाक विजसा पारेवया चिन्ना चासा कुकुठा सुगा यगगहरिका । तीतर वट्टक व्यावक कपात कवच्छास बारिवा चिट्टक नोकवास कुबडा सूवा बगसा । मव बनिलामा कारसा सेडा चरिणमारा । मवकपचो सवाक कारक सेको बाळग इत्यादि । सेण कामपचो सेलित समुगपचो २ एगागारा प त । यनेरा कामपचो तवागकारे द्विये समुगपचोना एकबीज भेदये पचो काममानको । तेथं तम्य इह व्याहिरियसु दोवसमवेग इवति । इय होयाभादि मदीये वाहिरका होपयमद्रामादि कुबडे । सेण समगपचो सेलित वियतपचो २ एगागारा प त । एतसे समुगपचो कद्या द्विये ते विततपचो त विततपचोना एकबीज भेदये । तेथं तम्य इह व्याहिरियसु दोवसमुदस इवति । ते इकां थटारिणीय से कवच्छोप धातको पच्छराइ मरो वाहिरिका हीपसमद्रामादि कुबे । सेत वियतपचो ते समासया पुविडा प त । एतसे विततपचो ते सेजेपचो दायमकार कद्या तेजइडे—समुन्वितमाय गम मजो

द्वीपा आदृष्टा पय साध रप्रमाया स्ताव दयात्तरासा साधामान यय धिरुरिपवतपूर्वोपरदिग्व्यासस्थिता अपि तसी त्यन्तगदृग्गनया व्यक्लिमेद
ममपरूप चत्तरदीपा अष्टाद्विष्टातामया यव विवर्षिता इति तज्जाता मनुष्या अपि अष्टाद्विष्टातिविधा सन्ता सामग्र नामयाइमु पदशायसि-तंअश
पनाइया इत्यादि पय मप्रचनुष्ठा अष्टाद्विष्टातिसङ्गत्वं त् यत् च प्रत्यक्ष द्विमयात शिसरिणि तत्र द्विमङ्गलतपातायद्वाव्यान्त इष्ट अम्बुद्वीपे प्ररतस्य
वैभवस्य च चतस्य सीमाकारा भूमिमिसन्नपञ्चविष्टातिबोधमयोजनकृतोअपपरिमाको भरतस्रजपञ्चयाद्विगुणविक्रजा इममय दीनपहुवर्जोमानावयव

या त्रिगयकलत्ररेसु वा द्वयीनुरिससजोणसु वा नगरान्द्रमणसु वा सधेसुचैन असुडएसु ठाणसु एत्थण समु
च्छिममेणस्सा समुच्छति, अणुलस्स अस्सखिज्जागमिप्पीए ठंगाइणाए असन्ती मिच्छदिठी अन्ताणी
सद्धाहि पज्जसीहि अणुपज्जयगा अतीमुज्जसाउया चेत्त काल करति । से कित गप्पवक्कतियमणस्सा २
तिविहा पणना, तजहा-कम्मन्तमिगा अकम्मन्तमिगा अन्तरदीयगा स कित अन्तरदीयया ? अन्तरदीयया
अथावीसतिविहा पणना, तजहा एगीकया आहासिया वसाणिया णगोली १ इयकन्ता गयकन्ता गीऊ

रावविधै सावित रत्तमाहि मुज्जमाहि मूणापुञ्जना भावना तेवमेविधै जीवविना कसवरमाहि । को परिमसुखाणमुवा नगरनिद्रमणमेववा गामनिद्रमणे
मया मखेमचन पमरएवठावमु । को पवद सयागमाहि नगर आकमाहि गाम आकमाहि सगही अत्रावि अयविवाइ आनअमाहि । इत्थण समिच्छ
मा मकमा मरएति । इहा म्मूर्च्छिम मज्जण अपणे । अणुसन्ना असखिअरभागमिताण उरगाइवाए । प्रथमसमे र्थगुणने समसुखातभागे अशगाइना ।
पयको निरुद्धाविहो पणानी मन्नाहि पणतोहि पणज्जयगा अतामइलाउयाचन कामअरति । यमको मिण्णाहरो पणतो सर्वपवाय पययचि यमन्तु
मत्त पाजणा नये आअकरे । सत्त समरिअममइया । त म्मूर्च्छिममणुण कइये । सक्ति मप्रवक्कतियमणम्मा २ तिविहा प त । द्विये ते गभअमनु
प पण्णे मिय गुरअरे, ते मभअनमुअना तोनअद कइता तेवइये-अथभूमिगा १५ पणभूमिगा १ अन्तरदीयगा २ अट्टलोविहा प त । अमम

धत्ते द मुक्त मिति यदुमानोत्पादनाद्यसत्सङ्गत मालापक पठति-कश्चि जते इत्यादि ॥ सुगम मवर ॥ सवेसु चेन्न शसु-छावे सुति ॥ अन्यात्यपि या
निकाभिवित मनुयससुगवदादष्टाचिज्जतामि स्थानामि तपु सर्वधिति उक्ता समुच्छिमनप्याः शपुनागम्येव्युक्तामिज्जमनुप्यप्रतिपात्तमार्यमाद सकि
तमित्यादि ॥ कम्मजूमिगा इति ॥ कय शपिवाकित्यादि मोक्षानुष्ठान वा कम्म प्रपाणा जूमि र्येपाते कम्मजूमा शपत्थात्समासाकाऽप्रत्ययः कम्मज्जमा
एव कम्ममूमिका एव मकयो यधीककमविकला जूमि र्येपास्त कम्मज्जमा स्त एवा कम्ममूमिका अन्तरकख्यो मय्यदायी अन्तरे तयश्चसुत्रस्य मध्ये
द्वीपाः अन्तरहीपा तद्गता अन्तरद्वीपणा अस्ति पद्यानुपूर्वीतित्यापस्यापमार्थे प्रथमतात्पर्यहीपगाम् प्रतिपादयति ॥ सकितामित्यादि ॥ सुगम नय
र मरुगविजितानया इति यावुद्धा एव यावत्प्रमाणा यावद्वयात्तरासा यकाभावा इमयत्पवत्तपुत्रीपरदिग्व्यपस्थिता अष्टाविंशतिविधाः अन्तर

त० समूच्छिममणस्सा य गप्पवक्कतियमणस्सा य । ने कित समूच्छिममणस्सा , कट्ठिण जत । समूच्छिम
मणस्सा समूच्छिते ० गोवमा । अता मणस्सखेते पणयाली माए जायगसयनहम्से सु अह्मइजेसु दीउसमुहेसु
पथरससु कम्मजमीसु तीसाए अकम्मजमीसु लप्यन्नाए अतरदीवएसु गप्पउक्कतिग्रमणस्साण चेव उच्चारसु
या पासयणसु वा खलसु या सिधाणएसु या वनसुया पित्तसुया पूणसुवा सुक्कीसुवा सुक्कापोगलपरिसाऊसु

[illegible]

द्विगण्यतोच्छ्रितया पट्टपरयदिवया सयतः परिसिद्धतः तस्या य पट्टपरवेदिकाया पणको बीवाभिगमटीकाया मिय वेदितव्यः सा पि य पट्ट
 परयदिका सयतः साभरत्पन यत्तुपरिरिक्ता वसा य यमस्रकस्या ऽय विषयः प्रायो यद्गुणा सुमानजातोयाना मुत्तमासा मञ्जोरुहायां समुदायो
 यम यया ऽयोदवन सम्यक्कवमिति अनकणातीयाना मुत्तमासा मञ्जोरुहाया समुदा मवयुगलः, उक्त य बीवाभिगममूलीकाया-एगखावयदि
 कस्तुदिं यय चङ्गजग्रादयदि उक्तमेहि ययसंले इति। तस्य य वनकयकस्य चङ्गवास्तया विष्कम्भी देशोने द्वे योजने परिराय पट्टपरवेदिकाप्रसायः
 सस्य य यमस्रकस्ययक्तः प्रतियादितांस्त स या तोवगरीयानिति नो पदक्षिप्तः ॥ केवलं बीवाभिगमटीकातो वसयः। तस्यैव द्विमवतः पद्यतस्य
 ययन्नादारस्य दक्षिणपूर्वस्या दिक्षि ग्रीवि योजनज्ञातानि लवकसमुद्र भवगास्त द्वितीयदम्प्राया उपरि एकोरुक्कहीवप्रमात्र आत्तासिक्कनामद्गुपीयो
 ववत तथा तस्यैव द्विमवतः पश्चिमाया दिक्षि पर्वता दारस्य दक्षिणपश्चिमाया नैव्यतकाय इत्यर्थः, ग्रीवि योजनज्ञातानि लवकसमुद्र भवगास्त

दम्प्राया उपरि यथोक्तप्रमात्रो येषासिक्कनामा द्वीपः, तथा तस्यैव द्विमवतः पश्चिमाया दिक्षि पयन्ता दारस्य पश्चिमोत्तरस्यां दिक्षि वायव्यकोणे
 इत्यर्थः ग्रीवि योजनज्ञातानि लवकसमुद्रमध्ये दम्प्राभतिकम्प्या आत्तरे पूर्वोक्तप्रमात्रो नांगोसिक्कनामा द्वीपः एव मते पत्वारो द्वीपा द्विमवत एत
 सयपि विविदुः तुल्यप्रमाणा भयतिष्ठत उक्तं य-बुद्धिभिवत्तपुत्रा वरस्यपश्चिमासुसागरान्तिवयः। गन्तुत्तरदीवा तिरिक्किय पुति विच्छिन्ना न १ ॥
 अत्रकापन्नमवसए किपूवपरिदि तसि स नामा एमासय आत्तासिय वेसाखिय यव नगूली २२० तत एया मञ्जोरुकादीनां पन्तुका द्वीपाना परतो
 यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविविदुः प्रत्यञ्च यत्तारि २ योजनज्ञाताय तिकम्प्य यत्तुर्वाजमक्षुतायाभविर्कजाःकिञ्चिन्मूनपयपुसिचित्तद्वादक्षयाजनवातपरि
 द्वा यथोक्तपट्टपरवेदिकायमस्रकमन्तितपरिरिचरा जम्बुद्वीपवेदिकात यत्तुर्वाजमञ्जलप्रमात्राभरा ययकञ्जगजकङ्गोक्कवेज्जुलीकवनानामनसुत्वारो
 द्वीपा सद्यया-एकोरुक्कस्य परतो एयकञ्जः आत्तासिक्कपरतो गजकञ्जः, येषासिक्कस्य परतो नोक्कञ्जः, नांगोसिक्कस्य परत छात्रुलीकचइति, तत

विशिष्टानुतिमसिद्धिपरपरिमयिष्ठतीतपपार्थं सुवयं नुत्यविस्तारो गणममहसोऽप्येति रथमप्यै कादक्षुक्तोपक्षोभितो वज्रमयतलविपिपमयिकनकम
 दितततभगदक्षयोननावगाढपूयपयिमयोजनसहस्रायामद्विषोत्तरपञ्चयोजनशतविस्तारः पटवृद्धोन्नतशिरोमध्यन्तागः सवतः कल्पपादपञ्चविंश
 मवीथः पूर्वापरपयन्ताभ्यां स्वयोदाखेवजलशरण्यां हिमवतानामपवत कास्य लवणोदाखजलसंस्पृशदारुण्य पूयस्या यद्यिमायां च विक्षिप्रत्यक्ष द्वे
 द्वे गजवृंताकार दग्ध विनिगत तत्र यस्याप्योदधिषा या विनिनता दग्धा तस्या हिमवतः पयन्तादारुण्य नीचि योजनशतानि लयणमयगाद्या ऽप्राप्त
 र योजनशतत्रयायामविक्षन्तः । किन्निग्नैर्कोमपन्नास्रद्विचकषयपालनशतपरिरय एकासकनामाद्वीपोवसुले-अपञ्च पञ्चपन्नः शतमसाष्टविधमया

न्ता सकृलिकत्वा २ श्यायसमुहा मेढमुहा श्यमुहा गोमुहा ३ श्यसमुहा हल्यमुहा सीहमुहा वग्धसमुहा ४
 श्यासकन्ता सीहकन्ता श्यकन्ता कक्षपाउरणा ५ उक्तासुहा मेहमुहा यिज्जुमुहा विज्जादता ६ घगदता लठ
 दता गूढदता सुददता ७ । सप्त श्यतरदीवगा । च कितं श्यकम्मनूमिगा ? २ तीसतिविहा पयसा, त०
 पचहि हेमयएहि पचहि हेरखयएहि पचहि हरियांसिह पचहि रम्मगवांसिह पचहि देवकुखएहि पचहि

मिता ११ पचमर्ममिता १ ११ पत्तरहोपनाहि सनय २८ भेदे कक्षा त वद्वे—एगदवा अभासिवा देसापिया तदासो ४ । एकाद्वय अभासिक वेसा
 यो तदासो । इवकक्षा गवकक्षा गाकक्षा मकिकिक्क्षा ८ । इवद्वय गाकक्ष गवकक्ष मकिकिक्क्षा ८ । पायसमहा मद्महा भयमहा गोमहा अविमहा ३
 तिमहा कादमुहा वग्धमहा ११ । पादयमया मेवमहा अदमया शामय अग्रमय अस्त्रमय सिद्धमय व्याघ्रमय । यक्षकक्षा सोडकक्षा यक्षका कक्षया
 वरया २ । यक्षकक्ष सिद्धकक्ष यक्षय कक्षपादय । उक्तमहा मद्महा विज्जमहा २३ । उक्तामय मयमय विद्यामय । विज्जदता घवदता सङ्गदता गू
 ठदता मद्दता चित्तादवा २८ । विद्यान्ता घमदता कटदता गूढदता मुहदता विपत्त्यादि प २८ ते । मेन अतरहोवगा । पत्तरहोप २८ यिखरोपमत
 पचिमे २८ औवाभिमम टोवामाहि विखरपये । सकिंत पचमर्ममिता २ तासाविहा प त । हिने पचमर्ममिता तीसभेदे तैवकेवे—पंचविंशममय

इदमः। बायामपि कनयनावपुस्त्रीकद्रोपक्षोभिरे गिररथपि पवते सखीवायवससस्पष्टांशरज्य पयोक्तप्रमाणाभराहु चतसृषु विविक्षु व्यस्पिता मकान्कादिमामाभा सुगयात्तरासायामाविफभा अष्टाविष्टतिसङ्का द्वीपा वत्स्या सवधङ्कया पदपञ्चाशदभरद्वीपाः एतद्गता मनुष्या दय्ये तत्रामात्र उपचारा नूवन्ति चतुर्दश्यास्तथापक्षो यथा पञ्चासदक्षमिमांसिनाः पुरुषाः पञ्चासा इति तेचमनुष्या वज्रपमभारापचसृग्मिनः अककुक्षिपरिकायाः चतुस्रोमकायुदगाः समचतुस्त्रसस्याना स्तथाया-सुप्रतिष्ठितभूभारुचरकाः सुकुमासप्रल्लप्रविरसरोमनुकविन्दयुतमङ्गा युगलाः निगूडसुयदुर्वास्त्रानुप्रदक्षाः कारिकरसमदुर्गेरवः कटीरवसच्छाकटीप्रदक्षा मकायुचसममज्यसागाः प्रदाहवायतनाजिमभक्तताः द्यौवससाच्छित विद्यासमांससचस्यसाः पुरपरिपानुकारिदोषाश्च सुप्रिष्टमखियन्था रक्तोत्पलपञ्चानुकारिदोषमपाविपादतलाः चतुरङ्गुलप्रमासमवतकयूयी ता शारदयुगांक्वामवदनाः चन्द्राकारक्षिरसो अस्फुटितस्त्रिचक्रान्तिप्रल्लमङ्गाः कमण्डलुक्कलशसूपस्तूपधापीच्छप्रपलाकासौवस्तिकयवमरस्य माल रक्तमरपवरस्यासमुद्राष्टापादाकुसुमप्रतिष्ठमपूरस्रीदामान्नियकठोरकर्मोदनीजलापिचरत्रवनादक्षपयेतगजवृषमंसिश्चामररूपप्रशक्तात्मनः। त्रिशल्लिख्य

उत्तरकुरुर्हि सेतुं व्यक्रमज्जमगा । से कित् कमज्जमगा २ २ पणरसविहा पणसा, तजहा पचहि जरहेहि
पचहि एरवएहि पचहि महात्रिवेहि ते समासन् दुयिहा पणसा, तजहा स्यायरिया य मिलखू य । से

[illegible]

एतया मपि दण्डकादीनां परतः पुन रपि यथाक्रम पूर्वोक्तदिविविदिषु मत्येकं पण्यं योऽन्यथापामविक्रमा एका
नीत्यपिउपपन्नयोऽन्यथापरिहृताः पूर्वोक्तप्रमाणपट्टवरयदिकावनकवकमयिकतवाद्यप्रदद्याः सम्बूहीपवेदिकात पण्ययाजनशतप्रमाणान्तरा य
वद्यमुच्य १ मंत्रमुच्य २ अथोमुच्य ३ गोमुच्य ४ भामानद्यत्वारोहीया स्तद्याया-इत्यकस्य परत आदशमुखो गजकस्य पुरतो मन्त्रमुच्य गोकस्य
परतो ज्यामुच्यः शङ्खनीकास्य पुरतो गोमुच्य इति एव मयाप जावना जाया यतेया मया दशमुखहीमा बहुया द्वीपानां परता मयो पि
ययाक्रम पूर्वोक्तदिविविदिषु मत्येकं पट्टपट्टीकनक्षतान्य विक्रम्य पट्टयोऽन्यथापामविक्रमाः सप्तनवस्यधिकप्रादक्ष्योऽन्यथापरिहृता यथाक्रममा
नपट्टवरयदिकावनकवकमयिकतवारवरा सम्बूहीपवेदिकातः पट्टयोऽन्यथापामविक्रमाः सप्तमुखसिद्धमुखव्याघ्रमुखनामान द्वास्यारो द्वीपाः
एतया मप्य ऽधुमुद्यादीनां बहुका द्वीपानां परतो यथाक्रम पूर्वोक्तदिविविदिषु मत्येकं यमयोऽन्यथापामविक्रमाः सप्तसप्तयाजनशतयापामविक्रमा

उपोदद्यापिकदा विद्यासंयोगननुत्तपरिरयाः पूर्वोक्तप्रमाणपट्टवरवेविकावनपुस्तकसमगूढा अभ्यूद्गीपवेदिकात् सप्तयोऽनमताप्रमाणाः सारा अष्टासु
हरिकेशकेशवमावरकनामान द्वावौ द्वीपा स्तत एतपा मङ्गलार्दीनो वानुका द्वीपाना परता यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविदिशु प्रत्येक सप्ता सप्तौ
याऽननतास्य तिक्रम्याष्टयोऽनमनुतायामविक्रमता एकोनत्रिंशदधिकपञ्चविंशतिसंयोगनयतपरितेपा यथोक्तप्रमाणपट्टवरवेविकावनपुस्तकसमिकतपरि
सरा अभ्यूद्गीपत्रदिकाताऽष्टपाऽनमनुताप्रमाणाः सारा अष्टासु खमपमुष्टविशुमुष्टविशुमुष्टातिथाना द्वावौ द्वीपास्ततोऽसीपा मप्युक्तामुखादीना
वतर्दी द्वीपाना परतो यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविदिशु प्रत्येक मङ्गलयोगनयतानि व्यतिक्रम्य भवनवपावनयतानामविक्रमताः पच्यपत्यारिग्रहपिका
ष्टाविंशतियोगननयतपरितेपा यथोक्तप्रमाणपट्टवरवेविकावनपुस्तकसमगूढा अभ्यूद्गीपवेदिकातो नवयोऽनमनुताप्रमाणाः सारा पच्यपत्यासप्तदशपुष्टदन्त
मुष्टदन्तनामान द्वावौ द्वीपा एय मते द्विमवसि पयते चतसृषु विदिशु व्यवस्थिताः सयर्बस्यपा षाष्टाविंशतिः एय त्रिमवसुत्पन्नप्रमाणे पट्ट

द्वितया दऽहमिन्द्राः तया पृथक्करुणानि चतुःपञ्चसङ्ख्यकानि चतुर्थातिक्रमेण वा द्वारयश्च बाह्वरो वि न शास्त्रादिधाम्यनिर्व्ययः किन्तु पृथि
 धीभूमिका कल्पद्रुमाणां पुण्यकलाभ च तथा हि कायन्त यस्तु तथैव विद्यसा त एव शास्त्रिणोभूमायमुद्गादीनि धाम्यानि चर न तानि मनुष्या
 या मूपनोग गच्छन्ति या तु पृथिवी शा श्वराताऽप्यमननकमापुषा य य कल्पद्रुमपुण्यकलाभा मास्याश्च च प्रथयति ताजना वप्य चिकगुणाः
 तथा वाक्-तद्विच भत पुण्यकलाभ करिष बासाय पकत गा० १ ॥ अथा नाम ए रथो वाउरतश्चक्राहिरश्च कलाण प्रायश्चक्राय सयस्सस्रश्च
 रश्मिप्यक्क वक्रायेकगणोयवपरसोवययकाशोववश्च बासायविक्कादप्यविक्क मयविक्क विहाण्णञ्च सविदियगयपश्चक्रामिक्काभासायश्च पकत एता
 इहतराय च पकत ततः पृथिवीकल्पद्रुमपुण्यकलानि च तेषा माहारः तथाजल माहार मासादविचत्वाभा य पृष्टाकारः ॥ कल्पद्रुमा
 स्तय यथासुप्तम यतिष्ठत, न च तत्र क्व दशमस्रकृष्णकामस्तुवमोचिक्कावयः शरीरोपद्रवकारिको जलश्च उपजायन्त ये ऽपि जायन्त नृग्रगव्याग्रवि
 षादय त पि मनुष्याश्च न थापादे प्रभवति नापि ते परस्पर द्विस्वद्विचक्राया वल्लभ कथानुजावली रौद्रानुजावरहितत्वात् मनुष्यपुगनानि
 य पयसामसमय पुनरा प्रवतत त च युयत्सम कोलाशीतिद्विमानि पाशयान्ति तेषा शरीरोक्कयो ऽष्टौ चतुःशतानि पत्न्योपमा सङ्गुपतागममाश्च मा
 यु हस्तश्च अतरदीयसु नरा यदुसयमदुस्त्विया वया मुद्रया । पालति पुण्यकला पद्मस्वस्वयतागाक ॥ १ ॥ अतस्वहीविठकरदयादि मन्त्रयाव तसि
 माह्वरो । नतस्वस्वस्वयय गुह्यहीद्विक्कादि पासकया ॥ २ ॥ लोककपायतयास्तोकप्रमानुबन्धनयात्वं ऽतो सुत्वा विद्य नुपसर्पेति मरश्च च तथा

हाराग यहीलिय अज्जाल रोम पास यउसा मलयाय वधुयाय सूयलि कुकुणगमेश्च पराहव मालय मग्गर
 अनासिय कण वीरण एहासीय स्वसयासिय नेरूर मठ कोयिलग लउस स्वउस कोकोग अरत्रागा हूग

मठ ठोबिन गल वयल पश्च वसेय चरना मग्गव राम गग्गव रामग यश्च मन्त्रय चिकाय विमयवासीय एवमाश्च । सुवसुना कोकवना कनकना मेदना
 मावववना मररना चमाविक्कना वसयोरेना वहासिना एउता पासिय नेवरना मठना ठोविक्कना गवना वसवना वरसुना वसेवना पर्मना गोष

परा तियापि सुभातमर्धोऽनुसुदय समसमहिमागुणसमन्विताः संवृतांगुलिपट्टतल्यत सुकुमारकूमरसुखाममनोहरिचरकाः रोमरहितप्रशस्तस
 तावापेतामृगुगला विगूढमांसलजानुप्रदबाः कदलीसामानिजीवहतसुकुमारपीथरोचकाः वदनायामप्रमाणाग्रवामासलविशालमपपरिख्य रिग्र्य
 कान्तिसुविमलशररोमराक्षयः प्रदक्षिणावतारंगप्रगुरनाभिप्रमथलला प्रसलसलबापतकुक्षय सङ्गतपाद्याः कमलकलशोपसङ्गतात्यजतवृत्ताकृतिपीवर
 पयाचराः सुकुमारयागुलतिकाः सौवस्तिककाङ्कजबाद्याकलिसंसासङ्गतपाक्षिपादतला वदनयिनागोष्ठीतयामुलङ्कम्युग्रीवा प्रशस्तलक्ष्णोपेतमांसल
 हनुविनागा दक्षिमापुष्पानुकारिक्षोदिमाचराष्टः रक्षात्यलतामृजिष्ठा विषासितकुलपपत्रायतकामलोचना कारोचितकापपुष्पाकृतिमुसङ्गतज्वलता
 का प्रमाखोपपल्लतातल्लकाः सुखिग्यकान्तशरसिरोरुहाः पुरुषप्यः किञ्चिद् भोष्कायाः स्वनायततदारग्रङ्गरचासुवपाः प्रकल्पेव शंसितप्रचित
 विलासविषयपरमैपुल्यापता लया मनुया मानय ह्य स्वजावत यव सुरजिह्वदभाः प्रतमुकोचमाममायालाजाः सन्तापिखो निकुसुवचा माव
 वाजवसम्बदाः सत्यपि ममाङ्गारिणि माचकनमैर्दन्तिकादौ ममलकार ममस्थानिनिधक्षरहिताः खयचाऽपगतवैरानुयया हस्त्यङ्गकरजुगोमहि
 प्याविसद्गावपि तत्परिप्रोगे पराङ्मुखाः पादविह्वारिणा श्वरदिरागयचनूतापक्षाचाविष्टमरिष्यधनोपनिपातविकलाः परस्परप्रप्यप्रपकजाधर

कित मिलरू १ २ छणगविहा पण्ठा , तजहा सग जयग चिंलाय सन्नर यव्वर काय मुरुहीहु नरुग नि
 राग पक्कण पीय कुलस्क गोरुह सीहला पारस गोधञ्चय दमिल चिंलल पुलिद हारोस दायथोक्काण गध

रा काय माहा दमहन तिक्का पक्कि । वदनस्यना विहातदेयना सवरहेगना ववरहेगना कायेदेयना मवहदेयना दमजगदगना तोवंदेयना पक्क
 यन । कसुता १ ३ माहल पारम कोव पण्ठय दमिल चिंलल पण्ठा दारास सवकारग ववहिद पक्कल रामा पाया वनसा मस
 दाय ववकाय । कुसवदेयना रौदना मिकलना पाण्ठना कोवना ववकना कमिकना चिंलला पल्लवना दारासना शोवना वकाचना गम्यादरना म
 मना पक्कलना रामना पण्ठा पण्ठा मवयना मपुना । मूर्ति कोवय मवदहना माधव मगर प्रभासिना कळीर ववोव यया काधिय नेकर

द्वितया दऽहमिन्द्राः तर्पा पृथक्करकाणि अनुपट्टिसङ्क्रान्ति चतुर्थोत्तिक्रमेण वा हारयद्द्वं आहारी यि न शास्त्रादिपाप्यनियम्यः क्लिप्तु पयि
 वीर्यसिद्धिं कल्पयुमाका पुप्यपलानि च तथा हि जायन्त यस्तु तथापि विद्यसा त एव शास्त्रिणोपममायमुद्गादीनि बाल्यानि चर न तानि मनुष्या
 का मुपनोग गच्छन्ति या तु पृथिवी सा शक्ररातोऽप्यनतगवमापुया य य कल्पयुमप्यपलाना मास्माद् स ब्रह्मवत्सिजजानमा वप्य चिकगुः
 तथा बाल-तसिच भत पुप्यपलानि कारिष आसाय पलान भा० ? स जहा नाम य रलो बाठरतस्सचक्रवर्हिस्स कक्षाण प्रायश्चाय सयस्सचह
 र्मनिप्यले वयाववेयगचोववर्गर्भोववयकासोववय आसायाविक्रवप्यकिंले मयकिंले विहकिंले सविदियगायपलहायचिक्कासायस्य पलान एता
 इतराय चव पलाने ततः पृथिवीकल्पयुमपुप्यपलानि च तेषा माहारः तयाजून माहार मासादादिसत्त्वाना य एहाकारः॥ कल्पयुना
 क्षय ययासुग्न वतिष्ठन्त न च तत्र कृत्र दक्षमक्षकयकाभस्तुचमविकादयः शरीरोपद्रवकारिको जलत्र उपजायन्त ये ऽपि जायन्त जुगगप्याप्रिवि
 द्वादय त पि मनुष्याका न दाषायै प्रभवति नापि ते परस्पर हिस्यद्विचकजय वतन्त कृत्रामुजावती रीत्रामुजावरद्वितत्वात् मनुष्यपुगलानि
 य पयवदानसमय युगले प्रसवत त च युगलम कामात्रीतिहिमानि पालयान्त तथा शरीरोक्षयो ऽष्टौ धनुःशतानि पत्योपमा बहुपजागममात्र मा
 पु कल्पन अतरदीवमु नरा चतुस्रयमहुरसया सया मुद्रया । पालति बुद्धयन्त पल्लससससजानाश्च ॥ १ ॥ चठसहीविठकरद्वपादि मयपाय तसि
 माहारी । प्रतस्सचउत्तरमय गुवसीद्विकादि पालकया ॥ २ ॥ सोककपायतयासोकाप्रमानुबन्धतयात्वे ऽले सुत्वा दिय सुपसयति मरय च तथा

द्वारग वह्निलय झुजाल रोम पास वउसा मलयाय वधुयाय सूयलि कुकुणगमेच्छ परद्वव मालत्र मग्गर
 झुजानासिय कण वीरण रहासीय खसखासिय नेदूर भठ होत्रिउग लउस खउस झोकी ग झुरत्रागा ह्नु ग

मठ ठोविम मल उयम वउस कठिग परमा मङ्गल राम मङ्गल राम मङ्गल विमसवासीय एवमाह । सुयलना कोकपना अनकना मेदना
 माववना मगरना प्रभाविबना कववोरना रहासना खडना खासिय नेउरना मठना ठोविलना गडना उसखना वउसना खेउतना धर्पना गीय

जूनाकायाजुनाः विनाशत्रयापारपुरस्सर भवति न छरीरपीकारभपुरस्सर मिति, तद्विष मुक्ता यन्तरहीपगाः सम्प्रति अक्षमन्मिन्नमतिपादनाय
 माह-संकिता मित्यादि ॥ अथ क त अक्षमन्मिन्नाः १ धूरिराह-अक्षमन्मिन्नाः-तस्मिन्निशित्यत्वेनदत्त-तया आह-तजहा
 पंचविंशमवतपद्मिहत्यादि ॥ पण्डितैर्महतेः पण्डितैर्महतेः पण्डितैर्महतेः पण्डितैर्महतेः पण्डितैर्महतेः पण्डितैर्महतेः पण्डितैर्महतेः पण्डितैर्महतेः
 माना पितृश्रद्धिप्राप्तवन्ति यदा पण्डिता विद्वत्सङ्गान्मात्राणां तत्र पण्डितैर्महतेषु समुपया गच्छन्तप्रमादछरीरोच्छ्रयाः पत्योपमायुषो वज्रवर्ज
 नारावसङ्गिनिः समचतुरस्रसत्यानाः अतु यद्विपुलरक्तका यतुर्धातिलकमजोक्षिणः एकोनाक्षीतिदिभाप्यपत्यपासका उच्छ्रय-गात्रयमुष्वा पस्तिष्ठे य
 मातृको वज्ररिसङ्घसपयदा ॥ इमवपररक्तव एवमिदमरा मिदुववाची ॥ १ ॥ वज्रसहीपिठकरजया कम्बुयाव तसि माहारी । नतस्ववठत्यस्वय
 मुवसिहमिववसपासवया ॥ २ ॥ पण्डितैर्महतेषु पण्डितैर्महतेषु पण्डितैर्महतेषु पण्डितैर्महतेषु पण्डितैर्महतेषु पण्डितैर्महतेषु पण्डितैर्महतेषु पण्डितैर्महतेषु
 सवस्यानाः पटनत्तातिकमाहारपादिको ऽष्टाविंशत्यपिच्छतस्रपटकरक्तका यतुर्धातिलकमजोक्षिणः एकोनाक्षीतिदिभाप्यपत्यपासका उच्छ्रय-गात्रयमुष्वा पस्तिष्ठे य
 नाय सरीरमुस्वहा । पण्डितैर्महतेषु पण्डितैर्महतेषु पण्डितैर्महतेषु पण्डितैर्महतेषु पण्डितैर्महतेषु पण्डितैर्महतेषु पण्डितैर्महतेषु पण्डितैर्महतेषु

रोमग जमरु त्रिलाय यासीय एयमादी ॥ सेप्तमिलस्कू ॥ से कित ध्यायिरिया १ ध्यायिरिया दुविहा पखत्ता,
 तजहा इद्विपस्रारिया य ध्यागद्विपस्रारिया य । से कित इद्विपस्रारिया १ २ त्रिविहा पखत्ता, तजहा-

ना रामना बोचना रामना मफना मफना विमानता इवा देशमायो इवतर मादिदर । सप्त मिलस्कू । सेप्तमिलस्कू । सेप्तमिलस्कू । सेप्तमिलस्कू । सेप्तमिलस्कू । सेप्तमिलस्कू । सेप्तमिलस्कू । सेप्तमिलस्कू ।
 विहा पखत्ता त । धिवे पार्यदय अगसाप्रकारे शाबप्रकारे कक्षा तेकथवे-इच्छपतावरिया अविच्छपतावरिया । अद्विभक्त पार्यमनुष्य अद्विभक्तिना
 प्रायविना मन्त्र । सक्तिं इच्छपतावरिया २ अक्षिणा पखत्ता त । द्विप अद्विभक्त पार्यमनुष्य अद्विभक्तिना ते कथवे-परिहता यजमनो बलवेवा
 दासदश चारका विद्याहरा । यद्वत्त यजमन यजमन यजमन यजमन यजमन यजमन यजमन यजमन । सेप्त इच्छपतावरिया । एतस्मिन्ने अद्विभक्त कक्षा पाथ ।

कर्म चरावीर्यं सुखेयं ॥ २ ॥ पंचमुदेयकुसुमं पञ्चसुतरकुसुमं विपत्तोपमायुषो गव्यतमप्रमाकशरीरोष्ठयाः समधतुरस्त्रस्थानं वज्रयंत्रमारावधे
 दन्तिनः पटुपञ्चाशदपिच्छतप्तद्वयप्रमाकपटुकरशलाकां शठमलच्छातिद्विमाहारिणं यक्षोणपञ्चाशदिनाम्यपत्यपालकाः तथोक्तं-दासुविकुसुमसुया
 तियक्ष्मपरमादयोतिष्कासुया । पिच्छरश्मयायं दोक्षप्यखाहमनुयाय ॥ १ ॥ सुसमसुसमाकुसुमाय शत्रुप्रवसाकायवधुगोवधया । शठकापक्षविद्याश्च
 शठमलस्य आहारो ॥ २ ॥ एतेषु सर्वेषूपिच्छद्वयस्तरद्वीपयिव मनुयाया मुपयागाः कल्पद्रुमसस्यादिताः भवर मन्तरद्वीपापक्षया पञ्चसु रैरस्यव
 तनुमनुयाया मृत्यामवलवीयादिवं कल्पपादपक्षानामास्त्रादोज्ज्वलमसीपुर्त्यमित्येवमादिकाप्रायाः पर्याया नचिच्छत्या मल्लगुणा प्रष्टव्याः तेष्वो ऽपि
 पञ्चसु हरिवर्षेषु पञ्चसु रम्यकवर्षेषु कलमगुणा तास्यो ऽपि पञ्चसु तत्कुसुमं मल्लगुणा तदेव मुक्ता शकममूमिकाः सम्प्रतिष्ठ
 ममूमिकाप्रतिपादनाचमाह-सकलमित्यादि कथं के ते कर्मजूमिकाः सुरिराह-कर्मजूमिकाः पञ्चदशविधाः प्रष्टव्यास्तत्र पञ्चदशविधत्वञ्जनादात्
 तथा चाह-पञ्चविंशतिरतैः पञ्चमिमहाविंशैर्निष्प्रमाणाः पञ्चदशविधा जवन्ति स च पञ्चदशविधा

शूरहता चक्षुग्रही यलदेया वासुदेवा चारणा विज्ञाहरा ॥ सेत इन्द्रिपक्षारिया ॥ से कित श्रुणिह्निपक्षारि
 या १२ नयविहा पण्णा, तजहा खेसारिया जातिश्रारिया कुलारिया कम्मारिया सिप्पारिया ज्ञासारिया

मन्त्रितं पञ्चिष्ठपत्तावरिया २ नवविहा पं त । विवे क्वच पनञ्जहि, पाय नवप्रकारे कक्षा तजहसे—पितृपावरिया जातिपावरिया कुलपावरि
 वा कम्पपावरिया निष्पपावरिया मासावरिया नाचवरिया दसवरपरिया वरितावरिया । सेवार्यं तोषेकर छपवे ते तोषेकरस्य जातिपाव सेहनी
 जातिपसिह पुसकसम अणभा कक्षार्यं कम्मविज्ञानविसे जाहा सिस्सविसे थार्यं मायाथार्यं वाकवेपाय ज्ञानेपाय दशनेकरोपाय चारिषेकरोपाय । सेवि
 ते पित्तावरिया २ पञ्चद्व्योस तिदिहा प तं । विवे सेपावनीस भेक्कक्षा तजहसे—राजगिरिमयद्वपा येमतत्तातामसिस्सियगा
 य पञ्चसपरवदिग वाचारिस्सिपरकासीया । राजघट्टो नमरो मगधदय चम्पानगरो पण्णदय तिम तामसिस्सानगरो वमदेय कञ्जपुरा कसिगदेय वा

भूतकाकाशुतादिमात्रापापरपुरस्सर भवति न शरीरपीठारम्भपुरस्सर मिति, तद्विष मुक्ता यन्मरुदीपगाः सुस्मति शक्यमभूमिकप्रतिपादनाय
 माह-सकित मित्यादि न अथ न न अकमभूमिकाः ? धूरिराह-अकमभूमिकाः किशुद्विधाः प्रकृता-तद्विषयिष्यत्वक्षेत्रप्रदात्-तथा बाह-तत्तद्वा
 पंचविहसकतपर्विहत्यादि ॥ पण्डितैर्मन्त्रैः पण्डितैर्मन्त्रैः पण्डितैर्मन्त्रैः पण्डितैर्मन्त्रैः पण्डितैर्मन्त्रैः पण्डितैर्मन्त्रैः पण्डितैर्मन्त्रैः पण्डितैर्मन्त्रैः पण्डितैर्मन्त्रैः
 माना विद्यगद्विधा प्रवृत्ति पया पण्डाना निष्कारकुलमन्त्राणां तत् पण्डसु हेमवतपु मनुया गव्यतममावहारीरोक्ष्याः पत्योपमायुयो वस्वयंन
 नारावसहनिनः समचतुरस्त्रसत्त्वानां यत्तु पण्डपण्डकवकका यत्तुर्थातिकमन्त्रोक्षिणः एकोनाशीतिदिनाम्यपत्यपासका उक्तव-गाव्यमुक्ता पस्मिन् व
 मातको वस्वदिसहस्रपयका । इतवएरकवष अहनिहारा मिहकवासी ॥ १ ॥ वतसहीपिठकरका यमबुयाव तसि माहारी । जतस्ववतस्वस्य
 गुणसिहमिषवसपासकया ॥ २ ॥ पण्डसुह्रिर्वर्षेयु पण्डसुरम्यकपुटिपत्योपमायुया द्विगव्यतममावहारीरोक्ष्या वस्वयंनमारावसहनिनाः समचतुर
 स्त्रसत्त्वानाः पण्डमन्त्रातिकमाहारपादिको ऽष्टाविंशत्यधिकशतशुक्लपण्डकरका यत्तुःपण्डिदमास्य पत्यपासका, बाह व-हरिवासरम्यएसु पाठ्य
 मान वरीरनुस्वहा । पमिठवनादि दौक्तिय दौक्तियकोशुस्सया जयिया ॥ १ ॥ वतस्वय माहारी वतसहिदिवायि पासका तसि । पिठकरका

रोमग जमरु विहाय थासीय एग्रमादी ॥ सेतमिलस्कू ॥ से कित स्यायिरिया ? स्यायिरिया दुविहा पसुत्ता,
 तजहा इहपित्तारिया य स्यागहिपत्तारिया य । से कित इहपित्तारिया ? २ तजहा पसुत्ता, तजहा-

ना रामना मोचना रामना मरुना मरुजना विहातना रका देयायायो रवतर पाठिहर् । सेत मिलस्कू । रसेचदग बहिये । सेवितं पायरिया दु
 विहा पसुत्ता त । हिये पायदय कागलाप्रकारे कागलाप्रकारे कागला प्रकृता तेकहेये-एकठपमायारिया यविहृठपमायारिया । कदिवल पायंमनुष्य कदिविना
 पायविना मरु । वनित एकठपत्तारिया र कदिविहा पसुत्ता त । हिय कदिवित पायमन्त्र कागलाप्रकारे कागला ते कहेये-परिवता यज्ययो यज्यदेवा
 वासदेवा वायरा विद्याहरा । यज्यव यज्यवत यज्यवत वासदेव वायरा विद्याहर यज्यव । सेत एकठपत्तारिया । एतसेमदे कदिवल कदा पाय ।

१६ परबपु अप्यापुरो १७ दद्यात्तु सृष्टिभावतो १८ चेर्विपु क्षौद्रिकावतो १९ धीतमयं सिग्गुपु २० सौवीरेपु मयुरा २१ सूरसेनेपु पावा २२
 २३ मासपुरिवहा २४ पुनासपु श्रावको २५ साहासु कोटीवप २६ द्युतम्बिका भगरी कलयजमपदस्यावे यतायद सुपद्विद्युतिजमपदासाप कप
 २७ प्रविश कुल इत्याह-अत्युप्यतिइत्यादि ॥ यस्मा दय एतपु अदपमृविशतिसहस्रपु अमपवपु उत्यति जिमामां तीथेकराका यस्तवमिमसा रामाका
 सदयानां कमानां वासुदेवानां तत पाय एतं न लज्जायोग्यवस्थिता दयिता, यत्र तीथेकरादीना मुत्पत्ति साहाय शोधमनायमिति, उक्ताः
 यायाः सम्मतिजात्यायप्रतिपादनाय नाह सुकितमित्यादि सुगम ॥ नवर यद्यपि शारात्तरस्य नेकजातय उपवस्यन्ते तथापि कोढे एता एव अत्य
 कसिन्वेदइयवङ्गदिरितपुष्पकूपया ॥ अज्जातयो अयमोया जातय प्रविशु सात यतानि सातिनि रुपपता जात्याया न शोधममितिनिः ॥ लज्जागा
 त्यादि ० नुकाकाः नूच्यालीविनः तलुयायाः कुविन्वाः पटुकारः ॥ पटुलकुविन्वाः दयका हुतिका वरुहाः विन्विन्वा लघुिका कटादिकादः ॥ कटपाठ

लागय पुरश्चक्रुसोरियक्रुसहा य । कपिलपचाला अहितज्ञाजगलाचित्र ॥ २ ॥ दारवतीयसुरठा मिहिलनि
 देहाययच्छकोसथी । नदिपुरसन्निहा नक्षिपुगमेवमलया य ॥ ३ ॥ यइरक्रुत्रक्रुत्रगा अच्छातहमत्तियात्र
 इदसणा । सोत्तियमइयाचदी वीहनयसिधुसोथीरा ॥ ४ ॥ मञ्जरायसूरसेणा पात्रान्नीयमासपुरिवहा ।
 सात्रत्यीयक्रुलागा धोनीथरिसन्नलाठाय ॥ ५ ॥ संयवियावियनगरी कयइश्चश्चश्चरियजगिय । एत्युप्य

दराभवरो भूभनदेग पाशानमरो भूभनग मासपर भाभतीनगरो कनाकदश काटिभनगरी छाटदेश । सयधियाविकयरो कोरपदवहापयावये इ
 नमिजिबाप यकोनरामकवहाप । स्वताम्बिकानगरो विमाता का पददय काक पददवे पाय इका देयोतरात्यति जिन यको यशदेव अयः । सेन
 नापरिया । तम ट चवपावदग । सन्निह आतिपायपरिया २ ला अया प त । इव जातिपाय कवहे—ते जातिपाय अत्रकारे अज्ञाः तन्वहे ॥ य
 ॥ १७ ॥ इदा विदरापदनाय वरिय अपवाप ॥ अया ॥ अत्राया । अमन न कलिंदागाम विदेवनामे चदगाईयनाय दारमनाम यम्युपनामे ०

सुमानसोद्दिष्टाः प्रपन्ना साध्या-आर्षा सुख्या य सग्राह्य ऐषधर्मज्यो याताः प्राप्ता उपादेयधर्मरित्याया पृषोदरादय इति रूपनिष्पत्ति-
सुख्या यम्यक्तनापासमाचारा सुख्यव्यवसाया वाचि इति वचमात प्रापायदृश आपलकय तम शिष्टा सुमत सुकलव्यवहारा सुख्या इति प्रति
पत्तय तथा इत्यव्यवस्थात प्रथमतो सुख्यव्यवस्थातामाह-सुखितमित्यादि ॥ अथ क त सुख्या मिलक्यु ? इति निर्देशः प्राकृतत्वा दापत्वा सु
मूरिराह-सुख्या आनकविषाः प्रपन्नाः तथा नकविषत्वं शाक्यवर्गविभातक्षरयवरागदवक्ष्यजदात-तथाप्याह तमहा सगत्यादि शकदक्षिनिवाशिनाः
शुकाः यवनदयनिकासिनोयवना एव सर्वेऽथ महर मसी नानादृष्टालोकता विज्ञायाः । आयप्रतिपादभायमाह-सुखितमित्यादि ॥ सुयम महर रायगि
इत्यादि ॥ राजपह महर मगपाजनपदः एव स्वत्राय्यहरसुस्कारविषयः जावाचस्त्वय ममपुञ्जपदपु राकयह महर १ अगपुषपा २ अंगपुता
मलिती ३ कलिययकाचनपुदं ४ काशीयु वाकारसी ५ कौससासु साकत ६ कुसुप गजपुर ७ नुसावतपु सीरिक् ८ पम्बासपु काम्पित्य ९ लङ्गलपु
चद्विष्यता १० सुरात्रपु द्वारावती ११ विदेहपु मिथिला १२ वत्सपु कौशाब्बा १३ शारिकल्यपु नन्दिपुर १४ मलयपु नन्दिपुर १५ वत्सपु वेराट

णागारिया दंसगारिया धरित्तारिया । से कित खेत्तारिया ? २ धृष्टवृक्षीसतिथिहा पक्ष्मा , तजहा राय
गिहमगाहचपा श्रुगामहतामछित्तियगा य । कचगपुरकछिगा वाणारसि खेत्र कासीय ॥ १ ॥ साण्यकोस

राक्षसोनवरो निवै कामो । साण्यकासकाभाय पुरवखरसारियकुसहाव कापिण्यकासे चद्विष्यताकमकासेव । साक्षितनगर कोयखेदं गजपर खर छोटा
नगर काम कापिण्यनगर पदाकदय चद्विष्यतागगरो पादका अङ्गसदय निये । टारत्रयसुरहा मिहिकविदेहायवल्कोसवी नटीपरसुखिगा भदिकपुरसे
वमकवास । शारिकागवरो मारठदेय मिहिकानगरो विदेहदेय कासपो नगरो यच्छेदं नन्दिपुर साण्डिकदेय भदिकपुर निये मलकदय । वरराडि प्य
वरवा चण्यातडमितियाविहमण्डा सातिसमरबादेवो बीतभवसिखुसोबीरा । वेराटदय मरकनगर वरकदय वरकापुरो यलिकावतीनगरो ययावेदं
सातिकावतीनगरा विदेहदय बीतमयनगर सिधुदेय धाबीरदय । मङ्गावमूरसेवा पाषाभीषमाधपुरदहा सायमीयकुषाका काडिबरिवाभाटाया ।

प्राप्तमिति तावार्थः सुप्तयोयसुप्तोयमिति ॥ अत्रापि रुचिबलः प्रत्येकम त्रिष्वप्यन्ते मूत्रमा आराद्रुपाद्रुप्रविष्टं अङ्गपात्रं आयस्यकदशादेका
 तिकादि तत्र रुचि यस्य च तथा मूत्रमा आरादिक मङ्गप्रविष्टं अङ्गपात्राया छावस्यकादिक मन्त्रिणीयमानो यः सम्यक् सवगाइत प्रसुक्त २ तत्राप्य
 यस्याय च प्रवर्तति स मूत्ररुचि रिति भावाच्च योज्य मिव यीज प दक मप्यनकायप्रधापोत्पादक यच्च स्तन रुचि यस्य स यीजरुचि अमयो स पद
 योः समाहारो दृग्दः तत्र मपुमकभिर्दृष्टः इति संमुख्य अङ्गिमसंखित्यारुहति ॥ अत्रापि रुचिबलस्य प्रत्यक्ष मन्त्रिसम्बन्धो विगमरुचिविलाररुचि
 य तथा पिणसो विच्छिष्टे परिष्ठाते तत्ररुचि यस्या या वृत्तिमरुचि यि स्तारो व्यासः सकलहावशागस्त्य नयेः पक्षात्काचन मित्तिप्राप्तः स नो, वपुदि
 ता रुचियस्य स विलाररुचिः किरियासुययपम्भरुहति रुचिबलस्य ऽत्रापि प्रत्यक्षसम्बन्धान् क्रियारुचिः सहेपकचि दुमरुचि रिति द्रष्टव्य-तत्र

मुह्ययेया जीया न्नरुवेयालिया कोलालिया जेयात्रये तहप्यगारा । सेह कम्मारिया ॥ से कित
 सिप्पारिया ? २ अण्णेगविहा पयसा, तज्जहा-तुणागा ततुयाया पहगारा देयन्ता यत्तन्ता कठपाउयारा
 मुजपाउयारा लहारा यन्नारा पझारा पोत्यारा लम्पारा चित्तारा सखारा दत्तारा जन्नारा जिप्पगारा सेह
 रा कोळिगारा जेयायन्ते तहप्यगारा ॥ सत्त सिप्पारिया ॥ से कित ज्ञासरिया २ जंग अष्टमगहाए ज्ञा

आसादिक नरवाहनिष्ठा । जयाश्चेन्नरुच्यगारा । ज यनरा तथाप्रकारे । सत्त कम्पारिया । ते कर्मणि कक्षा । सक्कि सिप्पायारिया २ पवेगनिष्ठा प
 त । द्विदे सिप्पाय विज्जामनापाय तत्तमा पिच यनकभदे कक्षा ते कहेजे-तुणागा ततुयाया पटागारा दवन्ता वरहावा कहुयाद्वरा मुजपाउयारा
 जन्नारा यज्ज रा पुक्क २ । सेयारा वित्तारा सेयारा भट्टारा जन्नगारा । सन्नारा आदिगारा । तुयारा वक्कर पहाकारा देवक कार दिगाविजे
 प सिप्पारा विनकारा यपारा इकारा । जयाश्चेन्नरुच्यगारा सत्त सिप्पायारिया । जे यनरा पञ्चमा तथाप्रकारजा ते शिप्पाय कक्षा । सक्कि भासाय
 रिया २ पवेगनिष्ठा प त । द्विच भापायनाभद कहेजे-तहमा यनेकभद खोचिया । जज्ज पटमागहाए भासति । जे पटमागधीभापा बासे । जत्त

पारा ॥ कासुगदुकाकारा यद्य ॥ मुद्रपासयारा छत्तारा ॥ छत्राकारा मय शायशयपिपदानि प्रायभीयानि यन्नीजयशयिष्यादित्यादि ॥ प्राप्ती यवनाना
 त्यादयो लिपिजरा स्तु सम्प्रदाया ववसपा ॥ सखा प्रापायोः सम्प्रतिष्ठानार्थानाह-संक्रितमित्यादि मुग्ग ॥ अथ क त दशमाया सूरिराह-दशमाया
 द्विविधा मन्त्रा साद्या-धरागदशमार्यो वीतरागदशमार्यो य तत्रसराग नकपाय समुदाग तमार्योः सरागदशमार्यो वीतराग मृपक्षालकपायदीयक
 पाय या ॥ इच्छनं तनाया वीतरागदशमार्यो तत्र सरागदशनायप्रतिपादनाय माह-संक्रितमित्यादि ॥ अथ क ते सरागदशमार्यो सूरिराह-
 सरागदशमाया दशमपायः मन्त्रा साद्या-मिस्रगुणवित्यादि ॥ अथ क विष्णुवदः प्रत्यक्षम मिस्रवप्यते ततो मिस्रगदवि रिति इष्टव्य तत्र निम
 नं स्त्रमाय स्तेन कवि जिनप्रवीतत्वाप्रिलापकपाय यस्य स मिस्रगदविः उपदक्षो गृवोदिता वस्तुतत्त्वकथन तमदवि कृष्णरूपा यस्य स उपन
 म्प्रकविः चाद्या सवप्रवचनात्मिका तस्या काचरो अन्तरायो यस्य स साष्टाकविः विमार्ष्टेव मतस्य न शय युक्तिजातमिति यो निमन्वत स चा

सिजिणाग चक्कीगरामकरहाण ॥ ६ ॥ संतस्वेप्पारिया ॥ से कित जाइअयारिया ? २ ठव्विहा पणत्ता ,
 सजहा-अथठा-यकलिदा विदेहावेदगाइय । हरियाचुवृणाचेव तण्याइअजाठ ॥ ७ ॥ सेह जाइअरि
 याय ॥ स कित कुलारिया ? २ ठव्विहा पणत्ता , सजहा-उग्गा इक्कागा नात्ता कोरहा ।
 चत्त कुलारिया ॥ से कित कम्मारिया ? २ अणगविहा पणत्ता , तजहा-दोस्सिया सुस्सिया कप्पासिया

अजाति याव कटिह । सप्तजाति यावरिहा । ए जाति याव कट्टा । संक्रित कपपायारिया २ छविहा प त । द्विने कपपाय अष्टेने ते कपपाय छ
 प्रवारे कट्टा ते कट्टे-वय्याभामारयथा इत्यागातायावारणा । अग्नकन भागकठ राजकठ इत्याकथन जातिवन कोरकठ ६ । सप्तकठपायारिया
 ७ अमठ पायअथ । संक्रित कपपायारिया २ पणगविहा प त । इति द्विने कर्मपाय अष्टत त पनेकप्रकारे कट्टा तत्रकट्ट-वाधिया सत्तिया कथा
 पादा मुत्तिवेयासिया भेदेयासिया कासासिया मरणासिया । वाधिया जातिविषय सौतिना कपपासिया मुत्तिवेतासिया भुण्डसुडा जातिविषय

पठितापगतमम मन्त्राभासः प्रयत्नम साक्ष्यैव न धृष्ट एवकारार्थः, कदासारीयते कथमिति त्याह-एव मेतत् प्रवचनोक्त गद्यकाल ना व्यथेति एव भाष्यः
 क्वचि नाम सूत्रकचिमाह-बोसुत मित्यादि ॥ यः धृष्ट मङ्गप्रविष्ट मङ्गबाह्य वा अर्थीयान क्षेप्त मृतनाङ्गप्रविष्टना मृगबाह्येन वा सम्यग्वाप्तं वगाहते
 स मूयकचि रिति ज्ञातव्यः यीश्वरचि माह-एगपयुषमाह इत्यादि ॥ एकेन पदम प्रकृमात् लीयादिना अनेकानि पदानि प्राकृतस्थान विमलित्व्य
 त्पयाद् नेकपु बोवादिपु पदपु यः सम्यक्ता मिति वमचर्मैवो रजदीपचारात् सम्यक्त्वान् वात्सा प्रसरति तु धृष्टो धधारकाश्च प्रसरत्येव कथमिति

सेत नासारिया ॥ से कित नाणारिया ? २ पद्यविहा पयुषा, तजहा-स्युनिणिथीहियनाणारिया सुयना
 णारिया सुहिनाणारिया मणपञ्जवनारिया केवलनाणारिया ॥ सेत नाणारिया ॥ से कित दंसणारिया ? २
 दुयिहा पयुषा, तजहा-सरागदसणारिया य वीयरगदसणा ० । से कित सरागदसणारिया य ? २ दस
 यिहा पयुषा, तजहा निस्सग्गुवदेसकहं स्युणाकहसुसुसुथीयकहवेव । स्युनिगमथित्यारुहं किरियाससंवेव

सारिका भागवतो पत्तरिचका पत्तरिचिका देवकोटा निनिक्का चकचिपि गवितकिपि मन्ववैचिपि चादयचिपि मन्वरोचिपि दोमकोचिपि पुचि
 ब्दो १८ । सेत मासावरिका । त एतत्ते मापार्यो । सेकितं मापार्यरिका २ पंचविहा प त । द्विते ज्ञानाय ककहं ते ज्ञानाव पचप्रकारे कथा ते कहे
 से । पाभिचिवाडिवनावावरिया सुयनावावरिका आडियनावावरिया मयपल्लवनावावरिया केवलनावावरिका । मतिप्रानावा दृतप्रानावा मय
 धिप्रानावा मयपयवप्रानावा ककप्रानावा । सेत नावावरिया । एतत्ते ज्ञानाय कथा । सेकितं दंसवावरिया २ दुविहा प त । द्विते सुयनाय ते व
 मनायनामिं हायप्रकारे कहे । सरागदसवावरिका वायरागदसवावरिया । सेकित सरागदसवावरिया २ दसविहा
 प त ० । एतत्ते सरागदसनायनामद तेवना १ प्रकार ककहं-निसुम्भपसहर पासावईसतकोयकावेव चमममविर्त्तारहर किरियाससुवधय्यव
 र १ । निसर्गवदि उपपद्यदवि पासावदि मयवदि दोलकचि पमिममचवि यासाविचारकचि किय संपेपचवि धमचवि । भूपत्येवाडियया कोषाको

क्रिया सम्पद् संप्रमाणानं तत्र कश्चि यस्य स क्रियाकृति संशयः तत्र कश्चि यस्य विस्तराचार्यपरिज्ञाना तस्योपसर्गिधर्मं अस्ति काये धर्मं
युतपमादौ ॥ कश्चि यस्य स धर्मकृति रिति याथा सङ्गुपार्थं तु सूत्रकथेय स्वत आह मूल्यकृत् वात । प्रावप्रधानो निर्देश सातो य मयः-द्रुताये
स्वम समुद्रता यमो पदार्थो इत्यर्थं रूपक यस्या चिन्ता परिज्ञाता जीवा जीवा पुन्यपाप भाग्यसम्बर य स्रष्टा हन्यादय य कथ मधिगता इत्याह
सहसमुद्रया इति ॥ भायेत्वा द्विगन्धिसापाससहस्रसम्भत्यासङ्गालना या सङ्गता मतिः सा सहस्रमालि क्षया कि मुक्त भवति परोपदेशनिर्देशया
जातिस्वरूपप्रतिज्ञादिरूपया मस्या न क्वचित मधिगता किन्तु तान् जीवादीन् पदार्थान् वक्ष्यते पुरोचयति-च तत्पक्षपतया आत्मसा त्वरिका ।
मयति इति प्राक् एव निवर्गो निवर्गकृति विषय इति श्रुय यमु मेया यस्योत्तर मभिधिस्तु राह-को विविविक्त जावे इत्यादि ॥ यो विविव
ष्टान् प्रावन् इव्यस्रप्रक्षालज्वावत्ततो नामादिभवतो वा चतुर्विधान स्वय मवो पदशानिरपक्ष अवृथाति क्षमी क्षम्य अवृथाति वात आह-एव मय
यत जीवादि यथा जिनै ईष्ट ना ल्ययति च समुच्चय एव निवर्गकृति रिति ज्ञातव्य उपपदकृति माह-एव यव इत्यादि ॥ एतानय जीवादीन्
मावान् यः परव स्रष्टस्तेन जिनत वा उपदिष्टान् अवृथाति एव उपपदकृति प्रातव्याः, आद्याकृति माह-को इष्ट मयाकृतो इत्यादि ॥ यो वृत्त यि

साए चासति, जत्यत्रिय ण धनीलिवी पवसइ वनीएण लिवीए सुठारसविहे लेखविहाणे पणत्ते, तजहा धनीजवणाणिया दासापुरिखा स्वरुही पुस्करसारिया जोगवइया पहराइया सुतस्करिया सुस्करपुठिया घणइया निरइइया सुकलिवी गणियलिवी गवहुलिवी सुयासलिवी माहेसरो दोमिली पोलिवी ॥१८॥

[illegible]

मयतो हृष्ट मकाराङ्गानि प्रवीक्ष्य मित्यत्र जाता येनयत्नं-सती यमयः प्रवीक्ष्यति उत्तराध्ययमादीनि वृष्टियादयः क्षब्बावुपाङ्गानि च समान-
 त्वापिगमकानिः विस्तारकचि माङ्-दृष्टाश्च त्यादि ॥ द्रव्याणां धर्मोस्तिक्वापादानाः मङ्गपाद्या मयि सर्वे माणाः पर्याया पर्यायोगं सुयप्रमाणाः प्रत्य-
 णादिनिः सर्वेषु नययिष्यन्ति नैगमादिनयप्रकारे उपसध्या इत्य विस्तारकचि रिति ज्ञातव्याः ॥ सर्वेषुपुण्योपपञ्चावममन तस्याः रुच रतिवि-
 मसरूपतया प्रावात् ॥ क्रियाकचिमाङ्-दृष्टवत्यादि ॥ दर्शना च ज्ञान च चारिष्य च दृष्टानञ्जानचारित्रं समाधारो ह्यस्तस्मिन् तथा तपसि यिन-
 प च तथा सुवासु समितितु इयोस्मित्यादिषु एवांसु च गुप्तिषु मनोगुप्तिप्रवृत्तिषु या क्रियाप्राजा सुचिः कि मुक्त जयति यस्य भावसादञ्जनाद्या-
 चारमुष्टाने सचि रस्ति सद्यस्तु क्रियाकचिमाङ्-दृष्टमिगयित्यादना ॥ निपहीता मुस्विता वृष्टि र्येन सो ऽनन्निगहीतकृदृष्टि रवि

दञ्जानसञ्जनाया सञ्चपमानाह्विजस्सउत्रलक्षा सञ्चाहेगयविहीहि वित्यारुरुदृष्टिनायवो ॥ १ ॥ दसगनाणच
 रिते तयचिगएसञ्चसमिङ्गुतीसु जोकिरियाजावुरुदसो खलुकिरियावुरुदसो ॥ १० ॥ स्रगनिगहिहियकुविही

यदाहिरववा नामनररतिनायका ॥ अ मू मिश्राया मचताका नुतने पगवाही सम्बन्धनोने भवे प्यप्रविह पाचारागादि पगवाञ्ज नतराध्ययना-
 दि तत्रने नूय रचि कचिमे ॥ गगपयदेनार पद्याः आपयययसमयान सद्यशतित्तविदू साधोयकृतनमायव्या ० ॥ एव पदेकरो यमक पङ्कनाभाच समुक्तमे-
 वमर विस्तार एव जोवाटिक पङ्को सम्बन्धादि पनेकपादेकम पांवाङ्कपर तक्तविश्रुवा विस्तारपने तक्त जोखुचि कचिय ॥ साकारपभिगमरुद मय-
 नाचञ्चपङ्कपादिङ्क इकारमपयार पाङ्कगविहृषायाव ८ ॥ त्रिने नुतज्ञानपदे रो दोषाः पञ्च ज्ञेयपङ्करो ११ प्येगना प्रकाय उत्तराध्ययनादिक दृष्टि-
 बाद ज्योपादि तङ्कनापय समस्त अ ते पभिगमरचि कचिय ॥ दम्बाचसदभावा मयपमानाङ्कितकृत्तवा सञ्चाह नयप्रिहोचि वित्यारुः तिनयाय १ ८
 दिव विस्ताररचि कचिमे - द्रव्यादि समास्तकायादि ६ बीजा जाकता पनेक सञ् भावपचर्य यज्ञायाप्यप्रमाच प्रत्यञ्च सर्वप्रकार उपपन्न्य पान्वाञ्जे ५५
 नैगमादिङ्कनयभाविषकरो समभय ज्ञे तविस्तारचि कचिय ॥ दसपञ्चाचचरिते तयचिगएसञ्चसमिङ्गुतीसु काकिरियाभावरः ७/७८८किरियावरनामा १ ॥

त्याह उदक इव तैलविन्दुः किमुक्तं प्रयसि यथा सर्वकैकेक्षणतो ऽपि तैलविन्दुः समस्त मुदक माष्णामति तथैकैकेक्षोत्पद्यरुचि रप्यात्मा सप्याति
पचयोपशमनाया दशयेषु तत्पेषु कथिमाप् भवति स एवाविधो वीजवचि रिति ज्ञातव्यः । अचिगमरुचि माह-सो होह इत्यादि ॥ यस्य द्रुतज्ञान

म्मरुद् ॥१॥ नूयत्येणाहधिगया जीवाजीवायपुष्पापावच । सहस्समुदयासत्रस वरोयवेयइएसगिस्सग्गो २ ॥
जोजिणविठेत्तावे चउसिहेसद्वहासयमेव । एमेवणसुहसिय णिसगसइसिणाइसो ॥ ३ ॥ एएखेव उन्नावे,
उयविठेजोपरेणसद्वहह । लउमत्येणजिणेणय उवएससुहसिणायसो ॥ ४ ॥ जोहेउमयाणतो स्युणाएरीयएपव
यणतु । एमेवणसुहसिय एसोस्य्यासारुहनामा ॥ ५ ॥ जीसुसमहिज्जतो सुएणउगाहउसम्मत्त । स्युणेणया
द्विरेणय सोसुत्तरुइसिनायसो ॥ ६ ॥ एगपएणगाइ पदाइजीपसईउसम्मत्त उवहसुतिस्सिथिदू सोधीयरुइ
तिनायसो ॥ ७ ॥ सोहोइस्यजिगमरुई सुयनाअजस्स स्युत्यत्तदिठ एकारसस्यगाइ पदसुगगविठिवाठय ॥८॥

वदपयपावच सहस्समरुपासत्रस वरवहाएपावचिषव्या । २ । भूतासपवारीरा मरुकरिणे सठोके बुद्धि जे पवार्धोरा खांसा औवाजोव पुष्पा पाप सहस्र
मति पादर सत्वर तेइने निरुण कश्चि । काविकदिठुभावे वरविकिसदहासत्रमेव एमेवणसदहासत्र निमस्सकटिवावव्या । ३ । जे विम दोठाके मा
न द्रममोकेरी ते सइहे एएवरी माने पातेनी निमूणपे सइहे ते निमूणकडिय तव निरुण सभासठेनरुचि विमवरोतत्ताभिजापकूपीवरयसमि ।
वएवकभावे ववहउजापरवसइहह लउमत्येवजिणेवव उवउसवटिवावव्या । ४ । द्विये उपदेयरुचि कइहे, ते जोव यजोवादिनामाव जे उवदिठ प
रने कइववे मचा सब कसस्येकव्या ते तजामायलो कव्याजो परमाण ते उपदेयरुचि कइहे, द्विये यजानवचिषाभिए कइहे — काहेकमयावंता यवाए
राएपवपवर्ण एमेवणसद्वहति एवसापचारिनामाए ५ । जे जेतु सितात्ता कव्या पववते ते पवववितावव्या प्रवचनजो पात्रातेरुचि मजम् य ते मुम
वयुनीपरे वल्लमसाय एल विवोवमदि कव्या ते भवववा पुवे जहो एवमेभावे प्रवते ते पात्रापुचि कश्चिये । जोसुसमविषवटी मुएववरगावसइसवपत्तं पगे

मपतो इष्ट मकाराङ्गानि प्रवीक्ष्य नित्यत्र आता येनवचन-ततो यमप प्रवीणानि उत्तराध्ययनादीनि कृष्टिवाद् य स्रष्ट्यावुपाङ्गानि च स मव
 त्पचिगमकचिः विस्तारस्यैव माह-उद्गाह स्यादि ॥ द्रव्याणां चर्मास्तिकायादामा मक्षयाणा मयि सर्वे भावाः पर्याया यथायोगं सब्रमार्थैः प्रत्य
 शादिनिः सर्वेय मययिष्यति नैगमादिनयप्रकारैः उपलब्धा इव विस्तारस्यैव रिंति स्थातव्यः ॥ सर्ववस्तुपर्यायप्रपञ्चावगमन तस्याः रुच रतिवि
 मतरूपतया प्राप्तात् ॥ क्षियारुचिमाह-दस्यत्यादि च-दवानं च छान च चारिष च दञ्जनपानचारियं समाहारी इष्ट स्तस्मिन् तथा तपसि विन
 य च तथा सुवासु समितिषु इवांसमिस्थादिषु सर्वोषु च गुप्तिषु मनोगुप्तिप्रसूतिषु या क्षियाप्राप्ता रुचिः किं मुक्त प्रवर्ति यस्य प्रावतादञ्जनाद्या
 चारानुष्ठाने रुचि रक्षि सयम् क्षियारुचिनाम, सङ्कपुरुचिमाह-रुचिमिगयित्वादिना ॥ मिगहीता कुरिषता इप्ति र्मेन सो अजनिगहीतकृदृष्टि रवि

दद्याणसर्वज्ञावा सर्वपमाणंहिजस्सउग्ररुहा सर्वाहिंणयान्हीहि वित्यारुरुहसिनायव्वो ॥ ९ ॥ दसगनागच
 रिस्ते तयचिणएसव्वसमिडुगुतीसु जोकिरियान्नायुरुहसो खलुकिरियारुहनामा ॥ १० ॥ व्युगजिगहियकुदिंठी

नवादिरेववा मानतररतिनामका ॥ अ मूच सिङ्गाना मचतामका युतने पगवाडो सम्बन्धकरोने मये सयप्रविह पाचारांगादि स्रष्ट्यावुपाङ्गानि च स मव
 दि तङ्गने मूच इति कश्चित् ॥ पगपदकयाह पद्या आपपररुचमम्यात उदकरभतिक्षिपू सावोवकमलनामका ० ॥ एक पर्येकरो चनच पञ्चभाभाद स्रष्ट्यामे
 पमरे विस्तरे एक जोषादिक पदार्थे सम्बन्धति चनकपात्रे किम पांचाउपर तलविगुडा विस्तारयामे तङ्गने वीजदुषि कश्चित् ॥ साङ्गादचभिगमरह सय
 नाचमप इवादिह कारमपगाह पाचमरतिगुहापाव ८ ॥ त्रिने युतज्ञानपर्येकरो वीषा पर्येकने पयकरो ११ पंगना प्रकाच उत्तराध्ययनादिक दृष्टि
 वाद् अपीनाति तङ्गनापत्र समस्त्य इत पभिगमरति कश्चित् ॥ द्रव्यावसगवभावा मभपमानकिणसुसुहा स्रष्ट्याह नयविद्वोष्टि विस्ताररतिनामका १८
 त्रिह विस्ताररति ० इव-द्रव्यादि धमा स्तुभावादि १ वीजा जाकता चनेक सर्व भावपञ्चात्र यथासाध्यप्रमाण प्रत्यच सर्वप्रकार उपसृज्य पास्यान् ६३
 नेगनादिक तस्योविधकरो समस्त्य इत विस्ताररति कश्चित् ॥ दसवचनचरिते तत्रविषयस्यसमिडुगुतोच कार्किरिनाभाह ११ पाचसुविरियाह २ नामा १ ॥

आरं प्रयत्नमिति श्रुतेः ॥ अपि सादिपतीतयु प्रयत्नयु चानिगुणीनो न विद्यते चाजिमुल्लेन तपादयसया गृहीतु गृह्यत मस्यत्यगति
 गृहीत युव मनत्रिगुणीतुद्विदित्यमन परदशानामपरिग्रह प्रसिपिदु नन परदशमपरिग्रहमाय भवि निपिटु मिति विग्रह स इत्यनून
 मणपदयि रिति शान्त्य चमरुचिमाह ॥ लोचनिकायत्यादि ॥ यः सत्तु लोको स्तिकायानां धर्मास्तिकापादीना धम गत्युपपन्नस्त्यादित्यना
 य मुसधम चारियपम च जिज्ञाजिहित भवभाति सपमरुचि श्रोतव्यः तदव मिसर्गाद्युपाधिजन दृश्या रुचिरूप दर्शनमुक्त मम्म ते ये भिद्वे
 रिद मूल्य मसीति निदीयते तानि सिद्धांत्यु पक्षयकाह-परमत्वसुखो इत्यादि ॥ परमा द्य तात्विका द्य त ऽया द्य लोकादय स्ते परमार्थो
 स्तय सस्तय परिषय तात्पर्येण बहुमानपुरस्सर लोकाविपदायो वगमायाप्यास इति यावत् वा शब्द समर्थे सुदु सम्पग्रीत्वा कृष्टा परमाधो
 मीयादयो ये स्ते सुदुष्टिपरमार्थो स्तयो सुखन पर्युपास्तिः सुदुष्टिपरमाथैखवन खात्वा प्राकृतत्वा द्वा शब्दा सुखसमुच्चय यथाशक्ति त द्वेयावत्प
 मयति य अपि समुच्चय तथा ॥ वाचकबुद्धवर्तित ॥ दर्शनेष्वप्य प्रत्यक्ष मप्रिसम्बध्यत व्यापन विनष्ट दर्शन यथान व्यापनसदृश्या इति ॥ स्वस्यस्त्वमदु
 क्रुतिवत् दर्शन यथात बुद्धयः साक्षादय क्षणा नधन व्यापकबुद्धौनवजनम् सञ्चाप लीत्वा प्राकृतत्वात् ॥ सम्मतसदृश्या इति ॥ स्वस्यस्त्वमदु

सखेवसुडसिद्धोडनायहो अविसारत्तपत्रयणं अगनिगहिनुयसंसु ॥ ११ ॥ जाष्टुलिकायकम् सुयधम्सखलु
 चरिसधम्सच सद्धनदजिगानिहिय सोधम्सकहसिनायहो ॥ १२ ॥ परमत्यसधत्रोचा सुदिठपरमत्यसवगावा

इमं ज्ञान चरित तप विनष्ट सख समिति गुप्ति च लङ्गमो विज्ञानविदे भावकन ते भावदुषि लङ्गिते निवे विज्ञाद्विषि लङ्गिते—य पमिरगहोयकादु
 सपुदुगतिज्ञानावाया पविमारपापबदच अचमिरगहिपायसंस ११ । यमिपुष्टोता लक्षतादृष्टा मगहो खेने साटीदृष्टि लोपिकादि प्रचोत प्रव
 दन ते संसपिब ते दृष्टन मत्तपद्वि लङ्गिते सस्येयमगह तत्रकविगम्य सविपुत्राव परिज्ञाना सस्यकवि अविमार प्रवचनविदे यप्रवच्य अपरतशन पर
 ज्ञानविदे त सपपद्वि लङ्गिते । सापमिकायधन्य सुयधमकसु वरिततधन्य चरददल्लिवाभिहित साधनसदृशितगायमा १२ । के कोन पमिकाव चर्मा

नं पते। परमापसंलवादिभिः सुख्यत मस्तीति यदुपगते इत्यर्थः यस्य च दशनस्या धारा अष्टौ ते सम्यक् परिपालनीयाः तदतिक्रमे दशनस्या
 उप्यतिष्ठममावात् यत स्तानुपदवापिनु माह-निस्सुखिय इत्यादि ॥ दशनं अङ्कितं दशशङ्का सयशङ्का च स्वर्गः निगत झङ्कित यस्मा दसौ नि
 झङ्कितो दशशङ्कयदुगदित इति प्रायाचो, तत्र दशशङ्का समाने जीवित्वे कथं यको भव्या उपरस्य प्रथ्य इति सुवशङ्का प्राकृतनिमशत्या रसुक्त
 मयद् प्रवचन परिकल्पिते प्रविष्यतीति न शेषे दशशङ्का सुवशङ्का या युक्ता यत इह द्वितीया प्राजा सत द्याया-हनुग्रास्या अहतपाप्या जीवा रस्त
 त्याद्य सारसपक्षमाकसङ्गावात् अहेतुयाद्या अन्नव्यात्यादय अस्मदाद्यपक्षया सारसपक्षानूना मसमवात् प्रकृष्टानमोचरत्वा तदनुना मिति प्रा
 कृतो ऽपि च नियमः प्रवचनस्य द्वासाद्युपप्राय उत्पन्न-वाप्तली सूतमूर्धोकां वृक्षा धारित्रकाङ्क्षिणा ॥ अमयद्याय तत्त्वज्ञैः चिद्वान्तः प्राकृत
 रसुता ॥ १० ॥ अपि च प्राकृतो पि नियमः प्रवचनस्य दृष्टशङ्कितो ततः कथं मद्यान्तरपरिकल्पना शङ्का सुवचन सारवान्यस्य दृष्टशङ्कितो भव्य
 नासम्भवात् निमङ्कित इति जीव एवा इच्छासमप्रतिपक्षो दशमोचरका तत् प्राथम्यवियक्षायां दशमाचार उच्यत-यतेन दशमदशमिनीः कथयचि
 द्भद माह-एकान्तमदस्य दशानिम इय तत्त्वसा योगता मोक्षाभावप्रसङ्गं यव मुत्तरेषुपि त्रिपु पदपु प्रावनाकार्यो तथा नि काङ्क्षित इति कावचकाङ्क्षितं

यि । धायन्तकुदसगवज्जाणाय समतसद्दृहणा ॥ १३ ॥ निसकियनिक्कंखिय णिच्चित्तिगिच्छाअमूढदिठीय उववू
 हायिरीकरणे यच्छसपन्नावणंअथ ॥ १४ ॥ सेत सारागदसणारिया । स कित वीयारागदसणारिया ? २ २ दु

विवाहादिभ्य इत्येव पभाव नृपमने वैरम भयवन्तना अइम मोवाकरो यावे ते धनवपि कश्चिय, प निसग दयेभद वचिरुप नमनकक्षा, विवे विच
 चिय प अउपनाक त शिय लपोदक्षावे दशकाचो विगम्यराविदशानामि आभितानि इति । परमस्वमवनांश मृष्टिपरमस्वमवनांशानि वाक्यकदमवचन
 नायमवचनमदइका १३ । परमतस्सनापय आवादिक् तेपरमाद्य तइना सस्यवन पदचोयकाच ककारोति परमाद्य औशादिक्कठो वाठा खेइना सेवता
 मृष्टि परमाद्यो सवनाकरे विमये र कुदमित सेयति जदयना त औन सस्वज्जो यइइका करवो, विव सस्वज्जना ऽ पतोपार कइवे-प्रवपनओ देय

निगतं कान्तिं यस्मा दसौ नि कासितो दृष्टः सबकाङ्कारहित इत्यर्थः, तत्र देवकाङ्का एषं दिग्धरादिदशम मन्त्रिकाङ्किते सयकाङ्का सर्वोक्त्ये व दशमानि शोभनानि इत्यथ धनुचित्तम इय च हिषा प्युक्ता सायदशमपु यदशमपु यदजीवनिक्तायपीक्षाया असत्प्रकृपकाया य प्राधात तथा यिचिचिचित्सा मतिविषयम फलप्रति सशय इति यावत् निगता र्वचिचिता यस्मा दसौ भायचिचित्सुः साध्य य जिनशासन कि तु प्रयत्नस्य सतो ममा स्मा रक्षस प्राविप्यति न या क्रियाया रूपीबलादिदु सप्रथया उप्य पलप्य रिति विवक्ष्यरहित न ह्य विवक्ष्य उपायउपयवस्तुप्रापको न जयसीति स जातमिदयो निविचिचित्स इतिभावः यतवताशान निःशङ्किता द्विष्टः यद्वा निविदुगुण्यो इति ॥ निविदुगुण्यः सायुल्लुगुण्यः रहित इत्यर्थः उदाहरण च विदुगुमुखाया सायकदुहिता तथा ॥ समूहविरोधति ॥ यासतपस्वितपोविद्यातिशयपदस्यै न मूढा स्थानाया वृत्तिता वृष्टिः सम्यग्द शनरूपा यस्या सा समूहवृष्टिः अत्रादाहरणं सुसंभाषिका सा ह्य वरुपरिप्रायकसङ्घी रूपलप्यापि न समोह गता सद्य गुविप्रधान आचार

यिहा पणसा, तजहा—उससतकसायथीयरागदसणारिया खीणकसायथीतरागदसणारियाय । से कित उग्रसतकसायथीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पणसा, तजहा पठमसमयउग्रसतकसायथीतरागदसणारि या अथपठमसमयउग्रसतकसायथीतरागदसणारिया, अहना चरिमसमयउग्रसतकसायथीयरागदसणारिया

यंवा सप्रथया काया दयकाया रचित । निष्कानिर्वाजकविषय विव्यतिगिष्ठासमूहनिद्रोय सवृष्टिरोकरचे बल्लारमावनेपङ्क १४ । साधु नो अगुकारहित प्रथमं कुशमनो मन्त्रिमावो माटो हटिकरवा विम सससायाविभागे अल्लवपरिवाजकने कक्षा सदर्श नपांमो कुविभासाये परि वय नकरवा पचनविदे विरताभाय काइमोमो पमसाकरवा ससे प्रमनो प्रभावनाकरवो । सप्तसरायदसकायपरिवा । ए सराम दयनायर् कविदे । सेवित योकरागदसकायपरिवा २ दुविहा य त । द्विष भोतरागदयनपर्याया सायभट कक्षाये ते कविजे — उग्रसतकसायथीयराग दसकावरिया । उपप्रावकपाय भोतराय इशनायम ५ । प्यावकसायवो सेवित उग्रसतकसायथीयरागदसकायपरिवा २ दुविहा य त ॥ अंगवकसाय

उक्तः सम्प्रतिनुष्ठमपान माह-उपयुदेत्यादि ४ उपपुङ्गव व स्थिरीकरण ॥ उपपुङ्गवस्थिरीकरणे तावो उपपुङ्गव नाम समानपानिकाकां सन्तुष्टप्रक्षंसनेन
 तदुत्तिररुच घमाद्विपीदतां तन्नैव स्थापनं, वाञ्छत्य च प्रमायमा च वाञ्छत्यप्रमायमे तत्र वाञ्छत्यसमाभयार्थिकाया प्रीत्या उपकारकरणं प्रमा
 यमा घमश्चयादिभि स्त्रीचमस्यापना अर्थ च मुक्तमपानो निर्देशो सुखगुणिनो कथञ्चि शुद्धस्यापनार्थे चाप्यथा यकासा अदे गुणनियतो युक्तिमोपि
 नियतः सूक्ष्मतावर्त्तिः एते ऽहो यक्षमाकारा का देव मुक्ताः सरायदक्षानमदा क्षदभियमाया भिद्विताः सरामवर्त्तनायमेवाः, सम्प्रति सीतरागद
 मावर्त्तिप्रदानाह-वेक्तिमित्यादि तुगमा यावन् स्रव्या चरितारिया पचयिषा ५० सं० सामाहयचरितारिया इत्यादि ४ नवर पञ्चमसमय क्षपड

य अचरिमसमयउथसतकसायथीतरागदसणारिया य । से कित खीणकसायथीतरागदसणारिया ? २ दु
विहा पणत्ता , तजहा ठउमल्यखीणकसायथीतरागदसणारिया केयलिखीणकसायथीतरागदसणारिया य ।
से कित ठउमल्यखीणकसायथीतरागदसणारिया ? २ दुयिहा पणत्ता , तजहा सययुधळउमल्यखीणकसाय
थीतरागदसणारिया पुधुधोहिथळउमल्यखीणकसायथीतरागदसणारिया । से कित सययुधळउमल्यखीणक

[illegible]

निगत आद्रुत पस्मा दसौ नि कासितो दक्षः सवकाहुररहित इत्यर्थः, तत्र वेदाकाहुः एषं दिग्बरादिदानं मन्त्रिकाङ्क्षिते सयकाहुः सर्वाङ्ग्ये य दक्षभानि क्षोभमानि इत्यव मन्त्रचित्तन इय च हिवा प्ययुक्ता प्रापदक्षनेषु पद्वीवनिकायपीलाया अस्तरप्ररूपवाया य प्रावाल तथा विचिचिक्वित्सा मतिविद्यम फलप्रति सद्य इति यावत् निगता विचिक्वित्साः साप्य व जिनशासनं कि तु प्रयुक्तस्य सतो ममा स्मा रक्त प्रतिपत्ति न वा फिपाया लपीकसादिषु सजयथा उच्य पलध्या रिते विकल्परहितं न स्य विकल्प उपायवपयसुप्रापको न जयतीति सं ज्ञातनिषयो निविचिक्वित्स इतिवाचः, यतावताकाज नि साङ्गिता द्विक्वा, यहा निविदुगुब्बो इति ॥ निविदुगुब्बो सापुमुगुब्बो राहित इत्यर्थः उदाहरणं च विदुगुब्बोसाया भावकमुद्रिता तथा व अमरुदिसीयति व वास्तव्यस्वितपोविद्यातिग्रपदवानै न मूढा स्वभाया सकिता दृष्टिः सम्पग्द ज्ञानरूपा यस्या सा अमरुद्वृष्टिः, अत्रादाहरणं सुमसावाचिका सा स्य अकपरित्राजकससुदो रूपसन्त्यापि न समोक्त यता तदव गुणिप्रधान आचार

यिहा पण्णा, तजहा—उत्ससतकसायथीयरगदसणारिया स्वीणकसायथीतरागदसणारियाय । से क्कित उयसतकसायथीतरागदसणारिया ? २ दुयिहा पण्णा, तजहा पठमसमयउयसतकसायथीतरागदसणारि या अ्यपठमसमयउयसतकसायथीतरागदसणारिया, अ्युहया चरिमसमयउयसतकसायथीयरगदसणारिया

यहा समयहा वाचा समयकीचा सवकाचारहित । निष्ठाविनिवृत्तिय विव्यतिमिच्छापमठागुहाय सवक्कविरोक्करणे अक्षयमावनेपङ्क १४ । साधु नो जगुष्सादेरहित प्रवर्त्ते कुक्ष्यननो मज्झिमाको माटो हाटकरशो जिम सससायाविक्काये अम्भकपरित्वाजकने अक्षा सक्क नपामो क्कित्तासावे परि वव नकरश पधमभिवै विरताभाक् सज्जिमोको प्रमसाकरतो मोक्कमोने उपमारकरश वसे वमनी प्रभाजनाकरतो । उत्तमरामदसथायरिवा । ॥ सराग इयतावी कहिसे । सन्धित कोटरापदमवायरिवा २ दुयिहा प ॥ । विव कोतरामटयनपायीना वायभइ अक्षावे ते अहेल्ले — उवमसतकसायथीयरग दसवायरिवा । उपमोतकपाय कोतराग इयतायभद प । प्याअकसायको सन्धित उपसतकसायथीयरगदसवायरिवा २ दुयिहा प ॥ । योअकसाय

शक्तः सम्प्रतिशुचिप्रधान माह-उद्ययैवेत्यादि । उपययइव य स्थिरीकरण य उपययइवस्थिरीकरणे तत्रो पययइव नाम समानपर्यायिकायां सद्रुचप्रसंसनेन
 तदुद्दिष्टरूपमाह्विपीदता तत्रैव स्यापन, यावत्स्य न प्रघातना य तावत्स्यप्रघातने तत्र यावत्स्यसमाधर्मायिकायां प्रीत्या उपकारकरव प्रजा
 यना समकषादिभि स्त्रीचप्रस्थापना कार्य य शुचिप्रधानो निर्देशो शुचिगुणिनाः कथञ्चि द्रवस्यापनार्थं सम्यया एकान्ता जदे गुणमिवृत्ती गुणितोपि
 नियतोः क्षुल्लतापत्तिः एते ऽहो दद्यान्नाचारा एव देव मुक्ताः सरागद्वानघटा शतदमिषानाया मिश्रिताः सरागद्वानायाभटा, सम्प्रति वीतरागद
 मायोद्विजनाह-वेचित्तमित्यादि सुनमा यावत् सङ्गता चरितारिया पञ्चविंश प० त० सामाहयचरितारिया इत्यादि ॥ नवर पञ्चमसमय सप्तद

य अचरिमसमयउवसतकसाययीतरागदसणारिया य । से कित स्त्रीणकसाययीतरागदसणारिया ? २ दु
 विहा पण्णा, तजहा लउमत्यस्त्रीणकसाययीतरागदसणारिया केयल्लिस्त्रीणकसाययीतरागदसणारिया य ।
 से कित लउमत्यस्त्रीणकसाययीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पण्णा, तजहा सययुद्धलउमत्यस्त्रीणकसाय
 यीतरागदसणारिया युद्धयोहियलउमत्यस्त्रीणकसाययीतरागदसणारिया । से कित सययुद्धलउमत्यस्त्रीणक

यीतरागदसणारिया द्वाभेद कक्षा ते कहेछे-पठनसमयउवसतकसाय यीतरागदसणारिया । पठनसमय वतता उपमानकथाय वीतराग दर्शना
 परिवा । अपठनसमय उवसतकसाय यी । द्वितोयादिकसमय वतता उपमानकथाय वीतराग दर्शनाया ना यभद कक्षा । पण्णा परमसमयउवसत
 कसाय यी० । पण्णा ते उपमानकथायने पठनसमय वीतराग दर्शनार्थं कहेछे । परमसमयउवसतकसाय यी । यूजे नाजमसय वतता सामाधिक
 चरितारिवि वतता ते उपमानकथाय दर्शनार्थं कहे । सचित्ता योवकसाय यीतरागदसणारिया २ दुविहा यं त । द्विजे योवकथाय वीतराग दर्श
 न यना दायभेद कक्षा ते कहेछे-लउमत्यस्त्रीणकसाय यी । लउमत्यस्त्रीणकसाय यी । लउमत्यस्त्रीणकसाय यी । लउमत्यस्त्रीणकसाय यी ।
 येरल योवकथाय वीतराग दर्शनार्थं कहेछे । से कित लउमत्य योवकसाय यीतराग दर्शनार्थं कहेछे । से कित लउमत्य योवकसाय यीतराग दर्शनार्थं कहेछे ।

मसमय इति ये तया मेवो पशान्तकपायस्वादीना विशोपाद्या प्रथमसमये धर्तेते ते प्रथमसमया क्षतो द्वितीयादिषु समयेषु धर्तेमाना अप्रथमसमया तथा परमसमय परमसमय इति ये सेवा मवोपशान्तकपायस्वादीनां विशेषाद्या अत्यसमय यत्नो तत्परमसमया ये ततो ऽथोक् द्विपरमसमयादि चरमादिषु समयेषु दत्ताने त ऽपरमाः सामायिकादीनां च चारित्राद्या स्वस्वमिदं-समा रागद्वयपरहितत्वा द्यगमन समाय यथा स्यासामपि सापुष्पिकाद्या मुपमस्य सर्वोद्या मपि सापुष्पिकाद्या रागद्वयपरहितत्वात् समायेन निर्वृत समाय मव वा सामायिक यद्वा समानां ज्ञानदशनचा रित्राद्या मायो सात्रः समायः सा ० माय एव सामायिक विनयावे राकतिगवतया विनयादिष्व इत्यनेन स्वाधिक इकव तच्च स्वसावद्य विरति

सायत्रीयरागद्वयगारिया सययुष्टुलउमत्यस्वीण० दुविहा पञ्चम्रा, तजहा-पठमसमयसययुष्टुलउमत्यस्वीणक
सायत्रीतरागद्वयगारियाय अ्यपठमसमयसययुष्टुलउमत्यस्वीणकसायत्रीतरागद्वयगारिया, अ्यहवा चरिमसमय
सययुष्टुलउमत्यस्वीणकसायत्रीतरागद्वयगारिया अ्यचरिमसमयसययुष्टुलउमत्यस्वीणकसायत्रीतरागद्वयगारिया
य । सप्त सययुष्टुलउमत्यस्वीणकसायत्रीतरागद्वयगारिया । सं कित युष्टुत्रोहियलउमत्यस्वीणकसायत्रीत

प्रभादना जतवमिः ७ ७ भेधोवन दायभेद कथा ते कथक-प्रययुष्टुलउमत्य स्वीणकसायत्री । सययुष्टुलउमत्य स्वीणकसायत्री कीतरान द्यना दायभेद कथा । बहिरादिष्व स्वीणकसायत्री । प्रतिभाद्वयो नृस्यः कथक वातराग द्यनाय । सेकित कथक स्वीणकसायत्री कीतरान द्यनाय २ दुविहा यं त । द्विरे सययुष्टुलउमत्यस्वीणकसायत्री कीतरान द्यनाय त किम योतन दायभेद कथा ते कथक-पठमसमय सययुष्टुलउमत्यस्वीणकसायत्री । प्रथमसम य वर्तता सययुष्टुलउमत्य स्वीणकसायत्री कीतराग द्यनाय य प्रथमभेद । अयपठमसमयसययुष्टुलउमत्य स्वीणकसायत्री । पूजे ताजसमय दत्तता अययुष्टुल उ मत्य स्वीणकसायत्री कीतराग द्यनाय य २ भेद । अथवा परमसमयसययुष्टुलउमत्यस्वीणकसायत्री । यथा परमसमय दत्तता अययुष्टुल उ मत्य स्वीणकसायत्री कीतराग द्यनाय । परमसमय सययुष्टुलउमत्य स्वीणकसायत्री । सप्त सययुष्टुलउमत्य स्वीणकसायत्री

मसमय इति ये तेषां भवो पञ्चान्तकपायत्वादीनां विज्ञेयाणां प्रथमसमये वृत्तते ते प्रथमसमया स्ततो द्वितीयादियु समयेषु वर्तमाना अप्रथमसमया तथा चरमसमय चरमसमय इति ये तेषां भवोपञ्चान्तकपायत्वादीनां विज्ञेयाणां अत्यसमय वृत्तते तचरमसमया ये ततो ऽर्वाक् द्विचरमसमयश्चि चरमादियु समयेषु वृत्तते ते ऽचरमा सामायिकादीनां च चारित्र्याणां स्वरूपमिदं-समा रागद्वयपरिहितत्वा वयगमन समाय एववा न्यासाभवि सावुक्तिकाणां मयसस्य सर्वाणां भवि सापुञ्जिकाणां रागद्वयपरिहितत्वात् समायन निर्वृत समाय मव वा सामायिक यद्वा समाजा ज्ञानद्वयवा रिश्यानां मायो ज्ञानः समायः सा ॥ माय एव सामायिक विजयाद् राकृतिगतया विजयादिव्य इत्यनेन स्वाधिक इकव तच्च सबसावद्य विरति

सायनीयरागदसणारिया सययुद्धउमत्यस्वीण० दुविहा पक्षज्ञा, तजहा-पठमसमयसययुद्धउमत्यस्वीणक
सायत्रीतरागदसणारियाय स्यपठमसमयसययुद्धउमत्यस्वीणकसायत्रीतरागदसणारिया, स्यहवा चरिमसमय
सययुद्धउमत्यस्वीणकसायत्रीतरागदसणारिया स्यचरिमसमयसययुद्धउमत्यस्वीणकसायत्रीतरागदसणारिया
य । सप्त सययुद्धउमत्यस्वीणकसायत्रीतरागदसणारिया । स कित युद्धयोहियद्धउमत्यस्वीणकसायत्रीत

यनायना कतसाभिज्ञे च ईभोतम दायभेद कदा ते कश्चे-सययुद्धउमत्य स्योचकसायदो । सयवद कयल योचकपाय बीतराग दयना दायभेद
कदा । सविवादिन योचकसायदो । प्रतिवाचकरो यूनः कयल नातराग दयनार्थ । सेकित कयल योचकसाय बीतराग दयथावरिया २ दुविहा
य त । द्वि सययुद्ध कयलपचे बीतराग दयनाय त किम गोतम दायभेद कदा ते कश्चे-पठमसमय सयवद कयल योचकसायदो । प्रथमसम
य वृत्तता सययुद्ध कयल योचकपाय बीतराग दयनाय ए प्रथमभेद । अपठमसमयसयवद कयल योचकसायदो । दुवे तोचसमय वृत्तता सययुद्ध क
यल योचकपाय बीतराग दयनाय ए २ भेद । यदवा चरमसमयसयवद कयल योचकसायदो । ययना चरमसमय वृत्तता कयल बीचकपाय बीत
राग दयनार्थ । चरमसमय सययुद्ध कयल योचकसायदो । अपरमसमयपूज नीजसमय योचकपाय बीतराग दयनाय । सेत सययुद्ध कयल यो

गिकेवल्लिखीणकसायत्रीतरागदमणारिया य । सेह्व छुजोगिकेयलिखीणकसायत्रीतरागदमणारिया । सेह्व
केयलिखीणकसायत्रीतरागदमणारिया । सेह्व खीणकसायत्रीतरागदमणारिया । सेह्व वीतरागदमणारिया ।
सेह्व दमणारिया । स कित चरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा सरागचरित्तारिया वीतरागचरित्तारि
गिया । से कितं सरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा सुज्जमसपरायसरागचरित्तारियाय थाय
रसपरायसरागचरित्तारियाय । से कित सुज्जमसपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा—
पठमसमयसुज्जमसपरायसरागचरित्तारिया छपठमसमयसुज्जमसपरायसरागचरित्तारिया य, झुहवा चरिम
समयसुज्जमसपरायसरागचरित्तारिया झुचरिमसमयसुज्जमसपरायसरागचरित्तारियाय झुहवा सुज्जमसपरा

त चरित्तावरिया २ दुविङ्गा प त । द्विवे चारवाच अकख तङ्गा टावमन् कङ्गा त अङ्के । मराय चरित्तावरिया । मौराग चरित्तावरिया । सरागि चरव
 वमठ योतराग चरि यं २ । सकिता मराय चरित्तावरिया २ दुविङ्गा प त । द्विवे मराय चरित्तावरिया । मौराग चरित्तावरिया । सरागि चरव
 म चरित्तावरिया । मौराग चरि यं २ । सकिता मराय चरित्तावरिया २ दुविङ्गा प त । द्विवे मराय चरित्तावरिया । मौराग चरित्तावरिया । सरागि चरव
 ॥ त । द्विवे मूयमपराय सर म चरित्तावरिया । मौराग चरि यं २ । सकिता मराय चरित्तावरिया २ दुविङ्गा प त । द्विवे मराय चरित्तावरिया । मौराग चरित्तावरिया । सरागि चरव
 मममय मूयमपराय सर म चरित्तावरिया । मौराग चरि यं २ । सकिता मराय चरित्तावरिया २ दुविङ्गा प त । द्विवे मराय चरित्तावरिया । मौराग चरित्तावरिया । सरागि चरव
 मराय चरियाय । मौराग चरि यं २ । सकिता मराय चरित्तावरिया २ दुविङ्गा प त । द्विवे मराय चरित्तावरिया । मौराग चरित्तावरिया । सरागि चरव
 विद्या प त । मौराग चरि यं २ । सकिता मराय चरित्तावरिया २ दुविङ्गा प त । द्विवे मराय चरित्तावरिया । मौराग चरित्तावरिया । सरागि चरव
 य निपुणमात मूयमपराय सराग चरियाय । मौराग चरि यं २ । सकिता मराय चरित्तावरिया २ दुविङ्गा प त । द्विवे मराय चरित्तावरिया । मौराग चरित्तावरिया । सरागि चरव

टमणारिया १ २ दुविहा पयाना, तजहा पढममयमजोगिकेत्रलिखीणकसायथीतरागदसणारिया अण
 टमसमयसजोगिकेत्रलिखीणकसायथीतरागदसणारियाय । अहथा चरिमसमयसजोगिकेत्रलिखीणकसायथी
 तरागदसणारियाय अचरिमसमयसजोगिकेत्रलिखीणकसायथीतरागदसणारियाय । सेह सजोगिकेत्रलिखीण
 कसायथीतरागदसणारिया । से कित अजोगिकेत्रलिखीणकसायथीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पयाना
 तजहा पढमसमयअजोगिकेत्रलिखीणकसायथीतरागदसणारिया अणढमसमयअजोगिकेत्रलिखीणकसायथी
 तरागदसणारियाय, अहथा चरिमसमयअजोगिकेत्रलिखीणकसायथीतरागदसणारिया अचरिमसमयअजो

पाइसेमय संवागे केवली चोवकपाय बीतराग दयनाय । पणठमसमय संवागे केवली चोवकपाय बा । पणठमसमय संवागा केवली चोवकपाय
 बीतराग दयनाय । पणठा परमसमय संवागे केवली चोवकपाय बी । पणठा परमसमय संवागा केवली चोवकपाय बीतराग दयनाय । पणठमस
 मयसमय केवली चोवकपाय बी । पणठा परमसमय संवागे केवली चोवकपाय बीतराग दयनाय । सतसवागे केवली चोवकपाय बी । पणठ संवा
 गो केवली चोवकपाय बीतराग दयनाय । सतसवागे केवली चोवकपाय बी । पणठ संवागे केवली चोवकपाय बीतराग दयनाय । पणठ संवा
 पनायना शरमद कडा तेकडै—पठमसमय संवागा केवली चोवकपाय बी । पणठमसमय संवागे केवली चोवकपाय बीतराग दयनाय । पणठ
 मसमय संवागे केवली चोवकपाय बी । पणठा परमसमय संवागा केवली चोवकपाय बीतराग दयनाय । पणठा परमसमय संवागे केवली चोव
 कपाय बीतराग दयनाय । पणठमसमय संवागे केवली चोवकपाय बीतराग दयनाय । पणठा परमसमय संवागा केवली चोवकपाय बीतराग दयनाय । पणठ
 गो केवली चोवकपाय बी । पणठ संवागे केवली चोवकपाय बीतराग दयनाय । पणठा परमसमय संवागा केवली चोवकपाय बीतराग दयनाय । पणठ
 पाय बी । पणठ संवागे केवली चोवकपाय बीतराग दयनाय । पणठा परमसमय संवागा केवली चोवकपाय बीतराग दयनाय । पणठा परमसमय संवागा केवली चोवकपाय बीतराग दयनाय । पणठ

[illegible][illegible]

दमणारिया १ २ दुग्रिहा पणाना, तजहा पढमसमयसजोगिकेवलिसीगकसायवीतरागदसणारिया अण
दममयसजोगिकेवलिसीगकसायवीतरागदसणारियाय । अहया चरिमसमयसजोगिकेवलिसीगकसायवी
तरागदमणारियाय अचरिमसमयसजोगिकेवलिसीगकसायवीतरागदमणारियाय । सेह सजोगिकेवलिसीग
कसायवीतरागदसणारिया । से कित अजोगिकवलिसीगकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुग्रिहा पणाना
तजहा पढमसमयअजोगिकवलिसीगकसायवीतरागदमणारिया अणपढमसमयअजोगिकेवलिसीगकसायवी
तरागदसणारियाय, अहया चरिमसमयअजोगिकेवलिसीगकसायवीतरागदसणारिया अचरिमसमयअजो

[illegible]

पठमसमयउधसतकसायत्रीतरागचरित्तारिया छपठमसमयउधसतकसायत्रीतरागचरित्तारिया य छुहवा चरिम
 समयउधसतकसायत्रीतरागचरित्तारिया छुधरिमसमयउधसतकसायत्रीतरागचरित्तारिया य सेंस उधसतक
 सायत्रीतरागचरित्तारिया सें कित स्वीणकसायत्रीतरागचरित्तारिया २ दुविहा पणप्ता, तजहा लउमत्य
 स्वीणकसायत्रीतरागचरित्तारिया केयलिस्वीणकसायत्रीतरागचरित्तारिया य स कित लउमत्यस्वीणकसायत्री
 तरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणप्ता, तजहा सययुद्धलउमत्यस्वीणकसायत्रीतरागचरित्तारिया युधुयो
 हियलउमत्यस्वीणकसायत्रीतरागचरित्तारिया य सें कित सययुद्धलउमत्यस्वीणकसायत्रीतरागचरित्तारिया ? २
 दुविहा पणप्ता, तजहा—पठमसमयसयुद्धस्वीणकसायत्रीतरागचरित्तारिया छपठमसमयसययुद्धलउमत्यस्वी

नपमानकपाय बीतराग चरिबाय । पधमसमय उधसतकसाय बीतराग चरितायरिबा । यचारमसमय उधसतकपाय बीतराग चरिबाय ।
 मल उधसतकसाय बीतराग चरितायरिबा । एतल उधसतकसाय बीतराग चरिबाय कसा । सकिंत योबकसाय बीतराग चरितायरिबा २ दुविहा
 प त । हिय योबकपाय बीतराग चरिबाय बीतराग चरिबाय बीतराग चरिबाय बीतराग चरिबाय बीतराग चरिबाय
 य । कबलो योबकसाय बी । कबल योबकसाय बीतराग चरिबाय । सकिंत उधसत योबकसाय बी । य दु प त । हिय कपल योबकपा
 य बीतराग चरिबाय बीतराग चरिबाय बीतराग चरिबाय बीतराग चरिबाय बीतराग चरिबाय बीतराग चरिबाय । मुदिवाहिय
 कपल योबकसाय बी । कबल योबकसाय बीतराग चरिबाय । सकिंत उधसत उधसत योबकसाय बी । य दु प त । हिय क
 २५ कपल योबकपाय बीतराग चरिबाय बीतराग चरिबाय बीतराग चरिबाय बीतराग चरिबाय बीतराग चरिबाय । पधमसमय उधसत योबक
 य बीतराग चरिबाय । अपठमसमय उधसत योबकसाय बीतराग चरिबाय बीतराग चरिबाय बीतराग चरिबाय । पधमसमय उधसत योबक

यसरागचरित्रारिया दुविहा पणसा, तजहा—सकिलिस्समाणाय विसुज्जमाणाय सेस सुज्जमसपरायसरागचरित्रारिया स कित थायस्सपरायसरागचरित्रारिया ? २ दुविहा पणसा, तजहा—पठमसमयथायरसपरायसरागचरित्रारिया अण्ठमसमयथायरसपरायसरागचरित्रारिया य अण्ठवा चरिमसमयथायरसपरायसरागचरित्रारिया य अण्ठवा थायरसपरायसरागचरित्रारिया सस सरागचरित्रारिया पणसा, तजहा—पण्णिवाइ य अण्ठवाइ य सस थायरसपरायचरित्रारिया सेस सरागचरित्रारिया स कित वीतरागचरित्रारिया ? २ दुविहा पणसा, तजहा—उवसतकसायनीतरागचरित्रारिया खीगकसायवीतरागचरित्रारिया य से कित उवसतकसायवीतरागचरित्रारिया ? २ दुविहा प०, तजहा

[illegible]

रूपं पश्यापि य समयमपि चरित्र मविशपतः सामाधिक तथापि ध्येदादिपिज्ञपे विदीजमाद्य मयत शास्त्राभरत य मानात्य जत्रते प्रथम पुन
 रविशेषात् सामान्यज्ञद्वय गवा वतिष्ठत सामायिका मिति तस्य गृह्या इत्यर यावत्कथित य सत्र त्यर प्ररतेरावतयु प्रथमपदिमतीचकरतीर्थेय
 नारापतमहाप्रत्यय श्रीकृष्ण विष्णु यावत्कथित प्रत्ययाप्रतिपत्तिकालादरज्योप्राणापरभात् तस्यप्रतेरावतजाविमध्यह्नविशति तीचकरतीया
 मरगतमात्र च विद्वत्तीर्थकरतायोक्तगतता य साधूना मवसय तपा मूपस्थापनाया यतायात उक्त सद्य मिश्र सामङ्ग्य लयाइयिससिय पुत्र
 विवित्र । अविशमसमसमय चिपमि इ सामप्रमन्याय ॥ १ ॥ सावज्जजागवर्द्धति तस्य सामाङ्ग्य दुष्टा त च इतरमायकइति पठमपठमतिथ
 मविश्वान् तित्युतु यदार्दविष वयसम् मइरसयायकालीय ॥ १ ॥ यसाश्चमावकाइय तस्यसु विद्वयाक व । ननु चत्वरमपि सामाधिकं करामि न
 दत नामामिष यावज्जीय मित्यव यावदायु रागहात तत सत्यापनाकाल तत्परित्यज्यतः कथ न प्रतिष्ठापन लभ्यत ननु प्रागवाप्त सद्यमयद् वा

दुयिहा पयाज्ञा , तजहा सजोगिकवल्लिखीगकसायत्रीतरागचरितारिया अजोगिकेवल्लिखीगकसायत्रीतराग
 चरितारिया य । से कित सजागिकेवल्लिखीगकसायत्रीतरागचरितारिया ? २ दुयिहा पयाज्ञा , तजहा—
 पठमसमयसजोगिकवल्लिखीगकसायत्रीतरागचरितारिया अष्टमसमयसजोगिकवल्लिखीगकसायत्रीतराग

भवा । इव चन्द्रो सोवकपाद्य बीतराग चरितारिया दायभेदे कथा त कइत —सयागो कथा श्रीवकसावदीयराग चरितावरिया ययागा कथं
 श्रीवकस य बीतराग चरितायारवा । इव सयागो कथा सावकपाद्य बीतराग चरित य ययागा कथो जावकपाद्य बीतराग चरितार्य । मकितं स
 मयामिकान्ता यावकसाव बीतराग चरितावरिया २ दुयिहा पयाज्ञा । द्विपे सयागा कथा सावकपाद्य बीतराग चरितारिया दायभेदे कथा
 त कइते —पठमसमयसयागो क थी जावकपाद्य बीतराग चरितारिया । प्रथमसमय सयागो कथा सावकपाद्य बीतराग चरितार्य । पपठमसमयसय
 गोदाना गोवकपाद्य बीतराग चरितारिया । पपठमसमय सयागा कथा सावकपाद्य बीतराग चरितार्य । ययवा चरमसमय मयागा कथो जाव

गङ्गासायत्रीतरागचरित्राया य, अहथा चरिमसमयसययुद्धलउमत्यस्त्रीगङ्गासायत्रीतरागचरित्राया अचरिम समयसययुद्धलउमत्यस्त्रीगङ्गासायत्रीतरागचरित्राया य । सत्त सययुद्धलउमत्यस्त्रीगङ्गासायत्रीतरागचरित्रा रिया । न कित युद्धयोहियलउमत्यस्त्रीगङ्गासायत्रीतरागचरित्राया ? २ दुयिहा पसत्ता, तजहा पढम समययुद्धयोहियलउमत्यस्त्रीगङ्गासायत्रीतरागचरित्राया अहपढमसमययुद्धयोहियलउमत्यस्त्रीगङ्गासायत्रीतरा गचरित्राया य, अहथा चरिमसमययुद्धयोहियलउमत्यस्त्रीगङ्गासायत्रीतरागचरित्राया अचरिमसमययु द्धयोहियलउमत्यस्त्रीगङ्गासायत्रीतरागचरित्राया य । सेप्त युद्धयोहियलउमत्यस्त्रीगङ्गासायत्रीतरागचरित्रा रिया सत्त लउमत्यस्त्रीगङ्गासायत्रीतरागचरित्राया । से कित केवलस्त्रीगङ्गासायत्रीतरागचरित्राया ? २

[illegible]

पाद्यनायकीया दृष्टान्ततीयेष्वन्तमः यथाध्याप्रतिपत्तौ सातिचार यन्मन्त्रकथातिन पुनर्लोचारात् उक्त च-सेष्टस्य निरुधारात्स तित्यन्तरसक
 मव त दाम्बा । मूभगकपाइकोश इवारमन्त्रय च छियकप्योः १७ उभय वातसातिचार निरतिचार च स्थितकल्प इति प्रथमपदिमतीयकरतीयका
 स तथा परिहार तवाविश्रय तम विशाश्रुयिस्मिन् चारय तत्यरिहारकिष्कटिक तचद्विधा निविश्रमाभक्त निविष्टकायिक च तत्र निविश्रमानका
 विशालितचारित्रासुयकाः निविष्टकायका चासखितथायिथका तद व्यतिरक्ताचारिय मप्यत्र मुच्यते इदमवश्यो गय खत्वारोमिनिविश्रमानका द्यत्वार
 यामुचार्थः प्रकः कल्पस्थिता यावमाचार्यो पद्यपि च सर्वोप सुतातलभयसम्पकाः तथापि कल्पस्थान् तथा मक कश्चि त्कल्पस्थिता वस्थाप्यत
 निायशामानकानाम्वाय परिहार परिहारयावत् तथा कश्चिन्मका तद्वय उक्तासो । सोषइवायुकाव प्रविष्टौ धीरदि पत्तये ०१५ इत्य कश्चि गि
 त्त चउत्यकत् त दाम्बाकर्ममठ । अष्टमामिहककाया एतोसखिर पक्षकामि ०२० खिखिर उज्जयाइ उताइ दसमपरिमगो इाइ । वावासु अठ
 गाइ यारसपञ्चतनान्त ० ३ ० पारखगकायाम पक्षसु वागडा हासु व्यतिगहो त्रिक । अप्यद्वियापइदिक कारित समवकायाम ॥ ४ ॥ ययकम्मा
 मतय वरिउपरिहारनायकुचरति । अकुचरग परिहारिय पइठिय जान क्षमासा ॥ ५ ॥ अप्यद्वियावियव क्षमासतव करइ सुगठ । अकुपरिहा
 रिमनाव अपति अप्यद्विगत च ० ६ ॥ ययधोकरार समासपमाका उवकिष्ठ अप्यो । सरयभु विवसा विवससुगठ नायवो ० ७ ॥ अप्यवमतीय
 तय श्रिबकप्य वा वावति गच्छ ॥ । पञ्चिबकमाका पुण । वकस्समास पवकात ॥ ८ ॥ तित्यपरसमीवाव वगस्सपास वनोउवमस । ययवि

चरिमममयश्रुजोगिकैत्रलिखीगकसायवीतरागचरितारिया य श्रुचरिमसमयश्रुजोगिकैत्रलिखीगकसायवीत
 रागचरितारिया य सप्त श्रुजागिकैत्रलिखीगकसायवीतरागचरितारिया । सेत कैत्रलिखीगकसायवीतराग

मय दयागोव मो गोवकसाय योयराग चरितायारिया । पचरिमममय पञ्चागाककसो सीवकसाय बीतराग चरिपाव । सेत पयागोक्तेवलो खोवकसाय
 पायराग चरितावरिया । दतसे पयागो ककसी पावकसाय बीतराय चरितायारिया । सेत केवशिखीवकसाय योयराग चरिपाव । सप्त खोवकस य

रिचतविश्रयत सामापिक सबप्रापि सावद्योगिवरितिसद्गुणान केवमच्छादित्विशुद्धिविषये विवाप्यमाण मध्यत शाट्याशरत अनाभास्य ज्ञानेने
तता यथा यावत्तमायज्य च्छादपस्यान वा परमविशुद्धिविषयसूक्ष्मसपरायादिवारित्राद्यामी न अङ्ग मास्कन्दति तथ त्यरमपि सा
मापिक विशुद्धिसपक्षदोपन्यापमाद्यामी । यदि चि मन्त्रज्यापरित्यज्यने तर्जितङ्गुल आपशत न तस्येव त्वच्छादित्विषयाकात्यै कृच्छ्र-मुच्छिक्क
मनातवा आपुवतविषयकर । सुदुतर मन्त्रामतानिचिष्ठ सुदुर्मापिघतस्सकोभङ्गा ०१५ तथा च्छद्व पूत्रपयापस्य उपस्थापना च मष्टात्रतप यास्मन् चारित्र
तत च्छादपन्यापन तत्र द्विषा स्वातिचार निरतिचार च तत्र निरतिचार च यत् इत्यरसामायकवतः छेदकस्याराप्यत तीजान्तरसकालौ वा यथा

चरित्रारिया य, शुद्धा चरिममयसजागिकेवल्लिखीणकसायधीतरागचरित्रारिया य शुचरिमसमयमजो
गिकेवल्लिखीणकसायधीतरागचरित्रारियाय । मप्त सजोगिकेवल्लिखीणकसायधीतरागचरित्रारिया । य कित
शुजागेकवल्लिखीणकसायधीतरागचरित्रारिया १ २ दुविहा पसुप्ता, तजहा पढमसमयशुजोगिकेवल्लि
खीणकसायधीतरागचरित्रारिया य शुपढमसमयशुजोगिकेवल्लिखीणकसायधीतरागचरित्रारिया य, शुद्धा

[illegible]

अस्मिन्पक्षस्यसंपिबोद्धये नु यत्तुयोर्योरकर्मप्रतिपादयते न सप्रमयति महाविदुषश्चैतेषा मधुमन्वासात्, चारिषट्ठारे-समस्यामद्वारेण सानेया तत्र सामापिबुस्य च्छदोपस्थापनस्य च चारिषस्य यानि लक्ष्यानि मयस्यानानि तानि परस्परतुल्यानि समानपरिच्छामस्यात् ततो उच्यतेसोसाका दामदशप्रमाणाणि समस्यानास्य तिरुम्योद यानि परिहारविशुद्धिकथाग्यानि ताव्यपि च केवलप्रपञ्चया परिभाष्यमाना नि प्रयुक्तपक्षकाक्षाप्रदशममाणा नि तानि प्रथमद्वितीयचारित्र्याविरोधीनि तत्रापि सप्रवत्त तत् एव यानि सस्यातीतानि समस्यानानि ता नि सूक्ष्मसम्पराययास्यापचारित्र्ययोग्यानि स्रष्टव तुल्ला लक्ष्यकाक्षे समन्तादुपपन्नविहयाच । ततो अचक्षुसोय गतु परिहारिपक्षाका ॥ १ ॥

-दृष्टरियसामाहुयचरित्तारिया । मत्त सामाहुयचरित्तारिया । से कित तेनुवठावणीयचरित्तारिया ? २ दुयिहा पयत्ता, तजहा-साहुयारा तेनुवठावणीयचरित्तारिया निरुदयारा तेनुवठावणीयचरित्तारिया । सेत तेनुवठावणीयचरित्तारिया । स कित परिहारविशुद्धियचरित्तारिया ? २ दुयिहा पयत्ता, तजहा-निश्चिस्त्वमाणपरिहारविशुद्धियचरित्तारिया निश्चिठकाहुयपरिहारनिश्चिद्धियचरित्तारिया

कड्छे-इतरियसामाहुय चरित्तारिया पात्रकडिहसामाहुय चरित्तारिया । तिहर्त क कथममाप्ते गच्छमेविये पड्छे इतर सामाहुयचरित्तारिया कड्छे तदतरचारित्र्यमते उपमय मत्तपक्षे यवकडिहते कथममाप्ते निजकथ पाड्छे उपसर्गादु खने एतस्ते सामाहुय चरित्तारिया । केचित्तु पाड्छेवचरित्तारिया चरित्तारिक्ता २ दुयिहा प त । विव छिदापस्यापनोय चरित्तारिया यत्ता न्यायभन कड्छा ते कड्छे-साद्वार कथामहुयविषय च निरुदयार कथामहुयविषय य च । पतोचार कारसामा क्व माताचार छेदापस्यापनोय चरित्तारिया निरतिचार विगार पतोचारजगान एव छेदापस्यापनोय चरित्तारिया । मत्तकथामहुयविषय च । एतत्तु छेदापस्यापनोय कड्छा । सखित परिहारविमर्षि च दुयिह प त । विव परिहारविमर्षिना दायभेन कड्छा तदकड्छे-निश्चिस्त्वमाण परिहारविमर्षिय च निश्चिठकाहुय परिहारविमर्षिय च । निवसमाणक निविष्टकायक एवका परिहारविमर्षि च इतत्तु च इतत्तु मत्त

न चरन् परिहारविमुक्तियुतः तत्तु ० ६ ० अथैते परिहारविमुक्तिकाः कास्मिन् क्षेत्रे कासे वा प्रवृत्तिः ? उच्यते-इह क्षत्रादिनिष्ठपञ्चाय विशेषसिद्धारा
 वि मद्यया-उच्यते १ काण्डादर २ धारिद्र्यादर ३ ताप्यादर ४ पर्यायादर ५ आगम्यादर ६ वेदद्वारा ७ कल्पद्वारा ८ लिङ्गादर ९ तद्व्यादर १० व्या
 न्द्वारा ११ गणद्वारा १२ अक्षिपद्वारा १३ मन्त्रव्यादर १४ मन्त्राप्यादर १५ प्रायश्चित्तविधिद्वारा १६ कारकद्वारा १७ नि प्रतिबन्धनाद्वारा १८ जिज्ञासा
 र १९ यज्जद्वारा २० । तत्र त्रय द्विषा मागवा जन्मन्त मन्त्रावतय यत्र तत्र ज्ञान स्था जन्मन्तो मागेका यत्र तत्र कल्प स्थितो वसन्त तत्र सद्भावतः ।
 तत्र च-उच्यते-इह मन्त्रावतय जन्मन्तुवर्गमन्त्रावतय । जन्मन्तुवर्गमन्त्रावतयो मन्त्रावतयोऽप्युक्तयो ० १ ॥ तत्र जन्मन्त सद्भावतय पञ्चसु प्ररतयु पञ्चस्यै
 रावतयु न तु मन्त्रावतयु न च तया सद्भाव नस्ति यम जन्मन्तव्यका इव सद्भावतः सर्वासु कर्मभूमिषु वा प्राप्यरन् सक्त च-इति
 तत्र इदमपि सुदर्शितव्यवस्थानियमा । काण्डादर-अवस्थापस्यां तृतीय चतुर्थे वारके जन्मसद्भाव पञ्चमपि उत्सर्गपस्या द्वितीय तृतीय चतु
 र्थे वा जन्मसद्भावः पुन र्द्वितीय चतुर्थे वा उत्सर्ग-उत्सर्गव्याप्यासु जन्मन्त उतासुयति प्रावन् । उत्सर्गव्याप्याविवरीसु जन्मन्तुवर्गमन्त्रावतय ० १ ॥

रित्तारिया । सप्त स्त्रीगणकसायवीतरागचरित्तारिया सेतु वीतरागचरित्तारिया । अहन्वा चरित्तारिया पचत्रि
 हा पयस्ता , तजहा--सामाहयचरित्तारिया तेनन्त्रठावणीयचरित्तारिया परिहारविमुक्तिसुखचरित्तारिया सुखम
 सपरायचरित्तारिया अहस्कायचरित्तारिया य । सक्ति सामाहयचरित्तारिया ? २ दुविहा पयस्ता , तजहा

: तं योद्वारान चरित्तारिया । उत्सर्ग योवकपायवीतराग चरित्तारिया वीतराग चरित्तारिया कथा । पयस्ता चरित्तारिया पचत्रिहा पय
 ना तजहा । पयस्ता चरित्तारिया पचत्रिहा कथा । ते कथं--सामाहयचरित्तारिया ज्ञानावकाशव्यय न परिहारविमुक्तिय न सद्भावमपराय न पचत्रिहाय
 चरित्तारिया । सामाहय चरित्तारिया ज्ञानावकाशपन्नाय आनि पचत्रिहा चरित्तारिया सुखमपराय चरित्तारिया ज्ञानावकाशव्यय न परिहार
 न निष्कय । सक्ति सामाहय चरित्तारिया २ दुविहा पयस्ता तजहा । पयस्तारिया कथं चरित्तारिया चरित्तारिया तजहा । दोषमन्त्र कथा ते

उत्तरमपि न्यपपत्तिरूपे तु पतुयोरैकप्रतिभागकाले न सम्भवति सदाविदुषश्चैतेषां मनुष्याणां, धारिण्युतरे-सुधमस्यानद्वारेण मार्गेषां तत्र सामाधिकस्य ऋदोपस्थापनस्य च धारिण्यस्य यानि लपन्त्यानि सुधमस्यानानि तानि परस्परतुल्यानि सुधमपरिणामत्वात् ततो ऽसंख्यलोकाणां द्वाप्रदशमभागानि सुधमस्याभाव्य तिर्यक्योद्दयानि सुधमस्यानानि तानि परिहारविष्णुलुब्धक्याग्यानि ताव्यपि च कवसिप्रप्रा परिजाध्यमानानि च सङ्ख्युत्तोकाकाशप्रदक्षमभाषानि तानि प्रथमद्वितीयधारित्रिचरोधीनि तद्युपि सुधमत् तत ऊर्ध्वयानि सत्यातीतानि सुधमस्यानानि ता नि मूलसम्पदायपथात्यायधारित्रयोग्यानि उत्तम-तुङ्गा लक्ष्यकां च सुधमठावस्यपुनविशयाच । ततो असंख्यलोके गतं परिहारिपठाका ॥ १ ॥

-इत्तरियसामाहुयचरित्तारिया स्यात्त्रकहियसामाहुयचरित्तारिया य । मंत्त सामाहुयचरित्तारिया । से कित तेनेयठावणीयचरित्तारिया १ २ दुविहा पणत्ता, तजहा-साइयाग तेनेयठावणीयचरित्तारिया निरुयारा तेनेयठावणीयचरित्तारिया । सेत्त तेनेयठावणीयचरित्तारिया । स कित परिहारविगुप्तिरियचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा-निखिस्समाणपरिहारविगुप्तिरियचरित्तारिया निखिठकाइयपरिहारविगुप्तिरियचरित्तारिया

कथं-एतत्तरियसामाहुय चरित्तारिया धारिण्युतरे-सुधमस्यानद्वारेण मार्गेषां तत्र सामाधिकस्य ऋदोपस्थापनस्य च धारिण्यस्य यानि लपन्त्यानि सुधमस्यानानि तानि परस्परतुल्यानि सुधमपरिणामत्वात् ततो ऽसंख्यलोकाणां द्वाप्रदशमभागानि सुधमस्याभाव्य तिर्यक्योद्दयानि सुधमस्यानानि तानि परिहारविष्णुलुब्धक्याग्यानि ताव्यपि च कवसिप्रप्रा परिजाध्यमानानि च सङ्ख्युत्तोकाकाशप्रदक्षमभाषानि तानि प्रथमद्वितीयधारित्रिचरोधीनि तद्युपि सुधमत् तत ऊर्ध्वयानि सत्यातीतानि सुधमस्यानानि ता नि मूलसम्पदायपथात्यायधारित्रयोग्यानि उत्तम-तुङ्गा लक्ष्यकां च सुधमठावस्यपुनविशयाच । ततो असंख्यलोके गतं परिहारिपठाका ॥ १ ॥

ते ते वि समयासौगा अविसृष्टा अथ पञ्चमविध्यात् त्वविरिक्तसौगस्य सममठागासदोक्त्यापि ॥ २ ॥ तत्र परिहारविशोद्धिस्तस्यप्रतिपत्तिः स्वकीये
 प्रथममस्यानेषु वक्तव्यमस्य भवति न ज्ञापयु यदा स्वतातमय मपिक्तस्य पूर्वप्रतिपत्त्यो विवक्ष्यत तदा सोपपत्तिं समस्यान्तयु जयति परिहारवि
 शोद्धिस्तस्यसमाप्त्यमन्तर मप्यपि चारत्रेयसु सज्जान् तद्यपि च वक्तव्यमस्या तीतमय मप्यस्य पूर्वप्रतिपत्त्यविरोधात् उक्तं च-संज्ञाया वक्रियवती

रियाय । संज्ञ परिहारविसुद्धिचरित्तारिया । से कित सुज्ञमसपरायचरित्तारिया ? २ दुग्निहा पयाप्त , तज
 हा-संकिउत्तसमाण सुज्ञमसपरायचरित्तारिया त्रिसुज्जमाण सुज्ञमसपरायचरित्तारियाय सप्त सुज्ञमसपरा
 यचरित्तारिया से कित शुद्धस्कायचरित्तारिया ? २ दुग्निहा पयाप्त , तजहा उत्तमत्य शुद्धस्कायचरित्तारिया
 कयलिशुद्धस्कायचरित्तारियाय सेत शुद्धस्कायचरित्तारिया सेत चरित्तारिया सप्त शुद्धगहिपत्तारिया सप्त शुद्धा
 यरिया सप्त कमन्त्रमिगा सेत गप्पयक्कतिया सेत मणुस्सा से कित देया २ चउद्धिहा पयात्ता , तजहा ज्ञत्र

म ३२३३ तपकर निदिश्यायक पारहारविशुद्ध चरित्तारिया । सप्त परिहारविशुद्धिचरित्तारियाय सप्त परिहार विज्ञाया कक्षा । साकत सुज्ञमसप
 राय चरित्तारिया दृष्टिहाय त । द्विज सुज्ञमसपराय त एव मूला कामायवीच येय पीयात्ते तेव वायमदो । सकिविज्ञमान सुज्ञमसपराय य । सु
 ज्ञमान सुज्ञमसपराय चरित्तारियाय ते उपग्रामय विपित्तोविज्ञको पाकत कुव । विसहमायसुज्ञमसपराय य । विगुमान सुज्ञमसपराय चरित्तारिया ते
 उपग्रामय विपित्तोविज्ञको पकित कुवे । सप्त सुज्ञमसपराय य । एतसे मूलासपराय चरित्तारिया कक्षा । सकिंत पञ्चस्कायचरित्तारियाय दृष्टिहा य
 त । द्विज स्वाप्तात चरित्तारियाय वायमद कक्षा तद्वेदे-ज्ञमान पञ्चस्काय य केवसोपग्रहस्काय य । ज्ञाया ययाप्तात चरित्तारियाय ते उपग्राममा
 यगुण्ठाय सोवमायगुण्ठाय उपग्रहस्कायवाप्तात चरित्तारियाय ते सवाग यवागुण्ठाय कुवे । सप्त पञ्चस्काय सप्त चरित्तारियाय सप्त चरित्तारियाय
 सेत पायारिया । एतस ययाप्तात चरित्तारियाय कक्षा एतस यवाप्तात चरित्तारियाय कक्षा एतसे सर्वे पाय कक्षा । सप्त कथाभूयणा सेत गप्पयक्कतिया से

चमेसुपि होत्र पुष्टपश्विजो । तेसु वि वर्तन्ते सो सोतमर्गं पप्य युवतीष्ट ॥ १ ॥ तीयद्वारे-परिहारविष्णुविजो नियमत स्तोत्रं प्रवर्तमानं यत्र सति
 मयति न मन्त्रदो मानुसत्वा वा तदप्राप्ते आतिस्तरणादिना उत्कृष्ट-तित्यतिनियमतोक्षिप होत्रसतिष्णमिन्द्रतदप्राप्त । विगणपुण्यभावा आह
 मरवाहयद्विगु ॥ १ ॥ पर्यायद्वारे-पयोयो द्विपा यद्विषययोरो यतिपर्यायस्य यद्वैकोपि द्विपा कथमप्यत उत्कृष्टतः तत्र यद्विषययोरो कथमप्यतः
 यकोनयिज्ञपायि यतिपर्यायो विद्यति द्वावपि चोत्कृष्टतो दक्षामयुषकोटीप्रमाणी उत्कृष्ट-एगस्वयसुनेत्र निधिपरियात्रेन्द्रकगुहतीसा । जहपरि
 पात्रुबीभा होसुविज्ञकोमहसूको ॥ १ ॥ आगमद्वार-उपूष माभर्म च भाचीत यस्मा त लक्ष्य यच्चिह्नस्य प्रयहोतीक्षितयागारायनतयस्य स क्लृप्तस्यतो
 नञत पुमाचीत तु विद्यातद्विद्यासयनिमित्तं नित्यमवैकाग्रमनाः सम्यक् प्रायो नुस्मरति आहव अमुमुनद्विज्ञाह आगमेक्षोपनुकल्प । अमुनिय
 वगद्विषयोः रात्रकष्टवर्कियाकषः ॥ १ ॥ पुष्टाहीयमुतयया यचकुसुहनिषमवेच एगमसकोयुक्त विरसोयोसिगाएउपहृत् ॥ २ ॥ छद्वार-नित्यप्र
 एतिक्तासे वदपुनपवदो जयत नमुसुक्कदा वा न स्वावदः क्षियाः परिहारविष्णुद्विहस्यप्रतिपत्त्यसुज्ज्वात आसीत नय मन्त्रिकस्य पुनः पुनमनिय
 दित्यमानः सवदो वा ज्येदो वा तत्र सवदं अविप्रतिपत्त्यप्राप्त उपपन्नमन्त्रिमतिपत्तौ त्व वद इति उत्कृष्ट-वदोयवित्तिकाह इत्यीशजोवदोहृग
 यरा । पुष्टपश्विजोपुष्ट राज्ञमन्त्रदोमन्त्रोवा ॥ १ ॥ अन्वध्वार-स्वितकस्य ययाप नात्यतकस्य ठियकप्यनियमित्यमा इति वचनात् तत्रा वल
 म्यादय दशस्त्रपि स्वामपु य स्वित्ताः माथव स्तरकस्यः स्वितकस्य उच्यत न पुनयत्तुं ज्ञप्यातरपिज्ञस्य वावस्थितयु कस्यपु स्वित्तः। ज्ञापेपु वा
 वलस्यादिपु यदसु स्वित्ताः कस्तकस्या स्वितकस्यः उत्कृष्ट-उपयचिष्ठियकप्यो आचसुक्काहयसुठावसु । सवसुविठियापहमो अउठियकमुचठिया
 यीष्ट ॥ १ ॥ आचसस्यादीनि च दशस्थामान्मूनि । आचसकुद्रास्य सिद्धायरारायापछाविकमन्त्रः । ययकठपाकिमन्त्र मासपल्कोसवकप्या ॥ १ ॥

जयासी यागमतरा जोद्रसिया धेमागिया से कित नवगयासी ? नवगयासी दसत्रिहा पयसा, तजहा अस्स

न मनुष्या न ऊत दः ॥ २ ॥ वद वदा प त । एव वदमानवा कथा एतस भद्र वदना भद्र वदना ४ भद्र वदना ते वद

भव्यारम्भावस्थिताः कल्पयन्ते मुक्तापरिपिण्डी वातज्ज्वाभयपुरिममन्थ । विश्वकल्पस्यकरुणे यत्तारिश्वाद्यहियाकप्पा ॥ २ ॥ लिङ्गद्वारे-निपिगितो
 द्विदिपयि लिङ्ग प्रवात तद्यथा-त्र्यसिङ्ग प्रावलिङ्ग च एकोनापि विना विविधितकत्योचितसामायाययोगत सङ्ख्याद्वार-सङ्गप्रभृतिकान् सारा
 मु निरूप्य विज्ञातुम् सवयाम् परिहारविज्ञाद्विषय कल्प प्रतिपद्यते पूवप्रतिपद्य पुनः सयास्वपि कथं वि द्रव्यति सत्रापी स्वराविज्ञाद्विज्ञातुम् नान्य
 लभक्रियासुव्रते तयाज्ज्वाभयपुरिममन्थ कल्प प्रतिपद्यते पूवप्रतिपद्य पुनः स्वश्रीयधक्षात्कर्मादित्यय साध्म्योव्यावर्तत सय प्रथमत एव कल्पा तत्रय
 यत उच्यत कमवज्ञान सचक्ष तसामुविमुद्गाम पक्रियकल्पसुपुव होलासद्यासुविजहिरि ॥ १ ॥ यद्यतसुविजहिरि
 यायकालवद्विषयनद्विपरासु विक्तकल्पावगच्छ तद्विद्योदिरियकल्प ० १ ॥ व्यामद्वार-धमप्यान् न प्रवदुमानमपरिहारयिज्ञाद्विक्रमप्रतिपद्यन पू
 यप्रतिपद्य पुनरातौद्विपरापिजवति कवत प्रायश्च व्याह च भावन्मिदियनय मरु पक्रियकल्पस्य पयष्टनायक न्यरसुविज्ञापन पञ्चप

वली नपदिचिद्वि ॥ १ ॥ यद्यवज्ञानवगच्छ तद्विद्योदिरियकल्पस्य पयष्टनायक न्यरसुविज्ञापन पञ्चप
 प्रतिपद्यन उच्यतः सतसङ्गः पूवप्रतिपद्यः ॥ अथम्यतः उच्यते वा सतसङ्गः पूवप्रतिपद्यन कल्पम्यत प्रतिपद्यमानाः सतविद्यति कल्पयत सङ्ग
 पूवप्रतिपद्यकाः पुनःअपम्यतः सतसङ्गः उच्यतः सङ्गसङ्गः व्याह च गच्छतिमवगच्छाः अङ्गपक्रियतिमुपस उक्तासः सङ्गोभजकसङ्ग मयसाद्विपद्य
 द्विकला ० १ ॥ सतावाभजकसङ्गः सङ्गसमुक्तासङ्गपक्रियती सपसोसङ्गसङ्गोवा पक्रियकल्पसङ्गसङ्गसङ्ग ॥ २ ॥ अथ च यदा पूवप्रतिपद्यकल्पमप्या
 दको निगच्छति अन्य प्रविद्यति ततो मयङ्गप प्रतिपत्ती कदापि द्योपि मयति पुमर्षा वा पूवप्रतिपत्ती येष उच्यते अङ्गसङ्गः प्राप्यत पुय
 र्वा वा उच्यते पक्रियकल्पमयङ्गप होलासद्यासुविजहिरि ॥ १ ॥ यद्यपिद्वार-यजिपरा यतुविषया
 सद्यथा द्रव्यानिपद्यः सत्रानिपद्यः आसाविपद्यः य मते वा अप्य चविता इति न ज्ञेय सप्यते तत्र परिहारविज्ञाद्विकल्पे त निपय

हा न तत्रानि यस्मा देवस्य कश्यपस्य यद्योदितरूपो त्रिपुङ्गवो यत्तते उच्छ्रप्य दद्याद्दण्डविग्रहं विचित्राभ्यामर्शेतिपुनर्कोष्टं मयस्वस्त्रीयकप्यो कप्योऽपि
 निगण्डाजक ॥ १ ॥ ययमिनायराह निययाभियमकभिरवयाहाय तप्यालवविग्रपर मयस्वविग्रुठारुतु ॥ २ ॥ प्रज्ञाह्वार-मा सा यन्य प्रज्ञान
 पति कल्पयति रयति कृत्या द्याह पद्याह न यसा अलकप्यद्विहसिकाकयति सपयशा पुन यथाक्षान् मयच्छति मुजापनहारपि ना सा यन्य
 मुक्तपति यय प्रज्ञाननकर नियमतो भुवश्चमिति प्रज्ञान्यापयश्चमेव तद्वृत्तीतमिति विमर्षे पृथक्हार तद युक्त प्रज्ञाह्वार नियमतो मुक्तमस्या
 समन्वात् यथाग्यस्य कथ्यन्त वृत्तायामपि प्रज्ञान्याया पुनरयाग्यतापरिचाले मुक्तमायोगादतः पुनर्गिद्वह्वारोमनि प्रायद्यितयिभिह्वारे । मनसापि
 नूत्नमप्योतिचारमापयस्य नियमत एतर्गुरुक प्रायद्यितमस्य यत यय कस्य यकायताप्रधान कात काङ्क्षे शुक्तरदोव इति आरब्धह्वारे तथा कारय
 नाम आलम्बनं य त्वुक्तः सुपरिबुद्धं ज्ञानादिकं तथा स्य न विद्यत येन तदगभित्यापवादपक्षयिता स्यात् यय हि स्वयं निरपक्षं क्लिष्टकमन्यपति
 मितं प्रारब्धं मेय इत कल्प ययीच्छविपिना समापयन् मङ्गला वर्तत उत्तम्य कारयमास्यवनात पुनभाषाह्यमुपरिसुद्धं ययस्वतर्तमधिच्छा सवि
 यतपमादवापाय ॥ १ ॥ सवृत्त्यभिरयययथा आदृताचपदइसमावृत्तो बहुइयसमइप्या किलिक्तकमाश्चयानमित ॥ २ ॥ नि प्रतिकमताह्वार यय मसा
 म्ना नि प्रतिकमक्षरीरा उच्चिमसादिक मपि कदापि धा पमयति न च प्राक्कालकपि समापतिते व्यसन द्वितीयपद सेवत उत्तम्य निप्यनिकमस्य
 रीरो चच्छिमलाइयिमाश्वइमया पाकनिप कियमहा वनकमिमवहृव्यीप ॥ १ ॥ अप्यवृत्तालोपय विषयादीधुतशोइयसति अइयासुइजावाधु वधु
 गपयविग्रमरस ॥ २ ॥ भिवाह्वारे-यतइवकारिग्रं तथा विहारकम य वृत्तीयस्या पीरप्या मवति अयासु य पीरपीपु आयास्वर्गो निद्रापि या

रत्नमारा नागकुमारा सुव्रणकुमारा निज्जकुमारा दीवकुमारा उदहिङ्गमारा दिसाकुमारा याउ

क—भक्त्यपभाया वाक्यमत्र आसिवा कमादिष्या । भवन्वशी वाभक्त्यत्तर क्वातिवो पैमानिक्त । सेवित भवन्वशासो हसद्विक्का प त । दिवे भवन्वप
तो दोगम क्वा त क्वाटै—भरन्वमार नागन्वमार सुवन्वकमार विस्वकमार यप्पिन्वमार सद्भिक्कमार सिस्विकुमार वाक्कमार क्वापिय

अत्रात्मावस्थिताः ब्रह्मपादसंयुक्ताः परमेश्वरी वात्मानमयपरिमज्जन्तः । किञ्चकन्तस्वयम्भरेषु चत्वारिण्ययिद्विधाकण्ठाः ॥ २ ॥ लिङ्गद्वारे-निर्गमिती
 द्विविधपि निग्न जगत्तत्त्वज्ञान-द्वन्द्वलिङ्ग प्रावर्त्तितः च एकोनापि विभा विवाकतकल्योचितसमासाययोगात् तद्व्याहार-तज्जप्रवृत्तिकामुत्तरा
 नु निर्यय विद्याद्वयसंयुक्तानु परिहारविज्ञानिक कण्य प्रतिपद्यते पूर्वप्रतिपक्ष पुन स्वार्थस्वपि कथं वि ज्ञेयसि तत्रायो स्वराविद्युद्विलङ्घनासु मात्य
 लभ्यक्रियासुबलत तयानुनासुयतमाभामप्रज्जन्तकालमवतिष्ठत किन्तुक्षाक यत् स्वर्गीयवशात्सुस्फुटित्यत्र बाध्योव्याप्यते यद्य प्रयमत यव कस्या तमव
 त्तल उच्यते कस्यकदात तत्त्वज्ञान समामुविस्तुतासु परिकल्पकशरीरसुतकमसासु पुष्टपद्विवक्तुपुत्र होत्मानद्यासुविकल्पि ॥ १ ॥ अस्तसुकिम्बिडास
 योवकालबभिसुयनदिद्वयरासु वित्तकामाकण्ड तत्राविद्योरीरयकलद्व ॥ १ ॥ व्यामहार-चमप्या न प्रवदमानपरिहारविद्युद्विकप्रतिपद्यत पू
 यप्रतिपक्षः पुनरात्तरोद्वयोपिप्रवर्त्तति फयस प्रायश्च निरनुवच यादृ च भ्रातृन्मिद्विनय मव पन्निवज्जहसा पयस्त्वनायय इयरसुविकम्बावम पक्षप

वदन् नपदिद्विद्वि ॥ १ ॥ एवब्रह्मवज्जग उद्वामतिवृत्तकमपरिहारा राद्वसुयिज्जायो ब्रह्मस्वपापभिरनुययो ॥ २ ॥ गवनाहार जपन्यत स्वया गवा
 प्रतिपद्यत शरज्जपतः शतसङ्काः पूयप्रतिपक्षः । अचम्यतः शरकटतो वा ज्ञातक्षः पुरुषगवनाया जपन्यत प्रतिपद्यमानाः सप्तविंशति कटकपतः सङ्क
 पूयप्रतिपक्षका पुनजपन्यतः शतक्ष उरकपतः सङ्कटाः यादृ य गवमुत्तिकवयवताः जङ्गपन्निवतिस्वयसु सङ्कासा उद्वोवज्जहसा मयसाविषयवद्वप
 दिद्वि ॥ १ ॥ सताधानब्रह्मा सङ्कसमुक्तासटीयपन्निवती स्वपसोसङ्कस्वसोवा पन्निवतजङ्गलउक्ताया ॥ २ ॥ अन्य च यदा पूर्वप्रतिपक्षकस्यमप्या
 द्वा निगच्छति यस्य प्रविक्षति तयो मयक्षय प्रतिपक्षो ब्रह्मापि द्वापि मयति पूयक्ष ना पूयप्रतिपक्षो व्येव प्रजनया कदाचिदकः प्राप्यत पूय
 क्ष या उच्यन् पाँडवज्जमायमयकाए होत्मानकोविदकस्यकपुने पुष्टपन्निवज्जापिध जङ्गापकोपुपुतवा ॥ १ ॥ यन्निवज्जहार-चन्निवज्जा यन्नुविधा
 सद्यया द्रव्यान्तयुद्धः चन्निवज्जहा कालान्निवहा प्राबान्निवहा य एते वा व्यथ चचिना इति न ज्ञेय उच्यते तत्र परिहारविद्युद्विचस्ये त निप

हा न नास्ति यस्या हेनस्य कस्यप्यय यथोदितरूपो निगृही यतते उच्यते दद्याद्वास्तिगृह विचित्ररूपात्मनोतिपुत्रकोष्ठे गृहसमीपकूप्यो कूप्योतिप
 त्तिनामजात्रस्य ॥ १ ॥ ययतिगायराऽ नियथाविधमन्त्रमिरवदादाय तप्यालङ्कारविषयपरं ययस्ययिसुदृढात्तु ॥ २ ॥ प्रत्यङ्गद्वार-ना सा यन्य प्रत्या
 यति कस्यप्येति रूपति कृत्याऽ आऽ पश्चात्तु न यसो व्यक्तकूप्यद्विहसिकाऊरति उपदश पुन यथाशास्त्र प्रयच्छति मुष्ठापागद्वारवि भा सा यन्य
 मुष्ठापति अथ प्रत्यन्तामन्त्रर नियमतो मुष्ठापमिति प्रत्यन्तापचकनैव तद्दृष्टीतिमिति किमर्थं पृथङ्गद्वार तद युक्त प्रत्यङ्गद्वार नियमतो मुष्ठापमस्या
 सुभयात् अथाप्यस्य कथञ्चि हतायासपि प्रत्यन्तायो पुनर्याग्यतापरिच्छास मुक्तनायागादतः पृथग्विद्वद्वारमिति प्रापञ्चितविधिद्वारे । मन्त्रापि
 मूलमन्त्रातिनाम्नाप्यस्य निवमन्त्र अतुमुक्त प्रापञ्चितमस्य यत यय कस्य एकप्रापताप्रधानं हात सतङ्गं गुणतरदाप इति कारणद्वार सथा कारण
 नाम आसत्त्वं य त्पुनः सुपरिदुष्टं आमादिक तत्ता स्य न विद्यत येन तदाभित्यापवावयवस्यिता स्यात् यय हि सवत्र निरपज क्षिप्रकर्मस्ययति
 भित्तं प्रारथ्य मेव इय कल्प यथोक्तविपिनः समापयन् मन्त्रात्मा यतते उत्तम्य कारणमास्यवमासु पुष्पावाहयनुपरिसुतं ययस्यसतयिज्जर कवि
 यतपश्चादभापाप ॥ १ ॥ सवन्त्यनिरयवक्ता आदत्ताचयदृष्टसमाकृतो बहुइयसमहप्या किस्मिन्नास्माक्ययान्तिमिता ॥ २ ॥ मि प्रतिक्रमताद्वार यय मन्त्रा
 त्मा मि प्रतिक्रमशीरोर उचिमन्त्रादिक भापि कदाचि ना यमयति न च प्रायोक्तकापि यमापसिते व्यसत द्वितीयपद सेयत उत्तम्य निव्यन्तिकमन्त्र
 रीरो यच्छिमन्त्राद्विभाषकमया पावतिम विषमन्त्रा यमन्त्रमिन्नगृहवीथि ॥ १ ॥ अथपश्चात्तातोयव विसयादीमुठोठयसति अह्वानुदभावाये वदु
 मययविषयमस्स ॥ २ ॥ भिन्नाद्वार-यतदवधारित्य तथा विहारक्रम य वृत्तीयस्यां प्रीत्यया भवति छापासु च प्रीत्ययीपु कावाश्वर्गो निद्रादि या

रम्भमारा नागकुमारा सुयणकुमारा त्रिज्जकुमारा क्षिणिकुमारा दीवकुमारा उदहिङ्गुमारा विसाकुमारा वाउ

शे—महत्त्वमात्रा बाणमन्त्राऽऽ। मिया बसाविया । भजनपत्नी बाजव्यक्त एव्यातिथी पैमानिक । सेवित भवभववासी समविज्ञा प० त० । शिवे भवत्रप
 तो वृगभन कटा त कश्चै— पसरकमार नागकमार सुगण्यथमार विखकमार यन्त्रमार दोषकुमार कदधिकमार चिसिक्तमार बाछकमार यन्त्रिय

अन्तारन्तरितया कल्पवादे मय्यन्तर्धरपि नृत्तम्भी शान्तज्जामयपुरिससह्य । किङ्कमस्मयग्रहे अन्तारिण्यद्वियाकप्पा ॥ २ ॥ सिगद्दारे-नियमितो
 दिग्धपि निग नयान तथ्या-द्व्यलिन प्रावसिय च यकोमापि गवना विवसितकस्योवितसाभाषाययोगान लव्याद्वार-तत्र प्रवृत्तिकाम् तरा
 म तिगय विडादुम् लव्याम् परित्थारविग्रहिक कस्य प्रतिपद्यते पूयप्रतिपद्य पुन सयोस्त्रपि कथ वि द्रव्यति तत्रापि स्त्राविशितुल्ययामु नात्य
 लमस्त्रिष्टामुभते तथापूनामृयसमानप्रवृत्तकालमवतिष्ठत कितलका यत स्त्रावीयवशात्कटित्यय ज्ञान्योप्यात्रभते अथ प्रथमत एव कस्मा हप्रव
 त्तन उच्यते कसकणान वल्लभ्य लमामुविमुदाम पक्रियस्त्राहीमुनउवसकास पुष्टपहिवकउपुख होज्जामयासुविकिष्टिपि ॥ १ ॥ उवससुकिविडास
 व्यायकालवर्धमिधयमदिदपरामु विवकमकाणव लघाविहीरियकलदव ॥ १ ॥ प्यानद्वार-उमप्यान म प्रवदुमाननपरिद्वारविडुद्विकप्रतिपद्यान पू
 यप्रतिपद्य पनरातरौद्रयोपिप्रवति कवल प्रायव निरनुवच वाइ च कावन्मिदिसय मव पक्रियस्त्राहसा पयदुमापव न्यरसुविक्कावसु पवुप

वयो भपचिनिह ॥ १ ॥ एयवद्वावजान उहुमतिवृक्कमपरिकामा राहुमुविभावी इमस्सपापनिरव्यथो ॥ २ ॥ गवनाद्वार अयस्यत खया गम्भा
 प्रतिपद्यान उरवपनः शतसङ्गाः पूवभातपयः । अयस्यतः उरवृत्तो वा अतश्चः पुरुषगवनाया अयस्यत प्रतिपद्यमानाः सप्तविंशति कल्कपत सवत्स
 पूवमतिपयका पुनत्रपय्यत । गतश्च उरवपनः सवत्सराः वाइ च गकउतिलवगवा अकपक्रियवितिसपव उक्कोसः उक्कोसमवकाव सयसाविषयपतुप
 विडवता ॥ १ ॥ सतावाममदका वरसममुक्कासउपयक्रियतो सयमोसवस्ससोवा पक्रियवकावउक्कासाः ॥ २ ॥ अयस्य व यदा पूयप्रतिपद्यकसपमप्या
 वको निगप्यान अय्य प्रविशति तदो मप्रक्षप प्रतिपत्तो कदाचि वृक्कापि मयति पूयस्य वा पूयप्रतिपत्तो प्यव प्रकमया कदाचिद्वक्कः प्राप्यत पूय
 स्य वा उक्कय पक्रियज्जामाकमपकाए होज्जामकविउवकपपलव पुष्टपक्रियकयाविय उवयायकोपुत्तवा ॥ १ ॥ अविगद्दारे-अविगद्दारा धानुविधा
 लपया द्रव्यानिग्रहाः अत्रानिग्रहाः कासांनिग्रहा जायाविग्रहा य एव वा मय्य चरिता इति म प्रय सच्यते यत्र परिवारविशुक्कित्वे त मिय

या वैबलिक सुत्रीणि शेषमिजयस योयिकेवासिभव व सेतमित्याद्यु पर्यहार कर्तव्यं नूत्र सुगमं तदेवं उक्ताः मनुष्याः सुप्रति देवप्रतिपादमार्यमाय ०
 मज्झिमनित्यादि ० अथवे त द्वाः मूरिराष्ट दया द्युतिविधाः प्रकृता सादृश्या-प्रवणवासिभो १ व्यक्तरा २ ज्योतिष्का ३ यैमासिकाः ४ तत्र सयनेषु
 वसन्तोत्यथ प्रीणाः प्रथमवासिकाः पतद्वाहुर्यतो भागजुमाराद्यपथया द्रष्टव्यं . ते हि प्रायो प्राथमेषु वसन्ति कदाचिदावाप्तुं अक्षुरकुमाराः प्राप्युर्यका
 वासपु कदाचि अक्षपु अथ मन्मथानामा वासानाम्बकाः प्रतिविश्याय उच्यत तथानानि यदिदृतात्यस्तः समस्तुरकादि अथः पुष्करलक्षिका सख्यामा
 नि आवासाः कायमानस्यामीना महामकषपा विविधमचिरजमदीपप्रभासितसकलदिक्षुषकवासाइति । अन्तर नाम अयकाशा त वृषका अयकूप
 द्रष्टव्यं विविधं नयननवरावाचरूपस नार येयाते व्यक्तरा साध मन्मथानि रजप्रजायाःप्रथमे रजकावस उपपद्य य प्रत्यक्षं भोजनप्रतिमपथाय अथे
 उपयोक्तव्यमसमाह मध्यमागे प्रवृत्ति नवराक्षयि विद्यग्लोके तत्र तियव्लोके यथा अम्बुहीपहाराधिपते धिजयदयस्या न्यस्मिन् अम्बुहीपे ह्य

दशयोत्रसवस्त्रप्रमाणा नगरी आवासाः विद्ययि लोकेषु तत उह्लोके पञ्चदशवसादाविति अथवा विवतमन्तर मनुष्येभ्यो येयाते व्यक्तराः तथानि
 मनुष्यानापि चक्रवर्तिवासुदवप्रचूर्तीन् वस्त्रेषु पञ्चरति कचि व्याप्तारा इति मनुष्येभ्यो विवताक्तारा यदि या विविधम न्तर शौक्षान्तर वनान्तर या
 आशयद्वय ययात व्यक्तराः प्राक्तनत्वा व भूत्रे काकमन्तरा इति पाठः यदि यानमन्तरा इति पदचङ्कारः तत्रेय व्युत्पत्तिवदनात्म न्तरादि धना
 न्तराणि तपु नवा धानमन्तराः पुपीवरादिना दुप्रपयदपदाभरासन्तिमकारागमः तथा श्रोतयन्ति प्रकाशयन्ति अर्गविति श्रोतीपि विमानानि
 कौर्वादिशेषम्युत्सृज्तिः तपु नवा ज्योतिष्का अथ्यात्मादिन्य इती कश् तपेवर्वादिर्बोधिमुच्यत इत्यच् आदि रिक्तरस्य श्रोप अन्तिचाना व य
 आनायः यदि वा श्रोतयानि शिरोमुकुटोपगूहिति प्रजामयलकवदे भूयोदिमकले प्रकाशयन्तीति ज्योतिषो दवा सूर्यादय इत्यादि सूर्यस्य
 सूर्यान्तरं मुकुटाग्रमागे विन्न वत्रस्य वत्राकारं गृहस्य प्रहाकार तारकस्य तारकाकारं तैः प्रकाशयतीति आह व तत्त्वायेना

स्या स्या द्रष्टव्या यदि पुनः कथमपि लङ्कावनमस्य परिणीतं प्रवर्तते तथा प्ये यो विहरणं वि मङ्गाजानो न द्वितीयपदमा पद्यते किन्तु तत्रैव यथा
 वक्ष्यमा स्मीय योनं विदधातीति उक्तञ्च तद्वयापयोरिरीय मिच्छाकालाविहारकालोऽथ सवासुतस्सुगो पायशप्यायनिदिति ॥ १ ॥ अथावस्यमि
 त्वाथ यद्विहरमाख्योदितवरमावज्ज तत्त्ववच्छादकप्यङ्गुलवच्छादकोगमङ्गाजानो ॥ १ ॥ एतं च परिहारविशुद्धिका द्विविधाः तद्यथा-इत्यरा यावद्विद्वयि
 काय तत्र य वक्ष्यसमाप्त्यनन्तरं तमेव कथं गच्छयास सुपयारुपति तद्वत्तराय पुन कस्यसमाप्त्यनन्तरमव्यवधानेन विनकस्य प्रति परस्यञ्च ते या
 नद्वचिका उक्तञ्च-इतरिययरकस्य विवृणुतेवावच्छादयति अत्र स्वविरक्तस्य यद्वच उपलभ्यते अत्रकस्य अतिदृष्टञ्च तत्रे स्तराद्या कस्यप्रज्ञाया इव
 मनुष्यतेययोनिक्ता उपसर्गाः सद्यापगतिसः आलङ्कृतीवा विपद्या ख वदमा न प्राहु क्तिं यावद्वचयिकाना सुसम्बधुरपि ते हि विनकस्य प्र
 तिपारस्यमाना त्रिनकनप्राप्तम नुविदधति निनकविपकाना यो पधर्गादयः सुसम्बधुरीति उक्तञ्च इतरियाः सुवसगा आतकावयकायनइयति आ
 नवच्छादयकनइया इति तथा मूला सोजोच्छादकोप सम्परायः कथायोदयो यत्र तद्वृत्तसम्परायं त च द्विधा विशुच्यमानक सक्तिरयमानक सक्तिरयमानक च
 तत्र विशुच्यमानक उपकमन्विमुपक्षमन्विवा समारोहतः सक्तिरयमान नू पक्षमन्विवाः प्रप्यवमानस्य अथास्यातमिति अथ शब्दो यथार्थं आह
 अमिविधो यथातथ्यन आनविचिन्ता वा यस्यातं कथित अकथायं चारित्र्य मिति तथा स्यात् उक्तञ्च अत्रवद्वोदइत्य आर्यामिद्विधीएकविधय
 क्ताय वरवकसायमुदय तमइच्छायाऽदकथार्थं ॥ १ ॥ यथास्यातमिति द्वितीयनाम तस्या य सम्बन्धः । यथा सुवस्मिन जीयसोऽथ स्यातं प्रविष्टु कस
 याप नवति चारित्र्य मिति तथैव यत् यथास्यात तच्च द्विधा तादृश्याक केवलिक च तद्वत्तादृश्याकमुपस्थात्तमोऽह गुणस्यानक जीकमोहगुणस्यानके

दुमारा यणियकुमारा तसमासनुद्विहा पक्षता , तजहा-पञ्जसगाय स्यपञ्जसगाय सेह जनगद्यासी से

दमार १ । पसरजमार नागकमार साञ्जमार विषाञ्जमार यमिञ्जमार दोपञ्जमार वडभिञ्जमार द्विजिञ्जमार वाञ्जमार कुनिञ्जमार १ । एते स
 मासया दुविहा प ॥ १ ॥ ए सचपयो दावभर चद्या त कथिणे-पञ्जतयाय अपञ्जतयाय । पर्वता अपर्वता । सेतं भवचक्राधो । एतस भवनपतो ऋ

या वैवस्विक सप्तमि ऋषिसिञ्जवम योनिर्गोवस्तिप्रव व सेतमित्याद्यु पश्यंश्चर कवचं धृष्ट सुगमं तदेवं उक्ताः मनुष्याः सम्यग् देवप्रतिपादनार्थमाच ॥
 सचित्तमित्यादि व अथके ते दद्याः मूर्तिराद्य दद्या यतुर्बिषाः प्रच्छसा कथया-प्रवमवासिनो १ व्यन्तरा २ ज्योतिष्का ३ वैमानिकाः ४ तत्र प्रथमेपु
 यद्यन्तोस्य स्रीसाः प्रवमवासिनः यतद्वापुस्ततो नागधुमाराराधयथा ग्रहव्य ते हि प्राणो प्रथमेपु वसन्ति कदाचिदाबासपु अमरकुसारा प्राधुर्यका
 वासपु कदाचि भूवमपु अथ मवमामासा वासाभाष्यकाः प्रतिविद्याय उच्यत प्रवमानि वक्षिपुमान्यन्ताः समस्तुरेखाणि सधः पुष्करकखिका सस्यामा
 नि आवासाः कायमानस्यासीवा मदानकथा विविधमखिरजप्रदीपप्रजासितसकलदिक्चक्रवासाइति । व्यन्तर नाम अथकाश्च त भूवका मयकूपे
 द्रष्टव्य विविचं मवनमगरावासरूपम न्तर वेपाते व्यन्तरा सात्र मवनानि रथप्रजायाः प्रथमे रथबायके उपपद्य य प्रत्यकं भाजनशतमपद्याय अये
 ऽष्टयोजनशतप्रभावे मयमाने प्रवन्ति नगरास्थयि तिर्यन्लोके तत्र तिर्यन्लोके यथा ज्व्यूहीपद्वारार्थपते विजयपद्वस्या ज्योस्मन् जम्बूद्वीपे हा

दक्षयोऽजमष्टप्रभाया नगरी आवासाः त्रिष्टुपि लोकायु तत ऊर्ध्वलोके पञ्चकवमादिविति अथवा विगतमन्तर मनुष्यस्यो येपाते व्यन्तरा। तस्यादि
 मनुष्याभेनपि चक्रबन्धिसासुदेवप्रजतीन् धृत्यवदु पचरति कचि ह्यन्तरा इति मनुष्यस्यो विमतान्तरा यदि वा विविचम न्तर श्रौतान्तर प्रमान्तर वा
 आश्रयकूप यपांत व्यन्तराः प्राकृतत्वा च भूमे वाहमन्तरा इति पाठः यदि वातमन्तरा इति पदवस्थारः तथेय व्युत्पत्तिवनामम न्तरादि यथा
 न्तराणि तपु तथा वानमन्तराः पुषीदेरादित्वा तुल्यपदपदाभरासर्वानिमकारागमः तथा द्योतयन्ति प्रजाद्यपन्ति जगदिति द्योतीत्यि विमानममि
 बौद्धादिकीसद्व्युत्पत्तिः तपु तथा ज्योतिष्का सप्यात्मादित्य इती कथं तथेनर्वावर्षदेधिसुसुधत इकथं कादि रिक्तारस्य क्षोप अर्नन्निषाभा स ए
 यन्माया यदि वा द्योतयानि अिरोमुकुटोपगूहन्तिः प्रभामथप्रसकषये धूर्पादिमकसैः प्रकाशयन्तीति ज्योतिषो दद्या सूर्योदय स्तथा ि सूर्यस्य
 सूर्योदारे मुकुटाग्रभागे चिन्म चद्रस्य चद्राकारं मरुत्स्यनलवाकार यइत्य यद्वाकार चारवस्य तारकाकारं ते। प्रकाशयतीति आद य तत्वायंजा

एषा स्या वृष्ट्या यदि पुन कश्चमपि जम्बूद्वीपस्य परिधीय भवति तथा प्ये यो विहरस्य वि महराजो न द्वितीयपदमा पश्यते किन्तु तत्रिय यथा
 कश्चममा स्तोय योर्ग । वदथातीति उक्तञ्च तदयाण्योरिरीय भिक्षुकाकाविहारकालोत्त सखासु उरस्सगो पायशय्यायनिदृति ॥ १० अथायसमि
 साञ्च अविहरमायोविमलवर्मावञ्च तत्येवकाङ्काप्यकुलकृष्णोमहराजो ॥ ११ यत च परिहारविशुद्धिका द्विविधा तद्यथा-इत्तरा यावत्तद्वि
 काय तत्र ये कस्यप्यमास्यनन्तरं तमेव कस्य गञ्जवास मुपयास्पति तद्वत्तराय पुन कस्यप्यमास्यनन्तरमव्यवधानेन विमलकस्य प्रति परस्यन्त ते या
 वरकाचिका उक्तञ्च-इतरिरियरकस्य विमलकस्येवावकाचस्यति अत्र स्पष्टिरकस्य गृहस्य उपलब्धस्य स्त्रकस्य वतिवृष्टस्य तत्रे स्तरावा कस्यप्रज्ञाया द्वय
 मनुष्यतैयग्योनिहता उपसर्गाः उद्योपातिनः आतङ्क कतीवा विपद्या य वदमा न प्रातु खानि यावत्कचिकानां सम्भवयुरपि ते हि विमलकस्य प्र
 तिपारस्यमाना अन्नकस्यप्राप्तम नुविद्वन्ति विमलकस्यिकाणा बो पसर्गादयः सम्भवन्तीति उक्तञ्च इतरियाजुवसगा आतंकावयवायनइवति का
 वकचियाकस्यद्या इति तथा भूत्सो लोनांकावञ्चय सस्यरायः कथायोदया यत्र तस्मैवसस्यराय त च द्विवा विभुञ्जमानानं सक्रियमानानं च
 तत्र विभुञ्जमानक सपकञ्चविमुपशमञ्चिवा समारोहतः सक्रियमानान नू पशमञ्चिवाः प्रपञ्चमानस्य कथास्यातमिति कथं गृह्यो यथार्थं यात
 अमिचिरी यथातथ्यन अमिचिपिना वा यरस्यातं कथित कथायं चारिञ्च मिति तदा स्यात उक्तञ्च अहसहो-इत्य आर्त्तानिचिरीरकस्यिन
 स्याय वरककसायमुदय तमहससायसहस्रकाय ॥ १४ यथास्यातमिति कं द्वितीयमाम तस्या य मन्वर्थः । यथा स्यास्मिन् जीयलोस स्यात प्रष्टितु कल
 पाय नवति चारिञ्च मिति तथैव यत् यथास्यात तच्च द्विषा ताट्यस्त्रिक क्षेत्रसिक्क न्न तत्रकाट्यस्त्रिकमुपशान्तमोह गुहस्यानक सीवमोहगुहस्यानक

कुमार यणियकुमारा तसमासतद्विहा पक्षधा , तजहा-पञ्जसुगाय अ्यपञ्जसुगाय सेत नागवासी से

३३२२ । यमरजमार नागजमार साञ्चकुमार विद्याजमार चम्यजमार होपजमार उदधिकमार विमिजुमार वायजमार स्यामिजमार १ । एते म
 मासधा दुविहा प त । ए सस्यपवी शवभद कथा त कश्चिदे-पञ्चतयाञ्च यपञ्चतयाय । पक्षधा अयर्थाः । सेतं मञ्चकवासी । एतस्य भवमपतो क

१० तपसाद्वावसविषा तद्वापा-वाहा १ इह २ तुम्बरवः ३ भारदाः ४ स्वापियादिकाः ५ भूतकादिकाः ६ कादम्बा ७ महाकादम्बाः ८ रेवता ९
 श्रियावम्बाः १० गीतरतयो ११ गीतयक्ष १२ यथा कयोद्विधा स्तथापा-पूजयद्वाः १ मारुजद्वाः २ सलजद्वाः ३ हरितजद्वाः ४ सुमनाजद्वाः ५
 ध्यातिपातिकजद्वाः ६ मुजद्वा ७ सुवताजद्वाः ८ समय्यपक्षः ९ दन्तापिपतयो १० वमाहराः ११ रूपयक्षाः १२ पक्षोत्तमाः १३ राक्षसाः सुसविचास्तथा
 या-प्रीमाः १ मङ्गाप्रीमा २ विष्ठा ३ विनायका ४ उत्तररुक्षाः ५ राक्षसः ६ राक्षसाः ७ जूतामथविषा स्तथापा-सुक्ष्मा १ प्रतिरूपा २ कालि
 रूपा ३ जूतोत्तमाः ४ स्कन्दका ५ महास्कन्दका ६ महावगाः ७ प्रतिष्ठाकाः ८ बाकाजगा ९ पिशाचाः पौष्टयविषा स्तथापा-कूप्तावहा १
 पक्षकाः २ जापा ३ कर्तिका ४ कासाः ५ महाकासा ६ वाहा ७ बाबोहा ८ तालविष्ठावाः ९ मुपरपिष्ठावाः १० अक्षसारका ११ दहाः १२ विव

पत्रयिहा पण्ना, तजहा चदासूरागहनस्कप्तातारा तसमासह दुयिहा पयप्ता, तजहा पज्जत्तगाय श्रुप
 ज्जत्तगाय स कित जोडसिया स कित यमागिया २ दुयिहा पयप्ता, तजहा कप्पायगकप्पाईयाय सकिंत
 कप्पावग्गा २ वारसयिहा पण्ना, तजहा सोहम्मा दुसाणा सणकुमारा माहिदा बनलोया लनया महासुक्का
 सहस्सारा श्रागया पागया श्रागया श्रुमुया तसमासह दुयिहा पयप्ता, तजहा पज्जत्तगाय श्रुपज्जत्तगाय

क-प जलमास पपञ्चनमाव । पञ्चासि अपकासा । सत कारसिया सकिंत वमागिया दु बहा प त पवस ज्वातिपी कद्धा, विव वैमानिक दायववा
 र कद्धा त कद्धे-कप्पावग्गा । कप्पावग्गा कप्पावग्गा । सकिंत कप्पावग्गा २ वारसयिहा प त । विव कप्पावग्गा १२ मट कद्धा त कद्धे ।
 नीदया इमाव । सवतकम रा माहिदा बंभाखाया सतका सहा सहसाए पायया यायया पायया पयया त समासचा दुविहा प त । भोवम इमा
 त ममत्तुमार माहत्तुमार नीक मा १६ युठ मत्तुमार पाजत प्र जत पारव पण्णत ते ससपवको दावपकार कद्धा त कद्धे-पण्णतगाय पपञ्चतगा
 व । पण्णत पपञ्चत । सत कप्पावग्गा सकिंत कप्पा या २ दुविहा प त । ए कप्पावग्गा कद्धा विव कप्पावग्गा दावमेद कद्धा त कद्धे-गविल्ल

पयसत् घोतयते इति घोतीति विमानानि तेषु प्रवा घोतिकाः यद्व्यास्योतिपी देवा ज्योतिरिय ज्योतिषा मुकुटे शिरो मुकुटोपगूदिति प्रजा
 मयल्ले सुगन्धे सुयवद्रुग्नसहस्रारकाणा मणल्ले येषा स्वर्णिर् विराजमाना द्युतिमसा ज्योतिषा ज्वलन्तीति तथा विविच मन्यते सपद्मज्यम
 पुष्पवद्वि श्रीरे त्रिति विमानानि तेषु प्रवा देवानिकाः सम्यत्वे तथा मय कमेयप्रवासमिधिरसुराह-सन्निपत्यशवासी इत्यादि ० अमुरा द्य त
 कुमार य अमुरकुमारा पर्य नागकुमारा इत्याद्यापि भावनाय सपक्षसा दत्त कुमार इति व्यपदिश्यति उच्यत कुमारसंघमात् संचाहि-कुमा
 राये तत्कुमारपुत्रपुत्रसन्निपत्यतः अगाराभिप्रायकतविशिष्टशिशुसरोत्तररूपकियाः कुमार इति किंनरा इत्यादि किंनरा दक्षविषा स्तद्यथा किन्नरा किपुरुषा २ किपु
 इत कुमारद्वयशिवर्चरागाः कीलमघरा द्य तत कुमार इव कुमार इति किंनरा इत्यादि किन्नरा दक्षविषा स्तद्यथा किन्नरा किपुरुषा २ किपु
 सयोत्तमाः ३ किन्नरोत्तमा ४ इदमगमा ५ रूपशालिना ६ अर्जुनिका ७ ममारमा ८ रतिप्रिया ९ रतिप्रिया १० किपुरुषा दक्षविषा स्तद्यथा पुम
 याः १ सत्युषाः २ महापुष्या ३ पक्षपक्षयनाः ४ परुषोत्तमा ५ अतिपुष्या ६ महादवा ७ मरुत ८ मरुमतिना ९ यदाश्वत्थः १० महोरगा दक्ष
 विषा स्तद्यथा मुक्ता १ मीनशालिनाः २ महाकाया ३ अतिकायाः ४ रक्षयशालिनाः ५ मनारमा ६ महावरा ७ महपयसा ८ मरुकाता ९ माथ्यतः

कित याणमतरा २ अष्टविहा प०, तजहा किन्नरा किपुसिमा महोरगा गधव्हा जस्का रस्कसा नूया पिसा
 या ते समासनुद्विहा पयसा, तजहा पञ्जतगाय सेश याणमतरा से कित जोद्विसिया २

द्या । सन्निर्त वाचमतरा २ अष्टविहा पं त । द्विमे वाचमतरा देवतामा ८ भेदे अद्या ते अष्टवे--किन्नरा किपुसिमा महोरगा गधव्हा अस्का राखना
 भूवा पिमाबा पत समासया दुविहा प त । किन्नर किपुसय महोरग गधव यय राधस भूत पिमाः ७ प सपयवका दायमदे अद्या ते अष्टवे--पयस
 माय पयसजगाद । पर्यासा अपयसीसा । सत वाचमतरा सन्निर्त जोद्विसिया २ पयविहा प त । त पतस वाचमतरा अद्या, द्विमे व्यातियोना ५ मे
 अद्या त अष्टवे--अद्या नूरा गद्या मरुता तारा एते समासया दुविहा पं त अष्ट मय अष्ट मयच तारा ५ । प सपयवको दायमदे अद्या ते अष्ट

पञ्चमाः पञ्चमपञ्चाविमर्शनीयं ॥ तत्र तारव्या तद्यप्युद्धी यथापञ्चालदेगगियाविहः पञ्चाला इति ॥ इति श्रीमलयगिरिविरचिताया प्रज्ञापना टीकायां प्रथम प्रज्ञापनाय पद समाप्यतमिति ॥ १ ॥ यथाय १८२३ ॥ त द्य व्याख्यात प्रथम पद सम्माल द्वितीय मारज्यते । तस्य या य मतिमन्यथाः प्रथमपद पृथिवीकाधिकार्य प्र कृपितः इह तु तथा मय स्थानानि प्रकृप्यत तत्र यद् मादिसू-कादिषु जत इत्यादि ॥ कश्चिदि ॥ कश्चिदि न खम्भ्यायास्यासकार ॥ न प्रवृत्तति ॥ परमगुणीमश्रु वादरप्राथमीकायिकामा यथासामा स्थानानि स्यान्नादाभि प्रकृताभि प्रकृपितानि एय गौ

ज्ञाय सेत गेविज्ञगा स कित अणुसरोयथाहया २ पचयिहा पणसा, तजहा त्रिजया वैजयता जयता
अपराजिया सञ्जुठसिद्धा तेसमासन् दुयिहा पणसा, तजहा पञ्जसगाय अणुसगाय सेत अणुसरोयवा
इया संह कप्याइया सेत येमाणिया सेत देया सत्त पचिदिद्या सप्त ससारसमागयाजीयपन्तगणा सेत जी
वपन्तगणा सेत पन्तगणा पन्तगणाए पठमपयसमत्त ॥ १ ॥ कहिण जन । वादरपुठयिकाइ
याण पञ्जसगाण ठाणाणिगणा प० ? गायमा । सठाणिण अणुसुपुठयीसु तजहा-रयणप्यताए सक्करप्य

तिन कथा वैमानिक कथा । सेत देया सत्त पचिदिद्या ससारसमागयाजीय पणसा सेत जीव पणसा सेत पणसाए सगवइए पठ
। परं मयण । एतमे देवता कथा एतमे पचिदिद्या कथा एतमे ससारसमागयाय पणसाएताना पचिकार कथा पचिसे पठ पञ्चोकाकाटिक कथा
इह दूत्रपठ जीये अपत्रवाना ठाम कहेहे-एतमे पणसाजीय ससारसगाण समाप्त कथा ॥ १ ॥ कश्चिदभते वादरपठनोका
याण पञ्जसगाण ॥ । किङ्का अभयन् वादर पञ्चोकायना पचिदिद्याना थानक कथा ॥ । गायमा सगुणपठनोत त रयणप्यताए सगव
ए ॥ पचिद्य धूम तम तमतज्य इयिण ॥ । रयणपमा गववरपमा वासुधपमा धूमपमा तमतमपमा कचो।गकासिद्धो ८ ।
। वासाए पायासे सुभनसेस मयपठनस चिरणसु चिरवाणकिवास चिरपयसकसु कठुकायकपेसु विभासेसु । पञ्चोकाये पथोकाके पातासकमे भूम

६। १३ मध्याविदहा १४ लूणीका ५ वमपिशाचा १६ इति ७ कण्यायणा कण्यालीयति ॥ कल्याणार स च इन्द्रमाभानिकष्टपत्तिज्ञाविश्वस्यारुरूप
समुपगताः सोऽयमज्ञानादिद्वयसाकानिधार्मिक यथोक्तद्वय कल्प्यमाता प्रतिलाला कल्यातीता अथलनाथस्तमैवयकारिमिवाग्नि स स्मि सर्वव्य
इमिन्द्रा स्ततो प्रवर्ति कल्यातीता कल्पोपमान दक्षयति सादृशीमाकाइत्यादि ७ सीयमद्वयलोकाधियासितः सोऽयमा इशानद्वयलोकाधियासितः

सप्त कप्यात्रगा स कित कप्याईया २ दुयिहा पखात्रा , तजहा गेयिजगाय अगुत्तरायथाइयाय स किन
गेयिजगा २ नवविहा पखात्रा , तजहा हिंठिमहिंठिमगेयिजगा हिंठिममज्जिमगेयिजगा हिंठिमउयरिम
गेयिजगा मज्जिमहिंठिमगेयिजगा मज्जिम २ गेयिजगा मज्जिमउयरिमगेयिजगा उयारिमहिंठिमगेयिज
गा उयारिममज्जिमगेयिजगा उयरिम २ गेयिजगा तसमासच दुयिहा पखात्रा , तजहा पज्जसगाय अयपज्ज

गाय अयलराववाकाद । ८ म ३ गेयैय ५ अयलराविसा । मकित गयिजगा २ नवविहा प त । द्विव गेयैय कासोना नमभद कथा ते कइके ।
इंठिम २ य कप्या इंठिममज्जिममयिजगा अंठिमउयरिमगेयिजगा मज्जिमइंठिमगयिजगा ४ । प्रयस गेयैयका इंठिमागेयैयक प्रयस यिजगा उपरि
कोगेयैयक प्रयस यिजगा मज्जिमगेयैयक इति य यिजगा प्रयस गेयैयक इति य यिजगा मज्जिमगेयैयक । मज्जिम २ गे मज्जिमउयरिम गे उयरिमइंठि
म गे उयरिममज्जिम ग उयरिम २ गे यज्जगा ५ । काति य यिजगा य जा गेयैयक सोका यिजगा प्रयसगेयैयक यीजा यिजगा मज्जिमगेयैयक तीजा
यिजगा उपरिमागेयैयक । एत ममासथा दुविहा प त । प मयवे कायमकारे कथा तेकइके । पज्जलमाय अयलगाय । यवीता अयवीता ।
मत्त मवेयगा । एतस गेयैयकइगा कथा । साकित अयलराववाकाय २ पयविहा प त । द्विवे यमलरावो कइके त यमलरावोना यावमदे कइके ।
यिजगा वययता यवीता अपरायिजगा मज्जिमसिहा एत ममानथा दुविहा पयलगा तजहा । यिजक वेययल अयल यपरान्त मवीयमिह संयवे नाप
भइके । पज्जलगाय अयलगाय । यवीता अयवीता । मत्त यमलराववाका सेत कप्याईया सप्तवेमायिवा । एतस यगुत्तरवासी कथा पते कप्या

पञ्चानां पञ्चमयत्राविमापनीयं च तत्र तात्पर्या शब्दपदयोः यथापन्थासर्गजगित्यादिभिः पञ्चानां इति ॥ इति श्रीमत्सूर्यगिरिरचित्तायाम् प्रज्ञापना
टीकायां प्रथम प्रज्ञापनास्य पद समाधत्तमिति ॥ १ ॥ पञ्चाय १८२५ ॥ त इत्य व्याख्यात प्रथम पद सम्प्रदात द्वितीय मारज्यते । तस्य चा य
मन्त्रिम्यत्रः प्रथमपद पृथिवीकायिकादय प्र कृपिताः इह त तथा मव स्थानानि प्रकृप्यत तत्र च य मावि सृष्ट-कश्चित् प्रत इत्यादि ॥ कश्चित् ॥ कश्चित् ॥ कश्चित् ॥
न चम्गुलानां स्वात्मकार च सदतति ॥ परमगुर्वीमयश्च यादरपृथिवीकायिकानां पयाप्तानां स्वस्थानादानि प्रकृतानि प्रकृपितानि एव गी

सुताय सेत्त गेयिज्ञगा स कित् छुणुसुरीयथाहया २ पचयिहा पयाप्ता, तजहा थिजया वैजयता जयता
छुपराजिया सगुठसिद्धा तेसमासत्त दुयिहा पयाप्ता, तजहा पञ्जसगाय छुपञ्जसगाय सेत्त छुणुसुरीयवा
इया सेत्त कप्पाइया सेत्त धेमाणिमा सेत्त देया सत्त पचिदिया सत्त ससारसमाथणजीयपन्तयगा सेत्त जी
यपन्तयगा सेत्त पन्तयगा पन्तयगाए पढमपयसम्मत्त ॥ १ ॥ कहिण जत्त ! यादरपुठथिकाइ
याण पञ्जसगाण ठाणानिगणा प० १ गीयमा । सठाणेण छुठसुपुठवीसु तजहा-रयणप्यताए सक्कारप्य

तीत कक्षा वैमानिक कक्षा । सेत देवा मत्तं पचेत्ति य ससारसमावच्छिन्न पन्तयगा सेत जीय पञ्चसगा सेत पञ्चसगा पञ्चसगाए मगवसए पढ
मपयं मन्त्राय । एतत्ते देवता कक्षा एतत्त पचेत्ति य कक्षा एतत्ते ससारसमावच्छिन्न पञ्चापनाना यदिकार कक्षा पचिसे पढ पञ्चीकावाटिक कक्षा,
किं पृथपद श्रीमन्त्रे अवच्छिन्ना ठाम कचेत्ते-एतत्ते पञ्चसगा मज्जतीना प्रथमपद ससारत कक्षा । १ । कश्चित्ते यादरपुठवीका
एतत्त पञ्चसगाएव । किञ्च प्रेमगन्ध यादर पञ्चीकाकला पचोदयाना वासक कक्षा च । यायमा मगुल पढमपुठवीस त रयणप्यभाए सक्कार
र सु १ पचय धूम तम तमतकण ईविण ८ । ररमपभा शक्करपभा वाडुडपभा पढमभा धूमपभा तमपभा तमतमपभा कचोगलासिद्धको ८ ।
पञ्चसगाए पायास मुमयवेस भवपप्यठस थिरपसु थिरयावदियासु थिरयप्यठसु कटुकायकप्येसु विमापेसु । पञ्चोससे पथाकाके पातासक्कमे सुय

तमस्यामिना प्रसेकते जगदात्माः सद्मान्स्यामी गो० सहादेवमित्यादि। ननु गीतमोपि जगदा भुपधितकुलमसौ गणपर नीयतरत्रापितमायुका पदयदवसायावासासमस्तुनताभावककयापक्रम एतद्व्यपूषवित सार्वाकारसम्पिपातो विबलितायप्रतिष्ठानसमावृत एव तस बिभस्य पृच्छति न हि बनुदद पूयदिदः सर्वैरुत्पुतक्षत्रियसुसन्वितस्य सिन्धिरमाज्ञापनीयस विदितमस्ति यतश्च सहाद्भयवय साद्भयवय पुरोउपप्लेभ्या । नयद्वयथा इसी विद्याद्वयसद्वयमस्या ४ १ ॥ सत्य मतन् कवल कामकद गीतमस्यामी जगदान्म्य इव रत्नयय्य प्रतिपाद्या तसम्प्रत्ययनिमित्त विविचिता य पृच्छति यति व प्राय सद्य नयवरप्रसीयकरानवचनरूप सूत्रमतो जगदात्मा यथाभो योत्यमद सूत्र रचयति अथवा सुस्तयति तस्यापि नकचता गीतमस्यामिना आद्याग कृत्यस्यागान् सत्त्व-न हि नामा भाजोगः कृत्यस्त्वस्य कस्य चिका रस । ज्ञानावरणीयं हि ज्ञानायकरप्रकृति कर्म ११० ततो ज्ञातसन्नय सन् पृच्छतीति न काद्य होयः भायमा इति साकप्रपितमद्यायिस्त्रिगोत्रानिचायकापमामप्रपृष्यति एगीतम । गीतमगीय ति ज्ञावाय ॥ सहाकच इति ॥ स्वस्थान यत्रा सते यादरपृषिवीकायिकाः ययासा यासमा स वयादिविजागेना दसु गम्यन्त तस्यस्यामिति प्रायः स्वस्थानप्रवृत्त मुपपतिसमुद्गातत्वाननिवृत्त्यये तत्र स्वस्थानम स्त्रीकृत्यति प्राक् सहासु पृषिवीपु सवन्न यादरपृषिवीकायिकानां ययासा

ज्ञाए यालुपप्यन्नाए पकप्यन्नाए धूमप्यन्नाए तमप्यन्नाए तमतमप्यन्नाए अहेसप्तमाए हसीप्यन्नाराए अहोलीए पायालेसु नयणसु नयणपत्यर्केसु निरएसु निरयावल्यासु तिरपपत्यर्केसु उहुलीए कप्येसु त्रिमाणसु वि

इह नञे भगवतिनिवासे नःकदकोचकये नरकावास पावलोयेवि नरकमे पावले कदमाक कण्ठदेवमाक भोपमो।द्वके विमान । विमानवसिण वि माकपत्यर्केसु तिरियकाऽ टकम् कुञ्ज ससम शिखरीस यभारम विजयस नन्दारस वासकरपयसस वेद्यासु वेदबास वारस तारकेसु वेवेसु समसस इत्यथ पावरपुठरीकायाच पय्यतमाच ठावाच कदवाएकंठाका । विमानपावलिता विमानेनाम विमान ते प्रतरे तिरिङ्गयाक कपट् पर्वतके पूटे सिधायत । इटमपपयवत त्रिखरसहित पवत तेनाम प्राम्पार विजय कण्ठादि नयस्कार विद्युत्प्रमादि प्रपते नयभरपयवत विमनन्त्यादि नयमप्रादि पदिक् नयरोप

नं स्थापनीति योगः, तामया ह्रीं पुष्पिनीममद्याह माह-तत्रैत्यादि॥ तथाया रत्नप्रज्ञायार्था यावदष्टम्या भीषत् प्राग्जारायार्था तथा ऽप्योसोक्ते पातालसेतु
पातालकसद्यः वनयामुत्तमप्रतिपु प्रवक्तव्यं निमित्तायायासकृत्पु ३३ प्रत्यययश्चन भवमानामव कवसानामहयं प्रवक्तव्यं
लटयश्चन तु प्रवक्तव्यमप्यभिरासस्यापि तथा भरकपु प्रकीर्तकपु नरकापासेषु नरकावलिषु भावसिद्धाव्यवस्थितेषु नरकायासपु भरकप्रस्त

माणायालियासु धिमाणापत्यक्रेसु तिरियलोए टकसु कूरेसु सलेसु सिहरीसु पज्कारेसु विजयसु यस्कारेसु
यासेंसु वासहरपछएसु वा घेलासु घेइयासु दारसु तोरणसु दीवसु समुदसु एल्यण यादरःदुदधीकाइयाण

दि जगतीश्वर विष्णवादि तारकजारादिसवषी वषे छसकहोप समुद्रप्रते ठामे पुनोत्थानक ज पर्याप्ता पाऊछा मागवे तेवेव। कोतकाएव समकवे पुनोत्थाना अपसवतिना कश पर्याप्ताना ठामकछा। अपवका सुवछा। कावका पसविल्लभाये समुद्राएव कावका असविल्लभागी सुहावेवं। का व त पसव्यतमेभागे समहातपाचो काकन पसव्यातमेभागे स्वस्मान एतवभा पत्तरावन कते। कायका पसविल्लभागे कश्चित्ते कासरपुठवोका इवावं पसव्यतगाव ठावाच प। काकन पसव्यातमेभाग ठामकवे, किं किही मगवन् वादर पुज्जिकाइयाना अपप्याप्ताना ठामकछा। गादमा जये व वायरपुठवोकाइयाच पव्यतगाव ठावा। हेगीतम विहा वादरपुज्जिकाइया पर्याप्ता अपर्वात्ताना ठामकछा। तरेवेव वायरपुठवोकाइयाच अपव्य तगाव ठावा पे। तिही वादर पुज्जिकाव अपर्वात्ताना ठामकछा। जवका०च समुद्राए सुहावेव कायका पसविल्लभागे। अपवयो स मव त मवकागे मरवसमहातन दखजे स्वस्मानकोकने अपसव्यातमेभागे। कश्चित्ते समुद्रपुठवोकाइयाच पव्यता अपव्यतगाव ठावाप। किही भ मवन् पुज्ज पुज्जकाव पर्याप्ता अपर्वात्ताना ठामकछा। गावमा समुद्रपुठवोकाइया पव्यता। अपव्यता ते सवे एगविहा अपविसा अपावता। ज्योतम सूज्यपर्वता अपर्वात्ता पुज्जिकोकावमे सर्वको एकविधै विग्रवरहित किस पर्याप्ता तिम जीविवा। सुवकाव परियावपगा प। स वनाव कापारस जे इवका कछा। समवाचका। चहा अमव पावकावन्तो। कश्चित्ते वायर द्राउकावाच पव्यतगाव ठावा प०। किही

तमस्त्रामिना प्रयेकते जगदान्धारी गो० सहायेकमित्यादि। ननु गीतमोपि जगदा भूपचित्तुगुलभूतो मणपरः तीयकरज्जापितमायुका
पदयत्रजसाप्रायासप्रकटमुत्तमान्धारावदवश्यापशम सतुद्वयपूर्वावत् सवासरस्यधिपातो विवक्षितायप्रतिज्ञाभसमाश्रित एव तत किमप्य पृच्छति न हि
जनद्वयपूत्रविदः सर्वार्थकटुयुतलक्षिसुमन्वितस्य किञ्चिदप्राज्ञापनीयम विदितमस्ति यतश्च सुखादयविशेष साङ्गजवापुरोउपपञ्चना । भयस्यमया
इत्यसौ विषयावपुसकडमत्या ० १० सत्य मन्तत कवल कामकथ गीतमस्त्रामी जगदान्धारी मूढमतो जगदान्धारी यस्यामो पात्यमव सूत्र रचयति अथवा सुक्तयति तस्यापि
यै पृच्छति यदि न प्राप सवत्र गणवरप्रसङ्गीधकरानवचनरूप मूढमतो जगदान्धारी यस्यामो पात्यमव सूत्र रचयति अथवा सुक्तयति तस्यापि
गवक्षता गीतमस्त्रामिना आश्रय कटुस्वभावात् उक्तम्-न हि मामा माजोगः कटुस्वस्य ह कस्य चित्ताः । ज्ञानावदरक्षीय हि ज्ञानावदरप्रकृति
कर्म ११० तता ज्ञातसद्यम् सन पृच्छतीति न कायि द्वेयः नायमा इति साकप्रचित्तमङ्गविशिष्टगीताजिपाथकापमामवपृच्छतिः प्रगीतसः । गीतमगीत्र
ति मावाय १ सहायक इति ० स्वस्थान यथा सत सादरपूजिबीकायिकाः पयासा य वणादिविज्ञानेना दप्तुं शक्यमस तस्वस्थानमिति ज्ञायः
तस्यानपश्य मुपपातसमुद्गातस्थाननिवृत्त्यर्थे तान स्वस्थानम स्वस्थानम श्लोक्यति ज्ञात अष्टासु पृथिवीषु सवत्र यादरपूजिबीकायिकाना पयांस

ज्ञाए बालुयप्यज्ञाए पकप्यज्ञाए धूमप्यज्ञाए तमप्यज्ञाए तमतमप्यज्ञाए अहेसप्तमाए हसीप्यज्ञाए अहोकोए
पायालेसु नवणसु नवणपत्यकेसु निरणसु निरयावलियासु तिरयपत्यकेसु उहुकोए कप्येसु निमाणसु वि

एक नके मरमपतिनिवासै न कपकोकप्ये मरकावास पावसोयैचि मरकने पादके कईभावा कथयेवनाम योपनी।दके विमान । विमानवखिए दि
नाचपत्यनु तिरिवका० टकम दूकन सकम सिद्धाय जगरेम तजएस वल्लारस बासरपरपणस बेकासु बेकास वारस तारबसु दोवेसु समइसु इत्यव
पावरपुठबीकाइवाच पञ्चमगाच ठावाच कववाणठेठावा । विमानपावसिका विमानेनाम विमान ते प्रतरे तिरवकाच 'कपट' पदंतेके कूटे सिद्धायत
। कूटययपवव विवरसुदित पदत तेनाम प्राकार निजय कञ्चादि यमकार विष्णुप्रमादि प्रवर्ते यवधरपवत विमवन्नादि बधमप्रादि नदिब जपुदोप

[illegible]

माणात्रालियासु विमाणपत्यक्रेसु तिरियलोए टकसु कूरेसु सलेसु सिहरीसु पज्कारेसु विजयसु अस्कारेसु
यासेंसु यासहरपहएसु वा वेलासु येइयासु दारेसु तोरणसु दीवसु समुदसु एत्यण वादरनुठनीकाइयाण

दि ननतोहार विजवादि तारवधारादिसवयी यकी छु मवहीप मनुद्रुपते ठामे पूर्वोक्तानक व पर्यता पाऊया भागवै तेवेव कोतनाएव समक
 पुत्रोकावना चमलगतिना लश पर्यताना ठामकडा उपवना सबलाक । कावळ पसविळाभाज समुपाएव सायस समविळाभाजी सडावेव । या
 क त चमळ्यातमेभागे समहातयायो काकने चसळ्यातमेभागे कळ्यान रतनभा पळाराकग जते । कायस पसविळाभागे कडिचभते वावरपुठवोका
 र्दयाचं चपळतनाच ठाचाच प । काकन चसळ्यातमेभाग ठामकडे, चिचे किडी भगवन् वाट्टर पुळिवाकाइयाना चपवात्याना ठामकडा । यावना जरुधि
 व वावरपुठवोकाट्याच पळतनाच ठाचा । ज्योतम जिडी वाटरपुळाकाइवा पर्यता चपवात्याना ठामकडा । तत्वेव वावरपुठवोकाइयाच चपळ
 तनाच ठाचा पे । तिडी वाट्टर पुळाक व चपवात्याना ठामकडा । उववाएव समुपाएव सबलाए सडावेव कायस समविळाभाजे । चपळवो स
 मज न सबलाके मरवसमहातन वळकडे क्षळ्यानळाकने चसळ्यातमेभागे । कडिचभत सडसपुठवोकाइवाचं पळना चपळतनाच ठाचाप । किडी भ
 गवन् मूळ पुळाबाय पर्यता चपवात्याना ठामकडा । गावमा सडसपुठवोकाइवा पळना चपळना व चपळता ते सवे एगविडा चमिसेसा चकावता ।
 ज्योतम मूळपवात्या चपवात्या पुळिवाकाकने सर्वजी एकविधे विग्रपरहित निम पर्यता तिम जीविना । सबलाय परिवाचवगा प । स
 रनाच लापारमळे रडव) कडा । समवाचव) । पडा यमव पाडलावभ्तो । कडिच भते वायर नाठकाइयाच पळतनाच ठाचा प । किडी

तेषु नरकभूमिष्वपेयु षड्रापि भरकमरकात्मिकागुह्येन क्षेत्रज्ञा एव मरणावाधाः परियुज्यते नरकाप्रसङ्गदृष्टेन तु नरकापालाल मपि ऊष्टलोकी
 कल्पेयु सौचमिकादिकल्पेयु घनन द्वावडाहसोक्तपरिषद् विभाषय यैवपकसम्बन्धियु प्रकीर्णकल्पेयु विमानानल्लिङ्गासु भावल्लिङ्गाप्रविष्टेषु यैवैष
 डादिविमानेषु विमानप्रसङ्गेयु विमानभूमिसाकष्येषु षड्रापि प्रसङ्गदृष्टेयु विमानालालनाविना मपि यथासम्भवप्रज्ञाविना दाटरपयासप्राप्यवीक्षा
 यिजाना स्यात्परिपश्यार्थं तथापि तियन्सोक्त दृष्टेषु लिङ्गतकेषु सिद्धायतनकूटप्रवृत्तिषु त्रैलपु अिसरहीनपवतपु शिसारिषु शिण्डरयुक्तपु पवतेषु

पञ्जस्रगाण ठाणा पयस्रा, उत्रवाएण लीयस्स अ्सखेज्जहज्जागे समुग्घाएण लीयस्स अ्सखेज्ज ० सठाणेण
 लीयस्स अ्सखेज्जहज्जागे । कहिण जते । दावरपुढासिकाइयाण अ्यपज्जास्रगाण ठाणा पयस्रा ? गीयमा !

मगधद् दाहरपयकाः पयान्मान ठामकज्जा । भायमा उट्टाण्ण सनसु वचाहडो वनिएस । हेमोतम ज्जम्माअपायौ सरत पृथिवीये वनोद्वि ठामे सात
 पमाव्विना वचवनेठामे । पञ्चकाण पाकाणेम अयवस अयवपल्लवस । अयकाणे पातासना अयविये मयनमा पायव्वविपे । उट्टुवोए कल्पेसु विमावे
 सु विमावद्विवाण्णु । अरकाणे कस वादेवकाणे विमानो योवोविये । विमावपल्लवम् तिरियसाए अयवस वसनएस दहसु दावोसु पक्खरिचोस ।
 विमान पतरविये तिरिज्जाके तसावपाजविये अयो गज्जादिकविये म्रहविये पञ्चाद्रहादि वावोविये पक्खरिचोविये । दौडियासु गुग्गाविवाएस सरेंसु ।
 दोर्बोको गुग्गाविवावाव विये सरावरविये । सरपतिएस सरसरपतिवा विजपतिवास कम्माएस रिक्खेस वयवस योवस समेसु । मटावरनोपीतो पा
 पाववस विये विजपतिविये कसज्जानके विज्जोभामे पीचोना वचारविये यवो जं वीयने समुद्रादि कसठामे । सव्वेनयेव वचसएसु अलठावेंसु । सव
 वसपायो वचस्यानव कज्जा वाकतो भावना पायव्वोपर । इयस वायरपायव्वकाइयाव पयवताव ठावा प । इहा वादर पयववना पयवित्ताना ठाम
 कज्जा । उत्रवाइव कायसु पयवित्तानागे । अयवना वाकने पयवित्तानागे । समग्घाएवं कायस पयवित्तानागे । समग्घाएवं कायस पयवित्तानागे भाग
 न्ने । सहावेव कायस पयवित्तानागे । अयानके सोकने अयवित्तानागे भाग न्ने । अहिं अते वायर पायव्वकाइयाव पयवित्तानागे ठावा पं० । किङ्की

प्राग्भावेऽपि विज्ञाप्य कथादिषु वदन्तारपु विद्युत्प्रभाविषु वर्षेऽपि प्रसक्तदिपवतेषु वेलासु समुद्रादिषु
 नापरमवन्नमिषु वेदिकासु अष्टद्वीपमग्न्यादिसंस्थानेषु द्वारपु विज्ञाप्यादिषु तोरपु द्वारादिसंस्थानेषु सर्वेषु समुद्रेषु ॥ एतत्
 वमित्यादि ॥ अत्र यत्तेषु स्थानेषु बाह्यरूपविधायाः पर्याप्तानां स्थानानि प्रकृतानि मया अन्तरपि तीर्थकस्त्रिः ॥ उक्तवाएवमित्यादि ॥ उपपत्तो
 यादरपुचिदीकायिकानां पर्याप्तानां यदन्तरं मुखं त एवास्याजिमुस्य मिति प्राक् कृतो पपातमगाकृत्यति प्राक् साकस्य चतुर्दशरत्नात्मकस्या
 मङ्गयनागे अत्र के व्याचक्षते - अमुं मङ्गयनो विचित्र कृतो यदा परिस्थरश्चतुर्भुजमयवद्वज्रम बाह्यरपुचिदीकाः पर्याप्ता सित्यन्त तदा य स्वस्थान
 प्राप्ता आश्वारादियोगेति परिसमाप्त्या विचित्रविधाकृतो बाह्यरपुचिदीकायिकायुर्वेदयन्त त यव द्रुष्टव्याः सापान्तरासगता यपि तदानीं वि
 पाकायुर्वेदना संताबान् संस्थान न्तपारंरजप्रजदिक समुद्रतममि लोकस्यासङ्गपभागवतते तत उपपातनापि लोकस्यामङ्गयनागता वदितव्या
 एवम्वत्प्रतिदधाने पर्याप्ता हि नाम बाह्यरपुचिदीकायिका कवलाका कृत स एवापान्तरासगतावपि परिपश्यमाणा साकस्या सङ्गपभाग एवति न
 कदि दीप्ते तथा च समुद्रातेनापि साकस्या सङ्गयनाय एव वस्यन्त कान्यथा समुद्रातावस्थायांमपि स्वस्थानातिरक्ता सन्नाम्नरवत्तत्त्वसम्वाद सङ्गे

जत्येव बाह्यरपुचिदीकाहयाण पञ्जसगाण ठाणा पयुता, तत्येव बाह्यरपुचिदीकाहयाण अपञ्जसगाण ठाणा
 पयुता, उधवाएण सङ्गलोए समुग्वाएण सङ्गलोए सठाण लोयस्स असुखसङ्गज्जाङ्गां कहिण जतं । सुज्जम
 पुढचिदीकाहयाण पञ्जसगाण अपञ्जसगाणयठाणा पयुता ? गोयमा । सुज्जमपुढचिदीकाहया अपञ्जसगा जे

समुद्रमन् बाह्यरपुचिदीकाहयाण पयुता । आकसा जतं । बाह्यरपुचिदीकाहयाण पयुता ॥ बाह्यरपुचिदीकाहयाण पयुता ॥ बाह्यरपुचिदीकाहयाण पयुता ॥
 बाह्यरपुचिदीकाहयाण पयुता । बाह्यरपुचिदीकाहयाण पयुता । बाह्यरपुचिदीकाहयाण पयुता । बाह्यरपुचिदीकाहयाण पयुता । बाह्यरपुचिदीकाहयाण पयुता ।
 बाह्यरपुचिदीकाहयाण पयुता । बाह्यरपुचिदीकाहयाण पयुता । बाह्यरपुचिदीकाहयाण पयुता । बाह्यरपुचिदीकाहयाण पयुता । बाह्यरपुचिदीकाहयाण पयुता ।

पञ्चागवसिता मा पपञ्चतति तत्त पुन वेवसिता विदति विदितुष्टुतधिदो वा तयासुमुग्गायुक्तागमश्चमरसहजगइति ॥ सुमुहुतनममद्वात मचिकृत्य
 साहस्य उमङ्कपञ्चाग इय मत्र पञ्चाग यथा वाहरपथासपुचिवाकापिका सीपञ्चममायुया निरुपकमायुयो वा त्रिनामाशुवज्ञायुय परत्रविजमा
 युयसु मारवालिहसुमुहुतल समवहव्यस्त सदा ते वाचसासमादशदश वापि मोक्षसासुयतम यय ज्ञाग यत्तैत साहस्यत्वात् वादरपुचिबी
 वापिकपयोसायु या हा व्य सीवमिति पयासवाहरपुचिबीकापिका अपि सत्यस्त इहपुयपुचिवाविपु ल्यास्यानमाङ्कमुक्तमिदानी स्त्रस्यानमापि कि
 यातिसावस्यतागवतततइति निरूपयति मष्टाकल्लोकरस चसकल्लोकरागइति ॥ स्त्रस्यानं रजप्रजादि त च समदितमपि लावस्यामहेपजागवति तया
 दि रवमत्रा चशीतिपोजनसहजाविकसल्लप्रमाकापवशनावा गयजापा अपि पुचिवा स्त्र २ यमजावनवज्ज्याः पातानवल्लशा अपि याजनल्लवावा
 वा मरकावावा त्ससहजपौडनोच्छया विमानाभ्याप हाविगटोयप्रज्ञातवापुल्यानि ततः सर्वेयामपि परमितभावात समुदितानाम व्य सुहृयमा
 यवतिर्तवति वादरापयोसपुचिबीकापिकायु सहजायक सहजायसमयायश्च सहजायइति ॥ इहा उपयोसा वाहरपुचिबीकापिका अपास्तरास्यगता
 वपि स्त्रस्यानपि वा पयोसवाहरपुचिबीकापिकायु विदितुष्टुविपाकतोवहयस्त तथा दवनेरपिचवर्जस्य हापसुवकायस्य या पपञ्चत सहुता अपि
 च दवनेरपिचवर्जय अपवु सर्वेज्ञाय स्वाभपु गच्छात्त तता उपालरागमतावपि वतमाका यमी गृह्यते इति प्रसूनाय स्त्रजावतो पीत्यु पपातन
 समुहुतल च सवसोकवतत अम्यत्वा समिदयति स्त्रजावत यथा सीवहइति उपपातन समुहुतल च सवमाकव्यापितः ततो पपात कपा र्भ्य हुङ्ग
 त्या तत्र अञ्जगति सुप्रतीतावकत्वापना चस चत्र पदव प्रथम वङ्गम च सहरति तद्वा पर तदुक्तद्वयमा पूरयन्ति यव द्वितायवज्जदश सहरयेपि तत्रो

अपञ्चसगा तं सधे एगयिहा स्थविसेसा अनापत्ता सहलोएपरिचायन्ता पण्डा , समगाउसी कहेण

इहाइहा पञ्चल पञ्चलमाच ठावा य । किहा केभगवन् मञ्जपञ्चावत पञ्चोता अपयोधाना ठाम कडा । गायमा मङ्कमपायमकाइवा जे पञ्चल
 मा जे पञ्चलमा त सधे एगदिहा पदिसया पञ्चलता । हेभोतम मञ्जपञ्चाय अपयोधता तसवएकमेवदे बीजा पविमप कइका । पञ्चका

त्यतावपि प्रकाशता निरन्तर मायूर माधनाय सृष्टाकालो गतस्य अमशेषोऽन्ताग इति ॥ यथा पर्याप्तता आविर्त तथा अपर्याप्तता नामपि आवर्तनीय तत्किं
यपे स्तयासु त्वावकावात् मूकपुच्छिबीकायिकपर्याप्तापर्याप्तयूय जपज्जात (अपज्जाता) त सङ्घे युज्यते ॥ अनाकतासमुत्पन्नपरिमावकाव इति ॥ मूकपुच्छिबी
यायिका य उपपत्ता यव पर्याप्ता त सर्वेष्व कविषा एकप्रकाराः प्राकृत स्वस्थाभावि विचार मयिकस्य ज्ञेयमावात अविक्रयपरिविज्ञपरिज्ञता यथा पर्याप्ता
सद्य तरपि इति भावः अनामात्वा नामात्वकलिता दञ्जुदना अविज्ञतामावात्वा इत्ययं किमुक्तं ज्ञेयं यथा आरम्भतया काशाप्रदृशय के त प्र
व तर पी ति मवसावपयापयत्वा) अवलोकाव्यापिन उपपातसमुद्गातस्वत्वाभिः प्रज्ञासमया अतो य अवपयादिति स्तीचकृद्भिः अनेना गमस्य कथयि
कित्य मार्चेदित द्रवमव क यापुमन् । आभयकमिद ज्ञेयवप्रयत्न गौनमस्य यवमप्यायिकसूत्राव्यापि यादरमूकमविययावि नवर पर्याप्तताद्वाराप्या
पिबभूय समसु पकाटविभवमसुति सप्तशोदचिबसयानि स्य २ पुच्छिबीवयतवटिकाभि बलयाकारावि अज्ञोलायपायासमुति पातालकलसुयु बल
यासुरमच्यतिषु तस्यापि द्वितीय विभाग दृष्टात द्वतीय विभाग सदात्मना बलजावात मवसयु कलपयु विमानयु वज्रल वाप्यादिषु विमानादीनि
शरव कस्यनतानि वदितव्यानि योवपकादेषु । वापीना मसमभवतो जलासम्भवात् यथहा दूपा सज्जागानि प्रतीतानि तथा गङ्गाविषयप्रभृतयो
नन्ते । आदरव्याजकावगा

नन्ते । आदरव्याउकाडयाण पज्जसगाण ठाणा पसत्ता ? गोयमा ! सठाणेण सप्तसु वगोवधीसु सप्तसु घ
गाढधिचलएसु एहोलोए पायालेसु जत्रणसु जत्रणपत्यरुसु उहुलोए कप्पेसु विमाणसु विमाणावलियासु
विमाणपत्यरुसु तिरियलाए अगळेसु तलाएसु सरेसु नदीसु वहेसु बाधीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गजालि
वरियाम्भवा प । चवत्तावने आपारसु च इमकाणा । यममः ।

[illegible]

ब्रह्मः पट्टद्वयद्वयः साध्य द्युत्तरज्ञाकाराः ता एव दृष्टाकाराः पुष्करद्वयः यासु तौ पुष्करद्वयः दापयन्तः यदु
 सप्तुनद्य स्ता एव दक्षः पुष्कालिकाः बहूनि कवचवस्त्राणि पुष्पावलीकाणि चरासी त्र्युष्यते तथा बहूनि चराणि मक्षपत्न्या व्यवस्थितानि स
 रः पत्ति स्ता बह्व्यः सरः पत्तयः तथा ययु सरस्सु पत्तभाध्ववस्थितेषु क्षूपादक्ष प्रवासिकया चर्यरति सा सरः सरः पत्ति स्ता यद्वय सर २ पत्तयः

यासु सरेसु सरपतियासु सरसरपतियासु उज्जरसु णिज्जरसु चिष्वलेसु पल्ललेसु वप्पिणसु ठो
 वेसु समुद्देसु सधेसु चय जलसएसु जलठाणसु जलनूमिथ्यासु एत्थ ग वादरथाउकाइयाण पज्जावगाण

कवी जसजानकविना पद्य महाविठ्ठलमाहि संशोध छापले । एतच्च बाह्यर तत्कारणाच्च पञ्चतन्त्राच्च ठावा प । इहा बाह्यर तेरकाव पयाध्यानी ठाम
 कथा । उचवाएच कावळ पयकित्तेभायो समवापण कावळ पय सहायेच कावळ पयस । जपकना कावळे पसक्यातमभागे समुदातकाकने पसक्यात
 मभास सखान काकने पसक्यातमभागे । कविकभते बाह्यरतेरकावद्याच पपञ्चतन्त्राच्च ठावा प । किहा हेमगवम् बाह्यर तेरकावसे कथा अपर्वाप्तानामा
 ठाम कथा । मादमा जटवर बाह्यरतत्कारणाच्च पञ्चतन्त्राच्च ठावा प । हेमोतम किहा बाह्यर तेरकाव पयोप्ताना ठामकथा । तथेच बाह्यर तेरका
 वद्याच पपञ्चतन्त्राच्च ठावा प । किहा बाह्यरतेरकाव पपयोप्ताना ठामकथा कि पयित पठारसेवाजन वाहुज्ज समस्त तिवळाक कविये इ
 म तेरकाव अपर्वाप्ताना अपकवागा ठामकथा विष्टार नव्यान्तराचको ज्ञानिवा जपकना । जगण्य दासच कवाकन तिरियमाए तट्ट समवापण
 पयकाण सहे केच सादस्य धर्मकव्यइभागे । काकन चठारिहोपपरिमाच वाहिर पूरपर छिचान्तर ज्ञानभूरमपयेंत छ पाठ केवळ समझात छपाटन
 गर अक्षपवाकावास्त झट त जडछपाठ तथा तिरिवकाणति तटव्याचकप तियळाक तट ज्ञानभूरमकवद समझात सखनसात्र पूर उचवा पयोप्ताने
 तपये पसक्याता अपर्वाप्ता जपके सखनमपयेंत मरन तपममझात करे इम सखनकाक पुरीषा सख्यानके काकने पसक्यातमभाग मावासे इवे । क
 विचमते मुहुम तेरकावद्याच पञ्चत अपञ्चतयाचव ठावा प । किहा हेमगवम् मुहुम तजक्याय पर्याप्ता अपर्वाप्ताना ठामकथा । गायमा मङ्गम

चित्तानोप विलासि स्वप्नानिप्यथा जगत्यादिषु कृपिका सोपा र्थस्यो चित्तवर्तमान प्रथमया स्त एव सदा प्रस्थापिनो मि
भराः विहारादि अयाता सोऽप्यसमाययजूताः नृप्रदक्षा गिरिप्रवेशा वा परस्मानि अलासामि सुरासि वप्राः क्षेत्राः किम्यदुना सर्वेषु पथलाशाययु

ठाणा पराक्षा , उवयापुण लोयस्स सुसखज्झाङ्गणे कहिण जते ! यायरथाउकाइयाण सुपज्जात्तगाण ठा
णा पराक्षा ? गोयमा ! जत्येय यावरथाउकाइयाण पज्जासगाण ठाणा तत्येय यावरथाउकाइयाण सुप

कदाहवा के पञ्चतगा पपञ्चतया ते सन्ने एगविहा पं० अविसेसा अवाचता । इगौतस सूक्ष्मतेजसाव की पर्यायता अपर्यायता ते सबना एकदोत्रभद
पविशय क्व कटिवा । सबसाव परिवावसवा पं० । सबसाव प्वापो रक्षावे । सबसावसा । पञ्चा अमको पायुपावता । कटिभते वायर वासकाइया
व पञ्चतयाव ठावा प । किङ्की उभगवन् वावरवाकसाव परीताना ठाम कक्षा । भोयमा सङ्काव सत्तमववाएव सत्तमववावसवणस सत्तसुतकुवा
एव सत्तम तववाय वववसु । सत्तमानवे सात वनवातना वववनेज्जानव ववो सात तनुवातनाववण ठिवावे । अवासाय पावासेम सबवस भववपत्तवे
नु भवव वववस भववविज्जवस निरववविज्जवस । अवासाव पातासनामुवन वानवे पावववाविये अवासाव ठामे भववविपे टूकसातवे नरवे न
रवना ववववविपे । निरववपत्तवेम निरववविज्जवेम निरवविज्जवस । नरवनेज्जि नरववसूरे । वववववाव वप्यनविमावेस विमाववविजाणनु विमावपय
वम विमावविज्जवेम । ववववाव ववविमान वववावविमाने विमानवतरे विमानविज्जवे । विमानविज्जवस तिरिववाण पाइव पंठ वाडिववदीय साव
मवव । विमावपुवे तिरिवसावे पंठे पविम वविव वतरे सब । वावावासाविज्जवेस कोगनिज्जवेस । कोवावाग ववववे सुवे एववे ठामे । एववे वायर
वाववाइयाव पञ्चतयाव ठावा पं० । वावरवाववाव परीपुताना ठामकक्षा । वववाएव वायववसेविज्जवमानेसु भनुवाएव वावववस । अवाव
वा वावव वसव्वातमेमाने समवातकावने वसव्वातमेमाने । सङ्कावे वाववव वसवेवववमाने । वववाव वावने वसव्वातमेमाने । कटिभते वपञ्चत
वायरवाववाववाव ठावा प । किङ्की वेभगवन् अपर्यायता वाववावना ठामकक्षा । भायमा ववववावरवाववाववाव ठावा प । पञ्चतयाव ठावा प ।

द्रष्टाः पटद्रष्टादयः वाप्य एतद्रक्षाकाराः ता एव दृष्टाकाराः पुष्करिण्याः यदि वा पुष्कराणिपट्यानिविद्यन्ते यासु ता पुष्करिण्यो दीपिका यशु
समुपगता एव वक्ताः मुञ्जालिङ्गाः बहूनि कवसकवल्गानि पुष्पावलीर्बानि सरासी त्पुष्पगते तथा बहूनि सराणि यक्षपत्न्या व्यवस्थितानि स
रपत्ति स्ता वद्व्यः सर पत्न्याः तथा यषु सरसु पत्न्याभ्यास्यतपु नूपादक प्रबालिकया सम्भरति सा सरासरपत्तिस्ता द्रष्टव्यः सर २ पत्न्य

यासु सरेसु सरपतियासु सरसरपतियासु त्रिलपतियासु उज्जरेसु णिज्जरेसु चिखलेसु पखलेसु वप्पिणसु डो
वेसु समुद्धेसु सहेसु चय जलासएसु जलठाणसु जलनूमिआसु एत्थ ग दादरअउकाइयाण पज्जातगाण

ततो अलङ्कानकदिना पस मचाविरुहमात्रि सदेव उपजे । एताव दादर तवकारवाच पज्जतगाव ठावा प । इहा दादर तेवकाय पर्याप्तानो ठम
कक्षा । उववाएव कायस्य पचविकिरभागे समवापचं वीरुह यय सहायेक कायस्य पस । अपज्जा वाक केवसस्यातमभागे समुपातकावने यसस्यात
मभाम सस्यान साकने यसस्यातमभागे । कविकभते दादरतेवकावरावाच अपज्जतमाच ठावा प । विहा हेमभवन् दादर तेवकायमे कक्षा ययर्वासाना
ठाम कक्षा । पावमा अत्तव दादरतवकावरावाच पज्जतगाव ठावा प । हेगौतम विहा दादर तेवकाय पर्याप्ताना ठामकक्षा । तत्वेव दादर तेवका
रवाच अपज्जतयाच ठावा प कवभाणक । तिहा दादरतेवकाय अपर्वासाना ठामकक्षा वि पवैत अठारेवेयाजम बाहुल्य समस्त नियक्षाव कविवे र
म तेवकाव अपर्वासाना अपज्जताना ठामकक्षा विचार मज्जात्तरकको जीविवा अपज्जा । कामस्य सासव कवाकम तिरियलाए तद्वय समग्वापव
मज्जाण सहे वेव कावस्य धर्मकज्जइमाने । साकम अठाहीपपरिमीच वाहिर पूर्णपर दक्षिणातर अयमूरमयपवेत अ पाठ केवच्च समहात कपाटना
तर कवपपावाकान्त अइ ते अइकपाठ तथा तिरिवकाणति तटव्याकूप तिवक्षाव तट व्यवभूरमचद समहात सक्कसकाव पूर णकवा पर्याप्तानो
तगवे यसस्याता अपर्वाप्ता उपवे सज्जमवपर्येत सरव तपममहात करे इम सक्ककाव प्रोथा अज्जानके साकने यसस्यातमभाण माभाये इवे । अ
इवमते मुमुम तेवकावरावाच पज्जत अपज्जतगावच ठावा प । विहा हेमभवन् मूज तेवकाव पर्याप्ता अपर्वाप्ताना ठामकक्षा । गायमा सइम मे

त्या हेतुनीच पुरुषाची नवियेते इतीदं विद्वेबं द्वीपानां ब्रह्मणं, द्वीपा य समुद्रा य द्वीपसमुद्राः। तेभ्यु निर्व्यापातेन व्यापातस्या जावो निर्व्यापात
 तम निर्व्यापातम युतीयाया इति पादिका सावज्जायाः व्यापातानादन त्वर्थः पण्डितसु कसमूनिपु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु
 व्यापात प्रनीत्य व्यापात यताति जातः, पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु
 व्यवस्था जातो यदा पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु
 इत्य निव्यवस्थाः तस्मिन्सुति पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु
 नो त्यामानि प्रपन्नानि व तवजायमित्यादि व उपपातन यथोक्त्यानामास्या त्मसुसमा पाकदालगता वपीति जातः विवृत्यमाना लोकास्वा सङ्केप
 ज्ञानं लोकास्वात् समुद्रातेनापि विवृत्यमाना लोकास्वा सङ्केपजाग सारकातकसमुद्रातवशातो विवृत्यमाना लोकास्वा सङ्केपजाग सारकातकसमुद्रातवशातो
 ज्ञानमात्रव्यापित्वान् सत्यामान लोकास्वा सत्यामान सत्यामान सत्यामान सत्यामान सत्यामान सत्यामान सत्यामान सत्यामान सत्यामान सत्यामान

पञ्चतन्त्रगाण ठागा पयाज्ञा, उत्रवाएण लीयस्स असखेज्जइजागे समुग्घाएण लीयस्स असखेज्जइजागे,
 सठागण लीयस्स असखेज्जइजागे । कहिण जेन । यादरतज्जकाइयाण अपज्जत्तगाणं ठाणा पयज्ञा ? गा
 यमा । जत्यय यादरतज्जकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा तस्येव यादरतज्जकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प०,

इधमु बागोमु पण्डितसु गोविधान गुणानि य न सरेन मरदतिवामु विवृत्यमाना लोकास्वा सङ्केपजाग सारकातकसमुद्रातवशातो विवृत्यमाना लोकास्वा सङ्केपजाग
 रथो दादकादि गजातिकारि सरावर करपीतिविषे विवृत्यमाना लोकास्वा सङ्केपजाग सारकातकसमुद्रातवशातो विवृत्यमाना लोकास्वा सङ्केपजाग
 त पलाजमर ठाम हीव सन्तु सपन्नठामे । जनासठम जकाइ जेन एत्थं यादरतज्जकाइयाण पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु पण्डितसु
 नसतीकावा पयाज्ञा ठामकया । इववाएणसठकाए समुग्घाएणसठकाए । अपज्जत्तगाण सवधाने समुद्रात सवधाने । सठागण सावस्य पससेज्जइजा

एतदेव व्याचष्टे जलत्वानप छोत्रजावमाप्रागवत अपुनाबाहरपर्याप्तोक्तस्त्यापि कस्यामानि पृच्छति क्विण जले बापरते वक्ता वयावमित्यादि प्रसमय
सुमम ममवाभाह-मायमत्यादि । गौतम स्वस्थान स्वस्थानमङ्गीकृत्या तममुपपन्नं यथा इत्ययः अर्द्धतृतीय यथागत अर्द्धतृतीया स्वस्थानमङ्गीकृत्या

ऊत्तमाग ठाणा पयससा, उवयाएण सख्खोए समुग्घाएण सख्खोए सठाणेण लोयस्स व्यसखिज्जाभागे ।
कहिण सुज्जमव्वाउकाइयाण पज्जसा व्यपज्जन्नाण ठाणा पयससा ? गीयमा । सुज्जमव्वाउकाइया जेय पज्जा
सगा जे व्यपज्जन्नागा ते सख्खे एगोविहा व्ययिससा अनानत्ता सख्खोए परियायन्तगा प०, समगा । कहिण
जत ! यादरतउकाइयाण पज्जसगाण ठाणा पयससा ? गीयमा । सठाणाण व्यतोमगुस्सस्येहे व्य्हइज्जोसु
वीयसमुहेसु निष्साधाए पन्तरससु कममज्जीसु त्राम्घाय पफुच्च पयसु महाविदेहेसु एत्थण यादरतउकाइयाण

हेवीतम जिह्वा वाहकावका पयसोपाना ठामकखा । तस्सेव वाहरयावकाइयाव पयससयाव ठावा प । तिहा वाहरयावकाव वादरनिगाद
पानी । उवयावक उवयावसमवाहक समवापसठ पय वावसु पयसस्यभागे । उपज्जमाना ठाम सवकाव खलान्ते खोक्ता पयसस्यवसिभागे इवे ।
कहिणमते सुज्जमवावकाव पयससपयससगाव ठावा प । किहो उभगवन् पयससावकाव पयोपता पयसोपाना ठामकखा । गावसा मुज्जसका
उकाइया व पयससगा जे पयससगा ते खवे एमविहा पयसिसेसा पयससा । हेवीतम म्हावाहकाव पयोपता पयसोपाना तेसव पयसस्य पयसिसेप स
य पावसोपर । उवयाव परिवावकना प । सवकाव ज्योपेखावे । समवाकसा । पहा समवापाहुपावसा । कहिणमत वावरववववकावकाव प
ज्जसगाव ठावा प । किहो पहाभगवन् वाकर वनसतोकाय पयोपाना ठामकखा । गावसा सहावेव सप्तसुववाहेस सप्तसुववाहेसिपयससु । हेवी
तम स्वस्थानवे वनादधि वनाद्विनादकविपे । पहाकाए पावाकासु-मवसेस मवपयसस । पहासावे पाताव मवमविपे मवमपावकाविपे । उवयाव
कयेनु विमावसु विमाववविपे विमावपयसससु । उवयावे कयाविमान विमानपावकाविपे विमानपावकाविपे । तिरियवो पयससु तहागेसु नईएसु

पाठ देशान्तिमहात्मात्पठतः कुरुमपिलोकास्तस्पृष्ट ते ऊर्ध्वं कपाटो तपो रुरुकपाटयो स्तथा ॥ तिरियलोयलहेयइति ॥ तसु त्वात् तियग्लोकेतहभिय
तियकवाकनह तस्मि यथ्यनूरमफमसत्रुवदिकापयतः कष्टादग्रायाधमज्ञातकाइत्य सुमस्ततियग्लोकाक च त्वाथ उपपातन बादरतत्रकापिकानाम पयो
प्राप्तो म्पातामि प्रप्राप्तानि कश्चित्-तिारयसायतह इति पठन्ति २ यव त्वाचकत तपो कपाटयो स्थितः तस्य तियग्लोका यो सौ तस्य च ति
यग्लोकातस्यः तथारुरुकपाटयो रभायो तियग्लोका इत्यथ तस्मिन्किमुक्त भवति द्वयो रुरुकपाटया यथाकस्तरूपयो स्तियग्लोकापि च तया

नवनपत्यरुनु नवनगतिद्वेसु नवननिरुक्तसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्यरुनु निरयतिद्वेसु निरयनि
रुक्तसु उहुलोयकप्पसु यिमाणसु यिमाणायालियासु विमाणपत्यरुनु यिमाणतिद्वेसु यिमाणनिरुक्तसु तिरि
यलोएसु पाइणदाहिणउदीणसहेसु चैव लागागासतिद्वेसु लीगनिरुक्तसुय एत्यण बादरवाउकाइयाण पजा
हगण ठाणा पयासा, उयत्राएण लीयस्स अस्सखज्जसु नगीसु समुग्घाएण लीयस्स अस्सखज्जसु नगीसु
सठाणेण लीयस्स अस्सखज्जसु नगीसु । कहिण नत । अयपजात्रयादरवाउकाइयाण ठाणा पयसा १ गीय

पर्याप्ताना ठामकक्षा । भावमा उहुत्वाए तदेकद्वसभागे पयासीणतदेकदेसभागे तिरिक्कोए पयहेम तत्तावेस जाव दोवेस ममा सु मयसचव कक्षास
वम कम्पुक्कम । जेगीतन अउवाकान्ताक येयभ ने मन्वरादि पयावाधेक देगभाय ग्याम कूप तत्ताभादि तिरिक्कावे कूप तत्ताव वावत् दोवे समुहे सव
त्रकठामे । उल्लव वेर दिव पयत्त पयत्तलयाव ठावा प । इहा वेदिय पर्याप्ता पय्यादिताना ठामकक्षा । उहुत्वाएण कायस पयसखज्जभागे समुग्घाए
च भावस्य पन मुहुत्वाएण पयत्त पयत्त । उयपका विवाकने पयसखज्जभागे मरुत्तातयाकने पयस खज्जानसाकने पयसयातमेभागे । कहिणमते तर्हिदि ।
पयत्त पयत्तलयाव ठावा प । किक्का विभागन् तेदिय पर्याप्ताना ठामकक्षा । मोयमा उहुत्वाए तदेकदेसभागे पयावाप तदेकदेसभागे तिरिय
पोर । जेगीतम उर्ध्वलोकादेगभागे पयोवाकाकौतकद्वगभागे तिरिक्काका । पयसमु तत्ताएसु जाव दोवसु समुहुत्तसु समुत्तमेव कक्षास । सु अक्कापेसु य

अपर्वोपपादने प्रस्कायिकृत्यानां नि पृच्छति-कश्चित् सते इत्यादि ब्रूयतां यो जगतामाह-गीतमस्कायिकानां पर्वोप-
 ना स्थानानि तत्रैव वादरत प्रस्कायिकानां मय्यसामासां पृच्छामि प्रच्छामि पर्वोपनिर्णयैवा पर्वोपानाग वस्याभात ० उपपादय लोकरम् वासु
 चक्रकृत्राकम् तिरियसोपलह य इति ५ इति सुवनीयद्वीपसमुद्रनिस्तुत अद्वुद्वीयद्वीपसमुद्रमावधायत्य पूर्वोपरद्वीपलोकरस्वपन्नूरमणपयस्य य क

उच्चत्राण लीयस्स दासु उहकथानि सु तिरिचलोचतद्वेयसमुग्धाएण सञ्चलोए सठाणण लोयस्स न्युसस्वेज्जड
 नोगे । कहिण जत । सुज्जमेनज्जकाडयाण पज्जसगाण सुपज्जसगाणय ठाणा पयात्ता १ गीयमा । सुज्जमेनज्ज
 काडयाण जं पज्जसगा सुपज्जसगा त सञ्च एगग्निहा अविनसा अनाणसा सञ्चलाण परियावन्तगा प०,
 समणाउत्तो । कहिण जते । यादवाउकाडयाण पज्जसगाण ठाणा पयात्ता १ गीयमा । सठाणण सत्तसु
 घणयाएसु सत्तसु घणयायथलासु सत्तसु तणयाएसु सत्तसु तुग्वायवएसु अहीलोए पायालेसु जयणसु

ग । सस्याने जाडन पसस्यानेभावे । कहिण जते व हरववप्पारकाराया पयज्जलयाक ठावाप । बिहो पडा भववन् वादरवमस्यतोकाय अपयामाभा ठा
 म ० छा । गायमा जतेव वादरववप्पारकारायाक पयज्जलयाक ठावाप । बिहोतम बिहो वादरवमस्यतोकाय पर्वोपाना ठामकछा । तत्तववाजवरव
 पारकारायाक पयज्जलयाक ठावाप । बिहो वादरवमस्यतोकाय अपयामाभा ठामकछा । जववाएक सववाए मसवाएक सववाएक सञ्चलोए सञ्चलोए जायस
 पमविज्जडभागे । उपपन्नमानसभाके समवातमवनाके खज्जामभाके पसस्यानेभावे । कहिण जते सज्जमववप्पारकारायाक पयज्जलयाक ठा प ।
 बिहो वेमगवन् सज्जमस्यतोकाय पर्वोपाना अपयामाभा ठामकछा । गायमा सज्जमववप्पारकाराया अ पयज्जलगा जे पयज्जलगा ते वाद पमविहो पवि
 ममा पयानता । पडा भीतम सज्जमस्यतोकाय पयारता अपयामाभा त मव पकमठ कछा पविशेय प कथोपरे । सववायपरियावन्ता प । सववाय
 वापी रण्णे । समवाडया । पडापमना पायुपावन्ता । कहिण जते वेद दियाक पयज्जलयाक ठावाप । बिहो जभववन् वादरवमस्यतोकाय प

तियग्नोक्त्याऽप्यवस्थिता अपि यादरा पपासतप्रकारिकव्यपदेशं लज्जते तेषां व्यं व्यङ्ग्यारनर्थार्थान्मुपगमात् ये रे स्वस्यानसमश्लेषिक
पाटद्वय व्यवस्थिता य तु स्वरणामासुगत तियग्नोक्तं प्रविष्टा एव धादरपपासतेभ्रंशोपिका व्यपदेश्यते न ज्ञाप्याः कपाटापीलाः। लज्जयस्थिता
विपमस्यामवतिस्थात् तन य दद्यापिकपाटद्वयमविष्टा भापि तियग्नोक्तं ता किंश पूर्वप्रवाधस्था ययति न गत्यगते । उत्तम्य-पञ्चमाश्लेषस्वपिपुला
दुभिकयाज्ञापयद्विभिपुष्टा । सोमंततन्वितो जतकतत्रापिप्यति ॥ १ ॥ तत उत्त ॥ उधधाएवं दोषुउक्तं जवाश्लमु तिरियलोमतछेव इति त्यापमा । तदय
मिदं मंत्रं व्यङ्ग्यारनयदशनेन व्याख्यातं तथासुखदयात् युक्तं वेतत्-विचित्रावुधस्यगति रिति वचनादिति । समुपपायकं सवसोम इति ॥ इहं हयोः

ते सद्ये एगविहा श्रुतिसेसा श्रुतानन्ता सखलोयपरियायद्वगा पण्णा समणाउसी ! कहिणं जंतं यादरवण
स्सइकाइयाण पज्जासगाण ठाणा प० ? गो० । सठ्ठाणं सत्तसु घणोवहीसु सत्तसु घणोवहिलएसु अहीलोए
पायालेसु जयणेसु जयणपत्यन्तेसु उहुलोए कप्पेसु धिमाणेसु धिमाणाउलियासु धिमाणपत्यन्तेसु तिरियलोए

अपञ्च साक्षने प्रसववशात्तमेवै समस्तगतसाक्षने यस्य सत्त्वानुसाक्षने यस्य० । कश्चित्ते पञ्चिद्विधं पञ्चजनं यत्पञ्चसमाच ठावा यं० । विज्ञां देवगवर्जं
पञ्चैश्वर्यं प्रवर्तिता प्रवर्तिताना ठामकृष्णा । साक्षमा कृष्णाय तद्वत्त्वमभागे अज्ञावावतदेवैवमभागे विरिचकोप । देवोतम अज्ञावावतव देवमभागे
प्रभासाकोतव द्यमभागे निर्वाताका वक । यगुतम तछावसु अश्वीमेस समुद्रुत सार्वसुदेव अकाधसु अकठिबेसु । कूप तव्वाव यावत् होपसमुद्र संप
अभासमे अकठामे । एवव पञ्चद्विय पञ्चन प्रपञ्चनमाच ठावा य । इहा पञ्चैश्वर्यं प्रवर्तिता प्रवर्तिताना ठामकृष्णा । उववादेव सावस्य य० समस्तवा
वव सायस्य य मज्ञाचत् सोरस असुखेय्यामागी । अपञ्चवा साक्षन यसं समस्तगतसाक्षन यसं सत्त्वानुसाक्षने यस० यवातमेभागी । कश्चित्ते पञ्चैश्वर्यं
य प्रपञ्चत प्रपञ्चतगाय ठावा यं । विज्ञां इमनवत् नारका प्रवर्तिता प्रवर्तिताना ठामकृष्णा । कश्चित्त्वेवैश्वर्या परिचसति । विज्ञां नारको वसते ।
माक्षमा यद्वचत् सतमुठनीमुप । इभोतम सत्त्व न सात द्रविषोयेद्वे तवज्ञे—एववपभाय सव्वर० वासुय पव पून तम० तमस्तम० ० । एतमप

रय कपाटयो रक्तगते नाम्बग्र क्षेपितियग्लोकाव्यवच्छेदमपरमेतद्वाक्यं त विधानपर विधानस्य कपाटयश्चैव विदुस्वात् । तस्य पुनः केवलानां
 विनिर्दिष्टतद्विर्भावा यस्य इयमत्र भावना-इह विधावाद्दरपयास्तत्रस्कायिका सद्यथा एकमविका यदुपयो जिमुखनामगात्रा य तत्रयएकस्मा
 द्विवतादिद्वयात् अत्रान्तर बादरपयोस्तत्रस्कायिकत्वम सत्यरस्यगत त एकमविका य तु पूर्वजवन्निजागादिसमये यदुवादराः पर्याप्ततत्रस्कायिकायुप
 स्त यदुपयो य पुन बादराः पर्याप्ततत्रस्कायिकायुनोमोश्रावि पूर्वजवमोचमानन्तरसाक्षाद्दयन्त अन्निमुखनामगोश्रा तत्र एकमविका यदुपय य
 द्रव्यता बादराः पर्याप्ततत्रस्कायिकाननावत सत् युर्नामगाव्यदभाभावात् ततो नते रिहा विचारः । एकस्वामिमुखनामगुर्गोत्रे सपामनापपातस्य
 स्वस्थानप्राप्त्या जिमुखसत्त्वस्य सम्पन्नानत्वात् । तत्र यद्यपि अङ्गुयूचनयदक्षमन बादरा पर्याप्ततत्रस्कायिका युर्नामगोचवदनात् यथोक्तकपाटद्वय

मा ! जत्येव बादरवाउकाहयाण पञ्जन्नगाण तत्येव बादरवाउकाहयाण अपञ्जत्तगाण ठाणा पयस्सा ।
 उववाएण सव्वुत्तीए समुग्घाएण सव्वुत्तीए । सठाणण लोयस्स अ्सस्वेज्जेसु नागेसु । कहिण ज्जेते ! सुज्जम
 याउकाहयाण पञ्जत्ता अपञ्जत्ताण ठाणा पयस्सा ? गोयसा । सुज्जमवाउकाहयाण जे पञ्जसा अपञ्जत्ताण

रूप तन्नाम बादरत्तोपे समद्व सव्व अन्नाच्छेद अकनेठामे । एतच्च तेऽद्विय पय्यत्तगावं ठावा प । इहा तेद्विद्व पर्याप्तानाकञ्जा तिर्चाना ठामकञ्जा । अत्र
 बादरं वादक्य यस समुग्घाएणं कायस्य यस सहा इवकावस्य यस । अत्राकवा साकन समुग्घातममम समुग्घातनाकने चमस्सातममगे सस्मान्नीक
 ने चमस्सातममगे । कहिचमत्त चरद्विद्विय च पय्यत्त अपय्यत्तगाव ठावा प । किहा हेमववत्त चौरद्विद्व पर्याप्ताना चमर्याप्ताना ठामकञ्जा । गायसा
 इउठनाए तदेकदसमाव चहाकाए तदेकद्वयमाग तिर्चिवाए । इौतम अर्हवाकान्तव येयमाग चधावाकान्तव देयमाये तिर्चिवाकने । चगहेस तन्ना
 मस नाव दोममु कमर च सव्वसयच अकावएसु अकठावस । रूप तन्नाम बादरत्तोपसमद्व सव्व अन्नाच्छेद अकठामे । एतच्च चरद्विद्विय पय्यत्त अपय्यत्त
 नाव ठावा प । इहा चौरद्विद्व पर्याप्ताना अपय्याप्ताना ठामकञ्जा । अत्राएवकावस्य यस समुग्घाएवकावस्य यस सहावेवकावस्य यस सव्वेवकावमानी ।

तिवर्गनोक्तस्याप्यत्रास्त्वता अपि योदराः पर्याप्ततज्जराकारिकत्र्यपदेशं लभन्ते तेषां ध्ये न अथहरिर्नयद्वर्त्तमान्युपगमो न ये दे स्वस्थानसमभोविष्य
पाटद्वय व्यवस्थिता ये तु स्वस्थानासुगत तियग्लोक्त प्रविष्टा एव धादरपयासैर्भरंकारिका ध्यापद्विपर्यते न ज्ञयाः क्षपाटोपात्तरासव्यवस्थिता
विपमस्यामर्गित्वात् तन य अद्यापि क्षपाटद्वयमप्रविष्टा नापि तियग्लोक्त त विहा पूर्वपवावस्था एवति नै गच्छ्यते । उक्तम्-पञ्चपालस्यस्त्रिपिपुसा
युम्निब्रामाप्रवद्विपुहा । लोयतेतवितो जतेकतसपिप्यति ॥ १ ॥ तत उक्तं ॥ उवधाएव योपुसमृच्छवामसु तिरिमनोयततेव इति स्थापना । तदव
निश् मय अथहरमपदक्षनन व्याख्यातं तथासम्प्रदायात् युक्त वेतत्-विचित्राधूयस्यगति रिति वचमादिति ॥ समुग्गाएव सवलोए इति ॥ इह हयोः

ते सध्वे एगविहा व्युत्तिसेसा व्युनागत्ता सवलोयपरियायव्रगा पयंता समणाउसो ! कटिण जंते बादरवण
स्सइक्काडयाण पज्जसमाण ठाणा प० ? गो० । सठाणेणं सत्तसु घणोदहीसु सत्तसु घणाद्विह्नलसु व्युहोलीए
पायाउत्तु नयणेसु नयणपत्यंत्तसु उहुलीए कप्पेत्तु निमाणेसु विमागानडियासु विमाणपत्यंत्तसु तिरियलोए

उपव्रवा सावने यस्यस्यतमेभागे समहातसाकने यस समानसाकने पविह्व पल्लव पल्लवतयाः ठावा पं । विहा वेमसवणं
पचेत्तिव पर्वता अपर्वीप्ताभा ठामकक्षा । मावभा उल्लुकाए तद्वत्सवभावे यहासाकतदेवदेसभागे विरिबकोए । वेभोतस ऊहसाकांतक देगमारी
पथासाकांतक दयमावे तिर्कोत्ताका इक । पगळम तसावस जावढोवेस समुद्धेस धग्गेसुचेव कळासएसु उल्लुकावेसु । पूप तसाव सावत् होपसमुद्ध सवं
जन्मावे जलठामे । एत्तव पचेत्तिव पल्लव पल्लवतयाः ठावा पं । इहा पचेत्तिव पयोधा अपर्वीप्ताभा ठामकक्षा । उवधाएव सावस्य पं । समसवा
एव सावस्य पं महुत्तव सोयदस पस्येत्तामारी । उपव्रवा साकन यसं समहातसाकन यसं समानसाकने यस सवायमेभागे । कटिपमेते वेरइव
न पज्जत पपल्लतगाव ठावा पं । विहा इममयम् नारका पयात्ता अपर्वीप्ताभा ठामकक्षा । कटिब वेरइवा परिबसति । विहा नारको बसवे ।
मावभा उह चवं सतमुपढोमु प । इभोतस सल्ल न सात दधियायेइवे तववेइ--रववपभाए सवदर० वासुय पव० धूम तम तमतम० ० । रत्तम

एव कपाटयो रत्नगते नात्यत्र होयतिशम्भोकाण्यवधनपरमेतद्वाक्यं तं विधामपर विधामस्य कपाटपङ्कजैव सिद्ध्यन्त, तस्य पुन केवस्मिनां विच्छिन्नमुतावरी ता यस्य इयमत्र प्रावना-इह विधाबादरपयाप्ततत्त्वकार्यिका सद्यथा यत्कर्मविका यद्वापुषो निमुसुमामगात्रा य तत्रयएकस्मा द्विबतादिद्वात् यमनार बादरपयीस्तत्रस्वायिकलन उत्तरस्यात त एवजविका य तु पूर्वप्रवयिनागादिसुमये यद्वादराः पर्याप्ततत्त्वस्वायिकायुप स यद्वापुषो य पुन बादराः पर्याप्ततत्त्वस्वायिकायुर्नामगोत्राणि पूर्वप्रवयोचनानन्तरसाक्षाद्दयन्ता यन्निमुसुमामगोत्रा तत्र यत्कर्मविका यद्वापुष य प्रवता बादराः पर्याप्ततत्त्वस्वायिबान्धावत साद युर्नामगोत्रवद्वान्धावत ततो नते रिहा चिकार किन्त्वनिमुसुमामगुर्गोत्रे सपामवोपपातस्य स्वपाममास्या निमुस्मलसकस्य सत्यमानत्वात् । तत्र यद्यपि अमुपूज्यमपदजनन बादरा पर्याप्ततत्त्वकार्यिका युर्नामगोत्रवद्वान्धावत ययोक्तकपाटद्वय

मा ! जत्येव यादरवाउकाइयाण पञ्जमगाण तत्येव यादरवाउकाइयाण स्यपञ्जज्ञगाण ठाणा पयससा ।
उवयाण सव्वीए समुग्घाएण सव्वीए । सठाण लोयस्स स्यसखेज्जसु ज्ञागेसु । कहिण जते ! सुज्जम
याउकाइयाण पञ्जता स्यपञ्जत्ताण ठाणा पयससा ? गोयमा । सुज्जमवाउकाइयाण जे पञ्जसा स्यपञ्जत्ताण

अप तत्त्वाय बाग्ध होये समस्त सव ज्ञात्रय ज्ञानेठामे । एतच्च तैः दिव्य पञ्जतगावं ठावा यं । इहा तैर्दिव पर्याप्तताद्वया तिर्वाता ठामकथा । अ
वाग्धं ज्ञात्रय पय समग्घाएवं ज्ञात्रय पय ससा ज्ञात्रय पय । ज्ञात्रया साकने असज्जातसमाय समुद्गातसाकने समग्घातसमागे स्वज्जानकोक
न पयससातमममे । कहिणमते वहरिदिव च पयसस स्यपञ्जतगावं ठावा य । किहा जेभमवन् ओरद्विष पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकथा । गोयमा
इहकथाए तदेकदममाय पञ्जाए तदेकदममागे तिरिदवाए । जेभोतम ज्ञात्रयाकतिव स्यभाग अपासाकतिव स्यमागे तिरिदवाले । पयग्घेस तत्त्वा
युग्घाव द्वावेम ममर य सत्यमपय ज्ञात्रयएमु ज्ञात्रयास । अप तत्त्वाय बाग्ध होयसमस्त सव ज्ञात्रय पय ज्ञात्रय । एतच्च वहरिदिव पयसस स्यपञ्जत
याव ठावा य । इहा ओरिद्विष पञ्जाए अपर्याप्ताना ठामकथा । एवमपयज्जयाव पय समुग्घाएज्जयाव पय ससावेज्जयाव पय सखेज्जयावमाती ।

पालरासगती वलमाना इति समुद्रुपातगताद्य मुक्तलोकात्मा पुरपन्ति सप्तम्य समर्थातेन सर्वलोका इति । अत्यस्त निदधति-चतिष्यद्यः खलु या
 दराः पर्वान्तेनस्कायिका यकैक यथासुनिद्रया असक्ययानामपयासामा सुत्पाठान् ते च सुखमपि स मुत्पद्यन्ति सूत्मा च सद्यत्र विद्यमान इति
 यादरा यर्पोमनेद्रस्कायिकाः एव २ यवमपयेत कृतमारणान्तिषसमुद्रुपातात् सन्तः सक्रममपि लोक मापूरयन्तीति न कश्चि द्वोपः अपि तु निरुपय
 रित्तत्र क्रकायिकसमुद्रुपातप्ररुपकागुणस्यापनस्थानलोकस्यासक्ययाने इति यथासुनिद्रया अपर्पोसामा मुत्पादात्, यथासामा च स्थान
 गनुव्यमेव त च शाकासत्यवतमन्नमामा इति मुत्सपयासात्तै क्रकायिकसमुद्रु सूत्सपयासापयासपृथिवीकायिकसमुद्रुव ज्ञायनीय, एवं वायुकायिकयन

ठाणा पयासा ? गीयमा । जत्येय यादरागस्सठकाडुयार्णं पज्जत्तगाण ठाणा तत्येय यादरायणस्सठकाडु
 याण अपज्जत्तगाण ठाणा पयासा । उयथाएण सत्तलोए समुद्राएण सत्तलाए सठाणण लीयस्स अपसस्संज्जा
 इन्नागे । कत्तिण चने । सुज्जमयणस्सठकाडुयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणय ठाणा प० १ गी० । सुज्जमयण
 स्सठकाडुया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा त सत्त एगविहा अपिसेसा अप्पनाणत्ता सत्तलायपरियाययणा

अपव्वमगाव ठाणा प । इवाठांमे मारोपवांता अपवांरिताना ठामक्खा । उववाणव वायरस यम समरथाणव वायरस यम० सट्ट वव वायरस
 यमं । अपव्वमगावाकन यम समरथाणवाकन यम अत्यन्तमेभाग । तत्तव वट्टवे मरइवापरवसति । तिहां मारकी वसिक्के । वावाभा
 म गरीर काम इत्तिमाभीसा कसवणा परमकिष्वाय यत्ता । काळावाभा कातिज्जटता भयनवत्त वत्तइरामक्क ओइमा परम कट्टवट्टव वत्ता । तेव तत्त
 जिसेभीया जिग त्या जिसेनित्ता निवडगा निवडरमसकमवअमरगमयं पक्खण्णामावाडिइरति । तिहां नित्थ व स पांम्य पै परमाधांमिक्क यक्को नि
 त्थ व स मांहामांवि नित्थ अकिमक्के नित्थ परमपग्गम वत्तसे सवभ मरक्काभय भांभत्ता निवरे । कट्टिज्जभने रक्कव्वभयठो वरावाव पज्जत्त पपज्ज
 ताव ठाणा प । किहा वभगवम् रत्तगपमानारको पवांता अपयागामा ठामक्खा । कट्टियभत्त रक्कव्वभयठो निरया परिवसति । किहा वेमगवन्

कपाठयो ययोश्च स्वरूपयो धान्य पाणरासानि तपु य मूलपृथिवीवायिकाठयो धादरपर्याप्तजस्कायिकेपु त्यशमानमारजानिकसमुदातन सम
 यज्ञता सन किम यिजम्भवाइत्याभ्या शरीरप्रमादमाश्रित्यात आयामत सत्कपता लोकाभ्यामवतु चाम्प्रमन्त्राग् विधिपति तथा वा यगाइमासस्याप
 नयद वत्यति पुरविवाहपरस्य मत् मारवातिरुसमुपायश्च समोदयश्च तयाधरोरस्म कथद्वालिमा शरीरीणाइका पञ्चता गो० शरीरपमापम
 स विजयवाइत्यय आपायेव जहन्त्यय भगुलश्च चसककज्ञान नकोसक मागाशु लीगतो इति, तत स्ते मूलपृथिवीवायिकाटप उपसिन्धु याव
 न् विविमालप्रदशद्वता अपाष्टराभगतौ वतमाना धादरपर्याप्तजस्कायिकेपुर्दनाइत्यथाटरापयाप्तजस्कायिकव्यपदेइया समुद्रयातनापुवा

श्युगळेसु तलागेसु वदीसु वहेसु वायीसु पुरकरिणीसु दीहियासु गुजाडियासु सरेसु सरपतियानु सरपतियासु
 पतियासु थिलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिखलसु पल्लेसु दीयसु समुद्देसु ससुसुचैत्र जलाम
 एषु जलठाणेसु एत्यण धादरयणस्सइकाइयाण पञ्जात्तगाण ठाणा पञ्चधा । उत्रयाएण ससुलोए, समुग्धा
 एण ससुलोए सठाणेण एगीगस्स श्युसखज्जउनागे । कहिण जते । धादरयणस्सइकाइयाण श्युपञ्जात्तगाण

मा सकरपया न सुगमा पङ्कपमा धूमप्रभा तमप्रभा तमतमप्रभा । एतच्च वेरवाचं चकरासिन्ति चिरवाचासु सबसकस्सा भवतिन्ति मल्लाय तच्च चिर
 वा । इहा नारकोमा नव काच भरकावासाहे रम तीर्थेकरे बह्या तेवचहे - यतावइयावाहि चकरमा । माहि वाटवाचारेहे वाहिर रोचुंवा । पचे कसुग
 प्य मठावचठिया । मोच सुदण्यसकान सज्जितहे । निवंधिबारतमसावयगद गज चद् मर नल्लत कासि पङ्कय । नित्य पञ्चवार तममा एउ चन्द स
 द मज्ज च्छातिपीनो प्रमारहित्त । वसा पसुपडिन बहिर मम चिक्किज्जिनासुखेवतथा । व्यभावे मेद वसा चपुन मास तिरे लोव्या वाचपन । पस
 र बीमा परमइधिमदावापा पगविचवाभा । एतावता अपविचहे मडादुनभ्ययोर चम्पिबलती शरीको यमाचहे खेचनो । नल्लड कासा पुरहिडा
 सा पमभाभरगा सुभाभरएसु वेसवापा । चकयलण पसिपचपरे एइवा पाया नगरनाठामे धतीच भगुमेवेदना भागवेहे । एत्यच्च चरइयाच पल्लय

[illegible]

ઠાળા પચાસા ? ગોચમા । જલ્યેય ચાતુર્યગસસડકાઢયાણે પજ્જત્તગાળ ઠાળા તલ્યેય ચાદરવળસસડકાઢયાળ અપજ્જમ્મગાળ ઠાળા પચાસા । ઉચચાણ સહ્વહાણ સહ્વહાણ સઘાણ લોચસ અસચ્ચેજ્ઞ ઢનાગે । કાઢિણ જતે । સુજ્ઞમચળસસડકાઢયાળ પજ્જત્તગાળ અપજ્જત્તગાળય ઠાળા પ૦ ૭ ગો૦ । સુજ્ઞમચળ સસડકાઢયા જે પજ્જત્તગા જે અચ્ચરજ્ઞત્તગા ત સહ્વ ણગવિહા અધિસેસા અનાણસા સહ્વલાયપરિચાયણમા

पवन्तगावठावाचं । इषोठामे नारकोपकीत्या पपकीत्याना ठामक्या । समयापठ लाशस यम समयापठ काठरम यम० सङ्गेक लाशरम
 ॥ । उपपन्नानाकने यम समयापठानकन यम सखा तखाकन यमस्य तमेभाग । तखाकनकवे नररायापरिवसात । तिहा नारको मसेके । वासाभा
 म गभीर काम हरिसाभोमा कनकगा परमकिन्नाक पना । काकापाभा कांतिज्जना भक्तकस उल्लेखामके अिकना परम कलकलकन कया । तेव तत्य
 निबभीचा निव त्या निवगनित्या निवगना निवगनसकमभनरगमय पवन्तगावठावाचिहरति । तिहा तखाकन यमस्य ये परमाधामिक यको नि
 त्यक म मीहासाकि नित्य नतिमये नित्य परमपगम पुस्तक सख नरकनामय भागता निवरे । क्विपभने रयवयमपठो चरायाक पवन्त यपय
 लावठावाच । तिहा वमगनन् रगपमनागको पवाता यपकीत्याना ठामक्या । क्विपभित रयवयमपठना निरका परिवसात । तिहा वमगवन्

कपाटयो यथोक्त एतद्वययो र्यान्व पान्तरासानि तेषु य मूलपृथिवीकायिकाटयो आदरपर्याप्तनेज्जकायिकेयु स्वहामामरकारानिभसमुद्गातन सम
यदता ता द्विज विफल्पाद्वाहस्याया शरीरप्रमादमात्रत्वात् प्रायामत उत्कपतो लोकास्तपसवत् भास्वप्रदशाम् विशिष्यन्ति तथा वा धगाहमासस्याप
नपद वस्यति पुढयिकाहयसव भत मारकातिकसमुपपाएक समोदयस तथाशरारस कमहासिया शरीरोगाहवा पल्ला गो० शरीरपमाकम
न विफल्पाहमयं प्रायामय जहजय जगुसस्य चसुखकषणम सङ्कोसेक मागाष्टे लोगतो इति, तत को मूलपृथिवीकायिकाटय उपतिइहा याव
त् विविक्तासप्रदशवक्ता अपावरासगतौ धतमाना आदरपर्याप्तनेज्जकायिकेयुर्वद्वज्जवाहवापरापरासतत्रकायिकस्यपदशाः समुद्गातगतावशा

धुगन्तेसु तलगेसु तदीसु दहेसु वायीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरेसु सरपतियासु सरपतियासु
पतियासु थिलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिखलसु पल्लसु दीयसु समुद्हेसु सव्वसुचेत्र जलास
एसु जलठाणेसु एत्थण आदरयणस्सद्वकाडयाण पज्जसगाण ठाणा पक्खात्ता । उदयाएण सव्वलोए, समुग्घा
एण सव्वलोए सठाणेण लोगस्स धुसस्सज्जाइजगे । कहिण भत्ते । आदरयणस्सद्वकाडयाण धुपज्जसगाण

भा सकारवमा व सुता पक्कमा इमपभा तमपभा तमतमपभा । एत्थण केरवाज चउराविति विरवावाज सवसद्वरमा भवतितात्त मक्काय तव विर
ता । इत्थं मारवाता ८३ वाव नरवावासाहे इम तीर्थेवरे कक्षा तेववहे - यंतावहावाहि चउरमा । माहि वाटवावाहिरे वाहिर भोवुवा । पक्के म्भुर
व मंठावचठिवा । नोव सुएवमक्काज सज्जितहे । निज्जविवातमसाववगय गज चव् मर नक्कत मासि पक्काव । मित्त चउवकार तममा गज चव् म
य मचव ज्जातिपीनो प्रमारठितहे । वसा पुवपथिन दहिर मंस विक्किमसितावसेववक्का । ज्जाभवे मेव वमा चउव मीम तिचे कोया ज्जावपम । एस
ई बीमा परमदुधिमवावासा चमदिक्काभा । एतावता चपविक्कहे म्हादुग्गयरोर चपिक्कसतो शरीको पभावेहे जेज्जो । कक्काव प्कासा वुरठिया
सा पमभानरमा मुभानएसु वेववापा । कक्कयक्काय चसिपक्कपरे एववा पाव्हा नगरमाठांमे पतोव चमुभवेदना भागेवेहे । एत्थण केरवाज पक्कमा

विकासना ततो व्यवहारमयमेतेना व्युपपातमधिकृत्य सकललोकाव्यापिता घटते इति न काचित् श्रुतिः समुत्पत्तेन सकलसाकष्यापिता सुवतासीव
 सर्वेषु भूतानु मयत्र न साक तया समुत्पादसम्भवात् यान्त्रापयामनवरपातकायिकसूत्र उववाग्यकसमूहमायइत्यादरपयामनरपातकायिकाना स्त
 स्थान पनाइप्यादि । तत्र यान्त्रनिर्मादाया सदासादीना सम्भवात् सूक्ष्मागदाया प्रजास्थितिरन्तर्मुक्तं तत स्त आदरनिर्गोदेषु पयोमेषु समुत्पद्य
 माना आदरनिर्गोदपयामापुरकृच्छ्रणः सुविशुद्धजन्मनयदशाभ्युपगमन लब्ध्यादरपयोमनरपातकायिकव्यपदेशा उपपातन सकलकास सर्वे
 साक व्याप्त्यति तत सक्त-उपपातन सबलाक इत समुत्पादय मयसाय इति न यदा आदरनिगादा सूक्ष्मनिगादय साय यद्वा पर्यन्ते मारणा
 तिकसमुद्घातन समवहना आत्मप्रवक्ष्यानुत्पत्ति दक्षयावत् विविचयति तदा आदरनिर्गोदपयामापुरद्याप्य आगम्यति आदरपयोमनिगादा एव

ज्ञन । तद्विद्याण पञ्जज्ञापञ्जज्ञाण ठाणा पयता ? गोयमा ! उहुलोए तदेकदेसनाए अहोलांए तदेक
 देसनागे, तिरियलोए अगरेसु तलाएसु वावीसु पस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरेसु सरपतियासु
 सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरसु निज्जरसु चिन्नलसु पल्लसु दीधेसु समुद्देसु सहेसुचत्र जल।
 सएसु जलठाणसु एत्यण तद्विद्याण पञ्जज्ञापञ्जज्ञाण ठाणा पयता, उयथाएण लीयस्स असस्स अहनागे
 समुग्घाण लीयस्स असस्सिज्जहनागे सठाणण लीयस्स असस्स अहनागे ! कहिण जत ! चउरिदिद्याण
 पञ्जज्ञापञ्जज्ञाण ठाणा पयता ? गोयमा ! उहुलोए तदेकदेसनाए, अहोलांए तदेकदेसनागे, तिरियलोए

विदिर मम वि/क/भूमितकानिनासुखरवतया । निम्न यम्यकार रचितके गृह यद्र म्य नयन न्यातिपोनो प्रमा रचितके मेठ यथा यमून पल्ल न
 धिर मांम तवकरो वाजवाके डाह पन यरीर जहना पतावता । यमरबीसा परमदुशिरगधा कापय यगनिबल भा । यपविन परमदुगधकाव यम्य
 य वसतीकतिथे । वसदव/सापुरविवासा यमुभानरगा यमभानरएसु वयवाधा पयवभानमावाविहरति । ककमयमय दुखेसविवा एइवा माठागगर

इयमिहविभक्त्यापि प्रत्यक्षं प्राप्ति २ जावधीयानि सवर वादरपर्याप्तवायुकायिकबन्धे मवमपिब्रूयि मयनाममवकाशातरानि मवममि कुटा मयासादिकस्याः अथन मयनमप्रदद्याः मरकजिह्वादि मरकजि कुटा मयासादिकस्या मरकावायुमप्रदद्याः मयविमामिह्वादि विमाममि कुटा य प्रतिपत्त्या उचवायुमलागममसुखकममममसहत्यादि ॥ वायवादि पयासा अतिथगुवा यता यत्र सुपिर तत्रवायु सुपिरसुमसुलोक इति विधियुपपातागपु धीकस्या सव्यपपु प्रागायि त्यक्त अपयासादादरवायुकायिकबन्धे उचवायु मयुषापापसमुलोपइति ॥ इह दयनारकजिह्वाः सापसा पत्न्यः सर्वस्या वादरपर्याप्तवायुकायु समुत्पत्त्या वादरापयासाया उपाकारसगतावपि सव्यक्त द्युनि च स्वस्थानानि वादरपयासाप्याप्तवायुका

पयासा, समणाउसी ! कहिण जते । येहदिवाण पज्जना पज्जसागाण ठाणा पयासा ? गोयमा । उहुलोण तदेकदेवजाने, अहोलीए तदेकदेवजाने, तिरयलीए अगळेण तलाएसु नदीसु वात्रीसु परकरणीसु दीहियासु गुजालियासु सरंसु सरपतियासु सरसरपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिखलसु पल्लसु वप्विणेसु दीवंसु स मुदेसु सयेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्थण यइदियाण पज्जनापज्जाणाण ठाणा पयासा । उअवाण उागरस अ्सखेज्जइजाने, समुग्एण लायस्स अ्सखेज्जइजाने सठाणेण लायस्स अ्सखेज्जइजाने । कहिण

एतममा नारको कहक—वाक्यः इमासरवप्यभाण यठवीए यवीकतर जावकवइरस वाइजाण उअरि एम जावकवइरस इमदिता ॥ यगजायव वइरमं वज्जिता मय्यं पइकतर जावकवसमइरस । उवीतम ए रत्नममापुजिवादे ८ योजन जावके पयाध ये लपार उकारवाजन म् कान इठस इ वादर मूलीन मयविधे १ । ८ उचवायु यठातरसइस याननपरिमोच । इत्थं रसवप्यपठवी वेरवाण तांसे निरवाणम सयसइत्या इयतिनि मव्याय । तिहं एतममानारको तीसकाळ मरकावाभिरकळे इम तायेवर कया । तन्नतरगा यठावइ वाडिअवरम यडेसुरप्ययठाचर्मठिया । तन्नरका गपामोहि च टकाकार वाहिर पवरस नीय सुअयण सज्जानइ । निवधियार तमसा वयमस मइ यइ मूर नववरा जायसिपइ मय यवा पूर पइस

विद्यान्तं ततो व्यवहारमयमेतं। प्युपपातमविकृत्य सकललोकाव्यापिता घटते इति न काचित् कितिः समुदातेन सकललोकव्यापिता सुप्रतापेय सर्वेषु भूतानु सद्यश्च यं साद्य तदा समुत्पादसम्भवात् यादरापयामवमरपतिकारियकसूय सुववागवसमभ्यायइवयादरपयामवमरपतिकारियकाना स्म स्याम यमादप्यादि । नश्च यादरनिगादाया नवासादीना सम्भवात् सूक्ष्मानगादालां जवास्थितिरलभ्यते तत सा वादरनिगादेषु पर्याप्तपु समुत्पद्यमाना वादरनिगोदपयामपुरजन्मवन्नाः सुविशुद्धजन्मवटशानप्युपगमन लक्ष्यवादरपयामवमरपतिकारियकव्यपदद्या उपपातन सकलकास सर्वे साद्य व्याप्तुवन्ति तत उक्त-उपपातन सबलाक इति समुत्पादय सुवलाय इति । यदा वादरनिगादाः सूक्ष्मनिगादय साय यद्वा पर्यन्ते मारणा तिवसमुत्पातन समवहता आत्मप्रवृत्तानुत्पत्ति वक्ष्यामस्व विविचयान् तदा वादरनिगोदपर्यामायुरद्याप्य लोकावर्तित यादरपयोपनिगादा एव

जन । तद्विदियाण पज्जातापज्जाप्ताण ठाणा पयप्ता ? गोयमा ! उहुलोए तदेकदेसन्नाए अहोलांए तदेक देसन्नागे , तिरियलोए ध्वगळेसु तलाएसु वाधीसु पस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरेसु सरपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरसु निज्जरसु चिक्कलसु पक्कलेसु धप्पिणसु दीवेंसु समुद्देसु सहेसुचत्र जल। सएसु जलठाणसु एत्थण तद्विदियाण पज्जातापज्जाप्ताण ठाणा पयप्ता , उयवाएण लोयस्स अस्सखज्जाहन्नागे समुग्घाएण लोयस्स अस्सखज्जाहन्नागे सठाणण लोयस्स अस्सखज्जाहन्नागे । कहिण जत ! चउरिदिदियाण पज्जातापज्जाप्ताण ठाणा पयप्ता ? गोयमा ! उहुलोए तदेकदेसन्नाए , अहोलांए तदेकदेसन्नागे , तिरियलोए

यद्विर मम वि/व्यभूमितवा/निना/कामवन्तना । निम्न पयस्वकार रचितहे गृह यद्र मय नक्षत्र ज्ञातधोमो प्रभा रचितहे मेव यथा अधून पचल च धिर माव तचकरो वाक्याहे षाड पय यरोर जडमा गतावता । पसरवीसा परमदुग्धिगवा काष्ठय यगन्निवच भा । अपवित्र परमदुग्धकाय पम्पि यच यलतोर्वातिहे । लक्ष्मणवासादुरविशवासा असुभामरना असुभामरएसु वयवापा पयसुभाममावाभिहरति । कक्षमस्य दुस्येचिदवा एववा साठानगर

समुद्रातनायासकलापिमयेति समुद्रातन सबलोके स्वस्थानेन लोकस्याधयेयतमे प्राग पनोदध्यादीनां सर्वेषामपि समुद्रितानां लोकस्या
सक्ययत्नागमाप्रयाप्तत्वात् यथाय २००० आयुसुगम एव हीन्यत्रीन्त्रियस्तुरन्त्रियस्यामान्यत पण्यन्त्रियसूत्रास्यापि प्राधानीयानि मधुर हीन्द्रियादयो
बदन्तो जलमन्मूनाः अङ्गमवृतय इति सर्वेषांपि सूत्रेषु स्थानाव्य घटादीनि उक्तानि, तथा ऊर्ध्वमोक्ष तदकवक्षणाग मन्त्ररादि धाप्यादिषु यथोलाब्धे
तदकवक्षेय यथास्तोत्रिकपात्रकूटतटागदिषु प्राप्यु पयुज्य स्वय परिप्रायणीय यथुना पर्याप्तपयोमैरयिकस्थानमरूपप्राप्य भाव-कविष्ठजलमरया
यमित्यादि । कस्मिन् प्रदये जद्वलनैरयिकाकां यथासाप्यमासना स्थानानि प्रकृतानि एतद्वच व्यक्त पृच्छति यथान्य व्ययतुप्यस्त, कविष्ठनिति ।

अग्ररुसु तलाएसु वार्धासु पुस्करिणीसु दीन्रियासु गुजालियासु संरेसु सरपतियासु सरसरपतियासु गिज्ज
रेसु उज्जरेसु श्विल्ललसु पल्ललसु धप्यिगसु दोयसु समुद्रसु सर्वेषुचैय जलसएसु जलठाणसु एत्यण चउरि
दियाण पज्जसा पज्जत्ताण ठाणा पयसा । उयत्राएण लायस्स अस्सखेज्जइज्जाग समुग्घाएण लायस्स अस्स
संजइज्जागे, सठाणण लीयस्स अस्सखज्जइज्जागे । कहिण जते ! पचिदियाण पज्जसा पज्जत्ताण ठाण प०

नेठाने तिहा साठोववना मायवतावका विचरेहे । ०त्तव रयण रयण्यम पुठवी केरइयाव पज्जत्तवपज्जत्ताण ठाणा पं । एवै प्रचारे रत्तममा नार
बीमा पर्याता पयर्वाता रइहे । उववायव कावकु पम समुग्घा०क कावका पम सङ्गुकेकायम्मा पम । उववववा कावने पम सप्तदातकावने पम
व्यसाम्मावम पवं । तत्तव ववव रयण्यम पुठवीवववा परिवसति । तिहा पवी रत्तममा नारको वयवे त कववावे । काकाकाकाभासा गभीरवा
मइरिला मीया कतासवना परमकिण्डवण्य पला पयता । काकाकावी यामावे रत्तटामवे जेज्जाग वासतायका परमकावेववववा । समवावमा ।
पवायममा यामुयावता । तव निर्वाभीया निचत्ता निचत्तमिवा निचत्तववा निचपरमसङ्गसववववमभयं पयववववमावा विहरति । भिय बीजता नि
स वायवाव भित्त कविष्ठमवे निम्ब परमपसुखसववी नरवना भयमते भागवता । ववरे । कविष्ठमते सङ्गरमपुठवीवेरइयाव पज्जत्ताव पयज्जत्ताव

एकस्मिन् प्रद्वेगे समिति धीमत्वात्तदुत्तरी नैरपि का परिश्रमः । नगवानाह नीलम सख्यानेन सप्तयुधिषीषु ता एव नामयाह माह-तज्जहा ॥ रय
 बध्यन्नापदस्यदि ॥ गताये यत्प्रवासस्यादि ॥ अत्र तासु युधिषीषु सप्तसु युधिषीषु नैरपि काका सप्तसङ्ख्या चतुरशीतिनरकावासासप्तसङ्ख्या वि न
 वसति तयादि रत्नप्रभायो विशम्भरकावासासप्तसङ्ख्या वि प्रवर्तन्त शम्भरप्रभाया पञ्चविंशतिस्तप्तसङ्ख्या वि वासुकाप्रभाया पञ्चदशस्तथा पञ्चप्रभाया
 दयनकाः पूमप्रभायाः श्रीविलसाः तप्तप्रभायाः कृतसङ्ख्या पञ्चोत्तमसङ्ख्या प्रभाया पञ्चति जयन्ति सप्तसङ्ख्या चतुरशीतिलकाः नरकावासाना
 नित्यात्म्यास्तथा अयं य तीर्थरुद्रि तन्मन्त्रकावासाहत्यादि ॥ तन्मन्त्रकावासा अचतुरशीति लक्षप्रमाणा सर्वेपि प्रत्यक्षमन्त्रमन्त्रागे यन्ताकारा
 ग्रहिनामे चतुरत्वा चतुरस्काकाराः इत्येव पीठापरिवर्तन मन्त्रमन्त्रागम चिकित्वा प्रोक्त सप्तशरीरः शृणुषुया स्वा वलिना प्रविष्टा वृत्तमन्त्रचतुरस्त्र

१ गोयमा । उहुलोए तदेकदेसज्जागे अहोसोए तदेकदेसज्जागे तिरियलोए अगळेसु तलाएसु नदीसु दहेसु
 वात्रीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरेसु सरयतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु णि
 ज्जरेसु त्रिपल्लेसु पल्लसु यम्पिणसु दीवेसु समुहेसु सवेसुचेथ जलठाणेसु एत्थण पचिदियाण
 पज्जहा पज्जत्ताण ठाणा पखुप्पा, उयथाएण लयस्स अस्सखेज्जाइज्जागे, समुग्घाएण लोयस्स अस्सखिज्जाइ
 ज्जागे, सठाणेण लोयस्स अस्सखेज्जाइज्जाग । कहिण जत । नेरइयाण पज्जप्पा पज्जत्ताण ठाणा पखुप्पा ?

। भा र्च । किञ्च देमगवन् मन्त्रप्रमादविशेषा नारकोभा पर्वता अपर्गिताना ठाम अहो । अहिकथते सङ्ख्यमपठवो चेरया परिवसति । कि
 रित मगवन् रत्नप्रभाभारको रत्न अहे । गावमा सङ्ख्यभाए पठवोए नलीसत्तरजायससङ्ख्यभाइभाए अवरिएजायससङ्ख्यभाइभाइ विपुवेग
 णिअमइरस वल्लिता । इदीतम मन्त्रप्रभाया पुज्जिअहे एवलाअ नलीसङ्ख्यार जाळपवे तेइने जपर एवइज्जाइरजाजम मूकोने हेठस एवसङ्ख्यजाज
 मूकोने । ममहे तीसुत्तरेजाजसङ्ख्यस वल्लित्वा । मय्य एवलाअ नलीसङ्ख्यार जाळपवे । एत्थअ सङ्ख्यमपठवो चेरइयाण पचकोसे तिरियावासस

एषस्मिन् प्रदेशे भवन्ति योन्यालसृष्टौ भैरविकाः परिवहन्ति । जगवाभाह-भौतम स्वस्यामम सप्तपृथिवीषु ता पृथ नामग्राह माह-तमहा ॥ रय
पव्यनामहत्यादि ॥ गताय एत्यशामत्यादि ॥ अत्रै तासु पृथिवीषु सप्तसु पृथिवीषु भैरविकायां सप्तसङ्ख्यां चतुरश्रीतिभरकावासासप्तसङ्ख्यां चि प्र
यसि तथाचि रवप्रमायां त्रिभुकरकावासप्तसङ्ख्यां प्रवासि शुद्धरप्रमायां पञ्चविंशतिधानसङ्ख्यां चालुक्रमजायां पञ्चदशलक्षः । पञ्चप्रमाया
दशमक्षः । पूयप्रमायां बीचिलक्षाः सप्त प्रतापायेक इतसङ्ख्यां पञ्चोत्त तमक्षम प्रमायां पञ्चति जयन्ति सप्तसङ्ख्यां चतुरश्रीतिलक्षाः नरकाधासाभा
मिन्त्याख्यात मया अपै य तीयंक्षेत्रं तखनरकावासाहत्यादि ॥ तनरकावासां चतुरश्रीति लक्षप्रमाणां सर्वेपि प्रत्यक्षम ज्ञानमभ्यजागे वृत्ताकारा
प्रहिनीने चतुरस्याः चतुरस्याकाराः इदञ्च योठापरिवक्तम मध्यजानम चिह्नस्य प्रोच्यत सकलयोठाद्यपक्षपा त्या वलिक्षा प्रविष्टा वृत्तम्यल्लवतुरल्ल

? गोयमा । उहुलोए तवेकदेसनागे अहोलोए तिरियलोए अगळेसु तलाएसु नदीसु दहेसु
 धायीसु परकरिणीसु दोहियासु गुजालियासु सरसु सरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु णि
 ज्जरेसु विमल्लेसु पल्लसु यप्पिणसु दीवेसु समुहेसु सखेसुचेय जलामएसु एत्थण पचिदियाण
 पज्जाप्ता पज्जात्ताण ठाणा पखप्ता, उवयाएण लांयस्स अस्सखेज्जाहनागे, समुग्घाएण लोयस्स अस्सखिज्जाह
 नागे, सठ्ठाणेण लांयस्स अस्सखेज्जाहनाग । कहिण नत । नेरइयाण पज्जाप्ता पज्जाप्ता ठाणा पखप्ता ?

॥ अथ । किङ्करी हेमवन् श्वरप्रमादुचिबोना नारकीना पर्यासा पर्यासापुठवो केरवा परिवसति । किङ्करी ममवन् रत्नप्रमादवो रत्न । नायमा सकल्पभाए पठवोए बनीसत्तरकायसयसयकाए सबरिएगजायसहरस क्काहिता किङ्करी ममवन् रत्नप्रमादवो रत्न । हेमोतम श्वरप्रमादवो रत्न । एकाए बनीसयकार काठपवे तेहेने ऊपर एककारकाएन मूबोने केठए एउसयसया ममवन् रत्न । मम्मे तीसुतरकायसहरस वल्लिजा । मध्य एकाए बनीसयकार काठपवे । एकाए सकल्पप्रमादवो केरवा ममवोसं तिरिवात्रासस । मूबोने ।

संस्थाना प्रतिपत्तव्याः अदेयुरप्यसठावसठिण्याइति ॥ अथोपनिमित्तं सुरप्रस्थय ग्रहराविज्ञोपस्य य तस्यैतानामाकारविज्ञोप स्तेन सु
 रत्नस्य सस्यादि-तपु नरकायासु प्रीमितं मसुखत्वाभावतः शब्दरिल पादपु व्यस्यमानपु शोकरमात्रस्यपक्षोपि सुरप्रभव पादाः कृत्यत निश्चय
 पारतमसाइति ॥ नित्याभ्यकारा उद्याताभावतो य तम सादिह तम उष्यते तन तमसा नित्य सुखकालमभ्यकारा क्षत्रा पधरकादिप्रिय नामाभ्य
 कारा स्ति कवल यदि सूपप्रकाश मन्दतमो भवति नरकपु तीर्थनरकमदीक्षादिकाशव्यतिरक्ता न्यदा सुखकालमपि उद्योतलशस्या व्य ज्ञावतो
 आस्थस्य मपञ्चकालादुरावइवा हीव बहसतरो वसत तत उक्त तमसा नित्याभ्यकाराः तन य तत्र सदाभस्थित मुद्योतकारिणाम सम्प्रदात

कहिण जते । नेरइया परियसति ? गोयमा । सठानेण सप्तसु पुठवीसु तजहा-रयणव्यजाए मक्करप्यजाए
 वालुयप्यजाए पकप्यजाए धूमप्यजाए तमप्यजाए तमप्यजाए एत्यण नेग्दयाण चउरासि निरयावास
 सयदस्साइ नयतीति व्यस्काय , तेण नरगा व्यतीयहा याहिचउरसा अहे सुवरप्यसठाणसठिया निच्चधयार
 तमसा यत्रगयगइचदसूरनस्कसजोहसपहा मदवसापूयकहिमसचिस्कसल्लित्ताणुलेउणतत्ता असुईवीसा परम

बहइसा भवतीत्त मक्काय । इही यत्तपमा पुत्रिबोनानारको पवोसुखाव नरकाभासे बवणे इम तावकरे कट्ठाके समयसवे प्रकप्पा । तेव नरगा ये
 तावहावाहि चकरवा चकुरप्यमठिका । त नरकावासायाहि वाटका वाहिर बोरयके नीचे सुराप सठावके । निबधियार तमसा नयमयमरुचदक्कन
 कउत जाइविममहामेववसापूवपक्कवहिरमासिक्किताप्यसववतका । निम्ब सभ्यकारके तमकरके यथाके सूय चद्र गुरु कच्च ल्पतिबानो प्रभ । प्रन
 ए मद्र बगा पूनपक्क वधिर मीस तेवकरो चीनचाके ज्ञाव पगजा तका । यमुइ बोसा परमपुमिगवाकाया पगविषयाभा । यपविष दुग्गेज्जकाय खा
 का पन । जइनइव तेवका यभा जावो कट्टा वातमोवली मक्कवक्कासा दुरविद्यासा यममानरगावासा यममानरगसवेयवा । अकयस्यके दुखे यत्रि
 यासरवाप्पा एइवानाठा नमरजा । एत्थं च सुवररुधभयकुडो नररावाव पञ्चतनपसगाव यठा प तिहा मक्करपमासुविबोना नारको परीप्ता यपविद्या

सत्याना प्रतिपत्तयाः अहेतुरप्यसंठाकसंठियादिति ॥ अथोद्भूतमितल सुरप्रस्येध प्रहरबिद्योपस्य य स्वभ्यानमाकारविद्येय स्तोत्रताक्षस्य स्तोम ॥
 इत्यता, स्यादिति-तपु मरकावासपु प्रमितल मसुबत्वाजाबत शाकरिल पादेपु म्यस्वमानयु शोकरमात्रसरयर्क्षोवि सुरप्रवेव पादाः इत्यत निरुप
 पारतमसादिति ॥ नित्याभ्यकारा उद्याताजावता य तम साविह तम भुष्यते तम तमसा नित्य सबकालमभ्यकारा सता पत्रकादिपिय नामान्य
 कारा स्ति अवल यदि सूपप्रकाश मन्वतमो भवति नरकपु तीर्थकरजम्मदीकादिकालव्यतिरक्ता व्यदा सबकालमपि उद्योतसप्रस्था प्य जायतो
 जात्यभ्यस्य मप्यवकासादुरावइवा तीव बहसतरो वतत तल तमसा नित्याभ्यकारः तम ॥ तत्र सदावस्थित मुद्योतकारिणाम सम्भवात

कहिण जते । नेरइया परिधसति ? गोयमा । सठाणेण सप्तसु पुठवीसु तजहा-रयगप्यजाए सक्करप्यजाए
 थालुयप्यजाए पकप्यजाए धूमप्यजाए तमप्यजाए तमतमप्यजाए एत्थण नेरइयाण चउरासि निरयावास
 सयइस्साइ नयतीति व्यस्काय, तेण नरगा स्यतोवहा वाहिचउरसा अहे सुरप्यसठाणसंठिया निच्चयार
 तमसा यत्रगयगहइदसूरनरकसजोइसपढा मंडवसापृरुहिरमसचिस्कसलित्ताणुलेयगतए अुसुईवीसा परम

इवइका मवतीत मन्वाय । इही मण्डपभा पुबिबोलाभारो पचबीसकाए नरकावासे बवइ इम ताबकरे कक्षाके जयमखे प्रकप्या । तेव नरमा यं
 ताबइःवाहिं चउरसा पचसुरप्यमंठिया । त नरकावासाभाहि पाठका बाहिर बोसखे गोवे सुराप सठाणवे । निरविधवार तमसा सवयसूरवरसइज
 मत्त कारविबमइमेइइसापूठपठवइहिरमासबिबिजित्तप्यसवतता । नित्य यन्धकारके तमकरके यकाके सुव चउर गूइ रुधन ल्यातिमानो प्रम प्रम
 य मड कमा पूतपठव इधिर मांस तेचकरी बीककाके हाय पगमा तका । समुर बीसा परमदुभिगवाकाभा पगविबप्याभा । परपविन पुगणवकाय सा
 ता भमना अइमइव तेइका पाभा काको कइ सातमोवर्णी कळइफासा पुरइइकासा यमभानरगावासा यमभानर० सुवेववा । कळयस्यखे दुखे यवि
 वाधरासाय्य पइयमाठा नगरमा । एवव सउरवभपुठवी नरएसाव पज्जतयपतमाव यठा प तिही मकरप्रसापविबोला भारको पयोत्तर पपयपिया

धमुना दमननी नरका सत्या गन्धरुसपक्षबाहे रणुमा बातीवा सातळपा गरबपु वेदना न मत्तळमित्यादि ॥ पावतु एत्यथयइवेनेरपापरियसन्ति
 बासाइत्यादि ॥ काभाः रुद्राः तत्र कापि नि प्रतिपन्नतया मय्य कृपापि भवति तत स्तदा सुखम्यथयेदाथ पित्रेपबान्नरमाङ्ग-कासाधमासाः का
 सः रुद्रा धनस्यः प्रतिप्राविनिगमो यस्य स्त कासावज्जहा कृप्यप्रपाण्टनापचित्ता इतिप्रायः सत एव गम्भीरमोमृषो गम्भीरो उनीना स्कटो

इन्नागे, समुग्धाएण लोयस्स धुसखेज्जइन्नागे, सठाणण लायस्स धुसखेज्जइन्नागे । तत्थण अहव रयणप्प
 ज्ञापुढविनेरइया परिवसति । काला कालाज्जासा गभीरलोमहुरिस्सा नीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्तेण
 पयसि, समणाउसी । तेण जिञ्ज नीया निञ्ज तत्या णिञ्ज तसिया णिञ्ज उखिग्गा निञ्ज परममसुजसयइ
 नरगज्जय पञ्चणुस्रयमाणा निहरति । कहिण जत । सक्करप्पज्जापुढविनेरइयाण पज्जिप्पा पज्जिप्पाण ठाणा
 पयसि ? कहिण जत, सक्करप्पज्जापुढविणरइया परिवसति ? गोयमा ! सक्करप्पज्जापुढविण्णु यसीसुत्तर
 जोयणसयसइस्सयाह्विण्णु । उयारि एग जोयणसइस्स उग्गाहिप्पा हेठा वेग जोयणसइस्स वज्जिप्पा मज्जे

पा । ते नरकावासासीहि वृत्ताकार वाहिरचोरेख वाक्कम् पयुम नरकावासा पयमन्नरुज्जे वेदना सोमवती । पत्तवं वाक्कम्पमपुढवोवेरइयाच पय्ज्जल
 पय्ज्जल्लाप ठावा पं । इवेठामे वाक्कम्पमा नारकोमा पयिप्पा अपर्वात्तामा ठामक्कळा । उववावावावायस पस समवाएचकायस पस सहाच
 सायस पसखल्लमाग । अपज्जवाकाज्जे पसज्जानमेभाग समवातकाकत पस कासागळाकजे पस । तत्तपवइवेवाहुत्तपमपुढवोवेरइया परिवसति ।
 तिइ ववी वाक्कम्पमा नारको वमैवे । वावावालीमासा जाव जिप परममसइसवहनरयमय पयक्कम्पमावा विहरति । कासायरोरे कासोपाम
 वे वाग्ग निह परमपससमववी नरकनामव प्रतिभागवता विहरैवे । खडिक्कमते पय्ज्जल्लापपुढवो वेरइयाच पय्ज्जल्लाप ठावा पं० । विहरि वे
 मलमम् पइममानारको पयान्ता अपर्वात्तामा ठामक्कळा । पय्ज्जल्लापपुढवोए योसुत्तरलायसइसइसखवाह्विण्णु ए उववि पयवायसइसइस उग्गाहिया । वे

युतगत्रादिकरूपस्यो व्यतीदा निष्टुरजिगम्या ० काश्चयगदिवलाभा इति ॥ त्रासे ख्यमान यादृक कपालो यदुज्जस्तपो भे यस्य किमुक्त जवति
 यादृक्षी यदुतातवक्ष्या अभिप्रव्याया विनियच्छति तादृक्षां क्षाला चाकारा यथा त कृपानागिनवर्द्धना चस्यमानदीर्घाग्निप्रभाभाकस्या इति प्रा
 यः नारकास्यातः स्थानव्यतिरक्ता स्या सवथा व्य तदुपस्थात यत य पटसप्तसप्तविंशोवर्जन सम्य तथा य वस्यति नवर ० छसतमायुफाक्त
 गनिवक्ष्यानाममति ॥ तथा कवक्षो तितु यदा विपन्नम्यव स्पर्धायु त कवक्षोत्पन्नां कत एव दुरद्वियासा इति ० खना व्यास्यत सप्तगत्त रुरव्यासा

हेठाचेग जोयणसहस्र वज्रिना मज्जे अठहस्रिजोयणमयसहस्रं एत्यण रयणप्यनापुढविनेरडयाण तीस
निरयायासयसहस्ता नवतीति मस्काय, तेण नरगा अतो वहा नाहि चउरमा अहे सुवप्यसठाणसठिया
निचययारतमसा यद्यगयगहचदसूरनस्कसजोइसपणा मदवसापूढयपरुफाहिरमसचिस्कद्वलिसाणलेवगतला
असुहयीसा परमदुग्निगथा काजअगणियन्नाना कसकफासा दुरदिपासा असुजा अरगा असुजा नरगेसुवे
ठणात्त एत्यण रयणप्यनापुढविनेरडयाण पज्जसा पज्जसा ठाणा पणसा, उवयाण लोयस्स अयस्स अ

[illegible]

दर्शनीयेभ्यो हेममत्तः । हेमायुष्यन् ॥ तेषां निर्वर्धनीया इत्यादि ॥ ततो मेरुयिक्तावमिति वाक्यालङ्कारे नित्य सर्वकाल सौख्यलयायजनितमहानिवृत्तान्धकार
वृत्तमतो वीता नित्य सर्वकाल शक्ताः परमाध्यात्मिकपरस्परदीर्घरितुषु एकसम्प्राप्ततया यद्यपि श्रासमु पपद्याः नित्य सयकाल परमाध्यात्मिकैः पर
स्परैः या यामिताः । आस यादृक्ताः । तथा नित्य सयकाल यथायोग परमबुद्धिगतीतोपबद्धानुभवतः परमाध्यात्मिकपरस्परदीर्घरितुःकामुपपन्नवत यो

काष्ठान्नासा गन्त्रीरलोमहूरिसा न्रीमा उत्तासणगा परमयिरहा वयोण पणप्ता । समणाउसी । तेण निच्च नीता
निच्च तल्या निच्च तमिया निच्च उद्धिगा निच्च परममसुजसज्ज नरगजय पच्चणुअग्रमाणा विहरति । कहिण
जन ! दालुयप्पन्नापुढवीणेरुदयाण पज्जसा पज्जसा ? गोयमा ! दालुयप्पन्नापुढवीए अठा
धीसुत्तरजोयणसयसहस्रसथाहप्ता उयारिं एग जोयणसहस्र उग्गाहिता हेठा वेगजोयणसहस्र अज्जिज्ञा मज्जे
उद्धीसुत्तरजोयणसयसहस्रसे एत्थण दालुयप्पन्नापुढीघिणरुदयाण पणसरनिरयावाससयहस्सा नयतीति मस्सा
य । तण नरगा झुत्तो यद्दा याहि चउरसा झुहे खुरप्पसठाणसठिया निच्चधधारतमसा यच्चगयगहचवसू

को बरहै । कासाकासाभासा जान जिस परममसुहस्रस्र नरमय पचकभ्रमाचा निहरति । कासाकाको साभा वावत् नित्य परममसुहस्रस्रंधी नर
वभोभव प्रतिभासरता विहरहै । अविष्मते धूमप्यभ पठवो केरइवाचं पत्तन अपत्तताच ठाका यं० । किशं हेममयन् धूमप्रमानीभारको पर्वीभा भ
वर्षासाभाठास कप्राकै ते बरहै । मायमा धूमप्यमाए पठवोए अश्वारमुत्तरजायसयसहस्रसथाहप्ताए । हे तीतम धूमप्रमानीभारको एकठाए अठारिइछा
र काजनप्रमाच काउपये । अवरि एणकाअच अहरसं अगगाहिता । अपरि एकअकारजाअम मूको तेकइहै । जिहावेमज्जोयचसहरस बल्लितार । एकअछा
याअन बर्जोन । मअ सासमत्तर काउकसहस्रस्रमं । विचासे एकसाअसाअकारमाहि पिउहै । एत्थधूमप्यभपठवोकेरइयाच तिविनिरवावाससयसा
इया भर्बतिपिमत्ताय । इही धूमप्रमाअविभो भारकोमा तोनकाअ नरकाभासा कइसा तीयेइरेकप्राये । तेकनरगा अतामहा बार्हि अउरसा जान

लोमहर्षो भोमातुर्वीजयवशात् येन्य स्तो गभीरलोमहर्षो किमुक्तं ज्ञाति एवं माम कथाः तावदावमासा ये वृक्षानमात्रेपि श्रेयमारब्धस्ताना प्रयत्नेषा
द्वनम साक्षातिग सामहयम् त्वादय लोति सत एव प्रयागता श्रीमत्वा इति उवाचसुमका उवाचस्यस्त शायनारका कनक मन्त्रि रित्युवाचसम उवाचसना
पव उवाचसुमका किन्त्यदुना बर्बन वरुमचि रूप परमकथा मत उतु न किमपि कथम स्ति प्रायानकवा बहूकर्यप्राप्तकथनोः प्रकृता मया शोपे

तीसुत्तरजोयणस्यसहस्ते एत्यण सक्करप्पन्नापुढदी रेरुदयाण पगवीस निरयावाससहस्सा हवतीति मस्काय
तण नरगा छुतो वह। याहि चउरसा छुहे खुर्प्पसठाणसठिया णिसुधयारतमसा यवगयगहचदसूरणस्क
त्तजोइसपहा मेययसापूपणलरुहिरमसचिरिकसलिसाणलेंयणतला छुसुह्वीसा परमदुस्सिगधा काऊञ्जगणि
ययाजा कस्करुफासा दुरहियासा छुसुजा नरगा च्चसुजा नरगेसु वेंयणात्त एत्यण सक्करप्पन्नापुढाविणेरइ
याण पञ्जत्ता पञ्जत्ताण ठाणा पयात्ता । उदवाएण लायस्स अस्सखेज्जाज्जागे समुग्घाएण लोयस्स अस्सखे
ज्जाहन्नागे सठाणण लोयस्स अस्सखेज्जाज्जागे । तत्यण यहवे सक्करप्पन्नापुढाविणरुदया परिवसति । काला

[illegible]

यथायेवैरेममण् । देवापुष्पन् ॥ तेण निवृत्तीया इत्यादि ॥ सतो भैरविवाद्यामिति वाक्यान्कारे नित्यं स्वकाशं शेषस्वभावजमितमहानिबलान्यकार
दहनती वीता नित्यं स्वकाशं प्रकाशः परमाध्यात्मिकपरस्वरोदीरिततु क्लृप्तम्यातजया द्यौप्यं प्राप्तुं प्रपन्नाः नित्यं स्वकाशं परमाध्यात्मिकं पर
स्परं वा प्रामिताः । आसु यादृशताः तथा नित्यं स्वकाशं यथायोगं परमपुरुषश्च त्रीतोऽप्यवदमानुभवतः परमाध्यात्मिकपरस्वरोदीरिततु क्षानुभवत यो

काठान्नासा गञ्जीरलोमहरिसा त्रीमा उत्तासणगा परमकिण्णवा वखेण पयससा । समणाउसो । तेण निञ्च नीत्ता
निञ्च तत्या निञ्च तत्तिया निञ्च उखिग्गा निञ्च परममसुन्नसयद्धं नरगजय पच्चुण्णयमाणा विहरति । कहिण
नेन ! आलुयप्पन्नापुब्बत्तीणेरहयाण पज्जप्ता ठाणा पयससा ? गोयमा ! आलुयप्पन्नापुब्बत्तीणं प्युठ्ठा
वीसुत्तरजोयणसयसहस्रवाहससा एउवारे एग जोयणसहस्स उग्गाहिप्ता हेठा वेगंजोयणसहस्स यज्जिप्ता मज्जे
तप्पीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण आलुयप्पन्नापुब्बत्तीणेरहयाण पयसरसिनरियाआससयहस्सा जवतीति मरका
य । तण नरगा अत्तो यहा याहिं चउरंसा अहे खुप्पसठाणसठिया निञ्चधयारतमसा वयगयगहचदसू

की रहके । काठाकासाभासा आन निञ्च परममसुन्नसयद्धं नरगजय पयससाया विहरति । काठाकाको चाभा आनत्तं नित्यं परममसुन्नसयद्धं नर
गजोभय प्रतिभयना विहरके । अहिज्जत धूमपयधं पठ्ठो केरइवाकं यज्जत यपज्जताकं ठावा यं । विहां हेमयवन् धूमप्रमानोभारको पर्वता य
र्यासाताठाम अज्जाके ते अहेके । भायमा धूमपमाए पुठ्ठोए चहारमुत्तरजायकसयसहस्रवाहससा । ते तम धूमप्रमानाजारको एकसाय पठ्ठारेइवा
; वाअनप्रमाय काअपणे । अहरे उग्गाहिक्कं सहरसं कग्गाहिता । अपरि एअइज्जाराकाज मको तेवहेके । विहां हेमयोयकसहरसं यज्जिता । एअइज्जा
याअन अर्कोन । मअ सासमुत्तर काअकमयसहरसे । विहासे एअसाससउत्तराग्गाहि पिठ्ठेके । एअकधूमपयमपठ्ठोकेरइवाकं तिविनिरवासासयसा
या मभंतिपिमक्काय । इहा धूमप्रमाइविधो भारकोना सोमसाय नरकायासा कहवा तीर्थकरेकप्पाके । तेअमरगा अतावहा वाहिं चउरसा आन

द्विना स्नातृत्वाऽपरार्णमुसपिता यव नित्य सुवकाल परम मज्जुपमे कामेना ज्ञानसम्बद्ध गतु जातु विदधि मनाग प्य पालरासे व्ययिच्छिन्नमुता
 न नरकजपं मरकुदु य प्रत्यमुभवत्तः प्रत्यक वक्ष्यमाणा विहरत्य वतिष्ठत्त तदव साभाष्यतो नैरयिक सूत्र व्याख्यात मेध रवप्रजादिविषयास्यपि
 मन्त्राणि यथायोगं परिप्रावणीयानि प्राय उक्तव्याख्यानुसारं सुगमत्वा स्वबल पट्टपुच्छिभ्या ॥ धर्ममपुच्छिभ्या च मरकावासाः कपोतवर्जाना

रगरक्रुप्तजोद्धसपद्मा मेयवसापूपपल्लवुरद्विरमसचिस्किर्षलिज्ञाणलेंयणतला असुइव्रीसा परमदुस्त्रिगधा काऊ
 अग्निगिवन्ताजा कस्करुफासा दुराहियासा असुजा नरगा असुजा णरएसु वेयणा एत्यण वालुयप्पजापुठवीण
 रइयाण पज्जसा पज्जसा णाणा पयासा । उववाएण लोयस्स असुखेज्जइजागे । समुग्घाएण लोयस्स अ
 सखेज्जइजागे । सहाणेण लोयस्स असुखेज्जइजागे । तत्यण यद्वे वालुयप्पजापुठवीणेरइया परिवसति
 काला कालाजासा गत्रीरलोमहरिसा जीमा उत्तासणगा परमकिरहा वग्गेण प० समणाउत्तो । तण निज्ज

पमुक्कनरना यससन्नयेमुवववासा । तिक्की नरवावासासार्गीहि वाठवाकारि वाहिर बीरय वावत् पयुममरकावासा पयुम मरकनोविहना भागवेले । प
 ताच भूमपमाए पठगेए केरवाच पण्डसपण्डसाच ठावा प । इक्की भूमप्रभापुत्तिवो नारको पपयीसा पपयीसाजा ठामकजा । उववाएवसाय
 पनं समवावच वावकापस उद्धविकवायस पस । उवववीसाकजा एण समवातसाकने पस सखाजसाकन पठ० । तत्तए वद्वे धूमपमपठवो
 वरइवा परिवसति । तिक्की ववधूमप्रमानारको वयवे । कासाकासाभासा जाव निर्धपरमसुक्कतव नरगसय पण्डपुग्घमाचाविहरति । कासाकाको
 थाभाचिदिव वावत् नित्य परमपमम मरकमव प्रतिवरताजकी विवरैले । कक्किमते तमापुठवीकेरइयाच पण्डतपण्डताच ठावा प । तिक्की हेम
 ययन् तमापुठगेना नारको पकीता पपयीप्पाना ठामकजा । पावसा तमापठवोए सोक्कसुत्तर जाववसवसइरसकाइजाए कवरि एग्गोयचसइस्स ठ
 रगाइया । इभोतम तमापुत्तिवोए एकवाच सासेवकार प्रमाच जावपणे कपरि एकइकाराप्पान मूकोने । विहएमेमोयवसइरसकक्किता मय्य वेव

न वल्लभाः मारुकीत्यतिस्थानमव्यतिरेकेण व्यस्य सर्वत्रापि तेषां क्रीतपरिणामत्वात् तथा वाङ्-मकरं कुरुसप्तमीसु काञ्चनचण्डिवकाजानप्रयन्ति
 धमति ययीकपुचिवीवाइत्य परिवाकप्रतिपादिकां सङ्गृह्णित्वाध्यामाङ्-अधोयजतीतिमित्यादि । अशीतिवृत्त्याधिकशतसप्तसरवमजाया आहृत्य सु

नीया निञ्च तस्या निञ्चे तसिथा निञ्चे उच्चिगा निञ्चे परममसुजसवद्धं णरगजय पञ्चणुस्रवमाणा विहरंति
 कहिण नत ! पंकप्यन्नापदविणरहयाण पञ्जानापञ्जज्ञाण ठाणा पयसा ? गोयमा ! पंकप्यन्नापुठवीए वी
 सुत्तरजोयणसयसहस्सयाहसाए उयारि एग जोयणसहस्सं उग्गाहिहा हेठावंग जोयणसहस्सं धज्जिहा
 मज्जे अठारसुत्तरे जायणसयसहस्से एत्यण पंकप्यन्नापुठविनेरहयाण वस निरयाथाससयसहस्सा नवतीति
 मरुमाय । तण णरगा अत्ती यहा वार्हि चउरसा अहे खुत्तप्यसठाणसठिया निञ्चधयारतमसा ववगयगह
 चदसूरनस्कसजोइसपह ! मेयवसापूयपळउरुहरिमसचिक्खलिहाणुलेयणतला असुईवीसा परमदुस्सिगधा
 काजयगणियथाना करकफासा असुना नरगा असुना नरगेसुवेयणासु एत्यण प्यकप्यन्नापुठवि

दमतरे जाइवमइम । नौचे पंकइकारवाअम मओग विचे एकसाप पळउरुमार सीकनमीहि । इअव तमस्पमपुठवो चउरयाच । इओ तममभापुवि
 दाभा मरकावास के । ममपूय निरवाव सुवसइअइवतिमक्काय । मक्कापुवोच जग मरकावासा तोवेकर कट्ठा । तवमरमा अतीवडावाहि कल
 रमा चउरएपमठावमठिया निरुधयारतमसा । त मरकावासाभाहि वाटसाकार भाडिर चोरसइ नौच सुप्रमपणमसखिनके नित्त्वपइकारके गथा ।
 ववमय मइ च मूर मक्कम जाहि पडा मइ वसापूय पळस इटिरमस चित्तिमक्कित्ता अल्लभतसा असवासायारमटधिगथा । मइ चउर सूय मळप
 त्याधिओनो ममारइत सभावे मइ यय । पूगपडन इडिरमांत तवेकरो चोक्कावे भू ममा एतावतामाठी मगधके । कल्लइकासा सडियासा अममरगा
 दमनीनिरपमु वेयवाचा । कल्लमक्कम पुळउरुहवाथाय कापोतगापच कहे एइओ भगुमवइमा मरकनो । एत्त्ववतामापठ । चउरयाच पळतमपयत्ताच

द्विना स्तुतवावपराष्टुमुसपिता धर्म नित्य सुवकाल परम मज्जुप्रभे कालेमा ध्रुवसम्बद्ध भक्तु जातु बिदपि मनाग व्य पाप्मरासे व्ययिच्चिअसुधा
 नं नरकत्रय नरकदु य प्रत्यमुभवन्तः प्रत्यक वदयमाना विहरस्य वतिष्ठन्तः, तदव सामान्यतो नैरपिअ मूत्र ध्यास्यात मव रजप्रजादिविषयास्पयि
 सुशान्ति यथायोग परिप्रावनीयानि, प्राय उक्तव्याख्यानुसारं सुगमत्वा स्ववस पशुपयिष्या ॥ सममपयिष्या च नरकावाधाः कपोतवर्णात्रा

रगस्कृत्तजोद्वसपहा मेयवसापूयपण्डुररुहिरमसन्धिक्षिलिहानुलंघनतला असुहृन्नीसा परमदुस्मिगधा काऊ
 अग्निगिवन्नात्रा कस्करफासा दुरहिंयासा असुजा नरगा असुजा नरएसु वेयणा एत्यण वालुयप्पन्नापुठवीण
 रइयाण पज्जत्ता पज्जत्ता ठाणा पयात्ता । उववाएण लोयस्स असुखेज्जइजागे । समुग्घाएण लोयस्स अ
 सखेज्जइजागे । सठाणेण लोयस्स असुखेज्जइजागे । तस्यण वहुवे वालुयप्पन्नापुठवीणेरइया परिवसति
 काळा काळीनासा गन्तीरलोमहरिसा नीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वस्येण प० समणाउत्तो । तेण निञ्ज

पमुजरना सयजरयेमुवेववासा । तिहा नरकावासागमिणि वाटलाकारे वाहिर बीरय वावद् पमुमनरकावासा पमुम नरकनीवेदना भागवेवे । प
 तव धूमपमाए पठगोए वेरइवाच पज्जत्तपयत्तत्ताच ठावा प । इहा धूमपमापविरो नारको पयवीत्ता पयवीत्ता ठानकत्ता । उववाएसकास
 वरं समवाएच कावमपस पट्टावेककावस पस । जपजगीत्ताकना पस समवात्ताकने पस काखानकावन पस० । तत्तक वइवे धूमपमपटगो
 वरइवा परिवसति । तिहा वकीधूमपमानारको वसवे । काळाकावासा वाच निर्धपरममयुधमव नरगमय पसखुम्भमाचिइइरति । काळाकाओ
 यानासिइव वावत् नित परमपमम नरकमय प्रतिधरतावकी विवरेवे । कश्चिमते तमापुठवीचरइवाच पज्जत्तपयत्तत्ताच ठावा प० । तिहा हेम
 यमम् तमापुठगोन नारको पवीत्ता पयवीत्ता ठानकत्ता । गायमा तमापठगोए कावसत्तर कायवमवसइरसकाइजाए उववि एगळोयचउजरस च
 रमाहिता । इभोतम तमापविरोवे एककास साखेइकार प्रमाच साखेइकार मूकोने । विहउएनमायचउजरसवज्जिता मग्ग वेव

ज्ञाने, सन्धानेण लोयस्स अस्सखेज्झाहन्तागे तत्थण घट्ठये धूमप्पन्नापुढयिणेरुद्धया परिग्रसति काला कालोच्चासा
गन्तीरलोमहरिसा जीमा उप्पासणगा परमकिण्ह। यथेण पस्सत्ता समणाउत्तो। तेण गिच्च नीया निच्च तत्था
निच्च तमिया निच्च उक्खिग्गा निच्च परममसुत्तसथम्भनरगजय पस्सुप्पग्रमाणा विहरति। कहिण ज्ञत । तमा
पुढयिनेरुद्धयाण पज्झाप्पात्ताण ठाणा पस्सन्ता २ गोयमा । तमापुढयोए सोलसुत्तरजोयणसयसहस्सयाह
प्पाए उयरि एण जोयणसहस्स उग्गाहिप्पा हेठायेग जोयणसहस्स वज्झिप्पा मज्ज चोद्धसुत्तरे जोयणसहस्से
एत्थण तमप्पन्नापुढयिणेरुद्धयाण एगे पच्चणे नरगावाससयसहस्से हवतोति मस्साय, तण नरगा अत्तो बह्हा
याहि चउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्चधयारतमसा ववगयगहचदसूरनस्सज्जोडसपह्हा मेद्वसपूय
पळलशहरिमसच्चिरिक्खल्लिप्पणलेवणतत्ता अत्तुईव्रीसा परमदुस्सिग्गधा कस्सकफासा दुरहियासा अत्तुच्चा न
रगा अत्तुच्चा नरगेत्तु वेयणाठे एत्थण तमापुढयिणरुद्धयाण पज्झाप्पात्ताण ठाणा पस्सन्ता, उव्वयाएण
लोयस्स अस्सखेज्झाहन्तागे समुग्घाएणं लोयस्स अस्सखेज्झाहन्तागे सन्धानेण लोयस्स अस्सखेज्झाहन्तागे, तत्थण
यहने तमप्पन्नापुढयिणरुद्धया परिग्रसति काला कालोच्चासा गन्तीरलोमहरिसा जीमा उप्पासणगा परमकिण्ह।

नरगम्य पञ्चमसहस्रं विहरति । ते निम्न सीकता निम्न वस्त्रा निम्न वस्त्रा । परमदुष्टं सर्ववशी नरकनामं प्रविभागतता
विहरै । अहिबभूत तमतम पुठबोकेरदशाप पञ्चतसपञ्चनार्च ठाका प । बिहो केमगबन् तमतमापुबिबो नारको धर्यात पययोसाता ठामक्या ।
नाममा तमतम ए पुठोप पुठतरत्रायबसबसरस दावकाप । केवौतम तमतमा पुबिबो एकसाप बसै धमोदकार योक्तन कावपेवक । उवरि पड
तव्यत्रायबसबसरस उपादित । उपर साठानामसदसयाजन परगाराके । उडावि पडतेयक्यायबपुहरस पञ्चिता मज्जेतिसुकायबसबसरसेनु ।

नेरडुयाण पञ्जाप्तापञ्जाणा ठाणा पखात्ता । उत्रयाएण लोयस्स अस्सखेज्जइजागे, समुग्घाएण लोयम्म
 अस्सखेज्जइजागे, मठाणण लोयस्स अस्सखेज्जइजागे तत्थग यद्दव पक्कप्पजापठविणेरडुया परिघसति, काला
 फालोन्नासा गन्तीरलोमहस्सिमा मीमा उत्तासणगा परमाक्किण्हा यस्सेण पखात्ता समणाउसो । तण निच्च मीया
 निच्च तत्या निच्च तसिया निच्च उक्खिगा निच्च परममसुजसयद्द नरगजय पच्चुल्लघमाणा जिहरति । कट्ठि
 ण नत्ते । धूमप्पान्नापुठविनेरडुयाण पञ्जाप्तापञ्जाणा ठाणा पखात्ता ? गोयमा । धूमप्पान्नापुठवीए अठ्ठा
 रसुत्तरजोयणसयसइस्सयाहस्साए उत्ररि एग जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठा वेग जोयणसहस्स वज्जिता मज्जे
 मोलसुत्तरं जायममयसहस्से एत्थण धूमप्पान्नापुठवीणरडुयाण तिया निरयावासत्तयत्तहस्सा हवतीतिमस्काय
 तण नरगा अत्तो यहा याहि चउरसा अहे खुहप्पसठाणसठिया निच्चउयारतमसा यउगयगहचदमूरनरक
 मज्जोडुसपहा मेययमापूयपकठरु हेरमसच्चिकसल्लिगणलेत्रणतला असुइत्रीसा परमदुस्सिगाया काज्जयगिण
 ययाजा करककफासा दुराहियासा असुजा नरगा असुजा नरगेसु वेयणानु एत्थण धूमप्पान्नापुठविणरडुयाण
 पञ्जाप्तापञ्जाणा ठाणा पखात्ता । उत्रयाएण लोयस्स अस्सखेज्जइजागे, समुग्घाएण लोयस्स अस्सखेज्जइ

ठायाय । इत्थं तस्सचुविद्योना नारको यथाभा उपर्वाप्ताना ठामकत्ता । यथाएव सायस्य पसं समग्घाएणवायस्य पसं समग्घाएणवायस्य पसं । अए
 यथावाकन पसं समग्घाएणवाकने पसं सज्जानवाकने पसं । तत्तव चइव तसत्थमपठवोक्खरया परिवसति । तिक्का यथा तसप्रधानाजारको वमवे
 वासावाकाभासा गोभोरखामवरिका भोसा उताययसा परमवचवाययय । वासावाकोपाभावे भवमे भयनवमे च्छट्टारामवे च्छट्टा भोस विभक्करूप
 तिक्का रोडता च्छट्टवासाय च्छट्टा । समवाकसा । यहा यमवा पासुवायता । तव निच्चोया निच्चतत्ता निच्चतियया निच्चविममा परममदसवउ

हरप्रजाया इति विश्वसृष्ट्यापिबं बालुकाप्रजाया अष्टाविंशतिसृष्ट्यापिबं पद्मप्रजाया विंशतिसृष्ट्यापिबं अष्टादशसृष्ट्यापिबं धूमप्रजायाः पी
 कचसृष्ट्यापिबं तमः प्रजायाः अष्टाहर अष्टसृष्ट्यापिबं सप्त ॥ इति मिया इति ॥ सर्वायसत्या कामकामप्रजाया इति सम्भृत्य पयस्य य मुनेष यान
 नसृष्ट्य मुक्षा यावत्प्रमायं नरकाबाधयोग्य पुषिबोधाहस्य तावत्सृष्टीतुक्काम आह-अधुतर चत्वारिंशद्व्यायाह्वय ॥ रजप्रजायादेि काशीतिसृष्ट्यापिबं

यथेण पणुता समणाउसो । तप निश्व नीया निश्व तसिया निश्व उखिग्गा निश्व परममसुजसग्रद्धं
नरगन्नये पञ्चणम्मवमाणा यिहरति । कहिण नत । तमतमापुढविणरइयाण पज्झत्तापज्झत्ताण ठाणा ५०,
१ गोयसा । तमतमापुढवीए अठुत्तरजीयणसयसहस्सयाहप्पाए उयरि अरुतेयअ जीयणसहस्साइ उग्गाहिहा
हेठाणि अरुतत्रयजीयणसहस्स वज्झिता मज्जे तिग्गिजीयणसहस्सेसु एत्यण तमतमापुढवीजेरइयाण पज्झ
त्तापज्झत्ताण पच्चदिसि पच्च अणुत्तरा महइमहालगा महानिरया पय्यत्ता, तजहा-कालं महाकाले रोक्खु म
हारोक्खु अपड्डाणे, तेण नरगा अतो धट्टा याहि चउरंसा अहे सुख्यसठाणसठिया निश्वधयारतमसा
वयगयगहघदसूरनरक्कत्तजोइसपडा मेयपूययसारोहरिमसपलाचिरक्कवल्लित्तानुलेवणतला असुइवीसा परमहु

[illegible]

सहं यादृश्यपरिमाणं तस्योपरितनं मेक योजनसहस्रमेकं पापीयोजनसहस्रं धर्मेयित्वा शीघ्रमरणावासापारजूलमतो रत्नप्रज्ञाया मरकायासयोभ्य
यादृश्यपरिमाणा दृष्टतित्वद्वयाधिकं प्रवर्तति सप्त दश सप्तधा पुण्यस्य भावनीयं साधनं मरणावासासङ्गप्रतिपादनाय सङ्गद्विगाधामाह-तीसाप

द्विगधा करकफासा दुरहियासा अमुञ्जा नरगा अमुञ्जा नरगेसु वेदणात् एत्यण तमतमापुढविनेरद्वयाण
ठाणा पन्तत्ता, उधवाएणं लीयस्स अस्सखेज्जइजाए समुवाएणं लीयस्स अस्सखेज्जइजाए सठाणेण लीयस्स
अस्सखेज्जइजाए तत्यण यद्वे तमतमापुढविनेरद्वया परिवसति काला कालान्नासा गन्तीरलीमहरिसा ज्जीमा
उत्तासणया परमकिएहा वन्तेण पन्तप्पा समणाउसो ! तेण निच्च ज्जीया णिच्च तत्या निच्च उद्धिग्गा निच्च
परममसुजसयत्त नरगज्जय पच्चुणुसुवमाणा विहरति, असीतयस्सीस अथावीसचहोइवीसच । अथासरसो

प्रभादित ज्जभावे मेद वया पपूत पक्क दधिरमांस तेवेकरो चोक्का । जलरवासा परसदुष्मिन्नेवासाय जगविक्खाभा । भूमिनातका यमुचि परल्ल
दुमग्ग पविक्खाभा । जलरवासा दुरहियासा पसमानरगा यमुमानिरस वेववापो । जलमयय ववे अद्वियाववायाय पक्कामाठा मरकावासा
तेज्जो वेदनीय यमवेदमानरक यमुमनरकवदना । पक्क तमतमा पठ विरयावंठावा प । इहा सातमोद्विबो मारकीना मानकज्जावे । सववा
पक्क सादस्य पक्क समुवापक्कमानस्य पक्क सादस्य प । समज्जवाओक्के पक्क समुदातसाक्के प । तत्तव वक्के तमतमा पुठ
विरेराया परिधयति । तिहा वक्का तमतमाद्विबोना मारको वससे—कावावावाभासा गभीरज्जामहरिसा मोमापातासवणा परमविद्यावक्के प ।
कावाव वाओपाभा मयत वसे जम्भउरामवे ज्जने जलरववेक्का परम ज्जवव । समवाववा । यवायमय पावयाववा । तव निच्चमोया निच्चतत्या
नियनमिवा निच्चविद्या निचपरममज्जववज्जमयय पक्कसादमावा विहरति । ते भिक्ख बोद्धता नित्थ वक्का नित्थ दधिरत्त नित्थ परमपसु
नरकर्मवयो भय भावताववा विचरे—पापीयत्तीस पक्कावोसववावोसव अथारससाससज यदुत्तरमेवद्विगमिया । १ । रत्नप्रभा इक्काय पक्कोइजा

रपतिथासु सरसरपतिथासु ग्रिलपतिथासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिह्नलेसु पव्वलेसु धव्विणेसु टीत्रेसु समुद्धेसु स
 सुसुच्येय जलासएसु जलठाणसु एत्थण पविठियतिरिक्कजोगियाण पज्झाप्पज्झाणं ठाणा प० । उव्वथा
 एण लागस्स अस्सखेज्जइन्नागे । समुग्घाएण लायस्स अस्सखेज्जइन्नागे । सठाणेण लायस्स अस्सखेज्जइन्नागे ।
 कहिण नत्त । मणुस्साण पज्झाप्पज्झाग ठाणा प० । अतो मणुस्सखित्ते पणयालीसाए जोयणसयसह
 रससु अह्मइज्जेसु दीयसमुद्धेसु पक्करससु कम्मज्जमीसु तीसाए अकम्मज्जमीसु तप्पन्ताए अत्तरदीयसु एत्थण
 मणुस्साण पज्झाप्पज्झाण ठाणा प० । उव्वथाएण लायस्स अस्सखेज्जइन्नाग समुग्घाएण सव्वलोए सठाणे
 ण लोयस्स अस्सखेज्जइन्नागे । कहिण नत्त । नवणवासीण देव्याण पज्झाप्पज्झाण ठाणा प० ? कहिण

बोस दोविबान सुअ छिबामु मरेम सररपतिथासु । कूपे तलाव मठो इह नावि पुब्बारवो दोविवा शुआविवा सर सररपतिनिविदेविज्जप
 तिविदे, कम्मरेम निज्जरेसु विज्जरेसु पज्जसम यणिकस दीयस ममरसु सुत्तेमवत्त जलासयस जलहावेस । सबविदे परेत पाबोमोम्भरवे वोक्कठासेपाकरपा
 वाठामे हावे ममरसु सव जलात्रवे जलठाम । इत्थं पवेविठियतिरिक्कविवाक्क पक्कतपक्कताक्क ठावा पं । इह पवेद्वय तिरिययानियाना ठाम प
 बीता अपर्वाता कथा । उव्वथाएक्क लाकज पसे समुग्घाएक्क यक्क प सठवेक्कथायस प० । उव्वथाएक्कलाकने प० समइ तलाकन प ख्खानाकाकने
 पक्कतामेमानी । काक्कभते म० वसाक्क पक्कतपक्कतागाक्क ठावा प० । किहो कम्मवन् मनुयथा पर्याता अपर्वाताना ठामकथा । मायसा येतामज्ज
 क्कयेत पक्क भोसाएक्काक्कवत्तवमम । क्कभोतम मनुयययमनिदि ४५ ण ख्खानाकनिदे । अक्कठाएक्कसु दोयसमद्वस पक्करसक्कभूतोसतास प पक्कत्तामा
 सु उव्वथ एतेतरदीयम । पठाईव पाक्के समुत्त दाय १५ कम्मगुमिविदे मोस पक्कर्ममिविदे ५१ येतरदीये । एक्कं मयुग्घाक्क पक्कत पक्कताक्क ठावा
 प । इहो म० प पर्वातो अपर्वाता कथा । उव्वथाएक्क लायक्क प ममरपाएक्क लायक्क प सठवेक्कलाकण प० । उव्वथाक्कोक्कने पक्कत्त तमेमानी ह म

[illegible]

नयनयामीदृशा परिग्रसति ? गो० । इमीमं रयणप्यज्ञाएपुद्वीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सयाहत्ताए उ
यिरि एग जायणसहस्स उग्गाहिंसा हाचंठाग जोयणसहस्स वज्झिंसा मज्जे अटुहत्तरिजोयणसयसहस्स ए
त्यण नयनयामीदृवाण पज्झिंसापज्झत्ताण सत्तनयणकोमीनु बायत्तरिच नयणावाससयसहस्सा हवतीति
मरुत्ताय, तण नयणा बाहिं यहा अयनो समचउरसा अहे पुक्ककनियसठाणसंठिया उक्किस्सतरविउरुग

[illegible]

रतापकनिष्ठा इति ॥ उरुभाण्ड विद्यो रकीण मतीय क्कामिन्वर्गः । उरुकीणसत्तरयाधौ सातपरिखाणा सा उरुकीर्णात्तराः किमुत्तं जयति साताना
 च परिखाणां च स्पष्टवैकल्याभ्यासनाथ सपात्तराल मष्टती वाली समस्तीति खासति च परिखा स खासपरिया सत्कीर्णात्तरा विपुला विलीया
 गभावा समव्यमध्यजाणा खातपरिया यया मत्रनाना परित खान वत्पाखात्तरविपुलगत्रीरयातपरिखानि खासपरिखाया वाय प्रतिधियाय
 परिया उपरिखितासा अष्टसुदुब्धिता खात नू मयत्राप समर्गित ॥ पागारहास कयाळ तारच पक्रिन्वारदसजागाइति ॥ प्रतिप्रवसप्रकारपु जा
 मामुष्पहासकपाटोत्तरसप्रतिद्वारादि अहासकपाटतारचप्रतिद्वाररूपदसजागा देशविअपायपु तानि प्राकाराहासकपाटोत्तरकप्रतिद्वारदसजा
 गानि तत्र अहासकाः प्राकारस्यापरि प्रत्यापयविअपा कपाटानि प्रतोसीद्वारवल्कानि एतत्त प्रताल्याः एतच्च सूचिता सम्यया कपाटानाम समवा
 न् तोरवानि प्रतानीद्वारप्य प्रतिद्वारादि स्थूनाद्वारागाभासलवतीनि सप्तद्वाराणि तथा ॥ जलसुवग्निसुसलसुखपरिखारिया इति ॥ यथापि मानाम
 काराणि जलपूम्बो मद्यापट्टया मञ्जाश्रिता वा या पतिता सत्यः पुरुषाणा क्षातानि ग्रानि मुसलानि प्रतोतानि सुसुखयाप्रहरणविअपा स्ते परिवा
 रितानि समततो पट्टितानि एत एव योण्यानि परेयोपुमञ्जक्यानि अयोण्यात्या दूव च सदाश्रयानि सुयकास जया यपु तानि सदाश्रयानि स
 पक्षाल प्रययन्ती त्वथ तथा सदा सवकाल गुप्तानि प्रहरणे पुर्वे य योदुभिः सवतः समन्ता निरन्तरपरिखारिततया परेवाससहमानाना म

नीरखातफलिहा पागारहालयकयाळतोरणपक्रिन्वारदंमजागा जतसयग्निधुमुसदिपरित्रारिया झुउज्जा सयाज
 या सया श्रुजेया सदा गुप्ता झुळ्याएकोठरद्वया झुळ्यालप्रधपणमाला खमा सिधा किकरा मरुळोत्रररिक

दि पहरम मम ज्ञात सममनो अविधा सखानि एतच्च मूल्याय । उद्विष्यारविषकगभोर व्यावधान्ध पागारहालय अशाळ तीरव पाळद्वारदेवभागा ।
 नंवा विप्लोप विट्ठलमय प्रकार अप ठठठित तारच माट हार तमो छट वारचैवूल । जलसयग्निधुमुसयममठि परिवारियाय चाञ्जामया अजवास
 पागुता । यवनामनवे विहा मुमस प्रहरव विषयपंचे यजे परिवर्धित व्यासहे क्फासेकरो सदा जीपताहे सदा गुप्तहे । चकयासकुहररया भजया

नामपि प्रवशासुभवात् ॥ अन्त्यासकोटरइया इति ॥ अष्टवत्वारिंशद्देविकविष्णुविकसिताः कोष्टका अपथका रथिताः स्वयमेवरचना प्राप्ता ययु
तानि अष्टवत्वारिंशत्कोष्टकरचितानि सुयुगविद्यना त्वाचिको निष्ठान्तस्य परनिपातः तथा अष्टवत्वारिंशद्देविकविष्णुविकसिताः कोष्टका अपथका रथिताः स्वयमेवरचना प्राप्ता ययु
तानि अष्टवत्वारिंशत् कोष्टकरचितानि अन्त्यासकोट
प्रसक्तकृतयनमासाभीति तथा येनाचि परकृतोपवृत्तितानि चित्रानि सदान्मूलोपतानि तथा चिकुरज्जना य उमरा स्ते दवर्गे कृतापरिचि
तानि सुवताः समस्ततो रक्षितानि चिकुरामरदरकापरक्षितानि ॥ साठवैल्लोहयमद्वियाइति ॥ इयनामय दूने मीमयादिना उपसपन ल्लोहय
कुव्यामां मासस्य च सटिकादिनिः सम्पुष्टीकरं साठ ल्लोहयाभ्या मरितानि पूजितानि साठल्लोहयमद्वियाइति तथा गोशीर्षे गात्रीर्यनामकं
चन्दन रत्नचन्दनेन चदरं यइसन अपठाग्रबादेव वा कृताः पञ्चाङ्गुलय कृता इत्याका ययु तानि गोशीपसररत्नचन्दनदवरदक्षपञ्चाङ्गुलि त
सानि तयोर्पाविता निवक्षिता चन्दनकस्तशा माङ्गुल्यकस्तशा येयु तानि उपचितचन्दनकस्तशानि ॥ चन्दनपञ्चसुखयतोरणयद्विदुवारदक्षजगाइति ॥ च
न्दनपटैः चन्दनकस्तसै सुकृतानि सुपुङ्क्तानि क्षाप्रनामानि तात्पर्येण यानि तोरकानि तानि चन्दनपटसुकृतानि तारकानि प्रतिहारदक्षजग
हारदक्षजगान ययु तानि चन्दनपटसुकृततारकप्रतिहारदक्षजगानि तथा ॥ असोसताविजसवहव्यारियमहदामकस्तायाइति ॥ आशवाक् अचोन्नमी

या हा उग्रोडयमहिंया गोतीसरसरस्तचवनदध्वरदिन्नपधगुलितला उग्रचियचदणकलसा चदणघरुसकयतो
रणपक्रिदुशारदेमुजागा अाससोसप्तत्रिउलयहृगधारियमक्षिदामकलावा पचयन्तसरससुरभिमुक्तापुष्पुजात्रया

नवयवननाम् । पडतामीमेमए काटरचनाकोपीके पडतामीसभे काटरचनाकोपीके पडतामीस पूजमाकासहित । खुमासिवा विबरा मरदुडाबर
क्रिया सागगाइ सडिकाबासीपरमरणरतचन्पा । येमपरितना तथा उपद्रव तिके रचित विवरभूत के एवता मेक राख्ताके जेवर साङ्कगवा गु
हिर धान्य के गोमोपनाम चन्दन रक्तचन्दन । दहरदिश परामुसितापाय विवचन्दन ललसाचन्दन लक्ष्मण ताएच पडिनुमारएवभाषा । दुर्धरे हो

सत्ता चामन्ना प्रमोक्ष इत्ययः सद्गुरुं सुखदशसु शलोक्तसो उपरिब्रूयतु इत्यथ विपुलोवि स्त्रीर्वा वृत्तो यर्जुलः यथा रियइति प्रसवितो मास्यशाम
कसायः पुप्यमालासमूहो यपु ताव्य सज्जोरसत्ताविपुलवृत्तप्रक्षितमास्यदामकसापाणि तथा पचवर्ज्येन सुरजिक्ता मुखेन विहित पुप्यपुञ्जसज्जवर्ज्यो
पचारस्य पूजया कसिदाणि पच्यमवसुरजिमुक्तपुप्यपुञ्जोपचाः कसिताणि ॥ कासायुरुपवरजुःपुसकतुलकूचवमयमयतमं पुद्गुयान्निरामेइति ॥ कासागुरुः
प्रसिद्धः प्रवरः प्रपामः कुण्डुकक बीजं तुल्यसिखइव कासागुरु य प्रवरजुःपुसकतुलकूचवमयासागुरुप्रवरजुःपुसकतुलकावि तेषां पुप्यस्य यो मममपायमानो
नपठदुत इतस्तो विप्रसुत स्तेना निरामावि रमणीयानि कासागुरुपुसकतुलकूचपमयमपायमानगणाद्भूतान्निरामावि । तथा क्षोभनो गचो ये
पांत सुगन्धाः त च त वरगन्धा युवासाः सुगन्धवरगन्धा सया मन्वाः स यद्य स्त्रीति सुगन्धवरगन्धगणपिक्कानि अतोनेकस्वरवितीकप्रत्ययः अत यय
नभ्यवतिभूतानि सौरज्यातिशया द्रुम्यगुटिकाकस्याभीत प्रावः तथा अप्वरीगजाना सथाः समुदाय स्तेन सम्यक् रमणीयतया चिकीर्षाणि व्याप्ता
नि अप्वरगणवसङ्गुविचिकीर्षाणि तथा दिव्याना भुदिताना भातोद्याना वेङ्गुलीकायुदगादीनां ये प्राव्या स्तः सम्यक्वदितानि सम्यक् शोधमनोहारितया
प्रकर्ष्य सर्वकाल भदितानि शब्दयति सवरवमयानि सवोत्तमाः सामस्त्यन मत्स्य कवचन रजमयानि वा अज्जानि आकाशरक्तपिक्कवरवदति स्त्रज्जानि
प्रसृजानि सस्यपुद्रस्तस्त्रपनिप्यकापि प्रसृजदसनिप्यकपटवत् ॥ ससृजानि ॥ भवजानि ॥ भवजानि पुटितपटवत् ॥ यथाइति ॥ पृष्ठानीकपृष्ठानि करयानया पायाव

रकालिया (ग्र१४००) कालागुरुपरकुटुकक्तुक्क्षूतात्रिरामा सुगधवरगधगधिया गधव
हीन्रूया अर्च्यरणसघसकिना विद्वतुभियसहसपन्निदिता सहरयणमया व्यष्ट्या सरहा लग्हा घठा मठा

धाके पकामुनीमा बढेता जिज्ञा उपस्थितभाष्य को मङ्गलीकमय
 या सहवर्धवारियमसदात्मकस्त्रिया । मूमि छपरत वाङ्मय विस्फोर्ष
 पंजापया रचसिया बाबागुर पवरकुदबजणदक धूमन समघत गंधदुबा मिरामे । विखेप को जिज्ञा फुलबली तथा लज्जागर प्रधानबन्दक बोड सेवरा

नागपि मयेद्यासमवात् ॥ अन्त्यासक्रोशरहया इति ॥ अष्टवत्वारिंशोद्विजिह्वानिब्रह्मसिता कोष्ठका अपथरणा रचिता स्वयमेवरचना प्राप्ता येषु
 तानि अष्टवत्वारिंशोद्विजिह्वानि सुखादिदशना त्वाचिको निष्ठासस्य परनिपातः, तथा अष्टवत्वारिंशोद्विजिह्वानि तयः कृतवनमासा येषु
 तानि अष्टवत्वारिंशत् कृतवनमासानि अन्त्या जिह्वपति अन्त्यासक्रोशरहया दशवत्वारिंशत् प्रशस्तकोष्ठकरचिन्तानि
 प्रशस्तकृतवनमासानि तथा चेमाचि परकृतोपद्रवरहितानि शिञ्जानि सवामकुसोपतानि तथा बिहुरन्ना य उमरा स्तै वरुणे कृतोपरचि
 तानि सवतः समकृतो रचिन्तानि बिहुरन्नामरवरहयापरचितानि ॥ सावर्णेसक्रोशरहया इति ॥ इयनामय द्रुमे गीनयादिना उपसपन सञ्जीवयं,
 कुट्यानां मासस्य च सटिकादिनि, समुष्टीकरण साह उष्टोपयास्या मरितानि पूजितानि सावर्णेसक्रोशरहया इति तथा गोशीर्षिण गाञ्जीर्षनामकच
 न्दन रक्तचन्दन बदरय वृक्षान् अपठामाकारेण वा कृताः पञ्चाङ्गुस्य सासा इसाका येषु तानि गोशीर्षसरसश्च चन्दनद्वन्द्वपञ्चाङ्गुलि स
 भानि तथोपचिता निवर्जिता चन्दनकलया माङ्गुलकलया येषु तानि उपचितचन्दनकलयाणि ॥ चन्दनयक्तुयतीरपवित्रुवारद्वन्द्वजागा इति ॥ च
 न्नपटैः चन्दनकलयां सुकृतानि सुसुकृतानि साजनाभाति तात्पराय यानि तोरकानि तानि चन्दनपटसुकृतानि तारकानि प्रतिह्वारद्वन्द्वजाग
 ह्वारद्वन्द्वजाग येषु तानि चन्दनपटसुकृततीरकप्रतिह्वारद्वन्द्वजागानि तथा ॥ असप्तोसप्तविंशत्यङ्गुलारियमस्रदामकलाया इति ॥ आश्रयाद् अष्टोद्विजिह्वानि

या एता उष्टोद्विजिह्वानि गोशीर्षसरसश्चन्दनद्वन्द्वरिद्वन्द्वपञ्चगुलितला उत्रचियचदणकलसा चदणचक्रसुकृतो
 रणपक्रिनुव्वादेसजागा आसप्तोसप्तविंशत्यङ्गुलारियमस्रदामकलाया पञ्चयन्तसरससुरजिमुक्तापुष्पपुञ्जायया

चदवचमासा । पठतालोमेमए काटरचनाकोशोके पठतालोसभरे काटरचनाकोशोके पठतालोस पूसमासासहित । अमासिवा विह्वरा मरदकावर
 स्मिया कावकाव मरिवायाओसरसरगतचक्रा । जेमपरिकतना तथा उपद्रव तिजे रचित विह्वरभूत जे दवता तेजे राज्याजे जेपर सावर्णेसक्रोश
 विव धाव जे नागोपनाम चन्दन रक्तचन्दन । द्वादरद्विच पञ्चासुचितकायाय चियचद्वच चक्रसाचद्वच तारच यद्विह्वारद्वन्द्वजागा । द्वादर ना

सन्नाः चामनो प्रमौलप्र इत्ययः शृङ्गुं सुखतरसत्त शणोक्तले उपरिसप्यदु इत्ययः, विपुलोवि स्त्रीर्वा वृत्तो वर्त्तुल-वर्ण्यारियइति प्रलीयितो मास्यदाम
 कसायः पुष्पमालासमूहो ययु ताम्य सखोरसखविपुलपुलप्रलम्बितास्यदामकसायानि तथा पञ्चवर्णेन सुरभिजा मुक्तेन विमन पुष्पपुञ्जसखनो
 पचार्य पूज्या कसितानि पञ्चवर्णसुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकसितानि ॥ कालागुरुपवरकुण्डलकुण्डलसूत्रमधमपतगधुपुयानिरामेइति ॥ कालागुरुः
 प्रसिद्धः प्रवरः प्रथमः कुण्डलकुण्डल कालागुरु य प्रवरकुण्डलकुण्डलकालागुरुसमवरकुण्डलकुण्डलसूत्रमधमपतगधुपुयानिरामेइति ॥ कालागुरुः
 गणउदुत इतलो विप्रसुत स्तेना निरामावि रमणीयानि कालागुरुकुण्डलकुण्डलकालागुरुसमवरकुण्डलकुण्डलसूत्रमधमपतगधुपुयानिरामेइति ॥ कालागुरुः
 पात सुगन्धः ॥ नै च त वरगन्धः दयासाः सुगन्धवरगन्धः स्थाया गन्धः स एव स्त्रीति सुगन्धवरगन्धः पिकाभि चतोमेकस्वरादितोक्तप्रत्ययः, अत एव
 गन्धयतिमूतानि वीरप्यातिथया द्रुम्भगुटिकाकस्यामीति प्रायः तथा अप्वरीयकाना सयः समुदाय स्तन सम्यक् रमणीयतया विकीर्त्तानि व्यास
 नि अप्वरागवसङ्गविकीर्त्तानि तथा दिव्याना नूटिताना मातोद्याना वेङ्गुवीकानुदगादीना ये शब्दा स्तः सम्प्रदाितानि सम्यक् श्रोतुमनोहारितया
 प्रकपेव सयकाल नदितानि जप्यवति सवरवमयानि सर्वोत्तमाः कामस्त्यम मत्त कश्चो न रवमयानि वा शब्दानि आवायस्फटिकरवयदति स्तब्धानि
 सत्तानि सत्तपुद्रस्तपनिप्यकापि सत्तदलनिप्यकपटवत् ॥ सत्तदलनि पुटितपटवत् ॥ पडाइति ॥ पुष्टानीकपुष्टानि करयामया पायाव

रकालिया (ग्र१४००) कालागुरुपवरकुण्डलकुण्डलसूत्रमधमपतगधुपुयानिरामा सुगन्धवरगन्धगधिया गधय
 हीनूया स्रच्छरगणसथसकित्वा विद्युतेरियसद्वसपन्तदित्ता सखरयणमया स्रच्छा सख्हा लख्हा घठा मठा

पाके पकागुलीना वपेठा विहरी कपकितवाप्य के मङ्गुलीकमव चन्दमनाकनया मूठ सामित कोबाके वारव प्रतिहार देसमाय विहरी । आरणासत्तरि
 या स्रच्छरगणसथसकित्वा । मूनि अपर बांध्या विहरी, यसमासा पञ्चवय सख्हा सख्हा पुष्पनोपरे । पञ्चवयसरसरविमुक्त पप्प
 व आशया रक्तलिया कालागुर पवरकुण्डलकुण्डल धूमस धमसत गणधुया भिरामे । विहरी के विहरी कसुवली गया लख्हागर प्रधानकन्दु चोठ सेइहा

प्रतिभास्यते ॥ महाद्विति ॥ गुणानि सङ्गुमारक्षामया पायाद्वप्रतिमेय एत एव नीरजांसि स्यातादिकरभारद्वित्यात् निमलानि चागतकमलानायाद्व
निप्यङ्गुमि कम्बुद्विकमानि कदमरद्विताभि वा भिन्नकलङ्काद्विति । मि कङ्कटानि मि कयथा निरायरभागरूपपातेति जावाय व्यापादीप्तिपपा
तानि निकङ्कटव्यायायानि सप्रजाति स्वरूपतः प्रजायन्ति समरीचीनि यद्वियमिगतद्विराजालानि साद्यातानि यद्विव्यदस्थितवस्तुस्तीमप्रकाशनकरा
द्वि प्रमादापाति सप्त प्रमादाय समाः प्रसक्तय द्विताभि प्रसादीयानि सप्त प्रसात्तिकाराणि द्वितिप्राय तथा प्रसाभायान दशमयाग्याम यानि पश्यत ए
द्वपा न सप्त गच्छत इति तात्पर्योक्तः यमिरूपा इति प्रसिद्धिर्वा द्वदृक् भन प्रसादः मुक्ततया यमिमुक्त एव ययात्तानि यमिरूपाणि यत्सत्त्वसप्त
नीयानि इत्यर्थः यत्तमय पद्विरूपाद्विति । प्रतिविशिष्टं रूपं यया तान प्रतिकूपाणि यथया प्रतिकूपाणि यथया प्रतिकूपाणि

णीरया निम्मला निष्पका निक्ककळ्या सप्यत्ता ससिरिया सउज्जोया पासदीया टरिमणिज्जा झुन्निरु
धा पळिरुया एत्थण नवगयासीण देवाण पज्झापाज्झाण हाणा प० । उवयाएण लोगस्म व्यसखिज्जड

रस मेरना पुपते चरोरग्य गेबरो पङ्कन मयमवाबमानदे मग्ध बिहा । ललचबलमाधवा नयनहिमया पञ्चारनय सचसचिाननया । त-तु-उ-य-म-म-य-
पाबादिवा । नलग्न प्रवानके गन्धर्वेइनी गन्धनोबास मासोभूत सीगण्डनः पतिमय कथा पखरना गयसमूह तिने सकोबछे कुटितवेनु सुटहु । दि स
यनशाबाय मभाइरसाने नाभले एक सगुठपले । सखरनयनमया पञ्चा मया कहु सङ्गामहु । मोरया निगसा निगडा निगडबख सा । सर्व रत्नमयके
पाबायनीपरे भिमबखे सकमाख सूझपहस निघटखे सुटगनीपरे भिमबखे सकमाख सुखा घठारा मठारा के पापाबनीपरे निमल अपधानादिबेकरो
नथी । मयना सखिरीवा सखिरीवा पडिदवा मल्लाना पासाईया हरसखिणा पभिकवा पडिदवा । सप्रभा मातोनीपरे यीबेकरो माताबमानदे प्र
तिकप जूत्रकाकप होमैवै उधातयडित मननी प्रसाटकारी टखरायाण्य पभिकप रुपका नु साहिमा पावे । एतख भवबवासीय दगव पञ्चत पपल
नाबं ठ ० पं० । एइवै नामे भवमपतीना देवारा पयाता अपर्वाताभा ठामकथा । उमवाएबधीपण्य म समुग्गमाएबन्नायछ म सठावेबन्नायछ प ० ॥

एते ॥ त्रययवासी त्यादि ॥ एतः उत्तरोक्ता असुरकुमारादयो मधमठासिन्धो यथाक्रमं पूजागणितानि मुकुटे रत्नं चिह्नमूतं यथासौ तथा नागकुमारा नृ
 पतनियुक्तनाथरफ्टारूपचिह्नपरा मुकुटरत्नयुक्तमित्युक्ताः नागरफ्टादिविधचिह्नपरा य तथा हि असुरकुमारप्रवमवासिनयुक्तामिभिमकुटरत्नाः ॥ १ ॥
 पूवामिभिमाम मुकुटे रत्नं चिह्नमूतं यथासौ तथा नागकुमारा नृपतनियुक्तनाथरफ्टारूपचिह्नपराः ॥ २ ॥ सुपथकुमारा नृपतनियुक्तगठरूपचिह्न
 पराः ॥ ३ ॥ विद्युत्कुमारा नृपतनियुक्तजलरूपचिह्नपराः ॥ ४ ॥ अग्निकुमारा मुकुटनियुक्तपूर्वजलशरूपचिह्नपरा ॥ ५ ॥
 ह्योपकुमारा नृपतनियुक्तविश्वरूपपरः ॥ ६ ॥ उदधिकुमारा नृपतनियुक्तहृदयवररूपचिह्नपराः ॥ ७ ॥ रिककुमारा नृपतनियुक्तगलरूपचिह्नपराः ॥ ८ ॥
 वायुकुमारा नृपतनियुक्तनकररूपचिह्नपरादिः ॥ ९ ॥ स्तनितकुमारा नृपतनियुक्तवरहृमानरूपचिह्नपराः ॥ १० ॥ बहुमानकशरावसम्पुट शर
 गमनिकात्वेन नृपतयेषु नागरफ्टागठकवजादि यथात नृपतनागरफ्टागठकवजाः पृथक्स्तनानाङ्कितरफ्टसो मुकुटो यथाते पूर्वजलयाङ्कितारफ्टाः

ज्ञाने समुग्धप्राण लीयस्व श्वसस्वेज्जज्ञाने सठाणेण लोगस्स श्वसस्वेज्जज्ञाने तत्पण व्यहवे नयनवासीदे
 वा परित्रसन्ति त-श्वसुरानागसुवन्ता विज्जुश्वग्गीयदीवउदहीय । विसिपणयणिययणामा दसहाएएअवण
 दासी । श्रुत्तामणिमउत्तरयणनूसणा फणिगरुलवडुरपुण्णकलसकिउफेसा सीहमगरमयकश्वत्सवरवश्चमानि

अत्रजबामाकने य समवातमाकने य अज्ञानमाकने य संस्मानमेभाग । तत्तत्तं बहुन भवन्वासी देवा परिब्रसन्ति त । विहा पथां भवनपतो देवता
 रइत्ते तइजानान कइता । यमरानागसवन्ता विज्जयलोइहउदहीय । विसपणयणविद्यमाना दसहाएअभववासी ॥ १ ॥ असुरकुमार नागकुमार स
 य विद्यत पतिन होप उदधि दिग्ग यवन स्तानित ए नाम्हे दणपकारे भवनपतो ॥ १ ॥ शूडामविमउत्तरयण भूयसा नागपण गबल यः पण कलस
 विहादेसा सोइ इववरया पबमभर कइमान निज्जुतविबटविधगवा सकवा मइउ तथा मइज्जाया मइयासा मइाकवा मइापुभागा मइासुक्ता । न
 डामनि ररनविम मुक्कटै गोभे पसरकमारना विम नागकुमारना सप गइउ सुवचकमारना अथा कयम सिइ अथ मज मगर सरावसंपुट । ए चिन्धस

तथा सीददयवरागाः पट्टा यथोद्भूयकेषु यथाते सीददयवरागाः तथा मकरवद्वामाफि नियोजिते त्रिये प्राचयपत्रने चिह्ने गत
 स्थिते यथाते मकरवद्वामाफिचिह्नपरा सतः पूवपदेद्वः समासः पुनः सर्वे कथयन्ता इत्याह-सूक्ष्मा गो-न रूप येयाते तथा सत्यन्त
 कमनीयरूपादस्यः तद्यामिद्विष्ट्यादिति ॥ भवती श्रुति प्रवक्तव्यपरिवारादिका यथास महाशुका, तथा मवती श्रुतिः शरीररूपा प्राप्ररवगता च
 यथाभित महाशतयः तथा महत् वल शरीरमाकाययाते महाबलाः, तथा महाशुका स्याति, येयाते महायशसः, महाग् अनुजागाः सामध्ये क्षाया
 नुपश्रविवये यथाने महानुभावाः तथा ॥ महशुकादिति ॥ महामहद्वा ईश्वरः इत्याख्यात प्रविष्टिर्ययाते महेशास्या शयवा इक्षान मीशी प्रावे यज्मस्य
 य ययमित्यप एतदेवैतित्यवभात, तत इदमेव सुयभा त्मास्याति अन्तर्जतस्पर्धतया स्वापयन्तीति इशास्या, महान्त द्य त इशास्या द्य मह
 आस्याः क्षिप्त्वालोक्तादिति पाठः तत्र महत्सौक्य प्रभूतसंदेहोदयवशाद्योपान्त महासुखा इति ॥ तथा यज्मसस्कारो महा
 यासः इय वात्रपूवसूरिमवक्षिता व्युत्पत्तिः आशुभमनाह द्यो भनः अक्षाणि इन्द्रियाणि स्वविषयव्यापकत्वाद् एष्व द्य अक्षाणि वेत्यद्याक्षाणि महास्ति
 अद्याक्षाणि यथाने महाद्याक्षाः ॥ शरीरविदाइयवत्या इति ॥ शरीरे विराजितं वशो यथाते शरीरविदाजितयशसः ॥ कलगतुष्ठिययज्मिपनुया इति ॥ कटकाणि
 कसाचिकाप्ररबाणि कुटितानि वापुरकका कौः सान्निता विव सान्निती प्रूञी यथाम्ने कटकुटितसाम्मितप्रुञाः, तथा अङ्गदानि यादुञ्जीपानरवयिद्वे
 पदरूपाणि कुशलत कर्वाभरकविश्वपकप तथा यदौ मृष्टी कृती मवली कपोतो ये सानि सुमगलानि कर्वाभरकविश्वेयकूपाणि पारयन्तो

ज्युतिचिह्नचिघगता सुरुवा मोहिष्ठिया महज्जुतिया महायसा महावल्ल महाणुजावा महासोस्का हारविवाइ
 यवत्या कलगतुमिययज्मिपनुया स्यगवकुलमठगकतलकणपीठधारी विचिह्नहस्याचरणा विचिह्नमालामउ

इति रूपवत् महविश्वत् महायशस्य महावलो महाभागवत् महासोः ॥ शरीरविदाइयवत्या कलगतुष्ठिययज्मिपनुया ॥ शरीरविदा
 नामदीवा कइना कइना दइराएवा विवे कथा समझे मुत्रा ॥ यंगयकुलमठगकतलकण पीठधारी विचित इत्याभरवा ॥ यगद कुण्डल कर्वाभरवा भाषा

स्वेन शीताः ॥ अद्भुतमुत्कृष्टमप्युत्कृष्टवर्णपीठपादिकाः तथा विविधाणि सामान्यानि येषांते विविधवस्तुप्रकाः तथा ॥ विविक्तमाशाम
 वसिमध्या विविधाः माना मुमुयुत्कृष्टमीलौ मसाले मुकुटं च येषांते विविक्तमाशामौलिमुकुटाः तथा कस्याक कस्याककारि प्रवर वक्त्र परिचित ये स्ते
 कस्याकप्रवर वक्त्रपरिचिताः मुकुटादिद्वयं विविक्तमाशामौलिमुकुटाः तथा कस्याक कस्याककारि प्रवर वक्त्रपरिचिताः येषामुत्कृष्टं तदुत्कृष्टं
 तीति कस्याकप्रवरमाशामौलिमुकुटाः तथा मासदाः वदीप्यमानाः कोटिं क्षरीरं येषां प्रकाशयोर्युत्कृष्टं तथा प्रसम्भ इति प्रसम्भं या वनमाशामा सा
 भरीति प्रसम्भं वनमाशामौलिमुकुटाः ॥ दिव्यं सपयवर्ति ॥ अष्टविधयः पत्य सङ्गनेन न तु साक्षात्सङ्गनेन देवाना सङ्गनेन उद्यमवात् सङ्गनेन
 दिव्यं सपयवर्ति न च देवानामस्त्योनिं सति तथा चोक्तं लोवाभिगने-इवास्वयववी अम्हा तथि अचही नैव विरा इत्यादि ॥ दिव्या इहोए इति
 दिव्यया प्रपानया अद्या परिवारादिकया दिव्यया सुत्या इहायैवमोयस्यवव्या, शुचिमिगने इति वचनात् दिव्यया प्रपानया प्रवमावावगतया
 दिव्यया अद्याया समुद्ययोर्युत्कृष्टं दिव्यया क्षरीरमन्त्रावित्ताभ्यासाया दिव्येन तेजसा क्षरीरमन्त्रावित्ताभ्यासाया दिव्येन तेजसा देहवक्त्रदरतया

लिमउता कक्षाणगपयवत्परिहिया कक्षाणगपयवत्प्राणुडेवणधरा नासुरधोदी पलववणमाउधरा दिव्येण
 ययोण दिव्येण गधेण दिव्येण फासेण दिव्येण सधयेण दिव्येण सठाणेण दिव्या इहोए दिव्या जुत्तीए
 दिव्या पत्ताए दिव्या अद्याए दिव्या ध्वन्नीए दिव्येण तेण दिव्या एस्साए दसदिसाउ उज्जोवेमणा
 पत्तासेमाणा तण तत्य साण २ जवणयाससयसहस्साण साण २ सामाणिपसाहस्सीण साण २ तायत्तीसाण

यथा विविधवस्तुप्रकाः यामरव ॥ विविक्तमाशामौलिमुकुटाः कस्याक कस्याककारि प्रवर वक्त्र परिचित ये स्ते कस्याक कस्याककारि प्रवर वक्त्र परिचित ये स्ते
 विविक्तमाशामौलिमुकुटाः यामरव ॥ विविक्तमाशामौलिमुकुटाः कस्याक कस्याककारि प्रवर वक्त्र परिचित ये स्ते कस्याक कस्याककारि प्रवर वक्त्र परिचित ये स्ते
 विविक्तमाशामौलिमुकुटाः यामरव ॥ विविक्तमाशामौलिमुकुटाः कस्याक कस्याककारि प्रवर वक्त्र परिचित ये स्ते कस्याक कस्याककारि प्रवर वक्त्र परिचित ये स्ते

वृत्तविद्या उद्योतपत्रः ॥ प्रकाशवंतपत्रासितभाषाहति ॥ योगमात्रा ही प्रवक्तव्यास्मिन्ने वेवाकमिति धाक्यासङ्कारे तत्र स्वस्थामे साध २ मिति स्त्रेपा २
 मास्तीपामामित्यर्थ ॥ भाइइपोरवसुमित्यादि ॥ अपिपत्रः कम अपिपत्र्य रवाइत्यर्थः सा न रणा सामाम्यभा रणकेय छियसे ततभाइ-पुरस्यपतिः
 पुरपतिः तस्यकम पौरयत्य सर्वपाभा स्त्रीयाभामेसरत्वमितिभावः तदायसरत्व नायकत्वमतरेकापित्वनायकानियुक्त तथाविधयइवितकसानाम्पु
 रुयस्येन प्रवति ततोमायकत्वप्रतिपत्त्ययमाइ-स्त्रामित्य स्वमस्यास्तीतिस्त्रामी तद्वाय स्त्रामित्वनायकत्वमित्यर्थः, तदपि च नायकत्व कस्यचि स्त्रीय
 कत्व मन्तरवापि भवति यथा इतिवापिपति इतिरस्य तत काइ-अवत्य अतएव भइतरकत्व कस्यचिदा द्यादिकलस्यापि सुवचि प्रवति यथाकस्य
 चिद्विचित्रः स्वदासीव्रगमात तत काइ-आइइसरसकायचं ॥ काइत्या इधरः काइइधरः पति समापति-काइइधर द्या ही सेनापति द्य का
 मेधरसेनापति स्वस्य काम काइइधरसेनापत्यस्वसेव्य प्रत्यङ्गुत याइमात्रचाम्यमिति भाव, कारयतोन्वेर्निर्नयुक्तत्वे पुरुषे-पास्तपन्नः स्वयमय भइतरकेवे

साण २ लीगपाछाण साण २ अगमहिंसीण साण २ परियाण साण २ अणीयाण साण २ अणीयाहिर्वहंण
 साण २ आयरस्कदेवसाहस्सीण अन्नेसिच अह्ण नवणयासीण देवाणय देवीणय अहिर्वहंण परेवच्च सा
 मित्त न्हित्त महत्तरगह्ण आणाइसरसणाग्रह्ण कारेमाणा पालेमाणा महायाहयनह्णीयद्याहयततीतलतालुत्ति

न दिव्य छदि । दिव्याए अए दिव्याए पमाव दिव्याए काशाए दिव्याए अछोर दिव्येच तेएच दिव्याए सख्याए । दिव्ययुति दिव्यप्रभा दिव्यकाया दिव्य
 पवित दिव्यतज दिव्यसज्जा । इवदिखाया । इवदिखाया पमासेमाया । उज्ज्वलमाया पमासेमाया । उज्ज्वलमाया पमासेमाया । उज्ज्वलमाया पमासेमाया ।
 त तिर्हा पाताभा मयम शाखेकरो । साच सामाविजसाइछीच साच २ तावछीसगाव । आपका सामाजिक सेवेकरो आपका भावविशेकरो । साच २
 सावपाका ॥ साच २ अरनमहिंसीण परियाण साच अपिदाच । आपके काकपासेकरो आप आपका अग्रमहिंसेकरी आपका अटकेकरो । साच २
 पविदाइइराचं साचं २ आबरकदेवसाइछीच पवसिच मइम मयमसाचोचं देवाचय देवीचय । आप आपकी अटकभापकोये करो आपका आबर

ति योगः । यदप्यति । आर्यान्वयानि यद्विद्या अस्तानि यन्मनुष्यधीनीति प्रायः, ये भाष्यगीते नाष्टय एत गीतं नामं यानि च पादितानि तंतीतसत्तासुदितानि तत्र तन्वी योका तलो इत्यतलो ताल सविद्या इतिताधावित्राणि तथा यद्य यमसुदङ्गपदुभापुरुषपणप्रयादि सः तत्र यमसुदङ्गोनामपनवमानव्यनिर्योसुदङ्गसत यतेपा इह कोपा रयव दिव्यान् विवि प्रवाल प्रधाभाभिनि प्रायः, जोगाहीः प्रोगाः गव्यावयो

यद्यप्यमुदुगपदुप्यवाहुरयेण दिष्टाह जोगजोगाह जुजमाणा विहरति । कहिण जते ! असुरकुमाराण दे
याण पञ्जस्रपञ्जस्राण ठाणा पणसा ? कहिण जत ! असुरकुमारादेवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे
रयणप्यन्नाए पुदवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्रयाहस्राए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिहा हेठावेग
जोयणसहस्स यज्जिहा मज्जे अठइत्तरं जोयणसयसहस्से याहस्राए एत्थण असुरकुमाराण देवाण चोवन्ति
जनगावाससयसहस्सा जवतीति मस्काय, तेण जवणा याहि यहा अतो चउरसा अहे पुस्सरकसियासठा

यद्येवरो जनेरा वरी मयनवासी इव द्वाभ्यामात्रा यविपति । पाद्वेस पारव सारितं महितं मयनरमल । रयपासयवी मुदागामियवी आतो
यवी पायवपया बडाईपया । पाकाईसरवेकावस कारमाया पयिमाया मयवाइय महीय काईवरवेच ततो तवतासुदित वयमर ग पदुम काइसरवे
च दिव्यार मागमासा भुजमाया विहरति । पात्रापासता पसावता करताकरावता मोटावाका मयावता मूळ रीत माविच ततो तवतासु न टत
या यद्वंग माटागप्पे तिबेवरी दिव्य सेवतामा भाग भागवता विरहे । अदिचमते यसरवमार देवां पणसा पणसाच ठाया यं । विहा केमगवन्
यमकुमार देवतामा पवीप्ता यपवीप्ता ठामका । अदिचमते यसरवमार देवा पसरवमार देवता वरहे । गोयमा
रयवप्यमा० पठवी च सोल्लरत्रादवसयसहस्रयाहस्राए उवरि जायवससहस्स वरमाहिता । महीय एरमप्रमाने एकसाख यसोइअरयाजन ज्ञा
पचे ते इमीवि यपर एकइजारायकन मकीने । दितायू जायवसहस्स यज्जिहा मज्जे यज्जिहा मज्जे यज्जिहा मज्जे । इठलो एकसहस्रवाजन यज्जिहा

जोगन्तीना स्नाम् मुञ्जमाना विहरत्या सते असुरकुमारयूत्रे कासा कण्ठवर्षा । लोहितम्बुधिम्योष्ठाः । लोहिताक्षरत्ववत् विम्बीफलवत्पृष्ठो येषान्ते
 सोहिताक्षवित्म्यासा भारक्षोष्ठा इति प्रायः बलसा पुष्पवत्सामर्थ्यात् कुन्तव्यसिक्ता इव दन्ता यथाते यवमपुष्पदन्ताः शीघ्रता कृष्णा यथात

णसन्धिया किन्ततरियिउलग्नीरस्कायफलिहा पागारहालयकयान्तोरणपन्निदुवारदेसन्नागा जतसयग्निघुस
 लमुसदिपरियारिया अउज्जा सदा सया बलया सदा गुत्ता अरुयाला कीठगरइया अरुयालकययन्तमाळा
 स्वेमा सिधा किकरामरुन्नाधरिक्कया लाउसोइयमहिंया गोसीसरसरसचदणद्वरदिन्नपचगुलितला उव
 चियचदणकलसा चदणधरुसुकयतोरणपन्निदुवारदेसन्नागा आससीससयिउलवहृग्वारियमस्रदामकलावा
 पधवत्तसरससुरजिमुक्तापुप्फपुजीवयारकलिया कालागुरुपवरकुटुकुक्कुत्तुक्कुज्जतधूवमधमधतगधुष्टुयान्तिरा

चावे दलसाय पङ्कतरररवारयाकन । यत्तव असुरकुमारार्चदेवाव वरसङ्ग्रिमवचवाससयसहसा इवतिमस्काव । इहां असुरकमारना ३४ दक्षिण ३
 उत्तर ३४ मन्वनसम्मा पूवे मन्वते कक्षा । तेनं मन्वावाङ्मिहा अतो समवसरसा । ते मन्व वाहिर वाटवाळे माङ्गिका वीपुवाळे । पञ्चमुक्तरब्बि
 या यठावमठिया उच्चिन्तर विरुत्तगमोर कावपञ्चिका पागारहालय विवाहतोरव पन्निदुवारदेसन्नागा । इठे कसन्नो कञ्चिक्काने सक्काने सस्यित
 ल्कोव भिन्ने पिङ्गो र्गमोर पिटवन्वो प्राकाररपरि विवाह तारव वारमाठा तेइना माकादार कळा देयमाय । जंतसयग्निव मधसममंठि परियाव
 रिवा पाभाक्काववा वयापदा गुत्ता । मूत्तमपञ्चरादिके मेहितके साङ्गमी खेववा सममन्वो सदावोपताळे सदा गुमवे । पञ्चयासकुटुगरइया । ४८ दे
 मोमापावे वससा वचन । पञ्चयासवचवमाळा केमा सिवा पिङ्गरा मरदोवोरक्किया । ४८ भेवकरो कुब्जमाळा जम्बाववारी उपद्रवविना किङ्करमू
 वे देवता तेवेरास्माळे के भुवन । कावकाइय मङ्गिवागोसोस सरस रत्तवदन वररदिक्क पचायुति तथा उन्नविचदचवससा । कोप्यजे मन्वादिक्कमीपरे
 माङ्गि बायोव वन्दन रत्तवन्वमादिके वररवोपाळे पंचायुविना वावा उपचित वायाळे वन्दनवत्तम । चदवचवमन्व तोरवपञ्चिदुवार देसन्नागा ।

कसितकेगःवन केग हा मीयां वीकिया इष्ट्याः न स्वाभाविका वैश्वयक्षरीरत्वात् वामेयकुण्डलपर एवमप्यैवसप्तभुजलस्यारिणः तथा प्राद्वे
वमरसेनचन्मनामुलिसगबांयेले आद्रुचन्मनामुलिसगबाः तथा इयत् मनाब् विसप्रपुप्यप्रकाशानि विलिप्तपुप्यसदृशवर्गेनि वंपत्रस्वामी त्यये य
सुलिष्टानि अत्यक्तुउज्ज्वलतयामनागपिषलेक्षानुत्यादिकानि सूक्ष्माणि सुसुप्तस्यशाम्यच्छानि वसिप्रावः, यथाहि प्रदराणि अत्र सुत्र विप्रलिखीयः

मा सुगधधराधिप्या गंधयहिन्नुया अचक्ररणसघर्षविक्रिया विवृतुक्रियसहस्रपन्नादिया सहरयणामया अ
च्छा सख्हा घठा मठा नीरया निमला निप्यका निक्काकच्छाया सप्यन्ता ससिरिया सउज्जोया पासाइया
दोरिसणिज्जा अन्निकया पन्निकया एत्थण असुरकुमाराण देवाण पज्जप्तापज्जप्ताण ठाणा पयप्ता । उवया
एण लोयस्स अस्सिज्जाइन्नागे समुधाएण लोगरस्स अस्सिज्जाइन्नागे सठाण्ण लोगरस्स अस्सिज्जाइन्नागे त
त्यण ग्रहवे असुरकुमारादवा परिवसति काळा लोहितस्का यियोठा घयलपुष्पवता अस्सियकेसा वामेयकु
रुलधरा अइवदणाणुलिप्तगप्ता इंसीसिलिधपुष्पगसाइ अस्सिकलठाइ सुजमाइ वत्याइ पवरपरिहिया
ययं च पढम समइक्कता विहय च अस्सपत्ता नवे जोहण वहमाणा तलन्नगयतुक्रियग्रन्थसणनिमलनि
यमणिरयणमक्रियन्नुया दसमुदामक्रियगहत्या चूळामणिग्रचित्तचिधगता सुक्का महिह्णीया महज्जइया म
हायत्ता महल्लला महान्नागा महासोक्का हारयिराइयवत्या कय्ययतुक्रिययजियन्नुया अगयक्कलमहगन्

[illegible]

प्राकृतस्यास्वरिदितापरिहितशक्त तथा वयः प्रथमं कुमारस्यसखसमं तिकाणां स्वावयतधारणं इति ज्ञाय ॥ हितीयस्य सप्यमनजणं वयोऽसम्प्राप्ता
यतदव्यवहारी करोति नद्रं चासिप्रदास्य नद्रं यौवनं वतमानाः ॥ तस्यनद्रयतुक्रियवरद्रुमखनिभासमणिरयमक्रियद्रुयाइति ॥ तलजङ्गका याष्टानरण्यिशोषा
सुदितानि वापुरक्षिका धाव्यादि च यानि वराणि धूपवानि वाष्टानरवानि यपु य निभसा मलय दम्प्रकासाया यानि रवानि इन्द्रनालादग्नि
ते मदिती नुमी इत्याग्री यपात तथा तथा दक्षाजिभुन्याप्रिमिती मुकी वयइती यपात दक्षामुद्रामणिवतायइसा ॥ शूठामिधिषितपिचगयाइति ॥

चलद्गणपीठधारा विचित्रहत्याजरा विचित्रमालामउलिमउठा कक्षाणगपत्ररहिया कक्षाणगपत्र
मक्षान्देयधरा नासरयोदी पलत्रनमालधरा दिव्हेण वणेण दिव्हेण गधेण दिव्हेण फासण दिव्हेण सधय
णेण दिव्हेण सठाण दिव्हाए इहीए दिव्हाए जुईए दिव्हाए पजाए दिव्हाए ठायाए ध्वर्वाए दिव्हेण एएण
दिव्हाए ठसाए वसठिसाठ उज्जावेमाणा पजासेमाणा तेण तत्य साण २ नत्रणायाससयसहस्साण साण २
सामाणिमसाहस्सीण साण २ तावसीसाण साण २ लोणपालाण साण २ शुग्गमहिंसीण साण २ परिसाण
साण २ धुणियाण साण २ धुणियाहिग्रईण साण २ आयरक्कदेयसाहस्सीण धुव्वेसि च वल्लण नत्रणवा
सीण देवाणय देवीणय ध्वाहेयस्स पोरेवस्स सामित्त नाहित्त महत्तरगत ध्वाणाईसरसेणायच्च करेमाणा पा

[illegible]

पुष्पामन्त्रिनाममं पिप्रमद्गुग बिभ्रगत त स्थित येपांते पुष्पामन्त्रिचिचिभ्रगताः चमरयसिसामाप्समूत्रे कासाः कप्रवर्षाः एतदेयो पमानतः प्रतिपाद
यति मन्त्रिनीनमरिसा मन्त्रिनीस यदिकमपिबस्तु कात लोके प्रसिद्धि हाप सद्गुहा एतदय व्याचष्ट नीलगुटिका नील्यागुटिका नीलसुगुटिका गवत सारिप शुग यत
सीनुसुम प्रतीतं तयामिप प्रकाशः प्रतिभा यपात नीलगुटिकागवतासोऽनुमप्रकाशा तथा यिकसितशतपत्रमियनिमले इयद्गुहाविभ्रगन मनाक सिते
रत्न ताप्य च मयन येपां त यिकसितशतपत्रमियनिमलपुशितरत्नतायनयनाः गरुडस्याका यता दीर्घो श्रवणी शकुटिसा लुक्ता उक्ताभा नासा भासिका यपात
गरुडतायतीचतुद्गुनासाः तथा अपचित लज्जित यन्त्रिशास प्रधात विदुमरज यस बिबजल विव्याः सरत्तं फल सार्धं निम्नोदरोष्ठो येपांते तथा पा

लेमाणा महयाहयनहगीययाइयततीतलतालतुक्रियधणमुद्गुगपनुप्यत्राइयवणे विस्वाइ नोगनोगाइ नुजमा
णा ग्रिहरति, चमरयतिगो इत्य दुयं श्यसुरकुमारिदा श्यसुरकुमारयाणी परिवसति काला महानीलस
रिसा नीलगुलियगयलयसिकुसुमप्यगासा वियसियसयवत्तनिमलसीसियरत्ततयनयणा गरुडाययउज्जुस्तुग
नासा उयचियसिलप्यत्रालियिप्रफलसन्निहा हरोठा पद्मुरसिसिगलविमलनिमलदहिधणसस्वगोस्वीरकुन्द
गरयमुणाडिया धवउदतसेवी क्रयवहणिदूतधोयततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा श्यजगचगकसिणखगरमणि

उपवापयेता न ममवापयेता न सठावयेता न । उपवापयेता न ममवापयेता न सठावयेता न । तत्तय वडवे चसुरवसाः रदेना
परिवसेति । तत्तय पकी चसुरवमारवयेता वसेते । आनावाडियस्तः विवडा । कासेवव रातामव विवकल ममवाठ । धवकपुफरता पसिवसेता वा
मयफटन धरा पदवडवाः पसिवतगता । धवमपुव समटात वाकायय वायेकाग वणम धाराये पाद्रमरमयवने कोप्यादे गाव । इमिसिखि पफ्फ
यामाः पसविभिडाः सजमाः वत्याः पवरपरियोया । विगारेवराता मिमेन्नाफूलमरोपा चसिद्धि यतिसयुवारी मूयमयेवरी प्रधान पडिरा
से तथा । यय पठमसमदयता विदयवपसयता मयुधमये वडमायाः यय प्रथम कुमारलचय पारवमव अपामवका भद्रयावने वलनामदया ।

प्राज्ञतया स्वरिचितापरिहितयत्नः तथा अथ प्रथम मुमादस्वनतबस तिकात्ता स्तस्ययतधापन इति प्राय द्वितीयम् मध्यमलक्ष्यं वयोऽमस्मृता
यत्तदवध्यस्ती करारिति जज्ञ अतिप्रब्रस्य जज्ञ योबन यत्तेषामाः ० तलजप्रपुयतुक्रियधरनूमथानिम्मलमखिरयकमोक्रियजुयाइति ० तलजप्रपुका वाह्वा नरनयिजिषा
सुदितानि पादुरचिबा लव्याति २ यानि बराणि नूपथानि वाह्वाजराकानि यपु ये निमसा मषय दम्भफाकाद्या यानि रवानि इन्द्रमालादोनि
ते मरितो प्रज्ञो इसायी ययात तथा तथा दवाप्रमुद्राजमैक्रितो मुखो अथइसी ययात वज्रमुद्रामरिहतायइसा ० घूठामरिचिसचियसगयाइति ०

यलक्षणपीठधारी विचित्रहत्यान्तरणा विचित्रमालामउलिमउला कक्षाणगपत्रयपरिहिया कक्षाणगपत्र
मद्गणलेत्रधरा नासरयोदी पलत्रयनमालधरा दिव्हेण वखेण दिव्हेण गधेण दिव्हेण फासेण दिव्हेण सद्य
णेण दिव्हेण सठाणण दिव्हाए इह्वाए जुह्वाए विव्हाए पत्ताए दिव्हाए लायाए अस्सीए दिव्हेण एएण
दिव्हाए लसाए दसदिसाठ उज्जावमाणा पत्तासेमाणा तेण तत्य साण २ नत्रणाथाससयसहस्साण साण २
सामाणियसाहस्सीण साण २ तावसीसाण साण २ लोगपालाण साण २ अगमहिंसीण साण २ परिसाण
साण २ अणियाण साण २ अणियाहित्रईण साण २ आयरकदेवसाहस्सीण अवेसि च यल्लण नत्रणवा
सीण देवाणय देवीणय आहिवसु पोरयसु सामिस नहिंस महस्सरगस आणाईसरसेणावन्न कारेमाणा पा

रो नपमवाचमान सगण प्रदानमग्न अहमो प्रतिगणधर्मो वाटवहित अपुराभा । यक्षस्यस्यविगवा दिव्यतुल्यसहस्रपुत्राया सवयवसया । गणसमूह
 तिबबरो महित मरुद्गादि शमयद् सामसता सव रत्नमयहे । यज्ञासया अहु यष्टा महु मोरया निपसा निपसा निपसा सपसा मस्तिरिया ।
 पादाह यष्टाये मठाराये निरप्य निमल निपकष्य निरप्य निमल निपसा पासाया हरसविषा अभिदवा पदिदवा । अद्यातसहित द्य
 मोव पमिरूप प्रतिकूप । एतव यमरजमाराब सुशाय पम्पसा २ २ ठावा प । इहाठामे यमुरकुमार यता मसेणे पर्यता यपर्यताभा ठामकडा ।

पातः प्राकृतत्वात् तथा पुनर्यदंम वीद्यावरं निष्पात सत् यद् जायते चीत निमल तत्समुत्तम तपनीयमा रक्त सुख तद्वत् रक्तानि इत्यपवाद
 सानि तानुजिह्वे च यया ते पुनर्वहनिष्पातचीततप्ततपनीयरक्ततत्सत्तासुविद्वद्वाः तथा ब्रह्मण सौवीराब्जनं यमः प्रायद्वन्नासमावी मय सद्दत् रुद्राज
 वक्तव्यं रुक्मरजवत् रमणीयाः किम्भा य कक्षा येया स ब्रह्मणपमलप्रलम्बकरमणीयकिम्बकेशाः ॥ तिसुविस्मोगत्स असल्लभप्राने इति ॥ स्वस्थानो

सठाणेण दिक्षाए इह्मीए दिक्षाए ऊर्द्धए दिक्षाए जासाए दिक्षाए पहाए दिक्षाए अस्त्रीए
 दिक्षेण एण दिक्षाए लेसाए दसदिसाठ उज्जीवेमाणा पन्नासमाणा तेण तस्य साण २ अथणावाससयसहस्सा
 णं साण २ सामाणियसाहस्सीण साण २ तायस्त्रीसाण साण २ लोगपालाण साण २ अगमहिंसीण साण २
 परिसाण साण २ अणियाण साण २ अणियाहिंसीण साण २ व्यायरक्तदेवसाहस्सीण अन्नेसि च अन्नण
 अन्नणवासीण देवाणय देवीणय आर्हयन्न पोरेवन्न सामिस जहित्त महत्तरगत्त आणाइसरंसेणावन्न कारे
 माणे पालेमाणे महयाहयनहणीयवाइयततीसलतुक्रियधणमुद्दगपहुप्पवाइयरवेण दिक्षाइ जोगजोगाइ नु

दिक्षाए यमाइ दिक्षा० छायाए दिक्षाए अक्षोए दिक्षेणएव दिक्षाएकेसाए । देवतानोच्छति देवतानो भुति देवतानोप्रभावे दिक्कायावे दिव्यवि
 रवे दिक्कतवे दिक्कल्लयावे । इवदिसाभा उक्काएमावा यमासेमावा । इयदिया उक्कातकरता तिहा ग्रामतायका । तेव तव साण २ भववाचं वासाव
 ययउक्काव साचं २ सामाविदसाज्जोव साव २ तायकासमाव २ साव २ आगपासाव साव २ अम्महिंसीव । ते दिहा पाप पापवे भवने खाव
 मने पाप पापवे सामानिक सकसेकरी पाप पापका भावविसेकरी पाप अथवा साकपासेकरी पाप पापवा अगुमहिंकेरी । साचं २ अवि
 याचं साव २ परिमाचं साचं २ अकोवाहिंवाएव साचं २ पायरक्तदत्तसाज्जोव अससिचअन्नं भववासीव देवावय देवोव । पाप पापवे भवी
 काविसेकरी पापको २ परपदकिरी पापरी अकोवाविसेकरी पापरा पापरा भावएवकेकरी अनेरा भवमवासी देवता देवीगमाणा । पाइइवन्न पारे

शत्रु भानु सुगन्धाकाशनाय्यारण्यं प्रशिक्षयन्तः पश्यन्तः तदपि च अथमभिमत्याह-विमलं रजसा रक्षितं कलङ्कविकलं वा तथा निर्मलो यो दृष्टिपनस्र
 दो बोधीर याति कुन्त्यानि कुन्तुस्तुमानि वक्ररजः पालीयवन्ताः सुवासिका च तद्गन्धवला दन्तश्रेणि र्येपाते तथा विमलशब्दस्य विशेष्या त्वरनि

ज्ञानिष्ठकेसा यामेयकुलधरा अक्षचदणालिप्तगता ईसीसिलिधपुष्पगासाह अक्षकिलिठाह सुजमाह व
 त्याह पवरपरिहिया वय च पठम समइक्षता विइयच अक्षपत्ता नदे जोसुणे वट्टमाणा तलजगयतुक्रियप
 वरनूत्तणनिम्मलमणिरयमक्रियनुया दसमुद्दामक्रियग्गहत्या चूनामणिविचिप्तचिधगता सुख्वा मदिह्हीया
 महज्जुया महायसा महसूला महणुजागा महासांस्का हारविराडयवत्या कठयतुक्रिययन्नियनुया अगदकुल
 लमठगठलकणपीठधारी विचिप्तहत्यानरणा विचिप्तमालामउलिमउला कक्षाणगपवरवत्यपरिहिया कक्षा
 णगपथरमझणुलियणा ज्ञासुरयोदी पलववणमालधरा विव्वेण वन्तेण दिव्वेण गधेण विव्वेण फासेण दिव्वेण

[illegible]

पातः प्राकृतत्वात् तथा पुनर्यद्वा नैदानरेव निष्पात सत् पद् आयते भीत निमल सप्तमुत्तम तपनीयमा रक्त सुवर्णं तद्वत् रक्तानि इक्षपादत्त
 सानि तानुजिह्वे च यथा ते पुनर्यद्वा निष्पातौतौततपनीयरक्ततलतालुजिह्वाः तथा बाल्यं सीवीराज्यं यमः प्रावृत्कालमाधी मय स्रष्टु कमास
 चकवत् रुचकरवत् रमणीयाः स्निग्धा य कथा येषां स बल्लनपमकप्रसन्नमयीमजिग्यवेष्टाः ॥ तिसृविशोऽस्तस्य अक्षरेण्यज्ञागे इति ० स्वस्यामी

संज्ञाणेण दिक्षाए इह्रीए दिक्षाए ऊर्हृए दिक्षाए नासाए दिक्षाए त्रयाए दिक्षाए पहाए दिक्षाए अर्ध्रीए
 दिक्षेण एण्ण दिक्षाए ऐसाए दसदिक्षाए उज्जीवेमाणा पञ्चासमाणा तेण तस्य साण २ अथणावाससयसहरसा
 ण साण २ सामाणियसाहस्सीण साण २ ताथप्पीसाण साण २ लोमपाळाण साण २ अगमहिंसीण साण २
 परिसाण साण २ अणियाण साण २ अणियाहिंस्सण साण २ आयरकदेवसाहस्सीण अन्नेसि च यत्तण
 अथणवासीण देवाणय देवीणय आर्हयस्स पोरवस्स सामिस्स जहिस्स महस्सरगत अणाइसरसेणावस्स करे
 माणे पालेमाणे महाहाहयनहगीययाइयततीतलतुक्रियघणमुद्दगपुप्पवाहयरवेण दिक्षाइ जोगजोगाह नु

दिवाए पमाए दिग्वाग्वायाए दिग्वाए चकोए दिग्वेकतएवं दिग्वाएवेक्षाए । देवताभीक्ष्णं देवताभीक्ष्णं देवताभीक्ष्णं दिग्वायावे दिग्वा
 रवे दिग्वावे दिग्वायावे । दसदिक्षाया लक्षाएमाया पमावेमाया । दसदिक्षा लक्षातत्तरता तिक्ता ग्रामतायका । तेव तत्त साव २ मन्वावं वासाव
 सवद्वज्जावं साव २ सामाविद्वज्जावज्जाव साव २ तावज्जावसाव २ साव २ आयावासाव सावं २ अयमदिक्षोच । ते दिक्ता याप यापवे भवने साव
 यने याप यापवे सामानिच सवसकरी याप यापया वायविसेकरी याप यापया सावयासेकरी याप यापया चगुमहिंसेकरी । सावं २ यवि
 यावं सावं २ परिसावं सावं २ पयोवाहिंसेकरी सावं २ पावरल्लदमवाह्याच अस्सिचिचकव भववासीच देवाचय सेवीचय । याप यापवे यवी
 वापियेकरी यापयो २ परपदोकरो यापरो यवीवाधिंसेकरी यापरा यावरल्लेकरी यनेरा भवमवासी देवता देवतायता । पावेवचं परि

पपातयमस्तुतदपपु श्रियति स्थानेषु लोकस्या सङ्कपतमे ज्ञाने वक्तव्यमिति ॥ भोवहीचसुरावमि स्यादि ॥ गाथाहय ॥ सामाम्यतो असुरकुमारादीना ज्ञय
नसङ्गामतिपादक सुगम ॥ भोतीसाभीयासाहत्यादि ॥ गाथा दाहिनिषात्यागाम सुरकुमारादीना जवनसङ्गाविषायिका सस्या व्यास्या-दादिबसो असुरकु
माराणा प्रवर्तानि बहुलिख्यस्वहलाहि नागकुमाराणा भुयुत्वारिशत् सुवचकुमाराणाम स्यात्रिंशत् यामुकुमाराणा पम्बाशत होपविगुदचिवि
दुस्तनिवाग्निकुमाराणा प्रत्येक भव्यारिभूततसहलाहि जयनागमितिर्ग ॥ तीसा चत्तासीसा इत्यादि ॥ उत्तरत उत्तरस्यां दिगि असुरकुमाराणा ॥

जेमाणा ग्रिहरति, कहिण जते ! दाहिणिषाण असुरकुमारदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पयससा ? कहिण
जते ! दाहिणिषाण असुरकुमारा देवा परियससि ? गो ० ! जयुद्दीवे ? मवरस्स पयस्स दाहिणेण इमी
सेरयणप्पन्नाए पुठवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहस्साए उवारे एग जोयणसहस्स उग्गाहिंसा हेठावेग
जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे अठ्ठहत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिषाण असुरकुमाराण देवाण देवी
णय बोप्पेसि जयणायासयसहस्सा हवतीति मस्काय तेण जवणा गहिं वहा अतो चउरसा सोचेय वयण
जाय पक्किरुवा एत्थण दाहिणिषाण असुरकुमारदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पयससा । तिसुवि लोंगस्स
असस्सेज्जइजागे, तत्थण यहवे दाहिणिषा असुरकुमारदेवा देवीन् परियससि काला लोहियस्का तहेय जाव

इमे मामिग भट्ठिग मज्जसरत्त पावाइसर सेवासस कारेमाचे पासेमाचे । अविपतिपत्ता पौराधिपपत्ता सामोपत्ता पायवपत्ता माटापत्ता पाप्ता
पावता पम्बायता करता । मक्का इयमहोयवाइय ततोत्तक ताटुडिग घवमार ग पय्यवाइय रेवे दिव्वाइ भागमोगार भुज्जमायाविहरति । माटा
यण्णा जय वाडिग ततो तास तासाटा चट्टित घनसदंय पठकमण्ण तिबेकरो देवताणा योग भागवता विचरे जमर बन्धिओ इत्युपे यमरकुमारमवा
वापरिवसति । यमरेन्द्र इत्येवमिति असुरकुमारणा जीव वसेत्ते । आनामज्जानोवधरिक्ता गोसुविचयवक्कव ययविज्जुमसयगासा । आसेनच मक्काओक

भुज्जेमाणे त्रिहरति, एव सद्यत्य ज्ञाणियम् चत्रणयासीण, धमरे इत्य अस्सुक्कुमारिदे अस्सुक्कुमाराराया प
 रिचमड काले महानीलसरिस जाय पहासमाणे सेण तत्य चउप्पीसाए जत्रणावाससयसहस्साण चउसठीए
 सामाणियसाहस्सीण तायप्पीसाए तायप्पीसगार्णं चउरह लोगपालाण पचरह अग्गमहिंसीण सपरित्राराण
 तिरह परिसाण सप्तगह अणियाण सप्तगह अणियाडियइण चउरह च चउसठीण आयरस्कदेवसाहस्सीण
 अन्तेत्ति च यत्तण दाहिणिषाण देवाण देवीणय आहेवच्च पोरेयच्च जाय विहरति। कहिण जते। उत्तरि
 हाण अस्सुक्कुमाराण देवाण पज्जस्तापज्जहाण ठाणा पयत्ता। कहिण जते। उत्तरिहा अस्सुक्कुमारा देवा
 परियसति ? गोयमा। जयुद्धीये दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण इमीसे रथणप्पज्जाए पुठ्ठीए अस्सीउत्तर

कं वरुन सरीसः नोवगुलोभीपरे आन विवसतपपभीपरे निमस। विवसियसयवण निवसरसिवियततवमयथा। मज्झनिमस रातावे नेव अइना।
 गुबथाइउउज्जतननामा उववियनिमयथासविमस संविदावइहा। गुबचनापरे कांढानाक अइमा विवसित विवफस समजाठ। पवरससिसगसविमस
 निममसंवनोवोरवंददजरवमथालि ववसतसठीइवइनिवतथावततवविज्ज वरतंलकतावओवा। गख गाओर कम्प पांभीनाव अमसनाभांतु
 या धवमाडातमो यथा धीत निमस इइवा रातं मुवकनोपर हाव पम तखा औभ जिक्को तथा। धेवववव वसिवववगरमविज्ज निइहेवा। पव्वन
 माधाराज्जादिवे कोधाए वाका कोववावग। वामेवक इइधरा पव्वनवावलितावसिविज्ज पुण्णपयासा। वामेवने ववइल पाइवइने कोव्वावे
 ग य तथा विगारेव पुण्णवव अइवा। पसविज्जिहाइ मइमाइ वत्ताइ पवरपरइवाइ। पसकिट अल्लमूय वयोवरो पइरता वे। पयवपटममयव
 ता धीयंतु पमपता भट्टे जग्गे वइमावा। पइओवव कोठोने बोवो ववमवो पाव्वा सोवमकारपवे पाव्वाए। तखभमवतुडिव पवरभूमव निव्वक
 मवि रपवमटियग्वा दसमुदुदिया माउवमइत्ता। एतल तलभग वाइगा वामरव बोइरवापमस प्रवरभूमव निमस मविरनेवरा मांथ ण भज्जय

जीयणययसहस्मग्राहस्वाए उग्ररि एग जीयणसहस्स उग्गाहिप्पा हेठायेग जीयणसहस्स धाज्जिता मज्जे
 स्युठहत्तरिजीयणसयसहस्स एत्थण उप्परिस्सण सुसुखुमाराण देवाण द्वाणय तीस जवणायाससयसहस्सा
 जवतीति मस्काय तंण जवणा धाहि घहा स्युतो चउरसा सेस जहा दाहिणिप्पाण जाय विहरति, यली इत्थ
 यइरोयणिदे यइरोयणराया परिउसह, काले महानीलसरिसे जाय पन्नासंमाणे सण तत्थ तीमाए जवणा

[illegible]

याससयमहम्साण सठीए सामाणियसाहस्मीण ताज्जीसाए ताज्जीसगाण चउरहं लीगपाळाण पचराह
 छगमहिस्सीणं सपरिवाराण तिण्ह परिसाण सत्तह्ण अणियाण सत्तह्ण अणियाहिद्वहण चउरह सठीण
 अणयरक्कदेयसाहस्सीण अण्योसि च यत्तण उत्तरिणाणं असुरकुमाराण देवाणय देवीणय अहिद्वहण पोरेवच्च
 जाय कुट्टमाणे विहरति । कहिण जते ! नागकुमाराण देवाण पज्जातापज्जाणा ठाणा पयसा, कहिण

वावडीपणे । पचरामर सेववच्च करिमाणे पासेमाणे । पाज्जापज्जातापज्जा करवतापज्जा । मक्यायय नह मोयवारय ततोत्तवतास चवमुदग पणु
 वाययदवचं । माटागळ नटभौत बजित तथो ताव तवटा अउम माठा पउवउण्डे । दिक्कार भागभोगार भजसाया विहरति । दिव्य भाग भागवता
 विचखे । कहिणभते दाडिचिस्ताच पसरकमारदेवाचं पज्जता पज्जताच ठाया प । किष्ठी हेमगवन् दक्षिचदिगिना पसरकमारदेवता पवर्तिता च
 पयसाता ठासकळा । कहिणभते दाडिचिस्ता पसरकमारदेवा परिचसति । किष्ठी हेमगवन् दक्षिच पसरकमारदेवता बसेह । मायसा जइहीवे २ भ
 दस्य पउववन् दाडिचचं । उभोतम जइवोप मऊपववो दक्षिचदिगे । इमोसेरसवकाभापउवोए पवोवत्तरअयवसकळा जाइसाप उव्वरि एगंआय
 मऊवने उरमाडिता । ए रत्तग्गमा दडिबोनेविपे पकमाय पवोवत्तरअयवसकळा जाइसाप उव्वरि एगंआय
 वडिपता । नीच एवयाऊन मऊन मऊने । मऊं पउववत्तरे जायवसकळे । विपे पठत्तरअयवसकळा । एवच दाडिचिस्ताच असुरकमार
 देवाचं जइवीस भवववाम सबसकळाविदरतिमक्खाय । तिष्ठी वडिचना पसरकमारदेवताता ३४ लाय चिसुवन् मगयतेकळा । तेचं मववावाविपह
 यतो ववरना मायेव वववा जाइ पडिदवा । ते भयम भाणिर वाठलाळे माणि चोयूवाळे । वचंय मय पाअलोपरे कांनगे प्रतिकप । पयच दाडिचि
 माचं पसरकमारार्थं देवाच पज्जता पउववताच ठाया प । तिष्ठी दक्षिचना पसरकमार देवताता पयर्तिता पयर्तिता ठासकळा । तिमविचोयय प
 मयिचभागे पं । तीम वासवाअने पसण्यातेमभागे पुने । एवच वइवे दाडिचिस्ता असुरकुमारदेवदेवोपा परिचसति । तिष्ठी वचो असुरकुमारना दे

जते ! नागकुमारादेवा परिक्खसि ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पजाए पुढवीए खसीउत्तरजीयणसयसहस्से
 व्याहसाए उवरि एग जीयणसहस्स वज्जिऊण भज्जे अठ्ठहस्रिजीयणसयसहस्से एत्थण नागकुमाराण देवाण
 पज्जासापज्जाप्य खुलसीइन्नयणायाससयसहस्सा हवतीति मस्काय, तेण नयणा आहि घट्टा अतो अउर

यता देवी वसन्ते काया आदिक्खता तदेव आर भूमाया विहरति । कायावय रातोपाख्या तिमहीअ यावत् भाग भागयता विहरेइ । एएसि तदेव
 तावतिअ-आनयासाअमवति । एवमे तिमहीअ आधिपियव देवता आकयाइ । एवं सज्जत्ता भाविमत्त भववयासीअ । इवतरे सव पाइसी परे अदिआ
 भववामी ते । वसरे असरकुमारेइ असुरकुमाराया परिवसइ । वसरपवा राववामावे असुरकुमारगाने इन्द्र वसेइ । आउ मज्जाभीखसरिसे
 आर पमासेमाने । कासेव मज्जाभीख अशुविगेव तेइजोप्रमा करता विहरेइ । सर्वं तत्ता अउतोसाए भववयाससहस्सा अउसुआए सामाविससाइखो
 वं । तिइ अउतोससाइ मयनवरो ६४ सामानिक देवतावेवरो । तायतोसाए तायतोसगाव अउस आगपासाव । आरविमयव देववरो ४ साव
 पाववरो । पववइ पवमदिहीअ सपरिवाराव । पाव अगमदिदेवरो परिवारसहित । तिस परिवाराव सत्ता अविद्याव सत्ता अविद्यादिवईव अउसं
 अउसुहीअ पावरकुदसाइखो । तोन परिपमा करो ० पमीआवरो ० अनिअधिपति करो बीसठ भोगुवाकरता दायसाव अयमअजार आअर
 पवं देववरो । पवसिअवअअ दादिअसाव देवावय देवीअय पाइअव पादेवअ आव विहरति । अमरा ववां अविअवासी देवता देवांगता अविपतिप
 री पीराधिपतीं वावत् विहरे । अदिअमते अतरिआव असुरकुमाराया पय्जता पय्जता ठावा प । अिइ अमगवम् अतरता असरकुमारता पर्याता
 पपयाताता ठामअअ । अदिअ भते अतरिआ असरकुमाराइया परियसीति । अिइ अमगवम् अतरता असरकुमारदेवता वसेइ । गायमा अमरीन र
 मइअ पववअ अतरव । इमीतम अमरीयनाम होप ते अमरीयने मरुपवतवको अतरे । इमीअरयअपमाए पठवीए अमीअरयअपमाए पठवीए अमरीयनसयसहस्स वाव
 ताए । ए रतमप्रभाअधिपीने एवसाव अमीअरवाअन आउपवे । अवरि एवजावअसहस्रं अयाइता । अपर एवजाअनसहस्रं अमहीने । अिइएअ

सा जाय पक्रिया तत्यण नागकुमाराण पज्जाप्तापज्जाप्ताण ठाणां पयाप्ता । तिसुयि छोगस्स झुसखेज्जइ
नागे तत्यण यहुये नागकुमारादेवा परिबसति, महिद्धिया महज्जुइया सेस जहा ठहियाण जाय विहरति
धरणन्तूयाणदा एत्थ दुंय नागकुमारयाणो परिवसति महिद्धिया सेस जहा ठहियाण जाव विहरति कहिण

जाव बमहरसं वल्लिता । उठे एक्कयाज्जनसङ्गय मूकोने । मरुहे पइत्तरलीयससङ्गहरो । बिसे एक्काल पठहत्तरसङ्गय । एत्थ पत्तरिक्का पसुर
लमारा देवात्तं तीसं भवावासाससङ्गहरो । तिहा उत्तरना पसरलमारदेवताना बोसलाए भुवन कल्लाले तोयिंकरे कल्ला । तेव मव
व नाईइइया गतावरसा सेसकल्ला छाडि विक्का जाव विहरति । ते भवन वाडिर बाटलाइ मव वीचूवाइ मय किम दचिबनोपरे यावत् विचरेइ ।
इत्थ बलि बट्टावचिद्द वररावचरावा परिवसति । इहा वल्लन्नाम राइको राका वसेइ । कासे मवाकोवसरिसे जाव पभासेमाया । कासेव मवा
नोववसुनोपरे वावत् माभतारइइ । सेव तत्रतोसाए भवववाससङ्गहल्ला । ते तिहा तोसला भवनेकरो । उठोए सानावियसाङ्गकोए तायातो
साए तायातोसगा । उठवङ्गय सामानिकदेवेकरो वावभियकदेवेकरो । वरवह कायपासाव पववह पक्कमज्जिीय सपरिवारात्तं तिह परिवसाए ।
वार साङ्गपासेकरो पव पमुमहिंयोको परिवारेसजित तोन परपदियेकरो । सचवइ वयोसाय सतपह पविखाजिइइ । सात पमोवेकरो ० पमो
काधिवतिकरो । वरवइ सहाव पावरल्लदवसाङ्गको पळेसिबवङ्ग पत्तरिक्का पसुरकुमारा देवाय देवोवय पावेवस पावेवस पावेवस पावेवस विह
रइ । साठवोगुवाकरता धीवसाङ्ग वासीवङ्गार देवता आभरपक पार पुजा ववा उत्तरदिशि पसरलमारदेवता देवोमो पधिवतिपमो वोरपवो
विचरे । कडिब भत्ते नामकुमाराय देवाय पक्कतापक्कता ठावा प । बिहा जेमगवम् नामकुमारदेवता पर्यामा पपर्यामाना ठामकल्ला । कडिब भ
त नागकुमारादेश परिवसति । बिहा जेमगवम् नागकुमारदेवता वसेइ । गायमा इमोसरयवपभाएपुठोए पसोउत्तरे जोवपसवसङ्ग वावहाए ।
इमोतम पररनमभाइक्किनोण एक्कलाए पसोइआरवाज्जन काउववा । उधरि सगलवसङ्गहसं उम्माडिया । ऊपर एक्कयाज्जन सङ्गय उम्माडाने । बिहा

ज्ञेते ! नागकुमारादेवा परियसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पजाए पुढवीए खुसीउत्तरजीयणसयसहस्से
 याहसाए उवरि एग जीयणसहस्स वज्जिऊण मज्जे खुठहत्तरिजीयणसयसहस्से एत्थण नागकुमाराण देवाण
 पज्जसापज्जाणाण खुलसीइमयणायाससयसहस्सा हयतीति मस्काय, तेण जयणा याहि यहा खुतो चउर

यता देशे सम्यै कासा काशियस्सा तथैव जाय मुज्जमाया विहरति । कासाज्ज रातोपाक्खी तिमहीक यावत् भाग भागवता विहरेह । एएहि तदेव
 तावतिस्स-जामपासासमंति । एवमे तिमहीज जायविस्सक देवता काकपास । एवं समत्त माविस्सत्त भवववासीव । इत्तरे सव पाळवी परे कट्ठिवा
 भवववासी ते । समरे एसरकुमारैदे एसरकुमाररावा परिवसस । समरववा राजधानीये एसरकुमारनामे इन्द वसेह । कास महाभीससरिसे
 जाय एमासेमावे । कासवव महाभीक अनुविग्रह तेइमीयथा करता विहरेह । मत्त तत्त पठतोसाए मवववासवइस्साव पठसहाए सामाविस्सवाइस्सी
 वं । तिक्का पठतोसहाव मववकरी ६४ सामानिक वववायेकरी । तावतीसाए तावतीसमाव ववव वागपासाव । जायविग्रह देवकरी ४ कास
 पाळकरी । पववव पव्वमविहीव सपरिधाराव । पाव एगमविहरी परिवारसहित । तिस परिवाराव सत्तस पविाराव सत्तस पविाराइवइव पठस
 वठसहीव पावरकसइसाइस्सीव । तीन परिपदा करी ० एमीकाकरी ० पमोकाकरी ० पमिक्खेधिपति करी ० भोगुवाकरता वायसाव ज्जयमइज्जार पाज्जर
 पवं देवकरी । पव्वसिववइव दाडिक्खिक्का टेवाव देवीवय पाइवव पारेवव जाव विहरति । पमरा ववां वविक्कवासी दवता देवायना पयिपतिप
 ती सीराधिपती वावत् विहरे । कट्ठिकमते कत्तरिक्का एसरकुमाराव एक्कता पव्वसाव ठावा प । तिक्का इमववन् कत्तरना एसरकुमारना पर्यासा
 पपर्याधाना ठामक्का । विवव भेते कत्तरिक्का एसरकुमारापुत्रा परिवसति । तिक्का इमववन् कत्तरना एसरकुमारदेवता वसेह । गावसा ज्जुवीव र
 मरस्स पव्वक कत्तरव । जगौतम ज्जुवीपमास बीय ते ज्जुवीपने मेरुपववतक्की कत्तर । इमीसेरववपभाए पठवोए एमीकत्तरकायवसयसहस्स काज
 माय । ए एरमपभावविहीने एकसाव पयोइज्जार वावम जावपवे । ज्वरि एगजायववइव कयाडिता । ज्वर एक्काज्जमवइय कयाडिने । डिडाएन

यमानि चिंतयन्तमदस्तादि नागकुमारराणां बत्वारिंशत् पतुर्धिंशत् सुवर्णकुमारराणां पद्मवत्सारिण्यत् द्वीपविगुदपिचिचुरस्तनितास्त्रिंशुमाराराणां
मस्यक पद्मिप्रसन्नवमप्रतसहस्रादि ॥ सम्रति सामानिबालास्तरुणकदेवसङ्कुसवधायभाह-वउससीससीसु इत्यादि ॥ द्वाविंशत्यास्या ५५ नुरुकुमारैरस्य

ससयसहस्सा द्वयतीति मरुकाय, तण जघणा द्याहिवहा जाव पफिरुवा एत्यण द्वाहिणिस्त्राण नागकुमाराण
पज्जाप्तापज्जात्ताण ठाणा पयत्ता, तिसुवि लीगस्स स्यसखेज्जद्वभागे एत्यण बह्वे द्वाहिणिस्त्राण नागकुमारा
देवा परियसति महहिंया जाव त्रिहरति । धरणे एत्य नागकुमारिदे नागकुमारराया परिवसति महहिं
जाव पन्नासमाण सण तत्थ चोयालीसाए जवणायाससयसहस्साण ठरह सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए
ताम्रप्तीसगाण चउरहं लीगपाळाण ठरह स्यग्गमहिंसीण सपरियाराण तिरह परिसाण सत्तरह स्यणिपाण
सत्तरह स्यणिपाहिंवइण चउयीसाए स्यायरक्कदेवसाहस्सीण स्यन्नसि च यच्छण द्वाहिणिस्त्राण नागकुमाराण

मारदेइतावे सामासोस भववावाससइत्था इवतिमित्तमाय । चोवासोससाव मवम इम तोर्यवर कट्ठा । तेच भववावाविबहा चत्ता चउरवा जाव
पडिक्का । तमरम वाडिर वाटका मडि चोरस यावत् पतिकप । एत्थवे द्वाहिविज्जाव नागकुमार/व पयत्ता एत्थत्ता एत्थत्ता ठावा प । इत्ता द्वाविंशता
जवमारना पथीत्ता पययाप्ताना ठामकट्ठा । तिसुविज्जावस यमखिक्करभागा । ताने वाववाकने ससत्तातेभागा । एत्थव चइवे द्वाहिविज्जा नामव
मारदेवा परिबसति । इत्ता चवा द्वाविंशता नागकुमारदेवता बसेहे । मडिक्क ठावा जाव विहरति । मटोच्छवि वावत् बिबरे । धरवे इत्थ नागकुमा
रिद् ताम्रजमारतावा चापरिबसति । धरवनाम नागकुमारगामे इन्द्र नागकुमारराजा बसेहे । मचउट्या जाव पमासमाण । मोटाच्छवि त्रभासदि
त । मेसे तत्थ चउयासोसाए भववावाससयाव चउर सामानिवससइच्छोच । ते तिइ चोमासोससाव भववावीसस्या चउे छमइत्थ सामाभिके चरो ।
तावतासाए तायतीसगाव चउरहं सामयासाव चउर भवमडिखोच सपारवाराव । तोर्यवर वायपियेक्करो चारसावप, चउरो चग्गमहिंमोयेक्करो

नते । दाहिणिज्ञाननागकुमाराण देवाण पञ्जापज्ज्ञाण ठाणा पयससा । कहिण नते ! दाहिणिज्ञाणं
 नागकुमारादेया परिवसति ? गोयमा ! जयुहीवे २ मदरस्स पय्ययस्स दाहिणं इमीसे रयणप्पन्नाए पुठ
 यीए च्यसीउत्तरजोयणसयसहस्सयाहसाए उयार एग जोयणसहस्स उग्गाहिप्ता हेठावेग जोयणसहस्स व
 जिप्ता मज्जे च्छुठहत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिज्ञाण नागकुमाराण देवाण सोयालीस नवणावा

पणं जायवमहरनं वज्जिता । नीचे एकवाक्यनसङ्ग मूकोत्ते । मत्त पङ्कतरे जायवसवसरसे । विवे १७८ परिमाण । एत्थं नागकुमाराण दे
 वार्थं पज्जिता अपज्जिता चं ठावा प । इत्थं नायकमार देवतामा पर्यामा अपर्यामा ठामकद्धा । पुठसीति भववाधाससयसहस्स इवर्तित्तमस्साय ।
 दह साप भवनसंख्या इवे मनवते कद्धा । तेत्थं भववाधाविहारा यता वहरसा आव पच्छिक्का । ते भवन बाहिर माटवाकारे माहि चौरस इमसव
 यावत् प्रतिरूप । तत्तत् नायकमारा देवार्थं पज्जिता २ चं ठावा प । तिक्का नागकुमारदेवतामा पर्याप्ता अपर्याप्ता ठामकद्धा । तिसुविनिर्वाक्य
 पसंयिज्जामागे । तीमहाकने चसक्कातेमाम भूवे । तत्तत् बहव नागकुमारा द्वा परिक्रमात । तिक्का चर्वा नागकुमार देवता वसेत्ते । मज्झिम्मा
 मज्झाया समज्जा पाडियाण जाव विहरति । मीटोच्छति माटो खुतिक्को ग्रपवाकतो विम सोचना यावत् विवरे । कच्छिक्कमते दाहिणि
 ज्जाचं नायकमाराच देवाण पज्जिता २ चं ठावा प । किक्का हेममवन् वच्चिक्किमिना नागकुमारदेवतामा पर्याप्ता अपर्याप्ता ठामकद्धा । कच्छिक्क
 मते दाहिणिज्ञा नागकुमारादेया परिक्रमति । किक्का हेममवन् वच्चिक्किमिना नागकुमार वसेत्ते । गोयमा जयुहीवेकीवे मदरस्सपय्ययस्य दाहिणेव । हे
 भीतम जयुहीप २ मेदपवववको वच्चिक्किमि । इमीउत्तरजोयणमासपुठवोण चसोत्तरजायवसयसहस्स याहसाय । ए रत्तममाटयिथोसे एकठाण चसो
 जार बाजन पाळपचे । चक्कि एगत्रावचयहस्य लयादिता विहा एगत्रावचसहरस वज्जिता । ऊपर एकहजार उगाकोत्ते नीचे एकवाक्यनसहस्स मूको
 त । मत्त पङ्कतरेजायव सर्वसहरने । निवासि एकठाण चठातरसहस्य । एत्थं दाहिणिज्ञाण नागकुमाराच देवार्थं १७८ वच्चिक्किमिना गाम

तस्या इदानीं दादिकात्यामा मौनराज्ञां चासुरकुमारदीनां पयाक्रम मिद्रादीन निर्दिशति यमरेचरे इत्यादि दादिकात्यामा असुरकुमारा
 नाम पिपति यमरोनागकुमाराणां घरकः सुवस्वकुमाराणां वप्युदयः विश्वकुमाराणां हरिकान्तः अग्निकुमाराणाम् निसिंहः द्वीपकुमाराणां पू-

हिए जाय पन्नासेमाणे सण तस्य चम्लाडीसाए नयणाऽससयसहस्साण स्याहेयच्च जाय विहरइ । कहिण
 नत ! सुवस्वकुमाराण देवाण पज्जप्तापज्जप्ताण ठाणा पणप्ता । कहिण नत ! सुवस्वकुमारादेवा परिवस
 ति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढीए जाय एत्थण सुवस्वकुमाराण देवाण द्यावप्तरिज्जग्गावाससय
 सहस्सा हयतीति मरकायं, तेण नयणा द्याहि यहा जाय पण्ठिया तत्थण सुवस्वकुमाराण देवाण पज्जप्ता
 पज्जप्ताण ठाणा पणप्ता । तिसुयि लोगस्स अस्सेज्जहज्जे, तत्थण ग्रहये सुवन्तकुमारा देवा परिवसति
 महिहिया सेस जहा ठहियाण जाय विहरति, वेणुदेव वेणुवालीय इत्थ दुवे सुवस्वकुमारिदा सुवन्तकुमार

ठातरइबार । एत्थं चत्तरिणां नागकुमारदेवाच चत्ताकोम भववाकाम सहरवा इवतिन्ति मत्ताय । इहा चत्तरद्विजिना नागकुमारना चाकोसका
 ना मयननोमय्या चो वीतर मे चत्ता । तेकभववावाविवाहा सेस जहा दादिविवाच जाय विहरति । ते भवन दादिर दाटसा गेय सय दक्षिण
 दिग्गिमीपरे यावत् बिचरे । मूलावदे इत्थ नागकुमारिदे नागकुमारया चा परिवसति । भूतानत् नागकुमारनामे रावा यसेइ । मक्खुठिए जाव प
 भासेमाच । माटी अदि यावत् मभासिद्धि । सेस ज्ज चत्ताकोमाए सबवासमयसावच्छोचं पण्ठेय जाय विहरति । ते तिहा चाकोसका मयन
 नोमय्या दुवे चविपतिपत्ती बिचरेइ । कहिणभते सबकुमाराच देवाच पण्ठता पण्ठता ठावा प । किहा उभयवन्तु सबकुमारदेवता पयात्ता पप
 रत्तामा ठामचत्ता । कहिणभते सबकुमारदेवता परिवसति । किहा उभयवन्तु सबकुमार यसेइ । याएमा इमीसे रयणप्पमाए पुठयोए जाव पय
 च सबकुमाराच वेणाच वावणरि भववावाच सयउहत्ता इवतिन्ति मत्ताय । इगीतम ए रत्नमभःपुविगीये यावत् इहा सुवस्वकुमारदेव यसेइ यइ

॥ २ ॥

देवाण्य देवीण्य आह्वेयम् पोरेयञ्च जाय कुक्षमाणे विहरति कहिण ज्ञत । उत्तरिक्षाण नागकुमाराण दे
 वाणं पञ्चसप्तपञ्चाण ठाणा पयसा । कहिण ज्ञते । उत्तरिक्षा नागकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा ।
 जयूहीनेर मदस्स पद्यस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्यजाए पुढवीए असी उत्तरजोयणसयसहस्सयाहसाए उ
 यारे एग जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठावंग जोयणसहस्स वज्जिता मज्जे अष्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्यण
 उत्तरिक्षाण नागकुमाराण देवाण वसालीस जवणायाससयसहस्सा हवतीति मस्काय , तंण जयणा याहि
 यहा सैस जहा दाहिणक्ष्ण जाय विहरति , नूयाणदे इत्य नागकुमारिदे नागकुमाराया परिवसइ मह

[illegible]

तस्याः इदानीं दाक्षिणात्याना मोक्षराज्ञां चाक्षुर्कुमारादीनां यथाक्रमं निदिशति चमरेधरये इत्यादि दाक्षिणात्याना मसुरकुमारा
 बामं धिपति दमरोजानकुमाराणां परकः सुवक्त्रकुमाराणां संपुदयः पियुष्कुमाराणां हरिकान्तः कर्मिकुमाराणां म्निशिहः द्वीपकुमाराणां पू

हिण जाय पन्नासेमाणे सेण तस्य चत्तालीसाए अथणायाससयसहस्साण स्थिदेवच्च जाव विहरइ । कहिण
 न्त ! सुवक्त्रकुमाराण देवाण पज्जसापज्जसाण ठाणा पणप्ता । कहिण न्त ! सुवक्त्रकुमारादेवां परिवस
 ति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुत्थीए जाव एत्थण सुवक्त्रकुमाराण देवाण वावत्तरिज्जत्रणावाससय
 सहस्सा हवतीति मक्कायं, तेण अथणा याहिं यहा जाय पण्ठिया तस्यण सुवक्त्रकुमाराण देवाण पज्जसा
 पज्जत्ताण ठाणा पणप्ता । तिसुयि लीगस्स स्थसखेज्जहजगे, तस्यण ग्रहं सुवन्नकुमारा देवां परिवसति
 महिंहिया सेस जहा संहियाण जाय विहरति, वेणुदेव वेणुदालीय इत्थं दुवे सुवक्त्रकुमारिवा सुवन्नकुमार

ठात्तरइजार । एत्थं चत्तरिखावं आगकुमारदेवां चत्तालीसं भववावाज सहसा इवतिन्ति मक्काय । इहा चत्तरविंशति आगकुमारना चालीसहा
 न् भवन्नोमंप्पा चो बोत्तर ये चत्ता । तेकंमववावाक्किवा सेस जहा दाक्षिणावं जाव विहरति । ते भवन्न दादिर काटसा येप सव दक्षि
 विदिमोपरे वावत् विहर । मूवाकं इत्थं आगकुमारिं आगकुमाररावा चा परिवसति । भूतान् आगकुमारनामे राजा वसेत् । मइहुंए जाव प
 भासेमाच । माटी अदि पावत् प्रमासजित । सेवं वत्त चत्तालीसाए भववावाससयसाइयोर्धं चोक्कं जाव विहरति । ते तिक्का चालीसहाण भवन्न
 ओमंप्पा दुवे पविपतिपको विहरत्ते । अदिचभते सवक्त्रकुमाराण देवां पज्जत्ता पज्जत्ता ठावा पं । किक्का हेभगवन् सवक्त्रकुमारदेवता पयात्ता अप
 यीत्ताणा ठामचत्ता । अदिचभते सवक्त्रकुमारदेवता परिवसति । किक्का हेभगवन् सवक्त्रकुमार वसेत् । गायमा इमीसे रयणप्पमाए पुत्थीए जाव पत्थ
 च सवक्त्रकुमारां चेशाच वावत्तरि मक्कायाच सयसइत्था इवतिन्ति मक्काय । इभीतम ए रत्तणममइविओये यावत् इहा सवक्त्रकुमारदेव वसेत्ते व

पुः उदपि कुमाराणां असकान्तः दिङ्कुमाराणां मितः वायुकुमाराणां वेसम्बः क्षान्ति कुमाराणां घोषः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ उत्तरादिग्युयन्ति
 नागसुरकुमाराणां मिश्रोद्यन्तिः नागकुमाराणां भूतामण्यः सुपर्णकुमाराणां वलुदासिः विष्णुकुमाराणां हरिः सह यन्मि कुमाराणां मग्निमाधवः श्रीप
 कुमाराणां विश्विष्टः उदपि कुमाराणां अक्षयः दिङ्कुमाराणां मितवाहनः वायुकुमाराणां प्रजकः क्षान्ति कुमाराणां महाघोषः सम्प्रतिवय

रायाणो परिवसति महद्दिया जाय विहरति । कहिण जते ! दाहिणस्राण सुवन्तकुमाराण पञ्जत्तापज्जात्ता
 ण ठाणा पखप्ता । कहिण जते ! दाहिणस्रा सुयन्तकुमारा देवा परिवसति ? गोयसा ! इमीसे जाय मज्जे
 अथुहत्तरिजोपणसयसहस्से एत्थण दाहिणस्राण सुवय्णकुमाराण अथुहत्तीस जण्णथाससहस्सा इवतीति
 मरकायं, तेण नयणा याहि वहा जाय पळ्ळिक्वा, तत्थण दाहिणस्राण सुवय्णकुमाराण पञ्जत्तापज्जात्ता
 ठाणा पखप्ता, तिसुयि लोगस्स अस्सखेज्जइमगे, एत्थण घहवे सुवय्णकुमारा देवा परिवसति । वेणुदेवे
 इत्थ सुवन्तिदे सुवय्णकुमाराया परिवसति सेस जहा नागकुमाराण । कहिण जते ! उत्तरिस्त्राण सुयन्तकु

तरत्ताण मरतक्कदा ददिददिदि इद काउ उत्तरदिदि इध साउ तोवेकरे क्कदा । तेउ मववावादिदइह । जावपडिक्का । ते मवन वाहिर यावत् प्रति
 कय । तत्थण मवतक्कमाराणां देवा पळ्ळवा २ व ठावा य । तिहा मवक्कमाराणा ठामक्कदा । तिसुविसासस्य पयसिक्करमाये । तोने वासक्काअम
 पयप्पत्तामेमागे । तत्थणं दइने सवक्कमारा देवा परिवसति । तिहा घर्वा सुवक्कमाराणा वेवता मववे । सेसं क्कदा यादियाय जाय विहरति । मय
 पायना यासावन्तोरे विहरै । वेणुदेव वेवटासिय इत्थदेवे सुवक्कमारेदा सुवक्कमाराया को परिवसति । वेवदेवे वक्कदाको ए वाय सवक्कमारा
 ना रावा कोवना रावापये विपरैवे । कहिणभने दाहिक्कवा सुवक्कमाराय पळ्ळत्ता २ वं ठावा य । विहा वेमयवन् ददिक्का सुवक्कमाराणा
 पयसा यपयोवाता ठामक्कदा । कहिणमत दाहिक्कवा सुवक्कमारा देवा परिवसति । विहा वेमयवन् ददिक्कवा सुवक्कमारा वेवेवे । गायमा रमोउ

सुप्रशयमाह-काशाचमुमुक्षुमारादित्यादि गाथाद्वयं जमुमुक्षुमाराः सर्वेपि काशाः कृष्णवक्त्राः भाग्यकुमारतद्विष्णुकुमारयोरेते कथयेयि पाञ्चपुराः द्यौत
वक्त्राःवरं वात्य यत्कामक तस्य निषयः कथं पञ्चपुरातादृष्टं गौराग्रवति सुवचकुमारा विष्णुकुमाराः कामितकुमारा य तस्या विष्णुकुमारा कामि
कुमाराद्वेपकुमारा य भवत्युत्तमकनकवक्त्रो वपुःपञ्चवक्त्रो इतिभावः धायुकुमाराः प्रयासाः प्रयासत्वमेवस्पष्टयति प्रियकुम्भवाः सम्प्रतियद्वयसवर्णं

माराण देवाण पञ्चाष्टापञ्चत्ताण ठाणा पण्यप्ता । कहिण जते ! उत्तरिष्ठा सुधसुकुमारा परियसति ? गोय
मा ! इमीसे रयणप्पजाए जाय एत्थण उत्तरिष्ठाण सुधसुकुमाराण वत्तस्यया जणिआ तहा सेसाणवि चोद
सरहं इदाण ज्ञाणियह्वा नवर जयणनाणत्त इदाणनाणत्त यण्ण नाणत्त परिहाणनाणत्त च इमाहि गाहाहि
स्युनगतह्व-चोयठिअसुराण सुलसीतीथेवदोहनागाण । यावत्तरिसुवखे याजकुमारणत्तसुउत्ति ॥ १ ॥
दीयदिसाउदहीण विज्जुकुमारदयणिमग्गीण । त्तरह्मपिजुयलयाण तावत्तरिमोसयसहस्सा ॥ २ ॥ चोत्ती
साचोयाळा स्युठ्ठीसचहोइसयसहस्साइ । पण्यचवालीसा दाहिणत्तेहोतिजयणाइ ॥ ३ ॥ तीसाचवालीसा

काश मन्त्रे पञ्चपुरे जायचसवक्त्रवने । देवोत्तम य यावत् मरिचिह्व वत्तस्यएव पठोत्तरवक्त्रार । एत्थं वृद्धिबिम्बाय सुवचकुमाराय पठतोत्त भववाभास
सयसहस्सा इवतिनिमज्जाव । इत्थं वृद्धिबन्ना सुवचकुमारदेवताया देव साय मग्न भुवे तोयेवरेकत्ता । तेन भववाभासिबद्धा जाय पङ्क्तिवा । ते भवम
वाहिर वाटन्ना जायत् प्रतिरूप । एत्थं वृद्धिबिम्बाय सुवचकुमाराय पञ्चत्ता २ वं ठाया प । इत्थं वृद्धिच सुवचकुमारना पयोत्ता यपयोत्ताया ठा
मज्जाया । तिम्विम्बायस्य पसंखित्वाभागे । तोम वाससोक्तने पसज्जातमेमाणे भुवे । एत्थं वृद्धिच सुवचकुमारा देवा परिवसति । इत्थं यथा सुवचकुमा
र देवता वक्त्रे । भेषुदेवे इत्य सवचकुमारिदे सवचकुमाराराथाया परिवसति । तेन देवनामे सवचकुमारना राजा वसेछे । सेच जहा भाग्यकुमारा
व । वाक्यो मय नामकुमारभोपर । कश्चिन्मते उत्तरिष्ठाय सुवचकुमाराय देवाय पञ्चत्ता २ वं ठाया प० । कश्चिद्देभयमन् पञ्चत्तना सुवचकुमारदेव

यः उदपिपुमारानीं जलकान्तः दिक्कुमारानाम् मित्रः वायुकुमाराणां वेसथ्यः क्षान्तिकुमाराणां योषः ॥ वसिष्ठसहदेवत्यादि ० उत्तरदिग्बर्ति
 नामसुरकुमारानामिन्द्रोबसिः मागकुमाराणां दूतानन्वः सुपर्बकुमाराणां वसुधासिः विष्णुकुमाराणां हरिः सह आग्निकुमाराणां अग्निमाख्य द्वीप
 कुमाराणां विश्विष्टः उदपिपुमारानां जलप्रभः दिक्कुमारानाम् मित्रवाङ्मनः वायुकुमाराणां प्रजन्तः क्षान्तिकुमाराणां महापीयः सम्प्रतिवण

रायाणो परिवसति महाह्रिया जाय विहरति । कहिण जते ! दाहिणस्त्राण सुवन्नकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ता
 ण ठाणा पक्खत्ता । कहिण जते ! दाहिणस्त्रा सुवन्नकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे जाव मज्जे
 अत्थहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणस्त्राण सुवन्नकुमाराण अत्थत्तीस जवणायाससहस्सा हवतीति
 मस्काय, तेण जत्रणा याहि वहा जाय पफिक्खा, तत्थण दाहिणस्त्राण सुवन्नकुमाराण पज्जत्तापज्जत्तापज्जत्ता
 ठाणा पक्खत्ता, तिसुवि छांगस्स अस्सखेज्जाइज्जागे, एत्थण ग्रहवे सुवन्नकुमारा देवा परिवसति । वेणुदेवे
 इत्थ सुवन्निदे सुवन्नकुमारराया परिवसति सेस जहा नागकुमाराण । कहिण जते ! उत्तरिस्त्राण सुवन्नकु

मरुताण् मरुतकक्षा दक्षिणदिशि १८ साख उत्तरदिशि १९ साख तोर्वकरे कक्षा । तेव मरुतावाहिक्का जावपडिक्का । ते मरुत वाहिर यावन् प्रति
 क्व । तत्तव मरुतकक्षाराव देवाव पक्खत्ता २ व ठावा य । तिहा सुवन्नकुमारना ठामक्का । तिसुविक्कावक्ख पसिक्खइमगे । तीने वासकाकन
 पसन्नातमेमगे । तत्तव मरुत कक्षमारा देवा परिवसति । तिहा वर्या सुवन्नकुमारना व्वत्ता वसत्ते । सेस जहा आहियाव जाव विहरति । यय
 पावता पासावनीपरे विहरै । वेसन्ध वणुठाखिव इत्थदेव सुवन्नकुमारोदी सुवन्नकुमारराया यो परिवसति । वेसदेव वणुठाको ए दाय सवन्नकुमार
 ना राणा कावता राजापणे विपरैवे । कडिक्कमते दाहिक्काव सुवन्नकुमारारव पक्खत्ता २ व ठावा य । किहा वेमगवन् दक्षिणना सुवन्नकुमारना
 पर्वासा यपर्वावाता ठामक्का । दाहिक्कमत दाहिक्का सुवन्नकुमारा देवा परिवसति । किहा वेमगवन् दक्षिणना सुवन्नकुमार वसत्ते । मायसा इमीसे

म गय विष पोदे इन्द्रो यत्तम्यता । मर्द भववाचसं इदं वाचसं यथैवाचसं परिहरन्वाचसं इमोर याज्ञार अर्कतय । एतन्नोविद्येय भवन्नोसख्या
 अ इन्द्रमानाम पू वचपथाम ज वसपथे यादेवरी समझवा ते कथे—वचसिन्धु यमुनाय पुसौतयववाहारागाय । वायतरीमुवस वायकुमाराराय
 यत्र १ । ६४ साय भवन यसरवमारना ८४ साय यसरवमारना ८२ साय सुवणकमारना १ ८ साय वासुकुमारना ११ योगदिसाठवडोव
 विज्जवमारदेववनेव सुवसपिजगविवाचं वायतरीमोसयसडया २ १ १२ इन्द्रना एतसे ६ सुवखीवा भवन २२ वरतोसायचयता ४३ तोसंयसयसड
 काय यवाचतालोसा हादिकपादुतिभववाह १ १ १ यमरेन्द्र १४ भरवेन्द्र ४४ वेकुदेव हरिकन्त यन्मिपिण्ड पूव १८ यतसडय सख जसवन्ता यमित ५
 देवसव वाय ४ ४६ ११ तोसाचतालोसा वरतोसंवेवससडया ८ कायाकाजतोसा उत्तरपोदेतिभववाह १ ४ ४ यमरेन्द्र १ साय भवामेन्द्र
 हरिम वचदाओ ४ साय यनिग मावव वाचदा १४ साय जसपम यमितवाङ्म ४६ साय प्रमज्जन मवाधाय १६ साय उत्तरयविता इन्द्रिरा भवन

जाविवा १६६ १ ४ ४ वचसोसोकासु जसवडया १ वसुवज्जाय सामाविवाचपदे वरुणवा यावरकाया १ १ १ ६४ वकार यमरेन्द्र ६ वकार
 र वसत्र ६ वकार भरवेन्द्रादि यव यसरवर्जीन सामानिकओ योगुनी वरता याभारवकदेवता जाविवा १ १ यसरवरवतकनेषु सुवहरिक्तयनि
 सोडय पुकत्रसक्तय यमिबवर्लवपासेव १ १ यमरेन्द्र वरवेन्द्र जिम वेकुदेव हरिकन्त यमिमसोहा पूव जसवन्ता यमित वसवन्त वाया १० इति द
 चिदयनो । अक्षिप मूवादि वेवदाति वरपावे यन्मिमावेववाचिह । यवेन्द्रा मंतनेन्द्र देवदाओ हरियाव यमिमसायव वसिह । यसरय तत्र यमितवा
 वधि यमत्रयेय मडायासे याभारिमाकु जाव विहरति । जसपम यमितवाङ्म प्रमज्जन मवाधाय २० उत्तरदिगिना वायव विवरेह । वाळा यसरकुमा
 रा नागा वधिय पांकरासावि । यसरकुमार काळा नागकुमार ए दाव पांङ्कुरा । यसरवन्त निहसगाराओति । प्रवर यवचयसे वख्याटिय जडवा
 मरव । मुव्यादिदावदिया । सुवचकुमार दिगिजमार सुमितवमार १ । जतनकवयथया विज्जुपयोयहुतिथोवाय । सामापियगुत्रका पांजवमारामि

तिपादनायमाह-असुरेसुहोतिरज्ञा इत्यादिगाथाह्वयं ॥ असुरेव सुरकुमारपु प्रवृत्ति यत्काश्चित्काभि नागकुमारेषु सवधिकुमारेषु च यिसिप्रपुष्य
प्रजाविनीसवका भीत्यर्थः सुषुम्बकुमारा विष्णुकुमारा कान्तिकुमारा य अज्ञास्यगवसभपरा अक्षस्याश्वसुसंभयात्वं तत्र गतो य फल सोद्यास्वगत
सादृत् पवत पदसु सपुरकी त्वद्यास्यगवसभपराः वापुष्यग दानवकपरिचापहीणाइत्यर्थं विष्णुकुमारा क्षीपकुमारा अग्निकुमाराय नीलानुराग

चोष्ठीसच्येऽसयसहस्साह । ठायालातृप्तीसा उत्तरनेहोतिजवणाह ॥ ४ ॥ चउसठीसठीखलु तस्रसहस्सान
असुरयज्ज्ञाण । सामाणियातृपु चउगुणाश्यायरकात ॥ ५ ॥ अमरेघरणेतहवे पुदेवहरिकतस्थगिगीहिय ।
पुणजएकृतय अमिययेतयेयधोसेय ॥ ६ ॥ बलिनुयाणदेवे पुदाडीहरिस्सहेअगिगिमाणयविसिठे । जलप्य
नेअमिययाहणे पनजणेयमहाधोसे ॥ ७ ॥ उत्तरिज्ञाण जाय यिहरति , कालाअसुरकुमारा नागाउदहीप
नुरादीयि । यरकणगणिहसगोरा होंतिसुयखादिसायणिया ॥ ९ ॥ उत्तप्तकणगयन्ता विज्जुअगगीयहोति
दीयाय । सामापियगुयया वाउकुमारामुणेयहा ॥ २ ॥ असुरेसुहोतिरज्ञा सिलिअपुफनायणाउदही । अ्या

यवात्ता यववात्ताना ठामकजा । कश्चिचमंते उत्तरिज्ञा सशककमारादेवा परिवसति । विष्णो इमगवन् कणरता सुषुम्बकुमारदेवता वसेत्ते । गोदमा
रमोस रदकप्यमाए जाय एतत्त उत्तरिज्ञाक सुषुम्बकुमाराक चउतोस मववावाकयसवहा कर्तितितिकयायं । अमोतम ए रतनप्रमाने जायत् इहा स
तरता मवववमारता इहा वाए मवमनो सक्काकको तीर्थेकरे कज्जो । तेव मववा जाय एतत्त वक्कये उत्तरिज्ञा सववकुमारादेवा परिवसति । ते मवम
वायत् इहा यवा उत्तरता सुषुम्बकुमारता देवता वसेत्ते । मववाक जायत् विवरति । मववाक यायत् विवरत्ते । येपुदाखिय इत्त सुषुम्बकुमारिदे सु
रववमारताया यो परिवसति । येपुदाको इहा सवववमार सुषुम्बकुमारतामेराणा वसेत्ते । मववववा सव ववा नागकुमाराए एव कजा सुषुम्बकुमा
राए यतववा मविपा । मववाक ग्रंथ मिस नागकुमार इत्त जिन सुषुम्बकुमारजी कश्चिचो कज्जो । तथा येयवनि कणरसुवइ इ हाव माविमम । ति

स ग्रेय विव नीदे रश्मिनी यत्नव्या । अर्ध भववाचसी इत्याचसी यथाचसी परिहरववाचसी इमार गाहाय यत्नगतव्य । एतलोबिरीय भवननी सव्या
ज् रश्मिपभाताम ज् यत्नप्रयोग ज् यत्नपदे गायेरी सप्तमवा ते यदेवे यत्नसि यत्नराय ज् यत्नसीतयववाइमागाय । वावत्तरीसुवय वावत्तमा रायव
यत्न १ । ६४ सायु मदन यत्नरमारना ८३ साय मजन मावत्तमारना १८ साय सुवत्तमारना १८ साय वावत्तमारना १८ साय वदिसावत्तमारना १८
विवत्तमारनेववव ज् यत्नविज्जमियाव ज् यत्नरिभोसवत्तमारना २१ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

[illegible]

तिपादनायमात्र-असुरेसुहोतिरस्ता इत्यादिवाणार्हय ॥ असुरेण सुरकुमारेषु प्रथमे तस्माद्विराजन्ति नागकुमारेषु च उद्विक्तमारेषु च अतिप्रपुण्य
प्रमाद्विनीतवदा नीत्यर्थः मुदबकुमारा विक्रममाराः क्षोभितकुमारा य क्षयास्यवसनवदा क्षयास्यमुसध्यास्यं तत्र गतो यः प्रमः सोद्यास्यगत
स्तद्वत् पवस पद्वत् गह्वरन्ती त्वद्यास्यवसनवदाः यादुस्यम यतवक्षपरिचाणक्षीसाहस्ययः विधुत्कुमारा क्षीपकुमारा अग्निकुमाराय भीसानुराग

चोक्षीसचेवसयसहस्साह । तायालावक्षीसा उत्तरर्होतिभ्रवणाह ॥ ४ ॥ अउसठीसठीस्वहु तच्चसहस्साह
असुरयज्ज्ञाण । सामाणिगाढेए चउगुणास्थायरस्काढ ॥ ५ ॥ चमरेधरणेतहवे गुदेवहरिकतस्थगिगीसीहिय ।
पुणजउकतेय अमियेवेलयेयचोसेय ॥ ६ ॥ बालिनुयाणदेवे गुवालीहरिस्सेह्यगिगीमाणवविचिठे । जलप्य
नेअमिययाहणे पनजणयेमहाचोसे ॥ ७ ॥ उत्तरिषाण जात्र विहरति , कालाअसुरकुमारा नागाउदहीप
दुरादोचि । धरकणगणिहसगोरा होंतिसुयसादिसायणिया ॥ ९ ॥ उत्तप्तकणगयन्ता विज्जुअग्गीयहोति
दोयाय । सामापियगुवखा वाउकुमाराभुणेयस्सा ॥ २ ॥ असुरेसुहोतिरस्ता सिलिद्रुपुफ्फनायणाउदही । अ्या

मर्षाया ययर्षायाणा ठामवक्षा । अविर्बभन्ते उत्तरिणा सबबज्जमारादेवा परिवसति । विहा वमगवन् उत्तरणा मुदबकुमारदेवता वसेवै । योवमा
इमोवे रबबज्जमाए जाव ठत्तवं उत्तरिणाव मुदबकुमाराव वठतोसं सबबावासबबसइक्षा इवतिप्पिमक्खाय । इतोतम ए रत्तमभागे वावत् इहा व
तरणा सबबज्जमारणा ३४ काव मक्कमो सप्पाकहो तोवेकरे वज्जो । तेव मक्कया जाव पत्थवं वद्वे उत्तरिणा सबबकुमारादेवा परिवसति । ते मक्क
मावत् इहा ववो उत्तरणा मुदबज्जमारणा देवता वसेवै । मक्कठिया जात्र विहरति । मक्कठिक ठावत् वावत् विवरेवै । वेवुदाविय इत्थं मुदबज्जमारिदे सु
वक्कन्नारराया वा परिववर्त्तति । वेवुदावो इहा सबबज्जमार मुदबकुमारनामेरणा वसेवै । मक्कठिया सेव ज्जया नावकुमाराए एव ज्जया मुदबज्जमा
राए वत्तवया भविवा । मक्कठिक एव वित्त नागकुमार इत्थं वित्त मुदबकुमारो ज्जिवो ववो । तक्का सेसाववि वठइसवव इ एव भविदत्तं । ति

म ग्रय पिब चोद्रे रन्ध्रनी वत्तव्यता । मरु मरुवाचसी इत्येवाचसी परिहरन्वाचसी इतीर गात्रार प्रकुर्मतत्वं । एतस्मिन्नीय मरुनीसख्या
 नू रन्ध्रमभाभाम चू वचप्रभाम चू वचपदे मोनेरी समभवा ते कर्तव्ये—वचस्रिय प्रमुपाण चुलसीतइववहारभागाच । भावतरीसुबल बावकुमारारावय
 नूतय १ । ६४ साय भवन प्रसरकमारना ८४ साय भवन मागकमारना ०२ साय सुवचकमारना १ ८ साय बासुकुमारना १४ दोषदिशावचोच
 विचकमारैवचवेचं वचस्रियगविशालं व्यावत्तिमावचस्रया ० २ । १२ इन्द्रना एतसे ६ दुगसीका भवन ४ २ । वचसीसावचस्रता चउतीसवचयसइ
 मय पन्नाचतालोसा दादिवपाहुतिभववाइ ४ १ चमरेन्द्र २४ धरैन्द्र ४४ वेवदव हरिकन्त चज्जियायल पूव ३८ मातसइय लय लसकन्त चमित ५
 देवस्यव घाय ४ ४१ ४१ लोसाचतालोसा वचसीसेवचयस्रयाइ जावासावलोसा उत्तरवाचोतिमववाइ ४ ४४ चसेन्द्र १ साय भनानिद्र
 वरिच वचुदाभी ४ साय चरित माचव वसिडा २४ साय लसप्रभ चमितवाचन ४६ साय उत्तरवचिरा इन्द्रिरा भवन

जाविवा १६६ ४ ४ । वचसीसीखलु लवमचका १ प्रमुपवज्जाचं सामाचियाचए चकुचा वाचरव्वाची ४ ५ ४ ६४ वजार चमरेन्द्र ६ वजा
 र वसद्र ६ वजार धरैन्द्रादि एव चसरवर्जिन सामानिकयो चीगुवा करती व्यावत्तकदेवता जाविवा ४ ५ ४ चमरेन्द्रवचतवेपु सुवचरिक्तयनि
 मोदिय पुल्लवकन्तच चमितवेत्तवपातिय ४ ६ ४ चमरेन्द्र धरैन्द्र जिम वेववेव हरिकन्त चमितसीडा पूव लसकन्त चमित वसवच जाया १ इति द
 सिचयरी । वसिद भूपाविदे वेवदाणि वरज्जवे चम्यिमावेववासिडे । वसेन्द्रा भूतानेइ वेवदासी वरियाच चरिममावव वसिड । लसप्रभ तइ चमितवा
 चदे पभचवेच मकापासे चानरिक्तापु जाव चिकरति । लसप्रभ चमितवाचन प्रमज्जन मकापाय २० उत्तरदिगिना यायत् विचरेवे । जावा प्रमुपकुमा
 रा नागा चवधिच पाकरादावि । चमरकुमार जावा मानकुमार ए दाय पाकुटा । पवरकचग निवसगाराचीति । प्रवर सवचवेते चव्याटिय लकवा
 म चं । मरुवादिशाधविवा । सुवचकुमार दिभिक्कुमार छमितकमार ३ । लसकचयवथा विल्लुपलोयहुतिवीवाव । सामापयगुवका वाचकमारामि

पसना वायुमाराः सप्यानरागपसना धाममतरसूत्रे तिसुविमोगरसससरोज्ज्वलनागे इति ॥ स्वस्थानोपपातसमुद्गातरूपपु त्रिष्वपि स्थानेषु लोक
स्याः सङ्ख्ययनाग वस्तुमानि तथा पुण्यवयवयोमहाकाया महोरगाः किं विशिष्टाः ते इत्याह-पुण्यपसयः गन्धवगन्धा गन्धवसमुदायाः किं विशिष्टाः
स्त इत्यादि-निपुणगन्धवगीतरतयो निपुणाः परमकीशलोपता यगन्धवजातीया देवा स्तेषा यद्वीस तत्र रति र्येषा ते तथा एते व्यसराबाम स्ते

रणपन्निदुयारदेसन्नागा आसप्तोसप्तविउलयहयगधारियमस्रदामकलाया पचयन्तसरससुरजिमुक्तापुष्पपुजोव
यारकलिया कालागुरुपवरक्कादुरुक्कतुरुक्काधूमधमचतगधूसान्निरामा सुगन्धवरगन्धिया गन्धवहीनूया स्यक्कु
रगणसर्वाधिकया विवृत्तुक्तिसहस्रपन्नदिया पन्नागमालाउलान्निरामा सखरयणमया स्यक्का सरह। लडा
घठा मठा नीरया निम्नला निष्पका निक्ककरुक्काया सप्पन्ना सप्पिरीया सउज्जीया पासादीया दरसणि

पेतावररमा । ते मपर बाहिर काटवा नाहि शेरमा । एते पुष्करकविवाच सठाचमठिया । मोचे कमसमो कविबाने पाकारे । उक्किसुतर विषसग
भीरक्काव फनिडा पागारहालय अवाकतारवपिदुवारधूमभावा । उक्काव विषे विवसो गन्धोर विटकमयो प्राकार ऊपर कपाठ तोरच द्वार माटा
तहमा भाव्यादार । अतस मवपि मुसस मुसटिपरिवरिया । कडादेयभाग मसमपरवरवादिजे परिवेदितजे । यवावासवा अवासवा गुता चडयासकट
मरावा चडयान कवधवमावा कमासवा किंकरा मरवडावरन्निवा । वाकमा देववा समसमयो मठा कोपजे मदा गुग्ग ४८ देमोभापावे प्रससाता
वचन ४८ भवेकरो पूनमावा कव्यावकारी कपट्टवनिना किहूर मूतकएवता तणे रक्कावे घर । काठकायमविवा गमोसरतचन्वा दवरदिय पवा
गुमितना पावविष पदवचसमा । ४८ भवेकरो पूनमावा कव्यावकारी कपट्टवनिना किहूर मूतकएवता तणे रक्कावे सोप जे मवादिबमोपरे मडा
वामोय रक्कवन्दे दवर दोधावे पत्र गुमोमाकाव उपपित वाप्यावे चम्पनकमगा । चंनचकय तोरच पक्किदुवारदेवभागा । चम्पनकमगे कटा ग्रामन
बोधीके । पापतामसविउलयहयगधारिय मडदामकलाया । पापता सप्तभूमि यथापर वाध्या विपुसविशोर्च दामना कटा । पदवच सरससुरजिमुक्

सासययमणधरा ह्रींतिमुवणादिसार्थणिया ॥ ३ ॥ नीलणुरागयसणा विज्जुसुग्गीयहोतिदीयाय । सज्जणु
 रागउसणा याउकुमारामुण्येयहा ॥ ४ ॥ कहिण जते ! याणमतराण देवाण पज्जहापज्जहाण ठाणा
 पयासा, कहिण जते ! याणमतरा देवा परिवसति ? गोयमा । इमीसे रयणप्पनाए पुठवीए रयणमयस्स
 फरुस्स जोयणसहस्सथादहस्स उवरि एग जोयणसय उग्गाहिता हिठावि एग जोयणसय वज्जिहा मज्जे
 व्युठसु जोयणसएसु एत्थण याणमतराण देवाण तिरियमसखेज्जाठ नोमेज्जा नगरवाससयसहस्सा हवतीति
 मस्काय तेण नोमेज्जा णगरा याहि यहा व्युतो चउरसा व्युहे पररकन्तियासठाणसठिया उकिन्ततरवि
 उलग्गनीस्वायफलहा पागारहालयकथान्तोरणपक्रिदुयारदेसनागा जतसयग्घिमुसलमुसठिपरिवारिया
 व्युउज्जा सया जया सया गुप्ता व्युक्रयालकुठरइयव्युक्रयालकयवणमाला खेमा सिन्ना किक्करा मरदुहोत्ररिक्कि
 या लाउव्वीइयमहिया गोसीयसरसरस्तचदणदह्वरिविणपधगुलितला उयचियचदणकलसा चदणधरुसुकवती

दसा ॥ १ ॥ तज्जामाना खड्वा विद्युत्तमार चम्पिजुमार दीपकुमार खामके प्रियङ्गुनोपरे वायुकुमारना च्च खविषा । वहिक्कमेते वावक्कमार वाव
 तराचं पव्वता २ न ठावा प । विडा वायुक्कमार वूमनवन् वावमत्तर पर्वाणा अपर्याप्ताना ठामकज्जा । वहिक्कमेते वावमत्तरा देवा परिवसति
 विडा इममवन् वावर्मतरदेव कमेते । गावमा इमीसे रववप्यभाए पठवीए रववमयस्य कड्ढा वीयवसइय वावक्कस्य । वेगीतम ए रतनमभाना व्युप
 ला रतनमयवाण्ड वाउजसइसने खड्गपणे । अवरि पर्यावायवसयं उव्वाडित्ता । अवर एववाज्जन यत उगाओने । विडाएयंजीयच सर्ववज्जिता । इठ
 कयोवाउज पववायणे । मक्क चउव्वीयवसणस । माडि विपे ८ यावज्ज । एत्थच वावमतराच दवाण तिरियमसखिज्जा । इही वावमतर तिरिक्का
 मप्यातगुण । भोमिज्जानवरावाससयसइयावपतितिमक्कायं । भूमि चउव्वीपरे नमरणा काणागमे परिहते कज्जा । तेच भामिज्जाणगरा वाविषइ

पसना यापुङ्गवाराः संप्यानरागपसना घाजसतरसूत्रे तिसुविशोगसससखेजाजाने इति ४ सख्याभोपपातसमुदातरूपपु त्रिष्वपि स्थानेषु क्षीन
स्या महुयनाग वक्तव्यमिति तथा नुयगत्रयकोभभाभाया मक्षोरथाः कि विक्षिप्ताः ते इत्याह-नुजगपतयः गन्धवयवा गन्धवसमुदायाः कि यिप्रिया
सा इत्यादि-निपुणमन्त्रवपीतरतयो निपुणाः परमकौशलोयता यगन्धवयातीया देवा स्तोपा यद्वीत तत्र रति र्येपा त तथा एते व्यस्तराधाम धी

रणपक्रिदुवारदेसनागा श्वासप्तोसप्तविउलथदृगघारियमस्रदामकलाया पचवन्तसरससुरजिमुक्तापुष्पपुजोव
यारकलिया कालागुरुपवरक्तादुरुक्तातुरुक्ताधूवमघमघतगधधूसानिरामा सुगधवरगधिया गधवहीजूया अचू
रणसघविक्रुणा दिव्यतुक्तियसदसपन्नदिया पक्रागमालाउलानिरामा ससुरयणमया अचू सगह। लछा
घठा मठा नीरया निमला निप्यका निक्ताकरुच्छाया सप्यजा ससिरीया सउज्जीया प्रासादीया वरसणि

वेतावहरता । ते मपर वाहिर वाटवा नाहि चोरता । यत्ने पुष्करकविकाच सठाचसठिया । नीचे कमसनी कविकाने चाकारे । कविसुतर दिवसग
भीरक्याव कनिजा पागारहालय कवाकतारकपक्रिदुवारससमाया । कलाच विचे विकको मथीर किटकमवो माकार छपर कपाठ तोरच सार माटा
तहमा भात्याहार । जतन सबधि मुसक मुसठिपरिवरिया । कटादेयभाग मससपहरकादिके परिवेष्टितके । पपाधसवा कवासवा गुता पक्याककट
मरावा पटवान कवववमासा कमासवा किंकरा मरदंकारकिका । साहमा देखवा समसमनी सडा जोपके सडा गुप्त ४८ देगोभाघावे प्रससना
बचन ४८ मनेकरो पूनमासा कवावकारी कपद्रुत्रिनिजा किहूर मूलजपवता तये राप्याके घर । काकलायमहिजा भासोसरससदवा सहरदिय पवा
गुनितना पापविय पदपचसमा । ४८ मनेकरो पूनमासा कवावकारी कपद्रुत्रिनिजा किहूर मूलजपवता तये राप्याके घर । काकलायमहिजा भासोसरससदवा सहरदिय पवा
पायोव रजजस्यने कदर दीधाले पद गुनीनाहाय उपचित याप्याके चन्दनकमगा । यत्रचकच तोरच पक्रिदुवारदेमभाया । चन्दनकसये कटा याभन
बोधीके । चासतोयतविउलथदृगघारिय मस्रदामकलाया । यासप्तो सप्यभूमि यथापर बाध्या विपुसुविशोर्बे वामना कला । पदवच सरसमुरदिसुख

सासयनसगधरा ह्रींतिमुधरादिसार्धणिया ॥ ३ ॥ नीलाणुरागवसणा विज्जुधुग्गीयहोतिदीयाय । सज्जाणु
 रागयसुणा वाउकुमारामुण्येयव्हा ॥ ४ ॥ कहिण जेत ! वाणमतराण देवाण पज्जाप्तापज्जाप्ताण ठाणा
 पण्ठा, कहिण जेत ! वाणमतरा देवा परिवसति ? गोयमा । इमीसे रयणप्पनाण पुठवीए रयणमयस्स
 फरुस्स जीयणसहस्सधाहस्स उवरि एग जीयणसय उग्गाहिता हिठावि एग जीयणसय वज्जिता मज्जे
 थ्यठसु जीयणसएसु एत्थण वाणमतराण देवाण तिरियमसखेज्जात्त जीमेज्जा नगरवाससयसहस्सा हवतीति
 मत्थाय तेण जीमेज्जा नगरा थाहि यहा थ्यतो चउरसा थ्यहे पुररकन्तियासठाणसठिया उक्किन्ततरवि
 उलग्गनीस्सायफलिहा पागारहालयकयाफुत्तीरणपफिदुत्तारदंसजागा जतसयग्घिमुसलमुसठिपरिनारिया
 थ्यउज्जा सया जया सया गुत्ता थ्यफालकुठरइयथ्यफालकयवणमाला खेमा सिवा किकरा मरदन्नोवररिक्कि
 या छाउप्पीठयमहिंया गोसीयसरसरसखदणद्वरदिसापचगुलितला उवचियचदणकलसा चदणधरुसुकयतो

यमा ॥ १ ॥ तप्पामाना अइथा विथुत्थमार पम्पिज्जुमार वीपल्लुमार आगधे विवक्खनोपरे वायुज्जुमारजा वय अविवा । अविक्कमते वाउकुमारा वाउस
 तरारं पप्पता २ नं ठावा य । विवा वायुज्जुमार उप्पन्नवन् वाउमत्तर परीमा अपर्वात्ताना ठामकळा । अविक्कमते वाउसतरा देवा परिवसति ।
 विवा इमययन् वाउमत्तरठव इमेव । मायमा इमीसे रयणमयस्य वाउसतरा वाउसतरा । वेगोत्तम ए रतनप्रमाना ऊपर
 सा रतनमववाण्ड याउन्नसउत्तमे जाउपणे । उवरि एगंजायवसय उप्पाहिता । ऊपर उक्कयाज्ज जत उगाढीने । विहायगंजासय सयवज्जिता । इठे ए
 कसोद'न्न पववायवे । मय्य चउमोयवण्ण । माहि विपे ८ याज्ज । एत्थण वाउमतराण देवाच तिरियमसखिज्जा । इवा वाउमत्तर तिरिवा प
 सत्तातगुवा । भीमिज्जानगरावासवउत्तयावयतितिमक्कायं । भूमि यउरनोपरे मयराणा याउगाधे परिहति कळा । तेच भाविज्जानगरा वाविज्ज

मूलनेत्रेदा इमे बाल्ये ऽवाक्तरप्रेदा दृष्टौ ॥ अक्षपद्मिषत्त्यादि ॥ कर्चं भूता एते पौकथ्योपिःत्यतर्थाए-बलपलपलचित्तकीलकदवप्यिया चम्बला च
मवात्यलबिता साधा बलपसम तिगयन चयक्ष य कीकर्म यद्य चित्तद्रव्यः परिहास क्तौ प्रियौ यया ते बलपलचित्तकीलकदवप्यियाः सतयम्बल
द्वारदम विद्यपयसमास' तथा गदिरहसियवीपयचरती ॥ नमीरपु इत्यतिगीतमर्त्तनेपु रति र्यया त तथा ॥ वयमासामसमलकुलससञ्चदवित
द्विपात्ररक्षणादनुमकपरादिति ॥ वनमासामयानि यानि आनेसमदुदुवकसानि आससति ॥ चापीकृष्णस्य प्राकृतससञ्चवयतः चापीडः अक्षरक

ज्जा धृज्जिरुवा पन्निदुवा एत्थण द्वाणमत्तराण द्वाणा पक्खया । तिसुवि लोगरस्स
 अस्सखेज्जहोणे तत्थण बहं द्वाणमत्तरा द्वा पारिवसति तज्जा-पिसाया नूया जस्सा रक्कसा किन्नरा
 किं पुरिसा नुयगवत्तिणीय महाकाया गधसुगणा य निउणगधसुगीतरइणी अग्गयिपणवन्ति यइसिवा

पुण्य पञ्चाङ्गारकसिंहार । ए पाणि वन सरस सगन्ध मूखा पूजनीक कसो ए परिचया । आकाशगुर पवरकदह तृणकम्भत भूम वमसत गंससवा
मिरामा लमभवत्यधिया तंभवहिम्बा । आकाशर पवरप्रधान कुन्दकल तृणक सेवहारसेवरी मजमयात्मान सुगन्ध तिबेवरी मन्वनी बाट कुरछे ।
पञ्चार गणसथ सबिबा दिव्यतुल्य सहस्रपत्राया । असुरानासमूहोये करोसहित । पङ्कगजासाकसाभिरामा सख रयकामया यथासथा । खदङ्गा
दि साधसता मनाहरयन् सह रत्नमय पाजावे । यथा महा नीरवा निष्कला निष्कला निष्कला निष्कला नीरव निमल निमल निमल निमल नि
खल्लव प्रभासहित । सयथा सखिरीका सख्याया पासाया दूरसन्निधा समिकवा पङ्कजा । सयात दमोन्ने देखवायाग्य भभिरूप प्रतिक्रिय ।
पत्यव बाबर्मतराय देशाच पञ्चता पञ्चताप ठाका प । रवी बाबल्यान्तर देवतामा पर्याता अपर्षातामा ठामकथा । तिसुखिगागज असुखिज्वर
भागे । तोन बावसाकने पसप्यातमेभागे भुवे । तत्यव बहवे बाचमतरादवा परिरसति तं । तिहा बवी बाचप्यन्तर दबता बसेले तेकहेले—पिसाया
मूखा यथा रक्तसा बिपरा विपुला मुयमयथा मझाकावा । पित्राच भूत यथ रायस बिपरा विपुलय भुजयति मझारम मझाकन्ता । गप्यन् मचाप

महायत्ना महासोक्ता हाराविराड्पायच्छा कठगतुक्रियर्थनियन्तुया मगयकुलमठगङ्गजुयलक
णपीठधारी यिचिप्तहत्यान्नरणा यिचिप्तमालामउलीकक्षणागपवरधत्यपरिहया कक्षणागपधरमत्तानुलेत्रणध
रा नानुसुरयोदी पलत्रयणमालधरा दिव्येण वन्त्रेण दिव्येण गधेण दिव्येण फासंण दिव्य सठाणेण दिव्याए इ
हीए दिव्याए जुइए दिव्याए पन्नाए दिव्याए च्छायाए दिव्याए अच्चीए दिव्येण एएण दिव्याए लेस्साए दसादि
साने उज्जोव्वेमाणा पन्नासमाणा तण तत्य साण २ जेमिज्जाणगरावाससयसहस्सा अस्सिस्सिज्जाण साण २
सामानियसाहस्सीण साण २ अग्गमहिसीण साण २ सपरिसाण साण २ अणियाणं साणं २ अणियाहिव

[illegible]

एकालिङ्गोनामप्रियाः सतः धूम्रद्विजगरेन सह विद्योपसभासः ॥ हासवीली यदुसाय तिमज्जती अस्मिमुद्रराशिक्रुता इहो
यपातेहामपासपपुनः तथा ॥ अस्मिमुद्रराशिक्रुताः ॥ अक्षयमन्त्रियकविनिमुत्तचित्तविक्रमगयाइति ॥ मन्त्रय धन्वकात्तायाः रत्नानि
बर्जितनादीनि यन्त्रे यद्विषये विविधे नामाप्रकारे नियुक्तानि चित्राणि भानाप्रकारे चित्राणि गतानि स्थितानि यथा त तथा शेषं सुगल
मन्त्रं कासयमहाकास इत्यादि ॥ दक्षिणोत्तराणो पिशाचानां यथाक्रममिन्द्रो कासमहाकासो मृतानां सुरूपधतिरूपी यथाका पूज्यमन्त्रमात्रिमन्त्री रा
समा श्रीममहाप्रोमो किन्नराणां किन्नरकिपुरुषी बिंपुरुषाका सत्युरुपमहापुरुषो मन्त्रोदगाक्षाम अंतिकायमहाकायी गन्धर्वाणां गीतरतिगीतयक्ष्यसो
न्यातिजसूत्र यदुक्ताविषयं ठाकुराठयाह यदुक्ता विषयस्या दैवपित्य तस्य संस्थान तेन सस्थितानि यन्त्रा लपपरिहारी यन्त्रप्रश्नसिद्धीकाया यानि
इति विहितं ततो यथार्थं सधुक्तासियामया इति सर्वोत्तमा स्फटिकमयानि तथा यन्त्रुद्रता आग्निमुक्पनधर्वतोविनिगता लहसुता प्रबलतया सर्वोत्तु

कतत्रियसिस्तचित्तयत्नमालरइयवच्छा कामकामा कामरुवदेहधरा नाणाविहयन्तरागअत्रच्छलतचित्तचित्त
गणियवसणा त्रिविहदेसिनेत्यगहिययेसा समुदयकदप्यकलकलकोलाहलपिपा हासा योलमज्जडा ह्यसि
मोभारसत्तिकुतहत्या ध्येणगमणिरयणविविहनिजुसोयिचित्तचिगयासुखा माहिहिया महज्जुतिया महायसा

बाह मनाहरमय्य वराणै मुरमिपूत प्रखल सविभता मोमता अभनीय विवसित नानामकारजो विभ्यारवना कोघोहै । कामबध्या कामरुदेह
धारी बाबाविहवरायदखविहग विवितकवना नियसबा विविहदेसै नैदखभदियाबासा । होयाजियै कामातरकै देहधारी पनेकविष विविषरु
पना विवरुप पनेकदेयना पद्यासना गङ्गाहै बेग जेये । करणकोखकोलाहकपिया हासवासबहला । प्रमदित सप परीमोहै कन्दप्येसा ओडा को
माहन प्रिये कामता वोल बहलहै । एसिमरस्यतिबुतहला । एसिबहलै बाबनेविये । भवेगमभिरयबविनिबिमिप्यति विवितानिबहमया मुकबा ।
पनब मरिरतन रिपिप विविषसहित विनहै सुदपहै । मरुठिदा मरुठ्याया मडाबसा मडाबसा मडाबसा मडाबसा मडाबसा मडाबसा मडाबसा । म

या, एत्यण पिसायाण देयाण पज्झतापज्झताण ठाणा पयासा, तिसुयि लोगस्स छुसखेज्झज्झागे तत्यण
 बहने पिसाया परियसति महहिंया जहा उहिंया जात्र यिहरति, काळा महाकाळा इत्थं दुये पिसाया
 इदा पिसायरायाणी परियसति, महहिंया महाज्झहया जाव यिहरति । कहिण जत ! दाहिणिस्साण पि
 सायाण देयाण ठाणा पयासा । कहिण जत ! दाहिणस्सा पिसाया देया परियसति ? गीयमा ! जयुद्धो
 वे २ मदरस्स दाहिणेण इमीस रयणप्पज्जाए पुढवीए रयणामयस्स करुस्स जायणसहस्सथाहसा उयारि एण
 जायणसय उग्गाहिंसा हिठावेग जायणसय यज्झिंसा मज्जे छुठसु जायणसएसु एत्यण दाहिणिस्साण पि

हे तिस्सा पसज्झाता महरानीपर नगर तेजना साखामे तांकेरे कक्षा । तत्तमामज्जा/नगरावाविहहा एवं कक्षापादियमवववववव तक्षा भाविस्सा
 वाव पडिस्सा । ते भाव नगर कक्षवावे वादिर वाटसाकारे इम किम पायनामन् तिम कक्षवावा खावत् पतिकप । एत्यण दिमायाय वेवा
 वे पज्झताव ठा प । इहा पिसाव दूरी देवता पयोत्ता पयवोरिताना ठामकक्षा । तिमविमायव पसविस्सावभागे । तीने वावेसावने पसव्यातमे
 भागे इवे । तत्तव ववव पिसावावेवा परियसात । तिहा ववा पिसावदेवता वससे । मक्कठिया जहा पापिया जाव विहरति । साटोक्कहि किम
 पावनापानावा वावत् विहर । कामे मज्जावासेव इतनुवे पिसावरापाका परियसति । जाकवने मज्जावावनामे इहा दोय पिसावनामे राजा वससे ।
 मक्कठिया जाव विहरति । मक्कठिक जावत् विहर । कडिक्कमे दडिक्कित्तव पिसावावे नेवाव पवता इ व ठा प । विहा इमगवन् दडिक्कना
 पिसाव पयोत्ता पयवोरिताना ठामकक्षा । कडिक्कमे वादिविक्का पिसावा इवा परियसति । विहा इमगवन् दडिक्कना पिसाव देवता वससे । गाव
 मा खयदीरे मडरस्स पज्झणव वादिवेव । जयुद्धोपनाम योपमादि मक्कपवत दडिक्कनामे । इमोसेरवववभाण पठगेए रयवमवववववव जाववमव
 वव वाइक्क । ए ररनममनामे दडिक्कित्तवे ररनमय वाइक्कना वाकनवववव जावपवी मदि । वपरि एवववववववव वववववव । वपरि एववववववव

दृण साण २ घ्यापरकट्टेयसाहस्सीण स्युसोसि च घट्टग वाणमतराण देयाणय देयीणय स्युहिवच्च पोरेयच्च
 सामिप्त चठित्त महत्तरगघ्न स्याणाइसरसणावघ्न कारमाणा पालमाणा महयाहयनहृगीयवाइयततीतलताल
 तुक्रियत्रणमुइगपहुप्पयाइयरवेण दिव्वाइ नोगनोगाइ भुजमाणा धिहरति कहिण न्न । पिसायाण देयाण
 पज्जज्ञाण ठाणा पयात्ता । कहिण न्ते ! पिसायादेवा परिचसति ? गोयमा । इमीस रयणप्पन्नाए पुठयी
 ए रयणामयस्सककस्स जीयणसहस्सयाहस्स उधरिएण जीयणसय उग्गाहिन्ना हिठावेग जीयणसय वज्जि
 णा मज्जे स्युठसु जीयणसएसु एत्यण पिसायाण देयाण तिरियमसस्वेज्जा नोमेज्जा नगराद्याससयसहस्सा
 नयतीति मस्साय तण नोमेज्जा नगराद्याहि वहा जहानुहिउन्नवणयणु तहा जाणियसुी जात्र पम्फिक्क

वज्जिक्क वावमतराच देवाचय देशेयय याइअच पादेयय नामिण भवित्त मक्कतरमत्त । यापको चाक्करचवदेवन सकुत्तेकोरो धनरा घवो वागव्वत्तर
 ना देवता तथा पविपतिपवे पौरपपको व्वामोपको धारता बहाईपवे । याकाइसर सेवावस कारमाणा पाकेमाणा । याइआ ईस्वरपवे धारता वरा
 यता पासता । मक्कवाइअ मइमोपकाईय तंतीतसतास तुक्रिय वक्कमसय पक्कवाईबरवच । माट्टावाळा मत्त गोय वाक्कच तवो तास चटित काजिचवि
 गेय पठक्के म्मेक्को । दिक्का मागमायार भंजमाणा विहरति । केवताना भागभागवता विहरेहे । कइक्कमेते पिसायाच देवाच पज्जता २ च ठा
 व । विइको व्वाभनन् पिगावदेवता वसेहे पवीता पयवीप्ताना ठामक्कया । कइक्कमेते पिसायाइवा परिवसति । विइको व्वाभनन् पिगावदेवता व
 सहे । यावमा इमीसरयवप्पनापठकोए रयवामवण कइक्क आचक्कवाइवाइक्क । व्वाभोतम ए रत्तमपमा पवित्रोय रत्तममयक्काइ याक्कमयक्क वाळा
 वे । पणजावक्कय च्वाइक्का । तेइमाइ पक्कयाक्कन यन यवगाओन । दिइआ एगवायक्कसय वज्जिस्ता मग्गे पइस कावक्कपस । पठे एक्को याक्कन व
 वींन नाहि पाठवोयाक्कन इही । एतव पिसायाच देवाच तिरियमसस्वेज्जा भाविज्जामयराचसयसक्कया ववतिविमक्कयाय । पिगावदेवतारा घर

रस्कदेयसाहस्सीण श्रुन्तस्सिच यत्तुण दाहिस्त्राण याणमतराण देवाणयेदधीणय श्वाहेवञ्च जाय विहरति ।
उत्तरिस्त्राण पुच्छा गो० । जहेव दादिणस्त्राण वत्तस्त्रया तहेव उत्तरिस्त्राणपि नवर मदस्स पध्वयस्स उत्तरे
ण महाकाळे जल्य पिसायइदे पिसायराया परियसति जाय विहरति एव जहा पिसायाण तहा जूयाणपि
जाय गधस्त्राण नवर इदेसु नाणत्त चाणियस्स इमेणपि थिहिणा जूयाण सुक्खपण्डिक्खा जस्काण पुसज्जहु
माणिच्चहु रस्सकाण जीममहात्तीमा किन्नराण किन्नरकिपुरुसा किपुरुसाण सप्परिसमहापुरिसा महोर
गाण श्रद्धकायमहाकाया गधस्त्राण गीतरइगीतजसा जावगीयजसे विहरति—कालेयमहाकाले सुक्खपण्डि

यादिवाच । तीन परियण ० यतीकेकरो ० यतीकाधिपतेकरो । सावसवइ पावरस्स देवसावरनौच पखेधिव जग्गव दादिविस्त्राण वाचमतसाच देवा
नव देवीचय पावेव पावरस जाय विहरति । सावेइकार भाज्जयवेकरो पोर वचां दसिचदियिता वाचमतस दववा देवो चविपति पौरपति वा
वत् विवरै । उत्तरिस्त्राण पच्छा । उत्तरदियिता प्रल । गावसा जहेव दादिविस्त्राण वत्तस्त्रया तहेव उत्तरिस्त्राणपि माचि । जेगीयस जिम दसिचदि
यिता जज्जो तिम उत्तरदियिता विगय कइवा । नवर मदस्स उत्तरेव महाकासय । एतका मेरुने उत्तरपासे महाकासनासे इग्ग । इत्थ पिसादे पि
सावरावावा परिवमति सेसतस्स जाव विहरति । पियाचनारावा तिवा वसलै तिम ग्रेप जाववा । एव जहापिसायाच तहा भूवाचपि भाचि० । इ
स जिम पियाचने तिम भूतजग्गते । जाव गधवाचवि भा । यावत् पाठसो गंधवज्जिक्कायसगे कइये । नवर इदेस वाचत माचियस्य । एतखीविग्रेप
इद्वनातामता विग्रेप कइवा । इमेव विद्विवाभूषाण सकवपिउदिया । इके विघेकरी भूतने कइय प्रतिकय । कइयाच पध्वमह माचमहाण भोम महा
भोमा । एसजिकये पूचमद्र माजमद्र, २ राचसन भोम महाभोम २ । कियराव कियसया । कियर कियवय ४ । कियुवसाच सप्परिस महापुरिसा ।
विपरियने एगुवप महापुरव, २ । महाराणाच पाइकाय महाकाय । महारागने पतिक्काय महाकाय, २ । गधवाच गोवरइ गोयजसा २ । गधवने गो

सायण देवाण तिरियमसखिज्जा नोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवतीति मस्कार्यं , तेण नयणा जहा
 टीन्निनु नयणयणात्तं तद्देय न्नाणियसो जाय पन्निऊया एत्थण दाहिणस्त्राण पिसायाण देवाण पज्जासापज्जा
 स्त्राण ठाणा पण्णा । तिसुयि उोगस्स अयसखेज्जाहन्नागे तत्थण अह्व दाहिणस्त्रापिसाया देया परिवसति
 महहिण्णा जहा उहिया जाय विहरति फाले जत्थ पिसायह्वं पिसायराया परिवसति महहिण्ण जाय पन्ना
 सेमाणे नण तत्थ तिरियमसखेज्जाण नोमेज्जा नगरावाससयसहस्साण अउरह सामाणियसाहस्सीण अउरह
 अगमहिस्सीण सपरियाराण तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह अणियाहिद्वर्द्धण सोलसरह अय

नउवाहोम । दिहापयआवमस वज्जिता नम्मा पइम आअवसण्णु । वेठे एकभोयाअन वलीन मध्ये वाठसोयाअन विवे । एत्थव वाहिज्जाण पिसा
 दाव देवाण तिरियमसखिज्जा । इहा दच्चिज्जा पियावदवताना तिरिक्कादिणे असख्याता । सामज्जानयरावाससवसहस्सा ववतित्तिसम्माय । भोण
 ता नगरना मालुगमे वज्जा भोवतामे । तेव भवका जहा आअवमसवसथा तथा माणि जाव पठिऊवा । तेभवम ज्जिम आअनो आअना तिस वज्ज
 वा यावत् प्रतिकप । इत्थं दाहिज्जाण पिमावाव देवाण पज्जाता २ व ठावा यं । इहा दच्चिज्जादिमिना पयावदवता पयोत्ता अपवर्त्ताना ठाम
 ७५ । तिसविमागण्ण पसंपिज्जाभागे । तोम वासज्जाअने असख्यातभागे । तत्थव मइवे दाहिज्जा पिमायादेवा परिवसति । इहा ववो दच्चिज्जा
 पियावदवता वमेजे । मइठवा जहा आहिवा जाय विहरति । मइहिक्क ज्जिम पावना आअनो तिम । आअय इत्थ पिसादेवे पिसायायावा य
 रिवमति । आअनाम पिबायथा इग्ग राआापणे वसेजे । मइज्जिण जाय पमासेयावे । मइहिक्क वावत् प्रभासजित । सण तत्थ तिरियमसखिज्जाण भा
 मज्जानगरावाससयसहस्साण अउरह सामाणियसाहस्सीण पठवत् पाम्मसिक्कीण सपरिवाराण । ते तिक्का तिरिक्काअण असख्याता भोमनगर
 वाससइय साआअमे पुन वाअवजार सामाणिक्क देवतासहित वाअवजार अगमहिणोवे सपरिवारे । तिण परिवारं सत्तण्ण अविद्याण सत्तवत् अणि

य कुमाररायाणो परित्रसन्ति महद्द्विया जहा कालमहाकालाणं एव जहा कालमहाकालाणं दीर्यहं पि दाहिणि
 क्षाण उत्तरिक्षाणय त्रणिया तद्वा सनिद्वियसामाणापि त्रणियद्वा सगहणि गाहा—स्थुणयस्त्रियपणवन्नि
 य इत्थियाद्वयन्नययाइएचैव । कदियमहाकदिय कुह्णयपयगदेवाय । इमे इवा—सनिहियासामाणा धाइविधाए
 यइसीयइत्थियाले इत्तरमहेत्तरोग्रय हवइसुवत्ययिसालेय ॥ १ ॥ हामेहासर्इविय सेएयन्नत्रेतहामहासेए पयगेप
 यगपएयिज नेयद्वास्थ्याणपुह्णीए ॥ २ ॥ कहिण जत्ते ! जोइत्थियाण देवाण पज्झाण २ ठाणा पक्कत्ता ? कहिण

भरता पयारता पयशीधामा ठामकडा । तिसुबिलावरस वसत्थिवावरस पसक्यातमेभागवत् । तत्थय इहव पयवविवा द्वा प
 रित्रसन्ति महत्तुठिया जहा पिमाया जाय निव्वरति । तिजो ववो यमरा ज्यत्तरोज द्यता वसेइ महत्तुठि जिन पियाव तिम विचरै । सविदिय सा
 मानिक इत्थ पयवसेइ । पयवन्निव्वत्तनाररावाया परिव्वसति । सविदित सामानिक ए वत्त पने राजा वसत्ते । महत्तुठिया जहा वास महाकावा
 वव जहा वास महाकावा । महत्तुठि जिनकास महाकावालीपर ववो जत्तरदत्तियकडा । ज्वे जहा पुव्वपि साइविवाय जत्तराविव भाविय
 था । इम जिन सवि इत सामानिक दास यमवो जत्तरसववो कडा । तहा सविदिय सामावियावपि भावियव । तिम सविदित सामानिक भ
 विवा ते वमाने सामानिक जावका । ए सववव गावा । ए सववव गावावविदिय । पयवन्निव्वत्तपयवविदिय इत्थियायमूववाइयावेव । कदियमहाकदि
 य कज्जपयवईवाइया ० १ १ पयववो पयववो ज्ञापवावो भूतवावो नियो जवो महाकवो काज्जवो पतकट ए वेवताना इग्ग कवेइ—इमेदा । सवि
 दिव्वामाविए धादिविधायित्तइवविवाइ इत्तरमहेत्तरविदिय इवत्तुवत्तयावसाय १२ सविदित सामानिक थाता विधाता तिम ज्ञापि ज्ञापियाव ३
 गुर महेत्तर ववे सुवत्थ विवाइ १ । वासेइत्तात्तर विदिय सव्वभवत्तहामहासए पयगेपयगपणिव न्यायवायाणपणवो ० १ १ वास हास्वरति जत्त
 वत्त तिम महासाय पतक पतकापत ० १ १ इत्थपुव्वमे । कविज भत आइत्थियाव द्वाव पत्तताव ठावा प । विहा वेभयवम् न्यातापदेवताना ठा

नृत्रपुणान्देय । अमरन्द्मानन्नदे न्रीमेयतहामहान्नीमे ॥ १ ॥ किन्नरकिपुरिसेखलु सप्युरिसेखलुतहामहा
 पुरिसे । अङ्कणमहाकाए गीयरतिचेग्रगीयजेसे ॥ २ ॥ विहरति कहिण न्तत ! अणवन्निपाण देव्याण ठा
 णा प० । कहिण न्तत ! अणवन्तिथा देवा परियसति गो० ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए रयणामयस्स
 करुस्स जोयणसहस्सयाहस्स उवरि हिठायण जोयणसय वज्जिप्पा मज्जे अठसु जोयणसएसु अत्य
 ण अणवन्तिपाण देयाण तिरियमसखिप्पा नत्रणा वाससयसहस्सा हवतीतिमस्काय तेण जाव पण्ठिया
 एत्यण अणवन्तिथा देयाण ठाणा प० । उयवाएलो समुवाएलो सठाणेणलो तत्यण अणवन्तिथा देवा
 परियसति महिद्विया जहा पिसाया जाव विहरति सन्निहियसामाणा इच्छ दुवे अणवन्तिदा अणवन्ति

तरति मोतकय । जाव गोयत्रसा विहरति याहा । यावत् मोतयय विहरै गाहा—काशेयमहाकासे सर्वपट्टिरूमाचमदेय कमरवतिमाचमदे भीमेय
 तदामहाभीमे ॥ १ ॥ जाव महाकास मूट्टय पतिरूप पूवमद्द अमरपति माचमद्द मोम तिम महाभीमे ८ ॥ १ ॥ किन्नरकिपुरिसेखलु सप्युरिसेखलुतहा
 मगापुरिसे परकायमहाकाए गोयरीचवमोचजेसे ॥ २ ॥ किन्नर किपुरय निचे सत्यपठय तिम महापुरुष पतिजाव महाकाव गोतरति गोतयय १५ ॥ २ ॥
 कश्चिभते पचपविदाव देवाव पज्जता २ व ठा पं । किन्ना केमयवत्तु पनेरा व्यन्तरणा ववताना ठामकप्पा । कश्चिं मते पचवन्तिवादेवा परिवस
 ति । किन्ना कमगवत्तु पनेरा व्यन्तर किन्ना वसे । गोयमा इमीसे रयणप्पन्नाए पठशेण रवणामयसखिप्परस जायवसयस्स वाइक्करम । देगोतम ए रत्त
 प्रमावविशेने रत्तमसवर्वाड यावत्तसक्य जावपणे । उवरि जाव पणुम जायवसयस्स । अणरसा पङ्कगतयाजम खाडीने तेमादि १ ० याअन पवकाय ।
 एतय पविनाच देवाच तिरियमसखिप्पावयरावाचसवसहरसा कश्चित्ति मज्जाय तेच जाव पट्टिया । ममादि इहा पनेरा व्यन्तरदेवता तिरिजा
 पसप्पता भूइरातोपरे नमर वाकेयमा कप्पा तोवेइरे यावत्तु प्रतिए विहरै । एतयच पचवन्तिताच देवाच पज्जता २ व ठाया पं । इहा पनेरा व्य

वननिमित्तं नोके प्रतीतानि तदन्तरेषु विविधशोभितानि यथा तानि तथा पञ्चरात्रं सम्प्रीक्षितमियं यद्विप्लवतमिष्यपञ्चरोम्भीमि
 तवत् तथाहि स्तित किमपि यदु पञ्चरात्रं यस्यादिमयप्रच्छादनविशेषात् बहिष्कृतमत्यन्ताविनष्टायास्तान् शोभते तथा तान्यपि विमाना
 नीति प्रायः तथा मणिकनकाणां सुव्यापनो स्तूपिवा मिसुर यथा तानि मणिकनकस्तूपिवाकानि ततः पूज्यपदाभ्यां स्रजं विनायकसमासः तथापि
 कवितानि यानि शतपञ्चादि पौष्करोक्तानि च द्वारादौ प्रतीकितत्वेन स्थितानि तिलकाश्च निष्पाटिषु पुष्पाणि रत्नमया वा दुर्बद्राहारादिषु
 तेष्वियानि विवक्षितमनपचपुष्करीकतिलकरत्नाश्च पञ्चविधाणि तथा नाममणिसमीप्ति दीपानि रत्नरत्नानि नाममणिसमयदानासकृतानि तथा
 यन्मयदिष्ट सत्त्वानि मनुष्यानि तथा तपनीयं तुल्यविशेष सामान्या रुचिराया वास्तुभायाः प्रकृतं प्रसरो येषु तानि तपनीयरुचिरवास्तुकाग्रस्त

त्रिजययेज्यतीपद्गाच्छुत्ताहच्छुत्तकालिया तुगा गगनतलमहिष्यमाणसिहरा जालतरयणपञ्चरुम्भीलियञ्च
 मणिकणगधून्निगागा वियसियसयपत्तपोद्गरीया तिलगरयणरुचदचिन्ता नानामणिमयदामालिकिया श्रुतो
 धर्हि च स्रहा तयणिजालरुहलवालुया पच्छुक्ता सुहृतासा ससिरीयकवा पासाङ्गया दरसणिजा श्रुजिरुवा

तरेकरो धयनीप्रमा विस्तरोके मयके पञ्च मणिकणकना रत्नना पार्यवारी भोते विनाम अहते वाहे प्ररो रुवाको दिवस्य पञ्चदय तेहनी कर
 तार विवद वैजयन्ती पादमणिकानामे पताकाके तिहरी । कृताः कृतकविद्या तुया मयवतस ममित्तमयापमिहरा जालतर इयपयज्ञद्वि
 दिवद मणिकणपद्मभियाग । छंद जपर कणसदितके जंवा गगनतल स्रवा एहवा जवा गिम्बरके रेहना तथा जालतर पालरा वांमनीकासो म
 निमय सवाच । विदमियसयवत पौद्गरीया तिलगरयणरुचदचिन्ता नायामणिमयदामासविद्या । निवल्या शतपयमरोको भोतके जिहरी तिलकरत्न
 पद्मद्वारा पारे एहवा विनामके जिहरी पनेक पसकृतके मीदि । पताकादिच स्रवा । वाहिर मुकुमाक
 के । तमविमल इलगासुवा पत्तवा मुहृण्णासा ससिरीया मुकुवा पासाङ्गया दरसविम्ला अभिरुवा पडिहवा । तपनीय सानानीपरे मनाहर प्रवर

वनप्रतिष्ठेषु लोके प्रतीतानि तदन्तरेषु विशिष्टक्षोजितानि विविधरत्नानि यथा तानि तथा पञ्चरात्रं सुमीक्षितानि यद्विपुलमिव पञ्चरत्नोन्मीलि-
 तयत् तथादि किल क्षिप्य यत् पञ्चरात्रं यथादिमयप्रव्यादणविशयात् यद्विपुलतमत्यन्ताविमृष्टायत्वात् क्षीयते तथा ताम्यपि विमाना
 नोति प्रायः तथा मन्त्रिकप्रधाना सम्योपनी क्षुपिषा शिखर यथा तानि मन्त्रिकलक्ष्णपिकावानि ततः पूषपदाभ्यां सङ्ग विज्ञापकसुभासः तथापि
 कवितानि यानि प्रत्ययवादि पौरुषरौकानि च द्वारादौ प्रतिकृतित्वेन स्थितानि तिलका यन्निष्पादितेषु पुष्पाणि रत्नमया वा दुर्बद्रादारादिषु
 तैश्चिन्तानि विवक्षितशतपत्रपुष्परीकतिलकरत्नायुषस्त्रिचिन्ता च तथा नाममन्त्रिमयीनि दूर्गानि रत्नकृतानि नाममन्त्रिमयदामाश्लक्ष्णानि तथा
 चक्षुर्यद्विद्यं ज्ञानानि मनुष्यानि तथा तपनीयं सुवचविज्ञाप क्षम्यया रुचिराया वामुखायाः प्रसूतं प्रसूरो येषु तानि तपनीयद्विचरिवारुकाप्रसा

त्रिजययेजयतीपद्मगाच्छस्ताइच्छत्तकलिया तुगा गगनतलमहिंलधमाणसिंहरा जालतरयणपजसुम्मीलियह
 मणिक्कगवूजियागा त्रियसियसयपसुपोरूरीया तिलगरयणरुचवचिसा नानामणिमयदामालिकिया ह्यतो
 द्योह च सरहा तयणिज्जरुइलयालुया पच्छुका सुहकासा ससिरीयकवा पासाईया दरसणिज्जा ह्यन्जिरुवा

तनेकरो धवलोपमा विद्यारोहे सर्वे चन्द्र मन्त्रिकप्रधाना रत्नना पायईकारो भोते विधानं कर्तते दावे प्ररो वसादो दिव्य पद्मद्वय तेजो वर
 मार विजय वैजयंती पाण्डव्यिकानामे पताकाके तिङ्गी । जगताः कल्पविद्या तुगा गगनतल मन्त्रिकप्रधाना मिहारा जालतर एवपञ्चवर्णि
 सिद्धय मन्त्रिकप्रधानाः । ईश्वर ऊपर कवचदितके जंवा यमनतल सयता एववा कवा शिखरके सेरुना तथा जालातर पीकरा वामनोखाजो म
 निमय गवाप । विद्यमियमन्त्रक पीडरोया तिलगरयणरुचवचिसा नाममन्त्रिमयदामाश्लक्ष्णिया । विवक्ष्या प्रत्ययपसरोखो भोतके जिङ्गी तिलकरत्न
 पदपद्मचार दारे एववा विधानके जिङ्गी चनेकमन्त्रिमय पर्वजतके विधानके जिङ्गी चनेक पसङ्गतके मीदि । पताकाविष मन्त्रका । वाहिर मुकमास
 के । तत्रविज्जह इत्यत्रासुवा पयडा मुहण्यासा यदिसरीया मुकवा पासाईया दरसविज्जा अभिकवा पञ्चिठवा । तयोय सामानोपरे मनाइर मतर

विषु प्रसूतायाः प्रजा दीप्तिं स्यात् स्थितानि धवसानि अभ्यद्रुतोत्सृज्यमानानि तथा विविधानां मन्त्रिणवर्गानां या नक्तयो विचित्रा विविधा
या स्थानि यिन्नादि वायुयद्रुतानि विविधमन्त्रिणवर्गानां यिन्नादि वायुयद्रुतानि तथा विविधानां मन्त्रिणवर्गानां या नक्तयो विचित्रा विविधा
अयोन्मय सारसमूषिका वैजयन्तीनामा याः पताका अथवा विजयवर्ति वैजयन्तीनां पाशुपतिवक्त्रा उच्यते तत्प्रधाना वैजयन्ती पताका सा एव
विजयवैजयन्ती पताकाः सप्तविंशतिर्युग्परि स्थितानि सप्तविंशतिः सप्तविंशतिर्युग्परि स्थितानि सप्तविंशतिर्युग्परि स्थितानि सप्तविंशतिर्युग्परि
स्थितानि तथा गवतस्तन यस्तन समुत्तिष्ठन् सप्तविंशतिर्युग्परि स्थितानि सप्तविंशतिर्युग्परि स्थितानि सप्तविंशतिर्युग्परि स्थितानि सप्तविंशतिर्युग्परि

मनः। जोडसिया परिवसति? गो०। हुमीसं रयणप्यन्ताए पुठवीए यङ्गसुमरमणिज्जाउं भूमिनागाउं सप्तगउ
ए जीयणसए उहु उप्पइसा दसुत्तर जीयणसय थाइसं तिरियमसखिज्जे जंइसविसए एत्थण जोडसियाण
देवाण तिरियमसखिज्जा जोडसियविमाणाआससयसहस्सा हवतीतिमस्काय तण विमाणा अरुक्कविठग
सठाणसठिया सप्तफालियामया अरुक्कगयमुसियपहसियाहव विविहमणिक्कणगरयणज्जिचिन्ना वाउरुत्त

मन्त्राः। अदिप भत आदिमिया इवः परिवसति। विन हेमसवन् ज्वातिपोववता वमहे। गायमा इमोसरयवप्यमाएपठोए वससमरमणिज्जाया भूमि
भावाया सप्तगउजायवमपवठठ उपरत्ता। हेमोतम ए रत्तगमभाइचिन्नाको ववी रमपाव भूमिभागाहे तेवठको सानसे मेज्जायन अवाहे। दमन
रत्तायवमपव वमहे तिरियमसखिज्जे आइसविसए व। ते तिक्का १। याङ्गममणिक्क विक्का पयप्प्याता ज्वातिपोना कासावक्का। एत्थण ज्वाइसियाए
देवाहे तिरियमसखिज्जा आदिमियदिमाणायाः सयसहस्सा ववतितिमस्काय। इव ज्वातिपोववता तिरवः। अरुक्कगयमुसियपहसियाहव ज्वातिपोना विमान जाखागमे
तावेवरे कप्पा। तण विमाणा अरुक्कगयमुसियपहसियाहव सवव विववमया। तेवठको विमान पईकोठ सय्वाण पाळतहे सवविठक रत्तमसवहे तवा। य
अरुक्कगयमुसियपहसियाहव विववमवि कवसरवण मतिचिन्ना बाधापुटविज्जायवमवतोपकाया। पासोक्क विनिगत मवर सवको विमिसवपीहे दोरित

मुमुक्षुते येवा ते प्रत्येकं लनाभाकुप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः विमुक्तं प्रकटितं चतुस्रस्य स्यमुमुक्षुते चतुस्रस्य लोचनं खलनाभाकितप्रकटितं चतुस्रस्य मयमयपुलं
 पङ्कसपङ्कसगतं नचनस्य पङ्कसकारं तारकस्य तारकाकारमिति । जेयान्तिमन्त्रे चतुस्रबीतिविमानस्यकानि चतुस्रबीतिविमानस्यकानि चतुस्रबीतिविमानस्यकानि चतुस्रबीतिविमानस्यकानि
 तितिविमानाभीति ॥ यन्तीचपथायोसा चारसचप चतुरोसपसङ्कसाइत्यादि ॥ यस्याभीलनेन परिप्रावनीयानि ॥ तेन भिगमनिहियेत्यादि ॥ योपमदेवा
 यमरूपप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ ज्ञानदेवामिद्विरूपप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः चतुस्रकारदेवा चतुस्रकारप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ साहेत्रदेवाः चिह्नरूपप्रकटितम
 मुमुक्षाः ॥ ज्ञानदेवलोकाः चतुस्रकारप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकदेवा चतुस्रकारप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः
 मयपतिमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः
 मुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः
 मुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः ॥ सातकप्रकटितचिह्नमुमुक्षाः

यचिधमउना महिद्विया जाधप्यनासेमाणा तेन तस्य साण २ विमाणावाससयसहस्साण साण २ सामाणि
 यसाहस्सीण साण २ अग्गममहिसीण सपरियाराण साण २ परिखाण साण २ ध्यणियाण साण २ ध्यणि

एतत्ते यमनकस सद्यन सब ते जडिना सोमाय चन्द्रो चन्द्रोचन्द्रमा मुमुक्षुचिह्नो मङ्गलिक यावत् प्रमादकित त । तेन तत्त साहं विमाणावाससयस
 वरसाहं । तिहा पाप पापवेदिमाने साकागमेकरो । साह २ सामाविदसाइलीक । पाप पापय सामानिकसययेकरो । साह २ यमनमहिसीहं सय
 रियासाहं । पाप पापको यममहिसेकरो सपरियारे । साह २ परिखानं साह २ यमियाइवद ॥ साह २ पावरकसदयसाइली
 न । पाप पापये परवदासहित पापपापको यमोकेकरो पाप पापको यमोकाधिपते तिचेकहित पाप पापये पावरसयवदे सइयेकरो । यमोसिय
 मयुहं जावडियाच दगाचय देमोदय भाइरेक लान निवरति । यमरा यमो ग्याविपोमा देवताना इवोना अधिपतिपथा यावत् विवरके । चंदमसरो

टानि तथा सुसरपशानि सुजरपशानि वा शीर्षं प्राप्नुवत् यावत् बहस्सईर्षंवा । एहस्पतिर्षधूयधुक्कगमैयरापुपूमवेतुधुर्वांगारथाः कथंमूला
 इत्याह-तप्ततपनीयकनक्ययो इयत्रकचर्कोः तथा ये यद्वा उक्तप्रतिरिक्ता ज्योतिषि कर्मतिष्यके चारं चरति केतवा य च गतिरतिक्ता य चाद्या
 रियद्यतिविषया नक्षत्रा दक्षयका को सर्वेपि मागासस्थानसंस्थिता य चक्षुष्यातप्ततपनीयकनकचर्कोः तारकाः पञ्चचर्कोः एते च सर्वेपि स्थितस्तद्वया
 चवस्थिततेजोत्तरपाका क्षया य चारिच द्याररता को अविशानमनश्चतस्रतिका क्षया सर्वेपि प्रत्यक्ष नामाकन का २ नामाकन प्रकटित चित्र

पमिक्रया एत्यण ओहसियाण पज्जसा २ ण ठाणा प०, तिसुत्रिओगस्स अस्सखेऊहज्जागे तत्थण बह्वे
 जोडसिया देवा परियसति त०-यहस्सहचदासूरासुक्कासणिक्कराराऊधूमकेतुधुधाअ्युगारगा तप्ततर्वाणि
 ऊक्कणगयन्ता जेगहा ओहसमि चार चरति केत्तूयगतिरहया अथावीसहविहाय नस्सक्का देवयगणा ना
 णासठाणसंठियाठंय पचवन्ताठं तारयाउ उंथियछेस्साचारिणो अविस्साममऊलगह पसेय णामकपगठि

पमगतसव स्वमहै धसीकवे सुहपददता देववावाण्य पमिक्रय समुक्क प्रतिक्रय । यज्जं काइसियाच द्वागं पज्जसाच ठा पं । इहा व्यातिपौना प
 र्वाणा पपवर्वाध्माणा ठामकका । तिसकावसु पसविखइमाये । तोन दोवकाकने पसववातमेमाणे दुव । तत्तचवहवे काइसिया देवा परिवसति त ।
 तिहा बर्वाज्जीतिवोदेस्ता वरुहै तकवेहे । बहकाइ चदासूरा सबा सविअरराऊ धूमकक मुहा अगारका तप्ततर्वाणि अचमवसाभा । उहकमति चद्र
 नू मुक्क मनेयर राङ्ग धूमकतु वच मगव वस केहवाहै तात तपनीय कनकचर्को । केववहा केवसदा चारवरति अइथाः अगयइया । अ गइ
 व्यातिपौचार वासहै गतिचरो सखमानेहै एववा । चद्रुवोसइविहाय नक्कस देववावाणा नाचासठाःअमठियावा । २८ नचच पाविसेवताभा पाविसेमू
 इ पाकार पनेकसंस्थितहे । पंचइकाया तारकाया तेवससचारिण । ताया पचवचर्को अविस्सतये तका ते चाररतये । पाविअामासकस मरपस्तेववा
 मविय पमठिवविमसकडा मइउंठया आण पमासेमाचा । ते विसामाविना मोहवाजीभति पिरता प्रत्यक्षे १ क्षनामादित प्रकट मुक्कट विचवहे केहने

णिज्जातु नूनिजागातु उहु चदिमसूरियगहनकस्ताराकथाण थल्लइ जोयणसयाइ यज्जइ जोयणसहस्सा
 इ यज्जगानु जोयणकोफ्ठीतु यज्जगातु जोयणकोफ्ठीकोतु उहु दूर उपपइसा एत्यण सोहम्मीसाणसणकु
 मारमाहिदवन्नलोगउतगमहासुक्कसहस्सारध्याणयपाणयध्याणसुसुयगोत्रज्जणुसरेसु तत्य एत्यण येमाणि
 याण देवाण धउरासीधिमाणसयसहस्सा सभाणउर्द्धन्नवेसहस्सातु तवीस विमाणा हवतीतिमस्काय तेण वि
 माणा सहरयणामया धुत्या सरहा लठा घठा मठा नीरया निम्मला निप्पका निक्ककण्ठकाया सप्यहा
 सच्चिरीया सउज्जीया पासादीया दरिसणिज्जा धुनिरुया पणिरुवा इत्यण वेमाणियाण देवाण पज्जत्ताप
 ज्ञत्ताण ठाणा प० तिसुवि लोगस्स धुसस्सेज्जइनागे तत्यण थहवे वेमाणिया देवा परिवसति स०-सांइ

दूर नवराभा । धनी वाज्जननी काडाबाही जया जयाही जाव । एतत्ते धादुष्ठीयाच सचकुमार सोइदे बभसाव वातग महासुद्धम सहस्मार पावस
 पावस पारव पवस मविज्ज पवुत्तरम । इही भीषम रगान सनत्तकार माकइ मज्झिकाक धातक महाभुक्त सङ्कार भानत मापत पारव पवत्त मे
 ववत्त ८ पवुत्तर १ । एतत्त वमाचियाक दवाच चउरासीतिविमाणायाससवसङ्का सतापववसत्तातिवोस विमाणाववतिमत्ताय । तिही वेमा
 निज्जदवताभा दध सापविमान उपर मताकइकार पन वसे ते वीस ०००ही विमाननीसक्या कइले वातरागे कइया । तवविमाणा सवस्ववामया ।
 तेविमान सव रत्नमयत्ते । पत्ता सवदा पट्टामइ मोरया निष्पका निप्पका निक्कसङ्काया सपमा सच्चिरीया सउज्जाया पासाइवा दस्सविज्जा भभि
 कवा पडिक्का । भूज्ज पठाया मठाया मारका निमज्ज नि पट्ट कवरानो प्राति नथो प्रभासङ्कित सुज्जीक उद्यातसङ्कित मनममयकारी जाववायाध
 पभिरुप प्रतिरुप । एतत्त वेमाचियाण दवाच पवत्ताच २ ठा प । इही वेमानिकदव पवीप्ता थपयीत्ताना ठास कइया । तिसुविधायक पसवि
 त्तराभाते । भीम वाससाकन सउज्जातसभाग । तत्यण सङ्ग वेमाचिया देवाच परिवसति तं० । तिही धनी वेमानिकदेवता वसेल्ले । सादुष्ठीयाच स

याहिचंद्रं साण २ स्यायरक्कदेधसाहस्सीण स्यूनोसिचयङ्गण जोहसियाण देवाणय देवीणय स्याहेवस्स जाय
 यिहरति चदिमसूरियाय एत्थ दुवे जोहसिदा जोहसियरायाणो परियसति महिहिंया जाय पन्नासमाणा से
 ण तत्थ साण २ जोहसियविमाणायाससयसहस्साण चउरह्हा सामाणियसाहस्सीण चउरह्हा स्यग्गमहिंसीण
 सपरिवाराण तिरह्हा परिसाण सत्तरह्हा स्यणियाण सत्तरह्हा स्यणियाहिचंद्रं सौलसरह्हा स्यायरक्कदेवसाहस्सी
 ण जोहसियाण देवाणय देवीणय स्याहेवस्स जाय यिहरति । कहिण जते ! वेमाणियाण देवाण पक्कप्पा २
 ण ठाणा' प० ? कहिण जत ! वेमाणियादेवा परियसति ? गो० ! इमीसे रयणप्पज्जाए पुठवीए बज्जसमरम

याय इत्थदे आहसिदा आहसिरायाओ परिचसंति । चम्पसा मूठ पद्याय इहा ज्वातिदीवेवतारो राजपवो बसेहे । मइहठिवा जाय पभासेमाया ।
 मइहठिवा जायत्तु ममासहितयका । तथ तत्थसाच आहसिदविमाकावास मयसहरसाच । ते तिहा पापका ज्वातियोनाविमान साखागमेवरो । चठ
 रई सामाविदवाहरसीच चउरह्हा स्यमहिंसीच सपरिवाराय तिरह्हापरिवाले सतत्तय एविवाच सतत्तय एविवाचिद्वारं च सासतत्तय पादयत्तय दे
 वसाहरवीच पसेविचवत्तय जायसिदाच देवाचणे देवीचय पाहेवच जाय विहरति । चार चम्पमहिंसीवेवरो सपरिवारो भोतिपरियदयिक्करो ० चमो
 वेवरो ० चमोधिपयिक्करो सोलेउकार कामरसदेववरो चमोरावका ज्वातियोमा देव देवीमा अविपतिपसे यावत् विचरे । अविपभते वेमाविद्याच
 पक्कप्पा २ चं ठा प । विहा देमयक्कन् वेमातिक पवो ता तपवोप्पाना ठामक्कप्पा । अविप भते वेमाविद्यादा परियसति । विहा देमयक्कन् विमान
 वाओ बसेहे । मावमा इमीसे रयणप्पमाए पुठवीए बज्जसमरमक्कप्पा ममिभागाया ठठिठि चदम सूरय गइचवणउत्तताराकवाच । वेमीतम प रज
 ममाये ववो समारंमवोच ममिभागो छवो चम्प मूठ गइचव मयच ताराकप ववो योवज्जा सेवका । चक्कहि योयचसहरसा चक्कहि जायचयय
 हरसा चेप्पहि जायचकोवोपो । चवकाचनना' सेवका चवो याचननी यतउत्तय था. ये चवोवाचननो काओ । चउगोपा जायचकोवोकोवोपो चउउ

ममीसाणमणकुमारमाहेदयज्ञलोगलतगमहासुक्तासहस्रारश्चाणयपाणयश्चरुयगेवज्जागाणुत्तरोववाढया
 देया तण मियमाहिसयराहसीहवगलदहुइयगयवइनुयगखगउसजकविणिमपागक्रियचिधमउळा पसढिल
 वरमउन्नतिरीन्धयारिणो वरकुळलुज्जोइयाणणा मउळदिप्तिसिरया रत्ताच्चा पउमपद्दगोरा ज्ञासया सुहयस्सग
 धक्तासा उप्तमवउच्चिणो पथरयत्यगधमत्ताणुलेवणधरा मोहिहिया महज्जुइया महायसा महासुल्ला महानुच्चा
 गा महासोक्का हाराधिराहययच्छा कळगत्तुक्रिययजियनुया स्यगदकुळलमठगळतळकस्सपीठयारी विचित्र

चंक्रमार माहेडि वसनाम जातम महासक सहस्रार पावय पावय पारव पवुवा नवळमाणुत्तरावाःया वना । सोधम प्रथम सनळुमारमा हेरु ममा
 काळ जातक महासक सहस्रार पानत पावत पारव पवुवा नवळमाणुत्तरावाःया वना । तेंच मिग मडिम बराड खीड खगल वादुर ड
 वमय भवम पव वमम कविडि पवडिड विंगडकडा । तेकना विड कडेले - सुग मडिव बराड खीड खगल दुरीर काळ गत्र मत्रग खड्डा सुपम खाकडा
 य १२ दशकावना प्रथान विड । सडिकचरमकड तिरोडकारवा बरसुडल उळ्ळायापायवा । उलवना प्रधानमुळट तिरोडमाड पाभरप धरया कुडलेव
 रो वयात जेवना । मडडदित्तिरवारनाभा वठमण्डुमळामारा मेवा सडकण गध फासा । मुळटकरो मखकरता पळुनीपरे गोरदेड जेत ग्रभव गवस
 य । जलमविडविचपांयवरवत्तगध मळासकारव । कलमकडो विडवना जेवनी पवरवळ गधमाळाविसेपनना धरवडार । मडडुठिया मळायासा मळाण
 माया मळासका डारविराववता कडयतुडिचर्मभिरमवा । मडडिव मळावगवळ मळाभागी मळासखी कोरेकरो विराळमान कोयी कडा बडारखा
 तिचेकरो दळ्याहे मुळ । पयसवडसमडुगडयीठपुरो विविजित्ताभएव विविजितासा मळल कळावयपवर वळ परविण । पंगददांडामेरेवळुडल तिचे
 करो कवपाठवारता विविच पाभरे वरागे विविजितासा मुळट कळावभाकारव वळ पडिराहे । कळाभग पवरमळावसेववा भासरवीदोपळव व
 पमासधरा । कवपाठवारो विसेपनकोथडे मासुरेदोप्यमानगेदो प्रसवमासा धारीहे । दिसेव गधेव दिगेवे वखेवं दिगेव पायेवं दिगेव सवयवेव

ने शुसखेजातु जीयणकोकीनीतु शुसखेजातु जीयणकोकीनीतु शुसखेजातु जीयण
 कोकीनीतु परिक्खेयेण सवुरयणामए सुत्थे जाय पपिकुवे तत्थण सोहम्मगदेवाण यत्थीस विमाणावास
 सयसहस्सा इयतीतिमस्काय तेण विमाणा सवुरयणमया सुत्था जाव पणिकुवा तसिण विमाणाण व
 ज्जमज्जेदंसजाए पचयकसएया प० त-शुसीगयकसए सतथन्नयकसए चपगवकसए चूययकसए मज्जे तत्थ
 सोहम्मयकसए तेण वकसया सवुरयणामया सुत्था जाय पणिकुवा, एत्थण सोहम्मगदेवाण पज्जाप्ता २ ण
 ठाणा प०, तिसुयि छोगस्स शुसखेजाइजागे तत्थण यइवे सोहम्मगदेवा परिवसति महिद्धिया जाव पन्ना
 संमाणा तण तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साण साण २ शुग्गमहिंसीण साण २ सामाणियसाहस्सी

काठो वायपवे विबुधपवे । पसखिळापा जायवसाठाकाठोपा परिवेयेवेच प । पसखातावाजनो काठाकाठो परिवेये वोप्पर । सगरववाभए
 पत्ते जाव पणिकुवे । एत रत्तमयवे निमल काठवे प्रतिकय । तत्थ च साइययदेवाचं वत्तोच विमाणावाससयसहस्साइवर्तितिमल्हाय । तिइवां सोपमना
 मदेवताना १२ सायविमान तोरीकरे क्ख्वा । तेचविमाच सगरवकामडा पत्ता जाव पणिकुवा । ते विमाच सवरत्तमयवे निमल यावत् प्रतिकय ।
 वेच विमाचाचं वचमव्वदेवमाए पंचवडसिवा पं । ते विमानने ववी मय्येदेवमाये माटा पांच वतयकविमान ववेवे—पसागवडेरए सुयवच व चप
 पद ० बुव व मय्ये इत्थ सोइक्ख ३ । पयावकतयक सत्तएवं व वत्तव व पूनवतयक विवे इहां सोपमावतयक १ । तत्थ वसिधिया सवुरयणामया
 पत्ता जाव पणिकुवा । ते वतयकविमान सुई रत्तमय निमल यावत् तेइने तत्थ वीजोपुजवो । एत्थ च साइयय देवाच पज्जाप्ता २ ठाणा प । इहां
 सोपमवदवताना पर्याता पययाताना ठामक्ख्वा । तिसुविवायय पसखिळाइभाने । तोन वाडवाकने पसवधातमेभागे । तत्थ च वइवे साइयगदेवाच
 परिवर्चति । तिइवा ववां सोपमदेवता ववेवे । मइवडिया जाव पमासेमावे । मइवडिवा वावत् प्रभाववित । तत्थ तत्थ साच २ विमाणावाससयसहस्सा

देवाण देवीणय ध्याहेयञ्च पोरैयञ्च सामिह्नं न्नाहिह्नं महत्तरगतं ध्याणाईसरसेणावञ्चं कारेमाणा पालेमाणा
महयाह्वयनहृगीयवाइयततीतलतालतुक्रियधणमुइगपहुप्पयाइयरेण दिव्वाइ न्नागन्नोगाइ नुजमाणे विह
रति । कट्ठिण न्न ! सोहम्मगदेयाण पञ्जप्तापज्झाण ठाणा प० कट्ठिण न्नेतं ! सोहम्मगदेवा परिवसति ०
गो० । जयुद्धीवे २ मदरस्स पड्डयस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्पन्नाए पुठवीए यज्जसमरमाणेज्जाते न्नामिन्ना
गाते उहु चदिमसूरियगहगणनस्कत्ताराण यज्झणि ज्ञोयणसयाइ यज्झणि ज्ञोयणसहस्साइ यज्झणि ज्ञोयण
सयसहस्साइ यज्जगाते ज्ञोयणकोलीते यज्जगाते ज्ञोयणकोलीते उहु दूर उप्पट्ठाए एत्थण सोहम्मे ना
म कम्मे पत्तते पातीणपत्तीणायते उदीणदाहिणाविच्छिन्ने एत्थचवसठाणसठिए धम्मिमाहिन्नासरासिवन्ता

मंटाभृत्य मोत बाजिब तनो तस तास बंटत बरबसुठ्ठ पपट बाजिबने मयेबरो दिख मागवतासका बिबरने । कडिबभते साइममदबाब पळता २
बंठाबाप । बिडां हेमगबन् सोचसुवतामा परीता अपयगितामा परीता अपयगितामा ठामबळा । कडिबभते साइमगदेवा परिकसात । बिडां हेमगबन् सोपमदेवा म
नेहे । मायमा अकुहीर २ मंदरसुपमसुप टाडिनेब । कुंणीतम अकुहीरपनामा बीपनेविपे मेवपवत दखिबपासे । हमोसे रयबपभाय पठोए मड
मरमबिज्यापा भूमिमाभा । इ रत्नगभापुपिबीबीनी वनी समारमयोब भूमिमायकी अबा । वदामूरिबापोमगवबळतताराकबाब । बन्द सुय
गुहमय मयब तारा रुपबी । बडपि आवबमयाइ आव बडुमोपा आवबकाडाकोपा ठठठूर छपडासा । माळनमासय आंसगे यावत् बंधीयाळननी
काडाकोछबा जपातो जे । एतकसाइममामेबयेप० । तिडी सोवमनामे बळबळा । पाइब पडोबाइ उ उदायदादिबिबिज्य पडसठाव सठिमा ।
पूइ पयिमकीया उत्तर दखिब पिउछये पडबभूरस्य्याने मंजिपतये । पडोमाको मायिदासिबबामे । बिबरवनीयपो सडितये मासुरासेने पडम तजसरी
गुडे । पयपिज्यापा आवबकाडापा पयपिज्यापा आवबकाडाकोपा आवबकाडामेब । पयज्याताबाळननी कापो पयज्याताबाळननी काबा

मनुस्मारकद्वये-सुपक्का सुपदिदिशति ॥ सुपमाणाः पक्षाः पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपाः पाथ्या यस्मिन् दूरसु स्थिते तत्सुपक्ष समामस्य समान्तिषु चेति स
मानस्य सुमाणाः ॥ सुपदिदिशति ॥ सुमाणाः प्रतिदिक्षो यत्र तत्सुपक्षतिदिक् सामानिकस्य द्वाकगाथा-चउरासीइत्यादि ० श्रीभूमिद्वस्य पतुर
श्रीतिशानातिबधुस्त्राणि वृक्षामेद्वस्य शीतिः सगरकुमारस्य द्वासप्ततिः भार्गवद्वराजस्य सप्ततिः ब्रह्मलोकेद्वस्य पतिः शतकेद्वस्य पञ्चाशत् महा
भुर्जेद्वस्य चत्वारिंशत् सइत्यारैद्वस्य त्रिंशत् ज्ञानतमाशतेद्वस्य दशसामानिकसइत्यादि ॥ यत्रतसुकायातिदशमात्माइति दुरवभाषा स्वता विने

कुलुडधित्तिहिज्जमागळे महिहिणु जात्र पन्नामेमाणे सेण तस्य वत्तीसाए त्रिमाणवाससयसहस्साण चउरा
सीए सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तावत्तीसाण चउरइ हागपालाण अठरइह अगमहिंसीण सपरि
याराण तिरइ परिसाण सप्तइह अणियाण सप्तइह अणियाहिंयडण चउरइ चउरासीण अयाररकुंदंयसाह
स्सीण अन्नसि च वट्ठ १ सोहम्पकम्पयासीण येमाणियाण देयाणय दधीणय अहिंयच्च पारियच्च कुम्भमाणे

बाधसमकम्पादिभारं । मया पाकमाचन दक्षतामा बल्लोमा दनिचारं शाखाधिपति इह शाखविमाननाथको । ऐरावतवाङ्मनेइ परववरत्न
धर । ऐरावत वाङ्मने जडन मरेद्र रजविभा मगनपर निमलकसाचारी । वासायभाकमठ मवकमयावित्तर्षवत् कुडम विषडिक्कमावगत । वाया
दे कड मट्ट नवा कमनावाइ विविच कण्ठकरो विरुपमान मल्लसकले जे इण्डना । मडिउठिठ जाव पभासमाव । मडिउठ वावत् सुवत्तरावा वर
ना । तस्य वत्तीसाए दिमावाधामममकडसाव चउरासी ० सामाविय सावरमोण तावत्तीसाए तावत्तीसाण चउरइ हागपालाण चउरइ अममहिंसाव
मपरिधाराव । तिहा इर सापदिमानना खासी ८४ मडय सामानिकेकरो वायविमक पुत्रमो कदयतासे करा ४ साकपाले ८ भगुमाइपीयेकरो सपरि
वारे । तिचइ परिमाणं सभक्क पविश्याव सप्तच पविश्याइयाव । तान परपदेये ० पनावकरा ० पनोकाधिपतेकरो । चउरइ चउरामाव पायरक्क
उरसाइरइ व पणामिइ इण्ड साइमकम्पयासीव यमावियाव टयावट टोवज पाडिक्क जाव १२४२१ । पारिानने ८४ इमार य मरधमेकरो अने

क्नु इति ॥ द्युतं क्तुमां प्रतिमानाम् प्रियवृद्धिद्वीपाक्षं अमळीपासुकपण्डमप्रतिमाकूपारं धा क्षातिर्भोगेष्टिद्विषायेत्या यस्या श्रीश्रुतकृतः ॥ सहस्रसंख्ये
 इति ॥ सहस्रमष्टौ यस्या श्री सहस्राद्याः इद्वस्य हि बिभर्त्तमिच्छां पण्ड्यतामि सति तदीयानां बाह्या मिद्वप्रयोगमव्यापृततया इंद्रसर्ववित्त्वम विव
 सवान् धइत्यादित्वानिद्वस्य ॥ मययइति ॥ मयामद्वामेधा स्ते यस्य वष्टे सृति समपवान् तथा पाक्षो नाम वसवान् रिपुः स क्षिप्यत निराक्रियते येन सः
 पाक्यामानः ॥ अरययवत्तपरे ॥ अरजांसि रजोरोहितामि स्वाश्वतथा रजराशि वज्राणि चारयतीति रजवरखधरः ॥ आसइयमासमठकेइति ॥ मासा
 य मुकुन्ध्य मासामुकुट मासगित माविह मासामुकुट येन स कास्यंगतमासामुकुटं ॥ मयइमवासचित्तवत्तकुललिविलिङ्गमाशुगठं ॥ नवनिव
 सत्युत्कटवाकवत्तया मत्यग्रमिव हेन यत्र त मयइमनी मयहेमज्या वाकचित्ताज्यां च वसाज्यां कुल्लज्यां विलिङ्गमानां गङ्गौ यस्य स तथा स

ण एव जहेय तृहियाण तहेय एतेसिपि ज्ञाणियसु जाव स्यायरस्कदेयसाहस्सीण स्यन्त्वसि ष यन्नण सोह
म्मगकप्पवासीण वेमाणियाण देयाण देवीणय स्याहेयसु पोरेयसु जाव विहरति । सक्ते इत्य देविदे देव
राया परिवसइ वज्जापाणी पुरंदरे सयक्काउ सहस्सस्के मघव पाकसासणे दाहिणहुलोगाहिंवईयस्सीसियिमा
णवाससयसहस्साहियइ एरायणवाहणे सुंरिदे स्यस्यवरयत्थधरे स्यालइयमालमउळे नवहेमचारुचिह्नचचल

न बाधे र सामाद्विपसाहस्योच एव अज्ञेय आक्षिप्यार्थ तदेव एवलिपि भावि । ते इक्षी आपथापना विमानना साहसमे क्षी आपथापना सामानि
अनन्येक्षरी रम त्रिम पावनविषे क्षो तिम सय इक्षी क्षिवा । आब आरकलद्वराहस्योच पक्षोसिपक्षूच साहस्यगल्लदासोय मेमाद्विपय द्वाबा
प दशोपय पात्रेव पात्रेव आव विहरति । यावत् पात्रेवगना सङ्ग्य यमराधना सौभमलक्षणाबासो मेमानिक पनेव देवता देवता अधिपतिपने
यावत् विहरे । सञ्जे इत्य दक्षिदे देवरायाथा परिदक्षति । यत्र तिङ्ग देवताया राजादेवेगद्व बसोच बलयापोपुरक्षरे सबल्लसङ्गल्ले । यत्नेक्षरी पुरक्षर य
मेदम्बरविदारे ते यतमत्तु क्षार्मिञ्जेसंभने सोबार प्रतिमा भूत् सङ्गमेनभयो सबल्ल । जलन पात्रेवगनादिनद्व यत्नेसविमाया

मनुष्यारब्धये-मुपपन्नं सुपुत्रिदिसति ॥ सुमाभाः पक्षाः पूर्यावरदृष्टिबोहरक्षणाः पोथा यरितम् दूरम् त्यसमे तत्सपक्षं सुमामस्य पमादिपु बेतिस
मामस्य मुजायः ॥ सुपुत्रिदिसति ॥ सुमाभाः प्रोतिद्विबो यत्र तत्सपक्षिदिक् सामानिकसपक्षायगाथा-बधरासीइत्यादि ॥ सीचर्मद्वस्य चतुर
क्षीतिशामानिकसपक्षायि इक्षान्द्वस्य शीतिः सनरकुमारस्य द्वासपतिः माध्वेद्वस्य सपतिः प्रक्षालोर्द्वस्य पतिः सातर्क्षेद्वस्य पक्षाक्षत मध्या
मूर्क्षेद्वस्य चत्वारिंशत् सप्तत्यार्षेद्वस्य त्रिंशत् आनतमाक्षेद्वस्य दक्षसामानिकसपक्षायि ॥ अतस्तथायातिवक्रनाकाइति दुरवभाषा सता विने

कुल्लथेयलिहिल्लमाणगन्ते महिहिण जात्र पन्नासमाणे सेण तस्य वप्पेसीसाए त्रिमाणवाससयसहन्साण चउरा
सीए सामाणियसाहस्सीण तावप्पेसीसाए तावप्पेसीसगण चउरह्ण लागपाठाण अउरह्ण अगमहिंसीण सपरि
याराण तिरह्ण परिसाण सप्पयह्ण अणियाण सप्पयह्ण अगियाहिण्डण चउरह्ण चउरासीण अ्यायरक्केद्वसाह
स्सीण अुत्तसि थ अह्ण ७ सीहम्पफप्पयासीण येमाणियाण देयाणय दयीणय अ्याहेवच्च पारियच्च कुञ्जमाणे

वाससवसहसाहिवरं । मय १ पाकमासम वृत्ताना वसलोभा वचिचार्द साकाधिवति ३२ साखविमानमाधयो । ऐरावतवाइवेमेरेव परववदवत्
भर । ऐरावत वाइवेमेरेव जरेद्व रत्रविना गमनपर निमनवस्तधरो । वासइयमाससहण नववमवाइविल्लेवण कउम विसिद्धिमावगव । काव्य
ये कउ महुट मवा इमनावाइ विविध कुञ्जवरो विसपमान गमससमे जे इकना । मविउतठ जाव पमासमाव । मवडिण यावत् सवउवभाभा ॥
ता । दत्त वनीसाव विमावावामनवसहवराव चउरासीण सामाविय साहवमीण तावप्पेसाए तावप्पेसीसगण चउरह्ण लागपाठाण चउरह्ण चउरासीण
सपरिवाराण । तिहां ३२ साखविमानना सामी ८४ मवय सामानिकेवरो आयपियव पूवनीकद्वताये वरो ४ साकपाणे ८ चगुमाइपीयेवरो सपरि
भारे । तिहां परिनावं सभपड अविगाव सतव अविवाइवइव । तान परपदाये ० पनाकवरा ० पनाकाविपतेवरो । चउरह्ण चउरासाय पायरका
५५साववव व पक्कमिप वइव साइअक्कपासोव यमाणियाण दवावव टोवव अ्याहेवज जाव विहरइ । चारिणिने ८४ वजार म मरघेमेवरो चने

फलतु इति ॥ इतं कतूना प्रतिमानान् प्रियहविष्ठोयाका अभवोपासकपण्यमप्रतिमाकृपाका वा कातिकभोतिप्रथायेषया यस्या श्रीप्रतकतु ॥ सदृशसक्यो
इति ॥ सदृशमस्यां यस्या श्री सदृशत्वाः ॥ इत्यस्य हि क्लिप्तमंत्रिका पण्यहातानि सति तदीयार्थां चास्या भिक्षुप्रयोगनव्यायुततया इत्यस्यचित्तन विव
दधात् पण्यहातानि इत्य ॥ मपयइति ॥ मपयमाहासेया सो यस्य यद्यो सीति समपयान् तथा याको नाम वलवान् रिपुः ॥ स धियायत निराकियते यन सः
पावगा मण ॥ परययदरज्यपदे ॥ परजांसि रजोरहितानि स्वप्यतया अवरारि वकादि चारयतीति र्भवरवकापरः ॥ बालइयमालमष्टइति ॥ माला
॥ मुकुन्द मालामुकुट नासंगित माविह मालायुकुट येन स चाखानेतमालामुकुटं ॥ भवइमवासि तच वसतु कलविलिङ्गमायम ॥ भवनिव
पत्युक्तवाहइयवपा मत्यपमिय इम यव त मवइमनी भवइमया वासविवाप्या र्भवाप्या कुवलाप्या विलिख्यमानो गहो यस्य स तथा स

ण एय जहेय ठहियाण तहेय एतेसिपि जाणियसु जाव छापररक्केदयसाहस्सीण अत्तंसि च यत्तण सीह
 म्मगकप्पवासीण वेमाणियाण देयाण देवीणय आहेयसु पोरेयसु जाव विहरति । सक्के इत्थ देविदे देव
 राया परियसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्खउ सहरसक्के मघव पाकसासणे दाहिणहुलोगाहिक्खइयहीसियिमा
 णवाससयसइस्साहिदइ एरायणयाहणे सुरेदे अस्सवरयत्थघरे आलइयमालमउत्ते नवेहेमचारिचिसुचखल

पं नाच २ सामाविद्यसाहस्योच एवं अहेव पात्रिवाच तत्रैव एतस्मिन् नाचि । ते इहो आपपापका विमानना साध्यमे करो आपपापका सामानि
अमहेश्वरो हस तिम आपनविपै अहो तिम एव इहो अहिया । आव आदरकहेतसाहस्योच अहेसिंहकपूक साहस्यगकवयासोच वेसाविकाच सेवाच
स दरोचव पाहेवच पोरिवच आव विहरति । याचतु पाज्जरकना सङ्कच अजेराधका सोपमबलनाकाहो वेसाभिक अनेक देवता देवोना अघिपतिपे
यावत दिवरे । महे इत्य दधिदे देवराकाचो परिरचति । याक तिहो देवतारा राजादेवेन्द्र वसेक बळपाचो पुंरदेरे अयकअसकअल्ले । अयेकरो पुरवर स
मुरेवमहरविदार ते यातअतु कार्तिचसेठभे सोवार प्रतिमा पूरं सङ्कचमेवचको अरुनाच । मयव पाकथाचुचे एाङ्कचकुठकागादिचर अतोअविनाचर

ननुभुमारकमे-सुमन्त्र सपदिदिशंति ॥ सुमानाः पक्षाः पूर्वोपरदक्षिणोत्तररूपाः पक्ष्या यस्मिन् दूरमु त्पतन्ते तत्सुपक्ष सुमानस्य पक्षादिषु वेति स मानस्य सुनायः ॥ सपदिदिशंति न सुमानाः ॥ प्रतिदिक्षो विदिक्षो यत्र तत्सुपक्षिदिक्षु सामानिकस्य द्वावपक्षा-उत्तरासीइत्यादि ॥ सोमैन्द्रस्य पक्षुर द्योतिसामानिकसदस्यानि द्वाभार्नेन्द्रस्य शीतिः सुभद्रुमारस्य द्वाधुसतिः माहेन्द्रद्वयराजस्य सुसतिः ब्रह्मलोकेन्द्रस्य पक्षिः सातर्केन्द्रस्य पक्षाक्षत भद्रा द्रुक्केन्द्रस्य बल्यारिणत् सद्व्यारैन्द्रस्य विंशत् ज्ञानतमावतद्रस्य द्वासामानिकसदस्यानि ॥ अथतस्य द्वाविंशद्वाभाक्षा इति दुरवध्याचा क्षता विने

कुलुञ्जिधिलिङ्गमागच्छे महिहिण् जाय पञ्चममाणे सेण तस्य यक्षीसाए त्रिमाणवाससयसहस्त्राण चउरा सीए सामाणियसाहस्सीण तावक्षीसगाण चउरह् लागपालाण अठरह् अगमहिंसीण सपरि दाराण तिरह् परिताण सप्तरह् अगियाण सप्तरह् अगियाहियडण चउरह् चउरासीण अ्यायरस्कन्देयसाह स्सीण अ्यवसि च यक्ष्म य सोहम्पकप्यासीण वेसाणियाण देयाणय द्योगय अ्यादेवञ्च पारेयञ्च कुवमाणे

वाससयसहस्त्रादिभर । मय्वा पाकयासज दवताना बल्लोना दक्षिणार्धे साकाधिपति १२ काखविमाननाधको । ऐरावतवाहसिरेह परयंकरवत्य धर । ऐरावत वाह्ये जङ्गल सरेत्र रजविना गगनपर निमलवज्रधारो । वाकस्यमाकमठक मय्ममवावित्तपयस कुड्मन विवडिज्जमावगक्ष । वाक्का य ६३ म्हुट नवा कमनावाह विविध कुच्छकरो विक्षपमान गल्लज्जले जे इन्द्रना । मदिहाठठ जाव पभासमाव । मद्धिक्क वावत् सुवत्तज्जगाला कर ता । तस्य वलीसाव विनावागाममकमकरहाक चउरासीण सामानिय साहसीव तावलीसाए तावलीसगाव चउरह् सागपालाव चउरह् अगमहिंसाव सपरिबाराव । तिक्का १२ काखविमानना क्षामो ८३ सक्कय सामानिकेकरो वायविण्णक पूत्रभीकदयताये करो ४ साकपालो ८ चग्गुमदिपीयेकरो सपरि वारे । तिक्क परिमाणं सभयव प्रविश्याव सुतावा अविश्यादिवार । तान परपदये ४ यनाज्जकरो ४ यनोकाधिपतेकरो । चउरह् चउरासाव वायरस्त न्नासाहस च पक्षामिद्व द्वाव साहस्रकप्यासीव बमविश्याव टवावच द्वावेव जाव विहर । पारिगिये ८४ इजार म करसंकेकरो भजे

कुरु इति ॥ दात कर्तुना प्रतिमानाय नियतविद्योपाया समकोपायसुखपञ्चमप्रतिमाहूयाया वा आसिक्मोष्टिप्रकायेत्या यस्या सीग्रतकतुः ॥ सहस्सकले
 इति ॥ सहस्रमस्या यस्या सी सहस्राक्षः ॥ इत्थं हि किञ्चनचिदां पञ्चलतानि सति तदीयाया बाह्या मित्रप्रयोजनव्यावृत्तया इवसुर्वचित्वम विव
 रणान् सहस्राकृत्यमिदस्य ॥ मपय इति ॥ मयामशुभेया स्ते पश्य वष्टी संति समपवान् तथा पाको भाग वलवान् रिपुः सु क्षिप्यत निराक्रियत येन सु।
 पाकशामस ॥ धरयवरवत्यपरे ॥ धरवासि रकोरिदितानि स्वास्तया शंकरादि दत्तादि चारयतीति शंकरवत्प्रभः ॥ आसइयमात्ममठेइति ॥ मासा
 य मुकुन्द मातामुकुट मातपित माविद मासासुमुकुट येन स आसप्रेयतमासासुमुकुट ॥ मवहेमचारुचित्तवत्तुल्यलसितिलिङ्गमाद्यगङ्गा ॥ नवनिव
 चत्युत्कटवासवतया प्रत्यग्रमित ईव यत्र ते नवइमनो नवहेमन्मा चारुचित्राण्या चकलाभ्यां वित्तिस्यमानी गङ्गा यस्य स तथा सु

ण एव जहेव छंदियाण तहेव एतेसिपि माणियसु जाव स्यायरकदेवसाहस्सीण स्यन्तेसि च यत्तण सीह
 म्मगकप्पवासीण वेमाणियाण देवाण देवीणय स्याहेयसु पोरेयसु जाव विहरति । सक्ते इत्थं देविदे देव
 राया परिजसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्काउ सहस्सकं मघव पाकसासणे दाहिणहुलोगाहिबईयहीसयिमा
 पवाससयसहस्साहियइ पुराथणवाहणे सुंरिदे स्यस्यवरथस्यधरे स्याउइयमालमउळे नवहेमचारुचित्तचल

य मा १ २ सामादिवसाहसी च एव जहेव आदिषाक तहेव एतसिपि मावि । ते इहा पापपापकां विमाना साङ्गसे बरी पापपापकां सामानि
 समहेबरी इम विम पावनविदे कसी तिम सब इहां कदिवा । जाव पावरकदेवसाहसी च योसुबइव साङ्गगणप्यवासी च वेमापिवाय देवा च
 य दगेवम पाहेवम पोरेवम जाव विहरति । यावत् पावरककना सङ्ग यजटादका सीवमवसावासी वेमानि च येन देवता देवीना आधिपतिपके
 वावत् विधरे । यजे इत्थं देवरायाणा परिवरति । यज तिहा देवताप राजादेवेगद वेसके वज्जपाणीपुरंदरे सयस्यवरथस्यधरे । यजेबरी पुरंदर च
 मेरमवरविदारे ते यतत्रत आतिवठमने सोवार प्रतिसा भूरं सङ्गनेवपरी सङ्गनाय । मघव पाकसासणे दाहवत्तुपगादिदइ बसीवविमाचन

नरकुमारवश्ये-सुपक्ष सुपविदिसति ॥ समाभाः पशाः पूर्वापरवशिबोत्तरव्याः पाश्या यत्सिन् दूरमु त्यक्तो तत्सपक्ष समानस्य पमाविपु बोतस
मानस्य सुत्रायः ॥ सुपक्रिदिसति ॥ समाभाः प्रतिविबो यत् तत्सप्रतिदिक् साभानिकस्य द्वावभाया-वतरासीदित्यादि ॥ सोमैन्द्रस्य पतुर
हीतिभामाभिबसद्व्यादि वृक्षान्नेन्द्रस्या भीतिः समन्तुमारस्य द्वावसतिः माहेन्द्रवराजस्य सप्ततिः प्रक्रमोक्तैन्द्रस्य पतिः क्षातकैन्द्रस्य पञ्चाशत् मश
मृकत्रस्य चत्वारिंशत् मश्वारैन्द्रस्य त्रिंशत् क्षातप्रान्तैन्द्रस्य द्वावसामानिबसद्व्यादि ॥ अथतस्य द्वायातिद्व्यभाक्तादिति दूरवयाथा सततो विने

कुल्लविलिहिल्लमाणगळे महिहित जाव पन्नाभमाण सेण तत्य यतीसाए धिमाणवाससयसहस्साण चउरा
सीए सामाणियसाहस्सीण तायत्तीसाए तावत्तीसगाण चउरह लागपालाण अठरह अगमहिंसीण सपरि
धाराण तिरह परिसाण सप्तएह अणिथाण सप्तएह अगियाहिंवडण चउरह चउरासीण आयरस्कट्टेउसाह
स्सीण अन्नसि च अन्नग सोहमरुप्यत्तीण येमाणियाण देयाणय दवीणय अहेवस्तु पारियन्न कुत्रमाणे

वाससुवजसःद्विधाः । मय्या पाकग्रासन दुवताना बल्लोमा कविचारं साक्षाधिपति ३२ काण्डविमानाधरौ । ऐरावतमाधर्मसरेरे परयववत्स
 धर । ऐरावत वागगुहैजवन मरेद्र रजविना गगनपरि मशबलधरो । वासवसमाकमवठ नववसवाकावतपवष कुवस विविज्जिमावगस । बाण्डा
 जै वउ मज्जट नवा वममावाइ विविन कुवसवरो विसपमान गससकज्जै जे इन्दन । सविज्जठण जाव पमासमाव । मज्जहिण वागपु सुवउववाला कउ
 ता । तत्थ वलीसाण विमावासासमवउरहाण वउरासोण सामाविय साउरसीण तावलीसाण तावलीमगाव वउवउ सागपाकाव पउवउ वममविउसाव
 मवरिवाराव । तिहा ३२ काण्डविमानना जामो ८४ सवय सामानिजेवरो वायविगव पूवगी वउवताये करो ४ साकपावै ८ पगुमविपीयेकरो सपरि
 वारे । तिलं परिमाणं सभयक अभियाण सत्तव अभियाविववण । तान परपदये ० पनाककरो ० पनीकापिपतेकरा । वउवउ वउरासाव पायरस
 यमाउरस पकामिद इमं व साहसकपासोण वमावियाण टवावव दमोवन भावेवज जाण विहर । पारियिने ८४ वजार म मरससेकरो भने

कृतु इति ॥ धृतं कृतमां प्रतिमानाय प्रियद्विविधोपाया समलोपासकपञ्चमप्रतिमाहूपायां वा कान्तिकमोष्टिप्रधापेक्षया यस्यां शीघ्रतत्कृतु ॥ सदृशसत्के
 इति ॥ सदृशसत्के यस्यां श्री सदृशादाः ॥ इदस्य हि विलसन्निध्यां पञ्चसत्तानि सति तदीयानां बाह्या मित्रप्रयोजनव्यापृततया इदं सर्वचित्तम विव
 दवात् मुद्रस्वादात्यमित्रस्य ॥ मपव इति ॥ मपयमाहमेया स्ते यस्य वही सति समयवान् तथा पाको नाम बलवान् रिपुः स धियात् निराक्रियत येन सः
 पाकाग्रासकः ॥ धरपयवत्यपरे ॥ धरकासि रणोररेक्षतानि स्मृत्ततया संभरशि वकादि आरयतीति संवरबलधरः ॥ बालइपमासमठरे इति ॥ मासा
 व मुकुन्द मासामुक्तु मासगित माचिदु मासामुक्तु येन स आसगितमासामुक्तु ॥ नवहेमवासिचिचर्षवस्तुक्तलविशिष्टिग्वमागण ॥ नवनिव
 चत्युक्तवत्तवत्तपा प्रत्यपमिद हेन यत्र ते नवहेमनो नवहेमव्या वारुचिआप्या विलिख्यमानौ गच्छौ यस्य स तथा स

ण एव जहेव जुहियाण तहेव एतेसिपि ज्ञानियसु जाव आयरस्कदेयसाहस्सीण स्यन्तेसि च यद्धण सोह
 स्मगकप्यवासीण वेमाणियाण देयाण देवीणय आहेयसु पोरेयसु जाव विहरति । सक्ते इत्य देविदे देव
 राया परिवसइ वल्लपाणी पुरवरे सयक्कुउ सहस्सकं मयव पाकसासणे दाहिणहुलोगाहिर्वइयहीसयिमा
 णवाससयसहस्साहियई एरायणयाहणं सुरेदे स्यस्यवरयत्यधरे आलइयमालमउठे नवहेमचारुचिसचवल

व मा २ सामादिवसाहस्योप एव कवेव आदिसाव तहेव एवसिपि मावि । ते इहा पापपापवा विमानना सावममे करी पापपापवा सामानि
 कनहमेकरी एन जिन पापनविदै कच्छी तिम सव इहा कहिया । जाव आयरस्कदेवसाहस्योप चयेसिपवइव सावममगव्यमासोव वेमाचिबाव देव
 य दपीपव पाहेवव पोरेवव जाव विहरति । यावत् पाजरयवना सवय यजेराववां सोवमवमनावासी वेमानिव यजेव देवता देवीना अधिपतिपये
 यावत् विवरे । सक्ते इत्य देविदे देवरावां परिबसति । यव तिहा देवताया राजादेवेन्द्र यजेव वल्लपाणी पुरवरे सयवसवसक्के । यजेकरी पुरवरे
 मरेनवरविदारे ते मतकए आर्तिवसेठभवे सोवार प्रतिमा भू सवयमेनमनो सवयाव । मयव पाकसाववे दाहवत्तपागादिवर यतोवनिमावम

नल्लुमारकल्पे-सपक्ष सपक्षिदिसति ० सुमानाः पक्षीः पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपाः पांश्या यस्मिन् दूरमु त्यतमे तत्सपक्ष समामस्य पमादिषु चेति स मानस्य सजायः ० सपक्षिदिसति ० सुमानाः प्रातिविक्षो ऽयद्विक्षो यत्र तत्सप्रातिदिन् सामानिकसपक्षारूपाया-वधरासीदित्यादि ० सौचर्मेत्रस्य चतुर श्रोतिनामानि ० सपक्ष्यादि वसानेनूत्या शीतिः सनल्लुमारस्य द्वासप्ततिः माहेंद्रव्यवराजस्य सप्ततिः ब्रह्मलोकेत्रस्य पष्टिः सातर्क्षेत्रस्य पचास्रत् महः पाञ्चद्रस्य चत्वारिंशत् सवस्त्रांरेत्रस्य त्रिंशत् आनतप्राणेत्रस्य दक्षसामानिकसहस्राणि ॥ अथतसकाद्यातिवज्ञानाकाङ्क्षि दुरवध्याया सता चिमे

कुन्तलघिलिङ्गमागगढे महिङ्गिण जाय पन्नाममाणं सेण तत्थ धम्मीसाए विभागवाससयसहस्साण चउरा
सीए सामाणियसाहस्सीण ताथस्तीसाए ताथस्तीसगण चउरह् लागपालाण व्युठरह् व्युग्गमहिंसीण सपरि
धाराणं तिरह् परिसाण सतरह् अणियाण सप्तरह् अग्गयाहिंयड्ढण चउरह् चउरासीण आयरस्कंदेउसाह
स्सीण अन्नसि च यद्द ७ सोहम्पफ्पयासीण वेमाणियाण देयाणय देयाणय आहेवच्च पारेयच्च कुञ्जमाणे

बाममयमहमाहिवर । नमः पाकगोचनद्वयाना वस्त्रोभा लविवां साकाधिवति ११ साखविमानमाधयो । ऐरावतवाहविसेरद परवधरवत्य
 पर । ऐरावत वाहये अइन सेरद रजविना यगनपर निमनवस्त्रधरो । पाकइयमाससवठ नयकमवाहविलचववठ कुठम विसिद्धिज्जमावगम । साख्य
 ये कउ मज्ज नवा वमनावाह विविच कण्ठसवरो विठपमान मलससखे जे इमना । मज्जिठिठ लाव पभासमाव । मज्जिठि सावत् सवठजराळा कर
 ता । एत बत्तीसाठ विमावावाममयमहरसाव वहरासोऽ सामाविय साहसीण नावलोसाए तावनीमगाव चववठ जागपानाव चववठ प्रममहिंसाव
 मपरिचाराव । तिहा १२ भाषविमानभा लामो एउ सवय सामानिकेकरो भायभियम पूअनो कइताये करो ४ साकपाछे ए प्रगुमाइपीयेकरो सपरि
 योरे । तिहउ परिमार्च ससवठ अविमान सतप अविवाहितव । तान परपद्ये ० पनाककरा ० प्रमोकाधिपतेकरो । चउवठ पठरामाव पावरमउ
 एउसाइरम उ प्रनामिच प्रमंज साइमकण्यासोव जमाविमान टवावव एगोवय पाहेवस ज्ञान विहर । चारिदाने एउ इमार अ अरखेकेकरो चने

जात्र विहरति । कहिण जते । ईसाणगदेयाण पज्जाप्तापज्जाप्ताण ठाणा प० १ कहिण जते । ईसाणगदेया पारिव
 सति १ गो० । जयुद्दीत्रे २ मदस्स पव्वयस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पजाए पुठ्ठीए यज्जिममरमणिज्जाउं नू
 मिज्जागाउं उहु वट्ठिमसूरियग्गगह्गणनस्सत्तताराकूयाण वत्तइ जौयणसयाइ वत्तइ जौयणसहस्साइ जात्र
 उप्पहत्ता एत्थण ईसाण नाम कप्पे पत्तप्पे, पाईणपळीणायए उट्ठीणदाहिणधिष्णिक्कने एव जहा सोहम्मं जात्र
 पळिसुक्खे तत्थण ईसाणगदूयाण अठ्ठात्रीस यिमाणाथाससयसहस्सा हवतीति मस्काय तेण विमाणा सच्च
 रयणामया जाव पळिकया, तसिण यज्जिमज्जदेसजाए पव्व वळसगा पयुत्ता, अक्कयळसए फलिहन्नुसए

रा. यवर्षा भौषम कल्पनायासो वैमानिकद्वयता दशौ पक्षिपतिपत्नी यावत् विचरे । कश्चिदभते ईसावयस्युगव पञ्चता २ च ठा प । किञ्च ईभगवन्
 इमान इमाना यवर्षाया यवर्षायाया ठामकत्ता । कश्चिदभते ईसावयस्युगव परित्समति । किञ्च ईभगवन् इमानवेदता वसेत् । गायसा जव्वयाव २
 मंदारम पव्वयस उतरए । ईभोतम जव्वोपनामासीप विवै मवपवम उतरपासे । इमोसरयव्यभाए पुठ्ठीए वव्वमरमविज्जाया भूमिभागाया । प र
 मयभापुज्जासो यवर्षा समारमवोक्क मू ममागवळो । कट्ट वट्ठिममरिक्कमज्जगवळलताराकूया च । जव्वया वत्त मूयं गुह्यगव मवव ताराकूयसो । कश्चि
 जयवयसया १ जाव कल्पता । यवर्षा यात्रमना मैकहास यावत् काहाकासो जव्वया जाव जे । ०७७ इसायनामवय प । इहां इमाननासा जव्वकत्ता ।
 पाईपविवावट वट्ठीववाट्टिविच्छिन्न पयं जहा साक्य जाव पळिकवे । पव पयिम कायासो वत्तएट्ठिक्क विट्ठकासो इय अिम सोधर्मोपरे यावत्
 पतिवप । तयक् ईसावनेवाव पट्ठादोमविमाणावमयमववया इव्वविस्तिमक्काय । तिहा इमान उव्वतारा २८ कायविमानो जक्कावट्टो तापेकरे
 कया । तव विमाणावगवपनामया जाव पळिकया । ते विमान मव रयमय यावत् पतिरूप । तेषिक्क वव्वयमववमभाण पव्ववट्ठिमप त । तिहा यव
 मय विवाव २ पवतयवविमानये ते कइजे—अववविच्छिण अग्निइय रयपव जायएवव । पववतयक्क पूर्व वृषिके स्फुटिकावतयक्क रत्नावतयक्क याव

यप्रमानुयुद्धाये वैविस्वमे मूलत शारत्प्री पदव्येत-सौपमे पूर्वस्थां अशोकान्तर्गतो दक्षिणतः सप्तपञ्चोक्तसकः पविमायो र्पञ्चावतंसकः उत्तरत
 मूतावतंसकः मध्ये सौपमावतंसकः एव पूर्वाविष्णुमक इक्षान अङ्गावतंसकः इक्षाटिकावतंसको रत्नावतंसको नातकृपावतंसकः मध्यैक्षानावतंसकः
 सुनरकुमारे अक्षाकः सप्तपञ्चः र्पञ्चः पूतः समस्तुभारावतंसकः भार्गवः अङ्गुस्फटिकरत्नजातकृपावतंसका अङ्गुसोके अशोकसप्तपञ्चपञ्चपूत

रयणग्रन्थसु जाय सक्रववृत्तिसु मज्जे इत्य इसाणवृत्तिसु, तण वरुसया सध्वरयणामया जाव पठिकुत्रा
 एत्यण इसाणाण देयाण पज्जसापज्जताण ठाणा पयसा । तिसुवि लोगस्स अ्सस्वेज्जइत्तणिं सस जहा सो
 हम्मगदेयाण जाव विहरति, इसाण अ्य्य देविदे देवराया परियसति सुलपाणी वसन्नाहणे उत्तरहुली
 गाहिचह छुठावीसविमाणायाससयसहस्साहिचह अ्यरयथरयत्यधरे संस जहा सक्कस्स जाव पन्नासेमाणे
 तस्य अ्यठावीसाए विमाणायाससयसहस्साण अ्यसीतीए सामाणियसाहस्सीण तान्नीसाए तावत्तीसगाण

त एवातगक । मज्जे इत्य इसाणवृत्तिसु तत्र वृत्तिसिवा सध्वरयणामया जाव पठिकुत्रा । विचैरुहार्इ गानावतंसक ते वतंसक सर्व रत्नसक यावत् प्रतिदूय । पत्त
 वं ईसावदथाव पच्छता २० पाये । इहा ईयानेवता पदा ता पपणीयाना ठामकक्षा । तिसुविष्वावस पयसिक्काइमाने संस अङ्गा साङ्गदेवाक जाव
 विहरति । तान वालसाकन पसव्वातमेभाये दूव खाकता क्रिम सीधमदयता यावत् विचरेके । इयाक इत्यदेविदे देवरायाया परिवसति । ईयाननामे
 इत्य राजावमेक । दूवपाविष्ममवाङ्के । विगुम जावमे जेज्जमे । जत्तरकट सामाङ्कवटो-जत्तराक जावजावको । पट्टावोसविमाणायाससयसहस्साङ्कित
 १ । २८ जाव विमाणायाको अतिरिक् । अरयवटयधर संस अङ्गा यज्जम जाव पभासमाके । रत्तरकट वत्तरधारक जावता अ्थिम यत्तमोपरे यावत्
 प्रभासकित । संस जत्त पट्टावोसाएविमाणायासयसहस्सावं अमिइण सामाविष्वाङ्कोवं तायत्तीसाए तायत्तीसयाक । ते विहा २८ जाव विमान
 करो यदित ८० । सामानिक्कैकरी सङ्कित २२ जावविगुमेकरो । पट्टवटवगपाकाक पट्टवटवगमहिषोवं सपरिवारावं । ४ जावपासेकरो ८ अगुमवि

प्रहसितोपायतमका सोतके छद्मभटिकरवजातरूपसोतकावतसका महासुखे अशोकसप्तपर्णेचपकृतमहाशुक्रावतसकाः सहस्रारे छद्मभटिकरव

चउग्रह लोमपाएण अउग्रह अगमहिंसीण सपरिवाराण तिरह परिमाण सत्तरह अणि
याहियदण चउग्रह असीतीण आयरस्कदेवसाहस्सीण अन्नेसि च यद्वण इसाणकप्पवासीण वेमाणियाण
देवाण य देवीण य अहेयस्स पोरवस्स कुसमाण जाय विहरइ, कहिण जेत । सणकुमारदेवाण पज्जसा
पज्जत्ताण ठाणा पससा । कहिण जेत ! सणकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा ! सोहम्मस्स कप्पस्स उ
प्पि सपरिक सपान्निदिसि यज्जइ जोयणाइ यज्जइ जोयणसयाइ यज्जइ जोयणसयसहस्साइ यज्जगाइ जोय
णकोलीउ यज्जगाइ जोयणकोलीकीलीउ उहु दूर उप्पइसा तत्थण सणकुमारे नाम कप्पे पयत्ते । पाईण

वाचिउरो सपरिवारेबरो । तिरह परिमाण सत्तरह परिवारिदिवार सत्तरह पसरह । तोन परिपदाबरो ७ अनोकेबरो ७ अनोका
भियतेबरो ४ दिमि । बउरसो पाइरकउवसाउसाय । ८४ सालरचमे सउयेबरो । सवसिचवत्तव इसाणकप्पवासीण वेमाणियाण सहाय देवोच
ण पाउवच उवसावे विहरति । अनरा सवाइ यान वक्कावासी वेमानिक देवदेवीनी सविपतिपवी करता यावत् विचरे । बहियभते सबकुमार।ण दे
वाउ पज्जसा २ ४ ठावा प । बिडा केमगउनु सल्लमारवत्तारा पयत्ता सपरीत्तामा ठामवत्ता । बहियमत सवत्तमारदेवा परिवसति । बिडा
केमगउनु सल्लमारवत्तारा वपेवे । गोयमा साउकाउ कएय कप्पिमपिणि सपान्निदिसि वत्ता आउवससा । देवीतम सोधमवत्तन अउरे सपक्कपे
सवत्तादिमि ववायाउवसावेवत्ता । बह्वि आउवससवत्तमार बउगोपा जायवकासीपा बउगोपा जायवकाउकावाया । वकी याउवना सइय स
वा याउवना सइयवाउ पनीवाउवमो वावा ववी वाउवमो वावावासी । उउठदूर उउवत्ता । अवा उपाऊने जाय । ०८४ सवत्तमारवाम कए
प । १२४ सत्तरकुमारमामे कएवत्ता । पाइवपवावायए अनोचदाहिविज्जण कइ साउव आउ पडिउवे । पुन पविम सावा उउउवविच पविम

पद्मीणायाए उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा सीहम्मे कप्पे जाय पङ्क्तिवे, तत्थण सणकुमाराण देवाण धारस विमाणायाससयसहस्सा हवतीति मस्काय, तण विमाणा सधूरयणामया जाय पङ्क्तिया तेसिण धिमाणा ण थज्जमज्ज्जेसज्जागे पच थळसगा पणत्ता, तज्जहा-धूसोगवन्नसए सप्तयथावन्नसए चपगवन्नसए चयवन्न सए मज्जे जल्य सणकुमारयन्नसए तेण वन्नसया सधूरयणामया अच्चा जात्र पङ्क्तिया तत्थण सणकुमारदे वानं पज्जप्तापज्जाप्ताण ठाणा पणत्ता । तिसुयि लोगस्स धूसखेज्जङ्गागे तत्थण थहवे सणकुमारा देवा परिवसति महिहििया जाय पज्जासमाणा विहरति नयर धुग्गमहिषीत्तं गल्लि, सणकुमारं इल्ल ठवित्ते देवराया परिवसह धूरयधरयत्थधरे सेस जहा सक्कस्स सेण तत्थ धारसयह विमाणायाससयसहस्साण धाय

सा विम मोधम यावत् प्रतिक्कत । एतच्च सक्कमारोए दग्गच्च धारसविमाणायाससयसहस्सा इवतिल्लिमचत्थाय । इहा सनत्थमारना १२ छाख विमा नक्कया तोववरे । तेच विमाणा सधूरयणामया जाय पङ्क्तिया । ते विमान धाव रत्तमन्न जावत् प्रतित्ठने । तेसिण विमाणां बहुमस्सदेवमाए पचन देवता प । विमाने पची मज्जदेवमान विधावे पच धवत्तगगाविमान कत्ता । पसागवन्नसए सववत्थ ४० चपकट ४ वूय व मज्ज इल्ल सवत्थु मार व तेच वत्तेवत्ता सधूरयणामया पणत्ता जाय पङ्क्तिरसा । ध्याक्कवत्तयच्च पूवे सत्तपच वत्तयच्च ध्वचिचे चपकवत्तयच्च प चमे धूतवत्तयच्च सत्तरे विवे मन्तवमारोवत्तयच्च ते वत्तयच्च थव रत्तमन्न यावत् प्रतित्ठ । एतच्च सक्कमारोए देवाच पज्जप्ताच ठाणा प० । इहा सनत्थमारना पयात्तापपर्याप्ता ना ठामक्कया । तिसविस्सागण्य चवत्तिच्छारभागे । तीण भासत्ताचने पसज्जातेमभाग इवे । तत्थच्च थहव सणकुमारोदेवा परिवसति । तिसा चवां सन त्थमारोदेवता वचथे । मज्जत्तिवत्ता जाय पमासेमाणा विहरति । मज्जत्तिवत्ता जावत् पमासहित विवत्थे । मवत्त धम्ममहिषीयो जत्थि सक्कमारो इल्ल वेवि द देवरायाया पारगसति । एतत्ताविग्रय पग्गुमहिषी नवो सनत्थुमारनाम देवद्वाराया वचथे । धारयवत्तयत्थधरे सेसज्जहा सक्कया । दधरवित्त गमन

आतसपसङ्खारायतसुखाः प्राप्ते अङ्गीकसप्तयर्षेणकथूतप्राणावतसका अण्युत अङ्कुरफटिकरत्नगतसूपाण्युता अवतसका इति ॥ ग्रीवयकसेत्रे-सम
 निष्पाइति ॥ समा अहि र्मयात समिद्धिकाः एव ॥ समुज्जुहया इत्याद्यपि प्रावनीयं ॥ अविद्याते इदो ऽपिपति र्मयाते अनिद्राः ॥
 अपेक्षा इति ॥ नविद्याते मेघः प्रप्यत्वं ययाते आप्रथाः ॥ अपुरोहिद्याइति ॥ नविद्याते पुरोहितः शान्तिकमकारी ययामकातरप्रावात् तं अपुरोहिता

धरीए सामाणियसाहस्सीण सेस अहा सकस्स सुग्गमहिंसीवज्जा नवर चउण्ह वायसरीण व्यायरएकदेवसाह
 स्सीण जात्र विहरइ । कहिण भते । माहिदाण देवाण पज्जाप्तापज्जाणा ठाणा पखसा । कहिण भते !
 माहिदगा देवा परिवसति ? गोयमा । इसाणस्स कप्पस्स अप्पि सपरिक्क सपन्निदिंसि अज्झइ जीयणाइ जाव
 यज्जगान् जीयणकीमाकीनीत्त उहु दूर उप्पइत्ता तत्थण माहिदे नाम कप्पे पखसे, पाइणपनीणायए जाव
 एव जहेय सणकुमारे, नवर सुठ विमाणायाससयसहस्सा वरुसया जहा ईसाणे नवर मज्जे तत्थ माहि

धनुस्सधारी मेपविम मज्जनीपरे । सेवतयमारउवविमाणावाससससङ्ख्याक । तिङ्गी १२ सायविमानेकरो । वावतरोए सामानिकदेवसाहस्सीव जहा स
 करस पक्कमहिंसीवं बव्वा । ५२ सामानकउत्थेकरो विम मज्जनीपरे मनुमहिपो विना । नवर वरुस वावतरोव वावतरोवदेवसाहस्सीव जाव वि
 इदति । उतसाविमय ०३ बीमुकाकरता २२० पाळएवक कउत्थेकरो यावत् विवरे । कहिक् भते माहेइइयाक् पक्कता २ व ठाया ५० । किङ्गी हेमयवन्
 माहेइइइ वरुणा पपर्विताजा ठाम कप्पा । कहिक् भते माहिदेवा परिवसति । किङ्गी हेमयवन् माहेइइइइता कप्पे । गोयमा इ सावरस कप्पस
 वरिप सपविण मपडिदिंसि कउत्थिं जीयवार जाव वरुनोपा जावकाळाकासीपो उउठ दूर कप्पइत्ता । वेगोतम ईमानकक्कने छपर पक्कसहित सब
 दिमिनिं पना याअनना यावत् सर्वा बीअमनी काळाकाओ ओओवाव । एत्थव माहेइइनामं कप्पे प । तिबारे तिङ्गी माहेइइनामे सुवणाव कप्पा । पा
 इक् पडिवाए उदोव हादिक्विण्णक् । पूण पुिवाकाओ उतर दयिक् यिङ्गो । एव जहेर सर्वकयारे नवर अङ्गविमाणावाससससङ्ख्या । इम सर्व

दध्नसए एयं सेस जहा सणकुमारदेवाणं जाय विहरति माहिंदे इत्थ देविदे देवराया परित्रसइ श्रययत्र
 यत्थघरे एय जहा सणकुमारे जाय विहरइ नवरं अण्ह विमाणावासयसहस्साण सत्तरीए सामाणिय
 साहस्सीण चउण्ह सत्तरीण श्रायरक्केयसाहस्सीण जाय विहरइ । कहिणं भंत ! यन्नलोगदेवाण पज्ज
 हा २ णं ठाणा पन्तता । कहिण भंत ! यन्नलोगा देवा परिचसति ? गो० ! सणकुमारमाहिदाण कप्पा
 ण उप्पि सपरिक सपकिदिसि यत्तइ जायणाई जाय उप्पइसा एत्थण बन्नलीए नाम कप्पे पाइणपणीणा
 यत उदीगदाहिणविच्छिन्ने पकिपुन्नचंदसठाणसाठिए अन्निमालीनासरासिप्पन्ने अयसेस जहा सणकुमा

त्रिम समरसमार पतसाविशय । चहुविमाणावासमयत्तइसा पठेसया अहा ईसाचे नवर मत्त । ८ साखविमान कच्चा बतयव त्रिम ईयाने कच्चा प
 त्तावियय विचे । इत्थ माचेदेवविंसय एवं सेस अहा एक्कमारदेवाण जाय विहरति । ईसा माहेद्वयत्तइ इम यीपविम समरसमारदेवता यावत् बि
 बरेसे । माहिंदे इत्थ देविदे देवरायाया परिचसति । माहेत्रनामे उवेत्त देवराजा बससे । परसवरवत्तघरे एय अहा सक्कमारराजा विहरति । रत्तर
 पित ममनवत् वत्तभारी इम यान त्रिम समरकुमार जायत् विचरे । नवर अयव विमाणावासयसहस्सां सत्तरि सामावियसाहस्सीं ससव्वं मि
 त्तरीय पावरत्तइसाहस्सीं जाय विहरति । एवसाविंसय ८ साख विमानेकरो ० सय्य सामानिक ० चोसुवा करता २५ पाकरत्तइ सय्येक
 रो विचरे । कहिचमते बभसायदवा पज्जभा २ च ठावा प । बिजा हेभनवत् मज्जाकानादइता ययाता यययाध्याना ठामकच्चा । कहिचमते बभसा
 या परिचसति । बिजा हेभनवत् मज्जाकानादइता ययाता यययाध्याना ठामकच्चा । कहिचमते बभसा
 तम समरसमार माहेद्वयत्तइसाहस्सीं जाय विहरति । एवसाविंसय ८ साख विमानेकरो ० सय्य सामानिक ० चोसुवा करता २५ पाकरत्तइ सय्येक
 रो विचरे । कहिचमते बभसायदवा पज्जभा २ च ठावा प । बिजा हेभनवत् मज्जाकानादइता ययाता यययाध्याना ठामकच्चा । कहिचमते बभसा

राण नयर चक्षारि यिमाणायाससयसहस्सा वक्रसगा जहा सीहम्भस्सवक्रसया नवर मज्जे इत्य वन्नलीयव
 क्रमए एत्यण वन्नलीगाण वंयाण ठाणा प० सेस तहेन जाय त्रिहरति । वने इत्य देविदे वंयराया परिवस
 इ अरयनरयत्यघरे एव जहा सणकुमारे जाय त्रिहरति नवर चउरह यिमाणायाससयसहस्साण सठीए
 सामाणियसाहस्सीण चउरहयसठीण ख्यायरस्कदेनसाहस्सीण अन्नेसि च यल्लण जाय त्रिहरह । कट्ठिण
 नत ! उत्तगंदयाण पज्जाप्तापज्जाप्ताण ठाणा पयाप्ता , कट्ठिण जन । उत्तगंदया परिवसति ? गोयमा ।
 वन्नलीगस्स कप्पस्स उप्पि सपरिक्कय सपान्निदिसि वल्लइ जीयणसयाइ जाय वल्लइत्त जीयणकीळाकोळीत्त

निरपे पविमव नवकमारारव मक्खि तहा भा । किरवने समोकेकरो माया यावता ज्जिम सनरकमारं कक्षा तिम वद्धो । नवर चक्षारि विमयाया
 वामवमवमवया वनेमया जहा साहस्यवेसवा । एतथाविमिय ४ सासुविमान कक्षा पतयव ज्जिम सीधमनोपरे । नवर मन्ने इत्य वमसायवेमए । ए
 विमय विवे इहा मल्लनाकावतंमय । एतत्त वमसायाच लेवाच ठावा प सेसतहेव जाय त्रिहरति । इहा मल्लसाववेवतारा ठामकक्षा येव तिम वावत
 विचरे । वमेत्त देविदे वंयराया परिवसति । वल्लनाम इहा देवेन्द्र वंयराया वसेह । परववरवत्तघरे एव प्रहा सल्लमारे जाव विहरति । रजवि
 न वल्लवारी इम मव सनरकमारमीपरे यावत् विचरे । नवर वत्तव विमयायासमयसहस्साच सठीए सामावयसाहसोच । एतथाविमिय ४ सास
 विमानवारी ४ वज्जार सामानिकेकरी । वल्लवई मल्लोच पावरयवेवसाहसोचं यवसिच वल्लव जाव विहरति । साठ बोणुवां वरता २४ वज्जा
 र पावरयवेववारी पमरा यवसिउता यावत् विचरे । कट्ठिणमंति सेतमटेवाच पल्लता २४ ठावा प । किरा वेमगवम् सान्तवद्वता यरारता यपयी
 पाना ठामकक्षा । कट्ठिणमत सतमादेवापरिमति । किरा वेमगवम् कांतववेवता वमेहे । गायमा वमसायरस कप्पस उप्पिसपविस्स सपडिविचिं व
 वर जावव जाव वहुगोपा जाववकाळाकोपो वल्लु पूर उववता । वेमोतम मल्लसाव वल्लवो खपर सयच सवदिमि पयोयावमनोकाळाको खवा

उह दूर उष्यइहा एत्यण छतए नाम कप्ये पयात्ते पाईणपणीणायते जहा यन्नलोए नवर पन्नासाविमाणा
याससहस्सा हवतीतिमस्काय, यरुसगा जहा इसाणवरुसगा नवर मज्जे स्थत्य छतगवऊसए देवा तहेव
जाय यिहरति, छतए स्थत्य देविदे देवराया परिचसइ जहा सणकुमारि नवर पन्नासाए विमाणावाससह
स्साण पन्नासाए सामाणियसाहस्सीण अउराह पन्नासाण आयररकदेवसाहस्सीण अस्सेसिच यल्लण जाव
चिहइउ । कहिण जते ! महासुक्काण देयाण पज्जापज्जाणा ठाणा पयससा । कहिण जते ! महासुक्कादे
वा परिचसति ? गोयसा ! छातस्स कप्पस्सउप्पि सपरिक सपन्निविंस जाव उष्यइहा एत्यण महासुक्का

ब्राह्म । एतत्वं संतपमानं कप्ये च । इहा भान्तवनामा कथयन्मो । पाएचपडोचायए पव जहा बमसाए । पूर्ववचिम खावा इम विम मज्जछाव ।
नवर पन्नासं विमाणावाससरमाजिउर महेमभा अउरा इ सायबहेसगा । एतत्ताविमोप ३ । सइस विमानकहा वतमय विम इं याननोपरे । नवरं म
त्वे इत्तसुगगवहेमय दवा तहेव जाव विहरति । एतत्ताविमोप इहा छीतवावतमयकदेव भिमडोव यावत् विचरे । छतए इह देविदे देवराया वा परि
चसति । भान्तव देवइ देवराजा बसहे । जह जहा सचकुमारि नवरं पन्नासाए विमाणावाय सरसाव पन्नासाए सामाविबसाइरसोच । इम विम
नवरकुमार एतत्ताविमोप ३ । साय विमान ३ । जकार सामानिबसइसेवरी । पवचइ पन्नासाच पावरवउ देवसाइरसोच पसेसिच वइव जाव वि
हरति । ३ । जकारने बीगुनी पाअरच देवतासेवरी पभरा वनीव न यावत् विचरे । कडिण भते मजासजाव देवाच पज्जसा ३ य ठावा प । वि
हा हेमगवम मजायअदता परागित अपर्वाणामा ठामकहा । कडिणभति मजायुका दवा परिकसति । विहा हेममयन् मजागकटेवता बसेहे । गोम
मा संतम्य कप्यस उप्पि सपाअ सपदिदिमि आउ अणरणा । हेमोतम भान्तवकससी छपर पचमजित यावत् अण्णाण । एतत्त मजासुवेनाम कपे
प । इहा मजागुसनाम कथयन्मो । पाईचपडोचायए उदोवदाइवविण्णये एवं जहा बमसाए । पूव पविमे खावो छतरदसिच पियुसा इम ते वि

नाम कप्ये पण्यते । पाईणपणीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा यनलोए नयर चत्थालीस विमाणावा
 ससहस्सा हवतीति मरकाय, थळसगा जहा सोहम्मथळसगा नवर मज्जे सत्य महासुक्कवळसए जाव विह
 रइ महासुक्को इत्य देविदे देयराया जहा सणकुमारे नयर चत्तालीसाए विमाणायाससाहस्सीण चत्ताली
 साए सामाणियसाहस्सीण चउण्ह चत्तालीसाण आयरस्कदेवसाहस्सीण जाव चित्तरति । कहिण जत ।
 सहस्सारदेवाण पज्जता २ ण ठाणा प० । कहिण जत । सहस्सारदेवा परिवसति ? गो० । महासुक्कस
 कप्यस्स उप्पिसपस्सिक्कसपान्निदिसि जान उप्पइत्ता एत्थण सहस्सारे नाम कप्ये प० । पाईणपणीणायते ज

स चत्तालीस । नयर चत्तालीस विमाणायाससहस्सा हवतीति मरकाय । एतस्मादिमं ४ हज्जारविमानकट्ठा लोकेहरे । जेउसगा जहा साहस्यवेस
 गा नयरं मज्जे इत्य महासहस्रवेसए जाव चित्तरति । मतमच्च जिम सोवमनोपरे एतस्मादियेव विचे इहा सत्तायत्तनामार्यतयच्च यावत्तु विचरे । मज्जा
 मजे वज्जेमए जाव चित्तरति । महासुक्कमामे । महासुक्के इत्य सुविदे देवराजा ममेवे । एव जहा सचंजमा
 रे नयर चत्तालीसाए विमाणायाससहस्सा चत्तालीसाए सामाणियसाहस्सीण । इमं जिम समत्तममार एतस्मादिमं ४ हज्जार विमानसप्त्याहुवे ४
 हज्जार नामानिबसइनेहरे । चउण्ह चत्तालीसाए पाजरकट्ठसहस्साहस्सीण जाव चित्तरति । एतस्माच्च साठहज्जार देवता आत्तरत्तव कुबे यावत्तु विचरे ।
 अहिचमते सहस्यारदेवाण पज्जता २ ण ठाणा प । चित्ता हेमगवत्तु सहस्यारदेवतामा पर्याप्ता अपर्याप्ताया ठामचत्ता । अहिचं भंते सहस्यारदेवा
 परिवसति । चित्ता हेमगवत्तु सहस्यारदेवता ममेवे । गायमा महासहस्सा कण्णण कपिपसपस्सि सपक्किदिसि जाव कट्ठपरत्ता । जेगीतम महासुक्क कल्लने
 उपपर पवमहित यावत्तु छ वा आइजे । एत्थं सहस्यारनामे कल्लकट्ठा । परिच पटोचएए जहा वंमहाए । पूर्व पयिम
 लीया जिम मज्जसाव । अविमाणायाससहस्सा हवतीति मरकाय एतातेवेव जेउसगा जहा ईसाव चउण्ह इत्य सहस्रवेसए जाव चित्तरति ।

हा धनलोए नवर ठाविमाणथासहसा हवतीति मस्काय देवा तेहेय धनसगा जहा ईसाणस्स वरसगा
 नवर मज्जे जत्य सहस्सारयसए जाय विहरति, सहस्सारे इत्य देविदे देवराया परिवसइ जहा सणकु
 मारे नवर ठण्ह विमाणयासहसाण तीसाए सामाणियसाहस्सीण चउण्हय तीसाण ध्यायरक्कदेवसाह
 स्सीण जाय ध्याहेवच्च करेमाणे विहरति । कहिण भते ! ध्याणयपाणयदेवाण पज्झात्ता २ ण ठाणा ५०
 ? कहिण भते ! ध्याणयपाणयदेया परिवसति ? गो० ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पि सपरिक सपन्निदि
 सि जाय उप्पहत्ता एत्थण ध्याणयपाणयनामेण तुवे कप्पा पन्तत्ता पाइणपणीणायते उदीणदाहिणविच्छि
 न्ना अरुचदसठाणसठिया ध्वाच्चिमाडीनासरासिप्पना सेस जहा सणकुमारे जाय पन्निक्वा तत्थण ध्याण

एतत्ताविमयेय व वरारविमान केवसोकको पतंयक किम र ग्रामनोपरे एतत्ताविमयेय विचे इहा सज्जयावतयव यावत् विचरे । सहरसारे इत्थेविदे दे
 वरासाओ परिवसति । सज्जयारनामे देवेद्वेदेवराजा वसेइ । जहा सवकमारे नवर हरव विमायायासहरसावं तोसाए सामाविमसाहरसोव । किम
 सहरकुमार एतत्ताविमयेय वरार विमान । तोसाएसामाविमसाहरसोवं वरववं तोसाए आयरक्कदेवसाहरसोवं जाय पाहेवच्च करेमाणे जाय वि
 हरति । १ वरार सामानिकेवरो वरकोवोसज्जकार आयरक्कदेवरो जावत् अविपतिपणे विचरे । अविपभते पाववपावयकएवं देवाव पज्झता
 २ वं ठावापं । विहा इमगवन् पानत प्रायतदेवताना पवीरता पपवीरताना ठामकट्टा । अविपभते पाववपावयकएवं देवाव पज्झता
 मगवन् पानत प्रायतदेवता वसेइ । धावमा सहरसारस कापरस अविपसपिक्ख सपन्निदिसे जाव उप्पहत्ता । वेगोतम सज्जयारक्कसो उपरि प्रतिदि
 पे अकिने ल पा जांले । पत्थवं पावयपावयकाम तुवेकणा पं । तिहा पानत प्रायतमांमे इयक्कणा कट्टा । पारं वपकोवावया उवोवदादिबनि
 निष्सा पवसदसठावसंठिया । पूर्वपयिम कीमो उतरदधिच पिडुसा पवसदग्रमांमे संक्षाने सज्जितवै । पयोमाओ भासरासिसमयमा सेवंजहासकपु

नाम कप्ये पयस्ते । पाईणपन्नीणायते उदीणदाहिणविष्किन्ते जहा यन्लोए नयर चत्तालीस यिमाणावा
ससहस्सा हयतीति मरकाय, यरुसगा जहा सोहम्मथरुसगा नयर मज्जे तल्य महासुक्कावरुसए जाव विह
रइ महासुक्के इत्य देविदे देवराया जहा सणकुमारे नयर चत्तालीसाए यिमाणायाससाहस्सीण चत्ताली
साए सामाणिअसाहस्सीण चउरह चत्तालीसाण आयररक्कदेवसाहस्सीण जाव विव्वरति । कहिण नत !
सहस्सारदेवाण पज्जप्ता २ ण ठाणा प० । कहिण नत ! सहस्सारदेवा परिवसति ? गो० । महासुक्कास्स
कप्पस्स उप्पिसपस्सिअसपप्पिअसि जात्र उप्पइप्ता एल्लण सहस्सारे नाम कप्पे प० । पाइणपन्नीणायते ज

म मन्त्राणां । नवर वत्तालोस विमावाभाससङ्ख्या ज्वलित्तिसङ्ख्या ४० हजारविमानसङ्ख्या तोवङ्करे । ब्रह्मेसगा जङ्गा साङ्ख्यवर्णस
ना नवर मन्त्रे इत्त मन्त्रासङ्ख्येसय खाव विहरति । नतमन्त्र किम सोधमतीपरे एतन्नाविधेय विचे इहा मन्त्रायत्तनामावन्तमन्त्र यावत् विचरे । मन्त्रा
मन्त्रे ब्रह्मेसय खाव विहरति । मन्त्रायुक्तमन्त्रे । मन्त्रायुक्ते इत्त द्रविष्टे देवतायाणा परिचरति । मन्त्रायुक्तमन्त्रे देवदेव देवतायाणा वसुधै । एव जङ्गा सङ्ख्यमन्त्रा
रे नवर वत्तालोसय विमावाभाससङ्ख्या वत्तालोसाए सामाविदसङ्ख्योच । इम जिम सज्जन्तानाए एतन्नाविधमन्त्र ४ हजार विमानसङ्ख्या इवे ४
हजार सामानिकसङ्ख्येवरो । ब्रह्मवत् वत्तालोसाव पात्ररत्नसङ्ख्येव खाव विहरति । ब्रह्मवत् साठहजार देवताः सास्तरचक्र कुवे यावत् विचरे ।
ब्रह्मवन्ति सङ्ख्यादेवाव पञ्चता २ व ठावा प । बिडा हेममन्त्र सङ्ख्यादेवतामा पर्याप्ता सपर्याप्ताना ठामसङ्ख्या । ब्रह्मवन्ति मन्त्रे सङ्ख्याः रगदेवा
परिवसति । बिडा हेममन्त्र सङ्ख्यादेवता वनेष्ट । नावमा मन्त्रामुक्तया ज्वलन्त सपर्याप्त खाव सपर्याप्ता । हेमोतम मन्त्राशुक्त कल्पने
उपर पदमन्त्रित यावत् उवा आरने । एतन्त्र सङ्ख्यारेनाम कल्पे प । इहा मन्त्रायारनामे कल्पसङ्ख्या । पादव पञ्चोवायए जङ्गा वंमन्त्राए । पूर्वं पञ्चिम
सीवा किम मन्त्रसाव । ब्रह्मविमावाभाससङ्ख्या ज्वलित्तिसङ्ख्या ब्रह्मेसगा जङ्गा ईसाव ज्वर मन्त्रे इत्त सङ्ख्यवर्णसय खाव विहरति ।

२ ण ठाणा पणप्पा । कहिण नत्ते । धारणद्दुया देवा परिब्रसत्ति ? गोथमा । ध्याणयपाणयाण कप्पाण उप्पि सवस्सि सपप्पिदिसि एत्थण धारणासुयानाम तुवं कप्पा पणप्पा । पाइणपणीणायगा उदीणदाहिणवियि च्छिन्ता धुअचदसठाणसठिया अस्सिमालीनासरासिधन्ताचा अस्सिज्जाठं जोयणकोणाकोणीनु ध्यायामासि रक्खन्तेण अस्सखेज्जाठं जोयणकोणाकोणीठं परिक्खेत्तेण सव्वरयणामया अक्ख्हा सरहा लठा घठा मठा नी रया निम्मला णिप्पका निक्खकळ्ळाया सप्पत्ता सत्तिरीया सउज्जीया पासाइया दरसणिज्जा अन्निरुया पप्पिरुया एत्थण धारणद्दुयाण देवाण तित्ति विमाणायाससया हवतीति मस्साय, तेण विमाणा सव्वरय

[illegible]

यपाणयेदेयाण चक्षुरि विमाणायाससया ह्यती मरुकाय जाय पक्रिया, वक्रसगा जहा सोहमे नत्र म
 ज्जे पाणययक्रसए तेण वक्रसगा सवुरयणामया अक्खा जाय पक्रिया, एत्थण आणयपाणयेदेयाण पज्जा
 सापज्जासाण ठाणा पन्नाहा तिसुवि लोगस्स अस्संज्जहन्नागे तत्थण वहुवे आणयपाणयेदेवा परिवससति
 माहंठिया जाय पनासेमाणा तेण तत्थ साण २ विमाणावाससयाण जाय विहरति पाणएत्थ देविवे देवरा
 या परिससति जहा सणकुमारे णयर चउग्गह विमाणावाससयाण वीसाए सामाणियसाहस्सीण असीतीए
 आयररकदेवसाहस्सीण अन्नेसि च यत्थण जाय विहरति । कहिण भत्ते ! आरणसुयाण देवाण पज्जात्ता
 मारे जाय पक्रिया । विरक्ते तसूरे यनादिक ग्रेप जिन सततभारानेण्टे कतिरुप । तत्थं पावयपाणयेदेवा सततिविमाणायाससया । इय

विमिलकाय काय पक्रिया । तिहा पाणत प्राकत देवताया चारविधानासेवका तीर्थेदे कक्षा यावत् पक्रिया । वक्रसगा जाय सायसो नवदं मरुत
 तत्थं पावयपाणयेदेवा पक्रिया जाय पक्रिया । वक्रसगा जाय सायसो नवदं मरुत
 मारे । तौन वाक्सीकने पसेवतामेमागे बुवे । तत्थं वहुवे पावयपाणयेदेवा पक्रिया सततभारानेण्टे कतिरुप । तत्थं पावयपाणयेदेवा
 पक्रिया । तौन वाक्सीक सायत्थ यथावति । तत्थं तत्थं माय २ विमाणायाससयाण जाय विहरति । तिहा वक्रा पाणत
 र सायसिक् देवतायेवरी ८० हजार पाणतयेवरी पनेरा वक्रदेवता यावत् विष्टे । कतिरुपते पावयपाणयेदेवा पक्रिया २ वं ठाया य ।

णामया व्युच्छा सण्हा लहा घटा मठा नीरया निम्मला निण्यका निक्काकळ्ळाया सप्पन्ना ससिरीया सउ
 ज्जोया पासादीया दरसणिज्जा स्थित्तिरूया तसिण विमाण यज्जमज्जदिसत्ताए पच यरुसया पयुत्ता, त०—
 स्थुक्कयसुए फलिहयसुए रयणयसुए जाय कययसुए मज्जे जल्य स्थुक्कयसुए, तेण वरुसया ससुरय
 णामया जाय पण्डित्ता, एत्थण स्थारणसुयाण देयाण पज्जाप्पज्जत्ताण ठाणा पयत्ता। तिसुवि लीगस्स
 स्थसखेज्जइत्तागे तत्थण्य यहेवे स्थारणसुया देवा जाव विहरति, स्थुक्कय तत्थ देविदे देवराया परिवसइ।
 जहा पाणए जाय विहरति नयर तिण्ह विमाणायाससयाण वसरह सामाणियसाहस्सीण चत्तालीसाए

जाव पण्डित्ता। निमवसंनिमज्ज यावत् प्रतिकप। एत्थं पारवपयुयाय वराव तिचविमाणायाससया वरतिस्सिस्सयाय। इहा पारव पयुयाव
 ताता तोमसविमान वरवावे वज्जा। तसिण कप्पाय वरुदेसमाए पववत्तिस्सया प त। तिहा सूक्कयइहे भोपया विमाने घेवे मज्जविवासे पववत्तं
 वरिमान वरुहे। पंक्कयविप पण्डित्तिव रयवव जावकयव मज्जे इत्थ पववव। पववत्तयव सुट्टिकव रज्जव जातिकपव विचे इहा पयुत्तव
 तयव। ते देवाया मज्जयवमया जाव पण्डित्ता। ते वत्तयव सर्वे रत्तमय यावत् प्रतिकप। एत्थं पारवपयुयाय वरवावे पयत्ता २ व ठा प।
 इहा पारव पयुत्तयवताए पयत्ता पययात्ताए ठामवज्जा। तिसविवायव पययिज्जइत्ता। तोम वासवज्जने पययत्तामेमागे वरे। तत्थं वरुवे
 पारवपयुयावेवा परिवसति जाव विहरति। तिहा यहा पारव पयुत्तदेवता वसेज्ज यावत् विचरे। एत्थ इत्थ देविदेवरायाया परिवसति।
 पयुत्तमाने इहा देवदे नेनताकापवे वसेहे। जहा यावप याव विहरति। विम यानततोपरे यावत् विचरे। मवर तिचविमाणायाससयाय वसपव
 यायाविचवाइत्तीव वलासोयाए पावरपयवइत्ताइत्तीवे पावेवव वुत्तमाय याव विहरति। एतकाविज्जेय तोमसेविमान वज्जा वरवज्जार सामानि
 वदइता व वरार पावरपव देवेवरो पयिपतिपवे यावत् विचरे—यतोवज्जापीसा वारसयववइत्तयवज्जाय पयापत्तालीसा वरववज्जावइत्ता

आयररक्कदेयसाहस्सीण आह्वेवच्च जाय कुत्रेमाणे विहरति, धर्तीसञ्चछावीसा धारसञ्चछयउरोसयसहस्सा
 पन्नाचप्तालीसा तच्चसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चप्पारिसयारणञ्जुएतिया । सप्तविमाणस
 साइ चउसुत्रिएएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ सामाणियसग्गहीगाहा-थउरासीहस्यसीति धावप्परिसत्तरीयसठीए ।
 पन्नाचत्तालीसा तीसावीसादससहस्सा ॥ ३ ॥ एएथय आयररक्का चउगुणा कहिण जत । हिठिमगेविज्जा
 गदेयाण पज्जसा २ ण ठाणा पयसा २ कहिण जते । हेठिमगेविज्जगा देवा परियसति ? गीयमा ! आ
 रणञ्जुयाण कप्पाण उप्पि जाव उहु दूरं उप्पइसा एत्थण हेठिमगेविज्जगाण देवाण ततो गेवेज्जाविमाणा

२ ॥ १ ॥ बोधम ११ ईयानि २८ सनत्कमारि ११ माहेत्त ८ त्थेत्त ११ यत्तसकय कतिक्के १ सकय युक्के १ ककार सकयारे १ १ १ ॥ पाचवपाचवकप
 पत्तारिसवारवाचयति च सप्तविमाचससाई चउसविणयमुक्कपेस । आगत मागत कक्का ४ ० पारव चउयुते पट्टिवाचिव १११ हि चिक्के १ ० ट ० वि
 च १ पदान्तरे १ एवं सय १२१ इवे १ २ ॥ सामाविवाचयमाहा । विवेसामाभिवदेवता सययमी गावविदे - वससीतयसीइवावसरि सत्तरिसठी
 पपववतासा तीसावीसादससहस्सा एएविपावरवकचउगुधिया १२ बोरासोसकयसोबम ईमाने ८० सकय सनत्कमारि ०२ सकय माहेत्त ० सकय द
 म्मेत्त १ सकयमागत १ सकय युक्के १ सकय सकयारे २ सकय आगतमागत २० सकय पारवचउयुते १० सकय इवांटा ए पाकरवकदेवता आ
 वसा । कटिचंमते विठिमगेविज्जगाव देवाचं पयसा २ चं ठावा प । किहा केमगदन् इठका गेवेववता पवांजा चपवांप्ताजा ठामवक्का । कटिच
 मंत वेठिमगेविज्जमा दवा परिसवंति । किहा केमयवन् इठका गेवेववदेवता वसेत्ते । मायसा आरवचययाचं कप्पाचं उत्पि जाव चउत्ते उप्पइसा । के
 योतम पारव चपवत कन्धो च वाचांजे उप्परि यावत् । यत्तव विठिमगेविज्जमाचं देवाच तपोगेविज्जगविमाच पयसा प । इवां इठका गेवेव
 ना देवता वसेत्ते चिच येवेववता मतर कक्का । पारवचउपोपायवाग्गोवदाहिवविठिया पट्टिपुक्कवद् सठावसंठिया । पुवपचिक्केमे कवि । मतरदपिच

पत्यक्षा पन्तता पाईणपईणायगा उट्टीणदाहिणयिच्छिन्ता पणिपुन्तव्वसठाणसाठ्ठिया छ्विच्चिमालीन्नासरासि
वन्तन्ता सस जहा यन्नलोणे जाय पन्निक्खा, तत्थण हेठिमगेविज्जागाण दयाण एक्कारसुत्तरे चिमणावास
सण हयतीति मस्काय तण यिमाणा सव्वरयणीमया जाय पन्निक्खा, एत्थण हेठिमगेविज्जागाण दयाण
पज्जासाण २ ठाणा पयप्पसा । तिसुवि लोगरस्स छ्वसंखेज्जाइन्नागे तत्थण बहवे हेठिमगेविज्जागा देवा परि
वसन्ति सव्वे सममहिद्धीया सव्वे समज्जतीया सव्वे समयला सव्वे समाणुन्नावा मढासोस्का छु

विज्जा पुनव्वत्त मत्तानसंस्तिहे । पण्डिताओ मासिरासिबल्लामा सेम जइ बमकाण जाव पण्डिका । विरवभोयेभोवरो चामासद्धित त्रिम वृत्तलोच
तिम यावत्त प्रतिकप । तत्थण हेठिमयविज्जागा देवा एक्कारसुत्तरेविमावावाससण ववत्तिमस्कास । तिहा हेठही गुंवेयवनादेवता एक्कोऽग्गारइ
विमानभोमप्यावको तोवेवरे । तेव विमावा सव्वरयवामवा जाव पण्डिका । ते विमान रत्तमय यावत्त प्रतिकप । तत्थण हेठिमयविज्जागाण देवा प
ज्जा २ वं ठावा प । तिहा इठना गुंवेयवदेवतामा पर्यात्ता पयप्पसा । तिसुविज्जागाण वसविज्जाइन्नागे । तोन वासवनाने वसव्या
तमेवामे इवे । तत्थण वइवे हेठिमयविज्जागा देवा परिवसन्ति । तिहा ववा इठनागुंवेयवनादेवता वसेहे । सव्वसमवइठ्ठिवा सव्वे समज्जाया सव्वसम
ज्जा मावममयववा सव्वेयवनावमवा । सर्व मइठिब समज्जहि समज्जातवरी सव्वरोखे यय वसेसरोखा सव्वरोखेमावे । मवासज्जा वसेवा चपपमा
पपराजिवा । महावज्जी इट्ट वइनेनही वइने दासवज्जी पुराहितमया । पइमेन्नामान तवेयववा प । सव्ववा इट्टभोपरे रइहे त उइगव वज्जा । सम
वाइमा । पडो समवा पाइपपवन्ता । वडिक्कभेते मज्झिमवेयवदेवावगा परिवसन्ति । तिहा हेमगवन् मज्झमगुंवेयवनादेवता वसेहे । गायमा वडिठ्ठि
मगविज्जागाण वत्तिं मपन्नि सपण्डित्तिम जाव चपपणा । हेठोतम इठना गुंवेयवको कपर जंवा पुर यावत्त जाइय । एत्थण मज्झिमगीविज्जागादेवा व
वा पयप्पसा २ वं ठावा प । तिहा मज्झम गुंवेयवदेवतामा पयात्ता पपवात्तमा ठामवज्जा । वडिक्कभेते मज्झिमयविज्जागादेवा परिवसन्ति । तिहा

णिदा धूपेस्साध्यपुरोहिता बृहमिदा नाम ते देवगणा पयसा । समणाउसो ! कहिण जंते ! मज्झिमगाण
 गेयिज्जगदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पयसा । कहिण जंते ! मज्झिमगेयिज्जगदेवा परिवसन्ति ? गोयमा !
 हेठिमगेयिज्जगण उपि सपरिक सपन्निदिसि जाय उपपट्ठा एव्यण मज्झिमगेयिज्जगदेवाण ततो गेयिज्जा
 गयिमाणपत्थना पयसा पार्वणपन्नीणायता जहा हेठिमगेयिज्जगण नश्वर सत्तुहरे यिमाणायाससए हव
 तीति मस्काए, तेण यिमाणा जाय पण्डिता एव्यण मज्झिमगेयिज्जगण देवाण जाय तिसुत्रि लोगस्स ब्यस
 खेज्जहन्नागे तत्थण बह्वे मज्झिमगेयिज्जग देवा परिवसन्ति जाय बृहमिदा नाम देवगणा पयसा । सम
 णाउसो ! कहिण जंते ! उवरिमगेयिज्जग देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पयसा । कहिण जंते ! उवरिम

हेमगबन् मध्यम गेयवक्ता देवता बह्वे । मायसा हिहिमगेयिज्जगाय बप्पिसपन्नि सपन्निदिसि जाय उपपट्ठा । हेतोम जठरा गेयवक्ता यो उपर
 चंया भोकर यावत् जाइजे । पत्थवे मज्झिमगेयिज्जदेवाय तथागविज्जविमावपत्तहा प । तिहा मध्यमगेयवक्ता देवता तोमगु देवक्ता प्रतरहे ।
 याय परचायया एव जहा हिहिमगेयिज्जगाय मवर सत्तरे विमावायासमए इवतित्तिसत्ताय तेव विमावा जाय पण्डिता । पूर्वपयिमे कावा उत
 किम जठरागे देवक्तागेपर एवकाविग्रय एकसोसात विमान तीवकरे देवक्ता तेविमान यावत् पतिरूप । एव्यव मज्झिमगविज्जगाय जाव तिसविताग
 या पत्थविज्जभाग । इहा मध्यमगेयवक्ता देवताये यावत् तीन बीजजावने असत्ताठसेमागे बुद्ध । तत्थव बह्वे मज्झिमगेयिज्जगदेवा परिवसन्ति ।
 तिहा यथा मध्यम गेयवक्ता देवता बह्वे । जाव पयसदानामे तदेवयथा प । यावत् पयसिद्वानामापदव कप्पा । समवाचसा । पयसायमव पायुपा
 वन्तो । अहिपभते उवरिम मज्झिमगेयिज्जग देवाण पज्जत्ता २ चं ठावा प । तिहा बृहमगबन् उपरिक्ता गेयवक्ता देवता पठारत्ता यपर्वापुताभा ठामकप्पा ।
 अहिपभते उवरिममज्झिमगादेवा परिवसन्ति । तिहा बृहमगबन् उपरिक्ता गेयवक्ता देवता बह्वे । मायसा मज्झिमगविज्जगाय जाव उपपट्ठा । हेतोम

चिह्नपाः पुनस्ते इत्याद एव निद्रानाम ते देवगणाः प्रकृताः ? हेममल हेमयुक्ताः । विदुषुषे एगलोयवकोठीइत्यादि ॥ परिरयपरिमाय विफ
मवागदगुणत्वादि ॥ करववद्या रस्य भानतव्य सुगमत्वात् कृत्रसमासदीक्षा वा परित्रावनीयाः तत्र र्ववत्त्वादिश्रद्धाप्रमायविफजमलुयवप्रपरि
रयस्य एतावत्प्रमायस्य सविस्तरं प्राधितत्वात् तस्याद्य ईषत्प्राग्प्रारायाः पृथिव्या पशुमण्यदेशाने षष्टयोषमिकमायामविफज्जात्र्याम ऽष्टयोषम

गेत्रिज्जगा देव्या परिवसति ? गोयमा । मज्झिमगेवेज्जगदेवाण उप्पि जाय उप्पइद्वा तत्थण उयरिमगेत्रेज्ज
गाण देवाण तन्न गविज्जागधिमाणपत्थका पक्खसा । पाइणपणीणन्न सेस जहा हेठिमगेयिज्जगाण नन्नर
एगे विमाणायससए नवतीति मस्काए, सेस तहेव ज्ञाणियसु जाय अहमिदा नाम ते देवगणा पक्खसा
समगाउसी । एक्कारसुत्तरहे ठिमएसुसत्तुत्तरचमज्झिमए । सयमेगउवारिमए पचेवअणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥
कहिण जत्ते ! अणुत्तरोयथाइयाण देवाण पज्जसा २ ण ठाणा पक्खसा ? कहिण जत्ते ! अणुत्तरोववाइया

म मध्यमगुदेवकोषो जया वावत् जया । ०४७७ कवरिमगेविज्जमाच देवाच तपोमेविज्जविमाचपत्थका प इहा खपरिखानुदेवकना देवताहे तोन विमा
नना प्रतरहे । पाइव पडोवाइवा सेस जहा डिडिममविज्जमाच । पूर्वपविम कांवा । गेय सव विम मोवखानुदेवकनोपर । जवर एमेविमावावाससए
इवनिपिमकायं ससेत्तव मावि जाव अहमिदानामे तेदेवगणा पं । एतकाविगेय एकसोविमानहे तियेवरे कद्धा गेय तिमसोअ कइवो वावत् य
इमिंद्र नामइवदा ममुइवद्या । समवाकसानाहा भाउमवा पाहुयावन्तो मावा । इकारसत्तरहि इमसुसत्तत्तरचमज्झिमए । सयमेमंडवरिमए पचेवअणुत्त
रविमावा १ ॥ इठजामेदेवकनेविने एकसोअकारविमान मध्यमगुदेवक पाचविमान अणुत्तरविमाजे । कविज्जते पशुत्तरोववमइवादेवा परिवसं
ति । विहा हेमगवन् पशुत्तरवासी देउता वसेहे । गोयमा इयोसे इववपुमाएपुठगोए वडुवमरमविज्जाओ भूमिमायावा । जेगोतम ए ररमममा एवि
पोषो पवो एमारमसोअ मूममाणवको । कण्डुवविम कूरिय गइगववकत्ततारापूवाच । कवा मूय अद्र गुइगव जचव तारापूवो । कइरंकोववच

[illegible]

धार वद्ध स यवसदमहस्यार नृशोषा आयवकाशोषा वृक्षोषा । धर्षा याजमना संकटा धर्षा याजमना संकट धर्षा या
 अननाको धर्षायाजमनो काडाकोलो । उटठ खाव कणाला । खणा जारण । खाकणीसावसवकुमार माहद बभलाग कीतग सइसइस्यार पावय
 पावय पारव पमुव कणा । मौधम इमान सनलामार माहिरे मल्ल कीतक गुल सइयार पानत मावत पारव पच्युन । तिथिय पडारसुत्तर मावळवि
 मावावासमय धीवरेता । जपर तीगसे पडारइ गुंवेककाविमान मूकीन कवाकांज । तव परदूर गया मोरयावि तिमिरा विसुडा । तिक्कीको
 दूदगवा रजरहित पंधारेरहित गड । पवठिसिपव पवनरामहममहासुवा महाविमावा य ते । पविदियि पव पवनर उरकडा माटाभीमाडा
 विमान कद्या त कइके—विजय वैजयत जयत अपराजित सर्वावसिद्ध । विजय वैजयत जयत अपराजित सर्वावसिद्ध । तेव विमावा मल्लरयकाम
 या । ते पाविविमान सम ररममवै । पत्या सबहा लहु घडा महु मोरया निपया निपका निक्कडणाया । पाखा मल्ल । इल्लनापना इ यपल्ल । म
 न्या रमविना निमठ कवररहित । सपमा सखिरोया सलळाया पामाडा दरसावळा पभिरू पाविरू । प्रभावाइत स्याक स्यातसहित प्रस

प्रमाणं इयं चार्ही यात्रमानि यादुस्वन् नोचस्वन्तो नैति नाथः प्रपन्ना तद्यन्तर प्रयासु विद्यु विद्युषु च मात्रया स्तोत्रया २ प्रदेशप्रदान्या

दीया दरिसणिज्जा अचिरूया पफिरूया एत्थण देवाण पज्जासापज्जात्ताण ठाणा प० ।
 तिसुयि लीगस्स असखेज्जाउत्तागे तत्थण यद्द्वे अणुसरोधवाडया देवा परिधसति सव्वे समसहद्धिया सव्वे
 ममग्रहा सव्वे समाणुत्ताया महासांस्का अणिदा अप्पेस्सा अपुरोहिया अहमिदा त देवगणा पणप्पा । स
 मणाउसां । कहिण जत । सिद्धाण ठाणा पणप्पा । कहिण जत । सिद्धा परिवसति ? गोयमा । सव्वठस्स
 महायिमाणस्स उवरिस्साने यूजियग्गाने उहु अयाहाए एत्थण इसीपप्पारा नाम पुट्ठी प०,
 पणयालीस जौयणसयसहस्साह् अयामविक्रजेण एगजौयणकोऊनिथायालीस च सयसहस्साह् तीस सह

यकारादनुशास्य चभिरूप प्रतिरूप । एतच्च पञ्चतराववाद्याक उवाच पञ्चता २ ठा प । इहा पञ्चतरवासीदेवताः पर्याप्ताः पञ्चतरानां ठास
कथा । तिमविभास्य चमविज्याभासि । तीने बाळकाकने, चमप्यातमेभागे । ततच्च दक्षे पञ्चतराववाद्या देवा परिवसति । तिहां चर्वां पञ्चतरवा
वादेता बस्ये । सग्रे समद्वटुठाः सग्रेसमगला सावसमहापभावा मशामुक्ता । मव महर्षिक सव समवसा मव सहानुभाव महासखी । पञ्चदे
वपेवा चपराद्या पद्मदेवानां देवगवा प । इगूनको प्रेषानयो प्रराहितमको मव पदमिदूनमि देवगवा । समवाठसा । भायसव चामुपावयता ।
कडिकमते ठावा प । बिहां कमतवन् सिवनां त्यागव कथा । कडिकमत मिहा परिवसति । बिहां हेममवन् पिह वसेये । गायमा समद्वटुसिमिना
व उवविवापा पुमिमनापा बुवाचम जायव वटु परावाप । कोतम सर्वाविमिह महाविमाम ऊपरकी भूमिकाकको १२ यावनममाथ लवो भावा
भाये । एतच्च इमोप्यसारानाम पठगे प । तिहां मनुष्यो पपेचोये सर्वाप्यरमाव माटे इप्यामाराएजिवो कहे । पञ्चयाचोमं जाववममद्वछाई पा
यामविक्रमेवं । ४१ साप्यात्रन कोदपेने पिहमपेने, पिचे परिधि कहे - एण जाववकाको बायाकोईपयवद्वछाई । पञ्चकाको यावन मव भाव

परिदोषमात्र सर्वेषु परमांतपु मरिचकापयप्रभो ऽप्य तितन्वी अंगुलार्धस्येयप्रभं यादस्येन प्रकृता स्थापनः इतिहवाति पर्यवेसो परसमुदायोपवा
रात् इत्यप्रामात्रा इति या तत्कृतिवा तन्वीवा क्षापयिष्यत्येवमिति ॥ तमुप्योपि क्षमत्प्रसिद्धस्य क्षान्ती मरिचका
पत्रमापि पयैतदप्रति तनुत्वात् तनुतन्वी सिद्धिरिति वा सिद्धिरेवस्य प्रत्यासत्तत्वात् सिद्धुलस्य इति वा इति सिद्धुलस्य प्रत्यासत्तत्वात्
सिद्धुलमात्रा सत्यः सिद्धुलस्यः एव मुक्ति रिति वा मुक्तालय इति चेत्पि परिजातमीय तथासाक्षाद्यवसामत्वात् लोकाग्रिमिति लोकाग्रस्य स्तुपि

स्वाद्व दौन्ति य अउणापन्ते जोयणसए किच्चियिसेसाहिए परिस्केवेण पयत्ता । इसीपझाराएण पुढथोए
यज्जमज्जेसनाए अउजोयणिए खेत्ते अउजोयणाइ यादह्वेण पन्नेत्ते , ततो अणतर वण माताए २ पए
सुपरिहाणी २ परिहायमाणी २ सहेसु चरिमंतसु मच्छियपत्तातो तणयरी अणुलस्स सखेज्जइजागे याह्वे
ण पयत्ता , इसीपझाराएण पुढवीए दुवाउसनामपज्जा पयत्ता इसीतिवा इसीपझाराइया तणुतिवा तणु

राजन् । ५। विपयवा पयत्रावचसवकि विविचिसाहिए परिस्केवेण पं । दोइकारवाज्जमनिविद्वेसुवर्पवान योजन कर्त्तव्योदाचिक परिचि क
द्विपे । इतिपभाराएण पुढवीए इमज्जमदमममम सउजायविययुल पइभायवाइ यादह्वेण पं । इय सेवसमायसी टोकाओ मम विस्तर कोइवा इ पय्या
भारा वृथिवीओ वनी मज्जममाणी ८ जालजपमाचय ८ वाज्ज वादुल जलापवे एतका कडिनी । तयाकतरपय मावाए सपरिहावीए परिहाय
माओ २ । तिवारपको मयकोदिमि विदिमिमावावे २ प्रदये परिहरियेमान घटत २ वको । मउवेसु चरिमते समक्खियपत्तावतचवरो पंगुलस्य प्रमंषि
ज्जमाओ यादह्वेण पं । सपलाजे कइव माओओ पंखको पिय जामको पेमसगो यमक्ख्यातमेभामओ मावागे वादुलपवे कइरी । इ विपयभाराए पुढवी
ए दुवाउसनामपिच्छा प तं । इयपमाभारा वृथिवीमा २ नामकज्जा तज्जके । इतिपभाराए तावइवा सिद्धइवा विहावएतिवा मतोइवा ममासए
तिवा सावमेतिवा सायगाएमिपदवा सावयपडिमुक्खावाइवा । एवदिमि पातको तेसाट इयपमाभारा माटापयवे तेसाट वेसी पातकोइ पातकोसूपा

प्रमाणं त्वं पादौ योजयामि वापुस्त्वन शीतस्वेति पादौ प्रपन्ना तदनन्तरं सर्वासु विष्टु विदिशु च मात्रया स्तोत्रया २ प्रदेशप्रज्ञान्या

दीया दारिसणिज्जा अन्निरुथा पन्निरुथा एत्थण अणुत्तरोवथाईयाण देवाण पज्जन्नापज्जन्नाण ठाणा प० ।
तिमुयि लोगस्म अस्सेजेज्जिनागे तत्थण यद्दधे अणुत्तरोवथाईया देवा परिवसति सहे समसहहिंया सहे
समथला सहे समाणुत्तावा महासास्का अणिदा अण्णम्सा अण्णोहिंया अहमिदा त देवगणा पखत्ता । स
मणाउसा । कहिण जत्ते । सिद्धाण ठाणा पखत्ता । कहिण जत्ते । सिद्धा परिवसति १ गीयमा । सव्वठस्स
महायिमाणस्स उवरिद्धात्तं यूनियगगात्तं दुय्यालजोयणे उहु अथाहाए एत्थण इसीपम्पारा नाम पुढवी प०,
पणयालीस जोयणसयसहस्साइ अ्यायामविक्रनेण एगजोयणकोत्तंथायालीस च सयसहस्साइ तीस सह

पकारा दुपरावाण्य पभिरूप प्रतित्व । पत्थण पञ्चत्तरावथाइवाच दवाच पखत्ता २ ठा प । इहा पञ्चत्तरावथाइवत्ता पयात्ता सपवर्त्तमाना ठाम
कथा । तिसवित्तायस पवर्त्तित्तायमागे । तीने वात्ताकने पसम्पत्तामेभागे । तत्थण यद्दधे पञ्चत्तरावथाइया देवा परिवसति । तिहा चर्वा पञ्चत्तरा
वाइवत्ता वमत्ते । माहे सयसहस्साइ महेसमावत्ता सयसहस्साइवाच मत्तामुत्ता । सव मत्ताइव एव समथला सव सज्जानुभाव मत्तासखो । पवेदा
पयेमा पयराइया पवेमेदावाम देवगवा प । इग्गन्तवी प्रेक्खानवी पुराहितवो सव पव्वमिद्दमागे देवगवा । समवावत्ता । भायमव पायुपावत्ता ।
वद्विक्कमत्ते ठावा प । तिहा वमवन् सिद्धा अ्यामव कथा । वद्विक्कमत्ते तिहा परिवसति । तिहा वमवन् सिद्ध वसेहे । गायमा सववत्तुविमाच
त्ता उवरिद्धावा वूमियमापा दुत्तामस आणव वत्तु पयराइया । वेभोतम मत्ताविमिच मत्ताविमिच उपरवो वूमिवाचवो २२ वाक्कमपमाच खवो पावा
थापे । तत्थण इवात्तपयारावाम पुढगे प । तिहा मनुवावो पवेत्तावे सवित्तरावाम माहे इवत्तागमारुत्तिवो कवी । तत्थयासोस कायवमयसइक्काई पा
यामवित्तामत्ते । इह सापसावन् वाथपवे पिद्वुलपवे पिने परिधि कवत्ते - दम कायवत्तावो वायावोत्तं वमवत्तुवा । पञ्चत्तावी यावत्त ४२ वाव

रायाः पृथिव्या ऊर्ध्वं भीयात् इति नि श्लेषिगत्या धोक्कर्म श्लोकांतो प्रवर्तति तस्य ॥ योक्त्वस्य प दुपारितन गव्यूत वतुष्ये तस्य गव्यूतस्य यः सर्वो परितनो य द्वागो अत्रमितियाख्यालंकारे सिद्धाप्रवृत्तः सादिकाः कर्मक्षयाभतरं सिद्धात्वभावात् एतेन अभाविमुद्रपुरुषप्रवाहप्रति पक्षे आयेदितो द्रष्टव्यः अपर्यवसिता राधाद्यप्राचन प्रतिपातास्रधात् रागादयो हि सिद्धत्वा भ्यावयितुं प्रवर्धयितो न य त प्रगवता सति तेषां निर्मूलकार्यव्यतिरक्त्यान् न य निर्मूलकार्यकपिता अपि दूयः प्रातु भवति यीजाप्रायादिति तथा मेवै वीतिअरामरवैकम्मजरासृत्यनि यद्य तासु योमपु ससाराः ससर्वं तन ॥ यः कर्तव्यलोकादः कदव्यमानता य य दिव्यसुखमनुप्राप्ताना मपि पुनर्मैव ससार गर्भवसति प्रपञ्चः तौ समतिकांता अत एव यथा

निरुद्धा पन्निरुद्धा इती पञ्चाराएण सीताएजोयणमिडोगतोतस्सण जोयणस्स जेसे उवरिस्से गाऊए तस्सण गाउयस्स जेसे उवरिस्से वज्जणे एत्यण सिद्धा नगवतो साटिया धूपज्जायसिया धुणेंगजातिजरामरणजो निससारकउफलीनायपुणप्पवगप्पथासवसही एवच समइक्कता सासयमणागयद्द काल चिठ्ठति, तत्थयियंत

नि पञ्च निष्ककटकाः । स्यमा सखिरिवा सङ्काया पासाः । दूरसिन्धवा भिकवा पङ्किका । प्रभासहित सन्धीय श्री
भायमान कदातयचित्त मन्मथस्यारी दृष्टकाधार्य भिकव्य मतिक्रम । आसन्नसिन्धोवता तस्यैव आसन्नस्य जसे जवरिते गासए
तस्यैव नासन्नस्य जसे जवरिते जमने । बाधने साकति ते वीरने जेते अपरिखामाज कइसो ते गासना जे अपरिखामाजना कइभाग । एतव वि
दाभदरता सार्द्धा अपव्यवसिया । तिहा सिउ मयवगत सोकाकमये कनादिपये दोठा कइया अपव्यवसित रागादिजन समाय पाका अपव्यव ।
पथगजादज्जामरन भाजिचंसार कइकसोमाव यथगत यथगतानि करामरण्यानि ससार तेइना कइकसो अपव्यवमाव मूको दिव्यसुख
पाम्या पुनमवचंसारे गमनो वसति प्रपंचकरोने वसे । एवच समयके तासासबकामगबईनासे विहति । हम समय तिहा ते तेके दुपुपाकम्यनवी एतमे
गापन्नत पनामतकासपवत रमाके तिहाको तठामना चयनवा । तत्प्रवियते भवेया भवेयानिभ्रवा । तिहा सिहलेव पपुगाके भगवण ते वेदरदित

केय सोऽन्तर्गुण्यता तया सोऽन्तर्गुण्यते इति सोऽन्तर्गुण्यता इति ॥ प्राणा द्विविधतुर्द्विया इति प्रुवा
 स्तरथा मीमाः पञ्चद्वियाः श्रयाः प्राणिनः सत्त्वा लज्जाः प्राणाद्विविधतुः प्रोक्ता प्रुता य तरय रमुताः । जीवाः पञ्चद्विया श्रयाः सत्त्वा ल
 दारिता ॥ १५ सर्वया प्रायमूतमीवसत्त्वानो मुखावहा उपद्रवकारित्वानावा स्वयमाकभूतजीवसत्त्वमुखावहा सा ॥ इपत्प्राग्मारी पुण्यवी सुता
 सुतत्वमयो पमया प्रकटयति सपुद्गलविमोक्षेत्यादि कद्रुदलस्य कद्रुदलस्य विमलाभिमतः स्वस्तिकाः कद्रुदलविमलस्वस्तिकाः स ॥ सुपात ॥ द
 करय स तुपार ॥ हिम ॥ गोपीर ॥ इर य तया मिव वर्यी यस्या स्या तया उत्तमकम् तापीकृत यत क्व तस्य य स्वस्थान यन संस्थिता
 उत्तानकवसस्थानसंस्थितत्वं ॥ प्रागुपदक्षितस्यापमातोजावनीयं ॥ सवद्रुपसुवचमयी सर्वात्मनाद्येतसुवर्चमयी इवीपक्षारारण्यकमित्यादि इपरप्राग्जा

तणुयरीतिवा सिद्धितिवा सिद्धाखण्डिया मुतीइवा मुत्ताखण्डइवा लोयगगयूनियातिवा लोय
 पन्निद्रुज्जगाइया सवृपाणन्नयजीवसत्त्वसुहावहा वइवा । इवीपक्षाराण पुढवी सेता सखदलविमलसोच्छ्रिय
 मुखाखण्डगरयतुसारगीस्त्रीरहारवन्ना उत्ताणयत्तसठाणसंठिया सवृज्जुगयसुयखमई अच्छा सरहा लरहा घठा
 मठा नीरया निम्मला निम्पका निक्किकरुच्छाया सप्यजा ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरसणिज्जा अ

तथो विहावव विहल्लः मज्झिमसमा मत्तित्वात् सत्ताखयनोभावनया ए ४ नाम युवमयल्ले कावनेयगु कावनेयभिकानोपरे कावाम ८ प्रतिबुद्धत्वात् ।
 सवपाव भूय भोव सत्ता सत्ताइवा । सर्वपाव भूय भोव सत्तने तिर्थाजाय तेइमे सखदार्द । इ सियमारण पठवो सेय सखइय विमलसोत्थिय मुपास
 दमरय तवार माखीरडारववा । ॥ १२ नामाम इ पय्यामरपण्यो कइथोत्ते स्वतनो पोपमा यत्तुत्त जिवा निमल खण्डि सवहा स्वमलपव जखपरे
 अन्न नीरज स्वतगाव मातोमापार खण्डया खेइवा दूवमम । कत्ताखयत्तसठावसठिया यानज्जुव सवखमइया । उत्तान कवम सत्ताने संस्थितत्वे सव य
 अन्न स्या सवमय । यत्ता सवहा सइ यत्ता महा नीरया निम्पका निक्किकरुच्छावा । पाप्मा सवपुद्गल निम्पय कठारया मठारया नीरज निम्पक

एते विदुः प्रतिदिता व्यस्तिताः । तथा च कस्मिन् क्षेत्रे कौदि सन्तु शरीरमित्यभयोतरे तौ त्यक्त्वा ह्यगत्या विद्यन्ति निष्ठिताया जयति । वि
 क्कइत्यत्रानुस्वारतोपो द्रष्टव्यः अयमेकवचनोपत्त्यासापि सूत्रोऽस्या न विरोधप्राप्त्येव प्रयोगः-यत्प्रत्ययसप्तकार इत्यष्टौस्यपञ्चाशिय ।
 यच्च दाजमर्जयति नसुबाइतिमुच्यते इति । एव शिष्यश्च प्रसक्त भूरिराह-अन्ताएवक्रियासिद्धादित्यादि ॥ अत्रापि सप्तमी वृत्तीयार्थे, सोऽन
 ककताकाशास्त्रिकायकपद प्रतिदत्ताः शरतिताः विदुः ॥ इह तत्र भवतिस्त्रिकायाद्याभावा तद्वाच्यतापर्यायतिरथ प्रतिश्लेषनं ननु स्वधयसांत विद्यातो
 ऽप्रतिपत्त्यात् समतिपानादि स्वययसति विद्यातो नामययामिति । तथा सोऽस्य पञ्चास्त्रिकायात्मकस्य यय मूढेति प्रतिदिताः अपुनरागत्या
 व्यतीत्यता इह मनुष्यलोके कौदि सन्त्यक्त्वा तत्र साक्षात् स्वययान्तरप्रक्षालनरूपतोनेन गत्या विद्यन्ति निष्ठितायो जयन्ति सम्प्रति सन्नगताया
 परस्वययान्तराह-दीर्घाहस्रवाइत्यादि ॥ दीर्घे वा पञ्चयनु शतप्रमाद्य प्रक्षंवा इत्युपप्रमाद्य वा कृच्छ्रात् मध्यमवा पिचिष्य य
 परमत्रय पद्यिमत्रय जवत् सस्यान तत सस्या त्वस्याना यिजागहीना यवनोदरादिरप्रपूरणन वृत्तीयन ज्ञानन हीना सिद्धानामवगाहना यवना
 हुनो यस्यामित्यवगाहना व्यावस्येव सविता तीपकरवचपरैरिति यत्र गत सस्यामप्रमाकापयना यिजागहीन तत्र सस्यानितिज्ञाद्यः यतद्व
 रपुनरनुपदशयति-जसंठावतुइइत्यादि ॥ परसस्यान पाठोऽप्रमाद्य सस्यान इह मनुष्यजये साक्षात् तद्व, यवति प्राञ्जला यमववयतिनो ऽ
 स्मिन्विता जवं हरीर त्यज्यत परित्यज्यतः काथयाग परिगङ्गानस्यति माय वरमसमय भूस्त्रिक्रियाप्रतिपातिप्यानयनन यदनादरादिरप्रपूर
 यात्रिमाणेन हीन प्रदक्षपनमासीत् ॥ तसंठावतुइइत्यसति ॥ तदव च प्रदक्षपनं भूस्त्रिमाकापयया यिजागहीनप्रमाद्य सस्यान तत्र साक्षात् सत्य सि

तत्स ॥ ५ ॥ तिनित्सयातेत्तीसा घणुत्तिजागोयहोइनायहो । एसाखलुसिद्धान उक्त्वोसोगाहणान्निगया ॥ ५ ॥
 चत्वारियरयणीने रयणितिजागूणिगयायोधह्वा । एसाखलुसिद्धान मज्जिमोगाहणान्निगया ॥ ६ ॥ एगाय

नयमव सत्य नदः तनेमवे कमउवे यरीरइ तेने कइअसमवे मूल्याविद्याप्याग यग्नादरथ पूरवकद्विचे यमपासीत पुवे त प्रदग यनमम प्रमाययेयासे

युगम मार्गतं कामं तिष्ठति ॥ तत्प्रवियतेनवेयाहत्यादि ॥ तथापि च विदुमश्रयताः सतः सौ प्रगवती श्वेदाः पुरुषयेदादिवेवरहिता श्वेदमाः सा
तामातावदमानायात् मिममायमत्वरहिताः अशनाः याद्याप्यन्तरसङ्गरहिताः, कस्मादयमतथाह-ससारविप्रमुखा इतोः प्रथमा यतः ससारोद्धि
प्रमुखा कस्मादयेन चर्चयमा निममा चर्चयाय युग कथयता इत्याह-पयसनिवत्सठाया ॥ प्रदये रात्मप्रदवी नेतु यास्तपुद्रसेः शरीरपञ्चकस्या
पि मवात्मना त्यज्यतात् निवृत्तं निप्यत्रं संस्थान येयाते प्रदशानियुक्तस्थाना अथ शिष्यः पञ्चबाह-कश्चिपिज्यासिद्धाहत्यादि ॥ कश्चि इत्यत्र
ममवी वृत्तीचार्चमा कृतत्वात् ॥ यथा तिसुतिसुसक्तियापुत्रवीहत्यादि ॥ सतायमर्थः-कम प्रतिहताः कन सूत्रसिता सिद्धा मुक्ता सता क कस्मिन्

अत्रेता अत्रेयणा निममा अ्यसगाय ससारोयप्यमुक्ता पदेसनिवृत्तिसठाणा । कहिपनिहयासिद्धा कहिसि
द्यापइठिया । कहिर्योदीचइहाण कत्यगतूणसिज्जड ॥ १ ॥ अलोएपनिहयासिद्धा लोयगोयपइठिया ।
इहयोदीचइहाण तत्यगतूणसिज्जड ॥ २ ॥ दीहवाइस्सया अवरिमनवेइविज्जसठाण । तसोतिमागहीणा
सिद्धाणीगाहणान्णिया ॥ ३ ॥ सठाणतुइइ नवचयतस्सवरमसमयम्मि । अ्यासीयपदेसचण तसठाणतहि

वद्वनरहित समतारहित । सर्वपाप ससारनिष्पन्ना पयसनिवृत्तिसठाया २ । बाह्याभ्यन्तर सगरहित ससारयोमुखाया आत्मप्रदेगे बाह्यपुइह ५ यरो
र सत्यान रहितत्वे । कहिपनिहयासिद्धा कहिसिद्धापयइहा कहिवाहिवाइहाण कत्यगतूणसिज्जड ॥ १ ॥ शिष्यपूजे विवे प्रतिहृत जेवे सकनितत्वे सिद्ध
विवा विहरादे विवा बाधमरोर मूत्रोने विवा आर्ने सोमं-यथापयसिद्धायासिद्धा आयोगेवपयइया इविवाविवाइहाण तत्यगतूणसिज्जड ॥ २ ॥
पयाववरो पन्नाके धर्मास्तिबायादिकना पयाय लोकायु रक्षादे इवा मन्यवावे शरीरकाहीने तिवा आर्ने सोमं-दोक्त्याहस्यवाज परिमभवे
इस्मिमठाण तत्तातिमानदोषा सिद्धायाप्यइहाभविद्या ॥ २ योच ५ यमुप जल एववाच प्रमाचे जे जेइसेमये सज्जामे इवे ते सज्जामचवी निभाग
रोतपवे विवनी पयगाइमा कवी, दिवे अट देवाएवे-असठाणतुइइ नवचयतस्सवरमसमयम्मि यथोयएवचनयवे तसठाणतहिंनप्य ॥ ३ ॥ जे इहा ३

स्वप्ने भिद्युः प्रतिष्ठिता अवस्थिता । तथा च कस्मिन् चेन्नैवोदि क्षन्तु क्षरीरमित्यनर्थोतरे तां त्यक्त्वा ह गत्या सिद्धोक्त निष्ठितायो प्रवृत्ति । चि
 क्कृतस्यानुष्ठानरसोवो द्रष्टव्यः । अयमेकवचनोपस्थास्यपि सूत्रशोभ्या न विरोधजाय तयाचाप्यश्रव्येव प्रयोगः-अत्यगवसलकार इत्योष्ठस्यकाविय ।
 यच्छदाश्रमनुवंति नवेवावतिमुच्यते इति । एव शिष्यव प्रस हत सूरिराह-प्रसाएपक्रियासिद्धादित्यादि ॥ अत्रापि सहस्री वृत्तौयार्थे लोकेन
 कवसाकाक्षास्त्रिषाण्यप्यव प्रतिष्ठिताः स्युःप्रतिष्ठिताः सिद्धाः इव तत्र चर्मास्त्रिकायाप्यजाता तदामतयोधृतिरव प्रतिस्वसन्न ननु स्ववचयति विषयासो
 उप्रतिपत्त्यान् समप्रतिपत्तिं सुवचयति विषयासो नाप्ययामिति । तथा लोकास्य पञ्चास्त्रिकायात्मकस्य अय मूर्धनि प्रतिष्ठिताः अपुनरागत्या
 व्यत्यस्यता इव मनुष्यलोका योदि तन्नु त्यक्त्वा तत्र लाभाये समयाकारप्रवृत्त्यान्तराश्रमनेन गत्या सिद्धोक्त निष्ठितायां प्रवृत्तिं तत्रगतानां
 परवत्स्याममान तदभिप्यस्यु राह-दीर्घवाहस्ववाहत्यादि ॥ योपे वा पण्यपनु क्तप्रमाह इव वा इत्यहपप्रमाह वा ह्यद्वात मध्यमवा यिचिच य
 परमनये पद्यिमप्रय प्रवन् सस्यान तत क्षत्वा त्वस्याना त्रिजागधीना वदमोदरादिरप्रपूरयेन वृत्तीयन जानन धीना सिद्धाभामवगाहना यवगा
 इव अस्यानित्यवगाहना स्यायस्येव भावता लीयकरगकपरैरिति कश्च गतः सस्यामप्रमाहापकया त्रिजागधीन तत्र सस्यानितिभावः एतदव
 स्पष्टतरमपवर्शयति-असठावनुहइत्यादि ॥ परसस्यान यावत्प्रमाणं सस्यान इव मनुष्यजने वासोत् तदेव भवति प्राणिना यमवशवृत्तिनो ऽ
 स्मिदिति तदेव क्षरीर त्यज्यतः परित्यज्यतः काययाग परित्यज्यतस्यति भावः चरमसमय मूर्त्तमकियाप्रतिपातिव्यानवतन वदमोदरादिरप्रपूर
 वायिमागेन शीन प्रवृत्तपनमासीत् ॥ तदव च प्रवृत्तपन मूलप्रमाहापकया त्रिजागधीनप्रमाह सस्यान तत्र लाकाये सस्य वि

तत्स ॥ ८ ॥ तित्तिसयातेत्तीसा घणुत्तिजागोयहोद्वनायहो । एसाखलुसिद्धाण उक्कोसोगाहणान्निगया ॥ ५ ॥
 चक्षारियरयणीनु रयणितिजागूणिगयायथोघक्षा । एसाखलुसिद्धाण मज्जिमोगाहणान्निगया ॥ ६ ॥ एगाय

नयमय मस्य नइ ॥ तवेभवे कमवेये गरीरव उने कइलसमवे म्मविगयाआग वग्गादरगध पूरव कइवे घनपासोत बुने त प्रदय घनमन् प्रमापपेसासे

द्वयं मा ग्यदिति । मां प्रतमूरुष्टावगाहना विप्रदमित्याम प्रविशसु राहृ तिमिसुयातिस्तीमाहत्यादि ॥ श्रीविष्णुतानि प्रयच्छिंक्षानि प्रयच्छिंक्षदपि का
नि धमुत्तिभाग य प्रयति योदुष्यः एवायसु सिद्धमा मूरुष्टावगाहना प्रक्षिता तीर्थंरुगवपरे का य एव्यपनुः क्षवसनुक्षामा म वसया नन मरुदया
मात्रिकुपवरपयी मात य पव्यविशत्यपि कानि यं वपनु शतानि शरीरप्रमाणं यद्वय तस्य क्षरीरमात्र तदय मरुदेवाया छपि सययं सृष्टां सच
नं यय कुतगरद्विसममितिवचनात् मरुदेवाय प्रवती सिद्धा तत कस्या दृढमात्रस्य प्रिजाने पातित सिद्धायस्थायः सातुर्नि श्रीवि पनुः क्षता
म्वेवावगाहना प्राप्तेति क्य मुक्तप्रमाणा मूरुष्टावगाहना घटतः इति नैपदायः मरुदायाः नाजः किंचिदूनप्रमाणात्वात् स्थियोद्युतमसस्याना
वतमसस्यानस्यः पुरुषस्यः स २ कालापलया विचिद्रूममाणा जयन्ति ततो मरुदयापि पवपनु क्षतप्रमाणाति न कश्चिदायः, अपिच इति स्वस्वा
पिच्छः सक्तुचितानी सिद्धा ततः क्षरीरसकाशनमाणा कापिक्वावगाहनायंजय इत्यादिरोचः, काहव प्राप्यरुत-कहमरुदवामात्र नाजीतो जमकिचि

दीडरयणी। द्युठेययध्वगुलाइसाहियाइया । एसाखलुसिस्त्राण जहन्तोगाहणाभगिया ॥ ७ ॥ ढंगहणाएसिस्त्रा

विभाग तीनद्वयानुसारे, द्विवेद भूमयपञ्चाशे १११ पद्य उपरि घट्टयने बीजाभाग सिद्धनो पदगाहना इवे—ति। विसयान्तोसा भवतिमाग। हा
इत्यस्या एवपुनर्मिश्राय सत्तामात्राकामविद्या ॥ १॥ १ भट्टयने कायाये सिद्धवे तेहमो ए निये सिद्धनो उरकटपदगाहना इहो । वसादियरव
बोपा एववतिभागूविद्याकदाध्वना एमाकसुसिद्धावं मन्त्रिमयोमाहकामविद्या ॥ ० ॥ द्विवे ० काहमो पदगाहना इवे तेहने सिद्ध पवि एतको पदगा
हना ३ काहना बोजामान ऊचापुव खडकी ० काह देवदूत ए निये सिद्धनो मध्यमकहो पदगाहना —एगायथाएवको योक्तेवपगुवाह साहिवया
एवापुनर्मिश्रायकियामाहकामविद्या ॥ ८ ॥ द्विवे साठेनीमहायनो एनीइवे तेहमो पदगाहना इहवे एव उपर हाव पाठपगुनी खडिसे साठा
तोम ए अंर काह देहोइवे ए निये सिद्धनो अयन्वदनाहना भगवन्तकहो—उत्पाहकायमिहा भवतिभागूवपुनर्मिश्राय सत्तामात्राकामविद्या इत्यस्या
वाविपुसुहावं ॥ ८ ॥ अहमो पदगाहनाये सिद्धा तहमो पदगाहनाको विभागपदमाहटादि पूजकविद्ये पूजकरी कोम पुवे संस्थान भगवन्तकरी पुजे

रूपाया तो किरपचसपतिय चहयासंकोचतोसिद्धा ॥ १ ॥ अन्तारियरयकोष्ठे इत्यादि ॥ अतस्तोरवयो रजिय त्रिजागोभा ॥ ५ ॥ सा योचव्यायसासुसिद्धिदाना
 मवगाहना तखिता मयमा थाह-अपम्यपद सप्तहसोच्छिताभा मागमे सिद्धि रुक्ता तत एया अपन्या प्राप्नोति कथं मयमा तदपुच्छ धलुतश्राप
 रिष्टानात् अपम्यपदेहि सप्तहसामो सिद्धि रुक्ता तीर्थेकरापयया सामास्यकवल्लिना मु हीनप्रमाखानामपि तवति इदमपि चावगाहनामाम चित्त्य
 ते नामास्यसिद्धापेयया तता न अयिदोयः एगापदोयइत्यादि ॥ एकारिणि परिपुर्वा अहो चामुसास्यपिक्काणि एया त्रवति सिद्धा नामयगाहना
 अपन्या थाह अमोपुत्रादीना द्विहस्तानामवसया यदिवा सप्तहसोच्छितानामपि यम्यवीलनादिना खवत्तितक्षरीराका भावच न्यायकत्-जेहासुपच
 पखुसय मळायसतइत्तरव । इहतिप्रानदीका अङ्गिखियावाविहत्तस्य ॥ १ ॥ सन्मुखिएसुसिद्धी अहवतोअहमिषविहत्तसु साकिरित्तिययरसुं सेवाअवि
 ल्लमावाच ॥ २ ॥ तपुच्छोक्तायिहत्या कुम्भापुलादयोअहवत्त । अखसयन्टिययत इत्यादिहसहीबति ॥ ३ ॥ सामतमुक्तामुवादेनैव लखवं सिद्धानाम
 त्रिचित्तुराह सुनाहवापइत्यादि ॥ सुकर्म, नवर-अमत्यत्वमिति ॥ इद प्रकारमापयमित्य इत्य तिस्रतीति इत्यस्य न इत्यस्य छानित्तस्य यदना
 विमुविप्रतिपूरयेन पूर्वोकारान्यथात्वभावतो ऽमियताकारमितिप्रावः योपिच सिद्धाविनुयेमु सिद्धेनदीहेनइत्तइत्याविना बीपत्वादीना प्रति
 पयः नोपि पूर्वोकारापेयया सस्यामस्यानिरयस्यात्वा त्र्यतिपत्तयो नपुनः सवया सस्यानस्याप्रायत थाहव न्यायकत्-सुखिएपक्रिपूरकाष्टे पुष्कामार
 अइयवत्यातो । मठासमवित्थराचं अङ्गिखियकियपानार ॥ १ ॥ यत्तोक्षिययक्रिसेहो सिद्धाङ्गुबेसुवीरपाइव अमवित्थरयपुष्ठा गारावित्थवायना
 प्रावो ॥ मन्वतिसिद्धाः परस्पर दवाजदेन व्ययत्पिताः सगति नेति तद्भूमः अस्मावितिचेत् ॥ अत्ययइत्यादि ॥ यत्रैव दक्ष ॥ अत्यस्य एवकाराये

नयतिजागेणेहोइपरिहीणा । सठाणमणित्त्यत्य जजरमरणयिप्यमुक्ताण ॥ ८ ॥ जत्ययगोसिद्धो तत्तयश्चुण

राटि पत्तेवो जरामरच विपमत्तपेवरो सिद्धाव-अत्ययपयाविशा तत्तयपयताभावकयदिमुक्ता यथाअवमागछी पुष्टासर्वेविकोगते ॥ १ ॥ जिहो
 एव सिद्धे तिहा चगनासिद्ध मवसययको मूवावा सिद्धोभाये करोरहाजै पिय किम यथोअ समवगाहपवे यत्तितवरिचाम भवो धर्माप्तित्रायनोप

त्यात् युक्तः सिद्धो नियतः साधामनाप्रवृत्तयविमुक्ताः च तत्र प्रयत्नयइयेन श्लेष्यया प्रभावतरणशक्तिमरिसदृश्यवज्जोदमाह-अन्योन्यधर्मवगाढाः स्तथा विधाविनात्यपरिबामत्वा द्धमोक्तिकायादिवत् तथा स्पृष्टा सन्ता सर्वेपि लोकात् कुसहत्यादिरपुष्टत्यर्नतान् सिद्धान् स्वप्रदेशी रात्मसर्वपिप्पि नि यमश्च सिद्धः तथा तपि सिद्धाः स्वप्रवृत्तारस्पृष्टभ्योऽवस्थयगुढा वतत ये दशप्रद्वयैः स्पृष्टाः कथमिति चे बुध्यत, इहैकस्य सिद्धस्य मदवगाढमकृत् तत्रैकात्म्ययपि परिपूर्वै चवगाढा अन्यप्यनन्ता विद्वाः प्राप्यते अपरत्वं य तस्य शत्रस्य एवैकं प्रदेयमाकम्यावगाढा स्तपि प्रत्येकममता एव हि पिबन्तु पच्यन्तिप्रदद्याद्व्या य उत्रगाढा स्तेपि प्रत्येकममता स्तथा तस्य मूलखेबस्य एवैकं प्रदद्या परित्यज्य य उत्रगाढा स्तेपि प्रत्येकममता एव च मतिं प्रदद्यादुद्दिभिज्या ये समवगाढा स्त परिपूर्वैकप्रवगाढभ्योऽवस्थयगुढा प्रवन्ति अवगाढप्रदद्याना मसङ्कान्तत्वात् काश्च-एवेखेतवता पपमपरितुल्योद्दिष्टे तथा । भूतिअवयवज्जगुणा अवयवएवोक्तमवगाढोऽसम्पति सिद्धान्त्य लक्ष्यतः प्रतिपादयति-असरीरा इत्यादि । अविद्यमानाश्च

तान्नवस्तुपयिमुक्ता । श्यक्तीन्तसमोगाढा पृठासर्वेयिलोयते ॥ ९ ॥ फुसइष्ट्यणतेसिद्धे सप्तपएसेहिनिधमसो
सिद्धा । तविश्यसर्वेजगुणा देसपदेसेहिजेपुठा ॥ १० ॥ श्यसरीराजीव्यगणा उयउप्तादसजेयनानेय । सागा

[illegible]

रीरा अशीरा श्रीवारिकादिपण्यादिपञ्चदशीरदिता इत्यर्थः नौयाद्य ते पनाद्ये ध्वनीवरावैष्णोपरपूरणात् नौवपेनाः संप्रसारणेने केधेधेधेधेने
 घाने च अवसप्तान पद्यपि विमुक्तप्रानुसंगसमये कवसप्तानमिति घान प्रथमं तथापि धामान्यविमुक्तलक्षणमेतदिति घापमाये मादी सामान्यात्मन्म
 दद्यानमुक्तं तथाच सामान्यविषय दद्यान विधायविषयं घानमिति, ततः धाकारानाकार सामान्यविधायोपयागकूपमित्ययः, सूत्रे मकारो लाटिचि
 को लटव तदन्वध्यापयितश्चरूप मेतत् चमत्तरोक्त तु कथ्यते यस्यमाणनिरूपमसुविधायार्थः, चिट्टाणा निमित्तार्थाना मिति सम्प्रति केवसाद्या
 नदद्यानया रक्षोपविषयता मुपदद्यायति- केवसाद्याबुद्धताइत्यादि च कवसप्ताननो पद्युक्ता मत्सत्ताकारेण तदभावादिति केवसप्तानोपपत्त्या ज्ञात्य
 यगज्जन्ति, सयज्ञायगुक्ततायाम् सवपदार्थेणुक्तपर्यायाम् प्रथमो भागश्चाद्यः, पदार्थवचनो द्वितीयः पर्यायवचनः, मुख्यपर्यायो रत्नयं विधेयः-सव
 पत्तिनो मुक्ताः क्वसवत्तिनः पर्याया इति, तथा पद्ययति सयताः एतु रगुल्लब्धस्या धारणात् सयस्य कवसदृष्टिनि रत्नतामि इतः केवसद
 शोने रित्यर्थः, कयसदक्षेनामां चानेवता चिट्टाणामममत्वात् इहादी ज्ञानपद्वत् प्रथमसया तदुपयोगस्याः विद्यास्माति ज्ञापमाये, सम्प्रति निव
 पमतुगुताज स्ते इति दक्षयति-नविमत्तिइत्यादि । नैवादिता मनुष्याणां ज्ञानस्योदीनामपि तारवीर्यं नैव सर्वदेवाना मनुत्तरपर्याप्तानामपि य

रमणागार लक्षणमेयतुविस्तराण ॥ ११ ॥ केवलणाणयउप्ता जाणतीसुखजावगुगज्जाये । पासंतिस्सुखंउल्लु
 केवलदिठ्ठीहिणताहि ॥ १२ ॥ नयिथ्युत्यिमाणसाण तसोस्सकनल्यिसुखदेवाण । जसिद्धाणसुखं सुखावाहउ

घान रमणमविमये देवताइत्ये-समसरोराजोवयवा लक्षणादयथेयमात्रं सागारमकागार लक्षणमेयतुविस्तरा ॥ ११ ॥ केवलप्रानेसहित जावना सवेगु
 चनापार्थिब सखसवर्णी गुणकमवर्णी यणीव तेहन देये सखसखसुगुण्डस्य धनधारणोव कवसदोठां घनत केवसदयन भगताइरीन सिद्धवर्णी इहा प्रथम
 घानमगुह्य उपयाग विनधीमे इम जाविता पर्ये निवपम सुखभाजनमे ते देवताइत्ये केवस दोवानापम ज्ञानमनो सूक्ष्म मनुष्येने सखवर्त्तादिव ज्ये-सव
 मनाबुद्धता जावतोसमभाषपावतो सुखवसमभाषसु कवसदिष्टोपवताहि ॥ १२ ॥ नविमत्तिमनुष्याण तंमुक्त्तमविमयसदयवाच क्षितिवाचसुखं यम्मा

रिभ्युना श्रीरमव्यायापामुपगतानां न विविधा प्रयागा व्याघाता ता मुपसमीप्येन गताना प्राप्ताना यथा नास्ति तथा प्रग्योपवर्णयति-सु
 रगवसुहृन्मितादि ॥ सुरगवसुहृद्वसपातसुहृदं सुमहा संपूर्णं अतीतागतवत्तमानकालोद्भवमित्याद्यः, पुनः सर्वोद्गापिकृतं सर्वकालसमपगुञ्जित
 तथा नतगुञ्जमिति तदेव प्रमादं किंसासत्कल्पमया एकेकाकाशप्रदं स्याप्यतः, इत्थं सर्वकालाकाशप्रदं संपूर्णं यद्यप्यनतं प्रवर्तते तदन्तरमप्य
 नतं वर्तते यन्निगतम् तथाप्येव प्रकपगतमपि मुक्तिमुखं सिद्धिमुखं न प्राप्नोति, एतद्वयं स्वप्नतरं जगत्तरं प्रतिपादयति-सिद्धस्वप्नोरासीदित्यादि ॥
 सुराभा राक्षिः सुरराक्षिः सुसचक्राः सिद्धस्य सुसराक्षिः सर्वोद्गापिकृतं सर्वया साधययसितया अदृष्टा यस्तुल्यं सिद्धः प्रति
 ममयमनुव्रतति तदेकं चिदमीकृतं भित्तिप्रागः सोनंतवपनप्रको उज्ज्वलं वर्गमूलं एवमसितं अमर्तं वर्गमूलं कावदपकतितो यावत्सर्वोद्गापिकृतं नु

यगयाण ॥१३॥ सुरगगसुहृदसम्महं सर्वथापिक्रियश्चणतगुण । नविपावइमुसिसुहं णताहिबिब्रग्गवग्गुहि ॥१४॥
 सिद्धस्वसुहोरासी सर्वथापिक्रियजइहविज्जा । सोणतवममजइहं सर्वगासंणमाइज्जा ॥ १५ ॥ जहनममको

राइरवमया ॥ १४ ॥ मदीं मप तेहवा दउताता इन्द्राविकम जइहो सखमसिद्धं नवी कारं वावा क सिद्धं उपसमो यतिहो-सुरगवसुहृदसम्महं स
 भग्गापिक्रियपकतगुहं अविदविदमत्तसुहं अचतेहिंमविदग्गुहि ॥ १५ ॥ दउतातासखत सखसम्महं यतीता नायत वसमानवावा पुवे जेतकासुख सर्वा
 हापिकृतं सर्वकालसमं गुणितं यमगतगुणे प्रमादं अचत्तमयादि ॥ नो एकावागयदेमं वापित इमं सर्वसुखीकावागयदं यरोरे कपुवाय ते अन
 रता निविय ते विपतावाज्जे अज्जाउ ते परिपुंय सेवायमाउववी अचत्तमत्तसुर्वा पुवे यवमाउवदेमं अचत्तमत्तसुर्वा उज्ज्वलं-एगवत्तवता यपयसपरि
 वहुंउद्गाविपी तताहावीपा तताइवति अचत्तमत्तसुर्वा अममगाडा हिंवे सिद्धोक्तमं नवीहो-सिद्धस्वसुहोरासी सखहापिक्रियजइह
 रिम्वर यायतवगमइहो अज्जमायेममाइज्जा ॥ १६ ॥ सिद्धा सुखमोरागि सर्वा वापिकृतं सर्वसादि अययवसितये माचनसुखं यमवक तथा हिंवे क
 इपदेभा ॥ देगइहो, तसिद्धं यत्तसम्महं यत्तमय ते एवतावीजे ते एवताकाए अमममये मज्जिमे ता सर्वं कोवावागयसमाने, हिंवे एवमासुखं यममाये-अ

पकारणं गुह्ये यदपि ज्ञातं तस्य स्वस्यापवर्तनीः सिद्धत्वा वाः समयप्रादिसुभाश्रितां प्राप्तं इति प्रायः, धर्माकाशे न नाति एतावन्मात्रेऽपि सर्वो
 काश न नाति सधत्तु दूरापाकाशपर एवति प्रापमात्रे पितृश्रित्या पुनरपवर्तनं सुकराशोः, इयमवप्रावना-३३ किस विधिष्टाकावर्तनं सुखं प
 रिरुप्यते ततश्च यत् आरत्यं सिद्धमात्रो सुखद्वयमयति क्षमाद्वयमयति एकीकणुकरुद्धितारतम्यस्य तावदसावाकाशो विधिप्यत यावदवप्रावना
 दृष्ट्या निरतिगपकिता मुवगतः सोऽय मस्यतोपमातीतेकोतीरुसुखविनिर्मुक्तिरूप स्थितिगतमकल्प्य खरमाकाशः सदा सिद्धमात्रो यस्या वारताः
 प्रपमा धोद्वयगतारतम्यपतिनो ये गुहा क्षारतम्यना क्षारवायवयुक्ता सौ सर्वोकाशप्रदक्ष्यो व्यतिप्रायस क्षतः किलोत्त-सुव्यागासेनमाएज्या
 इति न स्वस्या तत्सर्वोकाशो न नाति तत्स्वयमकस्मिन् तद्वद् भावादिति पूजयूरिर्षप्रदायः साम्प्रत मस्य निवपमतो प्रतिपादयति-अद्वयमासत्या
 दि न यथा ताम कथिग्नच्छो नगरमुक्तान् यद्वनिवासादीन् बहुविधान् स्वकप्रकारान् जिज्ञासन् खरस्यागतः सुख स्वसूच्यो न क्षप्नोति परिह
 ययितुं कस्मा यक्षप्नोतीत्यत आह-उपमायो तन्नासत्यो निमित्तकारकहेतुनु सदासां विपत्तीना प्रायो दहनमिति व्यापारं हेतो वसमी' तत्र च
 उपमाया यनावादितिद्वयं यदगप्याखरायै, प्रावायः कथामकाशकलयकायवर्-एवोमद्वारणवाची मिच्छो रथे चिहति इतोय एगोराया कावेच

इमिच्छो नगरगुणयुक्ताधिजायते । अथ एतदपरिकहेतु उवमाएताहिंश्चसतीए ॥ १६ ॥ इयसिद्धाणसोऽसक इय
 गोयमनल्यतस्सर्गयम् । किंचिविससणिता सारिकमिणसुणह्योत्य ॥ १७ ॥ जहसहकामगुणिय पुरिसो
 नोत्तुणभोपणकोठ । तखदुहाविमुक्तो श्चिच्छिजजहाश्चमियतितो ॥ १८ ॥ इयसहकाठतिसा छुडलनि

इम सकारमिच्छा नगरगुणयुक्ताधिजायते नवपापकिद्वया उवमाएताहिंश्चसतीए ॥ १७ ॥ जिम नगरतावाचो ग्नेरक्षनगरना गुणयवर्ता ते नवकाचो
 रतेव पावर्तनं पवर्तयिता यावत्सकहेता ते कथो नसको नगरना यून न कारिमको पयमा नमर्मादिसो कथो खेषाच, पक्षतावतो कथो वसु वनसे का
 १ नदीम ए दृष्टोते करो-१यसिद्धाकामर्ष यवायमनल्यतम्यवायव्य किंचिविसेधविता सारिकमिणसुणह्योत्य ॥ १८ ॥ एवम सितनासुख उपमाः रचित

सिद्धिदुःखानां श्रीरामायणायामुपपत्तानां न विविधा भवायाः तां मुपशानीयेन गतानां प्राप्तानां यथा नास्ति तथा जग्योपदेशोपति-सु-
 रगच्छसिद्धिमित्यादि ॥ सुरगणसुखद्वयसंचारसुखं समस्त संपूर्णं यतीतानागतवत्तमानकालोज्ज्वलित्यर्थः, पुनः सर्वोद्गापिबिलतः सुवकाससमयगुणितं
 तथा रंतगुणमिति, तदयं प्रभावः विस्मासत्कल्पमया एवेवावाद्याप्रवृत्त्या स्वाप्यते इत्यत्र सुकलाकाशप्रदसंपूरणं यद्यप्यनंतं प्रवर्तते तदमन्तरमप्य-
 नंतं वर्तते वग्नितम् तथाप्यनंतं प्रकयेगतमपि मुक्तिमुक्तं सिद्धिमुक्तं न प्राप्नोति, एतदत्र स्पष्टतरं प्राग्यतरेण प्रतिपादयति-सिद्धस्सुहोरासीदित्यादि ॥
 सुगुणो राशिः सुयराशिः सुखसङ्घातः सिद्धस्य सुयराशिः सर्वोद्गापिबिलतः सवया साद्यपयवसितया च दद्या यत्सुखं सिद्धः प्रति
 समयमनुभवति तदत्र विवरीकृतं मितिप्रायः सोऽनंतवग्नजकोऽनंतं वर्गमूलं रपवसितः समते वर्गमूलं स्थावदपवसितो स्थावत्सर्वोद्गासक्येन गु-

वगयाण ॥ १३ ॥ सुरगणसुहसस्मत्तः सद्यःपिपिक्रियथ्यणतगुणः । नविपावइमुसिसुहं गताहिविवग्नवग्नगूह ॥ १४ ॥
 सिद्धस्सुहोरासी सद्यःपिपिक्रिजइहयिज्जा । सोणतवग्नजहृत् सद्यःगोसेणमाइज्जा ॥ १५ ॥ जहनामको

माइहवगयाण ॥ १४ ॥ नवी गता तेदया दवतानां इत्यसिद्धिं नवी कार्दवाया अ सिद्धिं उपसमो वतिहे—सुरगणसुहसस्मत्तः स-
 दयःपिपिक्रियथ्यणतगुणः नविपावइमुसिसुहं गताहिविवग्नवग्नगूह ॥ १५ ॥ दवतानासक्यतः सद्यःसमस्तः यतीता नागत यत्तमानकालो बुवे जितवासुखः सर्वा-
 दाविष्णितः सुवकाससमयः सुवित यजग्नगुणने प्रमायके पस्यत्कलाये इत्ये एकावाद्यप्रवेयं दापिय इमं सुकलासीकावायप्रदं गरीरे अ पबुवाय ते अ-
 नता मिबिद ते गिबतायकाने चकनाड ते परिपू चेषावनाडककोः असक्यतगुणी बुवे चकनाडप्रदेयं असक्यतवर्तते चकन—पग्यतयता यपयसपरि-
 वरुठ्ठाविधो वतायकोपा तयाववति पयसिज्यगुणा यसक्यपया जमवगाडा द्विहे सिद्धिगोचर्यच नवेहे—सिद्धस्सुहोरासी सुवकापिबिलतया अह-
 विज्जा भायतवग्नमर्हपो सुकलासेणमाइज्जा ॥ १५ ॥ सिद्धिना सुखनीराशिः सर्वा दापयित्त सर्वसादि यपयवसितपणे मायनासुखं समस्तं तथा द्विहे य-
 दपरेभाप देवाइने, तेसिद्धिं पूज्यसमये चतुमद ते एकठाकोजे ते गुणवगाद यजग्नवगे मज्जिये ता इमे कोवाकायजमाने, द्विहे एवमासुखं यजग्नाने—अ

यकारश्च गुरुने मदधिक आस तस्य स्वस्वापवर्त्तनैः शिशुत्वाद्यः समयप्राक्सुगमाश्रिता प्राप्त इति प्रायः, सर्व्याकाशो न भाति यथायन्मात्रेऽपि सर्वो
 काशः न भाति खलु दूरापाकाप्रसर यवेति आपणाद्ये पिवन्नयित्वा पुनरपेक्षान्नं सुकराशोः, इयमत्रावका-इह किस विधिप्राज्ञादरूप सुखं प
 रिरुद्धते ततश्च पत आरभ्य शिशुनां सुखद्वन्द्वप्रवृत्ति कामास्त्रादभयिकृत्य एकैकगुणवृद्धितारतम्यम तावदसावाह्नादौ विशिष्यत यावदभक्तगुण
 वृद्ध्या निरतिशयनिष्ठा मुपयतः साप मत्स्यतोषमातीतिर्बालौस्त्वविनिर्मुक्तिरूप स्थानितमकल्प्य शरभाह्नादः सदा शिशुनां यक्षा सारतः
 प्रथमा हीदुमपातरालवर्त्तनो ये मुखा क्षारतस्यना ज्ञादावक्ष्यरूपा लो सुर्वाकाशप्रवृत्त्या लो व्यतिश्रूयास क्ततः किंलोच-सद्वागासनमाएणा
 इति ॥ यस्येषा तत्सर्वकाशो न भाति तत्कथमकस्मिन् तदु मायादिति पूर्वयूरिर्लभदायः साक्यत मस्य निरुपमता प्रतिपादयति-कहनामत्या
 दि ॥ यथा नाम कदिग्नच्छब्दो नगरगुणान् यद्विनिवासादौ न् बहुविधान् धमकप्रकारान् विज्ञानम् अरस्यागतः सन् सत्यस्रच्छब्दो न झल्लोति परिक
 ययितुं कस्या यद्विज्ञोतीत्यत आह-उपमायां तत्रासुस्थो निमित्तकारणहेतुषु सदासा विमल्लोनां प्रायो दक्षमिति स्यात् प्रायो सप्तमी तत्र उ
 पमायां अनावादिति द्रष्टव्यः, उपमायाधुरार्थः, प्राकाशः कथामकादवसयस्तथद-एगोमहारकवासी निष्को रणे विहति इतोप एगोराया चावेव

इमिच्छो नगरगुणग्रज्जयिजागती । गद्यएण्डपरिकहेतु उवमाएतहिश्चसतीए ॥ १६ ॥ इयसिस्थाणसोस्क अ
 णोयमनल्यतस्समुयम् । किचिविससणिता सारिस्कमिणसुणहोत्य ॥ १७ ॥ जहसव्वकामगुणिय पुरिसो
 नोत्तण्णोयणकोह । तएहत्तुहाविमुक्को अण्णिज्जजहाअयमियतिस्सो ॥ १८ ॥ इयसव्वकालतिस्सा अउलनि

इन मकादमिच्छा नगरगुणैश्चद्विद्विद्यायता भवपापक्लिष्टया उवमाएतर्हिपसतीए ॥ १७ ॥ जिम जगरावासी म्मेरखनगरना गुणयथा ते मनवासी
 इतिव पापसे यवकायता चागमकहेता ते कडो नसको नगरना सूच न करिसके पपमा इनमोदिसो कडो देखाइ, पद्धतावतो छतोवसु इनमेवा
 इनदीम ए दृढात करो-इयसिस्थाणसो अण्णिज्जजहाअयमियतिस्सा सारिस्कमिणसुभाइत्य ॥ १८ ॥ एहवा चित्तनासुख उपमारहित

विष्णुना त्रींशमव्यायापानुपपत्तौ न विविधा यथाया ता मुपसानीयेन गताना प्राप्ताना यथा नास्ति तथा प्रयोपवृत्तपति-स्तु
रमस्तुष्टमिस्त्रादि ० सुरगवस्तुलं दधवपातस्तुलं समस्त वस्तुलं अतीतागतवर्तमानकालोद्भवमित्यर्थः, पुनः सर्वोद्गापिचिकृतं स्वकालसमयगुणित
तथा नतगुणमिति, तदेव प्रमाणं किंतासत्कल्पनया एकेकाकाक्षप्रवृत्त्याप्यते इत्यर्थं स्वकालाकाक्षप्रवृत्तन प्रवृत्ति तदनन्तरमप्य
नते वर्गे वाग्यतम् तथाप्यर्थं प्रवर्गेनतमपि मुक्तस्तुलं चिद्वस्तुलं न प्राप्नोति यतश्च स्पष्टतरं प्रंगतरेण प्रतिपादयति-चिद्वस्तुलंरासीइत्यादि ०
सुराणां राक्षि सुखराक्षिः सुखवद्भूतः चिद्वस्तु सुखराक्षिः सर्वोद्गापिचिकृतः स्वया साध्यपवसिष्ठया अदृषा यस्तुलं विदु प्रति
वमयमनुभवति तदेकत्र पिच्छीकृत्य मितिप्रायः सोमवदमजको जने वर्गे वर्गे रपवतिष्ठः अतस्ते वर्गेमूले स्तावदपवतिष्ठतो यवस्त्वर्वाद्गालक्षकम गु

वगयाण ॥१३॥ सुरगणसुहसम्नस सवरापिप्रियश्चणतगुण । नविपावदमुत्तिसुह णताहि विवग्गयग्गुहि ॥१४॥
सिद्धस्सुहोरासी सवरापिप्रिएजइहयिजा । सोणतवग्गजइत्त सवरासंणमाइजा ॥ १५ ॥ जहनामको

बाहवद्वयः ॥ १४ ॥ भवो मुख तेजसः स्वतन्त्रा इन्द्रादिकन जहो सखप्रसिद्धे भवो काहोवा स सिद्धन उपसमो मतिहो—सुरगवसुहसन्तं स
 भवपिंडियपचंतगुवं नविपियमर्नसुहं यकतेहिंयत्रिगूह ॥ १५ ॥ दवतानासधात सखधमसा यतोता नायत वतमानकासा कुवे जेतसासुख सर्वा
 दापिच्छित सबकाहसमव सुदित भनगतगुवने प्रमावके पसल्लसनाये हके एकाकाग्रप्रदेय दापिक इम सबसलोकाकाग्रप्रदेय ग्रोरेकपयुधाय ते अन
 रता विविच ते निवताहवाने सबकाह ते परिपूष येनाहमाहवयो पसल्लानतगुवा कुवे सभाहप्रदेय पसल्लानतबर्तो उअथ—पगल्लतयता पपरसपरि
 वट्ठहाविधो तत्ताहावोपा तत्ताहवति पसल्लानतगुवा पसल्लवपवा जमवयाहा द्विने सिद्धनसहोरासो सखहापिंडियाहवद
 विद्या सापतपरममहपो सखनायेतमाहवा ॥ १६ ॥ सिद्धना सुखनोराग्रि सर्वा हापिच्छित सर्वसादि पययवसितपके सासनासुख समवह तथा द्विने का
 उपवेभा देवाहजे, तेसिह पुज्जसमये चतुसव ते एवढाकोजेतेगुवाकार भननाये भजिजे ता सम कोकाकाग्रप्रमाने, द्विने एवढासुख भननाये—॥

पञ्चारुगुहने पदपिबं आतं तस्य सुवस्यापबन्धनैः, सिद्धुत्वा ह्यः समयजायिसुसमाश्रितं प्राप्त इति प्रायः, सर्वाकाशी न नाति यतावन्मात्रेपि सर्वे
 काशा न नाति सबलु दूरायास्तप्रसर यवेति ज्ञापनाये पिवकयित्वा पुनरप्यवतर्न शुकराद्यैः, इयमन्नप्रायमा-इह किञ्च विविदिष्टाङ्गावरूप सुखं प
 रिपुष्यते ततश्च यत आरम्भ सिद्धिर्नां सुखशब्दप्रवृत्तिं कामाद्वाधमपिहस्य यथैकगुणवृद्धितारतम्येन तावद्वसावाङ्गादौ विविष्यत यावदनन्तगुण
 दद्यात् निरतिगयमिष्टा सुपगतः सोऽप्य मत्यतापमातीतेर्नातीत्सुख्यविविधवृत्तिकरूप स्तिमिततमकल्प्य ब्रह्माष्टादः सदा चिदुनां यस्मा चारता
 मयमा बोद्धमपांतदालयतिभो ये गुणा सारतम्यना ज्ञादवशायकया स्ते सर्वाकाशप्रदक्ष्यभ्यो व्यतिप्रपांसु स्ततः विलोभ-सङ्गागामेनमाएज्जा
 इति च धम्मया तत्सर्वकाशे न नाति तत्त्वधम्मकस्सिन्नु सिद्धु मायादिति पूर्वसूरिर्धप्रदायः साभ्यत मस्य निरुपमता प्रतिपादयति-अद्वयमस्य
 दि ॥ यथा माम् अद्विगुह्यते नगरगुह्यते नगरगुह्यते नगरगुह्यते नगरगुह्यते नगरगुह्यते नगरगुह्यते नगरगुह्यते नगरगुह्यते नगरगुह्यते नगरगुह्यते
 यमितुं कस्मा यम्यतोतीत्यत आह-उपमायां तत्रासत्वां निमित्तकारकवैतुषु सदासां विजल्लोका प्रायो दृश्यमिति न्यायात् वेत्ती ससमी' तत्र उ
 पमायां ज्ञानादादिति दृश्य, यथापाशरायैः प्रायायः कथामकावसयस्तसदं-एगेमकारणवासी मिच्छो रक्ते विवति इतोय एगीराया चासेव

इमिच्छो नगरगुणयज्जायिजाणतो । अथएहपरिकहेउ उवमाएताहिअसतीए ॥ १६ ॥ इयसिद्धाणसीस्क अ
 णोयमनत्थितस्सत्तवम ॥ किञ्चियिमसणिता सारिक्कमिणसुणहोय ॥ १७ ॥ जहससुक्कामगुणिय पुरिसो
 नोत्तूणजोयणकोह । तरहत्तुहायिमुक्को अक्किज्जजहाअयमियतिसो ॥ १८ ॥ इयससुक्कालत्तिमा अउल्लनि

इम मकादमिच्छा नगरगुणविविधविशेषविशेषता नवपापाकलकथा उवमाणतहिपसतीए ॥ १७ ॥ जिम नगरमाकाशो म्मेवन्नगरमा गुणवत्ता ते वनवासी
 म्मेवन्न पाममं पववाविता पापलकहे ता ते कडो जममे नगरमा अण्ण न करित्तमे य'पमा वनमा'दिसो कडो वेकाड, पण्णतावतो जतोवसु वनमे का
 ई'नदोम ए दटति करो-इयसिद्धाकण्ठं यथावमत्थितपथाकण्ठं किञ्चियिमसणिता सारिक्कमिणसुणहोय ॥ १८ ॥ एवमा विवतासुष उपमारहित

स्वप्नरितो स प्रमत्ति पयमती तव दिठो सकारेकृष अवमय नीतो रजावि सो मगर पन्ना उवगारिणि शारुमुपचरितो जहा राया चिह्न पयस
 परापूर्वोपेय वि वासा कासव रणं खरिषमारदो रजा विसर्जितं ततो राक्षणा पुष्कन्ति करिष मयरति सो विषाकतो वि तत्योयमात्राया न सु
 क्क इ गमरगण चरिक्कइठ मस दिठतो आयमर्षोपमय ॥ इयसिदुबमित्यादि ० इति एय सिद्धाभा सीर्यममपम वस्तव किमिति तत साइ-यतो
 नास्ति तस्योपम्य तथापि पालजनप्रतिपत्तय किंचिद्दिशय ॥ इति ॥ इति चायत्ता दस्यत्यर्थः सादृश्य मिद वस्त्यनाय प्रयुज ॥ अइसवेत्यादि ०
 ययस्युदाहरबोपदक्षमायः प्रुत्यते इति प्राक्तम स्वकामगुणित स्वस्तसीर्यससकत कापि पुरुषा मुक्ता शुभम्विमुक्तं कुन् यथा अचरावस तथा
 तिष्ठति ० इयइत्यादि ० इति एव निर्बोण मोक्षमुपयता चिदुः स्वकास सादापयवसित कालं वसाः सवयोसुख्यविनिवृत्तिजाततः परमसतो
 पमचिगता समुलमन्यसदृश सुपमातीतत्वात् क्रायत प्रतिपाताजावात व्यवासाय सतातोपि व्यायाचाया अवस्तवात सुख प्राप्ता अत एव
 मुनिन स्तिष्ठति एतदेव वाविशयतर प्रावयति-सिद्धितियइत्यादि ॥ चित्त बटमष्टकार कम आत तस्मीकृतं ये स विदुः पयोदरादय इति
 रूपनिष्पत्तिः निर्दग्धानेकमवकर्मणा इत्यर्थः तत्र सामान्यतः कमोदियिहा अपि त्वन्ति एत उक्त-कस्मसिष्यपविज्जाए संतजोगवध्यागमः ।

धाणमुग्रगयासिद्धा । सासयमहावाह चिठतिसुहीसुहंपप्ता ॥ १९ ॥ सिद्धतियबुद्धसिय पारगततियपरपर
 गतसिय । उम्मुक्ककम्मकवया स्यजरास्यमरास्यसगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्नससुद्धुस्का जातिजरामरणबधघात्रि

तइवं मयतो चापमा इही मनुजमानही ताओ विव वाचकमने वरुक्काभाने येय एया इच्छायाज वज्जमाव चचता एक्का तातवावध्या ज संभस-
 इयमकामगुणिव परिमामनूक्कायक्काइ तचइकाकुडविमक्का यच्छिज्जज्जापमिक्कता ॥ १८ ॥ जिम मयकामगुणित मज्जमोन्दय सुक्कन एदवभाज
 न काइवसय ओमोन मावज्जरोन तथा सुइये मूक्कावक्का इण्णिन चगतत्थवा जिमरक्के-इयमज्जज्जावत्तिता पाठवमिक्काचमगयानिश्वा सामयम
 भावाइ चिठतिसयामइपत्ता ॥ २ ॥ इम स्वक्कास सिद्धसादि चपयवाचत कावकणे जसवक्का परमसताप पाय्या पपुक्क चक्काभेसरोक्का पुक्कपा ध्या

चत्पुत्रमाचमिष्याम मयेकस्मिन्नायुधया ॥ १ ॥ ततः कर्माक्षिरोक्षुद्रा व्यधोषायाह-मुद्राहति ॥ अद्यामनिद्राप्रसुप्तेभ्यस्त्यपरोपनेभ्यम जीवादिरूप तत्त्व
 मुद्रार्थता मुद्राः मयप्रसुपदक्षिणप्रायवधीपक्षपा इतिज्ञाव एतदपिच ससारनिर्वाणप्रयपरित्यागव न स्यात्तवतः, कीर्यिद्व्यंते-ससारं न य निर्वर्धये
 स्थितो नुममजूनय व्यधित्यःसुवसोक्षानां त्वन्कार्त्तापिबोधोमहाति तिवचभातु तत क्षान्तिरासाद्यमाह-पारं पर्येत ससारस्य प्रयो
 जनग्रातस्य या गताः पारगतः तथा प्रव्यत्वाक्षिससक्षप्रयजनसमास्या निरवक्षयकलंख्यञ्जित्प्रिमुखा इतिज्ञायः इत्यंजुता अपि कैदितु य
 दृष्ट्यावादिभिरज्जमसिद्धत्वापि गोयत तयोक्त-मैकाविसङ्काकमतो चित्तप्राप्तिनिर्वाणतः । इतिप्रराज्यासिसमा सहस्रमुक्ति क्षविकलिं ० १ ॥ तत
 क्षान्तनव्यपापाया-परम्परगतता इति ॥ परम्परया प्राक्तनज्ञानचारित्र्यकृपया मिथ्यावृत्तिसाक्षादवसम्यगमिथ्यावृत्त्यविरतिसम्यग्दृष्टिदक्षविरतिप्र
 मत्तनिपुण्यनिवृत्तिपादरसम्परायसूक्ष्मसम्परायोपज्ञानमोहबीजमोहसर्पगिकत्वस्वयोगिकत्वस्तिगुहस्यानप्रदनिक्षया गता एतच्च कैपि तत्त्वसो नुमु
 त्तकमक्षयचा समुपगम्यते धीपनिकारदक्षानादिद्विगच्छतीति यच्चमतः पुनः संसारावतरणान्मुहमाह-तन्मतापाकरणाद्यमाह-तन्मुक्तकमक्षयचा
 प्रमायस्यमा पुनजवद्वयतया मुक्त परित्यक्त कर्मक्षयमिव कर्मक्षयं ये सा तन्मुक्तकमक्षयचा, अत एव अक्षराः अक्षरीप्राप्तवतो वरसोऽनावात्,
 प्रमरा प्रप्ररीरत्वाद्य माहस्यागावत्सवात् तत्त्व-मयवीर्यावीरकरा पावकाऽष्टयमररुमादिष्ठ । सहस्रहमिततुजय तदनावेनकस्त्व ॥ १ ० ॥

निर्वाण पाठता मिह साक्षी प्रतिमतनपमात्र पदाधो विभारपदाधा नक्षी विहो ० तस्ये सखपास्या एतस्ये मखेरकेके, द्विवे विप्रोपपचे खखायेवै-नि
 इतिप्रयवति पारमनिमपरपरगतिय कमक्षयक्षयया पकरापमरापनगाय ॥ २१ ॥ कोबाकम भक्षकरोन यत्र ननिद्रा मूक्षो क्षाक्षो मभारोपोपर
 वास्यावे वरपराये मिथ्यात् १ साक्षादन २ का बीदया प्रयागोयवठाये परंपरावेवठीने गोपाये मूक्षावे कमनाक्षयच वसे दृगपवेवठो वसे मूक्षाये
 कमक्षयच गरीरमावे ज्ञानोपभाक् यमर प्रप्ररीरमाष्टे बाज्याध्यगतसगरविष्ठ-निष्ठिक्कसवदक्षा कार्त्तामररवपक्षविमका पाशावाहमुक्त य
 प्रप्रपंसासयसिद्धा ॥ २२ ॥ ये निष्ठिक्क सखदुपवको सवितये धाति ज्ञामररव कमनाक्षयचो मूक्षाया पदाधविमा सुखमति पास्या एष्टया सास

सुगा यास्याप्यन्तरगङ्गाद्विस्तृताम् ॥ निम्बिमेत्यादि ॥ निस्तीर्णे सङ्कित घर्मे दुर्धं ये स्ते निस्तीवसर्वदुःखाः ॥ फुल इत्याह-जातिक्करामरशयचण्डि
मुक्ता ॥ जाति चेन्न जरा ऋयोद्गमिस्तका भरव प्रावस्यागद्वयं बन्धमानि तन्निबन्धरूपाणि कर्मोचि ते विंशोपतो निश्चोपापगमनन मुक्ता जाति
करामरवधन्धनविमुक्ताः देवाविषं प्रथमा यतो जराभरवधन्धनविमुक्ता स्ततो निस्तीवसर्वदुःखाः कारकाप्राप्तात् ततो व्याघाच खीक्य प्राप्नुत
विश्वे चभुव्रवन्ति ॥ इति श्रीभक्त्यविरिचिताया प्रज्ञापनाटोकाया द्वितीय पद समाप्तः ॥ २ ॥ व्याख्यात द्वितीयपद भुवना
यतोय मारज्यत-तत्सवाय मजिसम्बन्धः, १३ प्रथमे पद पृथिवीकायिकादयः प्रज्ञप्ता द्वितीये ते एव स्वस्याभाविना चित्तिता अस्मिन्नु तथा
विगुणानादिना अत्यवशुत्वादि निरूप्यत तत्रदमादौ हारसग्रहबाणादय-विस्मिगङ्गदियकायइत्यादि ॥ प्रथम विगुहार् १ तदनन्तरं गतिगुहार् २ तत
इन्द्रियगुहार् ३ ततः कायगुहार् ४ ततो योगगुहार् ५ तदनन्तरं वदगुहार् ६ ततः कृपायगुहार् ७ ततो लेश्यागुहार् ८ सम्यक्तागुहार् ९ तदनन्तरं ज्ञानगुहार् १०
तथा दर्शनगुहार् ११ ततः समयगुहार् १२ तत उपयागगुहार् १३ तत आहारगुहार् १४ ततो नायकगुहार् १५ ततः परित इति परीक्षा प्रत्येकशरीरिका
प्रकृपाचिका य तद्गुहार् १६ तदनन्तरं पर्यासिगुहार् १७ ततः ब्रूयगुहार् १८ तदनन्तरं खम्बिगुहार् १९ ततो ॥ अथपि ॥ भवमिह्निगुहार् २० ततो स्तोति

मुक्ता । स्रग्वाद्याहस्तक स्पृणुहोतीसासयसिद्धा ॥ २१ ॥ वितिय पद सम्मत्त ॥ २ ॥
दिसिगहदियकाए जोएवेएकसायलेसाय । सम्मत्तणाणदसण सजयउवत्तगस्याहारे ॥ १ ॥ नासगपरिहप

ता संप्रति पाप्मा तेदहासख पनुमखे । पखरबाएठाकपयवितियसखत २ । इति श्रीप्रभापनाम्ना पखवनीरपनि द्वितीयपख समाप्तवयो देवता मनुष्य मारको तिवख इत्यावस्मान्क विवरा ॥ २ ॥ तिसिगइइदियबाप काण्ठेयइसाराखेम्हाए सखलबाकदुमख सखरसवसाम पाइारे १ ॥ डिमिहार गतिहार इ प्रिवहार कावहार बाग मेद कपाय खेला सम्यत्त प्रान खान सबत कपडान खाइार १४—मासापरितपज्जत मइमनकोमइमोए हरिमज्जीवइवित्तखे पव्वसमइइइएव २० इार दिखानुवाएव मायाइार पव्वसमठोर मुक्कवख व्याय पर्याप्ता मज्ज सखी मव

वास्तव्यापहारं २१ तत परमद्वारं २२ तवमद्वारं जीवद्वारं २३ ततो यन्मद्वारं २४ ततो यन्मद्वारं २५ ततो यन्मद्वारं २६ ततो यन्मद्वारं २७ इति
 सर्वमनुया सप्तविंशतिद्वाराणि ॥ तत्र प्रथमद्वारं सप्तविंशतिद्वाराणि जीवा पश्चात्त्यमेव मित्यादि ॥ २४ दिक्काः प्रथमं याया
 रास्मे यने अनेक्यकारा व्यावर्धिता सायश्च येनविद्याः प्रतिपत्तया स्तासा नियतत्वा दितरासाच प्रायो अकारित्यतत्वा अनुपयोगित्वाच येनदि
 द्याच प्रथमं स्तिपप्लोकाप्यगवापदप्रदका दुर्बलात यत उत्त-अठपसोरुपको तिरियसोपस्समस्किपाररिचि । एषपप्रयोदिदाय एषवचयेअदु
 दिसावमिति ॥ १ ॥ विद्याः समुपातो दिगनुसरत् तेन विद्यो चिह्नयेति तात्पर्यार्थः । स्वस्तोका जीवाः पदिमेन पदिमाया दिशि कथमितिबन्
 -उच्यते-इदं एषपयदुत्त वादरानपिहत्स इष्टया नसम्माया सर्वसोकापकाला प्रायाः सर्वत्रापि समत्वात् । वादरेवपि सध्ये स्ववचनवो वतसपति

ज्ञातं सुकामसखीयनवत्यिसेचरिमे । जीययस्तेस्तथये पुग्गलमहदनुचेव ॥ २ ॥ दिसाणुवाएण सखुत्थोवा
 जीया पञ्चिक्खिमेण पुरिक्खिमेण विसंसाहिया दाहिणेण विसंसाहिया उत्तरेण विसंसाहिया दिसाणुवाएण सखु
 त्योवा पुढियिकाइया दाहिणेण उत्तरेण विसंसाहिया पुरिक्खिमेण विसंसाहिया पञ्चिक्खिमेण विसंसाहिया
 दिसाणुवाएण सखुत्थोवा श्याउकाइया पञ्चिक्खिमेण पुरिक्खिमेण विसंसाहिया दाहिणेण विसंसाहिया उत्त

विधि पति वरमद्वार जीवद्वार सप्त पुढस मन्नाद्वार १० वममावापहार कक्षा विमिपात्रो । सप्तत्वावा जीवा पश्चात्त्यमेव परस्मिमेव वि
 सेवादिवा वादिसेव विमसाहिया उत्तरेण विसेवाहिया । स्वकीय वाहा पदिम केमको अस्मित देवतावाहाय योतमद्वीप पयिपने कथय तेमाटे पाथो
 वाहा वाटयाचो वनसतीनापमाव तेमाठ पव विगयाधिच जमाटे योतमद्वीप मको दधिच स्वकीय विगयाविच जमको तेमाटे पाथोवथो तिहा का
 ववथी वन्म मूत्र होपमको तेमाटे पधिच वतरे विगयाधिच कोत्रम ठ याज्जम कोटालाटोप्रमाच मानस २ पसध्यातमेहोप तेमाटे । टिसाववाएण
 समत्वावा पापकारया पश्चात्त्यमेव वि० वादिसेव वि० उत्तरेण वि० । ववादिगयात्रो सप्तवता सप्तवको पुब्बावाय वाहा दधिच जिहा वन तिहा ।

युगा यास्याम्यन्तरयद्गुरदितत्वात् ॥ निष्क्रियेत्यादि ॥ निष्क्रिये सांस्तुत सन्ने दुष्टं ये स्ते निष्क्रियसर्वदुःखाः' कृत इत्याह-जातिज्वरामरशयचण्डवि
 मुक्ता ॥ जाति ज्वरामरशयचण्डवि कर्मोचि ते विंशोपतो निक्षेपापममन मुक्ता जाति
 ज्वरामरशयचण्डविमुक्ताः इतिविषयं प्रथमा यतो ज्वरामरशयचण्डविमुक्ता स्ततो निष्क्रियसर्वदुःखा कारकाभावात् ततो व्याघात सौख्य शाश्वत
 सिद्धा अनुभवन्ति ॥ इतिष्ठीनसयगिरिविरचितायां प्रज्ञापभाषीकाया द्वितीयं पदं समाप्त ॥ २ ॥ व्याख्यात द्वितीयपदं अनुभा
 वतीय मारज्यते-तस्यैव मरिचसम्बन्धः, इह प्रथमे पदं पृथिवीकायिकादयः प्रज्ञाः, द्वितीये ते एव स्वस्थानादिना चिन्तिता अस्मिन्नु तथा
 गङ्गागगादिना अल्पवस्तुत्वादि निरूप्यत तत्रवमाहौ द्वारसप्तगङ्गादय-दिसिगङ्गादियकायत्वादि ॥ प्रथम दिग्द्वारं १ तदनन्तरं गतिद्वारं २ तत
 इन्द्रियद्वारं ३ ततः कायद्वारं ४ ततो योगद्वारं ५ तदनन्तरं यदद्वारं ६ ततः अद्याप्यद्वारं ७ सम्पन्नद्वारं ८ तदनन्तरं ज्ञानद्वारं ९
 ततः दक्षानद्वारं ११ ततः संपन्नद्वारं १२ ततः उपयोगद्वारं १३ ततः साधारद्वारं १४ ततो प्रायकद्वारं १५ ततः परितः इति परीता प्रत्येकशरीरिणः
 मुख्यपाठिका य दद्वारं १६ तदनन्तरं पर्याप्तद्वारं १७ ततः शूलद्वारं १८ तदनन्तरं सन्निधद्वारं १९ ततः ॥ अर्वात्ति ॥ अर्वात्तिद्वारं २० ततो स्तोति

मुक्ता । अथाथाहनुस्क अणुहोतीसासयसिद्धा ॥ २१ ॥ वित्तिय पदं सम्मत्त ॥ २ ॥
 दिसिगङ्गादियकाए जोएवैएकसायलेसाय । सम्मत्तणाणवसण सजयउवट्ठगस्याहारे ॥ १ ॥ ज्ञासगपरिज्ञप

ता यद्यप्रति पाप्मा तेजशामस्य अनुभवः ॥ पञ्चनखाएठाअपसदितियसकत्त २ ॥ इति श्रीप्रज्ञापनाख्याना पञ्चनखाएवपणे द्वितीयपदं समाप्तबोधो देवता
 मनुज नारको तियह इत्यावसानम विवरा ॥ २ ॥ दिसिगङ्गादियकाए ज्ञाणवैएकसायलेसाय सञ्जयउवट्ठग सजयउवट्ठग
 पाहारे १ ॥ दिसिगङ्गादियकाए गतिद्वारं २ द्विद्वारं कायद्वारं याता वेद कयाय कोट्या सम्बन्ध ज्ञान सञ्जय उवट्ठग पाहारे १४-भासापरितपज्जत
 मनुजस्योभयद्वीए चरिमज्जावचिन्तनमे पण्डितमहर्षेज्वरचन २० द्वारे दिसाकुशाएव भासाद्वार प्रज्ञाज्योरेर मुक्तपण व्याप पर्याप्ता मूला यत्रो भव

अस्तिमायद्गारं २१ तत धरमद्गारं २२ तदमन्तर बीजद्गार २३ ततः क्षेत्रद्गारं २४ ततो बन्धद्गारं २५ ततो मुद्राद्गारं २६ ततो महाद्वारं २७ ततो मन्त्राद्वारं २८ इति सर्वेषु सप्तविंशतिद्वाराणि ॥ तत्र प्रथमद्गार मन्त्रिण्यासु राह-विंशत्युवाएवं सद्योवा जीवा पञ्चत्येव भित्त्यादि ॥ इह दिक्कः प्रथम भाषा रास्ये चने अनेकप्रकारा व्यावर्तिता साह्य क्षेत्राद्वयः प्रतिपत्तया साक्षां नियतत्वा दितरासाध प्रायो अन्वस्थितत्वा दनुपयोगित्याह चेन्नदि स्त्रीच प्रपन्न विपयुत्तोक्तमप्यगतादसम्बन्धा दुर्बलात्, यत उक्त-अष्टपञ्चोक्तयोगो तिरियसोपस्थमन्त्रिकयारम्भि । एषपञ्चोदिसाह एषपञ्चोदिसाह विंशत्यमिति ॥ १ ॥ दिक्का मनुयातो दिगनुसरं तेन दिगो चिह्नस्येति तात्पर्यार्थः । सबलोका जीवाः पश्चिम पश्चिमाया दिशि क्षयमिति नत् -उच्यते-इह इत्यप्युक्तं वादरानपिकस्य ब्रह्म नसुखाको सर्वलोकापलाना प्रायः सद्यपि समत्वात्, आदरेष्वपि मध्ये सबन्धवो दत्तरपति

ऊत सुजमसणीयनवत्यिसेचरिमे । जीययस्वेतयधे पुगलमद्वन्द्वएचव ॥ २ ॥ दिंसाणुआणु सद्युतोवा जीया पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विंसेसाहिया उत्तरेण विंसेसाहिया दिंसाणुआणु सद्यु त्योवा पुढविकाहिया उत्तरेण विंसेसाहिया पञ्चच्छिमेण विंसेसाहिया दिंसाणुआणु सद्युतोवा आउकाहिया पञ्चच्छिमेण विंसेसाहिया दाहिणेण विंसेसाहिया उत्त

विधि पश्चि धरमद्गार बीजद्गार क्षेत्रद्गार मन्त्राद्वार २० बसनाभासद्गार कक्षा दिगिषाथी । सप्तत्वाभा जीवा पञ्चच्छिमेण परस्मिन्नेव वि सेसाहिया दाहिणेव विंसेसाहिया उत्तरेव विंसेसाहिया । सबलोका भावा पश्चिम लोको सखित देवताभावास योतमद्वोप पश्चिमेन सबव तेमाटे पाथी वाहा बाउगाथो बन्धतोनापभाह तेमाट पथ विपयादिह अमाटे योतमद्वोप नवी पश्चि सबलोका विपयादिह अमको तेमाटे पाथीअथी तिथी आ नयनी चन्द्र सूर्य होपनवी तेमाटे पश्चि उत्तरे विपयादिह जीवमाट याजन लोकाभाहोमभाह मानस २ पञ्चव्यातमेहोय तेमाटे । विंसाहवाएव समत्वाभा पादवाहया पञ्चच्छिमेव दि० दाहिणेव दि० उत्तरेव दि० । यथाविग्याथी सद्यत्वा सबन्धो पुजाकाय वाहा पश्चि दिग्वा घन तिग्वा

कायिका एतन्तत्तया तेषां प्राप्यमात्रत्वात् ततो यत्र ते ब्रह्म स्तत्र यदुल्लेख्यं तत्रात्स्य वनस्पतयः स तत्र यद्बो यत्र प्र
 नूना अपि " जल्यत्रस्तत्त्वव्यभिक्तिक्रमत् " साक्षादर्थं पञ्चसेवासादीनां प्रायात्, तेन पञ्चसेवासादीये वसमाना अपि य
 त्पञ्चसेवासादीनां दत्तिप्रभृत्यपि सादीनां सवत्र सन्तोपि न चक्षुषा प्राप्या, तथा बोध्यमयुगलारपु-तर्षं यासुगाद्युपपन्नोवत्सु सरी
 रोणादुपादिष्वो यस्य यन्त्रमुखा इति, ततो यथापि नैते वृक्षयस्तत्रापि ते संतीति प्रतिपत्त्या आह प मूलटीकाकारः-इह सवयद्बो वनस्प

रेण विसेसाहिया, दिसाणुवाएण सवत्योया तेलकाहया दाहिणुत्तरेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया पञ्चच्छि
 मेण विससाहिया दिसाणुवाएण सवत्योया वाडकाहया पुरच्छिमेण पञ्चच्छिमेण विसेसाहि
 या दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सवत्योया वणस्सइकाहया पञ्चच्छिमेण
 पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सवत्योया येइदि

वर्षास्मोकाय सर्वैरे तिर्षा चादी नरकायास चर्षा, तेषां पादास चर्षास्मोकाय साक्षादर्थे एवोकाय चर्षास्मोकाय पूर्व विसेसादि
 क एवोकादर्थे चन्द्र नू होपमाटे । परस्मिन्नेव वि पञ्चच्छिमेव वि । चन्द्र नूहोप पूर्वपश्चिमे एवम विसेसादि क एवोकादर्थे । हेतौवम होपमा
 ट एवोकायविमेष तथा पश्चिमे एवोकायविमेष दिक् तथा विम पश्चिम पश्चोकोक सासादिसद्वयसाजनादि चर्षासादर्थे सात पूर्वित स्वायेन तत्तुल्य
 न विसेसादिक् । दिमाचभाएव सवत्याया पाठकाहया परस्मिन्नेवदादिवेव वि० उत्तरेव वि । दिग्भीमेवो जोवती सर्ववाडा पञ्चसाहयाओव पश्चिम
 कमाटे भोतमहोप पश्चिमे तेषांते योको तिर्षाकाया पूर्व २ विसेसादिक् होपमे चर्षास्मोकाय पूर्व विसेसादिक् जमर्षो चन्द्रसूहोप जवो उत्तरविसेसादि
 क कमाटे मागमरावरत्ते । दिसाणुवाएव सवत्याया तेलकाहया दाहिण उत्तरव परस्मिन्नेव सवत्यागुवा पञ्चच्छिमेव वि । दिग्भायो जावता वा
 डाचव तेलकाद एविव मरत उत्तर मरत दिग्भायाते यत्र पिववाटी तेइवकी पूर्व यद्विसेसाहिया मकाविदेइमाटे प

तपः इति कृत्या यच्च ते संति तच्च यदुल्ल जीवामा तर्पा च यदुल्ल "अन्त्याउकाउेतत्यनियमायणस्सउकाइयाइति पखणसेवासहताइयायराविहीति सुदुमायाकानिज्जानकल्लइति , उदकं च प्रपूत समुद्रुपु द्वीपदिगुवविफलात तमपिच समुद्रुपु प्रत्यक प्राचीमतीचीविद्या यथाक्रमं चन्द्रसूये द्वीपा यायतिच प्रद्वेये चन्द्रसूयद्वीपा यवगाद्या स्तावत्यदकाप्राव उदकाप्रावाच प्रमस्यतिकायिकाप्राव क्वल प्रतीच्या दिशि लववसमुद्राधि पतुल्यतनामदयावासूता गीतमद्वीपा लववसमुद्रु अप्यिका वसते तत्र च उदकाप्राथा हुनस्यतिकायिकाभी भजावात् सवस्त्राका लीवा पयिमा या दिशि तस्या विज्ञेयाधिकाः पूर्वस्या दिशि लवहि-गीतमद्वीपा न विद्यत तत स्तावता विज्ञेयेवायिका प्रकल्य तिरिज्यत तस्योपि दक्षिणस्या

या पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण त्रिसेसाहिया दाहिणण त्रिसेसाहिया उत्तरेण त्रिसेसाहिया , तिसाणव्वाएण सव्वत्थीया तेइडिया पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण त्रिसेसाहिया दाहिणेण त्रिसेसाहिया उत्तरेण त्रिसेसाहिया ,

विम विमयाधिक पधायासावि चर्वासाट । दिमाचवा०ण सव्वत्थावा वाउकाइया पुरच्छिमण पञ्चच्छिमण वि । दिमयायो जीरती सव्वयोमाळा वासु पूर्व जलको पनममि चर्वाके तमाटवाउकाडा पयिम विमयाधिक जलको पञ्चासाकवर्वा तमाट वाकववा उत्तरे दिग्गे नरकावासागेठामे पाळाड लको साटदविचे विमयाधिक नरकावासा चर्वा तिही वाउ चर्वा । दिमाचवा०ण सव्वत्थावा पञ्चच्छिमण पुरच्छिमण वि । दिमनाम्ले सव्वे वाडा वनम्वतोकाव पयिम जलको गीनमवाय जलकाडा तिके माटे वनम्वतो पियवाधिक गीतमद्वीप लको तमाट पावाचवर्वा न वन वि चर्वा । दाहिणच वि उत्तरण विमयाहिया । दक्षिणतविच चन्द्रमूलापनवा तेमाटे उत्तरेवि मागमदावरको चयेवाये वनम्वतो । दिसाचवायण स वत्थावा वेद दिग्वा पञ्चच्छिमण पुरच्छिमण त्रिसेसाहिया दाहिणण विमयाहिया उत्तरेण त्रिसे । दिग्गोम्ले सव्वत्थावा वा द्वि पयिम त्रिही पावाडा वा तेमाटे गवादि वाडा पूर्व विमयाधिक पावाच १ तमाट दक्षिणे विमयाधिक चन्द्र मयू द्यौपमद्वी तमाट पावोववा वाग्निद्वय विमयवर्वा उत्तर वि मयाधिक स मवरावरमाटे । दिसाचवाएव सव्वत्थावा तोदवा पञ्चच्छिमण पुरच्छिमण वि दाहिणच वि उत्तरण वि । दिमनाम्ले सव्वत्थावा तेद्वि

कायिका धनन्तयभूततपा तेषां प्राप्यभाजत्वात् ततो यत्र ते यद्वय सात्र यदुल्य लीवाना यत्र स्वल्पे तत्राप्यस्व- धनस्यतप यः तत्र यद्वयो यत्र प्र-
 नूना भावः " कृत्यव्रततत्त्वव्यभिचिकचनतः, लक्षणादय पत्रकसवासादीना आवात् तत्र पत्रकसवासादयो वादरभासकर्मवये वर्तमाना अपि य-
 त्पत्रमूलस्यवगाहनत्वा दतेममूत्रपिबलीभावात् सवत्र सन्तोयि न बहुया पाप्माः, त्प्याचीकमनुयोगद्वारयु-तत्र वासगगानुपुनपत्रगणीयस्व सर-
 रोगादवाहिको पप्रवेष्टपुत्रा इति, ततो यत्रापि मेते दृश्यन्त तत्रापि ते स्वतीति मतिपत्रव्या साह्य मूलटीकाकारः-१३ सवयद्वयो वनरप

रेण विसेसाहिद्या, दिसाणुवाएण सवत्योया तेउकाहया दाहिणुत्तरेण पुरच्छिमेण विसेसाहिद्या पञ्चच्छि-
 मेण विससाहिद्या दिसाणुवाएण सवत्योवाएण सवत्योया वाउकाहया पुरच्छिमेण पञ्चच्छिमेण विससाहि-
 या दाहिणेण विसेसाहिद्या उत्तरेण विससाहिद्या । दिसाणुवाएण सवत्योया वणस्वइकाहया पञ्चच्छिमेण
 पुरच्छिमेण विसेसाहिद्या दाहिणेण विसेसाहिद्या उत्तरेण विससाहिद्या । दिसाणुवाएण सवत्योया वेइदि-

वर्षाद्व्यावाय सवरेरे तिक्ता वाहो नरवावाय सवा, तेमाठ पाकाव सवोइवे एम्मीकाठ वाकाहवे उत्तरे वियेयाधिव वनमाव सवावतो पुवे विसेयावि
 क एम्मीकाववे वन्त्र मूय होयमाटे । पुरच्छिमेव वि पञ्चच्छिमेव वि । वन्त्र मूयहोय पूर्वपविमेले पविम वियेयाधिव एम्मीकाववे । वेतोवम होयमा
 ट एम्मीकावविमेव तदा पञ्चिमे एम्मीकावविमेव विक्क तया विम पविम एम्मीकाव सामादिसवत्यवाजनादि अवगाहवे छात पुरित स्वायेन तपतुल्य
 न विसेयाधिव । दिसाणुवाएव सवत्योया वाउकाहया पञ्चच्छिमेवदाहिणेव वि० उत्तरेव वि । वियेयोमेले जीवता सर्ववाका पञ्चादवाजीव परियम
 वयमटे होनमहोय पविमे तेमाठे पांचो तिक्ताकावा पूर्व २ वियेयाधिववे होयमे एभावे वियेयाधिव अवचो वन्त्रसर्वहोय वचो उत्तरवियेयावि
 न वमटे मावमराववे । दिसाणुवाएव सवत्योया तेउकाहया दाहिण उत्तरव परच्छिमेव सवत्योया पञ्चच्छिमेव वि । दियपाचो जावता वा
 वासव तेवत्याव दचिव मरत उत्तर मरत पिरपत पाका विस्तराएवतो मसुवयाते दचिव पिरवाहो तेउकाहो पुवे पचिचवजातयवा मवाविदेइमाटे प

भानि वरुणो नरकायामा सतः सुपिरमाज्ञृत्यसन्नयात सवसोका दक्षिणस्यादिशि पृथिवीकायिका स्तेज्य सप्तारस्यां दिशि विज्ञेयापिका यत्र च तस्या दिक्षु दक्षिणदिगपथया लोकाणि प्रवर्तमानि लोकाभरकायासा सता धनमाज्ञृत्यसन्नया दृश्यः पृथिवीकायिका इति विज्ञायापिकाः ते ज्ञ्याप्य पूर्वस्या दिशि विज्ञायापिका रविशशिपाना तत्र भावात् सप्योपि पथिमायां दिशः विज्ञायापिका किंकारयामित्यन्त-सुध्यत-यावता रविशशिप्याः पूर्वस्यां दिशि तावताः पथिमायाभ्यपि सस्यय तावता सार्यं पर एववसन्तु गौतममामादौप यदिमामामधिकानि सन यिज्ञे

स्विच्छगुणा । दिसाणुयाएण सव्वत्थोधा पक्कप्यजापुठयिणेरुदया पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमउत्तरेण दाहिणेण सुसस्ये ज्जगुणा । दिसाणुयाएण सव्वत्थोधा धूमप्यजापुठयिणेरुदया पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमउत्तरेण दाहिणेण सुसस्येज्जा गुणा । दिसाणुयाएण सव्वत्थोधा तमप्यजापुठयिणेरुदया पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमउत्तरेण दाहिणेण सुसस्येज्जागुणा

दाहिणेण पमपिच्छगुणा । दिगनोमेक सर्वबाहा मारको पूर्वेणछः पथिमसाहा उत्तरेबाहा प्यासाटे पयावकोच नरकावासावो दक्षिणे चसंख्यातगणां पथिबा जभयो दक्षिणेदिम पयवकोच नरकावासाहे तेसाट छणपथोचोव । दिमाचभाणञ्च सव्वत्थावा ययवभा पठवो केरइया परपिच्छमञ्च पथिच्छ सउत्तरेच दाहिणेण पमपिच्छगुणा । दिगनो मने सव्वत्थाहा रत्तमभापुठिवोना मारको पूर्वदिमे पयावकोच नलो पथिमन्निगे उत्तरादगने चमप्यात विद्याहे नरकावास छे तिक्का छणपथो पयाहे छपणे । दिमाचभाणञ्च सव्वत्थावा सव्वत्थमापठवा केरइया पुरिच्छिमञ्च पथिच्छमञ्च सउत्तरेच दाहिणेण पमपिच्छगुणा । दिगनोमेने सव्वत्थोबाहा मयवमभापुठिवोना मारको पूर्वादिशि पयावकोच नलो पायमे साटा नरकावासा उत्तरमको दक्षिणे चमप्यात गुणा चमप्यातयात्रने विष्टार छणपथो यथा छपणे । दिमाचभाणञ्च सव्वत्थावा यः सुययभपठवोकेरइया परपिच्छम पञ्चः पथम सउत्तरेच दाहिणेण पमपिच्छगुणा । दिगनोमेने सव्वत्थावा यासवमभावा मारको सव्वदिग पुयावकोच नलो पथिमउत्तरवो साटा चमप्यात विष्टारे दक्षिणे चमप्यातगणा छ पयापिच्छ पथी अपमे तेसाट । दिमाचभाणञ्च सव्वत्थावा पक्कप्यमपठवाकेरइयापुरिच्छिम पथिच्छिमउत्तरेच दाहिणेण चसंख्यातगुणा । दिगनोमेने सव

दिशि विज्ञापिकाः । यतः-तत्र यन्त्रभूयद्वापा न विद्यते तदत्रावा लभोदक प्रवृत्त तत्प्रान्त्याह यनस्पलिकायिकाऽपि प्रवृत्ता इति विज्ञोपा
 पिक्वा सान्नाप्युदीच्या दिशि विज्ञापिकाः किकारखमितिचत् उच्यते-उदीच्या इ दिशि सङ्ख्येयान्नेषु द्वीपेषु मध्ये कस्मिंश्चित् द्वीपे प्रायाम
 विफल्माप्या मङ्गुयोरनकोटाकोटीप्रमाणे मानस नाम सरु समस्त तता दक्षिदिग्पक्षया प्रवृत्तमवक मङ्गुयानुल्या च प्रवृत्ता यनरप
 तय प्रवृत्ता द्वीप्याः क्षमादयः प्रवृत्ता सटमनकाटाकसवरायिता लीम्बियाः पिपीतिकादयः प्रवृत्ताः पट्याटिषु चतुरिन्त्रिया ज्वमरादय
 प्रवृत्ताः पञ्चन्त्रिया मरस्यादय इति विज्ञापिका सार्वेक समान्यता दिग्गनपातन लीवागाः मल्लभुल्ल सुक्त मिदानी विज्ञापय लदाः पृथिवीकायिका यिन्यमाना सवस्तोका दक्षि
 सवृत्योवा पुठविकादया दक्षिणमित्यादि ॥ दिग्गनुपातन दिग्गनुसारख विज्ञोचिकल्पति प्रायः पृथिवीकायिका यिन्यमाना सवस्तोका दक्षि
 त्यां दिशि कथमिति चत् उच्यते-इह यत्र यत्र सत्र यत्र यत्र पाथवीकायिका यत्र सुपिर तत्र स्ताका दक्षिणस्या दिशि वङ्गनि जवनपतीना जय

एव चतुरिदियादि, दिसाणुवाएण सवृत्योया गेरहया पुरच्छिमपञ्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण अस्सखेज्जा
 गुणा, दिसाणुवाएण सवृत्योया रयणप्पनापुठ्ठिणरहया पुरच्छिमपञ्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण अस्सखे
 ज्जगुणा, दिसाणुवाएण सवृत्योया सक्करप्पनापुठ्ठिणेरहया पुरच्छिमपञ्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण अस्स
 खेज्जगुणा । दिसाणुवाएण सवृत्योया गेरहया धालुयप्पनापुठ्ठियिपुरच्छिमपञ्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण अस्स

ए पविमे गीतमशोपनयो पाथोर्वाका बाळपाथो वेगसादिकनो निवये कथवासाका पुं विज्ञापिका गीतमहापनका तेमाट पविमे विज्ञयाः धक्क चद्र
 शायनयो उत्तरे विमे मानमरावरमाटे । न्प्याचुवाणव सारवलावा ओरितिका पञ्च पञ्चमञ्च पुरच्छिमञ्च वि दाहिणेण उत्तरे वि । दिग्गमोमसे मधे
 बोधाहा चधरिद्रिच पविम भौतमदोपण्णे तेवतो पाकोवाका तिक्का कमणवाका तिक्का भमरा ओरितिकाटिका बोका पुं विज्ञापिका गीतमशोपनयो
 तमाटे दक्षिण वि चन्द्र मूर्धोपनयो तेमाट उत्तर दि मानसराधरे भमरादि यथा । दिसाचुवाणव उच्यमाना येरहया पुरच्छिम पञ्च पञ्चम चत्तरव

नामि पटवो नरकाधामा स्ततः सुपिरमाप्तुसर्वमयात् सवसोका दक्षिणस्यां दिशि पृथिवीकायिका सौम्य उत्तरस्या दिशि विजोपायिका यत्र च
 तत्समां दिशा दक्षिणदिक्पटया सौकराणि जलनामि सौकराधामासा स्तता चनमाप्तुसर्वमया दक्षः पृथिवीकायिका इति विज्ञापयिकाः ते
 स्यापि पूर्वस्या दिगि विजोपायिका रविशशिद्वीपाना तत्र ज्ञावात तस्यापि पृथिभाया दिशि विजोपायिका किंकारणमित्यतः-उच्यते-यावता
 रविशशिद्वीपाः पूर्वस्या दिगि तावन्तः पृथिभायास्यपि ततएव तावता साम्य पर एवचसमुद्र गीतममामाद्वीप पृथिभायामधिवासि तान यिञ्जे

स्विज्जगुणा । दिसाणुयाएण सञ्जत्यावा पक्कप्यजापुढायिनेरइया पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमउत्तरेण दाहिणेण झुसस्ये
 ज्जगुणा । दिसाणुयाएण सञ्जत्योया धूमप्यजापुढायिनेरइया पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमउत्तरेण दाहिणेण झुसस्येज्ज
 गुणा । दिसाणुयाएण सञ्जत्योया तमप्यजापुढायिनेरइया पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमउत्तरेण दाहिणेण झुसस्येज्जगुणा

दाहिणेच समपिज्जगुणा । दिग्गोमम सबबाहा मारको पूर्वणाह पविमणाहा उत्तरेयाहा स्यामाटे पञ्चावकोच नरकावासावो दक्षिणे चसंख्यातगवां
 पयिका जेमनो दक्षिणेदिग्ग पञ्चवकोच नरकावासो तेमाट ज्ञापयकोच । दिमाचवाणव सबत्तावा रयवणभा पठवो वेरवा परस्सिमव पयिज्ज
 मउत्तरेच दाहिणेच समपिज्जगुणा । दिग्गोममे सबबाहा रत्तममापुविनीना मारको पूर्वदिग्गे पञ्चावकोच मवो पयिमदिग्गे उत्तरदिग्गे चसंख्यात
 विज्याटे नरकावासो तेमिहा ज्ञापयको पञ्चावे उपवे । दिमाचवाणव सबत्तावा सत्तरपभापठवा वेरवा पुरस्सिमव पञ्चस्सिमव उत्तरेच दाहिणेच पस
 मिज्जगुणा । दिग्गोममे सबधीबाहा मज्जएवमापुविनीना मारको पूर्वादिशि पञ्चावकोच मवो पयिमे माटा नरकावासा उत्तरवको दक्षिणे चसंख्यात
 गुणा चसंख्यातवाज्जने विष्टार ज्ञापयको चर्वा उपवे । दिमाचवाणव सबत्तावा वासुवणमपठवो वेरवा परस्सिमव पञ्चावकोच दाहिणेच चस
 मिज्जगुणा । दिग्गोममे सबबाहा वासवणमागा मारको सवाटण पुञ्चावकोच मवो पयिमउत्तरवो माटा चसंख्यात विष्टरे दक्षिणे चसंख्यातगवां च
 नपयिज्ज पञ्चा उपवे तेमाटे । दिमाचवाणव सबत्तावा पञ्चपभापठवा वेरवापुरस्सिमव पञ्चस्सिमव उत्तरेच दाहिणेच चसंखिज्जगुणा । दिग्गोममे सब

पापिकाः रघुवरभाइ मनु यथा पापिमाया दिशि गीतमहीपो प्रयिकाः समासिता तथा सत्या पदिमाया दिशि सचीसीकिरपामा अपि योजन
सुखरावभाडाः सन्ति ततः सातपूरितन्यायन तनुस्थाएव पृथिवीकायिकाः मापुयन्ति न चिरीपापिकाः मितदेव-यता थालीकिरपामावगाही
योषनसुख गीतमहीपस्य पुनः पदसप्तत्यधिक योजनसुख मुरैरख विफस सस्य द्वादशयोत्रमसुखजायि यस मीरो रारस्य सोलीकिरपामप्यो
उवांन चीनस्य चीनतरस्य तरपूवस्याभापि दिशि मज्जुतगर्तादिसम्भात समान ततो यथाचोसीकिरपामच्छिद्रपु युस्या गीतमहीपः प्रविप्यते तथा
पि समचिकष्यव प्राप्यते मतस्य इति तेन समपिकन विषयापिका पदिमाया दिशि पृथिवीकायिकाः सख दिगमुपातन पृथिवीकायिकामा म
स्ययुत्व मिदानी मज्जापिकाना मस्यपुत्रत्वमाह-दिसाकुवाएव सवत्योवा साठकाइया इत्यादि ३ सवहोका पय्यापिकाः पादिमाया दिशि गी

दिसाणुयाएण सवत्योवा तमप्यजापुठविनेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेण अससखेज्जगुगा, दि
साणुवाएण सवत्योवा अहे सप्तमापुठविनेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणिहितो अहे सप्तमापुठ
विनेरइएहिती वठीए तमाए पुठवीए नेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण अससखेज्जगुगा, दाहिणेण अस

भाडा पदुयमापुप्पा नारको पूर्वादिश पय्यावकाज तथा तमाट पायमउत्तर मको दक्षिण पय्यावकाज तथा ज्जगुवादिश चर्वा उपवे । दिसासदःएव सुव
त्यावा समप्यमपठौवरइयाच परिच्छिम पय्यावकाज उत्तरेण दाहिणच पय्यावकाज । दिग्गामासवे सवदावा समभाभारको पूरे पय्यावकोय मवी ते
नाट पयिम उत्तर मको दक्षिणे पय्यावकाज तथा ज्जगुवादिश चर्वा म ट । दिस नाराएव सवत्यावा तमप्यमपठवीनेरइया परासुमउत्तरेण दाहिणेव पय
पय्यावकाज । दिग्गामासवे सवदावा तमप्यमभाभारको पूरे पय्यावकोय मवी तमाट पयिमउत्तर मवी दक्षिणे पय्यावकाज तथा । दिसासदःएव सुव
त्यावा पदेवतमपठवीनेरइया परिच्छिम पय्यावकाज उत्तरेण दाहिणच पय्यावकाज । दिग्गामासवे सवदावा तमाट पयिमउत्तर मको पूरे पय्यावकोय
नारकावासा मको तमाट पयिम उत्तर दक्षिण पय्यावकाज तथा ज्जगुवादिश चर्वा म ट । दिसासदःएव सुव

समद्वीपस्थाने तेन मनावात्, तेनोपि विज्ञेयपिकाः पूर्वेष्वदिशि तेनोपि, तद्व्यापका दशैश्वर्यादिभिः चन्द्रसमहीवाभावात् तेनोपिपुत्र
 स्थो दिशि विज्ञेयपिका नामसरा संज्ञेयात्, तथा दशैश्वर्या भुक्तस्या भुक्तस्या य दिशि शेषलोकाः तत्रस्थापिका यथा समुप्युक्ते एव यादरा स्तेन
 रकापिका नामसरा तत्रापि यत्र यत्रो मनुष्याः तत्र त भवतो यादुष्यम पाकारमयसंभवात् यत्र स्वस्ये तत्रलोकाः सत्र दशैश्वर्या दिशि यत्र
 मयलोका दशैश्वर्या दिशि पञ्चैश्वर्यामयुः सत्रस्थापिकाः, लोका समुप्युक्ताः सत्रा लोकास्त्रम तत्रस्थापिका अपि लोका यन्मपाकारैरससंभवा भवः
 यिमायो दिशि विज्ञेयपिकाः पयोलीकितगामु समुप्युक्ताः ॥ दशैश्वर्या सत्रा लोकाः सत्रा लोकाः सत्रा लोकाः सत्रा लोकाः सत्रा लोकाः

स्वेजगुणा, दाहिणसिंहितो तमापुठविनेरदृष्टो पचमाधूमपञ्चाए पुठवीए नेरइया पुरच्छिमपञ्चच्छिम
 उत्तरेण अस्सखेजगुणा, दाहिणेण अस्सखेजगुणा । दाहिणसिंहितो धूमपञ्चापुठविणश्चण्हितो चउत्थोए
 णसिंहितो पकपञ्चापुठविनेरदृष्टो तइयाए वालुयपञ्चाए पुठविनेरइया पुरच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण अ
 वडिता पचमपञ्चापुठो पचमाधूमपञ्चाए पुठवीए नेरइया पुरच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण अ
 यो मातलोको छोउप मातारको पुन पयिम उत्तर पचमपञ्चापुठो जामाट कोन इ तर पापकमता करणहार कोन भरकगति अपमे तेमाटे कात
 योउपमाको छोउपमा पचमपञ्चापुठो जामाट कोन इ तर पापकमता करणहार कोन भरकगति अपमे तेमाटे कात

पचमपञ्चापुठो पचमाधूमपञ्चाए पुठवीए नेरइया पुरच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण अ
 यो मातलोको छोउप मातारको पुन पयिम उत्तर पचमपञ्चापुठो जामाट कोन इ तर पापकमता करणहार कोन भरकगति अपमे तेमाटे कात
 योउपमाको छोउपमा पचमपञ्चापुठो जामाट कोन इ तर पापकमता करणहार कोन भरकगति अपमे तेमाटे कात

तत्र यद्यु यत्र य एतत् तत्र धाव्यजातः । तत्र पूर्वस्थां दिशि प्रभूत समन्वित्यपावायवः पश्चिमायादिशि विक्षपापिकाः आधोलीकिकग्रामेषु समवात
 मत्तरस्या दिशि विक्षेपापिकाः मत्तनमरकावायवाधुत्यन श्रुपिरवाधुत्यात् ततोपि दक्षिणस्थां दिशि विक्षेपापिका सत्तरदिगपक्षया दक्षिणस्या दिशि
 त्रयशान्ती नरकावासानां शक्तिप्रभूतत्वाद् तथा यत्र प्रभूता आपस्तत्र प्रभूता पनकावयो जनकापिका मयस्पतय प्रभूता आङ्गावयो द्वीभिरयाः प्र
 भूताः विष्वक्दीप्तसवासायाधिता कुम्वादय कोन्धियाः प्रभूताः पट्याद्याशिताः ज्वमरादय द्युतिरिन्धिया इति, वमस्पत्यादिमूत्राणि चतुरिन्धियसूत्र

सस्वेजगुणा, दाहिणेण अस्सस्वेजगुणा । दाहिणस्वेहिहो वाहुयप्पजापुठविणेरइएहिहो वीयाए सक्करप्प
 नाए पुठवीए नेरइया पुरिच्छिमपस्सिच्छिमउत्तरेण अस्सस्वेजगुणा दाहिणेण अस्सस्वेजगुणा दाहिणस्वेहिहो
 सक्करप्पजापुठविणेरइएहिहो इमीसे रयणप्पजाए पुठवीए नेरइया पुरिच्छिमपस्सिच्छिमउत्तरेण अस्सस्वेजगु
 णा । दाहिणस्वेण अस्सस्वेजगुणा, दिसाणुवाएण सस्सत्थोया पचिदियातिरिक्कजाणिआ पच्चिच्छिमेण पुरिच्छि

मपमवेगयवा छणपवो ववा तेमाटे । दाहिणविज्जिता घूमपभाएपठवोए केरइयाइता वज्जोए पवपभाए पठवोएवेरइया पुरिच्छिम पवपिम्म वस
 रए पवपिज्जयवा । दक्षिणदिग्गिना घूमपभाएवोमा मारको दावपदिग्गिको वोवो पवपभामानारको एव पयिम उत्तरमा पवपभातयुवे पविवहुव ।
 दादिक्क पवपिज्जयवा दाहिणविज्जिता पवपभाएपठवो केरइयाइता । तेइकोवविवे पवपभातगवां छणपवो ववा तेमाटे दक्षिणदिग्गिना पवपभा
 ना मारकोवो । तरइए दासुवपभाएपठवोए केरइया परापक्कम पवपिज्जम उत्तरए पवपिज्जयवा । वोको व सुवपभाएवोमा मारको एव पयिम उत्त
 रमा पवपभातमवा हीनउमता करपव्वार तमाटे । दाहिणवेर पवपिज्जयवा । तेइवको पवपभातगुवा युत्ता पाज्जवोपर । दाहिणविज्ज जतो दासुवप
 मपठवो केरइज्जिता । दक्षिणदिग्गिना मारको दासुवपभा मारकोवको । पुईयाए सक्करप्पभाए पुठवोए केरइया पुरिच्छिम पवपिज्जम उत्तरवेर पम
 जिज्जयवा । वूवो मक्करपभा मारको एव पयिम उत्तरमा पवपभातयुवा पुई पावापावो तेमाटे दक्षिणे पवपभातयुवा पुई पावापावो तेमाटे ।

[illegible]

मेण यिसंसाहिद्या, दाहिणण यिसंसाहिद्या, उम्मेरेण विसंसाहिद्या, विसाणुयाएण सव्वत्योवा मणुस्सा दाहि
णउत्तरेण पुरच्छिमेण सखेज्जगुणा । पञ्चिक्खिमेण यिसंसाहिद्या । विसाणुवासीण सव्वत्योवा जयणवासी
देवा पुरच्छिमपच्चिक्खिमेण उत्तरेण अस्सखज्जगुणा । दाहिणेण अस्सखेज्जगुणा, विसाणुयाएण सव्वत्योवा

दाहिकप प्रसखिज्जगुणा । दहिके असकालमको यथिक पाककोपर । दाहिकविक्रितो यत्तरपयमुको केरदहिकता । दहिकदिग्गिता । यत्तरमभापको
ता नारकोको । इमीसरवपभाय पुठोप कररमा पररिज्जम पयखिज्जम उतररं प्रसखिज्जगुणा । या पयिको रत्तममापुकोता नारको पूर्व पयिम क
तरता प्रसवपानमका पुन । दाहिकक प्रसखिज्जगुणा । तद्वको दहिक प्रसवपानमका प्रसवपाने साठे । दिसाकवापव ज्ञातत्वाया प्रवेदिस
तिरिक्तभाविता पय प्रत्तमं पुदरिज्जमक विसेसादिसा उतररं हि । विग्नोमेसे सवधीयाका प्रवेदिस तिरिक्तयानिया पयिमे ते गौतमइोपके ज्ञानकस
मद तिरिक्ताया काया तमाटे तिरिक्तयानिका मय्यादिक जाहा ज्ञापके पुन विग्नयाविक गौतमइोप नको उतररे विग्नयाविक सा नसरवर इम मय्यादि
यथा । दिसाकवादिक उतरत्वाया मय्यादा दहिक उतररं प्रसखिज्जमक सखिज्जगुणा पयखिज्जमे वि । दिग्वको ज्ञाता प्रवधाहा मनुय दहिय उत
र ज्ञमको उतररे पिरत दहिके भरतउत मया पुन मनुजसंयसात्तमया अधिक ज्ञमको मयाविदिक सादयन पयिमदिग्गि विग्नयाविक ज्ञमको प्रवेका
कथामिक मनुज सथा । दिसाकवापव सवधाया मय्यादिक उतररं प्रसखिज्जगुणा पुदरिज्जम मय्यादिक उतररं प्रसखिज्जगुणा । दाहिके प्रसखिज्जगुणा । दिग्गो

तत्र त्रिषु पत्रेषु चर्म लघु पाप्यत्रावः तत्र पूर्वस्यां दिशि प्रवृत्त घनमित्यस्यावायवः पश्चिमायादिशि विक्षयाधिकाः अचोलीकिकयामेषु सुसमावा
 न्नतरया दिशि विक्षेपाधिकाः प्रथममरकावासादुत्थन सुयिरकादुत्थात् सतोऽयं दक्षिणस्यां दिशि विक्षयाधिक सत्तरदिगपक्षया दक्षिणस्या दिशि
 प्रथमानी मरकावासाभा नातिप्रवृत्तत्वात् तथा मध्य प्रभूता वायव्या प्रभूता पश्चिमादयो अमलकायिका नखरपक्षयः प्रभूताः अङ्गुदया द्वीभ्रिया म
 दूनाः पित्तकीलूनसवासाद्यायिताः कुन्धादय स्त्रीभ्रियाः प्रभूताः पट्टाद्यायिताः प्रथमरक्षय द्युतिरिभ्रिया इति, वमसपत्यादिमूत्रादि द्युतिरिभ्रियसूत्र

सखेजगुणा, दाहिणेण असखेजगुणा । दाहिणसिंहितो बाहुयप्यनापुठविणेरङ्गुहितो धीयाए सक्करप्प
 नाए पुठवीए णेरङ्गुया पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमउत्तरेण असखेजगुणा दाहिणेण असखेजगुणा दाहिणसिंहितो
 सक्करप्पनापुठविणेरङ्गुहितो इमीसे रयणप्यनए पुठवीए णेरङ्गुया पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमउत्तरेण असखेजगु
 णा । दाहिणसिंहेण असखेजगुणा, विसाणुवाएण सख्योधा पचिदियतिरिक्कजाणिया पञ्चिच्छिमेण पुरिच्छि

म पश्चिमदिग्गया छच्छपक्षो घना तेमाटे । दाहिणसिंहिता घूमयमापठवीए चररङ्गिता चत्त्वोद पक्ष्यभाए पठवीएवेरङ्गया पुरिच्छिम पक्षिस्स चत्त
 रए पक्षिविज्जतया । पचिचदिग्गिया घूमयमापठवीना मारको पचिचदिग्गिको नीवी पक्ष्यभामानारको एव पयिम उत्तरना पक्ष्यवातयुक्ते पचिचकुक्के ।
 नाहिणे पक्षिविज्जतया दाहिणसिंहिता पक्ष्यभाएपठवीवेररङ्गिता । तेव्वोदक्षिणे पक्ष्यवातगर्वा छच्छपक्षो घना तेमाटे दक्षिचदिग्गिया पक्ष्यभा
 ना मारको । तावाए दासुदयमापठवीए वेररङ्गया पराचक्षम पक्षिस्स उत्तरए अक्षिज्जतया । नीवी व सुवभापठवीना मारको पूम पयिम चत्त
 रना पक्ष्यवातगर्वा दीनक्षम करक्कजर तेमाटे । दाहिणे पक्षिविज्जतया । तेव्वो पक्ष्यवातगर्वा सुत्त पाळवीपरे । दाहिणसिंहिता मासुदय
 मपठवी वेररङ्गिता । पचिचदिग्गिया मारको बासुवभामाना मारको । दूरियाए सक्करप्पभाए पठवीए वेररङ्गया पुरिच्छिम पक्षिस्स उत्तरए पक्षं
 विज्जयथा । दूरो मक्करपमाना मारको पूम पयिम उत्तरना पक्ष्यवातगर्वा कुक्के अक्ष्यवातगर्वा कुक्के अक्ष्यवातगर्वा तेमाटे ।

बलम् युतेः सुवधापि समामत्या तदेव प्रतिपुष्यिष्यति विगविभागेना स्पष्टपुल्ल मु क्तिदानां सतापि पुचिबोरपिक्तस्य दिग्विभागेना स्पष्टपुल्ल
 माह-दाविपदिनो एव सप्तमपुठयिनरद्वयितो उत्तरीय तमप पुठवीय नरद्वया इत्यादि ॥ सप्तमपुष्यिष्या पूर्वोत्तरपदिमद्विगविभाविष्यो नैरपिके
 त्योय सप्तमपुष्यिष्यामथ दाद्विष्यास्त एव उत्तरेयगङ्गास्तस्य पष्ठपुष्यिष्या तमप्रज्ञाभिपामाया पूर्वोत्तरपदिमद्विगविभाविष्या उत्तरेयगङ्गाः कथमिति
 बत् लप्यते-इह पूर्वोत्तरपदिमद्विगविभाविष्याः सप्तमनरकपुष्यिष्या मृत्युशत किञ्चिद्दीनहीनतरपापधर्मकारिण्य सप्तमपुष्यिष्यादिपु
 पुष्यिष्यासु पूर्वोत्तरपदिमद्विगविभाविष्याः सप्तमनरकपुष्यिष्या सप्तमो युक्तमसक्यपयुक्तस्य सप्तमपुष्यिष्यादिपु
 क्तिमनरकावैषया पष्ठपुष्यिष्या पूर्वोत्तरपदिमनरकाया मथ मुत्तरोत्तरपुष्यिष्यधिकृत्य भावापितव्य तत्पुष्यिष्या पष्ठपुष्यिष्या दक्षिणस्या

साहि्या, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा इंसानेकप्पे पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमेण उत्तरेण अस्सखेज्जाणुणा दाहिणे
 ण त्रिसससाहि्या, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा सणकुमारकप्पे पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमेण उत्तरेण अस्सखेज्जाणु
 णा, दाहिणेण त्रिसससाहि्या दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा माहिदे कप्पे पुरिच्छिमेणपञ्चिच्छिमेण, उत्तरेण

पर धर्वा । दिशावकाएव सव्वत्थोवादेवा साहस्यकापे पररिक्खम पदरिक्खमव उत्तरेव पदरिक्खमव वाहिदेवं विसेसाहि्या । दिग्गमोमवे सर्वथावा
 मोचम कएव पूर्वदिमे खेमवी पय्यावकीव नको पिसिमेविण पडवभावा उत्तरे पसत्थातगुणो पविक्क दक्षिणदिमि वियेयादिक्क जमाट कुणपप्यो । दि
 मावकाएव सव्वत्थावा देवा इसाविकेपे पररिक्खन पदरिक्खमव उत्तरेव पदरिक्खमव । दिग्गमोमेखे जावता सव्वत्थोवा इयाननरपे पूर्व पय्यावकीव नको
 तमाट पयिम उत्तरे पसत्थात विक्कारिण्यप । वाहिदेवं विसेसाहि्या । दक्षिणे पसत्थातगुणो कुणपप्यो एव जपजे । दिशावकाएव सव्वत्थावा
 दशा माहिदे कपे पररिक्खम पदरिक्खमव उत्तरेव पदरिक्खमव । दिग्गमाथी जावता सव्वत्थावा देवता माहेइ क्कत्ता देवता सव्वत्थिम पुण्यावकीव
 नको उत्तरे पसत्थातगुणो । द्वाइक्कवे विसेसाहि्या । दक्षिणविगविभाविक्क क्कणपप्यो जपजे । दिशावकाएव सव्वत्थावा सप्तमोप जप देवा पररिक्खम प

१। तमुक्कपिप्पयासु अदीयपुव्ववइएक्कीछी ॥ १ ॥ अतमवथ सोकं गुह्यादिक्का अणसमारिका सोकत्वात् अण् अणपापिका प्रज्जनससारि
 कामतिप्रवृत्तात् अणपापिकाय प्राचुर्येव दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्त न अयासु विषु तथास्याप्राप्यात् तत्र तथास्याप्राप्यात् पूत्राचार्ये रय पु
 त्तिन्ति उपवृत्तत तद्या-अणपापिका दीर्घतरससारज्जाणिम उच्यते दीर्घतरससारज्जाणिमय बहुपापोदया इत्यन्ति बहुपापादमा य अरुक्कमाय
 अरुक्कमाय प्राय स्यास्याप्राप्यात् तद्वत्सिद्धिक्का अपि दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते नसापासु विषु यत उच्य-पायमिहअरुक्कमा प्रवसिद्धीयाविदा
 दिकमेव । अरुक्कमिरियमनुया मुराज्जहावमुक्कन्ति ॥ १ ॥ ततो दक्षिणस्यां दिशि अरुक्कमा अणपापिकाया मत्पादसज्जात् पूत्रोत्तकारकद्वयात् स
 म्भवन्ति पूर्णतरपयिमिदग्गवित्तो दक्षिणस्यां अरुक्कमाया यथाच सामान्यता नैरपिकाकां दिग्गवितागेना स्वबहुत्वमुक्कमेव प्रतिपृथिव्यापि

यागमतरादेवा पुरच्छिमेणपञ्चच्छिमेण विसंसाहिया, उत्तरेण विसंसाहिया, दाहिणेण विसंसाहिया, दि
 साणुयाएण सव्वत्योवा जोहसिया देवा पुरच्छिमपञ्चच्छिमेण दाहिणेण विसंसाहिया, उत्तरेण विसंसाहिया
 विसाणुयाएण सव्वत्योवा देवा सोहम्मे कप्पे पुरच्छिमपञ्चच्छिमेण उत्तरेण अस्सखेज्जागुणा, दाहिणेण त्रिसे

मंसे नववाहा भवनदासोदेवता पञ्चपथिमे भवन दाहा उत्तरे पर्ववतागुणा २ काव भवनतो पपेसाये दक्षिणे भवनपतो पमवसानगुणां ३४ काव
 भुवनतो पपकावे अणपको यथा अणपे । दिमानवाणं सखत्तावा कावमतदादेवा परनिष्ठमव पद्याण्णमेव विससाहया उत्तराव दि दाहिणव तवमे
 पाहिदा । दिमनोमसे सववाहा कावप्यतर देवता एवं सोमाटे वनभूमि यथा पथिमे विद्याधिक् यथायाम मथेरदे तिक्कायथा उत्तर तवमेपाधिक्
 नवरनोपायाम यथातो पपेसाये दक्षिण विमेषाधिक् अतराजाम यथा ते मको । दिमानवाएव सखत्तावा जागिमिहादेवा पुरनिष्ठम पञ्चपथिमव हा
 दिवेवं विसंसाहिया । दिमनोमसे पर्ववाहा व्यातिथीदेवता पञ्चपथिम अत्रसूजना विमानात्ते तेमाटे विमानवाहा दक्षिणे विमेषाधिक् अत्रसूजोप नवा ।
 उत्तर विमेषाधिक् अमको मानसरावर उवातिथीरविवा पावेहे तेज्जाकप मण्डवकी जातिस्वरव पासो पञ्चसव सेरे यथोतियोमज्ज अपसे तमाटे अ

[illegible]

विशेषोपाधिकाः तथा सोपाने कश्चे सवसोकाः पूर्वस्यां पदिमाया च दिक्षि वैमानिकात्वा यतो मात्वावसिकाप्रविष्टानि विमानानि तानि चतुर्विंशति दिक्षु तस्यानि यानि पुनः पुण्यावकीर्णानि तानि प्रभूतानि सर्वस्येयवीक्षणविरसुतानि तानि च दक्षिणस्यामुत्तरस्या दिक्षि नात्यत्र ततः सर्वसोकाः पूर्वस्यां पदिमाया च दिक्षि तेज्य उत्तरस्या दिक्षि असङ्ख्यगुणाः पुण्यावकीर्णविमानानां बाहुल्या दक्षस्येयवीक्षणविरसुतत्वाच्च तेज्योपि दक्षिणस्या दिक्षि विशेषोपाधिकाः, रुद्रपाधिकायां प्राचुर्येण तत्र गमनात् एवमीधानमवसनुमारमात्रमप्यस्युत्रास्स्यपि जावनीयानि, प्रस्रलोकाश्चैव भवसोकाः पूर्वोत्तरपदिमदिग्जाविनो हवा यतो बहवः रुद्रपाधिका स्तिययोगमयो वक्षिणस्यां दिक्षि समुत्पद्यन्त शुक्रपाधिकाः पुनः पूर्वोत्तरपदिमासु शुक्रपाधिकाश्च सोका इति पूर्वोत्तरपदिमोद्विज्ञाविनः सवसोकाः तेज्यो दक्षिणस्या दिक्षि दक्षस्येयगुणाः रुद्रपाधिकायां बाहुनी ततोत्पादात् एव तान्तरुद्रपाधिकाश्चैव सवस्यपि जावनीयानि, आभतादिषु पुनः भगव्या एवोत्पद्यन्ते तेन प्रविक्तस्य प्रतिद्वैवेपकं प्रत्यमुत्तरविमान चतस्रसु दिक्षु

विशि नारका ससंस्नेपमुखा युक्तिरत्र प्रागेवोक्ता तेज्योपि पञ्चमपुच्छिर्वा- धूमप्रप्राप्तिषाभायां पूर्वात्तरपविमदिग्भाविनो सङ्क्षेपगुणा' तेज्योपि तस्यामेव पञ्चमपुच्छिण्या द्वागवशाया असंक्षेपमुखाः' एवं सर्वोक्तपि कमल वाच्यं तियङ्पुषन्निगम्य त्वक्कायसूत्रवत्-विषादुवाएवं सप्तत्योवा मबुत्सा द्वादिखततरवमित्यादि ॥ सुवक्ताका मनुष्या दक्षिणस्या सुतरस्यां च पञ्चाना प्ररतकृत्वाका पञ्चाना मेरावतलोथाका मत्यस्यत्वात् तान्यः पूबस्या दिशि सङ्क्षेपगुणाः दृश्यस्य सस्यपगुणात्वात् तेज्योपि पश्चिमाया दिशि विक्षयाचिकाः स्वप्नावत एवाचोर्भौक्तिकयामेपु मनुष्यवाहुस्यप्रावा त् ॥ दिशदुवाएवं सप्तत्योवा नववक्तासीत्यादि ॥ सुवक्ताका नववक्तासिनो दद्याः पूबस्यां पश्चिमायाच दिशि तत्र नवनानामस्यत्वात् तेज्यो च तरदिग्भाविनो अस्यपमुखाः स्वस्थानतया तत्र नवभागा बाहुत्वात् तेज्योपि दक्षिणदिग्भाविनाऽस्यपगुणा स्वप्न नवनाना मतीवबाहुत्वात्,

असस्वेज्जगुणा, दाहिणेण विसेसाहिया । विसाणुवाएण सवत्थोवा यज्जलोए कप्पे देवा पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमउ
त्तरेण दाहिणेण असस्वेज्जगुणा विसाणुवाएण सवत्थोवा यज्जलोए कप्पे देवा पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमउत्तरेण
दाहिणेण असस्वेज्जगुणा । विसाणुवाएण उत्तए कप्पे देवा पुरिच्छिमपञ्चिच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असस्वेज्जगु

[illegible]

तथादि-निर्णये २ चत्वारि २ प्रवक्तव्यसहस्राण्यतिरिच्यते, कथयति विद्याय ब्रह्मो ह्यथोत्पद्यते, ततो प्रवक्तव्यसहस्रयुक्ताः व्यक्तरसूत्रे प्रायना यत्र सुपिदं तत्र व्यक्तराः प्रचरन्ति यत्र एव तत्र न, ततः पूर्वस्या दिक्षि धमत्वात् स्त्रीका व्यक्तरा स्त्रीयो उपरस्या दिक्षि विद्येयाचिकाः, अथो स्त्रीदिक्षयामेव सुपिदरवत्त्वात्, तेष्वप्युत्तरस्यां दिक्षि विद्येयाचिकाः अस्त्वानतया नवरुवासाबाहुल्यात्, तस्योपि दिक्षिचस्या दिक्षि विद्येयाचिकाः अतिप्रवक्तव्यसहस्रादुल्यात्, तथा सर्वस्त्रीका ज्योतिष्काः पूर्वस्या पदिमाया च दिक्षि चन्द्रादित्यक्षीयेपुष्टानकस्यपु अतिपयामासेव तेषा प्राक्वात् तस्योपि दिक्षिचस्यां दिक्षि विद्येयाचिका विमानबाहुल्यात्, कथयति स्त्रीका दिक्षिदिग्प्रातिष्ठाच तेष्वोप्युत्तरस्यां दिक्षि विद्येयाचिका यतो मानस सरसि ब्रह्मो ज्योतिष्काः स्त्रीकास्त्वान निमिदि स्त्रीकनव्यापुताः नित्यमाचते, मानससरसि च ये सरस्यादयो जलधरा स्त्री काच पिक्ताः यतो मानस सरसि ब्रह्मो ज्योतिष्काः स्त्रीकास्त्वान प्रतिपद्या ननुनादिच कल्पा कृतनिदाना क्षात्रोत्पद्यते ततो प्रवक्तव्योत्तराद्वा द्वाविंशत्यास्येज्यो अविमानदर्शोभतः समुत्पन्नजातिस्वरूपात् किंचिद्वृत प्रतिपद्या ननुनादिच कल्पा कृतनिदाना क्षात्रोत्पद्यते ततो प्रवक्तव्योत्तराद्वा द्वाविंशत्यास्येज्यो

विज्ञेयार्थिकाः, तथा सौपर्यै वक्ष्ये कवसोकाः पूर्वस्यो पविमया व दिक्षि वैमानिकादेवा यती माप्यावसिकाप्रविष्टानि विमानानि कानि चत
सुप्तपि दिक्षु तुत्यानि यानि पुनः पुण्यावकोटीनि तानि प्रजूनानि असक्येयोजनविरुदाणि तानि व दिक्षुत्यान्तरस्यां दिक्षि नात्यत्र ततः व
वसोकाः पूर्वस्यो पविमया व दिक्षि तेभ्य उत्तरस्यां दिक्षि असङ्ख्यगुहाः पुण्यावकोविमानानां माङ्गुत्या दक्ष्येययोजनविरुदात्वा व, तेभ्योपि
दक्षिणस्या दिक्षि विज्ञेयार्थिकाः, कल्पपार्थिकाः प्राचुर्येण तत्र भवमात्, यवमोधानसमाङ्गुमारमाङ्गुलकस्यसूत्रास्यापि नावनीयानि, प्रभ्रसोकाश्च
सर्वसोकाः पूर्वोत्तरपदिमाद्विज्ञेयार्थिको दवा यतो वक्ष्यः कल्पपार्थिका स्तिपयोग्यो दिक्षि समुत्पद्यन्त मूर्तपार्थिकाः पुनः पूर्वोत्तरपदि
माङ्गु मूर्तपार्थिकाय सोका इति पूर्वोत्तरपदिमादिज्ञानाविना स्वसोकाः तन्व्यो दक्षिणस्या दिक्षि असक्येयगुहाः कल्पपार्थिकाया यङ्गुमां ततोत्पादाम्,
एव सामान्यजसहकारसूत्रास्यपि प्रावनीयानि, आगतादिषु पुन भङ्गुप्या यवोत्पद्यन्ते तेन प्रतिवक्ष्यं प्रविद्यैवेयं प्रत्यमुत्तरविमानं चतसृषु दिक्षु

प्रायो यदुसमावदितव्या स्तथाचाङ्ग ॥ तैवपरं बहुसमीपवक्त्रा समवाहसो । इति दिसाणुवाएवं सवत्योवा सिद्धा दाहिकउत्तरेखमित्यादि ॥
 मयस्त्रोवा सिद्धा दचिबस्या मुधरस्या च दिशि कयमितिचेत् । उच्यते-इह मनुष्याएव सिच्यन्ति माभ्य मनुष्या अपि सिच्यन्तो यथा काष्ठप्रदक्षे
 प्तिह परमसमयं यवमाहा स्तयेवाकाष्ठप्रदक्षायं सुमपि यच्छन्ति, तथैव चाप्येवतिष्ठन्ति न मनागपि वक्ष्य गच्छन्ति, सिच्यन्तिच यत्र दक्षिणस्या
 दिशि पंचसु प्ररतमुत्तरस्यां दिशि पञ्चैरवतपु मनुष्या करपाः कृत्रस्यापस्वात्, सुखमसुखमादौ च सिद्धे क्त्राधादिति तत्त्वोत्रसिद्धाः सवस्त्रो-
 का तस्यः पूर्वस्यां दिशि सक्षयगुहाः पूर्वविवहानां नरतैरावतकक्षयः सुखेयमुक्तया तद्वतमनुष्याकामपि सुखेयगुहत्वात् तेषां च सवक्त्राल
 मिदुिमावात् तस्य पविमायां दिशि विद्यायाचिका अयोसौकिंकपायेषु मनुष्यजातुस्यात् यत् दिग्द्वारं मिदालौ नतिद्वार-तत्रदमादिसूत्र-एए
 सिब प्रत । नरइयावमित्यादि ॥ सवस्त्रोका मनुष्याः यखवतिष्ठदमकक्षपराक्षिप्रमावत्वात् सच यखवतिष्ठेदमकदायीरानि रये वृद्धापिप्यत त

गुणा । दिसाणुवाएण सवत्योवा देवा महासुक्ते कप्ये पुराच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण अ्सखंजगुणा
 दिसाणुवाएण सवत्योवा देवा सहस्सारे कप्ये पुराच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण अ्सखंजगुणा, तण

यत् । दिसाचकाएव सवत्योवा विद्या दाहिकउत्तरेख पुराच्छिमेख सक्षिण्यगुवा पञ्चच्छिमेख विवेसाहिवा कार १ । दिग्मोमेखे जातां सववाका सिच द
 चिच उत्तरे नरतैरवतपुना बाहा तैमको बाहासिह पुंने महाविदेह मरौ सक्तातगुवा पयिमे यथाग्यामे मनुष्यवर्गं तैमको सिद्धा विमेषाचिक्क इति
 दिग्मिहार १ ॥ इति मतिहारभा यमवदस्य कश्चे-एएचिबं मते पेरयाचं तिरिक्ककोविद्याय अनुष्याचं देवाय सिहराय पयमईसमाचे । एइमे
 तेमववन् नारकोतो तिवययोमियागे मनुष्यन देवतागे सिद्धमे पाचमति ते समसेकरो । सेच कउरे इ हिता अग्यावा बहयावा गुहावा विमेषाचिद्या ।
 ते विहो २ बाहाइव पचपुदे सराकाइवे विहो विमेषाचिक्क पुवे । गोवमा सणवहावा मनुष्य करया यक्षिण्यगुवा देवा यक्षिण्यगुवा सिद्धा य
 चतगुवा तिरिक्ककोविद्या यचतगुवा । वेणोतम सववाका मनुष्यजमुदकवे इन्द्रधि प्रमाचमे यागे विचार कश्चे-तेइमको नारको यक्षययातगुवा

स्त्री नैरपिडाः अथ रयेपगुणा अङ्गुलमापद्वैप्रदेशराक्षीः सम्यस्थितिं प्रथमवर्णमूलेन गुणिते यावान् प्रवेशराक्षिं प्रवर्तते तावत्प्रमा
दासु पनीकृतस्य लोकाभ्येकमादेशिच्छीयुः अक्षिपु यावन्तो नमः प्रवेशा तावत्प्रमादस्तात् तन्मयी देवा अक्षययगुणाः व्यस्तराणां स्वातिष्काणां च
प्रत्येकं प्रतरार्धवपयज्यवर्तित्थे विगताकाशाप्रवेशराक्षिप्रमादस्तात् तेभ्यः सिद्धा अमलगुणा अमयीप्यननुब्रुवात्, तेभ्यः स्तियग्यीनिजा अ
मलगुणाः वमरपतिजापिक्वाभा सिद्धम्योप्यनलगुणस्तात् तदय नैरपिक्वातयग्यीनिजमनुष्यदेवसिद्धरूपाणां पञ्चानामल्पयदुल्ल मुक्त भिदानी नैर
विद्वतितम्योनिजतैवम्यानिजोन्मनुष्यभानुपीदेवद्वीविदुल्लसजाना भद्राना मल्पयदुल्लमजिप्तिरसुरिद्वमाह-एश्विबं जने । नरद्वयद्वमित्यादि ॥ स

पर यज्ञसमीपवत्तगा समणाउसो ! दिसाणवाएण सध्वत्थीआ सिद्धा दाहिणउत्तरेण पुरिच्छिमेण सखेज्जागु
णा, पञ्चच्छिमेण त्रिसेसाहिया दार १ । एएसिण जत ! णेरइयाण विरिस्कजोणियाण मणुस्साण देवाण
सिद्धाणय पचगइसमांसण कयरं कयरं हितो ह्यप्पाया तुल्लाआ त्रिसेसाहिया वा ? गोयमा !

पैगुबसाच चक्रप्रदय रामचक्र पवित्र प्रणमसु गुहते दीप्य प्रणमसु गुहते प्रदयरागि हव ततसमान स्रुं धनकील भासाज एहवा चक्रप्रदयबीज जेतसा
 त नभप्रदय ततनामसाचकतो ससपरातगुवा च्छारत्नतिपाची प्रत्येकप्रतर सवसेवभागवति योचयत साकाश प्रदयरागिहै त प्रमाचहै निव प्रबंतगु
 वा समस्यो पनस्तगुवा तमाटे तियवचानिया पनस्तगुवा । ननस्तोकाव पनस्तकाय तमाटे । एहविचभते चरखाचं तिरिस्त्रजाबियाच मनुखाच
 मच्योव दशाच देवोचं विहाचय पनस्तसमानेच कबर २ हितो प्रपावा ४ । एह चमगबन एह नारकीजे तियेवने तियसबोने मनुचने मनुचबोम
 दशन दशोन सिरने ए पाठपद समानेचरी माशामाहि चरी बिद्या २ याडा चविका । गायमा सगरावाभा मच्योपा मनुखा प्रसविज्जगवा चेर
 वा प्रसविज्जगवा । जेगोतम सवबोबाहो मनुचबो मनचबो सजाबोसमबो खो पधिकोहै पिय दश काहो ते सप्त चक्रममनुच माविभजा तेसाट खो
 तो मनुच पधपरातगुवा तमनुचबो नारको प्रसयरातगुवा । तिरिस्त्रजाबियोपा प्रसविज्जगुवापो दशा प्रसायज्जगुवा । दशोपा सविज्जगुवोपा वि

वक्षोका मानुष्यो मनुष्यस्त्रिय सदयेयबोटाकोटीप्रमाश्रयात्, ताप्यो मनुष्या असुरयेयगुणा इह मनुष्या समुर्ध्वमना अपि यस्मिन्ने वेदस्या विव
 उच्यते तत्र समुर्ध्वमना वाचादिषु भगवन्निष्ठमनाग्तपु जायमाना असुरयेयाः प्राप्यन्त तप्यो नैरपिका असुरपपगुणा मनुष्या भूतउपपद पि मे
 रूपमर्देयतागगतप्रदेशरात्रिप्रभावा लभ्यन्ते नैरपिकास्त्वभूतसमाश्रयेप्रमयशराक्षिसत्कृतितीयवगमूखगुचितप्रमयमर्ममूलममासमखिगताकाशाप्रदेशरा
 त्रिप्रभावा क्षतो प्रवस्यसद्वैयगुणा क्षान्त्य स्तिर्ययोपिका किंयौ असुरयगुणाः प्रतरासद्वैयजायवस्यसद्वैयप्रचिन्नप्र प्रदेशरात्रिप्रमाश्रयात् ताप्यो

सम्वत्थोवा मणस्सा णरइया असुखेज्जगुणा देवा असुखेज्जगुणा सिद्धा सुणतगुणा तिरिस्कजोगिया सुन
 तगुणा । एणसिण भने । णेरइयाण तिरिस्कजोगियाण मणस्साण मणस्सीण देवाण
 सिद्धाणय सुठगतिसमासण कयरे कयरोहितो सुप्पावा थज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ।
 सम्वत्थोवा मणस्सीने मणस्सा असुखेज्जगुणा । णेरइया असुखेज्जगुणा तिरिस्कजोगिणीने असुखेज्जगुणा

हा पचतमवा तिरिस्कजाविया पचतमुवा वार २ । ते नारकोवो तियस को पसक्यातगुवो प्रतर पसक्यातमाग वल्लसक्यान् यावि मभप्रदेय रायिप्र
 माव ते तिरिस्कवोवो देवता पसक्यातमाग वर्ति मभप्रदेय रायिप्रमाव ते देवतावो देवागना सक्यातगवो इर गव इर कप इति वचनात् वेवोवो सि
 वत्रोत्र पचतमवा ते सिद्धको तियसक्यामिया पचतमवा सक्कावहर त्रिमाद देवात् इति गतिहार संपूव इवे इवे इन्द्रियहार कवेवे—दूखपदे तो
 जाहार । १ । पचमिव भते सर दिवाव । एव केममवन् सेन्द्रिव । एणदियाव वा दिवाव तादि वाव चउरिदियाव पचेजियाव पचेदियावय कयर
 २ वित्ता वाप्यावा ४ । पचेन्द्रिवने सेन्द्रिवने तेन्द्रिवने चोरिन्द्रिवने पचमिवने पचेन्द्रिवने निष्ठन केववा २ को वाळा पचवा चवी । गावमा सवत्थावा
 पचेदिया । केमोतम सर्व पचेन्द्रिव सक्यातमावज काळाको तेववो । चउरिदिया विसेसाहिया तेर दिवाविसेसाहिया चदिवाविसेसाहिया । चो र इ
 पविसेसाहिक विष्कथ मूषोप्रभूत सक्यातमावज काळाको प्रमाव तेन्द्रिवमियोपिपिक विष्कथ मूषोप्रभूत तर सवपातमावज काळाको प्रमाव तर

वि देवा समक्षेपेणुषाः प्रतरासुर्येप्राणवत्पदयेप्राणिगतप्रदेशराक्षिमाणस्यास तेष्वापि देवाः संक्षेपेणुषा हात्रिभ्रुब्रुवत्यात् तान्योपि सि
 तुा यनन्तगुवा स्तान्योपि तियग्योमिका यमन्तगुवा अत्र युक्ति प्रायेयोक्ता गा गतिहार सिदाभो मिन्त्रियहार मपिजत्वाह-एवसिचं प्रंत ।
 सवदियावयमित्यादि व सुयसोक्ता पञ्चन्द्रियाः सख्यया दक्षयोजनकोटाभोटीप्रमायविक्रनयूषीप्रतिप्रतरासुर्येप्राणवत्पदयेप्राणिगताकाशमदे

ह । देवा अस्वेज्जगुणा । देवीनु सस्वेज्जगुणात् सिद्धा अणतगुणा तिरिस्कजीणिना अणतगुणा वार २ ।
 एणमिण नत ! सद्दिवियाण एगिदियाण यद्दिवियाण चउरिदियाण तद्दिवियाण पच्चिदियाण अण्णेदियाणय
 कयरे कयरोहती अप्पयाया यज्जयाया तुल्लाया यिसेसाहियावा ? गोयमा । सव्वत्थोवा पच्चिदिया चउरि
 दियाव्विसेसाहियातद्दिविया यिसेसाहिया येद्दिविया यिसेसाहिया अण्णिदिया अणतगुणा । एगिदिया अण्
 सद्दिविया यि० । एणसिण नत ! सद्दिवियाण एगिदियाण येद्दिवियाण तद्दिवियाण चउरिदिया पच्चिदियाण
 अप्पज्जत्तगाण कयरे कयरोहती अप्पयाया यज्जयाया तुल्लाया यिसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पच्चि

वी वेदिय विमोविच मूषीप्रमत पयवयातयाजन काकाकाहो ममाच । पच्चिदिया अपत्तगया एगिदिवा पत्ततमया सद दिवा विसेसाहिया । तेह
 वी पचेद्विदिव पत्ततमया पचेद्विदिय पत्ततगया जनकतोमादि वासतेवके तेहवी वेदिय विमोविचजन वेदियमोहिया । पयसिचंमते सद दिवा च वेदि
 वाचं तेह दिवाच चउरिदिवच पच्चिदियाचद अपत्ततयाच कयर २ कित्ता पत्तावा ४ । ममवन् एव सोद्वयने वेदिविद्वने चोदिर
 द्दिवन पचेद्वियने अपत्तोमासादि विवर् २ वकी पाळा वणी । मायमा सव्वत्थावा पायतिवा अपत्ततया चउरिदिया अपत्ततया विसेसाहिया तेदि
 या अपत्ततया विसेसाहिया वेद दिवा अपत्ततया विसेसाहिया एगिदिवा अपत्ततया विसेसाहिया मर दिवा अपत्ततया विसेसाहिया । जेगोतम
 मवीयोयाउ पचेद्विय पयपोतिता एकमतरे जतता भगुण पयपयातामयाप सुख तेतसेप्रमाण तेहवी चउरिदिय पयमोदिता विमयाचिक ममूनपनुज

यक्षोका मानुष्यो मनुष्यस्त्रियः सद्येयकोटाकोटीप्रगाथत्वात्, ताभ्यो मनुष्या असद्येयगुणा इह मनुष्याः समुच्छेदजा अपि यस्मिन्ने चेदस्या यिव
 उच्यते तत्र समुच्छेदजा वाचादियु मन्त्रनिद्रमनाग्न्यु जायमाना असद्ययाः प्राप्यन्त ताभ्यो तैरपिका असद्ययगुणा मनुष्या भूतुःउपपद पि मे
 व्यमदेयतागतमदेयरात्रिप्रमाणा सत्यन्ते तैरपिकास्त्वहुतमात्रोपदेयरात्रिसत्त्वाद्वितीयवगमूलगुणितप्रथमवर्गमूलप्रमाणास्त्रिगताकाशाप्रदक्षरा
 दियप्रमाणा सतो प्रवक्ष्यसहस्रैरपि सप्त सियम्योनिना कियो ऽसहस्रगुणाः प्रतरासहस्रपञ्चानवत्सहस्रपञ्चदशित प्रदक्षराणिप्रमाणात् ताभ्यो

सद्यत्यांवा मणस्सा णेरइया असखेज्जगुणा देवा असखेज्जगुणा सिद्धा स्युणतगुणा तिरिस्कजोणिग्या स्युन
 तगुणा । एएसिण नने । णेरइयाण तिरिस्कजोणिग्याण मणस्साण मणस्सीण देवाण
 सिद्धाणय स्युणतिसमासण कयरे कयरेहिती स्युप्यावा यज्जयावा तुत्तावा विसेसाहियावा ? गोयमा ।
 सद्यत्यांवा मणस्सीनु मणस्सा असखेज्जगुणा । णेरइया असखेज्जगुणा तिरिस्कजोणिगीनु असखेज्जगुणा

इह पञ्चतयवा तिरिस्काकिया पञ्चतनुवा दार २ । ते नारकोको तियस को पञ्चकातमको प्रतर पञ्चकातमाग यत्तसस्यान यपि ममप्रदेय रायिम
 माच ते तियसकोको देवता पञ्चकातमाग वर्त्ति मतप्रदेय रायिममाच ते देवताको देवागना संख्यातमको १२ गव १२ कय इति वचनात देवोको सि
 द्दोव पञ्चतगवा ते सिद्धको तियसदाजिया पञ्चतयवा सूखावासर निमाद सेपात् इति गतिद्वार संपूर्ण बवे, द्विवे इन्द्रियद्वार ववेस्त्रे—दूखपदे ती
 लाद्वार १ ३ पपमिच मते सर दियावे । पञ्च केमनवन् सेम्विय । एगिदियाच वा तिववाच ता द्वाच पञ्चरिदियाच पञ्चदियाच पञ्चदियाच कथर
 २ दित्ता वाप्यावा ३ । एवेद्विमे वेद्विमे तेद्विमे तेद्विमे तेद्विमे पञ्चमिचने पञ्चमिचने पञ्चमिचने पञ्चमिचने पञ्चमिचने पञ्चमिचने पञ्चमिचने पञ्चमिचने
 पञ्चदिया । वेगोतम सर्व पञ्चमिच पञ्चातयावन काळावाको तेद्वो । पञ्चरिदिया त्रिमेसाद्विवा तेद्विवा त्रिमेसाद्विवा यदिया त्रिमेसाद्विवा । पो र ३
 पविमेवाधिक दिक्कय एरोममूत पकायवावन काळावाओ प्रमाच तेद्विवा त्रिमेसाद्विवा पञ्चमिचने पञ्चमिचने पञ्चमिचने पञ्चमिचने पञ्चमिचने पञ्चमिचने पञ्चमिचने पञ्चमिचने

सुखयन्त्रागच्छमाश्रयताम् । तेन एवेन्द्रिया अपर्याप्ता अपान्तगुणा यमस्पतिकारिष्विज्ञानमपर्याप्तमा मनस्तया सदा प्राप्यमाश्रयताम् । तेनोपि सन्निध्या अप्रयासा विद्येयापिक्का द्वेन्द्रियाद्यापर्याप्तमासपि तत्र प्रवेष्टात् । नत द्वितीयमस्यबुद्धय मधुमेतयामेव पर्याप्तमा मरुपयदुस्वमाह-ए सुविच प्रते । सद्दिव्यायमित्यादि ॥ स्वस्वोक्त यतुरिन्द्रिया पर्याप्ता यतोल्यायुय यतुरिन्द्रिया स्तक प्रभृतकालमवस्थागान्नायात् , पुष्कासमये

पचिदिया पञ्जस्रगा विसेसाहि्या , तेइदिया पञ्जस्रगा विसेसाहि्या , येइदिया पञ्जस्रगा विसेसाहि्या , एगिदिया पञ्जस्रगा व्युत्तगुणा , सद्दिव्या पञ्जस्रगा सखेजगुणा । एगसिण जते ! सद्दिव्याण पञ्जत्ताप ज्ञास्रगाण कयरे कयरेहिंते व्युप्पावा यज्ञयावा तुप्पावा विसेसाहि्यावा ? गोयमा ! सवृत्योया सद्दिव्या व्युपञ्जस्रा पञ्जस्रगा सद्दिव्या सखेजगुणा । एगसिण जते ! एगिदियाण पञ्जत्तापञ्जत्ताण कयरे कयरे हिंते व्युप्पावा ? गोयमा ! सवृत्योया एगिदिया पञ्जस्रगा एगिदिया व्युपञ्जस्रा व्यस० । एगसिण जते !

भा पचेदिय पञ्जत्तमा विसेसाहि्या । हेभोतम सबबाळा ओरिन्द्रिया पर्याप्ता जेमचो बाळा पाठधामाहि तेइयो पचेदिय पर्याप्ता जेमचो विसेसाहि्या प्रभूत पगल पसववात मायमात्र सुखदमात्र । बेर दिवपञ्जत्तमा विसेसाहि्या तेर दिव पञ्जत्तगा विसेसाहि्या एगिदिय पञ्जत्तगा विसेसाहि्या अपन दगुबा मरुदिवपञ्जत्तमा विसेसाहि्या । बेर द्विय पर्याप्ता विषयाधिक प्रभूतप्रतर अगल असववात भागमात्रसुख तेतस प्रमात्र तेद्वियपर्याप्ता विसेसाहि्या ओवेन्द्रियपर्याप्ता यमकतिपर्याप्ता यमन्तामाटे तेइयो सेद्विय पर्याप्ता विषयाधिक बेरद्वियपर्याप्तामाहि पासता । एगसिण जते सद्दिव्याप पञ्जत्तार्थ अपञ्जत्ताय कयरे र हिंता अपवावा ४ । हेभगवन् एव सेद्विवने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किञ्चा २ यको बाळा श्रव्यादि ४ । गोयमा मारताया मरुदिया अपञ्जत्तमा सद्दिव्या पञ्जत्तमा स्फुल्लयुवा । हेभोतम सर्वबाळा सेद्विय अपर्याप्ता इहा सेद्वियमाहि एवेद्विय घाष्टे मरुत्त पर्याप्ता सेद्विय सपरातगुणा ५ । एगसिणमत एगिदियाय पञ्जत्त अपञ्जत्तगवयकयरे र हिंते अपवावा ४ । हेभगवन् एव एवेन्द्रियने पर्याप्ता अपर्याप्ता

द्वाराक्षिप्रमाकृत्यात् तेन धतुरिन्द्रिया विद्योपायिका विषयसूच्या क्षेत्रा प्रभूतसंयययोगमकोटाकोटीप्रमाकृत्यात् तेन्योपि त्रीन्द्रिया विद्योपायिका क्षेत्रा विषयसूच्याः प्रभूततरवस्थययोगमकोटाकोटीप्रमाकृत्यात्, तेन्योपि द्वीन्द्रिया विद्योपायिका क्षेत्रा विषयसूच्याः प्रभूततरवस्थययोगमकोटाकोटीप्रमाकृत्यात्, तन्मो उनीन्द्रिया अमलगुणाः सिद्धाभा मनसात्वात्, तन्मोपि एकेन्द्रिया अमलगुणा मनसपतिकायिकामो सिद्धे योऽमलगुणात् तन्मोपि सन्दिप्या विद्योपायिका द्वीन्द्रिया दीनामपि तत्र प्रकृपात्, तदवमुक्त मकमीपिकाना मस्पययुक्त मिदानी भेतेपा मेवा ययोसामा द्वितीयमस्पययुक्तमात्र-एयसिधे भते ! सइदियाका मित्यादि ॥ सर्वसोकाः पचेदिया अपर्यासा एकस्मिन्प्रवरे पावत्यहुतासक्ये यमागमाशयि सुशतानि तावदप्रमाकृत्यात् तया तस्य सतुरिन्द्रिया अपर्यासा विद्योपायिकाः प्रभूताहुतासक्येयमागसक्यमाकृत्यात् तस्य त्रीन्द्रिया अपर्यासा विद्योपायिकाः प्रभूततरप्रतराहुतासक्येयमागसक्यमाकृत्यात्, तन्मोपि द्वीन्द्रिया अपर्यासा विद्योपायिकाः प्रभूततमाहुता

दिव्य अपज्जसगा चउरिदिया अपज्जसगा यिसेसाहिया, तेइदिया अपज्जसगा यिसेसाहिया, वेइदिया अपज्जसगा यिसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जसगा अपणतगुणा, सइदिया अपज्जसगा यिसेसाहिया । एए सिण जते ! सइदियाण एगिंदियाण वेइदियाण चउरिदियाण पचिठियाण पज्जसगाण कउरे कयरेहिती अप्पया यज्जयाया तुल्लाया यिसेसाहियावा ? गोयमा । सइत्योवा पज्जसगा चउरिदिया

पचकयतमाग एए तेतसे प्रमाक तेइको तेद्विष अपर्कारिता विद्योपायिक प्रभूततर अपसयथात भावमात्र सइप्रमाक तेइकी येद्विष अपर्कारिता विद्योपायिक प्रभूततर अपसयथातमाग सइप्रमाक एकेद्विष अपर्कारिता अपणतगुणा सइया अपणता यामिसे तेइकी अपर्कारिता विद्योपायिक वेद्विष अपर्कारितामी दि वासता । एएमिक्मते सइदियाक । केमणवन् एए सेद्विबने । पमिठियाक यद'दियाक तेर दियाक चउरिदियाक पचेदियाक पचकयतमाग अपकयरे २ दि ती पप्यावा ३ । एकेद्विबने वेइद्विबने तेइन्द्रियने भोरिन्द्रियने पचेद्विबने पचोपाने किइती २ यको मकमहुता ३ । भावमा सइप्रमाक चउरिदिया पचकयत

स रूपयन्तामरुतमसावस्थान् । तेष्व एबेन्त्रिया अपर्याप्ता अमलशुभा अमलशुभा सुदा प्राप्यमावस्थान् । तेष्वोपि सुन्त्रिया अपर्याप्त विद्येपरिष्कार द्वेन्त्रियाद्यपर्याप्तानामपि तत्र प्रवेष्टान् । गत द्वितीयमल्पवस्तु अपुनैतेषामेव पर्याप्ताना मस्ययुस्वमाद-ए-
सुन्त्रिया अपर्याप्ता सुर्वलोका द्युतरिन्त्रिया पर्याप्ता यतीत्यायुय द्युतरिन्त्रिया स्वतः प्रवृत्तकालमवस्थानाभावात् । पृच्छासमये पश्चिमे प्रते । सप्तविद्याबभिमत्यादि ०

पचिदिया पञ्चगगा यिसेसाहिया, तेइदिया पञ्चगगा यिसेसाहिया, धेइदिया पञ्चगगा यिसेसाहिया,
एंगिदिया पञ्चगगा झणतगुणा, सइदिया पञ्चगगा सखेज्जगुणा । एएसिण जते ! सइदियाण पञ्चत्ताप
ज्जत्तगण कयरे कयरोहि तो झप्पावा यज्जावा तुल्लावा यिसेसाहियावा ? गोयमा ! सख्खलोया सइदिया
झपज्जत्ता पञ्चगगा सइदिया सखेज्जगुणा । एएसिण जते ! एंगिदियाण पञ्चगगा पञ्चत्ताण कयरे कयरे
हि तो झप्पावा ? गोयमा ! सख्खलोया एंगिदिया पञ्चगगा एंगिदिया झपज्जत्ता झस० । एएसिण जते !

[illegible]

सारांशप्रमायत्वात् तस्य यत्तुरिन्द्रिया विद्येयापिक्ता विषयसूच्या सोपा प्रभूतसकयययीजनकोटाकोटीप्रमायत्वात् तेभ्योचि श्रीभिरया विद्येया
पिक्ता कया विषयसूच्याः प्रभूततरसकयययीजनकोटाकोटीप्रमायत्वात् तेभ्योचि द्वीन्द्रिया विद्येयापिक्ता सया विषयसूच्याः प्रभूततरसकयय
यीजनकोटाकोटीप्रमायत्वात्, तस्यो ऽरीन्द्रिया जनसगुणा सिद्धामा जनसगुणा सिद्धोपि एकाभिरया जनसगुणा यनरपतिक्तापिकाभो सिद्धे
स्यो प्यनसगुणत्वात् तस्योचि सन्धिया विद्येयापिक्ता द्वीन्द्रिया दीनामपि सत्र प्रकैपात्, तदयमुक्त सैकमीपिक्ताना मस्ययदुत्वं मिदामी मेतेया
मका पयोप्रामो द्वितीपनस्ययदुत्वंमाइ-एयचिचं प्रते । सइदियाणा मिह्यादि ऽ सर्वसोका पर्वेद्रिया अपयोसा एकस्मिप्रतर यावत्तुल्लासक्ये
पनापमात्रावि सराणि तावत्प्रमायत्वात् तथा तस्य यत्तुरिन्द्रिया अपयोसा विद्येयापिक्ताः प्रभूताकुमासकययनागवठप्रमायत्वात् तस्य
रीन्द्रिया अपयोसा विद्येयापिक्ताः प्रभूततरप्रतराकुमासक्येयनागवठप्रमानत्वात् तस्योचि द्वीन्द्रिया अपयोसा विद्येयापिक्ताः प्रभूततमाकुला

दिवा व्यपज्जसना चउरिदिया व्यपज्जसगा यिसेसाहि्या, तेइदिया व्यपज्जसगा यिसेसाहि्या, वेइदिया
व्यपज्जसगा यिसेसाहि्या, एगिदिया व्यपज्जसगा व्यनतगुणा, सइदिया व्यपज्जसगा यिसेसाहि्या । एए
सिण प्रते । सइदियाण एगिदियाण वेइदियाण चउरिदियाण पचिदियाण पज्जसगाण कयरे
कयरेहिती व्यप्याया यज्जयाया तुल्लावा यिसेसाहि्यावा ? गोयमा । ससुत्थोवा पज्जसगा चउरिदिया

यसकयातसाम सण तेतसे प्रमाय तेइको तेन्द्रिय अपयोप्ता विगयापिक्ता प्रभूतप्रतर असकयात मागमाय ससुत्थमाय तेइको येन्द्रिय अपयोप्ता विगया
पिक्ताप्रभूतप्रतर असकयातमाग ससुत्थमाय येन्द्रिय अपयोप्ता जनसगुणा सया जनसगुणा यामिसे तेइको अपयोप्ता विगयापिक्ता वेइदिय अपयोप्तामा
हि वासता । एएसिकमते सइदियाय । वेभयवन् एइ सैदिवने । पयिदियाय सइ दियाय तेइ दियाय चउरिदियाय पचेदियाय पज्जतयाय कयरे २ वि
ता परयावा ४ । एकेन्द्रियने वेइन्द्रियने तेइन्द्रियने पचेन्द्रियने श्रीरिन्द्रियने पचेन्द्रियने पयोप्ताने किइरी २ यको अस्ययदुत्वं ४ । योयमा ससुत्थमाय चउरिदिया पज्जत

सहयेपत्रागण-रुद्रमाश्रयात्, तेन एवेन्द्रिया अपर्याप्ता अस्त्युक्तानि यन्स्पर्शिकायिकामपर्याप्ता ममस्तथा धरा माध्यमाश्रयात्, तेनोचि
 सेन्द्रिया अपर्याप्ता विद्येयापि द्वाभ्यामपर्याप्तामपि तत्र प्रवेष्टात्, नत द्वितीयमस्त्युक्तं मनुजेतेषामेव पर्याप्ता मरुपयुक्तमाह-ए
 एविव प्रते । सद्दिव्याभिमित्यादि ॥ सर्वसोका यतुरिन्द्रियाः पर्याप्ता यतोस्त्यायुय यतुरिन्द्रियाः साका प्रभूतासमस्त्युक्तानावात्, पृथ्वावमेव

पचिद्विया पञ्चाक्षगा यिसेसाहिया, तेद्विविया पञ्चाक्षगा यिसेसाहिया, वेद्विविया पञ्चाक्षगा विसेसाहिया,
 एगिद्विया पञ्चाक्षगा अणस्तगुणा, सद्दिविया पञ्चाक्षगा सखेजगुणा । एएसिण नते ! सद्दिवियाण पञ्चाक्षगा
 ज्ञाक्षगाण कयरे कयरेहिती अण्वावा यज्यावा तुलावा यिसेसाहियावा ? गीयमा ! सखेत्योवा सद्दिविया
 अण्वाक्षगा पञ्चाक्षगा सद्दिविया सखेजगुणा । एएसिण नते ! एगिद्वियाण पञ्चाक्षगा पञ्चाक्षगा कयरे कयरे
 हिती अण्वावा ? गीयमा ! सखेत्योवा एगिद्विया पञ्चाक्षगा एगिद्विया अण्वाक्षगा अण्वाक्षगा । एएसिण नते !

न पचिद्विय पञ्चाक्षगा विसेसाहिया । हेभोतम सखेसाहिया । वोरिन्द्रिया पर्याप्ता जेभो वाडा वाठखामाहि तेद्वो पचेन्द्रिय पर्याप्ता जेभो विसेसाहिया
 प्रभूत पणुस पसकडात भासमाच कुकडमाच । वेद दिवपञ्चाक्षगा विसेसाहिया तेद्वि पञ्चाक्षगा विसेसाहिया एगिद्विय पञ्चाक्षगा विसेसाहिया एव
 तगवा मद दिवपञ्चाक्षगा विसेसाहिया । वेद द्विय पञ्चाक्षगा विसेसाहिया प्रभूतप्रतर अण्वा अखयात भासमाचख तेतख प्रमाच तेद्वियपर्याप्ता विसेसा
 विद्व ० वेद्वियपर्याप्ता अण्वाक्षगा ज्ञाक्षगापञ्चाक्षगा विसेसाहिया वेद्वियपर्याप्तामाहि दासता । एएसिचं मते सद्द
 दिवाच पञ्चाक्षगा अपञ्चाक्षगा कयरे २ विता पापया ४ । हेभगवन् एव सेन्द्रिये पर्याप्ता अपर्याप्ताजे विद्व २ यको वाडा इत्यादि ४ । गोवमा
 माश्रयावा सद दिवा अपञ्चाक्षगा सद्दिविया पञ्चाक्षगा अण्वाक्षगा । हेभोतम सर्वसाक्षा सेन्द्रिय अपर्याप्ता इती सेन्द्रियमाहि एवेन्द्रिय प्राप्ते सूक्ष्मा पर्या
 प्ता सेन्द्रिय सखेसाहिया अण्वा । एएसिचमेत एगिद्वियाच पञ्चाक्षगा अपञ्चाक्षगाच कयरे २ विती पापया ४ । हेभगवन् एव एवेन्द्रिये पर्याप्ता अपर्याप्ता

लोका अपि प्रतरे यावत्पुस्तसखेयप्रागभाश्रयि सुकानि तावत्प्रभावा वेदितव्या स्तेष्वः पञ्चद्विपयपर्यासा विज्ञेयापिचकाः प्रजृताङ्गुत्तसखेययना
 पञ्चलजानत्यात् तस्योपि द्वीग्विद्याः पर्यासा विज्ञेयापिचका प्रजृताङ्गुत्तसखेयप्रागभाश्रयि तस्योपि चिन्त्रिया पर्यासा विज्ञेया
 पिचकाः स्वप्नावत एव तथा प्रजृताङ्गुत्तसखेयप्रागभाश्रयि तस्य एकद्विद्याः पर्यासा चानन्तगुणा वनस्पतिकामिचाना पर्यासा
 ना मनन्त्यात् तेन सन्त्रियाः पर्यासा विज्ञेयापिचका द्वीग्विद्यादीनामपि पर्यासाना तत्र प्रक्षेपात् यत् वृत्तीयमस्यङ्गुत्तसखेयप्रागभाश्रयि
 त्रिपदास्ते प्रत्येकपर्यासाऽप्यस्यङ्गुत्तसखेयप्रागभाश्रयि तस्य एकद्विद्याः पर्यासा चानन्तगुणा वनस्पतिकामिचाना पर्यासा

येद्विद्याण पञ्जसपञ्जस्राण कयरे कयरेहिहो स्यप्यावा ४ ? गोयमा । सवृत्त्योवा येद्विद्या स्यपञ्जस्रा
 येद्विद्या स्यपञ्जस्रा स्यसखेज्जगुणा । एएसिण जत । तेद्विद्याण पञ्जसपञ्जस्राण कयरे कयरेहिहो स्य
 प्यावा ४ ? गोयमा । सवृत्त्योवा तेद्विद्या पञ्जस्राण स्यसखेज्जगुणा । एएसिण जत ।
 चउरिदिद्याण पञ्जसपञ्जस्राण कयरे कयरेहिहो स्यप्यावा ४ ? गोयमा । सवृत्त्योवा चउरिदिद्यापञ्जस
 गा चउरिदिद्या पञ्जस्राण स्यसखेज्जगुणा । एएसिण जत । पचेदिद्याण पञ्जस्रा पञ्जस्राण कयरे कयरेहिहो

मोहि विज्ञेयको वाडा बर्षा सरीखा विज्ञेयापिचक पुने ४ । भायमा सवृत्त्यावा एनिद्वि सपञ्जस्राण पञ्जस्राण सखेज्जगुणा । जेगौतम सवृत्त्यावा एके
 द्वि पञ्जस्रावाद्द स्यसपञ्जस्राण कयरेहिहो स्यप्यावा ४ । एएसिण जत । तेद्विद्याण पञ्जसपञ्जस्राण कयरे कयरेहिहो स्य
 प्यावा ४ ? गोयमा । सवृत्त्योवा तेद्विद्या पञ्जस्राण स्यसखेज्जगुणा । एएसिण जत ।
 चउरिदिद्याण पञ्जसपञ्जस्राण कयरे कयरेहिहो स्यप्यावा ४ ? गोयमा । सवृत्त्योवा चउरिदिद्यापञ्जस
 गा चउरिदिद्या पञ्जस्राण स्यसखेज्जगुणा । एएसिण जत । पचेदिद्याण पञ्जस्रा पञ्जस्राण कयरे कयरेहिहो

[illegible]

शुष्पायाः ? गीयमा । सधृत्योवा पचिदिया पज्जसगा अयसखेज्जगुणा । एएसिण
 न्त । सइदियाण एगिदियाण येइदियाण तइदियाण चउरिदियाण पचिदियाण पज्जतापज्जत्ताण कयरे ?
 हित्ती शुष्पायाः ? गीयमा । सधृत्योवा चउरिदिया पज्जसगा पचिदिया विसेसाहिया, येइ
 दिया पज्जसगा विससाहिया, तेइदिया पज्जसगा विसेसाहिया, पचिदिया अयसखेज्जगुणा

[illegible]

नमानादि गयतामि तावाममावस्था तया तन्यो उपयासा यस्येयगुणा प्रतरगताङ्गुलास्यपद्मानख्यप्रभश्चा देव त्रिषतुरिन्द्रियास्पथान्यपि
 वस्तव्यानि, यतं पक्षस्पयाङ्गुल्यत्वात्मक बहुपमस्पष्टबुल्य सम्प्रत्यतया समुदिताना पर्याप्तापयासाभामस्पष्टबुल्यमाह-पर्यसिन्न प्रत ।
 इत्यादि ॥ इदं प्रागुक्तद्वितीयोपास्ययद्बुल्यत्वावगानुसारिणः स्वयं प्राक्कीय तत्त्वतो प्रावितत्वात् गत मिन्द्रियद्वार मित्रात्री व्यापद्वार मपि
 सत्याह पर्यासिन्न प्रत । सवाइयाह मित्यादि ॥ सबसोका खसुत्रायिका होन्द्रियादीनामव असुत्रायिकत्वात् तपाव क्षापकायापेक्षया अत्यल्प

चउरिन्द्रिया अपञ्जसगा विसंसाहिया, सेहदिया अपञ्जसगा त्रिसंसाहिया, सेहदिया अपञ्जसगा त्रिसे
 साहिया, एगिन्द्रिया अपञ्जसगा अप्णतगुणा, सहदिया अपञ्जसगा त्रिसंसाहिया, एगिन्द्रिया पञ्जसगा
 ससंजगुणा, सहदिया पञ्जसगा विसंसाहिया, सहदिया विसंसाहिया द्वार ३ । एएसिण नते । सकाह
 याण पुनर्विकाहयाण स्याउकाहयाण तेउकाहयाण वाउकाहयाण अगस्सहकाहयाण तसकाहयाण स्याह

पराता भावना पाक्षसापरे तेहको पंचेन्द्रिय पर्याप्ताविशेषाधिक खाबिया तेहका तान्त्रपर्याप्ता विशेषाधिक तेहको वर द्विवा पर्याप्ता विशेषाधिक ।
 पंचेन्द्रिया अपञ्जसगा पर्याप्तगुणा वरद्विवा अपञ्जसगा वि तेरद्विवा अपञ्जसगा वि वरद्विवा अपञ्जसगा वि एगिन्द्रिया अपञ्जसगा प ।
 सरद्विवा अपञ्जसगा वि । तेहको पंचेन्द्रिय पर्याप्ता समशतगुणा तेहको चौरिन्द्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक तेहको तन्त्रिय पर्याप्ता विशेषा
 विक तेहका वरद्विन्द्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक तेहको एकेन्द्रिय अमलगुणा तेहको सरद्विन्द्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक । एगिन्द्रिया पञ्जसगा सखिखगु
 ना वरद्विअपञ्जसगा वि द्वार ३ ३ । तेहको एकान्त्रपर्याप्ता सख्यातयना तेहको सैन्द्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक खाबिया इति त्रतीयद्वार ताक्षि
 पदे तामराद्वार सपूषका ३ । एएसिणमे ते सकाश्याव पुठ्ठीकायाव यावका तेउका यावका वरद्वार का तयका अकारवाच जयरे २ इति
 पपुया ३ । हेमयान् कायद्वारकक्षो पक्ष सख्यामे पुण्योकायन पपुकायने तेहकायने कावकायने वनखतोकायने वसकायने पकायने एकसादि वि

स्यात् तेन्य सौत्रस्यापिना असम्यग्गुणा अर्धस्येयलोकाकाशप्रमादस्यात् तेन्यः पृथिवीकापिना विद्योपाचिकाः प्रभूतासङ्ख्येलोकाकाशप्रदेस्यमा
वस्थान् तस्या उप्यायिका विद्योपाचिकाः प्रभूततरासङ्ख्येलोकाकाशप्रदेस्यमावस्थान् तस्यो वायुकापिना विद्योपाचिकाः प्रभूततरासङ्ख्येलोकाका
शप्रदेस्यमावस्थान् तस्यो उप्यायिका चमनगुणाः सिद्धाभा मनस्तस्यात् तस्या धमर्यापिका चमनगुणा अनन्तलोकाकाशप्रदेस्यारागिमास्तस्यात्
तस्यः सकाविका विद्योपाचिकाः पृथिवीकापिनामपि तत्र प्रकृपान् उक्तमौपिकागमस्यदुल्य भिदानी मतेपामवा पर्याप्ताना द्वितीयमस्य
वपुत्वमाह-यपविच नते । सकाविकापिनामपि ॥ सुगम समस्ततपामव पर्याप्ताना तृतीयमस्यदुल्यमाह-यपविच नते । सकाविकापिनामपि ॥

याण कयरे कयरेहिती अप्याया ? गोयमा ! सख्योवा तसकाइया तेउकाइया अससंज्ञगुणा, पुढनि
काइया यिसंसाहिया, आउकाइया विसंसाहिया, वाउकाइया विसंसाहिया अउकाइया अणतगुणा,
वणस्सइकाइया अणतगुणा, सकाइया विसंसाहियाया । एणसिण नत ! सकाइयाण पुढविक्काइयाण
आउकाइयाण तउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय अपज्जत्तगण कयरे कय

हा १ वको तादा इत्यादि १ ४ गायमा समस्त्यावा तसकाइया तेउकाइया विसंज्ञगुणा । चौतम सवकाहा वसकाया भावना पाख्खीपरे तेउको
पमव्यातगुणा । पुढगीकाइया वि वाउकाइया वि वाउकाइया वि वाउकाइया वि वाउकाइया वि । तेउका पृथिवीकापिना
विद्योपाचिक प्रभूत समस्त्याव खोकाकाश प्रमाण तेउको वाउकाय वि प्रभूत तमस आकाशाय तउयो पकाइया पचतगवा विद्यता भवो तदा वनस्य
तोकाय समस्तगुणा समस्तलोकाकाश प्रमाण तेउको सकाविक विद्योपाचिक एलोकायादिमादि वासताप्यापुण्य । एणसिण भते मकाइयाय पठवोका
याव पाठ तेन वाउ वपसाइ तसकाय अपमस्तगवाय कयरे २ विता अपपावा ४ । प्रेमगवण्ण उइ मकाइयाजे एल्लोकायमे अपकाय तेउ का
१ २ मममी पव कायन अपपापुताम विक्का १ वको यावा यवा विगियापिक्का ४ । गायमा समस्त्यावा तसकाइया अपज्जत्तग ५

रेहितो ह्यप्यायः ? गोयमा । सधृत्योवा तसकाइया अपज्ज्ञतगा, तेउकाइया अपज्ज्ञतगा असखे
ज्ज्ञागुणा, पुढविकाइया अपज्ज्ञतगा विससाहिआ, अउकाइया अपज्ज्ञतगा विससाहिआ, वाउकाइया
अपज्ज्ञतगा विससाहिआ, वणस्सइकाइया अपज्ज्ञतगा अणतगुणा । सकाइया अपज्ज्ञतगा विससाहिआ
एएसिण नते ! सम्राट्ठयाण पुढविकाइयाण अउकाइयाण तउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण
तसकाइयाणय पज्ज्ञतगाण कयरं करेहितो ह्यप्यायः ? गोयमा ! सधृत्योवा तसकाइया पज्ज्ञतगा,
तेउकाइया पज्ज्ञतगा असखेज्ज्ञागुणा, पुढविकाइया पज्ज्ञतगा विससाहिआ । अउकाइया पज्ज्ञतगा विससे
साहिआ, वाउकाइया पज्ज्ञतगा विससाहिआ, वणस्सइकाइया पज्ज्ञता अणतगुणा, सकाइया पज्ज्ञता

[illegible]

सुगमं नाममतमतेषामय सखायिकादीना प्रत्यक्ष पर्यासाऽप्यर्थसिद्धयत्त मरुपदबुद्ध्याभावा-एव सिद्धं भवेत् । सखायाय पञ्चताऽपञ्चतासमित्यादि ॥
सुगमम्, सुसत्त्वेतेषामय सखायिकादीना समुद्दिताना पर्यासाऽप्यर्थाभावा मरुपयुक्त्य पञ्चममाह-एव सिद्धं भवेत् । सखायाय समित्यादि ॥ सर्वेस्त्रो

यिसेसाहिया । एवमिह भवेत् । सकाह्याण पञ्चासा पञ्चासा कयरे कयरेहिता अप्यावा यज्ञयावा तुसावा
यिसेसाहियावा ? गोयमा । सख्योवा सकाह्या अपञ्चासा, सकाह्या पञ्चासा सख्योवा । एवमिह
भवेत् । पुढयिकाह्याण पञ्चासा पञ्चासा कयरे कयरेहिता अप्यावा यज्ञयावा तुसावा यिसेसाहियावा ?
गोयमा । सख्योवा पुढयिकाह्या अपञ्चासा, पुढयिकाह्या पञ्चासा सख्योवा । एवमिह भवेत् ।
आउकाह्याण पञ्चासा पञ्चासा कयरे कयरेहिता अप्यावा ? गोयमा । सख्योवा आउकाह्या अप

पञ्चासा पञ्चासा । सकाह्या पञ्चासा वि । तेनो सकाह्या पर्यासा विमर्षाधिक । एवमिह भवेत् सकाह्याय पञ्चासापञ्चासाय व
वर २ हिता अप्यावा ४ । भगवन् एव सकाह्याय पर्यासा विमर्षाधिक । तेनो सकाह्याय पञ्चासापञ्चासाय व
इया पञ्चासा सख्योवा । तेनो सकाह्याय पर्यासा विमर्षाधिक । तेनो सकाह्याय पञ्चासापञ्चासाय व
२ अथ कयरे २ हिता अप्यावा ४ । भगवन् एव सकाह्याय पर्यासा विमर्षाधिक । तेनो सकाह्याय पञ्चासापञ्चासाय व
पढयिकाह्या पञ्चासा पढयिकाह्या सख्योवा । तेनो सकाह्याय पर्यासा विमर्षाधिक । तेनो सकाह्याय पञ्चासापञ्चासाय व
भवेत् पाउकाह्याय पञ्चासापञ्चासाय कयरे २ हिता अप्यावा ४ । भगवन् एव सकाह्याय पर्यासा विमर्षाधिक । तेनो सकाह्याय पञ्चासापञ्चासाय व
गोयमा सख्योवा पाउकाह्या पञ्चासापञ्चासाय कयरे २ हिता अप्यावा ४ । भगवन् एव सकाह्याय पर्यासा विमर्षाधिक । तेनो सकाह्याय पञ्चासापञ्चासाय व
गया । एवमिह भवेत् तेनो सकाह्याय पञ्चासा २ अथ कयरे २ हिता अप्यावा ४ । भगवन् एव सकाह्याय पर्यासा विमर्षाधिक । तेनो सकाह्याय पञ्चासापञ्चासाय व

रेहिती श्रुप्यात्रा ? गोयमा ! सख्योया तसकाइया श्रपज्जतगा, तेउकाइया श्रपज्जतगा श्रसखे
 ज्ञगुणा, पुढविकाइया श्रपज्जतगा विसंसाहिआ, श्राउकाइया श्रपज्जतगा विसंसाहिआ, वाउकाइया
 श्रपज्जतगा विसंसाहिआ, यणस्सइकाइया श्रपज्जतगा श्रणतगुणा । सकाइया श्रपज्जतगा विसंसाहिआ
 एणमिण नते ! सकाइयाण पुढविकाइयाण श्राउकाइयाण तउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण
 तसमइयाणय पज्जतगाण कयरे कयरेहिती श्रुप्याया ? गोयमा ! सख्योया तसकाइया पज्जतगा,
 तेउकाइया पज्जतगा श्रसखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जतगा विसंसाहिआ । श्राउकाइया पज्जतगा विसं
 साहिआ, वाउकाइया पज्जतगा विसंसाहिआ, वणस्सइकाइया पज्जतगा श्रणतगुणा, सकाइया पज्जतगा

यमिज्जतगा । इथीतम सखीकाडा नमकाइया यपयापुता तेइथी तेउकाय यपर्यापुता असखयावगुणा । पुढवीकाइया यपज्जतगा वि पाउकाइया
 यपज्जतगा वि पाउकाइया यपज्जतगा वि ववसाइया यपज्जतगा यवतगुणा । तेइथी पुढवीकाइया यपर्यापुता विसयाधिक्क तेइथी यपुजा
 रया यपर्यापुता विसयाधिक्क तेइथी वाउकाइया यपर्यापुता विसयाधिक्क तेइथी वमसुतोकाइया यपर्यापुता यनतगुणा । सकाइया यपज्जतगा विसं
 साहिआ वाउकाइया यपज्जतगा वि । तेइथी सखाइया यपर्यापुता विसयाधिक्क तेइथी वाउकाय यपयापुता विसयाधिक्क । एणमिण भते सुखाइया
 व पुढवीकाइयायं पाउ तेउ वाउ ववसु तसका पज्जतगाय ववरे २ विता यपयावा ४ तेमगवन् ए सखायने पुण्योकाइयायने यपुजा तेउ वा
 उ वमसुती ज्ञा यपयापुताने विता २ थो काडा यवया यवहिक्के ४ । गायमा सुखलावा तसकाइया पज्जतगा वि तेउकाइया पज्जतगा वि पयं ।
 तेइतम मवकाडा नमकाय यपर्यापुता तेइथी तेउकाय यपर्यापुता वि असखयावगुणा । पुढवीकाइया पज्जतगा वि पाउकाइया पज्जतगा वि वाउ
 काइया यपज्जतगा वि ववसाइया पज्जतगा यव । पुण्योकाइया यपयापुता वि यपुजाइया यपयापुता वि वाउकाय यपयापुता वि तेइथी न

विशेषादिषु १० । ततो यमस्यस्योऽप्याप्ता अनन्तगुणाः ११ । पर्याप्ताः सत्येयुगाः १२ । तदेव कायद्वारे सासाभ्येन पञ्चमन्त्राणि प्रतिपादिता
नि सम्प्रत्यास्मिन्नुद्य द्वारे मूलनवाहरादिष्वेवम पञ्चदशमश्रवण-पर्याप्तं जन्ते । शुद्धभावाभित्यादि ४ सत्येयुगाः सूर्यमतीजस्वायिका असत्येय

पुत्रा सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! तसकाइयाण पज्जप्ता पज्जप्ता कयरे कयरोहितो अप्पाया ४ गोय
मा । सद्यत्योवा तसकाइया पज्जप्ता, तसकाइया अप्पज्जप्ता अप्सखेज्जा ० । एसिण नत्त ! सकाइयाण
पुढयिराइयाण अप्पज्जप्ता तउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण पज्जप्ता २ ण
कयरे कयरोहितो अप्पाया ४ १ गो ० ! सद्यत्योवा तसकाइवा पज्जप्ता, तसकाइया अप्पज्जप्ता अप्सखे
ज्जगुणा, तउकाइया अप्पज्जप्ता अप्सखेज्जगुणा पुढविकाइया अप्पज्जप्ता विसेसाहिया, अप्पज्जप्ता अप्प
पज्जप्ता विसेसाहिया, वाउकाइया अप्पज्जप्ता विसेसाहिया, तउकाइया पज्जप्ता अप्सखेज्जगुणा, पुढयि

[illegible]

वा राजमहायिषाः १ । पर्याप्तका सौम्य खसकायिषा एषा उपर्याप्तका असद्वैयुग्भाः द्वीभ्रियादीनामपर्याप्ताना पर्याप्तद्वीभ्रियादिभ्यो असद्वैयुगु
 यत्वात् २ । तत् सजसकायिषा अपर्याप्ता असद्वैयुग्भाः असद्वैयुगुलोकाभाप्रदश्रममावत्वात् ३ । ततः पृथिव्यभ्युवायसो उपर्याप्ताः क्रमण विम
 मायिषाः ६ । तत् सजसकायिषा पर्याप्तका सत्येयुग्भाः सूर्यसप्तपर्याप्तस्यः पर्याप्ताना सत्येयुगुवत्वात् ७ । ततः पृथिव्यपुवायवः पर्याप्ता क्रमण

ज्जसगा, आउकाइया पजसगा सखिजगुणा । एएसिण जते ! तेउकाइयाण पज्जसा पज्जसाण कयरे
 कयरेहिती अप्पाया ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जसगा, तेउकाइया पज्जसगा सखेज्जगुणा
 एएसिण जते ! वाउकाइयाण पज्जसा पज्जसाण कयर कयरेहिती अप्पाया ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वाउ
 काइया अपज्जतगा, वाउकाइया पज्जतगा सखेज्जगुणा । एएसिण जते ! वणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण
 कयरे कयरेहिती अप्पाया ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पज्ज

त्तादि । गोयमा सवत्थावा तउकाइया अप तेउका० ण सखिजगुणा । ज्जोतम सवत्थावा तेउकाइया अपर्याप्तता तेउकाइया पर्याप्तता सख्यात
 गुणा । एउविचमत्त वाउकाइयाण पज्जत्ता २ वय कयरे २ हिती अप्पाया ४ । हेमगवन् एउ वाउकाइये पर्याप्तता अपर्याप्तता ने किदां २ खी वाउा
 पर्याप्तत्तादि । गोयमा सवत्थावा तेउकाइया अप वाउका पज्ज सखिजगुणा । ज्जोतम सवत्थावा तेउकाइया अप वाउकाइया पर्याप्तता सखि
 तमया । एउविच भत्त ववत्थइकाइयाण पज्जत्ता २ वय कयरेर हिती अप्पाया ४ । हेमगवन् एउ ज्जन्ततोकाइये पर्याप्तता ने किदां २ खी वाउा पव
 इत्तादि । गोयमा सवत्थावा ववत्थइकाइया अप ववत्थइकाइया पज्ज सखिजगुणा । ज्जोतम सवत्थावा ज्जन्ततोकाइिय पर्याप्तता ववत्थतोकाइिय
 पवत्ता संवत्तातमया । एउविच भत्ते तउकाइयाण पज्जत्ता २ वय कयरेर हिता अप्पाया ४ । हेमगवन् एउ ज्जन्तताय पवा अप किदां २ खी वाउा
 पर्याप्तत्तादि । गोयमा सवत्थावा तउकाइया पज्जत्तगा तउकाइया अपज्जत्तगा पवत्तिज्जगुणा । ज्जोतम सवत्थावा ज्जन्तता पर्याप्तता ज्जन्तताय अप

सर्वसौकायदाः एव प्रतिगासकमस्यया इति मूल्यायुक्तायिद्वेज्योऽवहेयगुणाः, तेभ्यः मूलमवजस्यतिशायिका अतस्तगुणाः प्रतिनिगोदमनस्तामा प्राणात्, तस्यः सामानिका मूलमयीया विशेषायाः मूलमप्यविबीकायिकादीभामपि तत्र प्रवेपात् गतमीपिकाना मिव मस्ययदुल्य मिदामी मतया सेवा उपर्वाताभावाद्-एवसिर् प्रते । शुभमप्यजस्यतभावमित्यादि सर्वप्राग्व ज्ञावनीय सम्यत्येपाभव पर्याप्ताना तृतीयमस्ययदुल्यमाव-एवसिर् प्रत । शुभमप्यजस्यतभावमित्यादि एवमपि प्रागुक्तमस्यैव प्रावनीय अपुमा समीपामव मूल्यादीना प्रत्येकं पर्याप्तगतानि व्यस्ययदुल्यान्या

यिसंसाहिपा, सुजमवाउकाइया यिसंसाहिपा, सुजमनिगोदा व्यसखेजगुणा, सुजमवणस्सइकाइया व्य णतगुणा, सुजमा यिसंसाहिपा । एणसिण नत ! सुजमव्यपजसगण सुजमपुठविकाइया व्यपजसगण सुजमव्याउकाइया व्यपजसगण सुजमतेउकाइया व्यपजसगण सुजमयाउकाइया व्यपजसगण सुज मयणस्सइकाइया व्यपजसगण सुजमनिगोदा व्यपजसयाणय कयरे कयरोहिती व्यप्यावाः ? गीयमा । चध्वलीया सुजमतेउकाइया व्यपजसया, सुजमपुठविकाइया यिसंसाहिपा, सुजमव्याउका

तगुणा मुदुमा वि । तेवो सुममनकतीकाइया अतस्तगुणा सूका सव एवित्यादि वि । एवसिर्भते सुभम व्यजसगण सुभमपुठवोकाइया व्यज सभाव सजस पाठवाइया व्यजसगण सजस तेउकाइय यप सुभम वववाइकाइय यप सुभम निगोय व्यजसगणाय यप रे इतिता यपावाः । हेमगवण सुभम व्यप्याताने मू एवोकाव यप मू पाकाय यप मू तेजकाय यप मू वाउकाव यप मू पनस मोकाय यप मू निमाइ यप विर्वा र्वा वावा चरोखा विगोयायिक्क भवे । गायमा सवतोना सुभम तेउकाइया यप स पुठवीकाइया यप वि स पाठका यप वि मू पाठका वि मु निगावा यप यप स ववव यप चवेत म व्यजसगण वि । हेभोतम सववाठा सुभम तउकाय यप मू एवोकाय यप वि मू पाकाय यप वि मू वायुकाय यप वि मू निगोद यप स व्यख्यातगुणा मू पनस्योकाव यप

लोकार्शदाशदगप्रमायत्वात् तेज्यः दूस्मपृथिवीक्षायिका विशेषापिबाः प्रभूतासख्येयोबाकाशुप्रदेषाप्रमायत्वात् तेज्यः दूस्माप्यायिकाः, प्रभू
ततरारुमरूपयसीबाकाशमानत्यात् २। तज्यः दूस्मावायकायिका विश्वयापिबाः प्रभूततमासख्येयनोबाकाशुप्रदेषाप्रमायत्वात्, तेज्यः दूस्मानि
गोदा अमरुपेयगुबाः (पृषपाय ३००) दूस्मपहसं कादरव्यवब्धेदाय द्विविधादि-निगोथाः दूस्मा वादरा य तत्र वादरा शूरशकदादिपु दूस्मा।

काइया पञ्जसगा विसंसाहिया, स्यपकाइया पञ्जसगा विसंसाहिया, वाउकाइया पञ्जसगा विसंसाहिया, स्यपञ्जसगा घणस्इकाइया पञ्जसगा सखेजगुणा, सकाइया स्यपञ्जसगा विसंसाहिया, सकाइया पञ्जसगा सखेजगुणा सकाइया विसंसाहिया, एएसिण जत ! सुजमाण सुजमपुठविकाइयाण सुजमस्यउकाइयाण सुजमतउकाइयाण सुजमवाउकाइयाण सुजमवणस्इकाइयाण सुजमणिठयाणय सुजमकयरेहिता स्यप्यावा ? गोयमा ! सवत्योवा सुजमतउकाइया, सुजमपुठयिकाइया विसंसाहिया सुजमस्यउकाइया

पनस्तत्रा । सकाराया अपत्यसना विसेसाद्विवा मन्त्रादकाराया पत्यसना सखित्यगुणा । सकाराया अपर्यापना विसेयाद्विवा वनस्पतीकाराया पर्यापना संप्यातगता । सकाराया पत्यसना विमसाद्विवा । सकाराया पर्यापना विसेयाद्विवा । पक्षसूत्राविनामाग्नीमि प्रतिपादितानि पक्षमा मूलाबादरादिभेदेन सप्तममूत्राद्विवा । ए पर्यापनं सामान्यपक्षे कायवागवारे कक्षा, द्विसे मूलाबादर भेदेकरी १५ मूत्र कक्षे—एयविर्बभते युद्धमात्रं सुधुनपुठवीकाराया वं मुद्धमदाकारायाप युद्धम तेन मुद्धमबाह सद्धम पक्षस्त- सधुमनिगोवापय कवरे २ चिंतां भयपात्रा ४ । हेमगवन् एद्धने मूलावृष्णीकायने मूलापधरा यम मय्यतेतत्रावने मूलापराधुकायने मूलावन्नरपतीकाव मूलाजिगोदने बिर्वा २ योवाका घर्वा मरीका विसेयाद्विवा क्वय । भायमा सवत्यावा सद्धम ते चकाराया मद्धमपठवाकाराया विसेसाद्विवा । हेमोत्तम उपवाका मूला तेतकाव तेहको पूला एष्णीकाय विसेयाद्विवा । मुद्धम पाठकाद्विवा दि मुद्धममा चकाराया दि मद्धमनिवाया पर्य । मूला पक्षाय विसेयाद्विवा पूलापराधुकाद्विवा दि तेहको मूलाजिगोव पक्षकातगुणी । मद्धमपक्षराकाराया पक्ष

ए-एयसिच नते । सुपुमाच पञ्जतापञ्जहाचमित्यादि ४ इह यावरेपु पर्यासेज्यो उपर्यासा असङ्केयगुणा एकेकपर्यासमिश्रपा असङ्केयामामपयाप्ताना मत्वादा तथाचोक्त-प्राक् प्रथमे प्रष्टापमाख्ये षट्-पञ्जतगमिरसाय अपञ्जतगता वक्तुमन्ति अत्य एगो तस्य मियमा असङ्केज्य इति, सूस्मेपु पुन नार्थं क्रमः पर्यासाया पर्यासापेक्षया चिरकालावस्थायिग इति सर्वेव ते यद्वदो लभ्यन्ते तत उक्त-सर्वसोकाः सूक्ष्मा अपर्यासा स्तोत्र्यः सूक्ष्मा पर्यासकाः रुद्धेयगुणाः, एय पृथिवीवायिकादिविषयि प्रत्यक्ष प्राक्नोयं यत यनुधमल्पपुल्व मिदानी सर्वपा समुचिताना पर्यासापर्याप्तगत पञ्च

मनिगोदा पञ्जस्रगा अस्रखेज्जगुणा, सुजमवणस्सदकाइयापञ्जस्रया व्यणतगुणा, सुजमापञ्जाहा विसेसा हिया दार ३ । एएसिण नत ! सुजमाण पञ्जत्ता २ ण कयरे कयरोहितो व्यप्यावा ४ ? सव्वत्योवा सुजमा अपञ्जस्रगा सुजमा पञ्जस्रगा सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! सुजमपुढविकाइयाण पञ्जाहा २ ण कयरे २ हितो व्यप्यावा ४ ? गोयमा । सव्वत्योवा सुजमपुढविकाइया व्यपञ्जास्रया, सुजमपुढविकाइया पञ्जस्रगा सखेज्जगुणा । एएसिण नते । सुजमव्याउकाइयाण पञ्जाहा २ ण कयरे २ हितो व्यप्यावा ४ गोयमा । सव्व

वा सव्वमपठोकाइया अप सव्वमपठोकाइया पञ्जतगा सखज्जगुणा । हेमोतम सववाहा सूक्ष्मपुल्वोकाय अपर्याप्ता सूक्ष्मपुल्वोकाय पर्याप्ता सज्जा तगुणा पर्याप्ता अपर्याप्ताने । एएसिच भत सव्वम वाठकाइयाच पञ्जता २ ण कयरे २ हितो व्यप्यावा ४ । हेमगवन् एह सूक्ष्मपुल्वोकायने पर्याप्ता अप पर्याप्ता बिह २ वो काहा यवा इत्यादि । गायमा सव्वत्यावा सूक्ष्मवाठकाइया अपञ्जतगा सूक्ष्म वाठकाइयाए पञ्जस्रगा सखिज्जमवा । हेमोतम सववाहा सूक्ष्म पठकायने पर्याप्ता अपर्याप्ता तेद्वदो सूक्ष्म अपुकाइया पर्याप्ता सख्यातगवा । एएसिचं सूक्ष्म तेवकाइयाच पञ्जता २ ण कयरे २ हितो अपुकावा ४ । हेमगवन् एह सूक्ष्म तेवकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताने बिह २ वो काहा यवा । भासमा सव्वत्योवा सूक्ष्म तेवकाइया अपञ्जतगा सूक्ष्मतेवकाइया पञ्जतगा सखिज्जगुणा । हेमोतम सववाहा सूक्ष्म तवकाय अपर्याप्ताने सूक्ष्म तेवकाय पर्याप्ताने सख्यातगुणा । एएसिच भते सु

अथपञ्जस्रया विसेसाहिया, सुज्जमयाउकाहया अथपञ्जस्रया अथ
 सरेज्जगुणा, सुज्जमयणस्सइकाहया अथपञ्जस्रया अणतणुणा, सुज्जमा अथपञ्जस्रया विसेसाहिया एएसिण
 भते ! सुज्जमपञ्जस्रगाण सुज्जमपुढविकाहयपञ्जस्रगाण सुज्जमतेउकाहयपञ्ज
 स्रगाण सुज्जमयाउकाहयापञ्जस्रगाण सुज्जमयणस्सइकाहयापञ्जस्रगाण सुज्जमनिगीदपञ्जस्रगाणय कयरे कय
 रेहिती अप्याया ? गोयमा ! सव्वतोया सुज्जमवेउकाहया पञ्जस्रगा, सुज्जमपुढविकाहयापञ्जस्रगा वि
 सेसाहिया, सुज्जमथाउकाहया पञ्जस्रगा विसेसाहिया, सुज्ज

पञ्चतगुणा सु अप विमोहादि । एएसिण भते सुज्जम पञ्चतगुणा सु पाठ पञ्चस्रगा सु तेर पञ्च स पाठका
 पञ्च स० वचस पञ्च स निभाय पञ्चतगुणाव कयरे र हिता अप्याया ४ । हेमवन् एह सूचुम पर्वीत्तानि सू एब्बीबावपर्वीत्तानि सू पाठकाय
 पर्वी सू तेरका पर्वी सू वायुकाय पर्वी सू वज्रलोकाय पर्वी सू नियाद पर्वीत्तानि विहा र वो पाठा इत्थादि । गावमा सव्वत्तादा मुहुम
 तकाहया पञ्चतगुणा व पठोकाहया अप वि सु पाठकाहया पञ्च वि सु निभाया पञ्चतगुणा सखिज्जगुणा स वचस
 रका पञ्चतगुणा पञ्चतगुणा मुहुम पञ्चतगुणा विसाहिया । इभीतम सव्वत्तादा सूचुम तेरकाव पर्वीत्ता तेरवी सूचुम एब्बीबाय पर्वी वि सू पाठका
 स पञ्चतगुणा वि सूचुम वायुकाव प विमोहादि भूचुम निभाव प सव्वत्तादा सूचुम वज्रलोकाय प सव्वत्तादा सूचुम सव्वत्तादा विमोहादि
 व १. एएसिण भते सइमाव पञ्चता २ वय कयरे र हिता अप्याया ४ । एहने हेमवन् सूचुम पर्वी अप ने विहा र वो पाठा इत्थादि । गावमा स
 यत्तादा सइम अपञ्चतगुणा मुहुमपञ्चतगुणा सखिज्जगुणा । इभीतम सव्वत्तादा सूचुम अपर्वीत्ता सूचुमपर्वीत्ता सव्वत्तादा सूचुमपुठ
 वोकाहयाव पञ्चता २ वय कयरे र हिता अप्याया ४ । एहने हेमवन् सूचुम वायुकावने पर्वी अप ने विहा र वो पाठा वरी । गावमा सव्वत्ता

ए-तदसिद्धं ज्ञते । सुमुमात्वं पञ्जतापञ्जताकाभित्यादि ४ इह यादरेपु पर्याप्तोऽप्यासा अधोऽप्यासाया अपञ्जोपाभामपर्याप्तताया
मुत्पादा तथाचोक्त-प्राक् प्रथमे प्रज्ञापमात्वे षट्-पञ्जतगमिराया अपञ्जताया सक्रमन्ति अत्य एगो तत्त्व नियमा अक्षय्येति, सूत्रेपु
पुनर्नाय क्रमः पर्याप्ताया पर्याप्तायेक्या चिरबासावस्थायिनि इति सदैव ते यद्वो सत्यन्ते तत्त-सर्वसोकाः सूत्रा अपयोसा स्तोत्र्यः सूत्रमा
पर्याप्तताः बहुपुत्राः एवं पृथिवीवायिकादिवपि प्रत्येक प्रावनीयः, गत वतुधमस्यबहुत्व निदानी सर्वेषा समुचितताया पर्याप्तायासंगत पञ्च

मनिगीदा पञ्जतगा अस्वेज्जगुणा, सुक्रमवणस्सइकाइयापञ्जतया अणतगुणा, सुक्रमापञ्जता विसेसा
हिया दार ३ । एएसिण ज्ञत ! सुक्रमण पञ्जता २ ण कयरे कयरोहितो अप्यावा ४ ? सव्वत्योवा सुक्रमा
अपञ्जतगा सुक्रमा पञ्जतगा सस्वेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! सुक्रमपुढयिकाइयाण पञ्जता २ ण कयरे २
हितो अप्यावा ४ ? गीयमा ! सव्वत्योवा सुक्रमपुढयिकाइया अपञ्जतया, सुक्रमपुढयिकाइया पञ्जतगा
सस्वेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! सुक्रमस्थाउकाइयाण पञ्जता २ ण कयरे २ हितो अप्यावा ४ गीयमा । सव्व

४ । सव्वमपठोकाइया अप सव्वमपठोकाइया पञ्जतया सव्वज्जगुणा । हेभोतम सववाडा सूत्रमपठोकाय अपर्याप्ता सव्वमपठोकाय पञ्चता सज्जा
तगुणा पञ्चता अपर्याप्ताने । एसिबं भत सव्वम पाठकाइयाण पञ्जता २ पव कवर २ हितो अप्यावा ४ । हेभगवन् एह सूत्रमपठकायन पर्याप्ता अप
पर्याप्ता बिद्धी २ यो वाडा पव इत्यादि । गायमा सव्वत्यावा सुक्रमपाठकाइया अपपञ्जतगा सव्वम पाठकाइयाए पञ्जतगा सव्विज्जगुणा । हेभोतम
सववाडा सूत्रम पाठकाइने पर्याप्ता अपर्याप्ता तेहवो सूत्रम अप्यावाया पर्याप्ता सव्वतागणा । एसिबं सुक्रम तेवकाइयाण पञ्जता २ पव कवर २
विता अप्यावा ४ । हेभगवन् एह सूत्रम तेवकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताने बिद्धी २ यो वाडा पव । गायमा सव्वत्योवा सव्वम तेवकाइया अपपञ्जतगा
सुक्रमतेवकाइया पञ्जतगा सव्विज्जगुणा । हेभोतम सववाडा सूत्रम तवकाय अपर्याप्ताने सूत्रम तेवकाय पर्याप्ताने सव्वतागुणा । एसिबं भते सु

ममन्यपटुस्यमाए-एपसिबं जते । सुहुमपुढविवाहादयाचमित्यादि ॥ सर्वसोकाः सूक्ष्मा स्तेजस्कायिका अपर्याप्ता कारवं प्रागेवोक्तं , तेभ्यः सूक्ष्मा पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विद्येयायिकाः तेभ्यः सूक्ष्मा उष्कायिका अपर्याप्ता विशेषायिका अपर्याप्ता यिज्ञेयायिकाः , यथापि कारव्य प्रागेवोक्तं , तज्यः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्याप्ताः सङ्क्षेयगुणाः अपर्याप्तप्रप्योधि पर्याप्ता संक्षेयगुणाः इत्यमन्तर प्राचितं तत्र सर्वसोकाः सूक्ष्मतरङ्गायिका अपर्याप्ता उक्ताः , इतरेच सूक्ष्मपर्याप्तपृथिवीकायिकादया विज्ञेयायिका विज्ञेयायिकत्वं न द्विमुक्तत्वं न त्रिगुणत्वं , ततः सूक्ष्मतरङ्गायिकस्यो पर्याप्तज्यः पर्याप्ताः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः सङ्क्षेयगुणाः सन्तः सूक्ष्मायुक्तायिकाऽपर्याप्तप्रप्योपि सङ्क्षेयगुणा अवन्ति ।

त्योया सुक्लमध्याउकाइया अप्पज्जत्तया , सुक्लमध्याउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण जते ! सुक्ल मतेउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरोहिती अप्पयाया ४ ? गोयमा ! सखत्थाया सुहुमतेउकाइया अप्प ज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा एएसिण जते सुहुमवाउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हिती अप्पयाया ४ ? गोयमा ! सखत्थोवा सुहुमवाउकाइया अप्पज्जत्तगा , सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा स

इमवाउकाइयाच पज्जत्ताचय कयरे २ हिती अप्पयाया ४ । मयवत्त एवमेसूक्ष्मवायुकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता न विवा २ यो वाहा कर्वा इत्तदिदि । भाइसा मज्झावा मसुम पाठकारया अप्पज्जत्तगा सुहुमवाउकाइयाच पज्जत्तगा सखि । हेमोतम सखोहा मसुम वायुकाय अपर्याप्ता मसुम वाडु काय पर्याप्ता मज्झातगुणा । एएसिबं भते सुहुमवत्तवाइयाच पज्जत्ता अप्पज्जत्ताचय कयरे २ हिती अप्पयाया ४ । हेमवत्त एवमेसूक्ष्म वज्जत्तो काय पर्याप्ता अपर्याप्ताने विवा २ यो कोडा । गाइसा सखत्थाया सुहुमवत्तवाइया अप्पज्जत्तगा सुहुमवत्तवाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । हेमोतम सखोहा मसुम वज्जत्तोकाइया अपर्याप्ता मसुम वज्जत्तोकाइया पर्याप्ता सख्यातगुणा । एएसिबं भते मसुमज्झायाच पज्जत्ता २ यय क यरे २ हिती अप्पयाया ४ । हेमवत्त एव मसुमनिगाइम पर्याप्ता अपर्याप्ताने विवा २ यो वाहा कर्वा । भाइसा सखत्थोवा मसुमज्झाया अप्पज्जत्त

खेज्ज० । एएसिण जते । सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंती अण्णवा १ ? गोयमा ।
 सव्वत्थीया सुहुमवणस्सइकाइया अण्णत्तगा, सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिण
 जते ! सुहुमनिगोदाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंती अण्णवा १ ? गोयमा ! सव्वत्थीया सुज्जमनिगोदा
 अण्णत्तगा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिण जते ! सुहुमाण सुहुमपुठविकाइयाण सुहुम
 अण्णत्तकाइयाण सुहुमतउकाइयाण सुज्जमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता २
 ण कयरे कयरेहिंती अण्णवा १ ? गोयमा । सव्वत्थीया सुहुमतेउकाइया अण्णत्तया, सुहुमपुठविकाइया
 अण्णत्तया विससाहिंया, सुज्जमअण्णत्तया विससाहिंया, सुज्जमवाउकाइया अण्णत्तया विससाहिंया
 विससाहिंया, सुज्जमतेउकाइया पज्जत्तया सखिज्जगुणा, सुज्जमपुठविकाइया पज्जत्तया विससाहिंया, सुज्ज

गा लज्जमनिगाया पज्जत्तया स । इभीदम सर्वथा लज्जमनिगायाया अपर्षापेता तच्चो मूचमनिगाद पर्वोपेता सखातगुणा । पपसिच भते सङ्गमाय
 मज्जपठोकाइयाय लज्जमपाठकाइयाय सङ्गम तच्च मूचम वाच सुहुमवणस्सइकाइयाय सुहुम निगायाय पज्जत्ता २ अय कयरे २ वित्ता अपपावा ४ ।
 इमगज्ज ४४ सूचमने मूचमपुठविकाइयाय मूचम पठोकाइयाय अपज्जत्तया मूचम पठोकाइयाय अपज्जत्तया वि सु पाठकाइयाय अपज्जत्तया वि । इभीतम
 वाडा इत्यादि । भावना सव्वत्थीया सुहुम तेउकाइया सुहुम पठोकाइया अपज्जत्तया मूचम पठोकाइया अपज्जत्तया वि सु पाठकाइयाय पज्जत्ता २ वि सु तउकाइया
 मपवाडा मू तउकाइय अपर्षापेता मू पुण्णोकाय अप वि । मू अपकाय अपर्षापेता विग्रयाधिक । सङ्गम वाचकाइया पज्जत्ता २ वि सु तउकाइया
 पज्जत्तया विपुज्जगुणा म पठोकाइया पज्जत्तया विससाहिंया सङ्गम पाठकाइया पज्जत्तया विससाहिंया सुहुम वाचकाइया अपज्जत्तया विससाहिंया
 दिवा मूचमनिगाया अपज्जत्तया अपर्षापेता मूचम पुण्णोकाय पर्वोपेता विग्रयाधिक सुचमनिगाद अप

तेन्य मूल्मपर्यायिकापिकाः पर्यासा विद्यायापिकाः तेन्य मूल्मउष्कापिका पर्यासाः विद्यायापिकाः, तेन्योपि सूल्मवायुकापिकाः पर्यासा विज्ञेयापिकाः, तन्यः मूल्मनिगोदा अपर्यासा अर्धक्ययुगा स्तोया मतिमाधुर्यात् तन्य मूल्मनिगोदाः पर्यासाः सुहेयुगाः सूल्मेयपर्यासेन्य पर्यासा मा मोपतः सद्गुणुयत्यात् तन्य मूल्मवमरपरिकापिका अपर्यासा अमस्तगुणाः प्रतिनिगोद ममस्तासा तेषा जावात् तन्य सामान्यत सूल्मा अपर्यासाः विद्यायापिकाः मूल्मपुपिबीकापिकादीनामपि तत्र प्रकृपात् तेन्यः मूल्मयमरपरिकापिकाः पर्यासाः सद्गुणुगाः सूल्मेयपि अ पर्यासेन्यः पर्यासाः सत्ययनुवाः, यथावास्तन विद्यायापिका तदस्पमिति न सत्ययनुयव्याचात्, तन्य मूल्मपर्यासा विज्ञेयापिका

मञ्चाउकाइया पञ्जतगा त्रिसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया पञ्जतगा त्रिसेसाहिया, सुज्जमनिगोदा अपञ्जतगा अ्यससेज्जगुणा, सुज्जमनिगोदा पञ्जतगा सखेज्जगुणा, सुज्जमयणस्सइकाइया अपञ्जतगा अपणतगुणा, सुज्जमा अपञ्जतगा त्रिसेसाहिया, सुज्जमा यणस्सइकाइया पञ्जतगा सखेज्जगुणा, सुज्जमा पञ्जतगा त्रिसेसाहिया, एएसिण नते । आदरगाण यादरपुठविकाइयाण यादरअउकाइयाण यादरतउकाइयाण यादरयाउकाइयाण यादरयणस्सइकाइयाण पसेयसरीरयादरयणस्सइकाइयाण यादरनिगोदाण यादरतसका

यावता चवंज्जातगता । मूल्मनिगोदा पञ्जतगा सखिज्जगुणा मूल्मवमरकाइया मूल्मवमरकाइया अपञ्जतगा सखतमरा । तेन्यो मूल्मनिगोदा पञ्जतगा सख्यत गुणा तन्यो मूल्मवमरकाइया अपर्यासा अमस्तगुणा । मूल्म अपञ्जतगा त्रिसेसाहिया मूल्म वव्यरकाइया पञ्जतगा सखिज्जगुणा । तेन्यो मूल्म अपर्यासा विद्यायापिका तन्यो मूल्म वमरपुठविकाइया पर्यासा अपणतगा सखिज्जगुणा । मूल्म पञ्जतगा त्रिसेसाहिया मूल्मा त्रिसेसाहिया । मूल्म पञ्जतगा विद्यायापिका मूल्म विद्यायापिका । एवमिदं मत वाचयाम यादरपुठविकाइया यादर तेष यादर काय यादर वव्यर र । मवमर एव यादर पुम्पोकायेन यादर अपर्यासेन यादर वाचयामे वादर ममरपुठविकाइया । ममरपुठविकाइया । ममरपुठविकाइया यादर

सूक्ष्मपचिव्यादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रवेष्टात् १४ । तेभ्यः सूक्ष्मा विक्षेपापिक्ता अपर्याप्तानामपि तत्र प्रकृतात् १५ । तदेयमुक्त्वानि सूक्ष्माधिता
नि पच्यमूत्राणि क्षाम्प्रतिवाधराश्रितानि पंचाक्षक्रमकान्निपितसुराह-एएसिण प्रत । यापराह वायरपुढाविद्याइयाकमित्यादि । सबसोका वादरा
रुमकापिक्ता द्वीन्द्रियादीनामेव वादरत्रयत्वात्, तर्पाच वापकायज्यो अस्यात् १ । तज्यो वादरतेजरकापिक्ता असस्यगुणा २ । अर्चस्येपलोका

इयाणय कयरेर हितो ह्यप्याया यज्ञयावा तुलावा विसेसाहियावा ? गो० । सवृत्त्योवा वादरतसक्राड्या
धादरतेउकाइया ह्यसखेज्जगुणा, पधेयसरीर धादरवणस्सदकाइया ह्यसखेज्जगुणा वायरनिगीया ह्यसखेज्ज
गुणा, धादरपुढाविकाइया ह्यसखिज्जगुणा, धादरश्याउकाइया ह्यसखज्जगुणा धादरवाउकाइया ह्यसखे
ज्जगुणा धादरवणस्सदकाइया ह्यणतगुणा धादरा विसेसाहिया, एएसिण जते ! धादरापज्जसगण धाद
रपुढाविकाइया ह्यपज्जसगण धादरश्याउकाइया ह्यपज्जसगण धादरतउकाइया ह्यपज्जसगण धादरवाउ

रनिमायाधं वादर तसकाइयाच कहर २ किता चणावा । प्रत्येकयोरो वादर वनस्पतीकावने वादरनिमादने वादर पसकायने विह्वीयो दाडा च
वा । नाजमा सवत्तावा वादरतसकाइया वादर तेउकाइया चसखिज्जगुणा । हेगोतम सवत्तावा सकावा वादर सवत्ताइया तेउवी वादर तेउकाइया
चसयणातमुवा । पतेदमरोर वादरवणस्सकाइया चसखिज्जगुणा । प्रत्येकयोरोर वादरवनस्पतीकाइया चसयणातगुणा । वादरनिगाया चसखिज्जगु
णा वादर पठनोकाइया चस वायर पाच चर्ष । वादरनिगाव चसयणातगुणा वादरपुढोकाय चर्ष तेउवी वादरपपुकाय चसयणातगुणा । वा
दर वाउकाइया चस वायर वणस्सकाइया चकता वायर विसेसाहिया । वादर वाउकाय चसयणातगुणा वादर वनस्पतीकाय चसकयवा तेउवी
धादर विमयाधिव । एवविच भंते वादर चपज्जसगाच वादरपठनोकाइया चपज्जसगाच वायरपाउकाइया चय वादर जेउकाइया चप० वायर वाउ
काय चप० अयर वणस्सकाइया चप० । हेमगवन् इह वादर चपर्षापताने वादर पुढोकाय चपर्षो वादर चपुका० चपर्षो० वादर तेउकाय चपया

आश्रमप्रदेशमापत्वात्, तेन्योपि प्रत्येकशरीरयादरवर्णनरूपतिकायिका असक्येयगुणाः ३ । स्थानस्यासक्येयगुणत्वात्, यादरतेजस्कायिकादि मनुष्य
 हृत्तपत्र प्रयन्ति तथाचोक्त द्वितीय स्वामाक्ये पद-कादिक ज्ञते । यादरतसकाइयां पञ्चतगां ठावा पञ्चता ? गीयमा । सचावय भन्तो मनु
 रमृगिणे ते सन्ताडज्जसु दीवसमुद्गसु निद्रापायसु पञ्चसकलभूमीसु वापायसु पञ्चसु महाविदहसु इत्यथ यादरतेजकाइयां पञ्चतगां ठावा प
 ण्चता, तस्य यादरतसकाइयासकलभूमीसु हावा पञ्चता इति ० यादरवर्णनरूपतिकायिकासु त्रिष्वपि लोकेषु जवनादिषु तथाचोक्त-तस्मिन्त्य
 द्वितीये स्वामादय पदे-कादिक ज्ञते । यादरवर्णनरूपतिकाइयां पञ्चतगां ठावा पञ्चता ? गीयमा । सचावय सतसु पञ्चदशेसु सतसु पञ्चदश
 वनसु सचावय पायाससु जवससु प्रत्यक्षसु तन्मूलोपपत्त्यसु विमाचपत्त्यसु विमाचपत्त्यसु विरियलोप भगनसु तसायसु न

काइया अपञ्जस्तगाण यादरवर्णनरूपतिकाइया अपञ्जस्तगाण पञ्चयसरीरयणस्सहकाइया अपञ्जस्तगाण यादरनि
 गीता अपञ्जस्तगाण यादरतसकाइया अपञ्जस्तगाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा यज्जयावा तुत्तावा यि
 सेसाहिया ? गीयमा । सव्वत्थोवा यादरतसकाइया अपञ्जस्तगा, यादरतेजकाइया अपञ्जस्तगा अप्सखेज्जा
 गुणा, पञ्चयसरीरयादरवर्णनरूपतिकाइया अपञ्जस्तगा अप्सखेज्जा गुणा, यादरनिगोदा अपञ्जस्तगा अप्सखेज्जा

यादर वाहुकाय सप यादर वनरपतोकाय सप । पत्तयसरीर यादरवर्णनरूपतिकाइया सप यादर तसकाइया सप यादर तसकाइया सप पञ्चतगा सप
 र २ हिता अप्पावा ३ । प्रत्येकशरीर यादरवर्णनरूपतिकाइया अपर्णपित्ताने यादरनिगाइ अपर्ण यादर वनरपतोकाइया सप विहो २ यो यादर वनर
 रोपा विमेष दवे । गीयमा सव्वत्थोवा यादर तसकाइया सप यादर तसकाइया सप पञ्चतगा सप । गीेतम सव्वत्थोवा यादरवर्णनरूपतिकाइया सप
 तेद्वो यादर तेजकाय सपपापता सव्वत्थोवा पत्तयसरीर यादरवर्णनरूपतिकाइया सप पञ्चतगा सप विमेष गुणा यादरनिगावा सप पञ्चतगा सप ।
 तेद्वो पत्तयसरीर यादर वनरपतोकाइया सप सव्वत्थोवा सप यादरनिगोदा सपपापता सव्वत्थोवा यादरवर्णनरूपतिकाइया सप पञ्चतगा सप ।

दीनु इहेसु धावीसु पुण्डरिणीसु दीर्घियासु मुकानियासु खरेसु उरयतियासु सर २ पतिपासु निस्पतियासु ठळरेसु निळरेसु पिङ्गरेसु पल्ले
मु विवित्र्येत्रेसु दीवमु समुद्रसु सधसु चय जसाठएसु जसठायेसु मत्यबं यापरवरस्सइकाइयाबं पज्जत्तगाबं ठाळा पज्जता तथा क्त्यंत यापरवर
इसइकाइयाच पम्मद्वयाबं ठाळा तत्वत यापरवरस्सइकाइयाअ अयक्कत्तगाबं ठाळा पज्जता इति , तत् केन्नस्याऽसंबयेयमुच्चत्वात् उपपन्नास्ते था
इतरमरकापिकल्प्यो ऽमुदभयगुहा प्रत्यक्छरीरादारवमस्पतिकारिका काप्पो सादरनिगोदा असंबयेयगुहा साया मत्थम्भूसूभाधगाइनत्वा ज्ञासपु
सुवश्रविष ज्ञाधान् , पनञ सुयासादयोहि जसे अउअय भाविन सोच सादरान्नकापिका इति तन्मोपि सादरपुण्यीकारिका असंबयेयगुहा अ

गुणा, यादरपुठवीकाइया अपज्जसगा अत्तखेज्जगुणा, यादरअउकाइया अपज्जसगा अत्तखेज्जगुणा, यादरवाउकाइया अपज्जसगा अत्तखेज्जगुणा, यादरवणस्सइकाइया अपज्जसगा अणत्तगुणा, यादरअपज्जसगा विसेसाहिया २ । एएसिण नत्ते ! यादरपज्जसयाण यादरपुठवीकाइया पज्जत्तयाण, यादरअउकाइया पज्जसयाण यादरवाउकाइया पज्जसयाण यादरवणस्सइकाइया पज्जत्तयाण पसेयसरियादरयणस्सइकाइया पज्जसयाण यादरनिगोवपज्जसयाण यादरत्तसकाइयपज्जत्तयाणय

भाबरपुस्तोकाय अप ससक्तातदुना । मायर सातकाइया पञ्चतना अस माबर सातकाइया अप सस । बादर अप्पुकाइ सपयीं । सस बादर
 कापुकाइया सपयीं ससं । बाबर वक्का० अप सस बाबर अप्पञ्चतना विसिंसाइया । बादर वनरपतोका अप्पया मनकासुवा बादर सपयीं ।
 विमोपाधिब । एवदिब भत्ते बाधरपञ्चतगार्ब मायरपुठनीकाइया प मायर सातका प मायर वक्काइया
 रय पञ्चता । हेमवक्क डड बादर प बादर पुकाकाय प बादर तैठकाय प बादर सातका० प बादर वनरपतोकाय प ।
 पत्तेवधोद बाबरवक्काइया प माबर निभाय प मायर तसका० पञ्चतगावय वखरेर दिवाभापाका ४ । मल्ल बादरवनरपतोकास प० पाद

आशमदेशममावल्यात्, तेज्योपि प्रत्येकशरीरमादरवमरपतिकापिका असद्वैयगुणाः ३ । स्थानस्यासद्वैयगुणायात्, यादरतेजस्कापिकाहि मनुष्य
 दृश्येय नयन्ति तथाचाह द्वितीय स्थानाय पर-कश्चिदं ज्ञते । यादरतसकाहयाह पञ्चमगाहं ठावा पञ्चमा ? गीयमा ! सदायह अतो मनु
 रमयिते अन्ताहज्जह शीघ्रमुदंस्तु निष्ठापायह पञ्चमसकमभूमीह दापायहं पञ्चम महाविहहस्तु एत्वहं यापरतेसकाहयाहं पञ्चमगाय ठावा प
 ज्ञता, तत्पञ्च यापरतसकाहयाहमपञ्चमगाहं ठावा पञ्चमा इति ॥ यादरवमरपतिकापिकाह भियपि लोकेषु अवगादिषु तथाचोक्त-तस्मिन्नेव
 द्वितीये स्थानाय पर-कश्चिदं ज्ञते । मापरवमरसकाहयाहं पञ्चमगाहं ठावा पञ्चमा ? गीयमा ! सदायहं सप्तम पञ्चमगीहस्तु सप्तम पञ्चमगीह
 वमपस्तु अज्ञातोम मायास्तु अववेस्तु मञ्चपत्सकस्तु अन्तलोएकप्यसु विमाजवसियासु विमाजपत्सकस्तु तिरिपतोए अगस्तु तलाएस्तु म

काहया अपञ्जस्तगुणा यादरवणस्सहया अपञ्जस्तगुणा पत्तेयसरीरयणस्सहकाहया अपञ्जस्तगुणा यादरनि
 गोवा अपञ्जस्तगुणा यादरतसकाहया अपञ्जस्तगुणाय कपरे कयरेहितो अप्यावा यज्ञयावा तुल्लावा वि
 संसाहिया ? गीयमा ! सव्त्योवा यादरतसकाहया अपञ्जस्तगुणा, यादरतेजकाहया अपञ्जस्तगुणा अप्सवेज्जा
 गुणा, पत्तेयसरीरयादरवणस्सहकाहया अपञ्जस्तगुणा अप्सवेज्जा गुणा, यादरनिगोवा अपञ्जस्तगुणा अप्सवेज्जा

यादर वायुकाय ॥ यादर वमरपतोकाय अप । पत्तवसरोर वायरववस्सरकाहयाह अप वायरनिगाह अप० वायर तसकाह अपञ्चमगाह अप
 र २ इति अथावा ३ । प्रत्येकशरीर वादरवमरपतोकाहया अपर्गपुतानि वादरनिगाह अपर्गो वादर वसकाहया अप विहो २ जो वाका सवा स
 रीणा विमेष दुवे । मायमा सवत्तावा वायर तसकाहया अप वायर तसकाहया अपञ्चमगाह अप । जेगीतम सर्वकाहा वादरवसकाहया अपर्गपुता
 तेइहो वादर तेजकाण अपयापुता असययातगुणा । पत्तवसरोर वायरववस्सरकाहया अपञ्चमगाह वायरनिगाया अपञ्चमगाह अप ।
 तेइहो वस्त्रिमरोर वादर वमरपतोकाहया अप पत्तवसातगुणा वादरनिगोह अपर्गपुता असययातगुणा । वायरपठरीकारया अपञ्चमगाह अप ।

दीमु ररेसु वावीमु पुण्यरिबीसु दीदियासु गुणासियासु धरेसु सरपतिपासु सर २ पतिपासु विरपतिपासु उण्णरेसु निण्णरेसु चिण्णरेसु पण्णरेसु
 विविप्लेसु दीवमु समुहेसु सहेसु च व जलासएसु जलठावेसु यत्थं वायरववस्सइकाइयां पण्णतगाय ठावा पण्णता तथा जत्थेव वायरवव
 समइकाइयाय पण्णतगायं ठावा तत्थव वायरववस्सइकाइयाय अपण्णतगायं ठावा पण्णता इति २ तत् क्षेत्रस्याऽसंख्येयगुणत्वात् उपपद्यन्ते था
 धरतज्जकायिकाज्यो ऽमुवययगुणा प्रत्येकधरोरधारवमरपतिकायिका सज्जो धादरनिगोदा असंख्येयगुणा सता मत्तन्तसूस्मावगाहमत्वा जलसपु
 सववगिपच प्रावान् मत्तव सुवासादयोहि जले अवश्यं प्राविन स्तेव धादरान्तकायिका इति तज्जोपि धादरपुचिबीकायिका असंख्येयगुणा य

गुणा, धादरपुठवीकाइया व्यपज्जप्तगा व्यसखेज्जगुणा, धादरथाउकाइया व्यपज्जप्तगा व्यसखेज्जगुणा,
 धादरवाउकाइया व्यपज्जप्तगा व्यसखेज्जगुणा, धादरवणस्सइकाइया व्यपज्जप्तगा व्यणतगुणा, धादरव्यप
 ज्जप्तगा विसंसाहिया २ । एएसिण जते ! धादरपज्जप्तयाण धादरपुठवीकाइया पज्जत्तयाण, धादरथाउ
 काइया पज्जप्तयाण धादरतेउकाइयापज्जप्तयाण धादरथाउकाइया पज्जत्तयाण धादरवणस्सइकाइया पज्ज
 त्तयाण पत्तेयसरिरयादरयणस्सइकाइया पज्जप्तयाण धादरनिगोदपज्जप्तयाण धादरतसकाइयपज्जप्तयाणय

भादर पूजोवाव यय पसववगतनुंवा । भादर पाठकाइया पण्णतगा यय वावर वाउकाइया यय यय । भादर अपण्णता यय यय । भादर
 वागुवाइया ययबी० यय । भादर वववव यय यय वावर ययज्जप्तगा विसंसाहिया । भादर वमरपतोका ययबी० वमरपतोका भादर ययबी०
 विमेषादिक् । एएसिण मत्त वायरपण्णतगायं धादरपुठवीकाइया य वायर पाठका य वायर तठका य वायर वाउका० य वायर वववववा
 रय पण्णता । ईमगवम् ७७ धादर य धादर पूज्जाकाय य भादर ययुवा य धादर तेउकाय य धादर वाउका० य धादर वमरपतोकाय य ।
 पत्तेवसरोर वायरववस्सइकाइया य० धादर निगाव य धादर तयका० पण्णतगायव यवेरेर दिवा यपावा ४ । प्रत्यक् धादरवमरपतोकाय य० धाद

वाशाप्रदप्रमादस्यात्, तेज्योति प्रत्येकशरीरवाद्दरवन्नरस्पतिकारिका असद्वयेयुक्ताः ३ । स्वामस्यासद्वयेयुक्त्वात् वादरतेनस्थापिकादि भनूय
 हनपव प्रवन्ति तयाचोक्त द्वितीय स्वामाद्ये पद-कारिणं प्रति । वादरतसकाइयाय पञ्चतगाय ठावा पञ्चता १ गीयमा । सचावय अंतो मनु
 रनुचित चान्दाइज्जु शीवसमुद्रसु मिद्वीपायय पञ्चरसकमज्जुसु वापायय पञ्चसु महाविदइसु यत्थवं वापरतेउकाइयाय पञ्चतगाय ठावा प
 ज्जता, तत्थय वापरतउकाइयायमपज्जतगाय हावा पञ्चता इति ४ वादरवन्नरस्पतिकारिकासु त्रिषुपि लोकेषु जवभादिषु तयाचोक्त-तस्मिन्नव
 द्वितीये स्वामाद्ये पदे-कारिणं ज्ञत । वापरवन्नरसकाइयाय पञ्चतगाय ठावा पञ्चता १ गीयमा । सचावयं सतसु पकाददीसु सतसु पकोदिदि
 वनपसु चहाताए वायातसु जवपसु जववपत्यरसु ठम्लोएकप्यसु विमावसु विमावावसियासु विमावपत्यरसु चिरियलोए जनरसु तहाएसु न

काइया अप्पज्जसुणाण वादरवणस्सइया अप्पज्जसुणाण पत्तेयसरीरयणस्सइकाइया अप्पज्जसुणाण वादरनि
 गोठा अप्पज्जत्तगाण वादरतसकाइया अप्पज्जसुणाणय कयरे कयरेहिता अप्प्यावा यज्जयावा तुल्लावा वि
 सेसाहिया ? गीयमा । सव्वत्थोवा वादरतसकाइया अप्पज्जतगा, वादरतेउकाइया अप्पज्जसुणा अप्पज्जतगा
 गुणा, पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया अप्पज्जतगा अप्पज्जसुणा, वादरनिगोदा अप्पज्जतगा अप्पज्जसुणा

वादर वासुकाय यय वादर वन्नरपत्तोकाय यय । पत्तवसरीर वादरवन्नरसकाइया यय वादरनिगाव यय वादर तसकाइया यय पपज्जतगायय कय
 र २ दिता पयावा ४ । प्रत्येकशरीर वादरवन्नरस्पतीकाइया ययर्वापत्तेने वादरनिगाव ययर्वा वादर वसकाइया यय विज्जा २ लो भावः ययर्वा स
 रोपः विज्जेय इवे । भायमा ययत्थावा वायर तसकाइया यय वायर तउकाइया यय वायर तउकाइया वादरवन्नरसकाइया ययर्वापत्ता
 तेइवो वादर तेउकाय ययर्वापत्ता यउवयातमुक्ता । पत्तवसरीर वादरवन्नरसकाइया ययज्जतगा ययविज्जगुणा वादरनिगाया ययज्जतया ययस ।
 तेइवो पत्तेयसरीरो वादर वन्नरपत्तीकाइया यय ययववयातमुक्ता वादरनिगोव ययर्वापत्ता ययववयातमुक्ता । वायरपुठरीकारया ययज्जतया ययस ।

दीप्तुं दत्तेषु वावीसु पुष्करिणीषु दीप्तिषासु गुंतासिषासु सरेषु सरपतिषासु सर २ पतिषासु विसपतिषासु उज्जरेषु निज्जरेषु पक्षसे
 ॥ विविक्केषु दीप्तसु समुत्तेषु सवसु चय जलासयसु जलठावेसु एत्थं वायरववस्सइकाइया पज्जत्तगावं ठावा पज्जता तथा जत्थेव वायरवव
 रसइकाइयावं पज्जत्तगावं ठावा तत्थेव वायरववस्सइकाइया पज्जत्तगावं ठावा पज्जता इति २ तत् क्षेत्रस्याऽसंख्येयपुञ्जत्वात् उपपद्यन्ते धा
 दत्तत्रस्कापिक्कस्यो ऽसंख्येयगुणाः प्रत्येकशरीरबादरवमरपतिक्कापिक्का स्थाप्यो बादरमिगोदा असंख्येयगुणा स्तथा मत्थमसूक्ताधगाइमत्वा ज्जसिपु
 सुववापिक्क प्रावात् पत्तक्क सवाकादयोहि जसे प्रवणं जाविक्क सौक्क बादरमत्तक्कापिक्का इति तज्ज्योपि बादरपुप्पिक्कापिक्का असंख्येयगुणा च

गुणा, बादरपुठवीकाइया अपज्जत्तगा अपसंखेज्जगुणा, बादरपुठकाइया अपज्जत्तगा अपसंखेज्जगुणा,
 बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा अपसंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अपणत्तगुणा, बादरअप
 ज्जत्तगा विसेसाहिंया २ । एएसिण ज्ञते ! बादरपज्जत्तयाण बादरपुठविकाइया पज्जत्तयाण, बादरअप
 काइया पज्जत्तयाण बादरतेउकाइयापज्जत्तयाण बादरवाउकाइया पज्जत्तयाण बादरवणस्सइकाइया पज्ज
 तयाण पत्तेयसरीरयादरयणस्सइकाइया पज्जत्तयाण बादरनिगीदपज्जत्तयाण बादरतत्सकाइयपज्जत्तयाणय

मादर पुप्पोकाव चय चसक्कान्तनुं १ । मादर वाउकाइया पज्जत्तगा चय चस । बादर अपुकाय चयर्वां चस । बादर
 वाउकाइया चयर्वां चस । मादर वक्कन्तुं चय चस । बादर अपज्जत्तगा विसेसाहिंया । बादर वनरपतोका चयर्वां चनत्तगुणा बादर चयर्वां
 विसेसाहिंया । एएसिक्क भत्त वायरपज्जत्तगावं वायरपुठवीकाइया च वायर वाउका च वायर वाउका च वायर वक्कन्तुं
 रय पज्जत्ता । जेमसक्क ०४ बादर च वादर पुप्पोकाव च वादर अपुका च वादर तेउकाव च वादर वाउका च बादर वनरपतोकाव च ० ।
 पत्तेयशरीर वायरववस्सइकाइया च ० वादर निगाव च वादर तत्तगां पज्जत्तगाचय कम्भरेर हिंवा प्रापावा ४ । प्रत्थक्क बादरवनरपतोकाव च वाद

धाम् पुष्पिणीं सर्वेषु विमानप्रवनपवतादिषु ज्ञात्वात् तस्योऽवश्येययुथायादर्यायिका समुद्रेषु कलमाप्रुत्याम्, तेजो यादर्यायुक्तायिका
 यस्ययेवगुणाः सुपिर सवत्र वायुसत्रवात्, तस्यो यादरवतस्ययिका अलगाणा, प्रतिवादननिनीद अलगाणा बीवाणा ज्ञात्वात् ८, तस्य
 मामाम्यतो यादर नीवा विद्यायापिका यादरवसकायिकादीमामपि तत्र प्रकृतात् ९ । गतमेकमीपिकाणा यादरावामल्पसुख मिदानी तयामवा
 ऽवर्षातानर द्वितीययाद-एवसिचं ज्ञते । थायरापल्लगणाव कित्वादि ॥ सवस्कोका यादरवसकायिका अयर्षासका युत्तिरत्र प्रागुक्तेषु तस्यो याद
 रतमरकायिका अपयता अवश्येयपुका अवश्यपसोकाकाशमदप्रभावात्वा वित्येव प्रागुक्तमेवद मल्पयदुल ज्ञावनीय, गत द्वितीयमल्पयदुल

कयरे कयरेहिती व्युप्याया यज्याया तुलाया विसंसाहियाया ? गोयमा ! सस्योधा यादरतेउकाइया प
 ज्ञाया, यादरतस्सकाइया पञ्जसगा व्यसखेज्जगुणा । पसेयसरीरयावरवणस्सइकाइया पञ्जसगा व्यस
 खेज्जगुणा । यादरनिर्गादा पञ्जसगा सखेज्जगुणा । यादरपुठविकाइया पञ्जसगा व्यसखेज्जगुणा । यादर
 व्याउकाइया पञ्जतया व्यसखेज्जगुणा । यादरयाउकाइया पञ्जसगा व्यसखेज्जगुणा । यादरवणस्सइकाइ
 या पञ्जसगा व्यसखेज्जगुणा । यादरापञ्जसगा विसंसाहिया ३ । एवसिण ज्ञते ! यादराण पञ्जसगा २ ण

रनिर्गाद ५० यादर वसकाय प बिहरी २ या याहा बडव इत्यादि । मायमा सवत्याया यादर तेउकाव प यादर वरस्साका प अस । द्वितीय
 मरवाहा यादर तवका एव तेउको यादर जमका ५५ पसे । पल्लवरोर वायववस्साकाय प अस वादरनिर्गाद प अस । पल्लवरोर
 वादरवतस्यतोकाय प अस वादरनिर्गाद पसवतागुणा । यादर पठवोका प अस वादर भावका प अस० । यादर पुकोकाय पर्षापला पस
 गुणा यादर वमरततोकाय पकापला अलगाणा । यादर पञ्जतया विसंसाहिया । यादर पर्षापला विमयायिच । एवसिचं भंते वादराव पञ्जसगा २

विदात्री नेतेपामव पर्याप्तानां वृत्तीपमस्यपुल्लभाश्-एएसिब्रं प्रती । यादरपञ्जसयाणमित्यादि ० स्वस्वोका यादरतेजस्व्यापिका पर्याप्ता याव
 सिक्तासमपयस्य कतिपयसमयस्यने रावलिक्तासमये गुणितस्य यायान् समयराशिं प्रवर्तित तावत्प्रभावात् तया मुख्य-भावसिक्तागुणव्यतिरिक्तु

कयरे कयरेहितो व्युप्याया वज्रगावा तुल्लाया विसंसाहियाया ? गीयमा । सवृत्योवा यादरापञ्जसगा । था
 वरा व्युपञ्जसगा व्यसखेज्जगुणा । एएसिण नते । यादरपुढाविकाइयाण पञ्जत्ता २ णं कयरे कयरेहितो
 व्युप्याया ? गीयमा । सवृत्योवा यादरपुढाविकाइया पञ्जसगा ? । यादरपुढाविकाइया व्युपञ्जसगा व्यु
 सखेज्जगुणा । एएसिण नन ! यादरव्याउकाइयाण पञ्जत्ता २ णं कयरे कयरेहितो व्युप्यावा ? गीयमा !
 सवृत्योवा यादरव्याउकाइया पञ्जसगा यादरव्याउकाइया व्युपञ्जसगा व्यसखेज्जगुणा । एएसिण नते !
 यादरतेउकाइयाण पञ्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो व्युप्यावा वज्रगावा तुल्लाया विसंसाहिया ? गीयमा !

अथ कवरं कवरं विना अप्पुमा ४ । इममवन् एव यादर पर्वपुमा अपर्याप्तानि किंवा २ यो यावा इत्यादि । गायमा सवत्यावा यादरपञ्जसगा यादर
 पपञ्जसगा पर्वपुल्लमवा । इमोतम सवत्यावा यादरपवापुता तेज्जो यादर अपवापुता असवत्यातगा । एएसिब्रं भतेयादरपुढाविकाइया २ पञ्जत्ता २
 तस कवरं २ विता अप्पुमा ४ । इममवन् एव यादरपुढाविकाइया २ प प किंवा २ यो यावा इत्यादि । गायमा सवत्यावा यादरपुढाविकाइया अप
 पसपुल्लमवा । इमोतम सवत्यावा यादरपुल्लोकाव पर्वी यादरपुल्लोकाव अप असवत्यातगा । एएसिब्रं भते यादरपुढाविकाइया २ पञ्जत्ता २ प
 कवरं २ विता अप्पुमा ४ । इममवन् एव यादर पर्वपुमा अप प किंवा २ यो यावा इत्यादि । गायमा सवत्यावा यादर पपञ्जसगा प
 प पम । इमोतम सवत्यावा यादरपुल्लोकाव यादरपु प असवत्यातगा । एएसिब्रं भते यादरपुढाविकाइया २ पञ्जत्ता २ पय कवरं २ विता प
 यावा ४ । इममवन् एव यादर तज्जकाव प अप ने किंवा २ यो पसवरी इत्यादि । गायमा सवत्यावा यादर तज्जकाव प यादर तेज्जकाव प

श्रामु पृथिवीषु सर्वेषु विमानजननमयवतादिषु ज्ञावात् तस्यो ऽसहयेयगुणाद्यादराप्यायिका समुद्रेषु कलप्राज्जत्यात्, तेभ्यो यादरथायुष्मायिका यमसेयेयगुणाः सुपिर सबन्ध वायुर्ध्रुववात् तस्यो यादरवमरपथिकायिका अमन्तमुखा प्रतियाररनिगोद मन्मथाना जीवाना ज्ञावात् ८ तेभ्य सामान्यतो यादरा श्रीवा विक्षेपायिका बाहरत्रसकायिकादीनामपि तत्र प्रकृपात् ९ । अतमेकभौपिकाणा यादराकाभस्यवधुत्व मिदानी तयामवा ऽपर्याप्तानां द्वितीयमाह-एष्विच द्रते । यायरापज्जतयाव मित्यादि ॥ सुवलोका यादरत्रसकायिका अपर्याप्तका युक्तिरत्र प्रागुक्तैव तस्यो खाद रतत्रसकायिका अपर्याप्ता असहयेयगुणा असस्यसोकाकाधप्रदप्रमासत्वा दित्यत्र प्रागुक्तमेव मस्यवधुत्व ज्ञावनीय गत द्वितीयमस्यवधुत्व

कयरे कयरेहिती शुष्पावा यज्जयाया तुप्ताया विसंसाहियाथा ? गोयमा । सहस्योया यादरतेउकाइया प ज्जसया, यादरतरसकाइया पज्जप्तगा अस्सखेज्जगुणा । पप्पेयसरीरथादरवणस्सइकाइया पज्जप्तगा अस्स रेज्जगुणा । यादरनिगांदा पज्जप्तगा सखेज्जगुणा । यादरपुढाविकाइया पज्जप्तगा अस्सखेज्जगुणा । यादर स्याउकाइया पज्जप्तया अस्सखेज्जगुणा । यादरयाउकाइया पज्जप्तगा अस्सखेज्जगुणा । यादरवणस्सइकाइ या पज्जप्तगा अस्सखेज्जगुणा । यादरापज्जप्तगा विसंसाहिया ३ । एणसिण भंतं । यादराण पज्जप्ता २ ण

रनिगोद प० यादर वसकाइ प किर्त्ता २ या याका यज्ज इत्यादि । गायमा सम्भत्ताया यायर तेउकाइ प यायर वसकाइ प० अस । इभौतम मवकाइ यादर लउका यय तेउवी कीदर वमका यय पसं । पत्तयसरीर वायरवसकाइया प० अस यायरनिगाद प० अस । प्रख्खयरीर यादरवमरपथीकाय प पसं यादरनिगाइ पसवसातमवा । यायर पठवीका प यम वायर पाठका० प पसं । यादर पुण्णोकाइ पर्यापत्ता अस वसातमुखा यादर यपुकाय पर्यापत्ता यसवसातगुणा । यायर वाठका० प पसं० यादरवसकाइ प पसं० ययका । यादर वायुका प यसययात गुणा यादर वमररतीकाय पवापत्ता अमन्तगुणा । यायर पज्जप्तगा भिउकाइया । यादर पर्यापत्ता विगेवाअिव । एणसिच भंते वाकराअ पज्जप्ता २

पयासा घमङ्गेयगुणा पनीलस्य लोकास्मासङ्गपुपु मत्तरेयु सङ्कलत समनामवर्तिषु पावत्य आकाशप्रवेशा स्तापप्रमाणात्वा तेषां ७ । तेभ्यो यादवर्य
नरपतिव्याधिकाः पयासा घमङ्गेयगुणा प्रतिघादरेकैकविन्दोदमनानामा कीवाणा प्रावान् ७ । तेभ्य साभाव्यतो यादरपर्यासा विशेषाधिक्या यादर
तत्प्रकाशिकावामपि पर्यासानां वन्न प्रपणत् ८ । गत श्रुतीयमल्पबुल्य भिदाभी मेतपापय पयासापर्यासागतान्यल्पबुल्यत्वाभ्याम्-एवसिच जते ।

या अ्यपञ्जस्रगा अ्यसखेज्जगुणा । एवसिण जते । पत्तेयसरीरयादर्यणस्सङ्काइयाण पञ्जसा २ ण कयरे
कयरेहितो अ्यप्यावा ४ ? गोयमा ! सख्योवा पत्तेयसरीरखणस्सङ्काइया पञ्जस्रगा । पत्तेयसरीरयादर्य
जस्सङ्काइया अ्यपञ्जस्रगा अ्यसखेज्जगुणा । एवसिण जते । यादरनिगोदाण पञ्जसा २ ण कयरे कयरेहितो
अ्यप्यावा ४ ? गोयमा ! सख्योवा यादरनिगोदा पञ्जस्रगा । यादरनिगोदा अ्यपञ्जस्रगा अ्यसखेज्जगुणा ।
एवसिण जते । यादरतसकाइयाइयाण पञ्जसा २ ण कयरे कयरेहितो अ्यप्यावा ४ ? गोयमा ! सख्योवा

ज्जसा २ ण कयरे २ हिता अयावा । हेमन् एव प्रत्यकशरीर वादरवमकानावने पर्यापुता अर्प्यापुतायदि विचर २ यो कोका घर्ष । गावसा
सख्योवा पत्तेयसरीर नावरववखरकाइया पञ्जस्रगा पत्तेयसरीर वादरववखरकाइया अ्यपञ्जस्रगा अर्षखण्यवा । हेमोतम सर्ववादा प्रत्येकशरीर
वादरवमरगतीकाव पर्यापुता प्रत्येकशरीर वादरवमरपतीकाय अर्प्यापुता अ्यसखातयर्ष । एवसिच मेते वादरनिगोदा अर्ष पञ्जसा २ ण कयरे २ हिता
अयवावा ४ । हेमगवन् एव वादरनिमाव पर्यापुता अर्प्यापुताये विचर २ यो कोका घर्ष । गावसा सख्योवा यादरनिगोदा पञ्जसा वायर
निगाया अ्यपञ्जस्रगा अर्ष । हेमोतम सर्ववादा वादरनिगोद अर्प्यापुता अर्प्यापुता अ्यसखातयर्ष । एवसिच मेते वायर तसकाइ
या पञ्जसा २ ण कयरे २ हिता अयगुवा ४ । हेमगवन् एव वादर वमकायेने पर्यापुता अर्प्यापुताये विचर २ यो वादा घर्ष । इत्यादि । गावसा
वादरलोश वादर तसकाइया पञ्जस्रगा वादर तसकाइया अर्षखेज्जगुणा । हेमोतम सर्ववादा वादर वमकाय पर्यापुता वादर अयवावा

विजृम्भ्यापरातश्च प्रति तेभ्यो यादरत्रसकार्यिकाः पर्यासा असक्येयगणा २ प्रतरे यायत्य गुणासक्येयप्रागमात्राणि सुबलानि तावदप्रमाणात्वा त
 या २ तस्याः प्रत्यक्षरीरयादरधनरपत्तिकार्यिका पर्यासाः यद्यङ्गुणुषाः, प्रतरे यायत्यगुणासङ्केयप्रागमात्राणि सुबलानि तावदप्रमाणात्वा तेपा
 नुत्तम्य-पत्तयपत्तयवदा इयात्रयद्वरतिभोगरसः। अङ्गुणसकसप्रागेकप्राडयिमिति ३ तस्यो यादरनिगोषाः पर्यासा असङ्गुणुषाः तपा मत्पत्तसू
 द्मावगाहनस्यात्, यत्नाद्ययु ५ स्वयप्राधानात् ४ तेभ्यो यादरपृथिवीकार्यिकाः पर्यासा असक्ययगुणा अतिप्रभूतसङ्केयप्रतराङ्गुणासङ्केयप्रागसङ्केयप्रागसङ्केयमा
 मत्वात् १। तस्योपि यादराकार्यिकाः पर्यासा असङ्गुणुषा अतिप्रभूततरसङ्केयप्रतराङ्गुणासङ्केयप्रागसङ्केयमा ६। तस्यो यादरयायुकार्यिकाः।

संस्त्योना यादरतेउकाइया पञ्जतया यादरतेउकाइया अुपञ्जतया असुखेज्जगुणा। एएसिण जते। याद
 रयाउकाइयाण पञ्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अुप्यावा ४ ? गोयमा। संस्त्योना यादरयाउकाइया पञ्ज
 तगा। यादरयाउकाइया अुपञ्जतगा असुखेज्जगुणा। एएसिण जते। यादरत्रणस्सइकाइयाण पञ्जत्ता २ ण
 कयर कयरेहितो अुप्यावा ४ ? गोयमा। संस्त्योना यादरत्रणस्सइकाइया पञ्जतगा। यादरत्रणस्सइकाइ

प वने। जेभोतम सबकाहः कादर तजकाह पवी काहर तजकाय परागना अपवापुना असक्यामगवा। एएसिण जते काहर काठकाइया पत्त
 ता २ अर कयरे २ जिता अप्यावा ४। जेममवन् एव कादर कायकायने पर्यापुता अप किर्ता २ यो काहः ववी इत्तादि। गोयमा सबकावा वाहर
 वात्रकाइया पत्ततया काहर वात्रकाइया अपत्ततया असुखेज्जगवा। जेभोतम सबकाहः तेजकाइया पर्यापुता तेजवी यादर काठकाय अपर्यापुता अप
 सप्यातयवा। एएसिण जते काहर वनकाइयाइयां पत्तता २ पव कयरे २ जिता अप्यावा ४। जेममवन् एव कादर वनकाइयाइया पर्यापुता अपर्या
 पुतामीदि किर्ता २ यो काहः ववी इत्तादि। आयमा सबकावा वाहर वनकाइयाइया पत्ततया कायर वनकाइयाइया अपत्ततगा असुखेज्जगवा। जेनी
 तज वनवीकावा कादर वनकाइयाइया पर्यापुता वानर वनकाइयाइया अपर्यापुता असक्यातगवा। एएसिण जते पत्तेवरीर कायर वनकाइयाइयां प

त्यादि ॥ सर्वलोका यादरेतेऽर्श्वीयिकाः पर्यासाः १ । तज्यो यादरत्रसकायिकाः पर्यासा असख्येयगुणाः २ । तेज्यो यादरत्रसकायिका अपर्यासा
 असख्येयगुणाः ३ । तज्यो यादरप्रत्यक्षमरपत्तिकायिकाः पर्यासा असख्येयगुणा ४ । तेज्यो यादरनिगोदा पर्यासा असख्येयगुणाः ५ । तेज्यो याद
 रपृथिवीकायिका पर्यासा असख्येयगुणा ६ । तेज्यो यादराऽकायिका पर्यासा असख्येयगुणाः ७ । तज्या यादरवायुकायिकाः पर्यासा असख्ये
 यगुणाः ८ । एतत्तु पदेतु युक्तिः प्रागुक्ता अनुसरणीया । तेज्यो यादरतेजसकायिका अपर्यासा असख्येयगुणाः । यतो यादरवायुकायिकाः पर्यासा
 सख्येयत्वं प्रतरेतु यावत्त साकाशप्रदेक्षा सावत्प्रमाणा यादरतत्रसकायिकायापर्यासा असख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा सतो नववत्सख्येयगुणाः ८ ।
 ततः प्रत्यक्षयादरवत्प्रतिभायिकाः १० । यादरनिगोदा ११ । यादरपृथिवीकायिका १२ । यादराकायिका १३ । यादरवायुकायिका अपर्यासा यद्योत्तर

यणस्सइकाइया पञ्जतगा अस्सखेज्जगुणा ४ । यादरनिगोदा पञ्जतगा अस्सखेज्जगुणा ५ । यादरपुढाविकाइ
 या पञ्जतगा अस्सखेज्जगुणा ६ । यादरस्थाउकाइया पञ्जतगा अस्सखेज्जगुणा ७ । यादरवाउकाइया पञ्ज
 तगा अस्सखेज्जगुणा ८ । यादरतेउकाइया अपञ्जतगा अस्सखेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरयादरवणस्सइका
 इया अपञ्जतगा अस्सखेज्जगुणा १० । यादरनिगोदा अपञ्जता अस्सखेज्जगुणा ११ । यादरपुढाविकाइया
 अपञ्जतगा अस्सखेज्जगुणा १२ । यादरस्थाउकाइया अपञ्जतगा अस्सखेज्जगुणा १३ । यादरवाउकाइया

इज्जोकाय यादर पाकाय यादर वायुकाय यादर तेजसकाय अपर्यासा असख्यातगुणा जेमो यादर वायुकाय पर्यासा असख्यात प्रतर जेतका याकाय
 तम ८ अमव्यातगुणा । तेतस प्रमावणे यादर तेजकाय अपर्यासा अस साकाशाय प्रमावणे । पत्तेयसरीर यादरवत्सखाकाइया अपञ्जतगा अस ।
 प्रत्यक्षगरीर वनजलोकाय अपर्यासा अमव्यातगुणा । यादरनिगोदा यादर पुढोकाइया यादर पाठकाइया यादर वायुकाइया अपञ्जतगा असखे
 ज्जगुणा । तइयो यादरनिगोदा यादर पुढोकाइया यादर पाकाय यादर वायुकाय अपर्यासा असख्यातगुणा । यादर वत्सखाकाइया अपञ्जतगा अस

यापरान् पञ्चतापत्राणामित्यादि ४ इह बादरेकपर्याप्तमिमया असङ्ख्यायावरा अपर्याप्ता सत्यद्वारे ॥ पञ्चतन्त्रानिस्सारं चापञ्चसगा यच्छ्रमन्ति
 न्त्य मग्नो तस्य नियया असुरज्जा इतिवचनात्, ततः सुवत्र पर्याप्तानां उपर्याप्ता अस्ययगुणा यत्तन्मात्रं, त्रसकायिकसूत्रं प्रागुच्युत्तया जायनीय
 गतं यनुयस्यवपुल्वं, ताम्रतपामनं समुदिताना पर्याप्तापर्याप्ताना पञ्चमस्यवपुल्वमाह—एवसिख जते । यापरान् यापरपुढविकाइयायमि

यादरतसकाइया पञ्चसगा । यादरतसकाइया अपञ्चतगा अ्यसखेज्जगुणा १ । एणसिण जते ! यादराण
 यादरपुढविकाइयाण यादरस्थाउकाइयाण यादरततकाइयाण यादरथाउकाइयाण यादरयणस्सइकाइयाण
 पत्तेयसरीरयादरयणस्सइकाइयाण यादरनिगीदाण यादरतसकाइयाण पञ्चसगा २ ण कयरे कयरेहिती
 अ्यप्पाया यज्जयावा तुत्तावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सस्युयोया यादरततकाइया पञ्चसगा १ । याद
 रतसकाइया पञ्चतया अ्यसखेज्जगुणा २ । यादरतसकाइया अपञ्चतया अ्यसखिज्जगुणा ३ । यादरपत्तेय

यपयावता यमप्यातगर्वा इवे इति बोधा यल्ल वल्ल कञ्जा, इति समसहित यल्ल वल्ल पर्याप्ता कहेवे—एवसिख जते यायराव वादरपुढवोकाइयाव
 वादरपप तड वाव वपप्याकाइया । इमगवन् पडन बादर पुढोकायन यकाइने तेवकायने वावकायने वनस्पतीकायने । पत्तेयसरीर वायर
 वपप्याकाइया बादर निगवाव वायर तसकाइयाव कयरे २ इति यापयाव ४ । प्रत्तेययराव बादर वनस्पतीकायने बादर निगवियाने बादर
 वनकायनपर्याप्ता यपर्याप्ताने विड्ढी २ जो यकाव घर्वा इत्यादि । मायमा सज्ज्याना यायर तेवकाइया पञ्चसगाव वायर तसकाइया पञ्चसगा
 पप । इमोतम यवकाडा बादर तेवकाय पर्याप्ता पडनो युत्ति सव पावलोपरे कजिया बादर वनकाय पर्याप्ता यवकातगर्वा । वायर तसकाइया
 यपप्यतया पप । बादर वनकाव यपर्याप्ता यमप्यातगर्वा । पत्तयसरीर वावर वनस्प्याकाइया पञ्चसगा यस । तेवमको बादर प्रत्यववमक्यती प्र
 यवप्यातगुणा इव । वायर निगवावा वावर पुढवोकाइया वावर यावकाइया वावर यावकाइया वावर यावकाइया वावर यावकाइया वावर यावकाइया वा

पञ्चयेयगुणा यत्तया, यदापि ज्ञेते प्रत्येकमस्येयसीकाकाशप्रदेशाप्रमाणं क्षयाप्यसङ्का तस्या सङ्कातजैदक्षिणस्या दित्य यथोत्तरमसङ्केयगुणस्य न
 विरुध्यत १४ । तस्यो यादरवणस्वतिकायिका बीजाः पर्यासा अनन्तगुणा, प्रतियादरेकैकानिगोदमन्तानां बीजानां प्राधात् १५ । तेभ्यः सामान्य
 तो यादराः पयासा विजयापिका यादरतेजस्कायिकादीनामपि पर्यासानां तत्र प्रकृपात् १६ । तेभ्यो यादरवणस्वतिकायिका अपर्यासा असंख्येयगु
 ना एवैकपयोसदादरवणस्वतिकायिकानिगोदमिश्रया असंख्येयानां मयपयोसदादरवणस्वतिकायिकानिगोदानां मुत्पादात् १७ । तभ्यः सामान्यतो वा
 दराऽपयासा विजयापिका यादरतेजस्कायिकादीनां मयपयोसानां तत्र प्रकृपात् १८ । तभ्यः पर्यासापयासविशेषपरिहृता सामान्यतो यादरा
 विजयापिका यादरपर्यासेतेजस्कायिकादीनामपि तत्र प्रकृपात् १९ । गतानि यादराभितान्यपि पञ्चसूत्राणि, सम्यग्नि सूत्रमादरसमुदायगता प
 न्नग्रीमविप्रिस्तु प्रथमतः कोपिक सूत्रमादरसूत्रमाह-एवमिदं ज्ञेते । इत्यादि ७ इह प्रथमं यादरगतमल्पसङ्ख्यत्वं यादरसूत्र्या यमप्रथम सूत्रं तद्व
 द्भासनीयं यावद्वादरवायुकायिकापपदं ७ । तदन्तरं यत्सूत्रगतमल्पसङ्ख्यत्वं तत् सूत्रमपञ्चसूत्र्या यमप्रथम सूत्रं तद्वत् तावद्यावदसूत्रमिगोदविहता

अथ० असुरेज्जगुणा १४ । यादरयणस्सङ्काइया पञ्चस्रगा अणतगुणा १५ । यादरपञ्चस्रगा यिसेसा
 हिया १६ । यादरवणस्सङ्काइया अथस्रजेज्जगुणा १७ । यादरा अथपञ्चस्रगा विसेसाहिया १९ ।
 यादरा यिसेसाहिया २० । एएसिण ज्ञेते ! सुज्जमाणं सुज्जमपुढविक्काइयाणं सुज्जमस्याउक्काइयाणं सुज्जमतेउ

र्जतगुणा यादर पञ्चस्रगा विसेसाहिया यादर अथपञ्चस्रगा असुरेज्जगुणा यादर अथपञ्चस्रगा विसेसाहिया १५ । या
 दर अथस्रजेज्जगुणा पपयोसता पनन्तमया यादरः पर्यासा विमेषादिक्काइया अपर्यासा अपर्यासापुत्रा यादरपपयोसता विमेषा
 दिक्का तेज्जो मयवादर विमेषादिक्का हिये १५ सूत्रं ज्ञेते—एवमिदं ज्ञेते सहमात्रं मयपुढविक्काइयाप सङ्कम यावद्वाय सङ्कम तेवद्वाय सङ्कम तावद्वा
 यमावाया मयमनिगावात्र यावद्वात्र यावत्पुढविक्काइयाप । ज्ञेतेमयमपुढविक्काइयाप मयमपुढविक्काइयाप मयमपुढविक्काइयाप मयमपुढविक्काइयाप

१२ । तद्वनमर यादरयसरपतिशायिका अनकगुणाः प्रतिधादरमिगोद्वमनस्तानीं जीवानीं प्रायात् १३ । तेप्यो यादरा विशेषाधिका यादरतैजस्वा
 यिकादीनामपि तत्र प्रश्रपात् १४ । तस्यः सूक्ष्मवन्नस्पतिशायिका अक्षस्यगुणा यादरनिगादस्यः सूक्ष्मनिगोद्वाना मक्षस्यगुणत्वात् १५ । तेप्यः
 सुमाप्यतः सूक्ष्मा विशेषाधिकाः, सूक्ष्मतैजस्वाधिकादीनामपि तत्र प्रश्रपात् १६ । गत मीक्षमस्ययुल्य निवानीं मेतपामेवा उपर्याप्तानीं द्वितीयमा
 द-दपमिदं प्रत । इत्यादि ॥ सूक्ष्माका यादरवसकायिका अपर्याप्ताः १ । ततो यादरतजस्वाधिका यादरप्रत्यक्षवनस्पतिशायिकं यादरमिगोद
 यादरपृथिवीकायिकयादराप्याविशयादरवायुकायिका अपर्याप्ता, अमत्र यथोक्तं मक्षस्यगुणा अत्र प्रावना यादरपञ्चसूत्रा यत् द्वितीयमपर्याप्त

काडयाण सुक्ष्मवाउकाडयाण सुक्ष्मवणस्सडकाडयाण सुक्ष्मनिगोदयाण यादरपृथविकाडयाण
 यादरश्याउकाडयाण यादरतउकाडयाण यादरवाउकाडयाण यादरवणस्सडकाडयाण पक्षेयसरीरान्नाडरवण
 स्सडकाडयाण नादरनिगादयाण यादरतसकाडयाणय कषरे कषरहितो श्रुप्यात्रा १ गीयमा ! सस्रत्योवा
 यादरतसकाडया १ । यादरतउकाडया श्रुसखेजगुणा पक्षेयसरीरयादरवणस्सडकाडया श्रुसखेजगुणा ।
 यादरनिगोदा श्रुसखिजगुणा । यादरपृथविकाडया श्रुसखेजगुणा ५ । यादरश्याउकाडया श्रुसखेजगुणा

ने मूक्ष'नमादने यादरपृथ्वाकायने । यादर पाठ तत्र तत्र वक्ष्यमाणः । यादर पञ्चायन वाचकायने तेजकायने वनस्पतीकायने । पक्षेयसरीर वायरव
 वण काय यादर निगादा य यादर तसकाडयाय कषरे २ द्वितीया पर्याप्ता ४ । प्रत्येकायादर वनस्पतीकायने यादर निगादने यादर वसकायने श्रिङ्गी
 श्रिङ्गीको काडा यथा १ इत्यादि । गायना सूक्ष्माका यादर तसकाडया यादर तेजकाय पक्षस्रजगुणा । ज्योतिम सर्वकाका यादर वसकाडया तेजको या
 दर तजकाय पक्षपरागतगना । पक्षस्रमरीर यादर वक्ष्यमाणकाया पक्षेजगुणा । प्रत्येकगरीर यादर वनस्पतीकाय पक्षस्रजगुणा । यादरनिगादा या
 यर पृथ्वीकाया यादर पाचकाडया पक्ष । यादरनिगाद यादर पृथ्वाकाय यादर पञ्चायन वाचकाय पक्षस्रजगुणा । यादर वाचकाय मूक्षमे तेजकाय पक्ष

ममरथेयगुणा यन्त्रा, यद्यपि चेते प्रत्येकमसुरथेयलोकाकाशमवेष्टामभावा स्तथाप्यसङ्का तस्या सङ्कातनेवमित्यस्या दित्यं यथोत्तरमसङ्केयगुणस्य न विनश्यत् १४ । तन्मो वादरवमरथतिकायिका बीयाः पर्याप्ता समन्तगुणाः, प्रतियादरेकैकानिगोदमनस्ताना बीयासा प्राधात् १५ । तेभ्यः सामान्य तो वादरा पर्याप्ता विद्यायापिवा वादरतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्ताना तत्र प्रक्षपात् १६ । तेभ्यो वादरवमरथतिकायिका यपर्याप्ता असस्यपगु णा सूक्ष्मपर्याप्तयादरवमरथतिकायिकानिगोदाना मुत्पादात् १७ । तन्म्यः सामान्यतो वा दराऽप्यप्या विद्यायापिवा वादरतेजस्कायिकादीना मप्यपर्याप्तानां तत्र प्रक्षपात् १८ । तन्म्यः पर्याप्तपर्याप्तविशेषोपरहित्वा सामान्यतो वादरा विद्यायापिवा वादरपर्याप्ततेजस्कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १९ । मतानि वादराभितान्यापि यन्त्रसूत्राणि, सम्यति सूक्ष्मवादरवमुदायगता य न्नूनामनिधिरसु प्रथमत ओपिकं सूक्ष्मवादरवमुदाह-एयविकं जते । इत्यादि ४ इह प्रथमं वादरगतमस्यबहुत्वं वादरसूत्रा वादरसूत्रा यत्प्रथम सूत्रं तद्व न्नावभीय यावद्वादरापुकायिकायपद ७ । तदमन्तरं यरमूलगतमस्यबहुत्वं तत्र सूक्ष्मपञ्चसूत्रा यरमूलगतसूत्रं तद्वत् तावद्यावत्सूक्ष्मनिगोदविना

अप० अस्वेज्जगुणा १४ । यादरयणस्सइकाइया पज्जसगा व्यणतगुणा १५ । यादरपज्जसगा विसेसा
हिया १६ । यादरयणस्सइकाइया अपज्जसगा अस्वेज्जगुणा १७ । यादरा अपज्जसगा विसेसाहिया १९ ।
यादरा विसेसाहिया २० । एएसिण जंत ! सुक्कमाण सुज्जमपूर्वाविकाइयाण सुक्कमस्थाउकाइयाण सुज्जमंतउ

वस्तुना सापर पञ्चनमा विसेसादिना बाहर वषष्ठाकारया पपञ्चसगा भसण्णगगा वाहर पपञ्चनमा विसेसादिना १ । आ
 दर वस्तुतोकाय पपर्याप्ता पनस्तगुवा बाहर पपर्याप्ता विरोपाधिक बाहर पपर्याप्ता बाहर पपर्याप्ता विरोपा
 दिव तेहवी पववाहर विरोपाधिक दिने १ मू भउं—एवविच मते सवमां सवमपुठोकादवाचं सवम पारकाव सवम तेवकाय सवम वाउ व
 वपुआवाया मुदमनिगायां वायराचं वायराउठोकाविवाचं । वेमगवण् पउ पुआपुणे मूअपवापणे मूअतेवकाये मूअवाउकावे मूअमनअतो

१२ । तदन्तरं यादपनस्वतिकायिका चतस्रगुणाः प्रतिबादरनिगोदमन्तानां जीवानां ज्ञायात् १३ । तेषां बादरा विशेषाधिका यादरतज्ज्वा
 यिकादीनामपि तत्र प्रक्षयात् १४ । तस्यः सूक्ष्मवमस्वतिकायिका असंख्यगुणा यादरनिगादस्यः सूक्ष्मनिगोदाभा असंख्यगुणवत्त्वात् १५ । तस्यः
 सामान्यतः सूक्ष्मा विशेषाधिकाः, सूक्ष्मतरकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षयात् १६ । गत सीकमस्वयपुत्वं मिदानी मेतयामया उपर्याप्तानां द्वितीयमा
 ह-यपमिषं चत । इत्यादि ६ स्वज्ञाता यादरज्ज्वायिका अपर्याप्ताः १ । ततो यादरतज्ज्वायिका यादरप्रत्यक्षनरपतिकायिकं बादरनिगोद
 यादरपुपित्रीकायिकायादराप्यायिकायादरायुकायिका अपर्याप्ताः अमण योत्तर मसंख्यगुणा अत्र ज्ञातना बादरपञ्चसूत्रा यत् द्वितीयमपर्याप्त

काडयाण सुजमवाउकाडयाण सुजमयणस्सहकाडयाण सुजमनिगोदाण यादराण यादरपुढाविकाडयाण
 यादरस्थाउकाडयाण यादरतउकाडयाण यादरथाउकाडयाण यादरयणस्सहकाडयाण पत्तयसरीरयादरवण
 स्सहकाडयाण यादरनिगोदाण यादरतसकाडयाणय कयरे कयरहितो ह्युप्याया ४ ? गोयमा । सवृत्योवा
 यादरतसकाडया १ । यादरतउकाडया ह्यसखेज्जगुणा पत्तयसरीरयादरयणस्सहकाडया ह्यसखेज्जगुणा ।
 यादरनिगोदा ह्यसखिज्जगुणा । यादरपुढाविकाडया ह्यसखेज्जगुणा ५ । यादरस्थाउकाडया ह्यसखेज्जगुणा

ने सूक्ष्म मन्ताने बादरपुष्पाकावने । बादर पाठ पाठ पाठ वरणाकाय । बादर पाकायम बावकावने तेउकावने वनस्यनोकावने । पत्तयसरीर यादरव
 पासाकाय बादर निगादा च बादर तसकाडयावय कयरे २ द्वितो पत्त्याया ४ । प्रत्यक्षबादर वनस्पतीकावने बादर निगादने बादर निगादने बादर पसकायमे किञ्चि
 किञ्चिदी पाका चर्वा इत्यादि । मावभा सम्पत्ताया बायर तसकाडया बायर तेषकाय असखेज्जगुणा । जेगोतम सवकाका यादर असकाडया तेउको का
 दर तउकाय पसवरातगना । पत्तयसरीर बायर वरसखेज्जगुणा । प्रत्यक्षगरीर यादर वनस्पतीकाय असवकायगुणा । बादरनिगादा का
 सर पुढगीबादा बाबर पाठकाडया पस । यादरनिगाद बादर पुष्पाकाय बादर पाकाय पसवरातगुणा । बायर बावकाय मन्म तेउकाय पस

मम ग्येपुगुग पञ्चम्याः, यद्यपि चेते मत्येकमर्शयेयसोकाकाशप्रदेष्टुप्रभावा साध्याप्यसङ्का तस्या सङ्कातप्रदेष्टुप्रभावा दित्य ययोत्तरमसङ्केपगुबलत्व न
 विनश्यत् १४ । तस्यो वादरवमरूपतिकापिका बीधाः पर्यासा अनन्तगुहाः, प्रतिधादरेकैकविगीदमनन्ताभां बीधाना ज्ञावात् १५ । तेज्यः सामान्य
 तो वादरा पर्यासा विज्ञापयिता वादरतेजस्त्वायिकादीनामपि पर्यासानां तत्र प्रक्षेपात् १६ । तेज्यो वादरवमरूपतिकापिका मपयोद्गा
 वा यकैकचयोद्गादरवमरूपतिकापिकाभिगोदुमिदया सर्वस्यपाना मपर्यासायादरवमरूपतिकापिकाभिगोदुमिदया मुत्पादात् १७ । तस्यः सामान्यतो या
 दराऽपयोसा विज्ञापयिता वादरतेजस्त्वायिकादीना मप्यपर्यासाना तत्र प्रक्षेपात् १८ । तस्यः पर्यासापर्यासविज्ञापयितरा सामान्यतो यादरा
 विज्ञापयिता वादरपर्यासतेजस्त्वायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १९ । गतानि वादराभिज्ञानापि पञ्चसुत्राणि, सम्प्रति सस्मन्वादरसमवायगतं प

एषमभ्युपगम्यां मद्भिनीयं सूत्रं तद्वत् १२ । तेज्यः सूक्ष्मनिगोदाऽप्योसिष्यो यादववमरुपतिकारिका जीवा अपयोसा अनलगुहाः प्रतिद्यादेरैकनिगो
 दमल्लान् भद्रापात् १३ । तज्यः सामान्यतो यादरा अपयोसा विधेयाचिका यादवप्रसक्त्याचिकाः पर्यासादीनामपि तत्र प्रकृपात् १४ । तज्यः सू
 क्ष्मवमरुपतिकारिका अपयोसा असङ्ख्ययुक्ता यादरनिगोदपयोसस्य सूक्ष्मनिगोदपयोसाना मयस्तेयगुह्यत्वात् १५ । तज्यः सामान्यतः सूक्ष्मापयोसा
 विधेयाचिकाः नूत्नतत्रकारिकापयोसादीनामपि तत्र प्रकृपात् १६ । नतं द्वितीयमप्यथुत्वं मनुमेतयामय पर्यासाना तृतीयमप्यथुत्वंमाह-एय
 विधे जत । सुदुमपञ्चनयाचनित्यादि ७ सुवलोका यादरतेजस्कारिकाः पर्यासाः १ । तज्यो यादवप्रसक्त्याचिका २ यादवप्रत्येकयनरुपतिकारिका ३

ण यादववगस्सुहकाहया अपञ्जत्तयाण पक्षेयसरीरयादववगस्सुहकाहया अपञ्जत्तयाण यादरनिगोदा अप
 जत्तयाण यादरतसकाहया अपञ्जत्तयाणय कपरं कयरेहिती अप्यावा ४ ? गोयमा । सख्योत्रा यादरत
 सकाहया अपञ्जत्तया । यादरतेउकाहया अपञ्जत्तया अपञ्जत्तया अपञ्जत्तया अपञ्जत्तया अपञ्जत्तया अपञ्जत्तया
 अपञ्जत्तया अपञ्जत्तया अपञ्जत्तया अपञ्जत्तया अपञ्जत्तया अपञ्जत्तया अपञ्जत्तया अपञ्जत्तया अपञ्जत्तया अपञ्जत्तया

य पवज्जना । स निनाद पय यादर पय यादर पवज्जना पय यादर तेजकाय पय यादर वादुकाय पय । यादर वनरय
 भीकाय पय । पक्षेयसरीर यादरवमरुपतिकारिका पय यादरनिगोदा पय यादर तवकाया पय । ज्वरे २ हिता अप्यावा ४ । प्रत्येकयरोर यादर
 वमरुपतीकाय पय यादरनिनाद पय यादर वमकाय पय विहारी २ वो लाका चर्वा मरीका निमय बुवे । भायमा सख्योत्रा यादरतसकाहया य
 पवज्जना तथा य पमज्जन्तमुनी । हेगोतम सर्वाका यादर वमकाया पय तवयो पर्वी यमकयातगुहा । पक्षेयसरीर यादरवमरुपतिकारिका पय
 पर्व । तेजवी प्रत्येकयरोर यादरवमरुपतीकाय पय पय । यादरनिगाया पय पय । यादरनिगाद पय पयवकातगुहा । यादर पठोकाया
 पय पय । यादरपवज्जनाय पय पय । यादर वादुकाया अपञ्जत्तया पय । यादर तेजकाय अपञ्जत्तया पय ।

एतदप्यनुज्यो यद्वितीयं नृप तद्वत् १२ । तेष्वः सूक्तानिगोदाऽप्ययोस्तेज्यो यादरवमरूपतिकायिका जीवा अपर्योसा अनन्तगुणाः प्रतिघादरैकैकानिगो
दमन्ताना मुद्रायात् १३ । तस्यः सामान्यतो वादरा अपर्योसका विच्छेपायिका वादरत्रसकायिका पर्योसादीनामपि तत्र प्रकृपात् १४ । तस्यः सु
एतदमरपतिकायिका अपर्योसा असङ्ख्यगुणा वादरनिगोदापर्योसस्य सूक्तानिगोदापर्योसामा असङ्ख्यगुणत्वात् १५ । तस्यः सामान्यतः सूक्तापर्योसा
विज्ञापयिकाः सूक्तत्रसकायिकापर्योसादीनामपि तत्र प्रकृपात् १६ । नत द्वितीयमस्त्वप्युक्त्य भुजैतपामथ पर्योसामा तृतीयमस्त्वप्युक्त्यमाह-एय
विच प्रते । मुद्रमपञ्जतपावमिस्त्वादि ७ स्वस्कोका वादरतेजस्कायिकाः पर्योसाः १ । तस्यो वादरत्रसकायिका २ वादरप्रत्येक्यनरूपतिकायिका ३

ण यात्रयणरसइकाइया अपञ्जयाण पत्नेयसरीरयादरत्रणस्सइकाइया अपञ्जत्तयाण वादरनिगोदा अप्प
ज्जात्तयाण वादरतसकाइया अपञ्जत्तगाणय कयरं कयरोहितो अप्पाया ४ ? गीयमा ! सइत्थोत्रा वादरत
सकाइया अपञ्जात्तगा । वादरतेउकाइया अपञ्जत्तगा अप्सखेज्जगुणा , पत्नेयसरीरयादरवणस्सइकाइया
अपञ्जात्तगा अप्सखेज्जगुणा ३ । वादरनिगोदा अपञ्जत्तया अप्सखेज्जगुणा । वादरपुठाविकाइया अपञ्ज

य पवज्जता । न निमाद पय वादर पत्नेयकाय पय वादर तेषकाय पय वादर वायुकाय पय । वादर वनरप
तोकाय पय । पत्नेयसरीर वादरवक्खाकाइया पय वादरनिगोदा पय वादर तसकाइया पय । वादरे २ विता अप्पाया ४ । पत्नेयसरीर वादर
वमरपतोकाय पय वादरनिमाद पय वादर वक्खाय पय विक्का २ को वाका कर्वा सरीखा विगय पुवे । कायमा सज्जताया वादरतसकाइया प
पञ्जतमा तथा य असखज्जगुणा । तेजोतम सज्जताया वादर असकाइया अप तेषयो पर्या असखगतगुणा । पत्नेयसरीर वादरवक्खाकाइया अप
पम । तेषको पत्नेयसरीर वादरवक्खातोकाय पय पसं । वादरनिमाद पय पस । वादरनिमाद अप असयदातगुणा । वादर पठकोकाइया
पय पसं । वादरपत्नेयकाय पय पसं । वायर पासकाइया अपज्जतमा पसं । वायर तेषकाय अपज्जतमा पसं ।

या लोचामर्तिप्रभूततया प्रतिबोत्तकं आकात् १२ । तेष्वी यादरथमरपतिकारिणा लीया पर्योसका कदित्तगुणा । मतिद्यादरेकैर्लोमोदममलना जा
 मात् १३ । तेष्व सामाम्यतो वादरापर्योसका विद्यापायिना । वादरतेजस्वायिनादीनामपि पर्योसानी तत्र प्रसेपात् १४ तस्यः सूक्ष्मवमस्यतिबायि
 काः पर्यासा बवंस्वरयुग्माः वादरनिगोदपर्योसभ्यः सूक्ष्मनिगोदपर्योसना मसुक्ष्मेयुगुल्यात् १५ । तेष्वः सामान्यत सूक्ष्माः पर्योसा विद्योपायिनाः
 सूक्ष्मवमस्यतिबादीनामपि पर्यासात् १६ । नत तृतीयमस्वयुल्व निवासी भेतयामय सूक्ष्मवादरादीनां प्रतीय पर्यासापर्योसना
 मसुक्ष्मवमस्यतिबादीनामपि पर्यासात् १७ । नत तृतीयमस्वयुल्व निवासी भेतयामय सूक्ष्मवादरादीनां प्रतीय पर्यासापर्योसना

एषसिण नते ! सुज्जमपञ्जसयाण सुज्जमपुठविकाइयपञ्जसयाण सुज्जमस्यपकाइयपञ्जसयाण सुज्जमतेउका
 इयपञ्जसयाण सुज्जमत्राउकाइयपञ्जसयाण सुज्जमयणस्सइकाइयपञ्जसयाण सुज्जमनिगीयपञ्जसयाण
 धादरपञ्जसयाण धादरपुठविकाइयपञ्जसयाण धादरस्यउकाइयपञ्जसयाण धादरतेउकाइयपञ्जसयाण
 धादरथाउकाइयपञ्जसयाण धादरयणस्सइकाइयपञ्जसयाण पत्तेयसरीरधादरवणस्सइकाइयपञ्जसयाण धा
 दरनिगीवपञ्जसया धादरतसकाइयपञ्जसयाण कयरे कयरेहिंते स्यप्पावा १ ? गोयमा ! सस्योवा वा

य पर्योसना । सुज्जम तेउका वाउका मक्ख निगावा पर्या । सुज्जम तेजस्वाय वाउकाय वनरपतोकाय निमादने पर्योसना । वायर पुठवीवा
 पञ्जसा वादर पाउका य वादर तेउकाय वादर पाउकाय वादर वक्खुकाइया पञ्जसा । वादर पुठवीकाय पर्योसना वादर वाउकाय पर्या वादर
 तेउकाय पर्या वाउकाय पर्या वादर वनरपतोकाय पर्योसना । पत्तेयसरीर वायर वक्खुकाइया वादर निगावा वादर तसकाय पञ्जसा २ यय जय
 २ २ इति पप्पावा ४ । पत्तेयसरीर य य वनरपतोकाय वनरनिगाव य वादर वसकाय य विधी २ यो वाटा पर्या इत्यादि । गोयमा
 सवत्या वायर तेउकाय य वादर ममकाय पञ्जसा यम । वेगीतम सवत्या वादर तेउकाय पर्योसना वादर वसकाय पर्योसना सस्येयमुप्या ।
 पत्तेयसरीर वादर वक्खुकाइया वादर निगावा वायर पुठवीकाइया वायर पाउकाय वायर तेउकाय यपञ्जसा सस्येयमुप्या वायर वाउकाय

पुष्प २ चम्पवपुत्यमाह-एरविह भते । सुदुभावं व्यापराय पञ्जनापञ्जनाफुमित्यादि ॥ सर्वत्रेय प्रावना-सर्वलोकायादराः पर्यासा परमित
 इववर्तित्वान्, तेभ्यो यादरा अपर्यासा अस्मद्वपुमुक्ता एवेकवादरपयोस्तमिथया असङ्ख्यानाना वादरापर्यासानामुत्पादात्, तज्यः सूक्ष्मा अपर्यासा
 चम्पवपुमुक्ता, भवलाभोपपत्तया तथा इवस्या संस्येयगुणत्वात्, तज्य सूक्ष्मपयाप्रकाः संस्येयगुणाः चिरकालावस्थायितया तेषा सद्वैव संस्येय
 गुणतया वाप्यमायत्वात् ॥ यत चतुर्भमलपवपुत्वम् ॥ इदानीं मतपामव सूक्ष्मपृथिवीबीज्यायिकादीना वादरपृथिवीबीज्यायिकादीना च प्रत्येकं पर्यासा

दरतेउकाइया पञ्जसगा । वादरतसकाइया पञ्जसया अ्यसखेज्जगुणा । पत्तेयसरीरयादरवगस्सइकाइया
 पञ्जसगा अ्यसखेज्जगुणा । यादरनिगोदा पञ्जसया अ्यसखेज्जगुणा, वादरपुठविकाइया पञ्जसया अ्यस०
 यादरथाउकाइया पञ्जसया अ्यसखेज्जगुणा, वादरवाउकाइया पञ्जसगा अ्यसखेज्जगुणा । सुज्जमतेउकाइ
 या पञ्जसया अ्यसखेज्जगुणा, सुज्जमपुठविकाइया पञ्जसगा विसेसाहिंया, सुज्जमथाउकाइया पञ्जसगा
 विसेसाहिंया, सुज्जमवाउकाइया पञ्जसगा विससाहिंया । सुज्जमनिगोदा पञ्जसया अ्यसखेज्जगुणा, याद

पपञ्जतमा पवंपेज्जगुणी । प्रत्यक्षमरीर वादर वनस्पतीकाय वादरनिमाइ वादरपुष्पोकाय वादर तेलक्काय वादर वासुकाय अपर्या
 यता पमवसातगुणी । सुदुमहतकाय सुदुम इठरीकाय सुदुम पावकाय सुदुम वाठकाय पञ्जसगा विसेसाहिंया सुदुम नियावा अपपञ्जसगा अ्य
 पञ्जगुणी । मूप्पे तठकाय पुष्पोकाय पावकाय वासुकाय निर्मादिया अपर्यायिता असस्यातगुणी । वायर वनस्पतरकाराया अपपञ्जसगा अ्यसतगुणी । वा
 दर वनस्पतीकाय अपर्यायिता अमगतगुणी । वादर अपपञ्जसगा विसेसाहिंया । वादर अपर्यायिता विसेसाहिंया । सुदुम वनस्पतरकाय अपपञ्जसगा अ्यस
 सगा मूप्पे मा अपपञ्जसगा विसेसाहिंया । मूप्पे वनस्पतीकाय अपर्यायिता असस्यातगुणी मूप्पे अपपञ्जसगा विसेसाहिंया । २ । एरविह भते सुदुम
 अमगाइ सुदुम पुठरीकाय पञ्जसगाय । इमगवन् एव मूप्पे पुष्पोकाय पयापतोने । सुदुम पावकाय पञ्जसगाय । मूप्पे अपपञ्जसगा पवंपेयतामि ।

रयणस्सइकाइया पज्जतया अणतगणा, थादरपज्जाप्तया त्रिसेसाहिया, सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जाप्तगा अस्सखिज्जगुणा । सुज्जमपज्जाप्तया त्रिसेसाहिया ३ । एएसिण ज्ञत ! सुज्जमाणयादराणय पज्जाप्ता २ णं कयरे कयरेहिती अण्व्याया १ ? गोयमा ! सख्ख्याया थादरा पज्जाप्तरा, थादगा अण्वपज्जाप्तगा अण्वसखेज्जगुणा सुज्जमा अण्वपज्जाप्तगा अण्वसखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! सुज्जमपुठाविकाइया

[illegible]

[illegible][illegible]

उक्ताइया पञ्जसगा सखेज्जगुणा । एएसिण जते ! सुज्जमतेउकाइयाण यादरतेउकाइयाणय पञ्जाप्ता २ ण
 कयरे कयरेहिती अप्पाया ४ ? गोयमा ! सख्त्थीया यादरतेउकाइया पञ्जत्तया, यादरतेउकाइया अप्प
 ज्ञत्तया असखेज्जगुणा, सुज्जमतेउकाइया अप्पञ्जत्तया असखेज्जगुणा, सुज्जमतेउकाइया पञ्जत्ता सखेज्जा
 गुणा । एएसिणं जते ! सुज्जमवाउकाइयाण यादरवाउकाइयाणय पञ्जाप्ता २ ण कयरे कयरेहिती अप्पा
 या ४ ? गोयमा ! सख्त्थीया यादरवाउकाइया पञ्जत्तया यादरवाउकाइया अप्पञ्जाप्ताया असखेज्जगुणा ।
 सुज्जमवाउकाइया अप्पञ्जत्तया असखेज्ज ० । सुज्जमवाउकाइया पञ्जत्तया असखेज्जगुणा । एएसिण जते !
 सुज्जमयणस्सइकाइयाण यादरयणस्सइकाइयाणय पञ्जाप्ता २ ण कयरे कयरेहिती अप्पाया ४ ? गोयमा !

वी । एएसिणं भत्ते सज्जम तेउकाइयाणं यादर यादरतत्तकाइयाणं पञ्जत्ता २ ण कयरे २ जित्ता अप्पाया ४ । हेमगवन् एव मू तेउकायनी यादर
 तत्तकायनी पर्याप्ता अपर्याप्तानि बिज्जीवी वाक्का यवी इत्यादि । मायमा सज्जत्ताया यादर तत्तकाय पञ्जत्तया यादर तेउकाव अपञ्जत्तया असखिज्ज
 गवती । ज्जीतम सज्जत्ता यादर तेउकाय पर्याप्ता असज्जत्तया । सुज्जम तेउकाय अपञ्जत्तया असखेज्जगवती । सज्ज तेउ
 काय अपर्याप्ता असज्जत्तया । सुज्जम तेउकाय पर्याप्ता असज्जत्तया । एवमिदं भत्ते सुज्जम यादरकाइयाण
 यादर यादरकाइयाण पञ्जत्ता २ ण कयरे २ जित्ती अप्पाया ४ । हेमगवन् एव सज्जत्ताया यादर यादरकाइयाण पञ्जत्तया यादर
 वाक्का यवी इत्यादि । मायमा सज्जत्ताया यादर यादरकाइया पञ्जत्तया यादर यादरकाइयाण पञ्जत्तया यादर वाक्का यवी इत्यादि । मायमा
 याय पर्याप्ता यादर वाक्काय अपर्याप्ता असज्जत्तया । सुज्जम यादरकाइया पञ्जत्तया यादर वाक्का यवी इत्यादि । मायमा
 याय वाक्काय पर्याप्ता असज्जत्तया । सुज्जम यादरकाइया पञ्जत्तया यादर वाक्का यवी इत्यादि । मायमा

पराशराय च मनुदायेन पञ्च मध्यवर्षादि-एणसिच ज्ञते । सुबुभाय सुबुमपुठिबिबाइयावमित्यादि ॥ सबसोका यादरेतेस्कापिका पर्यासा वावसिक्कासमपवणकतिपयसमपवने रावसिक्कासमये भुविते यावान् समपराणि स्तावतप्रमाकत्वात् तथा तज्यो वादरेभवकायिका पर्यासा सस स्वपुणाः प्रतरे पावत्यनुकूलंयपजागमात्राव एवमिति तावतप्रमायत्वा सेया, तज्यो वादरेत्रसकापिका अपर्यासा असस्मेयगुणा प्रतरे यावत्स

सप्तत्योया यादरेयणस्सइकाइया पञ्जात्तया, यादरेयणस्सइकाइया अपञ्जाप्तया असुखिज्जागुणा, सुजम यणस्सइकाइया अपञ्जात्तया असुखिज्जागुणा । सुजमयणस्सइकाइया पञ्जाप्तया सुखिज्जागुणा । एणसिच ज्ञते ! सुजमनिगोदाण यादरेनिगोदाणय पञ्जाप्ता २ ण कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सप्तत्योवा यादरेनिगोदा पञ्जाप्तया, यादरेनिगोदा अपञ्जाप्तया असुखिज्जागुणा, सुजमनिगोदा पञ्जाप्तया सुखिज्जागुणा ४ । एणसिच ज्ञते ! सुजमाण सुजमपुठिविकाइयाण सुजमअ्याउका इयाण सुजमतेउकाइयाण सुजमयाउकाइयाण सुजमत्रणस्सइकाइयाण सुजमनिगोदाण यादरेण यादरे

ता २ यय कयरे २ हिता पप्पावा ४ । हेमगवन् एव वनअतीकावने यादरेवनअतीकावने पर्याता अपर्याध्याने विहारी २ यो बोळा चर्वा इत्यादि । नायमा सज्जाता वादरे वनअरेकाइया पञ्जाप्तया वायरेववअरेकाइया अपपञ्चतगा असुखिज्जागुणा । हेमोतम सवकावा वादरे वनअतीकाय पर्याता वादरे वनअतीकाय अपर्याता समप्यातयका । मज्झ वनअतीकाय अपपञ्चतगा असुखिज्जागुणा । मज्झ वनअतीकाय अपर्याता असुखिज्जागुणा । सु बुम वनअरेकाइया पञ्जाप्तया कण्ठेज्जागुणा । मज्झ वनअतीकाय अपपञ्चतगा असुखिज्जागुणा । एणसिच ज्ञते मज्झमनिगायाव वादरेनिगायाव पञ्चत्ता २ यय कयरे २ हिता पप्पावा ४ । हेमगवन् एव वनअतीकावने यादरेनिगादम पर्याता अपर्याध्याने विहारी २ यो बोळा चर्वा इत्यादि । नायमा सज्जाता वा दरेनिगायाव पञ्जाताया वादरेनिगायाव अपपञ्चतगा असुखिज्जागुणा । हेमोतम सवकावा वादरेनिगाय पर्याता वादरे निगाय अपपारता अपसज्जातगुणा ।

दृष्टासह्येयनागमायां यस्मानि तावदप्रमाणाः सन्ति ततः प्रत्येकबादरवमस्यपत्तिकार्यिक ५ बादरपुष्पिवीकार्यिका ६ बादरा
पुष्पिक ७ बादरवासुकार्यिका ८ वयासा ययोत्तदं ससंस्थयगुणा मद्यप्येते प्रत्येकं प्रसरे यावत्सङ्गुलासह्येयनागमायां सुपत्तानि यावदप्रमाणा
स्तथा व्यङ्गुलासह्येयनागमायां सङ्गुलेयप्रवृत्तिस्तथा दित्वं ययोत्तर मसङ्गुलगुणत्व मप्रिधीयमान न विसृज्यत ८। एतस्यो बादरतेजस्कार्यिका सपयाप्ता
सङ्गुलेयगुणा ससङ्गुलयतोबाकायादमदशप्रमाणात् ९। ततः प्रत्येकक्षरोराबादरवमस्यपत्तिकार्यिक १० बादरपुष्पिवीकार्यिक १२ बाद

पुढविकाइयाण यादरअउकाइयाण यादरतेउकाइयाण यादरवाउकाइयाण यादरवणस्सइकाइयाण पहे
यसररयादरवणस्सइकाइयाण यादरनिगोदाण यादरतस्सकाइयाण पज्जात्ता २ ण कयरे कयरेहिती अय्या
या ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा यादरतेउकाइया पज्जात्तया १ । यादरतस्सकाइया पज्जात्तया अस्सस्विज्जगुणा २
यादरतस्सकाइया अपज्जात्तया अस्सस्विज्जगुणा ३ । पत्तेयसररीरयादरवणस्सइकाइया पज्जात्तया अस्सस्विज्ज
गुणा ४ । यादरनिगोदा पज्जात्तया अस्सस्विज्जगुणा ५ । आयरपुढविकाइया पज्जात्तया अस्सस्विज्जगुणा ६ ।
यादरअउकाइया पज्जात्तया अस्सस्विज्जगुणा ७ । यादरयाउकाइया पज्जात्तया अस्सस्विज्जगुणा ८ । यादरतेउ

मनुष्य निनादा उपपन्नतां परवर्तिष्मन्तुं सधुम निगायाः पञ्चसया सख्ययुक्ता । सूक्ष्म निगाश्च उपवर्तिप्यता असंख्यातगुणां सूक्ष्म निगाद पर्याप्यता स
ज्ज्ञातयन् । एवमिह मते सुदुर्मात्रं मनुष्यपुच्छोवाहनात् सुदुम आलकाय सु० तेज स वात सु वक्त्रस्त्रोद सु निमाशोच वातरात्रं वायरपुच्छोवा
इत्यर्थं वायर आठ वायर तेज० वात सुदुम परस्पर । हेमवन् एव सु० पुच्छोवाधने सू आलकायन सू वातुवाधने सु० वनस्पती
आयन सू निगादने, वादर पुच्छोने वादर आलकायने वादर तेजने वादर वायुने वादर वनस्पतीने । पतयसरीर वायरवक्त्रस्त्रोदवाहया वायर निगावा
च वायरतसल्लाहय पञ्चसया उपपन्नतां उपपन्नतां कयर २ हिता उपपावा ४ । प्रवेक्ष्यरीर वादर वनस्पतीने वादर निगादने वादर वनस्पतायने पर्याप्यता च

पयाज्ञाना च समुदायेन पञ्चम मस्यपुत्रमाश्रयणं प्रते । सुकुमार सुकुमारुडिकारयाकमित्यादि ॥ सुवस्त्रोका यादरेतेनस्त्रायिका पयाज्ञाना यासतिबाधमपवमैकतिपयसमपव्युत्ते रावसिक्तासमये नुचिते यावान् समपरादि स्तावदप्रभाबत्वात् तेषां तस्यो यादरेवसकायिका पर्याज्ञाना अथ स्यपुङ्गाः प्रतरे यावत्सुकुमरसंस्पयनागमात्राच्च यथाकानि तावदप्रभाबत्वा तेषां तस्यो यादरेवसकायिका अपर्याज्ञाना असम्पेयगुणा प्रतरे यावत्स्य

सप्तत्योया यादरघणस्सइकाइया पज्झत्तया , थादरघणस्सइकाइया अयपज्झत्तया अयसखिज्जागुणा , सुज्जम
यणस्सइकाइया अयपज्झत्तया अयसखिज्जागुणा । सुज्जमवणस्सइकाइया पज्झत्तया सखिज्जागुणा । एएसिण जत्ते !
सुज्जमनिगीदाण थादरनिगीदाणय पज्झत्ता२ ण कयरे कयरोहिती अप्यावा४ ? गोयमा ! सप्तत्योवा थाद
रनिगीदा पज्झत्तया , थादरनिगीदा अयपज्झत्तया असखे० , सुज्जमनिगीदा अयपज्झत्तया अयसखिज्जागुणा ,
सुज्जमनिगीदा पज्झत्तया सखेज्जागुणा ४ । एएसिण जत्ते ! सुज्जमाण सुज्जमपुढाविकाइयाण सुज्जमअयाउका
इयाण सुज्जमतेउकाइयाण सुज्जमत्रणस्सइकाइयाण सुज्जमनिगीदाण थादराण थादर

ता २ चम अष्टरे २ हिता प्रयाग ४ । ऐमगवम् एक वनस्थतीकायने पर्वता आदरवन्मस्तोकायने बिहारी २ यो सोडा चकी इत्यादि ।
वादिना बलतीरा आदर वनपरकाइवा पञ्चतमा आदरवन्मस्तोकाइया अपञ्चतमा अष्टविष्णुगुणी । ऐमोतम सवकाका आन्द वनस्तोकाय पर्वता
आदर वनस्थतीकाय अष्टविष्णुगुणी । मन्म वनस्थतीकाय अपञ्चतमा अष्टविष्णुगुणी । मन्म वनस्थतीकाय अपञ्चतमा अष्टविष्णुगुणी । स
इम वनस्थतीकाइया पञ्चतमा अष्टविष्णुगुणी । मन्म वनस्थतीकाय पर्वता सप्तविष्णुगुणी । एवसिच मते मन्मजिनाकाय आदरनिमायाय पञ्चतमा २ अष्ट
अष्टरे २ हिता प्रयाग ४ । ऐमगवम् एक सप्तविष्णुगुणी आदरनिमाइने पर्वता अपञ्चतमा अष्टविष्णुगुणी । ऐमोतम सवकाका आदर निमाइ
अष्टविष्णुगुणी । मन्मजिनाकाय आदरनिमाइने पर्वता आदर निमाइ अष्टविष्णुगुणी । ऐमोतम सवकाका आदर निमाइ अष्टविष्णुगुणी ।

कायिकाः पयासा पपीत्तर विज्ञेयायिकाः २२, तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदा धपयासा धपयुगुका लोया नतिप्राप्त्येन सखलोकेषु प्रावात् २३, तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदाः पयासाः सङ्ख्यगुकाः सूक्ष्मपयर्पाभ्य पयासाणा मोपत एव सहा सङ्ख्यगुकात् एतेन बादरापर्याप्तैश्चस्वायिकाद्य पयर्पासूक्ष्मनिगोदपयसाभा पीकय पदार्थो यद्यप्यन्यथा विज्ञापना सङ्ख्यलोकाभाषाप्रवक्ष्यमावतया सङ्गीयते, तथाप्यसंख्यस्यः सङ्ख्यभ्रजित्वा दित्य सस्ययगुकात् विज्ञापयिष्यत् सस्ययगुकात् प्रतिपाद्यमान न विरोधतामिदं २४, तस्य पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदज्यो बादरवमस्यतिकायिकाः पयासा वनजगुका, प्रतिपादरेकेननिगोदमनताना जीवाना प्रावात् २५, तस्य सामान्यतो बादराः पयासा विज्ञापयिका, बादरपर्याप्ततज्जस्वायिका

जज्ञगा विसंसाहिया १७। सुक्ष्मयाउकाडया अपजज्ञया विसंसाहिया १८। सुक्ष्मतेउकाडया पजज्ञया सखि० १९। सुक्ष्मपुठविकाडया पजज्ञया विसंसाहिया २०। सुक्ष्मस्याउकाडया पजज्ञगा विसंसाहिया २१। सुक्ष्मयाउकाडया पजज्ञया विसंसाहिया २२। सुक्ष्मनिगोदा अपजज्ञया अस्ख० २३। सुक्ष्मनिगोदा पजज्ञया सखि० २४। बादरयणस्सडकाडया पजज्ञया अणतगुणा २५। बादरपजज्ञा विसंसाहिया २६। बादरयणस्सडकाडया अपजज्ञगा अस्खिजगुणा २७। बादरअपजज्ञया विसंसाहिया २८। बादरा

पप दिन न बाडकाड पप विस। सख्म तडकाड पप पस सू दृक्कोकाय पप विज्ञेयायिक् स बायुका य पप विज्ञेयायिक्। न तडकाय पजज्ञगा पस न पठकोकाय पजज्ञगा विसे न बाडकाय बाडकाय निगाय पज्ज विसे। सू तडका य पप० पस सू दृक्कोकाय अपर्वापता विग सू पडकाय पप विग सू बायुकाय पप विग सू निगाडोकाय पप सस्यगतगुर्वा। बादर वनजगोदाया पज्ज० पसंतगुणा बादर पजज्ञया विसे। बादर वनस्पतीकाड पस पस बादर पर्या विज्ञेयायिक्। बादर वनस्पतीकाड पप पस बादर पजज्ञगा विसे बायरा विसंसाहिया। बादर वनस्पतीकाय पप पस बादर पप विज्ञेयायिक्। सुक्ष्म

राज्याधिक १३ यादरवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर मसङ्केतगुणाः १४ । ततो यादरवायुकायिकेभ्यो उपर्याप्तेभ्यः सूक्ष्मेतेजस्कायिका अपर्याप्ता य
मनुगुणाः १५ ततः सूक्ष्मपृथिवीकायिका १६ । सूक्ष्माप्यायिक-१७ सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर विद्योपायिका १८ ततः सूक्ष्मपर्याप्ता स्त्री
प्राजायिका मङ्गलगुणाः । सूक्ष्मपर्याप्तेभ्यः पर्याप्तानां योपत एव सङ्केतगुणस्यात् १९ । ततः सूक्ष्मपृथिवीकायिक २० सूक्ष्माप्यायिक २१ सूक्ष्मवायु

काहया अपञ्जस्रया अस्तिस्त्रिजगुणा १ । पत्तेयसरीत्रादरथणस्सदकाहया अपञ्जस्रया अस्सस्त्रिजगुणा १० ।
यादनिगोवा अपञ्जस्रया अस्सस्त्रिजगुणा ११ । यादरपुठविकाहया अपञ्जस्रया अस्सस्त्रिजगुणा १२ । यादरअपञ्जस्रया
इया अपञ्जस्रया अस्सस्त्रिजगुणा १३ । यादरवाउकाहया अपञ्जस्रया अस्सस्त्रिजगुणा १४ । सुज्जमतेउकाहया अपञ्ज
तया अस्सस्त्रिजगुणा १५ । सुज्जमपुठविकाहया अपञ्जस्रया विसेसाहिया १६ । सुज्जमअपञ्जस्रया अपञ्ज

परा तानि विहा १ यो वाडा यथा सरीका विमिह ३३ । यादना समत्वाया यादर तठकाहया पञ्चतया यादरतसकाहया पर्याप्ता पञ्चविज्जगुणा का
परतवकाहय यय पञ्चपञ्चगुणा । द्वितीतम सर्ववाडा यादर तेठकाय पर्याप्ता यादर वसकाय पर्याप्ता पञ्चकायिका यादर वसकाहया अपर्याप
ता पञ्चपञ्चगुणा । पत्तेय सरीर कायरववव्या पञ्चतया पञ्चपञ्चमया यादरनिमाय पञ्चपञ्चमया । पत्तेयसरीर कादरवववतोकाय पर्या
पता पञ्चपञ्चगुणा यादर निमाय पर्याप्ता पञ्चपञ्चमया पञ्चपञ्चगुणा यादर पाठकाहय पञ्चतया पञ्च
वाडकाय यय पञ्च वादर पृथिवीकाहया पर्याप्ता पञ्च वादर पञ्चकाय पर्याप्ता पञ्च वादर वायुकाय यय पञ्च का
दर तेठकाय यय पञ्च । पञ्चपञ्चगुणा यादर पञ्चपञ्चगुणा पञ्च वादरनिमाय पञ्चपञ्चतया पञ्च वादरपुठवोकाहय यय पञ्च वाय
र वाडकाय यय पञ्च वादर वाडकाय यय पञ्च । पत्तेयसरीर कादरवववतोकाय अपर्याप्ता पञ्च वादर निमायिका अपर्याप्ता पञ्च कादर
पञ्चकाय यय पञ्च वादर पञ्चकाय पर्याप्ता पञ्च । सुज्जम तेठकाय अपञ्चतया पञ्च म् पुठवोकाय यय म् पाठ

पासाय हि मनोयोगिनः सप्त आका इति तेज्यो योग्योगिनो सख्यगुणा द्वीन्द्रियादीनां योग्योगिनां संश्लिष्यो सध्यातगुणत्वात् तेज्यो ऽप्यो
गिना ऽनन्तगुणाः । मिदुना मनस्तत्वात् तस्य काययोगिनो ऽनन्ता वनस्पतीनां मनस्तत्वात् । यद्यपि मिमोदजीवानां मनस्तत्वा मकं शरीरं
तथापि तमेकं शरीरं सर्वव्यापारविशेषं कुरुतीति । सर्वपापवि काययोगिनां नतगुणत्वात् तस्य सामान्यतः सयोगिनो विद्यापो
पिका द्वीन्द्रियादीनां मपि वाग्याग्यादीनां तत्र प्रवृत्ता । गत योगद्वारं, मिदानीं यतद्वारमाह-एयसिख प्रत । जीवाश्च सकयगाश्चमित्यादि, सर्वे
लोकाः पुरुषपदा सद्धिमासश्च तियगुमनुव्यावा देवानां च पुरुषपदं प्राप्तात् । तस्य लोपदा सख्येयगुणाः यत सप्त जीवाज्जिगमे-तिरिक्त्वजो
खियपुरिसेहितो तिरिक्त्वजोविषयस्तीष्ठतिगुयोष्ठतिरुवाडियातोय तद्वातजरसपुरिसहितो मनुस्सहस्रीठं मत्तावीसगुणाष्टं सत्तावीसकृततराष्टयं
तद्वादेयपुरिसहितो द्वात्सीठं दत्तावीसगुणाष्टं दत्तावीसकृततराष्टयं इति । दत्तावीसं रज्जु-सिगुणातिरुक्त्वपिदिया तिरयात्वात्त्वियामुमेयद्वा सत्तावी
सगुणाष्टं मनुवाकतद्विद्याचय १ यत्तासगुणावलीसु कृत्वाहयाय तद्विद्याय दत्तावीसकृततराष्टयं इति २ यत्तदका अनन्तगुणाः सिद्धा
नामनन्ततत्वात् । तज्यो नपुंसकपदा अनन्तगुणा वनस्पतिकापिका सिद्धन्त्यो व्यनतगुणत्वात् सामान्यतः सवदका विषयापिकाः लीखदश्चकुरुवेदका

हितो श्रुप्याया धञ्जयाया तुवावा त्रिसेसाहियाया १ गोयमा । सख्येयोया जीवा मगजोगी वयजोगी श्रु
सख्येज्जगुणा श्रुजोगीश्रुणतगुणा कायजोगी श्रुणतगुणा सजोगी त्रिसेसाहिया, दार ५ । एणसिण जते !
जीत्राण सखेदगाण इत्यीद्विदगाण पुरिसखेदगाण नपुंसगनेदगाण श्रुवेदगाणय कयरे २ हितो श्रुप्याया ४

पासाया ४ । ईभमन्त लीवात्रे मन्त्रादीने मन्त्रादीने वनस्पतीने कायसाधोने पयाभीने विद्या २ वी वावा वना इत्यादि । गोयमा सख्येयोवा
भीवा मन्त्रादीने वनस्पतीने पमविष्यगुणा पयानी पयतगुणा कायसाधोने पयतगुणा मयायो त्रिसेसाहिया दार । ईभेतम सववावा लीव मनयोगी
नयो पयाया मन्त्रे वनस्पतीने पयतगुणा वीद्विपमाटे पयागो वनस्पतीने विद्वततो वासयागो वनस्पतीने वनस्पतीमाटे सयायो विगोपाधिक

दीनामपि तत्र प्रलपान् २६ । तस्यो यादरयमरूपतिकायिका अपर्याप्तका असुरययगुणा यथैकपयोप्रपादरनिगोदनिग्रया असुरयेयाना यादरनिगो
 दापयाप्ताना मत्वागत २७ । तस्यः सामान्यता यादरापयासा विज्ञेयापिका यादरतजस्तायिकादीना मव्यपर्याप्ताना तत्र प्रलपान् २८ । तस्यः सा
 मान्यतो यादरा विज्ञेयापिका पयाप्तानामपि तत्र प्रलपान् २९ । तस्य सूक्ष्मवमरूपतिकायिका अपयासा असुरययगुणा यादरनिगादन्य सूक्ष्मनि
 नादाता मव्य पयाप्ताना मव्य सुक्ष्मपणुत्वान् ३० । ततः सामान्यतः मूल्याऽपयाप्तका विज्ञेयापिकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकादीना मव्य पर्याप्ताना
 तत्र प्रलपान् ३१ । तस्य मरुमवमरूपतिकायिका पर्याप्ता असुरययगुणाः सूक्ष्मवमरूपतिकायिका पर्याप्तैर्यो हि सूक्ष्मवमरूपतिकायिकपयासा समय
 गुणा मूक्ष्मता पतो ऽपर्याप्तस्यः पयाप्ताना असुरययगुत्वान् तत सूक्ष्मा पर्याप्तैर्यो व्यसुरयेयगुणा विज्ञेयापिकत्वस्य असुरययगुत्वयाचनायो
 नान् ३२ । तस्यः सामान्यता सूक्ष्मा पर्याप्ता विज्ञेयापिकाः पयाप्तसूक्ष्मपृथिवीकापिकादीना मपि तत्र प्रलपान् ३३ । ततः सामान्यतः गूक्ष्मा पर्या
 सापयाप्तविज्ञेयवद्वेष्टता विज्ञेयापिका अपर्याप्ताना मपि तत्र प्रलपान् ३४ । तत सूक्ष्मयादरसमुदायगत र्वम मस्यययुत्व तदुत्तौ समचित्तानि
 पदन्त्यावि सूयावोदि तत कापद्वार मिशानो योगद्वार भाव-एवखिग तत । जीवाश्च समोगीय नित्यादि । सबसोका ममायागिन' सचित्त २ प

त्रिमंसाहिया २९ । सुक्तमथणस्सडकाडया व्यपज्जत्तगा व्यसंखि ३० । सुक्तमव्यपज्जत्तगा त्रिमंसाहिया ३१
 सुक्तमथणस्सडकाडया पज्जत्तगा सखे ३२ । सुक्तमपज्जत्तगा त्रिमंसाहिया ३३ । सुक्तमा त्रिमंसाहिया ३४
 दार ६ । एएसिण जते ! जीयाण सजोगीण मणजोगीण त्रयजोगीण कायजोगीण व्यजोगीणय कथरे २

बवयाकादया पप र्म स पप त्रिमंसाहिया । म् वनरपतोकाय पप पप म् पप त्रिये । स वनरभावाकादया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा ।
 मपम वनरपतोकाय पर्याप्ताना पययाताना मवसातनका । मरुमपज्जत्तगा त्रिमंसाहिया मरुमत्रिमंसाहिया डार । मूक्ष्म पयोस्ता विज्ञेयापिका इति म्
 पदुमिमेयापिका डार द्विमे काययानवहार कडवे—एएसिण जते जीवाश्च भते जीवाश्च मसुवागोच ववर्थावोच कायवोच पयागीचय कथरे २ द्विगा

गतं कथापट्टार । विद्वान्नी लेखाद्वार-गणसिद्धं जते । अथलेखाः मित्यादि ४ सर्वेस्त्रोक्ताः श्रुतलेखाः शतकादिष्वेया नुत्तरपर्यवसानेषु विसर्गानि
 केपु दपु कतिपयपु च गतपुकातिपु कर्मप्रुमिकपु स्वयेपवपायपु मनुपु तिर्यक्छोपुनपुसकपु कतिपयपु स्वयवपायपुकेपु तस्याः सप्त
 वाम् तस्यः पटसप्तदपाका स्वयेयगुणाः सार्धं सप्तकुमार सार्धं प्रहृलोक स्वयवासिपु ववपु तथाप्रपूतेपु गजपुत्कातिकपु कर्मप्रुमिकपु स्वये
 ययपायपु मनुपुटीसमपुसपु । तथा गजपुत्कातिक तिर्यग्योतिक्छोपुसेपु स्वस्वयवपायपुके पवाप्यत सप्तकुमारविद्वावयस सप्तुवितना
 तकादिदेवादिन्यः स्वयययमुसा इति जवति श्रुतसप्तपाकाः स्वययगुणाः तस्य सप्तोत्तपाकाः स्वययगुणाः सर्वेया सौधमंशा
 मन्योतिषदयाना कतिपयाना च जवमपतिपयाना च गजपुत्कातिक तिर्यक्पर्वेदिय मनुप्याका आदराऽपर्यंतिकम्प्रियायां च तजोलेखाप्रायात् । न
 त्वसप्तययगुणाः कस्मा न जवति अथम प्रवर्ती तिष्ठत उच्यत-इत्योतिषा जवमवासिप्यो प्यस्वयेयगुणाः किपुन सप्तकुमारविद्वज्य कोचन्यो

श्रुतसाहमाणकसादृष्ट्यगतगुणा, कोहकसाहं यिसेसाहिया, मायाकसाहं यिसेसाहिया, लोन्नकसाहं यिसेसा
 हिया, सकसाहं यिसेसाहिया, दार ७ । एणसिण जते । जीवाण सलेसाण किरहलेसाण नीललेसाण काउ

वर २ हिता यपुपावा ४ । इममवन् एहलोव सकपावने कावकपायन मानकपायन मायाकपायने कामकपायने चकपायन किङ्का २ घो घाडा ववर्
 रत्नादि । मोचमा सक्तवावा कोवा चकसाहं माचकसाहं यययगुणा । जेगीतम सकपाका ओव चकपाको चित्ताटे तेहवो मानकपावो यमगतनपा
 पट्कापनेविपे मान सार्धे । कावकपाय यिसेसाहिया मायाकसाहं यिसेसाहिया कामकसाहं यिसेसाहिया चकपाय यिसेसाहिया वार । कावकपायने
 यिसेसाहिक मानवो माधना कावाविमयापिक मायाकपायविमयापिक कोधवो मायाकपायना कावपयिक आमकपाय विमयापिक ववोत्तर परिरवा
 म कावादिच सकपाय विमयापिक मानकपायमाहि भक्ता इति कपायवार ० इव सेयाद्वार कइये-एणसिचभंते कोपाच सकपाच विमयेसमाच
 नोवमुग्राच कावकसाहं तेजससाहं पट्कसाहं सकसाहं यलेसाहं यवरे २ हिता यपुपावा ४ । इममवन् एह लोवने सलेयोने छससगोने नोसमेगोने

नामवि भत्र प्रदेपात मत वेन्द्राटु मिदानी कपायद्धारमाह ॥ एणिमक प्रत। जीवाय सकसाइय नित्यादि। सब सोषा अक्षपायिषः सिद्धाना कतिपयाना
 च मनुष्याणा सकपायत्यात् । तन्या मानकपायिषो मानकपायपरिवाभयतो ऽनतगुणाः यदस्त्रापि जीवनिजाययु मानकपायपरिवाभस्य। वाप्यमान
 स्यात् तस्यः दोषकपायिषो विद्वयापिषा साभ्या मायाकपायिषो विद्वयापिषा साभ्योपि जोन्नकपायिषो विद्वयापिषा मानकपायपरिवाभका
 सापहया जोपादिकपायपरिवाभस्य यथोत्तरं विद्वयापिषाया जोपादिकपायाकाभपि यथोत्तरं विद्वयापिषायासात् जोन्नकपायिष्य सा
 मान्यतः सकपायिषो विद्वयापिषा, मानादिकपायाका भापि तत्र प्रहृयात् सकपायिष इत्यत्रैव व्युत्पत्तिः कपायस्यैव कपायोदय' परिशुद्धते
 तथाच-साक्षेयधद्धार' सकपायो यं कपायोदयवा नित्य' सः कपायस्य कपायोदयेन वसते सकपायोदया विपाकावस्थाप्राप्ता' स्त्रोदय सुपदस्य
 यत' कपायकमपरिमादवतस्तपुवस्तु जीवत्वावश्य कपायोदयस्यवत्तात् सकपायाविद्युगते यपात सकपायिष कपायोदयसहिता इति तात्पर्यार्थः।

१ गोयमा ! सङ्ख्योया जीया पुरिसवेदगा इत्येवेदगा सखेज्जगुणा, अयेदगा अणतगुणा नपुसगवेदगा अणतगुणा संयगा विसंसाहिया, वार ६ । एएसिणन जते ! जीयाण सकसाईण कोहकसाईण माणक साईण मायाकसाईण लोनकसाईण अकसाईणय कयेरेहितो अण्पाया ४ ? गोयमा ! सङ्ख्योया जीया

वेद्विवादिहमादि पापता वेदह र कहेछे—एगमिब भते जीवाण सबेयगाण एत्तीबसमाब पुदिसवेयगा नपसमवेयगा नवेयगाणय कहरि २ द्वितो प
 ट्याश ३ । इमयवण एउने खोप सबेने एत्तीबे न पुदयवेदम नपुसकबे न यवकोने किरा २ ओ एण सबा इखादि । आसमा मज्झयाश जोव पुदि
 पववम । एत्तीवेयगा सगुज्जगुनी पवेठया पवतगुनी नपुमगेयगा पवतगुनी सबेयगा विसेसादिया । इतीतम सवसाहा जोव नपुसकवेती सुसा
 मा तिपेवपी मनुपमा बडावव तेम ट तेउओ आबेदी मयणातमनी पवदी पमगतमुनी सिह नपुसकवदी पमगतमुनी बभरपतीमाटे सबेदी बिगोपाधि
 ब सोबदे पवपवेद पावता इति वेदेहार ६ । एएलिक भते आनाब सवसाहेण कावकसारण मानकसारण माकाकसारण पावसारणय

इया विद्यायापिका नीलसेत्रयाक्तादीनामपि स्रष्ट प्रवेष्टात् गतं लेखयाद्वारं, निदाभी सम्यक्सीद्वारं भाइ-एएखिबं अंते । जीयाण सममंदिवीय मित्यादि ॥ यवस्तोबाः सम्यग्मिथ्यादृष्टयः । सम्यग्मिथ्यादृष्टिपरिवासाकासस्या तमुत्तममाखतयाऽतिस्तोबात्वन तथा पुष्कासमये स्तोकाभाभेव लज्जत्वात् ; तस्यः सम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणः सिद्धाना ममन्तत्वात् तेष्वेयि मिथ्यादृष्टयो नन्तगुणः वनस्पतिकारिकायिकामां सिद्धेभ्यो प्यनन्तगुणत्वात् तयोप मिथ्यादृष्टत्वा दिति । गत सम्यक्सीद्वारं मधुमा दानद्वारं भाइ-एएखिबं अत । जीवाबं आनिषिषोद्विषयापीय मित्यादि ॥ सर्वसाक्षात्मनः पय वज्रात्मनः संयताना मेवा मदीयप्यादिच्छादिमास्तार्त्त ममः पयवज्जानसुंनवात् तस्योऽवस्थापगुणा अवधिच्छानिमो नेरयिकतियक्त्वं त्रियमनुष्यदेवाना मप्य वपिज्ञानसुनवात् तस्य आनिमिषोपच्छानिनः द्युतज्ञानिन य विद्यायापिकाः संक्षितियगुणं त्रियमनुष्याणां मेया वधिज्ञानविकलाना

એસા ચિંતેસાહિયા કણ્ણલેસા થિસેસાહિયા, દાર ૮। એસિણ જતે ! જીવાણ સમ્મવિઠીણ મિચ્છાવિઠીણ સમામિચ્છવિઠીણ ચ કયરે કયરેહિતો સ્યપ્પાવા ૪ ? ગોયમા ! સહ્વત્થોવા જોયા સમ્મામિચ્છવિઠી, સમ્મવિઠી સ્યણતગુણા મિચ્છવિઠીસ્યણતગુણા, દાર ૯। એસિણ જતે ! જીવાણ સ્થાન્નિચોહિયણાણીણ

आशानेबाय कण्ठसंगाना घबो १७गवाधिक सातमानरक तथा मनुष्य तियवने सबलेगानाधको विमोपाधिक खाद्य इति संख्याहार, द्विवे सम्मल्लहार क
 इहे—११मिर्ब भात औवाच सन्धदिहोर्ब मिच्छादिहोवद कयर २ बिती सपुपावा ४ । सेभ गवन् एव औवने सम्मल्लहने निष्वादिहि
 सम्मल्लनिष्वादिहने बिहर् २ जो सन्ध पर्वा इत्तादि । गायभा सशब्दयावा औवा सन्धामिच्छादिहो सन्धदिहो सवतगवा निष्वादिहो सपंतगुवा हार ।
 देवोतम सबबाहाओव सम्मनिष्वादिह जेमको मियुवठवाभाभास तमको तहयो सम्मल्लहति सनतासह भवता तेहको निष्वादिहि सनता वनरप
 तो मेवता इति सम्मल्ल ८ दिव प्रानहार कहदि—एएसिक्कमत औवाच यामिक्किवादिहवाकोष सयनाको पाहिपाको सपपप्पनवाको केवसवाकोचय
 वयर २ दिता सपुपावा ४ । सेभगवन् एव औवाने मतिमानोने मृतप्रानोने सवधिप्रानोने मगपववप्रानोने केवसप्रानोने बिहर् २ जो वासा

[illegible]

હેનાણ તેડેસાણ પમ્હેસાણ સુક્કલેસાણ શ્વેસાણય કયરેકયરેહિતો શ્વપ્પાવાઃ ? ગોયમા ! સન્વલ્યોત્રા
જીવા સુક્કલેસા પમ્દહેસા સસિજ્જાગના તેડેસા સસિજ્જાં શ્વેસાશ્વણતગુણા કાડેસા શ્વણતગુણા નીલ

वापातममीन तत्रासिमोने पद्ममेगीने गुल्फसमीने असेमीने किङ्की २ आयाहा खरी इत्यादि । गावमा सम्यक्तावाओभा सम्यक्समा पद्मसेमगा सखिज्जमुद्या ।
 ईयोतम मयबाडा सीप मळमुद्राभा मंतकबो ऊपरिसा देवमे वाय पद्मसेमगा पको संक्वातमुवा ईशानादिक् सेव मणुप्यम हुवे तेमाटे । तेवसेमगा
 मपिज्जगवा यमेमगा पयतमुवा काउसेमगा पयतमुवा मोनुजसगा विसेसाहिया बिज्जसमगा बिसेसाहिया समसगा बिसेसाहिया वार ८ । तेजाम
 गा म्पातिवोन हुवे तेमाट सवराता यममीनिह तमको यर्मगा कापातसम्यक्ताभा पको पयतता वनस्पती मको मोक्कसहाभा पको बिमियापिक्क पको

मपि कपोल दानिनिदोपि बहुलान्नानायात्, स्वरूपान तु स्यपि परस्पर तुल्याः जयमदनाय तत्त्वसुयनाय गत्यसुयनाय तत्त्वमदनाय मिति यव
मान् तज्ज्य कवसन्नामिनो दाननगुणा सिद्धाना ममत्तास्यात् उक्तं हि-प्राधानि मत्पञ्चदुस्व मिदानी तदप्रतिपक्षज्ञतामा मन्नानिना मत्पञ्चदुस्व
भावे यमसिद्धि मते । जीवाण महप्रकाशेष वि यदि न सद्यस्तोका विनष्टानि न कतिपयानामय मरियकदेशतियसूपचत्रियमनुयाकां विजगता
यान्, तज्ज्यो मत्प्राधानिः दुराप्रानिनो उमत्तमुखाः धनस्पतामामपि मत्प्राधान द्युताशाननायात्, अस्यामेतु परस्पर तुल्याः जयमदनाय त
पमुपचकारं जत्य तुपचकारं तत्त्वमदनाय मिति कवसनाय मत्पञ्चदुस्व भावे-यमसिद्धि मते । जीवाय मित्यादि न
सद्यस्तोका मनःपयवशान्ति संयताना मया मर्योपच्या द्युताशानना मन पयवशानसमवात् सज्यो उमत्तमुखा अद्यपि दानिन सौम्य मानिनि

सुवगाणीण दुहिगाणीण मणपज्जाग्रनाणीण केवलनाणीणय कयरे कयरोहिती अय्यावा १ गीयमा ! सव
त्योया मणपज्जाग्रनाणी दुहिमाणी अय ० अग्रानिगोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया केव
उनाणी अय ० । पुणसिण मते । जीवाण महअग्रणीण सुअग्रणीण धिन्नगनाणीणय कयरे कयरोहिती

यथा इत्यादि भावमा मर्यादाया जीवा मणपज्जाग्रनाया पादिकाओ पयसेअमया । ज्योतम मर्यादा मजपर्यवशानोने किम यमासको अख्खिना
पथे ते इवे तेमाटे तद्वथो पयविज्जाओ पयवयान उवता मारको मज्ज तियवमे इवे तेमाठ पामिक्कादियवाओ सुववाओ आबित्तदा विसेसा
दिया खेअमवाओ पयतमया । मतिज्जाओ यमरोणा जीवाभिगमे अद्यावे जलमदनाय तत्त्वमदनाय, मर्यादाय पयविकाओओ विज्जियाधिक
वेअमवाओ पयतमया मिकी इवे ज्ञानमा प्रतिपणमा पण्डित्तल कव्वे—पणविक भते जीवाय मर्यादाओओ समपवाओओ रिमयवा
ओओय अवर २ विता पपपावा ४ । जममज्ज ० इओओने मतिज्जाओने युतज्जाओने विमंगज्जाओने किङ्का २ ओ आडा इत्यादि । भावमा मर्यादाया विमंग
वाओ मर्यादाओ मुवपवाओ दानिगुणः पयतमया । ज्योतम मर्यादा विमंगज्जाओ खर मारको मज्ज तियवसे तेमथो मतिपणमाओ युतपण ओ ॥

नोसंयता नोसंयतासंयता अनन्तगुणाः प्रतिपेक्षयन्त्येताः तत्तिष्ठितु स्तेषां यथा इति तेभ्यो ऽर्थायता अनन्तगुणा वनस्पतीनां चिद्व्यो प्यनन्त
 त्वान् गत संयतद्वार, संप्रत्युपपादद्वार माह एतद्विषयते । जीवाश्च सागरोदयस्य मिथ्यादि ॥ इहा नाकारोपयोगः कालः स्वस्तीयाः सा
 कारोपयोगवान् स्तु सङ्केतगुणाः ततो जीवा अप्य नाकारोपयोगोपयुक्ताः सर्वस्तीकाः पृष्ठासमये तया स्तीकानामवा धाप्यमानत्वात्, तस्यः सा
 कारोपयोगोपयुक्ताः सङ्केतगुणाः साकारोपयोगवान् दीयतया तेषां पृष्ठासमये सङ्केताप्यापकात्वात् गत मृपयोगद्वार, मिदानी माद्वार
 द्वार-एतद्विषयते । साद्वारगाह मिथ्यादि ॥ स्वस्तीका जीवा अनद्वारका विषयस्यापकादीनां मवा नाद्वारकत्वात्, एतच्च व-विगङ्गाइमाव
 ना कवसिद्धोन्मुहपासमोनीय विहायशवाद्वार सेधासाद्वारगवीवा ॥ १ ॥ तस्य साद्वारका सङ्केतगुणाः मनु वनस्पतितापिकामा विद्वेभ्यो

जीवा सजया सजया अ्सजया अ्सखेजगुणा, नोसजता नोअ्सजता नोसजतासजता अ्णतगुणा, अ्सज
 ता अ्णतगुणा, दार १२ । एतसिण जते । जीयाण सागरोदयद्वाराण अ्णागारोदयद्वाराणय कयरे २ हितो
 अ्प्याया १ ? गोयमा ! सख्योया जीवा अ्णागारोदयद्वारा सागरोदयद्वारा सखिजगुणा, दार १३ । एत

तासद्वतने विहारे २ यो वाका सखा १त्तादि । भावमा सख्यतावाकोश सख्यासख्य पखिजगुणा भासकय नो अ्सजता अ्सजतासजता अ्णतगुणा भा सजयासख्य
 पखतमवा पखतमवा अ्णतगुणा दार १२ । जीतम सख्योया जीव सयतासयत आदिसद्वत्त पुत्रत मख्यसाह सख्यासमिति पखभाह् दियद्विरति पख
 प्वातगुणां तिसरे पखेद्विषय साह क्व प्रतिपेक्षयन्तीं निह अनन्तगुणां तद्विषयो पखयत अनन्तमवा वनस्पतीकासमाते तेद्विषो पखयत पखक्य अनन्तगुणा
 नति १२ । एतद्विषयते जीवाश्च सख्यताया सागरोदयद्वारा पख्यागारोदयद्वारा अ्णतगुणा १ । तेमयवन् एह जीवने साकारापयागोने
 पख्यागारोदयद्वारे विहारे २ यो वाका एतं दत्तादि । भावमा सख्यताया पख्यागारोदयद्वारा सागरोदयद्वारा सखिजगुणा दार । जीतम सख्यताया जी
 व पख्यागारोदयद्वारो इच्छासमय साकासां तेद्विषो साकारोदयद्वारो सयतासयत पखी कांते । एतद्विषयते जीवाश्च साद्वारगाह पख्या

स्यात्, तेषां च मत्स्यप्राप्तिमुत्पादयित्वात्, अस्त्वानेतु द्वावपि परस्परं तुल्या गतं ज्ञानद्वारं मिदानी दर्शनद्वारमाह-एएसिच ज्ञते। श्रीयाच चक्रे
द्वयथापि मित्यादि ४ स्वयंक्रोधा प्यद्विदक्षाभिर्नो देवैरपि कारां कृत्तियानां च सच्चिपर्वेद्वियगुमप्याका मवपिदक्षानज्जावात् तस्यो बभुवदक्षानिर्नो
ऽनस्यपगुणाः सर्वपा देवैरपि क मज्जनुप्याकां सच्चित्तियगुपर्वेद्वियाकां च सच्चित्तियगुपर्वेद्वियाकां बभुवदक्षानज्जावात् तस्यः केवल
दर्शोभिर्नोऽनस्यपगुणाः सिद्धानामनन्तात्वात् तस्यो ऽबभुवदक्षानिर्नोऽनस्यपगुणा वनरपत्तिर्वापिकानां सिद्धोप्यनन्तात् गतं दक्षमद्वारं, मधुना स्व
तद्वारमाह एवमिदं ज्ञत। श्रीवाचं मित्यादि ४ स्वस्मोकाः स्वता स्वस्मपदपि तयो कोटिसहस्रपुण्यमावातया सप्यामत्वात् कोटिसहस्रपुण्य
मप्यतोऽप्यं संजग्राप मितिवचनात् तस्यः स्वतास्वतादक्षविरता असक्यपगुणा स्तियक् पर्वेद्वियाका मसंख्याताना दक्षाविरतिसंज्ञावात्, तस्यो

णा, दार १० । एएसिण नते ! नीवाण चरकुदसणीण अचस्कुदसणीण उहिदसणीण केवलदसणीणय क यरे कयरेहितो अप्पवा १ ? गोयमा ! सव्वल्लोवा जीवा उहिदसणी चरकुदसणी अचस्खेज्जगुणा, केवलदस णी अणतगुणा अचस्कुदसणी अणतगुणा, दार ११ । एएसिण नते ! जीवाण सजयाण असंजयाण सज यासजयाण नोसजया नोअसजया नोसंजया २ णय कयरे २ हितो अप्पवा १ ? गोयमा ! सव्वल्लोवा

[illegible]

यथांश्चिद्भूना अपाद्गुप्त्रमपरयत्नमार्थधारः कायपरीक्षाः प्रत्येकद्वारीरिणः तत्रउन्नयविपरीक्षाः सुद्रुपाचिदास्ते प्रत्येकद्वारीरिणा च अने पञ्चीयापचया निस्तान्वात् ततो भापरीक्षा भाषपरीक्षा उन्नयप्रतिपन्नताम् इह सिद्धा सन्ता इति तस्यो उपरीक्षा व्यनक्तगुहाः रुज्यपाचिकाका साधारण्यनरपतीना वा सिद्धस्यो व्यनक्तगुहात् गत परीतद्वारं । समति पथासिद्धारं-स्यसिद्ध प्रत । लोवाथ पञ्चमत्तगाथ नित्यादि ॥ सबक्षोका नोपयोगका नोचपयोगका उन्नयप्रतिपन्नता इह सिद्धा सन्ता पथासिद्धा इति तस्यो उपयोगका

कयरे कयरेहितो अप्याथा ? गोयमा । सवृत्योथा जीथा परिधा नोपरिधा नोअपरिधा अणतगुणा
अपरिधा अणतगुणा, वार १६ । एरुसिण जते । जीथाण पज्जाण अपज्जाण नोपज्जा नोअपज्जा
णय कयरे कयरेहितो अप्यावा ? गोयमा । सवृत्योथा जीथा नोपज्जाग नोअपज्जाग अपज्जाग

ઘાઠા જાનમાવક સર્વિસમ્યવ દેશિયાદિક તેહનો અમાપક યજ્ઞગુણી વનસ્પતી મેલતા રૂપિ ૧૬ માવક સમાપ્ત, કિંવ પ્રત્યેકકાર કજ્ઞે—૧૧૧૧૧૧
 મત જીવાનં પરિણામ અપરિણામ માપરિણા પરિણામક કચર ૨ કિતા અવાકા ૪ । જમવકનુ ૧૬ જીવ વરિણ અપરિણા દામમદ મલવરિણા કાવ
 પરિણા તિજાં મલવરિણા જીવન જીવા અકપદક કાવિય કાવવરિણા પ્રત્યેકજીવના પારિણા અપરિણા સિદ્ધ કાવયે ૧૬ માર્ગિજ કિજાં ૨ થી ઘાઠા વ
 વાં રૂપાદિ સરાણા વિમયાદિક કુવે । ગાકમા સમ્પત્ત ના જીવા પરિણા માવરિણા ૨ અવતગવા અપરિણા અવતનવાં દાર ૧૬ । જેમોતમ સંવદાકા
 જાવ મુક્તપત્તો પ્રત્યેકમરોર દાવ પ્રતિવેકકર્મીં સિવ તે યજ્ઞત તકનો અપરિણા અપ્રત્યેક યજ્ઞગુણી સાધારવ વનસ્પતી મેલતા રૂપિ પ્રત્યેકકાર ૧૬ ।
 ૧૧૧૧૧ માત જીવાનં યજ્ઞગુણ અપ્રત્યેક ના યજ્ઞતા ૨ અવ કચર ૨ કિતા અપવાકા ૪ । જેમગવનુ ૧૬ જીવ પર્યાપ્તા અપર્યાપ્તાન ઈવ પ્રતિપત્તો સિ
 રુન અપર્યાપ્તા પર્યાપ્તા કિજાં ૨ જી ઘાઠા વર્ણ રૂપાદ । ગાયમા સમ્પત્તવા જીવા નો યજ્ઞગુણ ના અપ્રત્યેક ના અપ્રત્યેક ના અવતગુણી યજ્ઞગુણા સ
 વિજ્ઞગુણા દાર ૧૦ । જેમોતમ સવદાકા જીવ જમયમતિપત્તો સિદ્ધમનો સિદ્ધયાકા તેહનો અપવાકા યજ્ઞગુણી સાધારવનસ્પતી મનો તેહનો સમ્પા

न नमस्यात्, तेषां च दारकृत्यापि सत्यमानस्यात् कथमननगुणा न प्रवर्तते तदयुक्तं यस्तुतत्वापरिच्छिन्नात्, इह सूक्ष्ममिगोदा सर्वसङ्ख्या प्य
मदुयाः तथा व्यक्तमुद्रतमयपराश्रितुस्याः सूक्ष्मनिगोदा यद्यकालविशेषे यत्तमाना सम्यक्ते ततो माह्वरका अप्यतिमहत्त्वः सकलजीवरहितसङ्ख्यया
गत्वा इति तस्य चाह्वरका असङ्ख्यगुणा लक्ष मानसगुणा गत माह्वरकार माह्वरकसिद्धं नत । जीवाश्च प्रासगाश्च मित्यावि
मयलोका प्रायश्चा प्रायसांभययथा ह्रींस्त्रियादीना मयभायकत्वात् अन्नापका प्रायासप्यिनीना अन्नकनूका धमस्वपतिकारिकाणा मनस्तत्वात्
गत प्रायश्चद्वारं, संप्रति परीक्षद्वार माह्वरकसिद्धं नत । जीवाश्च मित्यावि ॥ इह परीक्षा द्विविधा, प्रवपरीक्षा चापपरीक्षा य तत्र प्रवपरीक्षा

त्रिगु ज्ञेते । जीवाण श्याहारमाण श्याणाहारमाणय कयरे २ हितो श्यप्यावा ४ ? गोयमा । सवृत्योद्रा जीवा
द्युणाहारगा श्याहारगा श्यसखिज्जगुणा, दार १४ । एणसिण ज्ञेते ! जीवाण चासगाण श्यनासमाणय क
यरे कयरेहितो श्यप्यावा यज्जयावा तुसावा विसंसाहियावा ? गोयमा ! सवृत्योद्रा जीवा ज्ञासगा श्यना
गा श्यगतगुणा, दार १५ । एणसिण ज्ञेते ! जीवाण परिमाण श्यपरिमाण नोपपरिमाण नोपपरिमाणय

रमाश्च कयरे २ हितो यप्यावा ४ । हेममयम् इह जीवने पादारीने विषी २ वाता वणी रत्नाणि । मायमा मयत्वावा जीवा यथाहारगा पाहारमा
यमणिज्जगुणा । हेमोतम सववत्तावा जीव यथाह्वरी विषययति पाहारज्जो तथा विषययनाह्वरी यावा—विषययमायवा लेयविषयसमुद्रयाययोगी
य विषयययवाह्वरा मयापाहारगाजीवा इति वयनात् तेज्यो पाह्वरीजीव यसक्यातगुणा कुवे यमस्तगुणा नञो तेजिस मूत्रनिमोह सवकाखे वि
यइवति यत्तमानयामे तमाट यथाह्वरी यथा विषय सवज्जोवराणि सक्यातभाग तुत्वाते तेज्यो पाहारज्जोव सक्यातगुणा लभेपि य यमाह्वरीजी
यममयवी यमाभेय पाहारकह्वार १४ यो क्यो । एणमिर्न भते भाययण यमासगाश्च कयरे २ हितो यप्यावा ४ । हेममयम् जीवाने भायवाने वलो
यमायवाने विषी २ यो पावा यवी देव मन्त्र विविद मारको रत्नादि । मायमा सवत्वावाजीव भायमा यमासवा यवतगुणा दार १५ । य गोयमा सर्व

यन्मनुष्याः मापारम्परपरिचयिकायिकामा सिद्ध्योगस्तगुणानां स्वस्वात्मपर्याप्तत्वेन सत्यमानत्वात् 'संज्ञा' पयासा' सङ्केतगुणा' इव सर्वव्याप्यो जीवा' मूल्याः मूल्याः सन्नाय सयकान्त मपर्याप्त-यः पर्याप्ताः सङ्केतगुणा इति । सस्यगुणावस्था गत पर्याप्तद्वार १७ । समिति मूल्याद्वार-एवमित्यु प्रत । जीवाय सुहृदाय मित्यादि ७ स्वस्वोक्ता जीवा मोमन्ना मायादराः सिद्धादित्यथ तयो मूल्याजीवराशौ वादरजीवराशौ या मन्नागकस्यत्वात् तस्यो यादरा छान्तगुणा यादरमितोदजीवाना सिद्धयो मन्तगुणायात् तस्यः मूल्या असस्यगुणा यादरमितोदस्य मूल्यामितोदाना मसस्यगुणा ल्यात् नत मूल्याद्वार १८ । इदानीं मपिद्वारं-मपर्याप्तं प्रते । जीवाय सजीव मित्यादि ७ स्वस्वोक्ताः संज्ञिनः समनस्कानामव सञ्चित्वात् तस्यो नामसिद्धिर्नो मोऽवसिद्धिर्नो जनन्तगुणा जननप्रतिपेक्षताः चि सिद्धा स्तेच सञ्चित्यो जनन्तगुणा एवति तस्यो ऽपि नो जनन्तगुणा यन्तस्वतीमा सिद्धे

द्युणतगुणा पञ्जसगा सखेज्जगुणा । एएसिग जते । सुजमाण यादराण नोसुजमाण नोयादराणय कयरे २
हिता व्यप्याया २ ? गोयमा । सख्योवा जीवा नोसुजमाण नोयादरा, यादरा द्युणतगुणा सुजमाण व्यसखे
ज्जगुणा, दार १८ । एएसिग जते । जीवाण सन्तीण व्यसन्तीण नोसन्तीण नोव्यसन्तीणय कयरे कयरे
हिंती व्यप्याया २ ? गोयमा । सख्योवा सन्ती नोसन्ती नोव्यसन्ती द्युणतगुणा, व्यसन्ती द्युणतगुणा ।

तगुणां पर्याप्ता इति पर्याप्ताद्वार संपूव दश, द्वि सस्याद्वार १८ मा कह्ये—एवमित्यु मते मङ्गमाय वादराय मा सङ्गमाय वादरायव कयरे २ द्विती
पस्याया ४ । मस्यमङ्ग एव मूल्याद्वारेण कयमप्रतिपेक्षतीं सिद्धिर्नो विहा २ जी वाकाय कयर् इत्यादि । गोयमा यन्नायावा मा सुद्धमा मा वादरा वा
दरा पदतगुणा सुद्धमा पयमिज्जगुणा दार । इमोतय सववाकाजीव कयप्रतिपत्तीं सिद्धमा जेमको मन्नाबादर जीवराजिने पमगतमेभागो सिद्धये ते
दयो वानर पमगतगुण निगादिया तेदयो मूल्यादिमाव पयस्यातगुणाको इति ३ पद मूल्याद्वार १८ मा कथा द्वि यमोद्वार कह्ये—एवमित्यु मते को
वाय सजीव पदकोय मो कयायय मा पयसीयव कयरे २ विता पस्याया ४ । मस्यमङ्ग एव मूल्याद्वारेण कयमप्रतिपेक्षतीं सिद्धिर्नो विहा

तथा योऽहं प्रपन्नोऽहं सत्त्वोऽहं पुण्यसापयोगपरिहया भीषपरिहया अनन्तगुणा भीषसापरिहया अनन्तगुणा इति । ततो ज्ञायति जीवास्तिकायाए
पुद्गलास्तिकायो द्रव्यः यतया अनन्तगुणः, तस्यादप्य ह्यसमयो ब्रह्मयतया अनन्तगुणः कथं मितिषत् तन्मते-इदं कस्यैवपरमाहो रमागतेकाले तत्तदि
प्रदेशत्रिमदगकयाय ह्यप्रदेशक सत्यात्मप्रदेशकाऽसत्यात्मप्रदेशकस्थानाःपरिचामितया अनन्ता प्राविनः सयोगः, पुण्य २ कालाः
कथयवहोपलभ्या यथा चैकस्य परमावा साया सर्वेया प्रत्येकं द्विप्रदेशकादिरुक्त्यानां च अनन्ताः सयोगः, पुण्य २ कालावपसत्र्याः, स
सर्वेयामपि अनुप्यशक्तवर्तितया परिचामसत्र्यात्, तथा सत्रतो व्यय परमाहु रसुप्तिन् भाकासुप्रदेश समुप्तिन्कास स्रवपात्रिप्यते इत्यत्र मन
ताः एकस्य परमाहो प्राविनः सयोगः यद्ये कस्य परमाहो साया सर्वेया परमाहूना तथा द्विप्रदेशकादीनामपि रुक्त्यानां मनन्तप्रदेशकस्यपयेता
नां प्रत्येकं तत्तदकप्रदेशाद्यवगाहनेदती जित २ काला अनन्ता प्राविनः सयोगः साया कालतो व्यय परमाहु रसुप्तिन्का काद्याप्रदेशो एकसमयस्य

कयरे कयरोहितो अप्यावा ४ गीयमा ! धम्मस्यिकाए अप्यमस्यिकाए एएसिण दीयि तुत्ता पदेसठयाए स
सुत्ताया जीयस्यिकाए पदेसठयाए अप्यतगुणा पोगालस्यिकाए पदेसठयाए अप्यतगुणा अप्यासमए पदेसठ

मपरिचता मपरिचता अनन्तगुणावी सहापरिहया अनन्तगुणा इति एक परमाहु अनन्तावासको तिवत्तु पच इस सत्यात अनन्त प्रवेशस्य
परमाहुनते अनन्ताभावा सवामवेवसि ए दोठा इहा सर्वं मनुष्यस्य पुद्गल च अनन्तप्रदेशीकस्य असत भावोसत्राव पच अनन्तकाल सयोग इम इत्यादि
सदमे जाविना द्रव्यस्यो पच नहुत्त कदा, द्विमे प्रदेयको पच नहुत्त कदेणे । एवसिर्च भते भव्यस्यिकाय स्रवपात्रिकाय सायासतिक्काय जीवस्यिकाय
पचस्यिकाय सहासमत्राव पुद्गल परस्रयाए कयरे २ जित्ता सयोगा ४ । वेमयवन् एव धर्मास्तिकाय स्रवपात्रिकाय सायासतिक्काय जीवस्यिकाय
परसास्तिकाय सहासमय प्रदेयामे बिहो २ जीवावा सत्रा इत्यादि । गायमा भव्यस्यिकाय स्रवपात्रिकाय एएव स्रववित्तमा । ज्योतम धर्मास्तिका
य स्रवपात्रिकाय ए साय सहावाणे । पद्गलयाए सहावाया जीवस्यिकाए पद्गलयाए अनन्तगुण पुण्यस्यिकाए पद्गलयाए स्रवतगुणे सहासमए प

प्रवर्तित्वद्वारं २० । सांप्रत मस्तिष्कायद्वारं भाष्ट-एएसिधं ज्ञते । पन्मास्तिष्कायो ऽपमास्तिष्काय आकाशास्तिष्काय एते च
 योपि इत्याद्यतया द्रव्यमवा योद्रव्याय सास्त्रभायो द्रव्याचोता तथा द्रव्यरूपतया इत्यर्थः, तुस्या समानाः प्रत्येक मकसङ्गकत्वा दत्तएव सर्वेस्ती
 का सम्या जीवास्तिष्कायो द्रव्यायतया मन्तगुणः जीवानां प्रत्येक तद्द्रव्यत्वात्तया च जीवास्तिष्काय ऽनन्तात्वात् तस्मादपि पुद्गलास्तिष्कायो द्रव्या
 यतया मन्तगुणः कथं पितृवत् उच्यते-इह परमाणु द्विप्रदशाकादीनि पृथक् २ द्रव्याणि तानि च सामान्यतः खिन्ना तद्यथा-प्रयोगपरिणतानि
 निक्षपरिवर्तानि विग्रहापरिवर्तानि च तत्र प्रयागपरिवर्तान्यापि तावज्जीवन्त्या ऽनन्तगुणानि एकैकस्य जीवस्या ज्ञते प्रत्येक ज्ञानावरणीयादिकर्म
 तु पुद्गलाकारे राक्षसित्वात् किंपुनः यथाकिं ततः प्रयोगपरिवर्तनस्य मन्तगुणानि तस्या पि विग्रहापरिवर्तनस्य मन्तगुणानि,

तित्काय जीवतित्काय पुग्गलितित्काय अष्टासमयाण दक्षठयाए कयरे कयरोहितो अष्टावाः ? गोयमा ।
 धम्मतित्काए अष्टममत्तित्काए अगासत्तित्काए एए तित्तिवि तुत्ता दक्षठयाए सव्वत्थोवा जीवतित्काए दक्ष
 ठयाए अणवगुण, पुग्गलितित्काए दक्षठयाए अणतगुणे अष्टासमए दक्षठयाए अणतगुणे । एएसिण ज्ञते !
 धम्मतित्काय अष्टममत्तित्काय अगासत्तित्काय जीवतित्काए पुग्गलितित्काए अष्टासमयाण पदेसठयाए

माधम्मज्झिमाए अष्टमत्तित्काए अगासत्तित्काए एए तित्तिवि तुत्ता दक्षठयाए । ज्ञेभोतम धर्मास्तिष्काय अधर्मास्तिष्काय च इत्यादिभा
 वे दक्षठयाए २ ३ सरोपणे पम्मात्तवर्णीमाटे । सव्वत्थावा ज्ञानतित्काए दक्षठयाए अणतगुणी पुग्गलितित्काए दक्षठयाए अणतमए अष्टासमए दक्षठ
 याए अणतमए । सव्वत्थावा जीवतित्काय अष्टममत्तित्काय अगासत्तित्काय जीवतित्कायो पुद्गलास्तिष्काय द्रव्यावरणी तस्माटे पदसठया २
 भेः ३३३ पदानपरिवर्तित मियपरिवर्तित विग्रहापरिवर्तित ३ तित्ता च प्रयोगपरिवर्तित ते ज्ञानयो अणतगुणानि ज्ञिमाते ऽनन्तायेने अणत ज्ञानावरणा
 दिह चरन् एव पावेटितत्वे त प्रयागपरिवर्तनस्यो मियए अणतगुणी तेद्वको विग्रहा आरब्ध अणतगुणी सव्वत्थ- प्रयोगे सव्वत्थावा पुद्गल प्रया

मायूनां च द्विप्रदेगकादीनां रङ्गमाना प्रत्येकं श्रव्यशेषकालमात्राविशेषपर्यवशात् वनलाभाविभो ह्यायमया साया अतीता अपीति सिद्धः पुद्गला
 स्तिकायाद् अन्तगुणो दास्यमयो ब्रह्म्यायतयेति । उक्त-द्रव्यायतया परस्पर मध्यमबुद्ध निदाना मत्पामय प्रदशायतया तदाह-एवमिह प्रत । य
 म्मत्तिकाय त्वादि ॥ यमोस्तिक्काया उपमोस्तिक्काय एतौ द्वावपि परस्पर प्रदशायतया तुस्या बुजयोरपि लोकाकाशाप्रदशत्वात् द्वायास्तिक्काया
 उद्भासमयापराया च सुयस्ताको ततो जीवास्तिक्काय प्रदशायतया अन्तगुण जीवास्तिक्काय अन्तगुण एकोक्तस्य जीवस्य लोकाका
 शाप्रदशपरिमाणप्रदेशत्वात् तस्मादपि पुद्गलास्तिक्काय प्रदशायतया अन्तगुणः अथ भिति उच्यते-इहकमस्कन्धप्रदेशा अपि तावत्स्वकीयप्रदशान्या
 उन्तगुणा एकोक्तस्य जीवप्रदेशस्या नन्तामर्त्तिः कमपरिमाणुजि रावक्षितपरिमाणुत्वात् किंपुनः सुकलपुद्गलास्तिक्कायप्रदेशाः ततो भवति को
 यास्तिक्काया त्वुद्गलास्तिक्कायः प्रदशायतया अन्तगुण तस्मादप्य सुचमयः प्रदशायतया अन्तगुण एकोक्तस्य पुद्गलास्तिक्कायप्रदेशस्य प्रागुक्तकमस
 ततद्व्यवशालनावविशेष सक्षयमावतो उनन्ताभा मतीतादुपसमयाना अन्ताभा मन्तगुण तस्मादाकाशास्तिक्कायप्रदेशायातया

सठयाए कयरे कयरेहिती छप्पावाः १ गायमा ! सवृत्त्योत्रे एगे अथम्मत्तिकाए वसठयाए सीचेव पदे
 सठयाए अस्सिज्जागुण । एतस्सण जते ! आगासत्तिकायस्स वसठपदसठयाए कयरे कयरेहिती अूप्यावाः ४

द्रव्यायतयना य यो जायता विहा १ को चाका यो रत्नादि । गायमा सप्तत्वावा भक्तात्तकाए उगाहयाए साचन पएसडवाए पसउल्लगुवा । वधो
 त्तम सुवक्का धर्मास्तिक्काय द्रव्यको एकमाटे त धर्मास्तिक्काय प्रवृत्तको पसप्यातगुर्ना साकाकाम । एवञ्च भते पथमत्तिकावत्स दशवृत्तपससुपा
 कयरे २ हिता चापावा ४ । इममन् एवमे सधर्मास्तिक्काय द्रव्यको प्रदेगको कियो १ को अन्त पकां रत्नादि । मायमा सप्तत्वावा एगे पथमत्तिकाए
 दशवृत्ताए साचनपसडवाए यमविक्षमन् । तेमोतम मवक्का एक पथमोस्तिक्काय द्रव्यको एकमाटे यदमोस्तिक्काय प्रदयको पसप्यातगुर्ना साकाका
 य प्रदेगममन् एगे । एवमिह भते आगासत्तिकायसु दशवृत्त पएसडवाए कयरे २ हिता चापावा । इममन् एव धर्मास्तिक्काय द्रव्यको प्रदयको कि

या चर्चतपस्यसिधायंषा दधुहयाय परिमाकुपीगला दधुहयाय अनतगुहा सयेज्जपसिया सधा दधुहयाय संसेज्जगुहा असंसेज्जपसिया संधा दधुहयाय असंसेज्जगुहा इति ततो यदा सर्वं यद्य पुद्गलास्तिकायाः प्रवेशार्थतया चित्यते तदा अमतप्रवक्ष्यानां स्कन्धासा मतिस्तोक्त्या त्परमा कुना ता तिचतुत्वा लेपाय पृथक् २ द्रव्यत्वात् अथस्यप्रवेशाना य स्कन्धासा परमाख्यपक्षया असंख्यगुह्या दसस्वेयगुण एवो पपद्यत मा र्चतगुहः यद्वासमय न पुब्बिक्कहति । अद्वासमयो द्रव्यायप्रवक्ष्यायतया नपुक्षते कृत इत्याह-प्रवक्ष्याभावात्, याह को य मद्वासमयानां द्रव्याय तानिपमो यायता प्रवक्ष्यायता च तपो विद्यते यद्य तथाहि-यथा अमताना परमाणूना समुदायस्कन्धो जस्यते स च द्रव्य तदवयवा य प्रवक्ष्या सद्य इति सकलः कालो द्रव्य तदवयवाय समयाः प्रवक्ष्या इति । तदयत्न दृष्टान्तदाष्टानिबन्धेपम्या त्परमाकुना समुदाय तदा स्कन्धो जवति यदा त परस्परसापक्षतया परिबन्धते परस्परनिरपक्षात् केवलपरमाकुनामिद्य स्कन्धत्वायोगात् अद्वासमयास्तु परस्परनिरपक्षाय वक्तमान समवनाये पृथापरसमवयो रजावात् ततो नस्कन्धत्वपरिणाम स्तवजावा स ना द्वासमयाः प्रवक्ष्याः किन्तु पृथक्द्रव्यास्तेवेति सम्प्रत्यक्षीयां यमो र्चिज्ञायादीनां सर्वेषा युगपद्द्रव्यायप्रवक्ष्यार्थतया स्पष्टस्य नाह एयसिध जत । इत्यादि ॥ यमोर्चिज्ञायायो ऽपमोर्चिज्ञायाय आकाशास्तिज्ञाय-

हिंती स्प्याया १ ? गीयमा । सध्वत्योवा पगुल्यिकाए वध्वठयाए सोचिय पदेसठयाए अस्सखिज्जगुणा अस्स
आसमए ण पुच्छिज्जाइ पदेसान्नावा । एएसिण जते । धम्मत्थिकाय अग्गासत्थिकाय जीव

[illegible]

पगलगतः च सोऽस्य सयतोऽप्यनन्तानायासं गतं प्रदेष्टावतया प्रत्ययपुत्राय मिदानीं प्रयेकं द्रव्याद्यप्रदेष्टावतया स्पष्टतया माह-एषोऽसि जने ! इत्यादि च स यस्तोऽपमास्ति कायो द्रव्याद्यतया एकत्वात् प्रदेष्टावतया असंख्येयगुणो साक्षात्काशप्रवशपरिभाषाप्रज्ञात्मकत्वा देव मधमोऽस्ति कायस्य प्रमदि जाग्रतीयं चाकाशास्ति कायो द्रव्याद्यतया सवस्तासक एकत्वात् प्रदेष्टावतया समतगुणो उपरिमितत्वात् जीवास्ति कायो द्रव्याद्यतया सयस्तोऽस्य प्रदेष्टावतया समस्यपुण्यं प्रतिग्रीव लोकाकाशप्रदेष्टावतात् तथा सवस्तोऽस्य पुद्गलास्ति कायो द्रव्याद्यतया द्रव्याका सवयापि स्तोमत्वात् स एव पुद्गलास्ति काय एतद्रव्यापवणा प्रदेष्टावतया चित्तमानो असंख्यपुण्यं मनु यद्वै खलु जगत्समसदृशका अपि स्वस्या विद्यन्ते । ततो ऽमसतगुणः कस्मा जगदपि तदपुण्य-यस्तुतत्वापरिष्ठाणा दिव हि स्वस्या समतप्रदेशकाः स्वस्या परिभाषादयस्त्वतियद्वै सद्यः वक्ष्यति यत्र सवृत्त्या

१ गीयमा ! सवृत्त्योवे एगे ह्यागासत्तिकाए दवृत्तयाए सोचैव पदेसठयाए ह्युणतगुणा , एतस्सण जने !
जीयत्तिकायस्स दवृत्तपदेसठयाए कयरे कयरोहिती ह्युप्पाया ४ ? गीयमा ! सवृत्त्योवे जीवत्तिकाए दवृ
ठयाए सोचैव पदेसठयाए ह्यसत्तिकायगुणा , एतस्सण जने ! पुग्गलत्तिकायस्स दवृत्तपदेसठयाए कयरे २

हा २ को बाह्य वचो इत्यादि । भावमा सम्यग्भावे एगे यागासत्तिकाए दवृत्तयाए सोचैव पदेसठयाए सवृत्तयुवे । ज्योतस सर्वथाहा यागासत्तिका
य इत्यवचनाटे यागासत्तिकाय प्रदेयवो जगतगणे पदरमितमाटे । एवसिच भते जीवत्तिकायसु दवृत्तयाए पदेसठयाए कयरे २ विंतावप्पाया ४ ।
पेयववन् ००० जीवत्तिकाय इत्यवो प्रदेयवो विहा २ को बोकाहवे । भावमा सम्यग्भावे जीवत्तिकाए दवृत्तयाए सोचैव पदेसठयाए सवृत्तियुवे ।
ज्योतस मधमाहा जीवत्तिकाय इत्यवो ते जीवत्तिकाय प्रदेयवो जगत्तगणे प्रतिकोव त यागाकाश प्रदेयगमाय प्रदेयववे । एवसिच भते पुग्गल
त्तिकायस्य दवृत्त पदेसठयाए कयरे २ विंता वप्पाया ४ । हेमगवन् ००० पद्गलास्ति काय इत्यवो पदेयवो विहा २ को बोका वचो इत्यादि । भावमा स
वृत्त्यावे पदवत्तिकाए दवृत्तयाए सोचैव पदेसठयाए सवृत्तियुवे पद्गलाय पदेसठयाए । ज्योतस सवयोवाहा पुद्गलास्ति काय इत्यवो

माए एयसिचं नते । जीयाव वरिमाव मित्यादि ४ । ११ यपो वरिमोपलाः सुसधी योग्यतयापि ते परमा उच्यन्ते-तेषां प्राद्व्या इतर उपरमा
 अनव्याः सिद्धा य उपपयामपि वरमाचरमनवाप्तायात् तत्र सुवस्तोका अचरमा अनव्यानां सिद्धानां च समुदितानाम व्यजपभ्योत्कृष्टमुक्तानतद्व
 परित्यागत्यात् तेभ्यो जनतगुणा परमा अत्रपस्यात्कृष्टानतामत्तकपरिमावत्यात्, गर्तं वरमद्वार, मधुमाजीकद्वार माह-एयसिचं नत । जीयाव
 योग्यताव मित्यादि ४ सुवस्तोका जीवा स्तस्यः यद्वत्ता अनतगुणाः २ तेभ्यो ऽनुसमया अनतगुणा अत्रमावमा प्रागेवकृता इ तस्यो ऽनुसमय
 स्यः सुयद्व्याचिद्विद्ययापिजानि कय मितिचेत् उच्यते-११ यपो अनतरमनुसमयाः पुद्गलस्यो ऽननगुणा उक्ता इतेप्रत्येकं द्रव्याणि ततो द्रव्यानि
 तायां तपिपरिपुष्टत तपुव मध्ये सुवेगीवत्रव्याचि सुवेपुद्गलद्रव्याचि यमोचमाकाशास्ति कायद्रव्याचि च प्रक्षिप्यत तानिच समुदितामप्य द्वाचम
 याना मर्मतन्नागकस्यानी ति तेषु प्रक्षिपेयानि ममानपिचित्त जात मित्यद्व्याचि विद्ययापिकाति ४ । तस्यः सुवप्रदक्षा अनतगुणा का
 कागानंतत्यात् ५ तस्य सयपयवा अनतगुणा एकीकस्मिन्नाकाक्षप्रदक्षा ऽनतामा मनुकसपुपर्यायाका तावात् ई गत जीवद्वार मधुमादेवद्वारमाह-

अथमस्त्यिकाएय एरण दीयावितुत्वा पदेसठयाए अस्सखेज्जागुणा, जीयास्त्यिकाए दवठयाए अणतगुण सो
 चंय पदेसठयाए अस्सखिज्जागुणे पोग्गलत्थिकाए दवठयाए अणतगुण सोचंय पएसठयाए अस्सखेज्जागुणे

द्विने वरमद्वार कइये-एउमिचं भते जीवाचं वरमाच पचरमाचय कयरे २ जिता पयावा ४ । हेमववन् एह वरमभव जेइने ते वरम ते भव्यकइये
 पचरम ते चमव्य ते मिहने कइये किरी २ जी ताका २ पुने । गावमा सवत्तावा जीवा पचरमाचरमा पचतगवा दार । जेगोतम पच खाडा सिद्धवे
 पने जएयाःकइ यज्जात परमाचवे वरमभव अनतगुणा जसव्याःकइ यज्जात प्रमाचवतो इति वरम तोचरे पदे २२ मो दार पूरो पुवा । द्विने
 जीवद्वार कइये-एयसिच भते जीवाचं पयकाचं । ४ भगवन् एह जीवारा पइयाने । यवाचमसाचं सवद्व्याच सवत्तपपुसाच । यवाचमयवे मवपर्याय
 ने सवद्रवने सवमदेयानि । सवपव्यवपचय कयरे २ जिता पयावा ४ । कइरी २ यो पस पचा इत्यादि । गावमा सवत्तावा जीवा पुमसा पचंतगवा ।

एत गयोपि द्रव्याप्यतया तुस्याः सवस्तोकाय प्रत्यकमेकसुल्याकत्वात् ३ । तेज्यो यमोस्तिक्कायो ऽप्यमास्तिक्काय एतो हावपि प्रदेशार्थतया ऽव
न्युवो स्यात्पानु परपरं तुल्यो ताप्यो जीवारितक्कायो ब्रव्याप्यतया अनतनुव अनताना जीवद्रव्याणा जायात् ६ समव जीवारितक्कायः प्रदेशा
प्यतया असत्यप्यनुकः प्रतिजीयमव्येयाना प्रदेशाना प्रायात् ७ । तस्मादपि प्रदेशाप्यतया जीवास्तिक्काया ह्युद्गारास्तिक्कायो द्रव्यार्थतया अनतनु
वः प्रतिजीयप्रदक्षं पामावरणीयादिकमपुद्गसकन्याना मप्य नताना प्रायात् ८ । स एव पुद्गलास्तिक्कायः प्रदेशाप्यतया असंख्यप्यनुकः अत्र प्रायना
प्रागिव ९ । तस्मादपि प्रदेशाप्यतया पुद्गमास्तिक्कायात् अट्टासुमयो द्रव्याप्यतया अनतनुव अत्रापि नावना प्रागिव १० । तस्मादप्या काद्यास्तिक्काय
प्रदगाप्यतया अनतनुवः सवास्थपि दिशुविविशु तस्यात्तप्रायात् अट्टासमयस्य य मनुप्यचेन्नमात्रतायात् ११, गत सस्तिक्काय, निदानो वरमहार

त्यिक्काय पौगलत्तिकाय अरु।समयाण दव्वठयाए पवेसठयाए कयरे कयरोहितो अप्पयात्रा ४ ? गोयमा ।
धम्मत्थिकाए शुधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए एण त्तिन्निवि तुह्वा, दव्वठयाए सव्वत्थीया धम्मत्थिकाए

तिभाव च ममसाधं दम्भुवाए पण्डुवाए अहरे र हित्ता आपावा ४ । वमगवन् एह पधमस्तिभाव पधमस्तिभावने औवास्ति
 काहन पुहनास्तिभावने पडावमवने द्रव्यप्रदगुणो किन्ना २ यो काकाहरे । मावना वण्णस्तिभाव पधमस्तिभाव एए तिक्कवितुवा दग ६
 याग मात्ताये पवमदुयाए वण्णस्तिभाव पधमस्तिभाव पण्डुवाए पण्डुवाए पण्डुवाए पण्डुवाए पण्डुवाए पण्डुवाए पण्डुवाए पण्डुवाए पण्डुवाए
 य पावायास्तिभाव ७ २ ते द्रव्यको मरीण्णं ते मववावाके प्रत्ये २ वमप्याताहं द्रव्यको खरीखा पुवे प्रदेयवो सववावाहं धमस्तिभाव पधमस्तिभाव
 बाय ७ हाय मरीण्णामानव द्रव्यो वमप्यातागके प्रदय पधिवाहं तेह औवास्तिभावपदुयवो वमप्यातागवो द्रव्यप्रदेयहं तेमाटे पदस्तिभाव द्रव्य
 यो पमगवन्ना ते पदनास्तिभावप्रदेयवो वमप्यातागवो । पडावमए विगवण्डुपण्डुवाए पण्डुवाए पण्डुवाए पण्डुवाए पण्डुवाए पण्डुवाए पण्डुवाए पण्डुवाए
 पडावमए द्रव्यप्रदयवो वमप्यातागवो पावायास्तिभाव प्रदयवको वमप्यातागवो वरीदियि विदियेने पण्डुवाहं इति २१ मा पण्डुवाहं २ पदे पण्डुवाहं

माद एवसिधं जते । जीवाद्यं वरिमाण मित्यादि ७ ॥ येषां वरिमोक्षः संज्ञको योग्यतयापि ते वरमा सध्यन्ते-तेषां योद्गव्या इतरे उपरमा
 व्रजव्याः सिद्धा य उन्नययामपि वरमाचरमन्नवाजावात्, तत्र सद्यस्तोका अचरमा अन्नव्यानां सिद्धानां च समुदितानाम् पञ्चपम्योरुहृष्टयुज्जानसव
 परिमायत्वात् सप्त्यो उन्नतगुणा दूरमा अन्नपम्यारुहृष्टानतामन्नकपरिमायत्वात्, गत वरमद्वार, मनुनाजीवद्वार माह-एवसिधं जते । जीवाण्य
 योगसाध मित्यादि ८ सद्यस्तोका जीवा स्तस्यः यद्वला अन्नतगुणा २ सप्त्यो उन्नतगुणा अन्नतगुणा अन्नतगुणा अन्नतगुणा अन्नतगुणा अन्नतगुणा
 स्यः सद्यद्व्याविविन्नपाचिकानि कथं मितिचेत् सध्यते-इह येना अन्नतरमद्वारसमयाः पुद्गलस्यो उन्नतगुणा उन्ना स्तेप्रत्येक द्रव्याणि ततो द्रव्यवि
 तायां तविपरिप्लुत तपुच मध्ये सर्वबीजद्रव्याणि सबपुद्गलद्रव्याणि चर्मचमाकाद्यास्तिकायद्रव्याणि च प्रक्षिप्यत सानिच समुदितानामप्य द्वासम
 याना मनेतानागच्छामासी ति तेषु प्रक्षिप्येयपि ममागच्छित्वं ज्ञात मित्यद्वासमयस्य सबद्रव्याणि विक्षोपाधिकानि ४ । तेन्यः सबप्रदक्षा अन्नतगुणा आ
 काशमनेतत्वात् ५ तस्य सबपयवा अन्नतगुणा एकैकस्मिन्नाकाशप्रदक्षो उन्नताना मनुसप्तपूर्यायाका ज्ञावात् ६ गत जीवद्वार मनुनाजीवद्वारमाह-

अधम्मल्लिकाएय एणुण दीणिवितुहा पदेसठयाए अस्सखेज्जागुणा, जीवल्लिकाए दव्वठयाए अणतगुण सो
 चंथ पदेसठयाए अस्सखिज्जागुणे पोग्गल्लिकाए दव्वठयाए अणतगुण सोचंथ पएसठयाए अस्सखेज्जागुणे

इति वरमद्वार अर्थे-एवमिदं धाते जीवाचं वरमाचं अचरमाचनं अचरे २ इतिता चण्याबा ४ । हेममवन् एह वरममन्नं जेद्वने ते वरम ते मय्यन्नइदिये
 पचरम ते चमव ते विद्वन् अइदिये विद्वन् २ सो तावा २ इवे । गायमा सवत्ताया जीवा पचरमाचरमा पचतयचा दार । हेमोतस सब वाडा सिद्धे
 यमे अणगुणा २ अन्नत परमाचणे वरममव्य अन्नतगुणा अन्नतगुणा यत्तामन्न प्रमाचयतो इति वरम तोसरे पदे २२ सो दार पुरी इवा । इदिये
 जीवद्वार अर्थे-एवसिधं मते जीवाचं पयत्ताचं । ४ भगवन् एह जीवारा पदसामे । अन्नतगुणाचं सवद्व्याच सवद्व्याच सवद्व्याच सवद्व्याच सवद्व्याच
 मे सद्यद्व्ये सवद्व्याचि । सवपम्यवाचनं अचरे २ इतिता चण्याबा ४ । कदा २ सो पल्य दवा इत्यादि । गायमा सवत्ताया जीवा पुलसा अन्नतगुणा ।

यम यथोपि द्रव्याप्यतया तुल्याः सुवस्तोकाय प्रत्यकमेकस्यैवाकस्यात् ३ । तेभ्यो यमोस्तिक्कायो ऽयमोस्तिक्काय एतौ द्वावपि प्रदेशार्थतया ऽय
 म्यगुबो म्पुष्पान्तु परस्परं तुल्यौ ताभ्यां बीयास्तिक्कायो द्रव्याप्यतया अनतनुष अनताना बीवद्रव्याणां प्रावात् ६ सम्य बीवास्तिक्कायः प्रदेशा
 यतया यमस्ययगुगु प्रतिबीवमस्ययानां प्रदेशानां प्रावात् ७ । तस्मादपि प्रदेशाप्यतया बीवास्तिक्काया म्पुद्गलास्तिक्कायो द्रव्याप्यतया यमसगु
 दाः प्रतिबीवमदृशं प्रानादरबीयादिकमपुद्गलसंख्यानां मय्य मतानां प्रावात् ८ । स एव पुद्गलास्तिक्कायः प्रदेशाप्यतया अर्धस्ययगुषः अत्र प्राधमा
 प्रादिब ९ । तस्मादपि प्रदेशाप्यतया पुद्गलास्तिक्कायान् अद्वैतमया द्रव्याप्यतया अनतनुष अत्रापि प्रावना प्रागिव १० । तस्मादप्या काश्चास्तिक्काय
 प्रदेशाप्यतया अनंतमुषः सुवास्यपि दिशुविदिशु तस्यापप्रावात् अद्वैतमयस्य च मनुष्यसंज्ञमात्रप्रावात् ११ । यत मस्तिक्काय, निदानो चरमद्वार

त्यि काय पोग्गलत्थिकाय अद्दासमयाण दच्चठयाए पठेसठयाए कयरे कयरेहितो अण्णया १४ ? गोयसा !
घम्मत्थिकाए अथम्मत्थिकाए अगासत्थिकाएय एण्ण त्तिन्निवि सुद्धा, दच्चठयाए सच्चत्थोया धम्मत्थिकाए

[illegible]

कायप्रतरं तद्गुणोक्तप्रतरं एतेषु द्वे व्युत्पन्नोक्तित्युक्तौ कथं त्रियते तथा उणादिप्रबन्धपरिज्ञाया प्रसिद्धेः तत्प्रयत्नमानाधीनाः सुवस्तोकाः
 कथामिति चत् इत्येव उक्तलाका त्रियगुणोक्त त्रियगुलाका वृद्धलाक समुत्पद्यमाना विवक्षित प्रतरद्वयं स्पृष्टंति य च तत्रत्या एव कथनं त
 प्रतरद्वयपाप्मासिनो वसते तत्काल विवक्षित प्रतरद्वय वसते, नाप्य यपुन कर्तुं नोका वृद्धोक्त समुत्पद्यमाना स्तम्भप्रतरद्वयं स्पृष्टंति त भव्ययंत,
 तेन सूत्रांतरवियप्यत्यान् तत लोकाद्या उचितप्रतरद्वयवर्तिनो जीया नमू वृद्धोक्तगताभासपि सर्वधीवानाम उच्येयज्ञागो उनवरत त्रियमा
 को उवाच्यते त च त्रियगुलोक्त समुत्पद्यमाना विवक्षितं प्रतरद्वयं स्पृष्टती इति प्रथम उचितप्रतरद्वयस्य ज्ञानः स्तोका स्तम्भस्तं वस्तुतत्वापरि
 ज्ञानात् तथाहि-यद्यपि नामकगुणोक्तगताभां सर्वधीवलोकानाम उच्येयोज्ञानो नवरतं त्रियमाकोवाच्यते तथापि न ते सर्वे एव त्रियगुलोक्ते सु
 मुत्पद्यत प्रमूततराका मधोक्तोक्तं उक्तोक्तं समुत्पद्यान् ततो उचितप्रतरद्वयवर्तिनः सुवस्तोका एव १ तेष्वो उवासाकतियगुलोक्त विवक्षयापि
 का इह यद् उपोक्तोक्तस्योपरितन नकमाद्विज्ञा नाकासुपदेक्षप्रतरं यद् त्रियगुलोक्तस्य सर्वोक्तनममाद्विज्ञा माकाशप्रदक्षप्रतरं नेतत्तद्वयं तम उ
 पोक्तोक्तत्रियगुलोक्त इत्युच्यते, तथा प्रबन्धप्रसिद्धः तत्र ये विवक्ष्यगत्या तथैवगत्या तथैवगत्या धा वसते तद्विज्ञेयवर्तिकाः कथं निति चत् इत्युच्यते-इह ये एतयो

सहपञ्चत्राणय कयरे कयरोहिती व्युत्पन्नायाः १ गीयमा । सहस्रयोवा जीवा पोगला व्युत्पन्नगुणा व्युत्पन्नास
 मया व्युत्पन्नगुणा सहस्रद्वया विसर्गाहिया सहस्रपदेसा व्युत्पन्नगुणा सहस्रपञ्चवा व्युत्पन्नगुणा दार २३ । खित्ता

प्रतर तद्वया उक्तलाके तद्भीजतलाप्रद्वयमाप्रतर एककाप्रद्वयनो ते वेत् प्रतरना नामकगुलाक त्रियगुला कयरे प्रतरने परमेने कोव साठाहै बिम
 त्रियगुलाक उक्तलाके उपजती प्रतरने कयरे उक्तलाक तथा यथाशाक उपजनतजिगर्गयोनको तेसाटगाडा इह सामाग्रे चरद राजनाके विपभेदे त
 बिम उक्तलाके यथाशाके त्रियगुलाक यत्रचको भागनेपयामे इति कयरे मयसेयाजन यत्किञ्चपरि मयसेयाजन तयकनाक कयरे यथाशाक त्रियगु
 लाक यपरि उक्तलाककीरकगुलासातराजप्रमाय कयलाक कीरक यद्विदसातराजप्रमाय प्रधीनाक मध्यपठारेवोअत्राजया त्रियगुलाक त्रियगु

नेताद्वयाप्य मग्नोपा औका बहुतोयतिरियलोप इत्यादि ॥ द्वेत्रस्यानुपगतो मुखारक्षेत्रानुपात इतेन विचित्र्यभावा बोयाः सयस्तोका ऊक्षुलोकाति
यिगन्वाके इ ऊक्षुनाकस्य यद्वचस्तन माकाद्यप्रदणप्रतर य ए सयतिर्यग्लोकस्य सर्वापरितनमाकाद्यप्रदणप्रतर भेपऊक्षुलोकप्रतर स्तथा प्रवचन
प्रविदः तत्रे न यत्र प्रायमा इइसाभरयेन यतुदशरवात्सबीसलोकः सय त्रिषा त्रिषाते तद्यथा-ऊक्षुलोकःतियग्लोकोऽपोलोका य सचका एतेपा
यिनान राया हि रुचइसा यस्ता यययोभमणतानि सचकस्योपरिष्टा तययोभनयतानि तियग्लोकास्तिमग्लोकस्यापस्तादपोलोका अपरिष्टा दृष्टे
लोका दद्योनमरजप्रमाळ ऊक्षुलोकः समपिचकसरज्जुप्रमाखो ऽपोलोको मध्यदृष्टयोभमयतोच्छय स्तिमग्लोका रतत्र सचकसमा द्रुतसनागा
यययानमनातानि यस्या य उज्यातियजस्योपरिष्टा तियग्लोकासयचि यकप्रदशिका माकागप्रतर त तियग्लोकाप्रतर तस्य भो परियदकप्रदशिकमा

अद्यासमए दध्ठपदेसठयाए अणतगुणे अणतगुणे आगासलिकाए पदेसठयाए अणतगुणा दार २१ । एएत्तिणं जते । जीवाण चरिमाण अचरिमाणय कयरे कयरो हतो अप्पाना ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा जीवा अचरिमा च रिमा अणतगुणा दार २२ । एएत्तिणि जते ! जीवाण पोगलाण अद्यासमयाण सव्वदद्धाण सव्वपाएसाण

हेमोतम मम यासः जीवै तेहको पहस पनतगुवा रही भावना पावलो परे तेहको सबासमक पनतगवा सवं पुवसद्रव्य चर्मास्त्रिकायादिक घासे ते
हको सब द्रव्य विमयादिक नही । अवाप्तमया पर्यतगवा सबासद्वया बिसेसादिया सबापरा सबापलतगवा सबापलतगुवा ॥३॥ । तेहको सब
द्रव्यविमयमवा साबाय सकाकादि पनतवतो तेहको सबपर्याय पनतगवा एवेकसाकागमदेश पनतागव अक्षर्यायगवा बिमयेके एतके कोत्रदार वज्रो
रति २१ मा बार तोले पदे ममात हुआ । बिदे सबाबार कहै—किताबवायके सबासावा जोडा कछसायतिरियाए पबाप्याय विमैदियावा तिरि
यमार पपतिमाए पयपिअगवा कछकोए पमं पडाकाए बिमैसादियावालिताबवाएव । पायोभोती जे खोव मरहीत खेव समदघातखेतकी मे
प्रतरनबानध्य एव खेवकीकवायो नीकाउपजने रही नसेवा सबाबोडाभोव लहकोबतियकवाके ज पाकारेसबाजम तिरकलबाकतेहको खेतमापदेयान

काश्यामतरे तद्ब्रूनीकमतरे यत्तप द्वे व्याप्नुवन्तीति त्रिगुल्लोककति ध्यावन्ति यत्ते तथा उमादिप्रबंधनपरिनाथा प्रसिद्धेः तद्वयत्तमानाकीवाः सुयस्त्रोकाः कथमिति चत् सध्यते-इदं कदापि त्रिगुल्लोक त्रिगुल्लोका वृद्धाक समुत्पद्यमाना विवक्षित प्रतरद्वय स्पृक्षन्ति य च तत्रस्था एव कथन स रमतरेषां प्यादिभिो वगत तत्किल विवक्षिते प्रतरद्वय वर्तते, माव्य यपुन रुद्धोका प्योसोको समुत्पद्यमाना स्तत्प्रतरद्वय स्पृक्षन्ति स भगवत्यंत, तेन मूर्धोतरविषयत्वात् तस्य स्तोकाश्च अपि कतप्रतरद्वयवर्तितो बोधा नन् इलोकागतानामपि सर्व्वीवानाम अस्येयज्ञाणो उमवरत विषयमा वी उवाच्यते च त्रिगुल्लोक समुत्पद्यमाना विवक्षित प्रतरद्वय स्पृक्षन्ती इति कथम अपि कतप्रतरद्वयरपश्चिनः स्त्रोका स्तत्पुन कस्तुतत्वापरि प्राणात् तथाहि-यद्यपि नासकदुल्लोकगतानां सब्रोजल्लोकानाम अस्येयीज्ञाणो नवरत त्रयमाबोवाप्यते तथापि न ते सर्व्वय त्रिगुल्लोके स मुत्पद्यंत प्रजुतवराका मपोसोको अल्लोका समुत्पादात् ततो अपि कतप्रतरद्वयवर्तितः सबस्त्रोका एव १ तस्यो उपासाकतिगुल्लोक विद्यायावि का इह यद् अपोसोकास्सोपरितन सकमादिकं भावांसुप्रवैक्यमतर् यद्य त्रिगुल्लोकस्य सर्वाचस्तनमेकमादिकं भावांसुप्रवैक्यमतरे भेतत्तद्वय मय उ पोसोकातिगुल्लोक इत्युच्यते तथा मवचनमसिद्धिः तत्र ये विषयकगत्या तद्व्यस्तया धा वर्तते तद्विषयाचिकाः कथ मिति चत् सध्यते-इह ये व्यप्यो

सहपञ्चाणय कयरे कयरोहिंती छप्पायाः ? गीयमा । सहस्योवा जीवा पोग्गला छणतगुणा स्य्छास मया छणतगुणा सद्दद्धा विससाहिया सहपदेसा छणतगुणा सहपज्जाया छणतगुणा दार २३ । खित्ता

[illegible]

नेतापुत्राण्य मृगन्तोषा श्रीवा उच्छ्लोयतिरित्यलोप इत्यादि ॥ क्षेत्रस्यानुपपत्ति नुसारहेतुानुपात स्तन विनित्यमामा लीयाः सर्वस्तोका ऊक्षुभोक्तं
 यिगन्माके इह ऊक्षुभोक्तस्य पदपरतम माकाशप्रदक्षप्रतर पण सयतिर्यग्लोकस्य सर्वोपरितनमाकाशप्रदक्षप्रतर मेपऊक्षुलोकप्रतर स्तथा प्रवचने
 प्रविष्टः तत्रे य मय प्राधना इहसामरयेन चतुश्चरउवात्सलोलोकाः सच त्रिषा प्रिद्यते तद्यथा-ऊक्षुभोकातिर्यग्लोकोऽपोलोका य उचका चतेपा
 विज्ञान रतया हि रुचकस्या परता यधयोगमश्रुतानि सुचक्षस्योपरिष्टा अवयोजनश्रुतानि तियग्लोकास्तिमग्लोकास्यापस्तावधोलोक उपरिष्टा दृष्ट
 मोका दद्योमवसरज्जुममाव ऊक्षुलोकः समन्विकसमरज्जुप्रमाको ऽपोलोका मय्यष्टादशायोजनश्रुतोच्छ्रप स्तिमग्लोका स्तत्र रुचकसमा द्रुतलजाणा
 यधमाजनश्रुतानि गत्या य उन्मातिपञ्चस्योपारतम तियग्लोकास्यचि मृकप्रदक्षिक माकाशप्रतर त तियग्लोकाप्रतर तस्य चो परियदक्षप्रदक्षिकमा

छद्वासमण् वृद्धपदेसठयाए छणतगुणए पदेसठयाए छणतगुणा दार २१ । एएसिण जते !
 जीवाण चरिमाण अचरिमाणय कयरे कयरेहिहो अप्पाना ४ ? गोयमा ! सव्वत्थीया जीवा अचरिमा च
 रिमा अणतगुणा दार २२ । एएसिण जते ! जीवाण पोगळाण अद्वासमयाण सव्वद्वणाण सव्वपएसाण

हेमोतम मर वाहा लोभहे तेहवो पडस पततगुणा इहा मावना पाहवो परे तहवो चहासमर पततगुणा सर्वं पुबसद्रस्य धर्मास्तिवायादिक् वाहे ते
 हयको मर दृश्य विमयाचिक्क कहो ! चहासमया पर्वमका सव्वद्वन्धा विसेवादिवा सव्वपएसा पततगुणा सव्वपज्जवा पर्वतगुणा वाह । तेहयको सुव
 दृश्यविमयमवा पाकाय पकोकादि पततवतो तेहवो सव्वपयाय समतमवा एकैकथाकागपदेण पततागव मवपर्यायगव, विगियेवै पतथे कोयदार कयो
 रति ११ मा दार तोवे पदे ममात हुवा । हिंवे सव्वहार कहवो—स्मिताकवाएव सव्वथाया लोवा कडठकायतिरियाए च्छाम्माक् विसेविद्यावा तिरि
 दन्ना पवतिजाए समन्विज्जगुणा कडठकाए पर्स च्छाम्माण विसेवादिवावास्तिताणवाएव । चान्योभोता जे कोय मरवा न चेष समतथातसेतका ने
 पतरमवमम एव केवलीकपायो लोवाहपजरे इहा मत्तेया सर्वबोकाभोव लज्जोक्तितियक्काके च पाकारेखेवाजम तियक्काकेतेहवो जितकामदेयान

दृश्यदृश्यःप्रतिबन्धमय मूढलोकैःपपोलोकैः सृष्टंते येसु तिययलोकवर्तितम् सृष्टमनिगोदा सृष्टंते तेऽर्थादऽप्योलोके सृष्टलोकं वा पञ्चितस्त्रिय या तियगुमोऽसमुत्पद्यते ततो नतलोकत्रयस्यपश्चिन्न इति माऽपि कृतसूत्रार्थवयाः तत्राहुलोकान्नोलोकगताना मूलमनिगोदानामसु द्रष्टव्यमानां मध्य कश्चिरस्यस्याम एवकुरुलोकं अपोलोकंवा समुत्पद्यते क्वचित् तियलोकं तज्योऽसक्ययगुणा अपोलोकगता सृष्टुलोकं कुरुलोकं ता अपोलोकं समुत्पद्यत तत्र तद्योत्पद्यमाना खोमऽपिलोकान् स्पृष्ट्वाहीत्यऽसक्ययगुणाः कथं पुन रेतदवधीयत य द्रुत एवप्रमाणा यद्बोत्रीनाः सदाविगृह्यतापद्या सन्त्यत इति नत् सध्यत-युक्तिवशात् तथार्थे प्रागुक्तमिदमऽत्रैकसूत्रपर्यासिद्धारं । सङ्ख्योवात्रीधानोपपञ्जना नोऽप्यजहा अपञ्जना अनतमुखा पञ्जना सङ्ख्यगुणा इति न तस्यैवनामाऽप्ययासा यद्बो य नीतस्य पर्यासः सङ्ख्यगुणा एव माऽसक्ययगुणा माऽप्यजनतगुणा सङ्ख्योपपञ्जार्थवोऽतरयतीवतमानासर्ज्यत इति ४ । तज्य कुरुलोकं कुरुलोकान्नोलोकंवा अपक्ययगुणा अपपातकत्रस्यासिद्धिदुस्वात् असक्ययानाश्च नागानामुद्भूतनापाद्य सनयान् तज्योऽप्योलोकं अपोलोकवर्तिनो विद्येयापिका कुरुलोककत्रा दपोलीककत्रस्य विद्येयापिकत्वात्, तद्वच सामान्य

नेरडया तलुक्के अहोळोगतिरियलोगे अस्खेज्ज० अहोळोए अस्खेज्जगुणा । खेप्ताणुवाएण सच्चत्योया तिरिरुज्जोणिया उहुळोयतिरियलोए अहोळोगतिरियलोए विसंसाहिया तिरियलोए अस्खेज्जगुणा, ते

[illegible]

मात्रा त्रियगुणादे त्रियगुलोकाद्वा ऽथोलीके इतिहासतया समुत्पद्यमाना अपि कृत प्रतरद्वय स्पृशति येष तत्रस्यागम्य फेचन तत्प्रतरद्वयम ऽप्या
माना पतत न विविधतत्प्रतरद्वयवर्तितो यपुग रपालोका दृढनोक समुत्पद्यमाना सात्प्रतरद्वय स्पृशति ते न परिगृह्यंत तथा सूत्रात्तरविपयत्वा
त् कथन मूर्धनोका दपोलीको विज्ञयापि क इत्यथोलीका त्रियगुलाद इतिहासतया समुत्पद्यमाना छद्मलीकापक्षया विज्ञेयापि क्वा भवाम्यते तता
विज्ञयापि क्वा २ । तस्य त्रियगुलोकादयतिनो ऽवश्ययगुणा छक्कप्रष्टिका त्रियगुलोका कृत्रस्यासहयगुणस्यात् ३ । तस्य खोलाक्ये धिलोकसह
त्रिना ऽमसयगुणा इदं य फलतद्वद्लोक यपालोक त्रियगुलाक वा वसत यचविगृह्यतया छद्मलोकतिर्यगुलीको स्पृशति ते नमवयत किंतु य
विगृह्यतयापया खात्रपितोकात् स्पृशति ते परिगृह्यामन्त्रस्यविशयविषयस्यात् तेषत्रियगुलाकयतिन्यो ऽवश्ययगुणाएव कथ मितिषत् सध्यते

गुत्राण सध्वयोया जीया उहुलीयतिरियलीए अहोलीय त्रियलीए त्रिसंसाहिया त्रिरियलीए अस्सस्वि
ज्जगुणा तंतुक्को अस्सखेज्जगुणा उहुलीए अस्सखेज्जगुणा अहोलीए त्रिसंसाहिया , खताणुत्राएण सध्वयोत्रा

नविद्व क्क भूतदपरि नभमेयावमन्त्राये तिहा ज्वातिपचक्क अपरितिवकलाकसद्विणकप्रदयोपाकाग्रप्रतर त्रिसंसाहियाप्रतर अपरिजे एकद्वयनो
पाकाग्रप्रतर उहुलाक त्रियकलाक कद्विजे उहुलाक त्रियकलाके विमयाधिक तिहा के विपद्गतिवनेके ते विमयाधिकविमजे पक्षासाक त्रियकलाक
सध्वयोत्राप्रतरके उहुलाक उपज्जतीनयकोये तेमाटे विमयाधिककद्विजे तेवको त्रियकलाक ३ पसव्यातमुत्रामाटे पसव्यातगुणाकेषफरेते ते भस
ज्वातगवा क विपद्मतिवदसाक विमयाधिककद्विजे तेमनिविसे निगाहोया सयाजवाभकोतेइयको उहुलाकना पसव्यातगुणा उपपातमेववथासाटे
तद्वको पक्षाभाके विमयाधिकके यचविमयाधिकयथासाटे सामान्यपच सवकोवथायीकेषपच पन्नावहुलपचकक्षा । सध्वयावानेरइयातिज्ञोके पक्षाको
यतिरियलाए पस पक्षाभाए पसविपज्जगुणा । विवेपारमतिपायीनरकना पन्नावहुलकद्विजे येषथायीसवकोकाभारको पिक्काकनाअग्रभाविमजे मेव
वमग्नोपात्रामन्त्रनरकमोविअयमना पिक्काकतेज्जगवाकाके तेइयको पक्षासीक त्रियकलाकसार्धना पक्षव्यातगुणा के यथापोपसमुरने त्रियकलाको

इत्यहमिति मम मूलोकेष्वप्योसोकेषु मूलमभिगोदा उद्धतेते येसु तियमसोवर्षित्तः सुस्मनिगोदा उद्धतेते तैऽर्थादपोलोके कहुलोके वा कचित्सिध्य वा तियमूलोक्तममुप्युते ततो नतलोक्तत्रयस्यपश्चिम इति माऽपि छतसूयायपयाः तत्रासुलोकापोलोक्तगतानां सुस्मनिगोदाभासु द्रप्तमामानां मप्य कविरस्यस्यान यवकुटुम्बके अपोसोकाया समुत्पद्यते, कोचि तियमूलोक्त तन्प्यो ऽवस्ययगुणा अपोलोक्तगता उद्धुनोले कहुलोकाया ता अपोलोक्त समुत्पद्यते, तत्र तपोत्पद्यमाना र्योमऽपिलोकां स्पृशतीत्यऽवस्येयगुणाः कथ पुन रेतदवसीयत यदुत यवमसाया यस्वोत्रीवाः मदादिपद्मनस्यायका सत्यत इति चत् उच्यत-युक्तिवशात्, तथाहि मागुक्तमि दमऽग्निवसूयपर्यासिद्धार । सधुत्तोवाबीधानोपपन्नता नोद्यप्यज्ज्ञा अपपन्नता कततगुणा वल्लता सखेज्जगुणा इति । सतएवनामाऽपयासा यद्वा यो यमैतस्य पर्यासा सखेयगुणा एव माऽवस्ययमूना माऽप्यऽनंतगुणा स्तत्राऽपर्वासायद्वावोऽतरमतीव लभानासप्यत इति ४ । तस्य कहुलोके कहुलोकावस्थिता अस्ययगुणा उपपाततत्रस्यातिथ्युत्वात् अस्यस्ययाभाव प्रागानामुद्धतनापाय सनवात् तन्प्यो ऽपोसोक्त अपोलोक्तवर्तितो विज्ञेयापिका कहुसोक्तकेषा वचोकोक्तकृत्रस्य विशेषोपायिकत्वात्, तदव यामास्य

नेरडया तंदुक्ते अहोलांगतिरियलोगे अ्यसस्येज्ज ० अहोलोए अ्यसस्येज्जगुणा । स्येज्ञाणुवाएण सधुत्तोया तिरिक्कजोणिया उहुलोयतिरियलोए अहोलांगतिरियलोए विसंसाहिया तिरियलोए अ्यसस्येज्जगुणा, ते

मभिरपवेनाके मतरनेस्ये एवक्यातगुणामाटे पथासाके एवक्यातयुवा । विताणुवाएव सख्खावा तिरिक्कजोविया । अच पाथीतिवैवजानिया मवकावाउवसाक तियक्काविमामान्यमोवमूने एसावेककाके तिमज्जाविवा । उहुसाय तिरियकाए पथासाए । तिवेज्जनाके विजोयाधिव । तिति पथाए विजे तिरियकाए एव तिसके एमं । तवमोतियक्काके एमव्यातगुणा तेवमोविवाके एवक्यातयवा । उहुत्काए एवसखिज्जगवा । उहुत्का के एमव्यातगुणाइवे । पथासाए विसमादिवा विताणुवाएव सख्खावीया तिरिक्कजोविपो । पथानाके विजयाधिकए सामाग्यमवोक्काविवा तियेवभा एवसखिज्जगवेके एमपात्रीवववावीतियेवयानिनोयो । उहुत्काए तिरियकाए एवसखिज्जगुणा । उहुत्कावसेममोमेरुपवत एमनमुदधिनीवा

माहा तियगुनाके तियगुनाकाटा ओयोसोके इतिकामत्या समत्पद्यामाना अपिकत प्रतरद्वय स्पृशति येन तत्रस्थायुष्य केचन सत्प्रतरद्वयम ज्या मोना पतत तविवर्धितप्रतरद्वयपत्तिना यपुन रथालोका दूदुनोक समुत्पद्यामाना स्तरप्रतरद्वय स्पृशति ते न परियुज्यत तथा सूत्रासरावपयस्ता त् कथम मूदनोका दयोसोको विद्यायाधिक इत्यथोसोका त्रियगुलोका दालकागत्या समुत्पद्यामाना ऊदुलोकापद्यया यिथोयाधिक्य कवाप्यते तता विप्रदापिका २ । तस्य त्रियगुनोक्त्यतिनो उचरययगुका उचरुग्रद्विका त्रियगुलाक कथस्यासुरययगुबल्यात् ३ । तेन्य खेत्तोक्ते त्रिलोकसंस्प दित्ता आययपगुका इद प कवतेकदुलोका अपाभोक त्रियगुलोका वा वसत यचविग्रहगत्या ऊदुलोकत्रियगुलाकी स्पृशति ते नगस्यत किंतु ये विग्रहगत्यापद्या त्वापित्तान् स्पृशति ते परियद्यामूनस्पविग्रहपविग्रहगत्यात् तेषतियगुलोक्त्यतिन्यो उचरयेयगुकाएव कप भित्तिवत उच्यत

गुनाएण सम्वत्थोवा जीवा उहुलोयतिरियलोए अहोलीय त्रिसंसाहिया तिरियलोए अस्सखि
जगुणा तंतुक्को अस्सखेज्जगुणा उहुलोए अस्सखेज्जगुणा अहोलीए त्रिसंसाहिया, खत्ताणुत्राएण सम्वत्थोवा

दविच सम भूतउपरि नभसेमाज्जकायें तिहा ज्वातिपचक उपरितियकाकसजधिरकमदयोसाकायप्रतर तियकबुद्धप्रतर उपरिले एकदंभो पाकायप्रतर जइमाक तियज्जाक कइये ऊइकाक तियकाकिये विग्रयाधिक तिहा के विग्रहयतिवत्ते ते विग्रयाधिककिले पधाकाक तियकाक पधाभाकप्रतरसे ऊइकाक उपज्जताभगकीये तेमाटे विग्रयाधिककइय तेवकी तियकाक २ यसक्यातयथामाटे यसक्यातगुबायेवदरसे ते यम त्यातयका च विग्रहमतिवकाक तियकाकप्रमे तज्जिबिये जिगाटोया उपज्जिबामकातेइकी ऊइकाकना यसक्यातगुबा उपपातसेवथथामाटे तइपरी पधानाके विग्रयाधिकके यन्नियोगाधिकपथामाटे सामावपे सन्नोवपायीसेवपे यन्नवपुलपकेइया । यन्नत्याबानेरियातिओके यन्नोका पतिरियभाए यम पधावाए वसपिण्णगुबा । विवेवारमतिथान्थोभरकना यन्नवपुलवदेके वेवपायीसवधोडानारकी निक्काकमाकगनाकिले मेव दमगोवावनामप्रतरकमीडिअपज्जनी विक्काकेतंयमंभाकाके तेवकी पधाभीक तियकाकअर्थना यसक्यातगुबा जे यन्थोपसमुद्रेने तिरियनारकी

इदमप्यप्रतिशमय मूढलोकेऽप्योसोकेष्व मूलमनिगोदा उद्धर्तते चेमु तियगलोक्वचित्तिग मूलमनिगोदा उद्धर्तते तेषोऽर्थादप्योसोके कद्रलोके वा
अचित्तस्मिद्वय ॥ तियग्लोक्मसुत्पद्यते ततो नतोलोकत्रयसरपक्षिण इति माऽपि ललसुखाकापोलोकगतानां मूलमनिगोदाभासु
द्रप्तनामानां मध्य कचिरस्यस्यान एवकद्रलोके अयोसाकया समुत्पद्यते, कोचि त्तियग्लोक तन्म्योऽसक्ययगुणा अयोसाकगता कद्रलोके कद्रलोकाग
ता अप्योसोके समुत्पद्यते, तच्च तद्योत्पद्यमाना खोनऽपि लोकाग स्पृक्षतीत्यऽसक्ययगुणाः कच पुन रेतदवधीयत य द्रुत एव प्रमाणा अष्टवोत्रीयाः
महाविद्युद्गत्यापया सन्यत इति चत् सक्यत-युक्तिवद्भात् तथाहि प्रागुक्तानि दमऽद्यैवसूयपर्यासिद्धार । सद्यत्योवाजीधानोपज्जता मोक्षपज्जता
अपज्जता अनतगुणा पज्जता सखेत्तगुणा इति ॥ ततएवनामाऽपयासा अष्टवो य मीतस्य पर्यासाः सक्येयगुणा एव नाऽसक्ययगुणा माऽप्यऽनतगुणा
सन्नाऽप्यर्थात्तथाहवोऽतरनतीवतमानाः सन्यते इति ४ । तस्य कद्रलोके कद्रलोकावास्त्यता असक्ययगुणा सपपातकत्रस्यातिधुत्वात् असक्ययानाच्च
प्रागानामुद्धृतभाषाय सुनवात् तन्म्योऽप्योसोक् अयोसोक्वचित्तो यिच्छेयाचिका कद्रलोकेषा दयोकोककृत्रस्य विधोयाचिकत्वात्, सद्य व सामान्य

नेरढया तलुक्को अहोलांगतिरियलोगे अस्सखेज्ज० अहोलीए अस्सखेज्जगुणा । खेप्पणुवाएण सव्वत्थोवा
तिरिरुज्जोणिया उहुलीयतिरियलोए अहोलांगतिरियलोए विससाहिवा तिरियलोए अस्सखेज्जगुणा, ते

[illegible]

भावा तियगुनाके तियगुनोकाद्वा उपोसोके बुलिकागत्या समुत्पद्यमाना अपिकृत प्रतरद्वय स्पृष्टाति येन तयस्यायव केचन सत्प्रतरद्वयम ज्या माना यत्न न तियवितप्रतरद्वयवर्तिना यपुन रपासोका दूदोके समुत्पद्यमाना स्तप्रतरद्वय स्पृष्टाति से न परियह्यत तथा सूत्रातरविषयपत्या न् कयम मूदोका उपोसोको विद्यापयिक इत्यधोक्षका तियगुसोका इतिहागत्या समुत्पद्यमाना कदलाभापयया विज्ञेयायिका अवाप्यत तथा विमयापिकाः २ । तस्य सियगुसोकावर्तिनो उपरयपण्या उक्तद्वष्टिका तियगुसोका इत्यस्यासययगुणत्वात् ३ । तेन्य खेलाको विलोकसंस्प दिना समुत्पद्यगुणा इव य जवसक्तुसोका अपासोका तियगुसोका वा वसत यवविषयगत्या कदलोकातिर्यगुनीको स्पृष्टाति ते मगवर्तत किनु य विषयगत्यापया लोमपिनोकान् स्पृष्टाति ते परियस्यासूत्रस्यविणयविषयत्वात् तेषतियगुलाकयतिष्यो उपरयेयगुणायव कय मितिषत् उच्यते

पुत्राणा ममृत्योवा जीवा उहुलोयतिरियलोए अहोलीय तिरियलोए त्रिसंसाहिया तिरियलोए अस्सस्वि
जगुणा तेलुक्को अस्सस्वेज्जगुणा उहुलोए अस्सस्वेज्जगुणा अहोलीए त्रिसंसाहिया, खत्ताणुयाएण सव्वत्थोवा

द्विक सम भूतउपरि नमसेसावन्नकाये तिडा ज्वातिपचक उपरितिवज्जसाकसवधियवमदगोपाकाशप्रतर तियकुलाकप्रतर उपरिजे पवटगभी
पाकायमनर उदनाक तियवजाक कडिये उदनाक तियकसाके विमयापिक तिडा जे विषयगतित्तत्ते जे विमयाधिकविमसे अधाकाक तियकसाक
पपासाकनतरवरचे उदनाक उपज्जतीजगकोये तेमाटे विमयाधिककडिय तेवको तिवकनाक ३ यमव्यातगुनामाटे पसेव्यातगुनायेपपरसे ते पस
व्याततवा य विषयगतित्तदनाक तियकसाकवरसे तमविधिये निमादोया अपजिवाभयोतेवको उदनाकना पसेव्यातगुना उपयातपचवकासाटे
तदवधो पधानाके विमयापिकके यवविमयाधिकपनामाटे मामाअपये सवकोवपायोचेवपये पकावकुलपकेव्या । यमव्यातगुनायेपयातिजे पकोको
वतिरियकार पय पदानाए पसेपिण्णगुवा । द्विपारगविपायोनरकना पण्णवकुलवहे जेनपायोसर्वधोकाजारको विक्काकनापगमाविमसे मेव
ममुपवाशारमामदवरवमविज्जपमनी विक्काकतेज्जगसाका जे तेवको पचानीक तिवकाकययता पसेव्यातगुना जे पवादीपसमुदने तिरियनारको

तरुपे स्पृशति ततो ज्यति पूर्वोक्त्यो ऽपस्वेयगुणाः देवस्वैयगुणाः देवस्वैयगुणाः देवस्वैयगुणाः देवस्वैयगुणाः देवस्वैयगुणाः
 तो त्रयस्वैयगुणा चमेत्य त्रिदशति नारकाद्या ऽपस्वैयगुणा ऽपस्वैयगुणा ऽपस्वैयगुणा ऽपस्वैयगुणा ऽपस्वैयगुणा
 व्यासप्रदेशद्वया द्रष्टव्या स्तदि नारकाद्यु प्रतिषेधद्वया नारका दृष्टव्या चपि ऽपस्वैयगुणा ऽपस्वैयगुणा ऽपस्वैयगुणा ऽपस्वैयगुणा
 के ऽपस्वेयगुणा सास्य तेषां अस्याभावात् उक्त नारकगति मधिकस्य सेत्राभुपातेना ऽप्यथपुल्य , निदानीं तियगुणति मधिकस्या प-सेत्राभुपा
 यः सवृत्तयोया तिरिक्त्वमोक्षिणा उक्तलोपतिरियसोय इत्यादि ॥ इदं सयमपि सामान्यतो जीवसूत्रमिव मायनीय । तदपि तिरयएव सूत्रमिनि
 दान ऽपि कृत्य प्राचिंत मपुना तियगुणेनिकलीविषय मऽप्यथपुल्यमा इ-यताभुपायः सवृत्तयोयां तिरिक्त्वमोक्षिणीं उक्तलोय इत्यादि । इ

लोए अस्वैयगुणा अहोलीयतिरियलोए सस्वैयगुणा अहोलीए सस्वैयगुणा तिरियलोए सस्वैयगुणा ।
 स्वेत्ताणुयाएण सवृत्तयोयां मणुस्सीं तेलुक्के उहुलोयतिरियलोए सस्वैयगुणां अहोलीयतिरियलोए सस्वै
 जगुणां उहुलोए सस्वैयगुणां अहोलीए सस्वैयगुणां तिरियलोए सस्वैयगुणां , स्वत्ताणुयाएण सवृत्तयोया

यदातमुना । यदाभावातिरियलोए यमपिस्वयना यदाभावा सवि० । जेमाटे वैमानिकदेवतामनुवर्मादि उपजेततरुमैपरसे यदाभावा तियलोके
 मयदातमुना भवमपति यादि मनुवर्मादि उपजेतके नारकीक सं गुणविद्याधरादि पुद्गलमादि सस्वैयममज्जपक्षे तेइको यदाभावाधेयवातगु
 ना यदाभावादि यदाभावादि मनुवर्मादि सस्वैयममज्जपक्षे कोकेयनामनुवर्मादि विवेकोकपक्षे । यिताभुपाए
 च सवृत्तयोया मज्जपक्षे तिरिक्तां उक्तलोपतिरियलोए सस्वैयगुणाया । यमनोमसेलोतां यदाभावामज्जपक्षे तेमाटे वैज्जिचमद्वयात भावलोच
 मट्टपातमनेनास्य स्वरयैतइको उक्तलोपतिरियलोए यमनोमसेलोतां मज्जपक्षे तेइको यदाभावातिरियलोए सस्वैयगुणापो
 उक्तलोपतिरियलोए यदाभावा सस्वैयगुणाया । तेइको यदाभावातिरियलोए यदाभावातिरियलोए यदाभावातिरियलोए यदाभावातिरियलोए

तो श्रीमान् देवानुपातेनाऽप्यबुध्यमुक्तः, मिदानीं बहुमतिर्दुर्लभमेव सर्वत्रिपिटस्तु प्रथमतो निरपिकाया माह-संज्ञासुधार्यं सर्वतोधा नैरव्या-
तमोक्त इति न ह्यनुपातम ज्ञेयानुसारेण निरपिका विन्यसाभाः सयसोका एतौसोप्य शोकाश्रयसस्पष्टिगः कथसाकश्यसस्पष्टिगो निरपिका कथया
तेष्वप्यसाका इतिचत् सध्यते-इह य मरुतिपरे अन्नदधिमुद्यपयतांश्चरदिषु वा वापीषु यत्तमानामस्यावयोमारकेषूपतिरसव शसिक्कागत्या प्रदेवा
न्निचिचिर्ति तन्निम मेसोऽप्यमपि स्पष्टांति मारकव्यपेक्षचक्षते तत्कासमवमरकेषूपत्यन्नारजायुफप्रतिसवदनात्, तयेत्यत्र ताकतिपयइति सयसो
काः यमेतु व्याचक्षते मारकाय्यपयोक्तवापीषु तियक्यर्षेन्द्रियतयो त्यद्यामाभाः समुद्रुपातवद्युतो विचिन्निजालमप्रदक्षदक्षाः परियुज्यते तादृक्चित्त त
दा मारका यव निविवातदगुफप्रतिसवदनात् त्रैलोक्यससस्पष्टिमप्य पयोक्तवापी यावदात्मप्रवेष्टादृक्तस्य विचिन्निजालादिति । तज्यो ऽप्योक्तोक्ति
येनोक्तयथा मानुषमरदृपस्य सस्पष्टिमाऽवस्थयगुहा, यतो यद्गोऽवस्थेयपु द्वीपसमुद्रपु पर्षेन्द्रियतिर्यग्पोक्तिकानरकेषूप त्यद्यमाना ययोक्तप्र

तुक्ते अ्यसरेजगुणा उहुलोए अ्यसखिज्ज० अ्यहोलोए त्रिसेसाहिया, खेत्ताणुधाएण सव्वत्थोया तिरिक्कजो
णिगिन्ति उहुलोए उहुलोयतिरियलोए अ्यसखेज्ज०, तेलुक्के अ्यसखेज्ज० अ्यहोलोयतिरिलोए सखिज्जगुणात्त
अ्यहोलोए सखेज्जगुणानु तिरियलोए सखिज्जगुणात्त खेत्ताणुधाएण सव्वत्थोया मणुस्सा तेलुक्के उहुलोयतिरिय

इयानोतिवयानिदामानादये चरपायासववावाकइये तेइवो कवकाकतियय्ज्जगुणा मणससइस्सारइस्सायाविकवो तिववतो
ओमादिइववत्तइवाविमाके यमयगतगुहा । तिक्कव समयिज्जगुहाया भवमयतिर्योत्तरवको उवकाकतियेइवपक्के । यदोहाय तिरियभाए मणुत्थित्त
गुहाया यदोहाइवविज्जगुहाया । तेइवो यधीकाकतियय्ज्जगुहा यमयगतगुहा यमामारकोमरवसमइवात तियेववोखोपवक्के । तिरियधाए मणिज्जगु
मवाचोवितापुडाववं तेमाडेतेइवो यधानोक्तसयपातगवीज्जमाटे यधानामक्कोइये समग्रमी मणसेवाजनमक्कोमी यपजे । मणत्यावा मणुवपातिव
के इइइवावतिरिवभाए यर्षेविज्जगुहा । सेवपायोसवभाटा मणुप्य यमाकपुए मेकियसमुत्तमाता मणववारपुए तेइवो कवकाकतियेक्काके यम

तरदये रुपयति ततो प्रयति प्रयोक्तव्यो ऽयस्येयगुणा देवस्यासंस्थानुसंस्थात् भद्राविद्येना वस्येयगुणीपसमुद्रात्मकं चैत्र मऽयस्येयगुणमित्य
 तो प्रयत्यऽयस्येयगुणा, सम्येत्य त्रिदशति भारकायया ऽयस्येयगु ढीपसमूहपु तियक्यचैद्विगतयोत्पद्यमाना भारकातिवसुमुद्रपातन विविगमनि
 आत्ममददशा द्रष्टव्या स्तदि नारकायु प्रतिचवेदना नारका वृत्तमाणा द्यपि ऽयस्येया प्राप्यते इति । प्रागुक्तस्यो ऽयस्येयगुणा स्तप्यो ऽधोतो
 के ऽयस्येयगुणा स्तस्य तथा स्वस्यानत्वात् उक्त नारकगति मविकस्य चोत्रामुपासेना ऽल्पयदुल्य, सिद्धानी तियग्यति मविकस्य द-सेनायुधा
 यव सव्योया तिरिक्तजोबिया वृत्तसोयतिरियसोय इत्यादि । इदं सयमाय सामान्यतो ढीवसूचमिव ज्ञायनीय । तदपि तिरययव सूक्ष्ममिगो
 रान ऽपिकस्य प्रापित मयुना तियग्योनिवृत्तीविषय मऽल्पयदुल्यमा इ-सतायुवाएव सव्योयाष्टी तिरिक्तजोविदीष्टं वृत्तसोय इत्यादि । इ

लोए अस्सखेज्जगुणा अहोलीयतिरियलीए सखिज्जगुणा अहोलीए सखेज्जगुणा तिरियलीए सखेज्जगुणा ।
 खेत्ताणुयाएण सव्वत्योयाहं मणुस्सीहं तेळुक्को उहुलोयतिरियलीए सखेज्जगुणाहं अहोलीयतिरियलीए सखे
 ज्जगुणाहं उहुलीए सखेज्जगुणाहं अहोलीए सखेज्ज० तिरियलीए सखेज्ज०, खेत्ताणुयाएण सव्वत्योवा

बदातगुह । यदाभायतिरियकोए यसपिक्कमुवा यदाहाए सखि । जेमाटे वेमानिक्कवेरतामनुवर्मादि उपयेंतप्रतरवमैपुरसे यदाहाव तियेक्कसोव
 संवदातगवा भवजदति यादि मनुयवावमादि उपयेंतवेक्क कोव । मुवविद्यावरादि पुदवमादि ससूचिंममजवउपयें तेव्वो यदाहाव संवदातम
 वा यथागमादि स्वभावितमनुवदवामटेनवो । तिरियकोए सखि० तिययुक्कावेमनुवसपुवाविक्के कोवेववामनुवसपुयें दिवेळोवडेक्के । यित्तानुयाए
 व सव्वसोपाया मजसपा तिक्कावे वृत्ततावतिरियहाए सखिक्कमुवाया । यवनीमसेवातां सव्वकोदीमपयववेवहावे तेमाटेवेत्तियसमदधात कवकोव
 मट्टयातवसेवताक्क करणेतव्वो उह कोक्कतिवक्कसाव वेमानिक्कवेरता मजवकोमावपयें तेव्वो सव्वदातयुवोवुवे । यदाहावतिरियलीए सखिक्कमुवोपो
 वृत्तसावसविमुवाया यदाहाए सखिक्कमुवाया । तेव्वो यदाहावतिवक्कसावे सव्वदातमुवो यदाहावप्रामादि तियेकोमरोने मनुयलीपवे उपयजतो

तो श्रीशान्ति देवगुणपातेना उपबन्धुत्यमुक्त, मिदानी बहुमतिर्दुर्लभमेव तद्विचिपित्तु प्रथमतो निरयिकाणा माण-खेतायुधायं सद्योधा निरङ्गया
 ततोऽहं इति ॥ इयानुपातत देवानुपादेव निरयिका खित्यमाणाः सद्यसोका खेताय सौख्यसंस्पन्निभिः कथसाकत्रयस्यपक्षिनी निरयिकाः कथवा
 तेप्रयकाका इति चत् सध्यते-इह य मवशिखरे संजगदपिमुद्ययतस्त्रिरादिपु धा धापीपु धतमानामस्याद्योभारकपूतपहसत्र इलिकागत्या प्रदेष्टा
 न् विविचिर्वति तच्चिन्मैतोक्त्वयपि इयति निरयिकायदेवाचमते तत्कालमयमरकेपूत्ययमारकायुक्तप्रतिसवदमात, तथेत्यनुताकतिपयइतिसयंस्त्रो
 काः, यन्मनु व्याचलते मारकायपयथात्वापीपु तियन्पचैन्नियतयो त्पद्यमाना समुद्रुपातवद्यतो विचिन्मिन्नात्मप्रदशदकाः परियन्मते ताश्चिल न
 इ मारका एव निविवातदायुक्तप्रतिसवदमात् प्रोक्तस्यस्यपक्षिभ्य ययोक्तवापी यावदात्मप्रदेष्टदस्य विचिन्मत्वादिति । तन्मो ओलोकोक्ति
 यन्माकस्य प्रागुक्तप्रतरदस्य सत्यक्षिनाऽसंख्येयुका यतो यद्गोऽसंख्येयपु हीपसमुद्रपु पचैन्नियतियग्योनिजानरकेपू त्पद्यमाना ययोक्तम

लुक्ते अमरेजगुणा उहुलीए अस्खिज्ज० अहोलीए चिसेसाहिमा, खेत्तानुवाएण सद्योधा तिरिक्कजी
 निभीनु उहुलीए उहुलीयतिरियलाए अस्खेज्ज०, तेलुक्ते अस्खेज्ज० अहोलीयतिरिलीए सखिज्जगुणान्
 अहोलीए सखेज्जगुणान् तिरियलीए सखिज्जगुणान् खेत्तानुवाएण सद्योधा मगुस्सा तेलुक्ते उहुलीयतिरिय

यदातीतिपयानिवाभाभापुवे चरपाग्यासर्वकाकादिमे तेदको उहवाकतियकनाकवर्तमान यस्सयात्तुणा चिन्मस्यस्सा रदेष्टाकादिकघो तितयको
 योमादिहपयतेहधविक्को पययगतगुको । निज्ज पययिअगुवापा भवपतिव्यतरकको खकनाकतिथेयपये । यरोकाय तिरियलाए प्रस्यिज्ज
 गुवापा यथानाहर्निज्जगुवापा । तेदको यथोवाकतियय्वाक सययगतगुणा यथानारकोमरचमदकात तिजेयकोसीयपये । तिरियलाए सखिज्जगु
 यवाचं निनापुयाचं तेमाटेतेदको यथोभासययगतगुनामाटे यथोग्यामसकोइने समुद्रमी नभजेयानमस्योमी यपये । यत्तत्ताना मयुक्कशक्ति
 के यदकायतिरियान् पयनिज्जगुवा । चरपाग्योचधधापा मनुय यत्तानुपातना कथवाऽपुवे तन्मो उहवाकतिथयत्तानाके यम

भरद्वयं रूपमिति ततो प्रयति पूर्वोक्त्योऽपेक्ष्येयगुणाः देवस्यासम्पत्तयानुसृत्यात् । भद्ररादिदेशा वसत्येयदीपसमुद्रात्मक देव सऽस्येयगुणमित्य
 तो प्रयत्यऽमस्येयगुणा समेत्य त्रिदपति भारकायया अस्येयपु द्वेषसमुद्रु तियक्ष्येयैर्द्वियतयोत्पद्यामाणा मारकातिकसमुद्रयातन विविदिति
 नात्मप्रद्वेष्टा द्रष्टव्या इति नारकाय प्रतियेयना नारका बहुलमाणा अपि अस्येयाः प्राप्यते इति । प्रागुक्त्योऽस्येयगुणा केष्योऽपीलो
 ने अस्येयगुणा कस्य तेषां कस्यानत्वात् उक्त नारकमिति भाष्यकस्य उद्यानुपातना अस्येयगुण्य, निदर्शनी तियमगति मधिकस्या ए-सेतापुवा
 दव समुचोया तिरिक्त्रुमोक्षिणा उक्तोयतिरिक्तोऽप्य इत्यादि ४ इदं स्वमपि सामान्यतो जीवसूत्रमिदं प्रापनीय । तदपि तिरिक्त्रेव सूत्रमिमे
 शान उचिकृत्य प्रापित मनुना तियमगोमिकलीविवय सऽस्येयगुणमा ए-सुतापुवाय एव सद्यतोपातं तिरिक्त्रुमोक्षिणीं उक्तलोऽप्य इत्यादि । ये

लोए अस्सखेज्जगुणा अहोलीयतिरियलीए सखिज्जगुणा अहोलीए सखेज्जगुणा तिरियलीए सखेज्जगुणा ।
 खेत्ताणुयाएण सख्योवातु मणस्सीनु तेतुक्को उहुलोयतिरियलीए सखेज्जगुणातु अहोलीयतिरियलीए सखे
 ज्जगुणातु उहुलीए सखेज्जगुणातु अहोलीए सखेज्ज० तिरियलीए सखेज्ज०, खेत्ताणुयाएण सख्योवा

वशातमुका । पञ्चाभासतिरियलीए सखिज्जगुणा पञ्चावीए सखि । केसाटे वेसानिबदेवतामनुवर्त्तति वयनेतेप्रतररररनेपुरसे यथावा विवेकलोके
 वययातगवा मयनयति यादि मनुष्यवाक्यादि वयनेनैव वाक्योक्त स गुणविद्याधरादि पदवर्त्तमादि समुच्चिममन्यवपने तेवही पञ्चावाक्येवयातग
 वा यधान्यामादि ध्वनावितमनुष्यवर्त्तमाटेनही । तिरियलीए सखि तिरिगुलाकेमनुष्यवर्त्तमादि लोकेष्वनामनुष्यसंगे विवेकोक्तये । विज्ञानाभास
 व सप्रदीयाया मयनयति तिरिक्त्रुमोक्षिणा उक्तोयतिरिक्त्रुमोक्षिणा । यत्रनोमोक्षिणातु वयतोहीमन्यवर्त्तमाते तमाटे विवेकसमवदात कवकोस
 मनुष्यातमवपनास्य करणेतवही उक्तोयतिरिक्त्रुमोक्षिणा वेसानिबदेवता मयनयतोमावपने तेवही सयशातगुणोद्वे । पञ्चावाक्यतिरियलीए सखिज्जगुणापो
 उक्तोयतिरिक्त्रुमोक्षिणाया पञ्चावाक्य सखिज्जगुणाया । तेवही यथावाक्यतिरिक्त्रुमोक्षिणा सयशातगुणो यथावाक्यमादि तिरिक्त्रुमोक्षिणा मनुष्यसोपने सयजतो

तो श्रीगामं देवानुपातेना उपबुध्यमुक्तं, मिदानी वस्तुगतिर्वक्तव्येति प्रथमतो निरूपकाया माह-स्वेताबुवायय सवृत्योधा निरवया
 तमाय इति ॥ इदानीमुपातम हेतुानुसारेण निरूपिका विस्वमायाः सवृत्योधा स्वीतोष्यो लोकप्रयस्यस्पर्शिनः कर्षसाकप्रयस्यस्पर्शिनो निरूपिकाः कथया
 तेनयजाया इति चत् सवृत्यो-इह ये मरुतिगरे अत्रमद्विमुद्यपयतस्त्रिपुराविषु वा पापीयु वतमानामरस्यादयोमारकपूत्यस्वव इति कागत्या प्रवेद्या
 न् विविचयति तन्मिदं त्रैलोक्यमपि स्पष्टाति नारकव्यपदेशाचसमते तत्कासमवतरकेपूत्यनारकायुष्मद्विसुवदनात्, तथेत्यनुतासतिपयेइतिसुवत्को
 काः, अन्यतु व्याचक्षते नारकावकपयोक्तवापीयु तितपक्षेर्द्विपतयो स्पष्टमायाः समुद्रुपातवशातो विविचमिजात्मप्रदेशादस्य विचिस्रस्त्यादिति । तस्यो ऽथोक्तोक्ति
 दा नारका एव निविवादतदायुक्तमिति सुवदनात् त्रैलोक्यसुसर्पात्मय यथोक्तवापी यावदात्मप्रदेशादस्य विचिस्रस्त्यादिति । तस्यो ऽथोक्तोक्ति
 पन्नाकसदा प्रागुक्तप्रतरदयस्य सस्पष्टिमोऽसत्ययुगा, यतो यद्बोऽवस्येपयु हीपसमुद्रपु पर्वद्विपतिर्वर्णयोनिनामरकेषु स्पष्टमाया यथोक्तप्र

लुक्ते अ्यसरेज्जगुणा उद्गुलोए अ्यसस्विज्ज० अ्यहोलोए यिसेसाहि्या, खेप्पणुवाएण सवृत्योवा निरिस्कजो
 णिणीनु उद्गुलोए उद्गुलोयतिरियलोए अ्यसस्विज्ज०, तेलुक्के अ्यसस्विज्ज० अ्यहोलोयतिरिलोए सखिज्जगुणानु
 अ्यहोलोए सखेज्जगुणानु तिरियलोए सखिज्जगुणानु खेप्पणुवाएण सवृत्योवा मगुस्सा तेलुक्के उद्गुलोयतिरिय

इदानीं निरवयानिदानानां द्वे चरपायासवकाकाकद्वये तेनही खरकाकतियज्जगुणवत्तमान असमवतगतवा निगमसज्जः रक्षसाकाटिकधो तियवमो
 कोमोदिववज्जतेइहादिमात्र समयगतगुणो । तिरिक्क समखिज्जगुणाया भवमपतिव्यंतरवकी खरकाकतिवैचयजे । अयोसाय तिरियवाए मसपिज्ज
 गुणाया चरानाकमंविज्जगुणाया । तेनको यधीसाकतियव्वाक सवयगतगुणा यवानारकोमरकमवयगत तियेवनीसीयवजे । तिरियवाए सखिज्जगु
 मवावापिमागुणानं तेमादेतेनको यधीजोवमयगतगुणायाते यधीगामकोद्वे मयद्रमां नवयोजनमन्वोमी कपजे । सवत्यावा मयद्रमातिज
 के इदानीयतिरियवाए चरपिज्जगुणा । येनपायोसवयादा मगुण वकाकद्वये वैकियज्जगुणानां करकाकाएणुदे तेनही कर्कसाकतिवज्जगुणाके यत

भोना द्रुपनपतिव्यतरमारका द्वेयकाया अपि बोद्धुलोकेऽपि तिर्यक्पक्षेद्विपत्तीस्वभोत्पद्यते ऊर्ध्वशाकादेयाद्यो प्यऽपचालोकेष ते गुमवद्वता मिज
 मित्रात्समदशद्वेष्टीमऽपि लोकात् स्पृशति प्रभूतायत तथा तियग्योनिजकस्यायु प्रतिर्वयदनात् तियग्योनिजकत्तिपद्य ततः सकययगुणाः ३ ।
 तास्यो ऽधोलाकतियग्लाक अपासाकतियग्लाकस्य प्रतरद्वय वतमाभाः सकययगुणा यद्बोहि नारकादयः समुद्रयातमतरयाऽपि तियग्लाके
 तत्येकपक्षेद्वपत्तीस्वभोत्पद्यते तियग्लोकावतिमद्य कोवा स्तिर्यग्यमिजकलीत्येना ऽधोलाकियामार्गऽपि च तत्र तथो त्वद्यमाभा यथास्तप्रत
 रद्वयं स्पृशति तिर्यग्यानिजकस्यायुःप्रतिषवदना च तियग्योनिजकत्तिपाऽपि तथा ऽपालीकियामापोजनसहस्रावगाहापर्येते ऽर्वाक् क्षविप्रदश
 नययोजनशावगाहापि तत्र कादितियग्योनिजकत्तिपा ऽवस्थामेनाऽप यथास्तप्रतरयाऽप्यासिम्भो वतते तता अवति पूर्वोक्तास्यः सकयेयगु
 णाः ४ । तास्यो ऽधोलाक सकययगुणा यताऽर्वालोकिव्यामाः सर्वेऽपि च समुद्रा योजनसहस्रावगाहा क्षतो मययोजनप्रातानामऽपस्तात् या
 वतत मरस्वीमृतिता तिर्यक्यानिजकत्तिप्य स्ता स्वस्यामत्तात् प्रभूता इति सकययगुणाः सेत्रस्य सकयेयगुणात्वात्, तास्य स्तिर्यग्लोका सकयय
 गुणाः, वत्तं तियग्यगतिमप्यचिरत्वा त्वयद्बुत्त्व मिदानी मनुष्यगतदिययमाह सेतायुवायकमिद्वत्यादि ॥ कत्राभुपातन मनुष्या दित्यमाना खंशाक्य
 येतोस्त्वर्षपक्षिण सयस्ताका यतो य ऊर्ध्वलोकाद ऽधोलीकियामपु समुत्पित्यवो भार्वातिकसमुद्रपातन समवद्वता अवति ते कश्चिश्चमुद्रपात
 वशा द्विनिर्गतेः स्वात्मप्रदशौ स्तीनऽपलोकात् स्पृशति यपि च वेक्तियसमुद्रपात माहारकसमुद्रपात वा यता तथाविधप्रयक्षविधाया दूरतर
 मूयुऽप्याविचिंसात्मप्रदक्षा यत्र कवलसमुद्रपातगता स्तापि श्रीमपिलोकान् स्पृशति स्तोकायति सयस्ताका स्तास्य ऊर्ध्वलोकातियग्लोका ऊर्ध्वलाक
 तियग्लाकसञ्चयेप्रतरद्वयसस्पृशिनो ऽवस्ययगुणा यत इदमेवानिजकत्तिपा यथासन्नवसुलोका तियग्लाक मनुष्यत्वन समुत्पद्यमाना

ऊगुगानं तिरियलीए सखिज्जागुगानं खप्ताणुग्राएण सध्वत्योत्रा जवणयासीदेया उह्वलीए उह्वलीयतिरियलीए

विमद्वोकेष्वे । पित्तानुशयापच सध्वलीवाभा दशाभा वट्टुत्ताए । चचपायीभाता सधयाकादना । ना ऊर्ध्व कान्धविषे एववद्वतानापरिभावन । वट्टुत्ताए

[illegible]

दया उहलोए उहलोयतिरियलोए असखेजगुणा तेलुक्के असखेजगुणा अहोलोए तिरियलोए असखेज०
 अहोएण सरिजगुणाउ तिरियलोए सखेजगुणाउ सखेजगुणाउ सखेजगुणाउ देवीउ उहलोय उहलोए
 तिरियलोए असखेजगुणाउ तेलुक्के सखेजगुणाउ अहोलीयतिरियलोए असखेजगुणाउ अहोलोए सखे

[illegible]

भोसा द्रव्यनपतिव्यवहारमात्रा द्योपकाया अपि चोद्ग्लोकोऽपि तिर्यक्पञ्चद्विपर्ययीत्येनोत्पद्यते ऋद्धिलोकाद्वेयादयो प्यऽप्यलोकैश्च ते समप्रवृत्ता निज
 निजात्मप्रदेशद्वये स्वीमऽपि सोपान् स्पृशति प्रपूतायत तथा तिर्यग्यानि कल्यायु प्रतिमुदयान् तत सूर्यययगुणाः ३ ।
 ताप्यो ऽप्योसाकतिर्यग्यलोका यथासोक्तितपसृलोकाश्च प्रतरद्वय वतमायाः सूर्ययगुणा यद्बोद्धि नारकादय समुद्रपाठमतरकाऽपि तिर्यग्लोको
 तार्यक्पञ्चद्विपर्ययीत्येनोत्पद्यते , तिर्यग्लोकावतिनय कोवा तिर्यग्योयोनिकलोत्वेना ऽप्योसाकित्यामधे ऽपि च तत्र तथो त्पद्यमाना यथास्तप्रप्र
 रद्वयं स्पृशति तिर्यग्यानि कल्यायुः प्रतिमुदयान् तिर्यग्योयोनिकलोत्वेना ऽप्योसाकित्यामधे ऽपि च तत्र तथो त्पद्यमाना यथास्तप्रप्र
 नवयोजनमात्रायाश्च तत्र कार्यतिर्यग्योयोनिकलोत्वेना ऽप्योसाकित्यामधे ऽपि च तत्र तथो त्पद्यमाना यथास्तप्रप्र
 काः ४ । तान्यो ऽप्योसाक सूर्ययगुणा यताऽर्धासोक्तिकप्रमायाः सर्वेऽपि च समुद्रा यान्नसहस्राब्जगद्वा सतो नवयोजनमात्रायाऽप्यलोकान् या
 यतत मरस्वीप्रवृत्तिः तिर्यक्यानि कल्यायु साः स्वस्यानत्वात् प्रपूता इति सूर्ययगुणाः सत्रस्य सूर्ययगुणात् ताप्य स्तिर्यग्लोका सूर्यय
 गुणाः सत् तिर्यग्नतिनप्यपि कल्यायु स्याः स्वस्यानत्वात् प्रपूता इति सूर्ययगुणाः सत्रस्य सूर्ययगुणात् ताप्य स्तिर्यग्लोका सूर्यय
 वेसोक्त्यसूर्ययगुणाः सूर्ययगुणा यतो य ऊद्ग्लोकाद् ऽप्योसाकित्यामधे समुत्पत्तिस्ततो मारकातिकसमुद्रपातन समवहता प्रवति त कश्चिरसमुद्रपात
 यता द्विद्विनिर्गतेः स्वात्मप्रदेशे स्वीमऽप्यलोकां स्पृशति यपि च वेकियसमुद्रपात माहारकसमुद्रपात वा गता तथाविधप्रयत्नविषया दूरतर
 मूर्द्धाऽप्योविचिन्तात्मप्रदेशा यत्र प्रवतसमुद्रपातगता सपि श्रीमपि शाब्दान् स्पृशति स्तोकाधिति सूर्ययगुणा सत्रस्य ऊद्ग्लोकातिर्यग्लोका ऊद्ग्लोका
 तिर्यग्लोकाकवन्ते प्रतरद्वयसूर्ययगुणा यत इवेमानिकद्वयाः प्रयकायाश्च यथासमवहसुद्ग्लोका तिर्यग्लोका मनुष्यत्वन समुत्पद्यमाना

ऊगुणान् तिरियलोए सखिऊगुणान् खंताणुआएण सख्त्योया नयणयासीदेया उहुओए उहुओयतिरियओए

दिवद॥ कहेवे । विताकुणाएव सरवलीराधा दयाया चउटुहाए । जणपायीत्राता सत्रयाकादनी । ना ऊह कासविणे एववदवदानोपेरेभावना । चउटुहाए

प्राप्नुयतेन तियगुस्वच्छिन्नो भवति विद्यापराकाशमपि च सदरादिप गमन तथा च ब्रह्मसधिरादिपुद्गले समूच्छिमममुप्यायामुत्पाद इति । ते विद्याप-
 यस्याऽऽस्पत्वास् सप्तसन्निधा अवगच्छति तथा समूच्छिममनुप्या अपि यद्योक्तप्रतरहस्यद्वयत उपजायत तथा तियपद्व इत्यस्ययगणा, स्तेज्यो
 रसुदस्त्रारदेयसोक्तो यद्योक्तोक्ततियगुलोकसुप्ते प्रतरहस्य सवययगुणा यतो ऽचोत्तौक्तिकधामेपु स्वप्नायतमव यदधोमनुप्या साताय तियगुलोक-
 ततो य सुदस्त्रारारयस्योक्ता ऽचोत्तौक्तिकधामेपु गज्युक्तातिष्ठमनुप्यात्म समूच्छिममनुप्यात्मनवा समुत्पिरस्यो यथा ऽचोत्ताकाद ऽधोत्तौक्तिकगामर-
 यगुपद्विपिखय मनुप्यस्य सापकायस्योक्ता तियगुलोक नज्युक्तातिष्ठमनुप्यात्मनवा समुत्पिरस्यो यथा ऽचोत्ताकाद ऽधोत्तौक्तिकगामर-
 योक्तप्रतरहस्य स्तराय ते तथा स्यात्प्रान्तोप कश्चिदचोत्तौक्तिकधामपु यद्योक्तप्रतरहस्यस्य इति प्रागुक्तेज्यो सवययगणा सप्त्य ऊदनीवेसके-
 यगणा धौमनवादिपु क्षीकाय वैत्स्यवननिमित्तवा प्रज्ञततराका विद्याधरधारणमुमीना प्रावात्, तथाच यथायोग सधिरादिपुद्गलयोगतः सम-
 च्छिममनुप्यसंनवात् तज्यो ऽचोत्तौक्ते सवययगुणा स्यात्प्रान्तवा तज्य तियगुलोक सवययगुणा इत्यस्यसवययगुणा रस्यस्यामत्वा-
 च संप्रति यत्रानुपातन मानुषीविषय मत्पयवुत्त माह-यहाङ्गायव मित्यादि ॥ यत्रानुपातन मानुषीयित्वमाणाः सवसोका यत्रोक्त्यप्यत्रिन्द-
 र्दसोका ऽचोत्ताका समुत्पिरस्यमां मारकातिकसमुप्यातव्यविनिगततूरतरात्मप्रदेशाना मऽयथा वैक्षिपसमुप्यातगतानां वैवदिसमदुपातगतामा-
 वा त्रैलोक्यसुखार्जान् तावाका तिस्रोक्तमिति । सवसोका साज्य ऊदनीवतियगुलोक ऊदनीवतियगुलोक प्रतरहस्ये सवययगुणा वैमानि-
 कदवाना अपकायाका यो ऊदनीका तियगुलोक मनुप्यल्लोको त्वद्यमानाना तथा तियगुलोकगतमनुप्यल्लोकां मू दलोक्तसमुत्पिरस्यमां मारकाति-

अथसखेजगुगानं तेलुक्ते सखिजगुणा अहोलीयतिरियलीए अथसखेजगुणा, तिरियलीए अथसखिजगुणा

तिरियलीए अथसखिजगुगानं तिलोक्तमखिजगुगाना । ऊदनीकातिककावे ययवकातगवो देवतानीपरितपदो वैवाक्येसवयगतगुणो । यद्योक्तोपति-
 यकाए सखिजगुगाना । यथासाक्षतियधुआनयगगतगुणो । यथासाक्षतियधुआनयगगतगुणो । यथासाक्षतियधुआनयगगतगुणो । यथासाक्षतियधुआनयगगतगुणो ।

कथमुद्घातयथा दुरतरमद्विदिशिमात्मप्रदेवानाम ऽद्याऽपि कासमधुर्वेतीनां यथोक्तप्रतरद्वयसंस्थां ज्ञायात् तासां चो ज्ञयापामऽपि यदुतरत्वात्
 ताभ्या ऽप्यंतीकृतियगुलोच प्रागुक्तस्यद्वयप्रतरद्वयस्य सत्ययगुणा स्तियगुलोका स्तमुप्यगुणा स्तियगुलोका स्तमुप्यगुणा स्तियगुलोका
 द्योतीकृतियगुलोका स्तियगुलोका स्तियगुलोका स्तियगुलोका स्तियगुलोका स्तियगुलोका स्तियगुलोका स्तियगुलोका स्तियगुलोका
 तासां च प्रागुक्तान्यो ऽतिवदुत्वात् ताभ्यो ऽप्युत्तुसोक्तसंख्ययगुणा ऋकाद्यै चैत्यवदनाभिनिर्ण वा सीमनसादियु प्रजुततराणां विद्यापरीक्षा सज
 वात्, ताभ्योऽपि यथासोक्तस्ययगुणा स्वस्थानत्वन तथापि दुरतराणा ज्ञायात् ताभ्य स्तियगुलोका स्वययगुणा ऋकाद्या सत्येयगुणात् स्वस्था
 नत्वा च गत नमुप्यगतिमचिकत्या स्वययुत्वा निदार्भा दवगतिमचिकत्या च-कृताकुवायव सवत्यावा कृताद्या इत्यादि ऽ कृतानुपातन चित्यमाना
 द्वाः स्वयगुलोका ऋदुसोक्त, ऋदुसोक्त वेमानिकानामव तपजावात् तथाचा ऽस्पत्वात् यपि अवतपतिप्रवतयो जिर्नेद्वन्ममहादौ मन्तरादिपु गच्छ
 तित तऽपि स्यात्वा एव तित स्वयगुलोका स्तिय ऋदुनाकृतियगुलोका स्वययगुणा स्वयगुलोका स्वयगुलोका स्वयगुलोका स्वयगुलोका स्वयगुलोका
 इति स्वस्थानं तथा अवतपतिव्यतरस्योतिषा मददादौ सीपमोदिकल्पनताः स्वस्थानममाणमेन तथा यसीपमोदियु दवत्वमोत्यस्वको द्वायुः प्र
 तिसंख्यपमाना एतोत्पत्तिदशमन्त्रिपच्छति यथोक्त प्रतरद्वयं स्पृशति तत सामस्येन यथोक्तप्रतरद्वयस्वरपक्षिनः परिभाष्यमाना अतिवद्व इतिपू
 र्वात्ताभ्यो ऽवस्ययगुणा साभ्य खेतोक्त्यसंख्यगुणाः ३ । ततो अवतपतिव्यतरस्योतिषवेमानिका दवा सापाविषप्रययविद्वेषप्रवृत्तौ
 वीक्ष्ययसमुद्घातन समवदता संत खीमपिसोक्तान् स्पृशति तेन त्वसमवदताः प्रागुक्तप्रतरद्वयस्वसिन्धः स्वययगुणाः अवतवेदसोपशम्यन्त इति

अहीलीए अस्सखेज्ज०, खेत्ताणयाएण सव्वत्थीया जयणवासिणीच्च देवीच्च उहुल्लोए तिरियळीए अस्सखि०,

भोगदिबदिवा । विवेदिग्रमममपतिना पत्यवद्वल्लवणे । तिरिक्काएसाख्यमवापा तिरिक्कावावेवंगमा पसययातगुणे । खित्ताज्जाएण मवत्तावा
 मवत्तावासीदरा ययवीजाती सब्बोयाकादममममवासी लल्लवावे कारुपवसंगति सोधमदेवथाके तथा तोमंकरेने वस्येमवपदंताये तेमटे वावा तेवयो

सध्येयगुणाः सन्त्यो ऽपोलोकतियग्लोके ऽपोलोकतियग्लोकेसुंष्टे प्रतरद्वये मत्तमानाः सध्येयगुणाः सन्ति प्रतरद्विभक्त प्रवमपतिव्यतरदेवाना प्रत्या
सञ्जतया स्वस्थान तथा बह्वाप्रवमपतयः स्वभावस्या स्तियग्लोकेयमायमेन तयो द्वर्तमाना स्तयावीक्ष्यसमुद्रुपातेनसमवहता स्तया तियग्लोके
यतिनेन स्तियग्लोकेद्वियममुप्या वा प्रवमपतित्वमो त्यद्यमाना प्रवमपत्याऽऽपुनरऽनुप्रवतो ययोक्तप्रतरद्वयसस्पक्षिनो ऽतियद्वय इति सध्येयगुणा
तेन्त्यो ऽपोलोके सध्येयगुणा प्रवमपतीनां स्वस्थानमिति कृत्वा तस्य स्तियग्लोके सध्येयगुणा ज्योतिषव्यतराणां स्वस्थानत्वात्, अपुना दवो
रपिष्ठस्यास्पवदुत्य भाह स्वप्नाकुवाएव सद्युत्थोवादवीष्टं कृत्लोए इत्यादि ॥ सद्यद्वयवृत्तमिवाऽविजयेव प्रवमपीय तदेवमुक्त दवविपयमोपिचक
मह्यवदुत्य मिदानीं भवमपत्यादिविज्ञायावयय प्रतिपिपादयिषु प्रवमतो प्रवमपतिविपयभाह-स्वप्नाकुवाएव सद्युत्थोवा दवा प्रवमवासीष्टं कृत्लो
य इत्यादि ० सञ्जानुपातन प्रवमवाचिनो दवा चिंत्यमानाः सद्यस्तोका ऊर्ध्वलोके तथाहि-कप्याचि स्वीयमोविष्टपि कश्चपु पुवचगतिनिप्रया ग
यान प्रवति कप्याचि त्मन्तर तीयकरकम्ममहिमानिमित्त भजनदधिमुखेष्टादिकानिमित्त सपरया मन्दिरादिषु कीर्तानिमित्तं गमन मतेच सर्वेपि
स्वस्था इति संबंसाका ऊर्ध्वलोके तस्य ऊर्ध्वलोकेतियग्लोके कश्चप्रतरद्वये ऽसध्येयगुणाः, कप्यमितिचेत् सञ्जत-इहाहि तियग्लोकेस्यावैक्षियसमु
द्रुपातेन समवहता ऊर्ध्वलोकेतियग्लोके ॥ स्पृष्टंति यथा न तियग्लोकेस्याएव मारयात्तिककसमुद्रुपातन समवहता ऊर्ध्वलोके सौपमोदिषु दवलो
कपु यादरपयासपृच्छीकायिकतया यादरपयांसाऽपकायिकतया यादरपयोमप्रत्यब्जनरमतिकायिकतया च ज्ञानपु मन्त्रिविधानादिषु स्थानपत्य

तेलुक्के सखेऊगुणतं ब्यहोलीएतिरियलीए ब्यसखेऊ०, तिरियलीए ब्यसखिऊ० ब्यहोलीए ब्यसखिऊ०

[illegible]

मुक्तामा अथाऽपि स्वप्नावापुः प्रतिषेधदयमाभा न पारजातिविषयमाभायां विविधा हि मारणात्मिकसमुद्घाते समवहताः केचित्पारजा
 विक्तायाः प्रतियोगदयत विचिन्तति, तथा चोक्तं प्रपञ्चो-न्निवेशे प्रते मारणात्मिकसमुद्घाते समोद्घातः समोद्घातः समोद्घातः समोद्घातः
 पुरत्यस्य वापरपुद्गलिकादनाए अवलम्बितय सेव प्रंत किं तस्य गय धयवज्जिह्व सेव प्रंत किं तस्य गय धयवज्जिह्व सेव प्रंत किं तस्य गय धयवज्जिह्व
 उदयज्जिह्व, अत्यन्तय ततुं पक्रियतिता दोहपि मारणात्मिकसमुद्घातः समोद्घातः समोद्घातः समोद्घातः समोद्घातः समोद्घातः समोद्घातः समोद्घातः
 भाप ते नवमवाप्तिन मय सत्यत त इत्यज्जता उत्पत्तिदो विविधात्मप्रदशहता कृता उद्घातः समोद्घातः समोद्घातः समोद्घातः समोद्घातः समोद्घातः
 ययोक्तं प्रतरद्वयं स्पष्टाति ततः प्रागुक्तेभ्यो अवयवेयगुणा स्यात् एतेभ्यो अवयवेयगुणा स्यात् एतेभ्यो अवयवेयगुणा स्यात् एतेभ्यो अवयवेयगुणा स्यात्
 वनपत्तिस्तेनोत्पत्तिकाया यव स्यात् न वैक्षिप्यसमुद्घातन मारणात्मिकप्रयत्नसमुद्घातन वा तथाविपतीश्रियमयविक्षिप्येक समवहता स्ते ग्रीलाक्यसवय
 दिन इति सुख्यगुणाः, परस्वानसमवहताः सत्यानसमवहताः सत्यानसमवहताः सत्यानसमवहताः सत्यानसमवहताः सत्यानसमवहताः सत्यानसमवहताः
 ये अवय्वगुणाः सत्यानप्रत्यासक्ततया तिथ्यक्तोके गमनागमनभावतः सत्यानप्रत्यासक्ततया तिथ्यक्तोके गमनागमनभावतः सत्यानप्रत्यासक्ततया तिथ्यक्तोके

स्वेप्ताणवाएण सप्तत्योना वाणमतराठेवा उहुलोए उहुलोपतिरियलोए अस्सस्विज्जागुणा, तेलुक्को अस्सस्विज्जा०
 अहीलोए तिरियलोए अस्सस्वेज्जागुणा अहीलोए सस्सज्जागुणा तिरियलोए सस्विज्जा०, स्वेप्ताणवाएण सप्तत्यो

मभिरबाधस्याद्योमाटे यथा तद्वदो यथानाक यथप्यातगुणा मयनपतिभेदोना । विपताणवाएण सत्यानवापा भयनवाधकोपा देवोपा उहुलमाये ।
 यथायो यत्पयद्वत्तवदेवे सयवाद्योद्वर्जना छद्मको मयनपतिभेदोनायोपरसयवद्विधा । उहुलकायातिरिक्काए यथविज्जागुणा अहमाकतिरिक्कायो
 यथप्यातगुणाइव । तिज्जाक यथिज्जागुणाया यथाकावतिरिक्काए यथं यथोसाए यथं तिरियलाए यथं । विपानसत्यातगुणाइव वैक्षिप्यमसुद्घात
 यथा यथाकाविक्कायाक यथप्यातगुणो विक्षेप्तोके यथप्यातगुणो समासरवे यथा काक यथप्यातगुणा कस्यान माटे यथप्याक य । निभाकवा० य

वान् तेभ्यः तिर्यक्तोऽन्वेयगुणा समवसरणादौ बभूवमिमित द्वीपेषु च रमणीयेषु ब्रह्मनिमित्तमाभमसाधया वागतामर्च चिरकालमऽप्यऽ
 वस्थावात् । तस्याऽप्योक्तोऽवस्ययगुणानुवर्णवाचिनामथोक्तोक्तस्य स्वरूपान्वयात् एव प्रवर्तनवासिधेवीयतमस्यपद्युत्व प्राचमीय, साम्प्रतिव्यन्तर
 गतमस्यपद्युत्वमाह-यतायुवाएवमिस्थादि ॥ इवानुपातन चिन्त्यमाना व्यतराः सर्वस्वोक्ता ऊहृताके कतिपयानासेव परकलवनादौ तया ज्ञावात्

वान् वाणमन्तरीन् देवीन् उहृलोए उहृलोयतिरियलोए अस्सखिज्जगुणात् तेलुक्के सखिज्जगुणात् अहोलीए
 तिरियलोए अस्सखिज्ज० अहोलाए सखिज्ज० तिरियलोए सखिज्जगुणात् खप्पाणुयाएण सव्वत्योया जोड
 सिया देया उहृलोए उहृलोयतिरियलोए अस्सखिज्ज० तेलुक्के सखेज्जगुणा अहोलीएतिरियलोए अस्सखिज्ज
 गुणा अहोलीए सखेज्जगुणा तिरियलोए अस्सखेज्जगुणा खप्पाणुवाएण सव्वत्योया जोडसिणीन् देवीन्
 उहृलोए उहृलोयतिरियलोए अस्सखेज्जगुणात् तेलुक्के सखेज्जगुणात् अहोलीयतिरियलोए सखेज्ज०, अहो

वन्ताया वागमन्तरादेवा उहृलाए । द्विव्यतराकण्ठे सववाहास्वतर ऊर्ध्वोक्ते विवेसोभमे पूर्ववर्तिने मिसवामेतीव्वरजम्मे । उहृलाएण
 तिरियकाए एव तिसाके सखिज्जगवा । तेह्वो ऊर्ध्वोक्ते सखिज्जोक्ते एव सरवसम्भवात् तया वादरमा एवोर्मात्तपत्ते ते एवसवताता नेहाक्के सव्यात्
 गुणा नेविबसम्भवात्ते । एहावायतिरियकाए एव । एहावाकतिरियकाके के एतत्तस्स्येगमनागमनकरेने । एहालोए एवसखिज्जमवा तिरियकाए एव
 विनाजवादेव । तेह्वो एवाकाके एवसवतातगवा एवाममात्ते तिरियकाके एव समवसरणादिक्के । द्विव्यतरोक्तेनाकण्ठे एववपात्री । सव्वत्योयायावाए
 मन्तरीया देवीया उहृलाए । सववालीवाएव्यतरी ऊहृलाके एवसगति एव तीर्थीकरजम्मे । उहृलोयतिरियकोए एव तिसाव सखिज्जगवाथी । तेह
 वो ऊहृलाकतिरियकाए एवसवतातगवो एवाके एवसवतातगवो नेविबसम्भवात्तकरती । एहालोयतिरियकाए एवसखिज्जगवाथा । एवाकाके तिरियका
 के एवसवतातगवो एवमापमभवतो । एहाकाए एव० तेह्वो एवाकाके एवसखिज्जगवाथा विनायुवाएव । तिरियकाके एव

तेन्य ऊदुसोके तिर्यग्भोके प्रतरद्वयकूपे असश्येयगुणाः केपाचिरस्वस्थानातिवृत्तितया अपरेपा स्वस्थानप्रत्यासन्नतयाः उपपा मद्रमा मद्ररादिपु
गमनागमनजायतो यथा न प्रतरद्वयस्वशात् तयोः समुदायम चित्तमानानामतियदुस्वभावात् तस्य ऐसोक्ष्य सश्येयगुणा यतोसोक्ष्यययतिनापि
यानरा सथाविषयप्रविष्टोपवशातो वैरक्षिपसमुदपातन समवहताः सत स्त्रीमपि लोथानात्मप्रद्वोः स्पृशति सच प्रागुक्तज्यो तियद्वय इति सश्येय
गुणाः स्त्रीज्यो पोसोक्ष्यतियस्त्रोके प्रतरद्वयकूपे असश्येयगुणा सादृष्टं यदूनां व्यातराका स्वस्थानात् तत स्तरुपरिज्ञातो मद्रव इत्यसक्ययगुणाः अ
भासोक्ष्य सश्येयगुणा अपोसोक्ष्यिककथायेय तयोः स्वस्थानजावा द्रुणा मयोसोक्ष्य लीलायगमनजावात् तस्य स्तियस्त्रोक्ष्य असश्येयगुणा स्तियस्त्रोक्ष्य
स्य तयोः स्वस्थानत्वाः एव व्यतरद्वीविषयमयस्पृशत्य धत्तव्य साप्रति ज्योतिषविषय मरुतुस्य माह सत्ताकुवापच सद्युयोवा कोइसिया
इत्यादि न चानुपातन ज्योतिषका स्यस्थोभाः सुवस्तोका ऊदुसोके कथाचिरव मद्र लीर्ष्यकरजन्मवोस्ववर्निमित्त मज्जमदपिमुखध टादिकानि

मित्त मपरया केपाचि मद्ररादिपु लीलाभिहित गमनसन्नतात् तस्य ऊदुसोक्ष्यतियस्त्रोके प्रतरद्वयकूपे असश्येयगुणा सादृष्टं मद्रद्वयं कश्चित्
स्याने स्थिता अपि स्पृशति प्रत्यासन्नत्वा दपर वैरक्षिपसमुदपातसमवहता अस्य ऊदुसोक्ष्य गमनागमनजायत सतो अधिकतप्रतरद्वयस्पृशिन पूर्वो
क्तज्यो असश्येयगुणा, सस्य ऐसोक्ष्य त्रैलोक्यसपरपक्षिन सश्येयगुणाः यच्च ज्योतिषका सथाविषयतीक्ष्णप्रयवैरक्षिपसमुदपातेन समवहता लीलाऽपि
सोक्ष्य स्वमद्रोः स्पृशति ते सज्जावतो ऽप्य ऽतिद्वय इति । पूर्वोक्तस्य सश्येयगुणा साद्र्यो ऽप्यासोक्ष्यप्रतरद्वय वर्तमाना असश्येयगुणा, यतो
यद्वो ऽप्यासोक्ष्यकथामपु समवसरणादिभिहित अपोसोक्ष्य लीलाभिहित गमनागमनजावतो मद्रवता ऽपोसोक्ष्य ज्योतिषपु समुत्पद्यमाना ययो
न प्रतरद्वय स्पृशति ततो घटन्त पूर्वोक्तज्यो असश्येयगुणा, सस्य सश्येयगुणा अपोसोक्ष्य मयोसोक्ष्यकथामपु स
मवसरणादिपु चिरकासमवस्थानात्, तस्यो असश्येयगुणा स्तियस्त्रोक्ष्य तथा स्वस्थानत्वात्, एव ज्यासिक्तद्वीमत्रमपि प्रावर्धीय ।

सा प्रति वैमानिकदेवविषयमप्यबुद्ध्य भाव-स्रोतायुवायक सधृत्योवा वैमानिक्या देवा उच्छ्लोयतिरियसोय इत्यादि ॥ ईशानुपातेन जेश्वानुसारय
चिंत्त्यमाना येमानियाद्वाः सवसोका उच्छ्लोका तियस्लोके वा वर्तमाना लोका येमानिकेयु त्प
द्याते येच तियस्लोके वैमानिका गमनावमम कुवाति येच विवक्षितप्रतरद्वाप्याप्तासिनः क्रीडास्थान सञ्जाता येच तियलोकस्थता एव योज्ञयसुम्
दुपातमारणतिकसमुद्गातवा कुर्वाणा सथावपप्रयविच्छोया पूसु मात्मप्रदद्यच्छ्रु निरुजति त विवक्षितं प्रतरद्वाय स्पक्षति तेचा अथ इति ।
सवसोका सभ्य खेनोक्त्य सकयपगुणाः कय मिति चं दुष्यते-इह ये उचोसौकिषयामयु समवसरयाविमिनित नऽचोसोकवा क्रीडामिमिनितग
ताः वंता वैक्रियसमुद्गातं मारयतिकसमुद्गातंवा कुर्वाणा सथावपप्रयवविच्छोयात् दूरतर म्दुविच्छिमात्मप्रदगादता यच येमानिकजवा दीसिकाग
त्वा प्यवमाना अचोनीकिषयामयु समुत्पद्यते तद्वित त्रीनपि लोकाम् स्पक्षति, वक्षय पूर्वोक्तस्य इति सकयपगुणा, सभ्योपि यचोलोकतिय
स्लोके प्रतरद्वाय सकयपगुणा अचोनीकिषयामयु समवसरयादेौ गमनावममजवावतो विवक्षितप्रतरद्वाप्याप्तासिन समवसरयादीवा उचस्यामनो

लोए सखि० तिरियलोए अस्सवे० म्वत्ताणुयाएण सव्वत्योधा वंमाणिया देवा २००० उहुलोयतिरियलोए
तेलुक्के सखेज्ज० अहोलायतिरियलोय सखिज्ज० अहोलोए सखेज्जगुणा तिरियलोय सखेज्जा० उहुलोए

[illegible]

मयूना पयोत्तमतद्वयसंज्ञायात् तेभ्यो योसोक्तं सदयेयगुणाः । आधोलीङिकग्राभेयु ययूना समयसरखादाय ऽवस्थागामाभावात्, रोम्य स्थिये
गसात् सरयेयगुणा यदुपुमसदसरयपु यदुपुष ङीकास्थामेयु ययूना मवस्थागामाभावात् तप्य ऊटुलीक ऽवश्ययगुणा ऊटुलीकस्य स्थानान्नत्वात् त

असुरिजा० खेत्ताणुयाएण सधृत्योयाह देवीह उट्टुलीयतिरियलीए तेलुक्की सखेज्जागुणाह अ
होलीयतिरियलाए सखिज्जा० अहोलीयसखेज्जा० तिरियलीए सखज्जा० उट्टुलीए अस्सखि० खेत्ताणुयाएण
सधृत्योया एगिदिया जीया उट्टुलीए तिरियलीए, अहोलीयतिरियलीए त्रिससाहिया, तिरियलीए अस्स

नाए परंपिज्जययाथा । अहभाक्के तिरियलीए पधक्यातगवा । तिज्ज क मज्जि विनाक्के सव्यातगवा । पहासायतिरियलाए पम पहासोर्वातककुलीक
पमवगतगुणो । पहासाए मज्जि पहासाक्के सव्यातगवा । दिवे वेमानिज्जनी कइक्के । खित्तायथाएवं सव्याथा विमानोदादेवा उट्टुलायतिरियली
ए । मव्यातावमानिकद्वयता ऊटुलायतिरियलीएने किमतिरियलीएने मव्यातावमानिकद्वयता उपवे तथा वेकिय समद्वयात स्रवद्वेकरो वेमतरस्सम
तिमाक्के सविज्जमना । तेजोव याहाक्के वेमानेनयवातगवा समोसरवावे । पहासायतिरियलाए सखिज्जगवा । पहासाक्के तिरियलीएने यमतरस्समै समोस
रवावे । पहासाए स तिरियलाए स । पहासाक्के सव्यातगवा समोसरवावे तिरियलाए सव्यातगवा रमवाभयो । उट्टुलाए अम- विज्जतावयाएय ।
अहभाक्के सव्यातगवा सव्यातगवा । दिवे देगेना कइक्के । सव्यातावमानिकद्वयता देवोपा उट्टुलायतिरियलाए तिखाक्के स । सव्यातावमानिक
भाद्वेयो ऊटुलाक्के वेमियममद्वयतावरती मनुष्यादिव्दोमा उपज ते हाडीविजाक्के मयमव्यातगवो समोसरवावे । पहासायतिरियलाए
मंजि० । पहासाक्के सव्यातगवो समोसरवभयो तिरियलाक्के मय्यातगवा । पहासाए सं० तिरियलाए स । पहासाक्के समोसरवभयो तिरियलाक्के स
व्यातगवभयो । उट्टुलाए पमविज्जगवापा । अहभाक्के पमव्यातगवो सव्यातगवा एमेद्विषओवा उट्टुलाए तिरियाए ।
पवेद्विषना कइक्के सव्याता पपाओभागी एवेद्विषओव ऊटुलाक्के तिरियलाक्के मरवातिसमुद्वयातवरता मरवेसमै तेसोवयाडा । पहासायतिरियलाए ।

तत्र सदेवधनुतरप्राधात् यद्येवमनिकदेवीविषयसूत्रमपि प्राधान्यं सामर्थ्यं कौटिल्यादिगतमस्य यदुक्तं माह-खेसापुष्पाएव सद्यत्योवा योगेदि
या इत्यादौ च तत्राभ्यासेन विद्यमाना एवैवेद्यानायाः सर्वसोका ऊर्ध्वलोकोक्तियस्याक ऊर्ध्वलोकोक्तियस्याक प्रतरद्वय यतो यत्तत्रस्याएव कथन
यद्यो दुर्लभाका तियस्योकोक्ते तियस्योकाद्वा ऊर्ध्वलोको धमुत्पिरसवः कृतमारवातिवसमुद्भासा सा त्विज विवक्षित प्रतरद्वय इष्यति स्वाशपाद्य ते इति
सद्यसोका सोम्यो ऽधोलोकोक्तियस्योको विवक्षयापिका यथा य ऊधोलोका तियस्योकाद्वा ऽधोलोको इतिस्विकागत्या समुत्पद्यमाना विव
क्षितं प्रतरद्वय स्पृशति तत्रस्याय ऊर्ध्वलोकाया धोलोकोविवक्षयापिक स्ततो यद्वो धोलोका तियस्योको समुत्पद्यमाना कदाप्यत इति विवक्षयापि
का स्तस्य तियस्योको कसक्ययनुका कृतप्रतरद्विकसोत्रा तियस्योकोकत्रस्या ऽसक्ययनुका तस्य खेसाक्य सक्ययनुका यद्वोहि ऊर्ध्वलोका य

स्वेज्जगुणा, तेलुक्की अस्स०, उहुलोए अस्सवेज्जगुणा, अहोलोए विसंसाहिंया । खेत्ताणवाएण सत्त्वलोच्चा
एगिया जीवा अपज्जग्गगा, उहुलीयतिरियलोए अहोलोए तिरियलोए विसंसाहिंया, तिरियलोए अस्स
स्वेज्जगुणा, तेलुक्की अस्सवेज्जगुणा, उहुलोए अस्सवेज्जगुणा, अहोलोए विसंसाहिंया । खेत्ताणवाएण

[illegible]

पानोने वधोलाबादा उर्दोनेके समत्वदाते सेषाच मध्य मध्यो मारणासिद्धसमुद्रपातवशा द्विविहासप्रवेद्यावशा स्त्रीनपितोका न स्पृशति ततो तत्त्वत्पुण्यस्यगवा क्षस्य ऊर्दोनेके असत्येयगुणा उपपातसेयस्या उत्तिथदुस्या तस्यो उधोतोने विक्षपायिका कदसोकरा दधोसोकरास्य दि हायापिबल्यात यवम उपपातविषये पर्याप्तविषये च मूर्ध्न प्रावयितव्य मऽयुना द्वीत्रिययिपय मरुपयदुल्य माह-रतायुदाएव सवृत्त्योवा यद्विदि या इत्यादि ॥ यथानुपातन ज्ञानानुसारं चित्तमाला द्वीत्रिया सयसोका ऊर्दोनेके ऊर्दशाकस्येकवशा सपा उपवात्, तस्य ऊर्दुलाकानियगलाक प्रत

सवृत्त्योया एगिया जीया पञ्जस्रगा, उहुलोयतिरियलोए अहोलायतिरियलोए त्रिसेसाहिया, तिरियलोए अ्सखेज्जगुणा, तेलुक्को अ्सखेज्जगुणा, उहुलोए अ्सखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सवृत्त्योया येइदिया उहुलाए उहुलोयतिरियलोए अ्सखेज्जगुणा, तेलुक्को अस०, अहोलोए तिरियलोए अ्सखेज्जगुणा, अहोलोए ससज्जगुणा, तिरियलोए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सवृत्त्योवा येइदिया अ् पञ्जस्रया उहुलोए । उहुलोयतिरियलोए सखेज्जगुणा, तेलुक्क अ्सखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए अ्

विमपाधिक तिरिक्केलाके पसरवातनवा । तिक्काक यम उठुकाए यम विक्काके पसरवातगुवा अर्द्धाकाके पसरवातगुवा । अर्द्धाकाए विमसाहिया पधामाके विमपाधिक । पित्तवायवाएक मळयावावेदिया उठठनाय उठुकायतिरियकाए यमविज्जगवा तिक्काक पधविज्जगवा । सेवयोसाता सवे याडावेदिय उठुकाक सेवनोपालकावाविमाहिदेवे तेमनो तियक्काके किमज्जयो पधउपज पधवो छइ उपजे तेमनो समुद्रपातवये मरवातकरता तो मळाकर्मण । अर्द्धाकायतिरियकाए यमविज्जगुवा । यजोलाक तियक्काके पसरवातगुवा खल्लानमनो । अर्द्धाकाए संहि तिरियकाए सन्निद्रगुवा । पधामाक मरवातगुवा उपज तिक्केलाके सवगतगुवा यमज्जगवाठाम । गित्तायुवाएक सळ्यावावेदिया उपपन्नता उठठुकाए । ययनामसें मवयाडा वेदिय पपर्याता उर्दोनेके भावनायापनोपरे । उठुकायतिरियकाए यम० । उठुकाके तियक्काक पसरवातगुवा । तिक्काक पध० तोमळाकर्मण यम

प्रथम सदेवप्रभुप्रजापतिः यत्तु वैश्वामित्रदेवीविषयसूत्रं भवि जायभीरुः साग्रस्ये वैश्वामित्राविगतं सत्पदबुद्धयः साधु-सैतापुत्राएवं सधृत्तीया एगिदि
 या इत्यादं न कदाचनयातेनैतत्तथासा धर्मेन्द्रियाजीवाः सर्वस्रोका कर्तृसाकतियस्सोक्तं ऊर्ध्वलोकातियस्सोक्तं प्रतरद्वयं यतो य तत्रस्याएय फल
 यतो देवलोका तियस्सोक्तं तियस्सोक्ताः ऊर्ध्वलोके समुत्पिस्तुतः कतमारकातिकसमुद्रात्ता सत किंल विवर्धित प्रतरद्वयं एपुत्राति स्वहपाद्य ते इति
 सयस्रोका सप्त्यो ऽप्योलाकातियस्सोक्ते विवर्धपापिका यता य यपोलाका तियस्सोक्ते तियस्सोक्ताः ऽधोलोके इति सागत्या समुत्पद्यमाना विव
 र्धितं प्रतरद्वयं एपुत्राति तत्रस्या ऊर्ध्वलोकाया योलाकाविशयापिक सता यद्बो योलाका तियस्सोक्तं समुत्पद्यमाना सदाप्यत इति विवर्धपापि
 का सप्त्य सित्यस्सोक्तं ससययगुणा सप्तप्रतराद्विषयेना तियस्सोक्तस्य ऽसययगुणत्वात् तस्य सैताक्य सययगुणा यद्बो इति ऊर्ध्वलोका द

खेज्जगुणा, तेलुक्की असं, उहुलोए अससंज्जगुणा, अहोलोए विसंसाहिमा । खेसाणुवाएण सधृत्तीया
 एगिया जीया अपज्जसगा, उहुलीयतिरियलोए अहोलोए तिरियलोए विसंसाहिमा, तिरियलोए अस
 संज्जगुणा, तेलुक्की अससंज्जगुणा, उहुलोए अससंज्जगुणा, अहोलोए विसंसाहिमा । खेसाणुवाएण

यथावाक तिरैलोकां । विसमादिया तिरियकाए पम । विमोयादिक उपज्जतां प्रपतरनैरपयं तेमाटे तिरैलोकां ससययाततगुणा चंभमाटे । तिरैलो
 कमाकज्जगणा सउदकाए पम । तेइवो विकाय ससययाततगणा स ऊवावो गोवा ऊव काववी । पडाकाए विवेसादिवावा पिलापडाएवं । पडाका
 के विमप विव उपजावता ववा यथाया । सज्जताया एगिटोपपज्जसगा सउठकायतिरियकाए । सवबोवा खीव एकेद्रिय पपर्यासा ऊवसाक तिरियका
 के सवपडमानो परे । पडाकायतिरियकाए वि तिरियकाए पम । यथासाके तिरैलोका विमोयादिक तिरैलोकां के पम । तिरैलोके पम सउठकाए
 पम । विडाके पम ऊवकाक । पडाकाए विमोयादिक । असनाक विमोयादिक । पिसाकनाएण सज्जताया एगिटियपज्जसगा सउठकायतिरियकाए ।
 य वनोसोसाक एकेद्रियजापपर्यासा ऊवसाकविमकुल भावनायाखीपरे । यथावाकतिरियकाए विससादिया तिरियकाए । यथावाकं तिरैलोका

त्यदमात्रा द्वीद्विषायु रनुनवंति त्रैलोक्यसुरस्यद्विभ स्तेषु पूर्वोक्तस्यौ उर्ध्वमेवगुणाः तैस्त्रौ ओषोकोक्तियग्नशोके असक्येगुणा यतो ये द्वीद्विषया अ
 पोमीका तियग्नलाभ यत्र द्वीद्विषया सिधयग्नसीका यथोलोके द्वीद्विषयस्वन प्रापकायत्वमो त्विरसवः कृतप्रथममारथातिबसमुद्भुता द्वीद्विषयायु रमुद्रय
 ता समुद्रुपातवद्वमो त्वतिवर्द्धापाय द्विगुणसात्म्यप्रवृद्धका सा यथात्र प्रतरद्वय स्पृशति । प्रदूतायति पूर्वोक्तस्यो असक्ययगुणा सप्त्यो ओषोको
 न्न सक्येवगुणा सप्तो त्वतिस्थानामा भतिप्रचुराणां प्राधात् तैस्त्रौपि तियग्नशोके सक्ययगुणा भतिप्रचुरतराणा योनिस्थानानां तत्र प्राधात् ।

ए अस्० । तेलुक्के अस्सखेज्जगुणा, अघोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलीए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुत्राएणं स
 हत्योत्रा तेइदिया अपज्जत्तगा उहुलाए उहुलोयतिरियलीए अस्सखिज्जगुणा, तेलुक्के अस्सखेज्जगुणा, अ
 होलोयतिरियलीए अस्सखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलीए सखेज्जगुणा । खप्पाणुत्राएण सख
 त्योत्रा तेइदिया पज्जत्तगा उहुलीए उहुलोएतिरियलीए अस्सखिज्जगुणा, तेलुक्के अस्सखिज्जगुणा, अहोली
 ए तिरियलीए अस्सखिज्जगुणा, अहोलीए सखिज्जगुणा, तिरियलीए सखिज्जगुणा । खप्पाणुत्राएणं सख

मन्त्र । अध्यात्मिके तिरछैकाके सख्यातगुन । विताण्वाएव भवत्यानातेर दिया अपज्जनगा । जेवनोमेसबसाडातिद्रिय अपयीता । छटकोए छट्ट
लाडतिरिकाए पद । जहकाके भावनावे द्विभोपरे जहसाकतिर्यज्जाक प्रसख्यातगुन । तिमीके प्रसखिज्जगुन । विशाके प्रसख्यातगुन
पञ्चासाए तिरिकाए पद । अध्यात्मिके तिरछैकाके प्रसख्यातगन । अङ्काए सखि । अध्यात्मिके सखातगन । तिरियाए सखि । तिरछैकाके स
ख्यातगन । विताण्वाएव भवत्याना तेर दियापज्जनगा छट्टकाए । जेवनोमेसे सबसाडा तेद्रियपर्यागा छट्टकाक । छट्टकाए तिरियाए प्रस । 'अप'
साक तिरछैकाके प्रसख्यातगुन । तिमीके प्रस । विशाके प्रसख्यातगन । अध्यात्मिके तिरिकाए प्रसं० । अध्यात्मिके तिरछैकाके प्रसख्यातगुन । अध्या
माए सवि० तिरिकाए सखि । अध्यात्मिके सख्याता तिरछैकाके सख्यातगुन वेद्विभवोपरि कोरिद्रिय कहैछे । विताण्वाएव संख्यावा चठरेदिया

रदयपूये प्रसंख्येयगुणाः, यतो य ऊहलोका त्रियगुलोकाद्वा ऊहलोका द्वीन्द्रियत्वेन समुत्पसुक्तानां क्षरायुरमुजयत इति भागता समुत्प
 यते यत्र द्वीन्द्रियापय त्रियगुलोका यूहलोका त्रियगुलोका द्वीन्द्रियत्वेना व्युत्पन्नानां समुत्पसुक्तानां कृतप्रथममारणातिवसमुद्भवाता य
 तपय द्वीन्द्रियायु प्रतिपदेदयमाना समुद्भवातवशा य दूरतरविशिष्टनिजात्मप्रदक्षका येन प्रतरद्वयाऽप्यासितद्वयसमासोना स्ते यथास्तप्रतरद्वय
 रपन्निना यद्वय देति पूर्वोक्तप्रयो अस्ययगुणा साध्य खेलोका अस्ययगुणा यतो द्वीन्द्रियाणां प्राचुर्येवो त्यन्तिस्थानान्य ऽधोलोका तस्माद्या ऽति
 प्रभूतान त्रियगुलोक तत्र य द्वीन्द्रिया योलोका यूहलोका द्वीन्द्रियत्वेना व्युत्पन्न वा समुत्पसुक्तानां कृतप्रथममारणातिवसमुद्भवाता समुद्भवात
 यद्यावो त्यन्तिदश यावद्विचिन्तात्मप्रदक्षका स्ते द्वीन्द्रियायु प्रतिपदेदयमाना यो ऊहलोका ऽवचोलोका द्वीन्द्रियाशयकाया याव द्वीन्द्रियत्वम समु

खेजगुणा, अहोलोए सखे०, तिरियलोए सखे० खेत्ताणुवाएण सख्योवा येद्विदया पञ्चमया उहलो उ
 हुलोयतिरियलोए अखखेजगुणा, तेलुक्को अखखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए अखखेजगुणा, अहोलो
 ए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा। खेत्ताणुयाएण सख्योवा तेद्विदया उहलोए उहलोयतिरियलो

यवातगवा। यवाकावतिरियकाए यस यधोकाके तियककाके प्रवयवातगवा। यवाकाए सखि यवाकाके सखातगवा। तिरियकाए सखि तिर
 येकाके सवधातगवा। खितावकाएय सख्यवावा वर दिवपज्जतया वडुकाए। य यनोमेलेकातो सववाका योद्वयवर्तीनां ऊह काके भावनायावनीपरे।
 वडुतिरियकाए यस तिसाके यस। ऊह काव तियककाव यसवधातगवा यिकाके यसवधातगवा। यवाकाए तिरियकाए यस। यवाकाके तिरियका
 के यसवधातगवा। यवाकाए सखि तिरियकाए सखि। यवाकाके सखातगवा तिरियकाके सखातगवा द्वि ते दोद्वयक द्विदे। खिताणुवाएय सख्यवा
 वातेर दिवा वडुकोए वडुकाए तिरियकाए यस तिसाके यस। यनोमेले सववाकातेद्वि वडुकाके ये द्रवनीपरि तेद्वि यनोपरे भावनाकोले ऊहका
 व तिरियकाव यसवधातगवा यिकाके यसवधातगवा। यवाकायतिरियकाए यस यवाकाके तियककाके यसवधातगवा। यवाकाए स तिरियकाए

देवापत् १ निवितात्मपदद्वारा पर्वद्वियायु रद्याप्यमनवति ते त्रैलोक्यसहस्रिणि सौवा ह्येवमिति । खल्लोका इत्येव खल्लोकोक्तिर्यग्लोके प्रतरद
यद्वय सत्यपनुकाः प्रपूततराका सुपपातन समुद्रुपातेन वा यथीकप्रतरद्वयसहस्रसज्वात् तस्यो ऽधोलोकीकतिर्यग्लोका सत्ययगुका कतिप्रमूत
तराका सुपपातसमुन्पाताप्या मऽधोलोकीकतियग्लोकाकप्रतरद्वयसहस्रसज्वात् तस्य कदल्लोका सत्ययगुका त्रैयामकाना मऽवस्थामनायात् स
प्यो ऽप्यासाक सत्ययगुका येनाभिकवेष्यः सत्ययगुकाभा भैरविकाका तत्र प्रायात् तस्य सिमयगुका ऽसत्ययगुकाः समुच्छिमकसवरसज्जरा
रीनां व्यतरत्योतिफाकां समुच्छिमसमुप्याकाञ्च तत्र नावात् एव पर्वद्वियाऽपयोसमुप्यमपि भावनीय पर्वद्वियपयाप्रमूत मिद-खल्लोकापक
सहस्रोका पर्वद्विया पञ्चता कदल्लोका इत्यादि ७ कथानुपातेन पित्तमानाः पर्वद्विया ययीसाः सर्वसाका कदल्लोके प्रायोवैसानिकानामव स
न नावात् तस्य कदल्लोकीकतियग्लोके प्रतरद्वयकूप ऽवस्थयगुका विवद्वितप्रतरद्वयप्रत्यासज्ज्योतिफाकां तद्व्यावितक्षेत्रादितक्यतरतिथगुपर्वेद्वि

स्युक्तोऽप्यतिरिक्तोऽस्यसखेज्जगुणा, अहोऽहोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखे० । खेत्ताणुवाएण सख्त्यो
या पचिदिपा तेलुक्की उहुळीयतिरियलोए अससखेज्जगुणा, अहोऽहोए तिरियलोए सखेज्जगुणा, उहुळोए
सखेज्जगुणा, अहोऽहोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए अससखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सख्त्योवा पचिदिपा

[illegible]

यचे हमीपिक ह्रीन्धिमूत्र तथा परीसाऽपर्यासद्वित्रियसूत्रौचिबन्नीत्रियपर्यासापर्यासापयोसमूत्राणि प्राथमीयानि साम्रत मीपिबपचैत्रियविषय मस्ययदुत्वमाह-खत्ताबुधायर्षं समुद्योवा पचिदिया ततोऽह इत्यादि ॥ कश्चानपातन चित्यमानाः पचैदियाः सवसोका त्रीलोप्ये त्रीलोप्यस्यश्चिमी यतो ये ऽपोलोका वृद्धलोका ऊर्द्धलोकाद्वा ऽपोसाक क्षोयकायाः पचैत्रियायुरनुप्रयत इतिष्वागत्या समुत्पद्यते, येष प चैदिया ऊर्द्धलोकाद् ऽपोलोका वृद्धलोका अपकायत्वन पचैत्रियस्वनभो त्वित्सवः कृतमारणातिकसमुद्भवाताः समुद्भवातवशा षोत्पयति

त्योया चउरिदिंया जीवा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा । तेलुक्के असखेज्जगुणा, अहोली यतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा । स्वेज्ञाणत्राएण सख्खयोया चउरिदिंयाजीवा अपज्जहगा उहुलोए, उहुलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, अहोलीयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा । स्वेज्ञाणत्राएण सख्ख त्योया चउरिदिंया जीवा पज्जहगा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा

चौथा कहतुवाए। यवनभीसे सबकाडा चोरिद्विष जोर छह काक हमसबमाकमा बेद्विषभाएर करवो। कहतुकायतिरिक्काए यस तिलाक पर्स पडो
 मावतिरिक्काए यस। तिरिक्काक यसकातगुवा। यथाकाए सकि तिरिक्काए स। यथाकाके सबयासगु
 वा तिरिक्काके मयकातगवा। चित्तानवाएर यकाका चकरिठिह यपज्जतगा कहतुकाठ। यवनभीसे सबकाडा चतुरिद्विष जोर यपयसा उठ काके
 बेद्विषभीपरे उठ काके। कहतुकावतिरिक्काए यस तिलाके पर्स। कहकाक तिरिक्काक य बिसाके यसकातगवा। यथाकायतिरिक्काए यस
 पथीकाक तिरिक्काके यसकातगवा। यकाकाठ स तिरिक्काए सकि। यथाकाके यकाकातगवा। चित्तानवाएर यकाका
 मा चतुरेद्विषपज्जतगा कहतुकाए। यवनभीसे सबकाडा चतुरिद्विष जोर यथासा उठ काके। कहतुकाए तिरिक्काए य तिलाके पर्स। कहकाक ति

त्रिसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलीओ
यिसेसाहिया, खेत्ताणयाएण सवत्योवा पुढविकाइया अपजसया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरिय
लोए यिसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो
लोए यिसेसाहिया । खेत्ताणयाएण सवत्योवा पुढविकाइया पजसया उहुलोए तिरियलोए तिरियलीयअ
होलोए यिसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो
लोए यिसेसाहिया, खेत्ताणयाएण सवत्योवा अउकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि

बाळाबाळ तिरछेसाळे सवसातगुणा पचाळतर झळान पचा माटे । स तिरछ्याए स झळगणा खिन्नापुन्नाए स झळगणा पुठवोबाइया सळुकाबाळति
 रिरछाए पडाकायतिरिबसाए बिससाडिया । तेइची तिरछ्याक सवसातगुणा पळेदियझळान तिरछमनख्यसाडि नावे । दिवेमेले इयना पळवकुल
 कसेले पचनोमसे सवसाका पुविबोबाइया खड्काक तिरछ्याक भावना सर्वपाळसो परिकाचरो । पडाकाळे तिरछेसाळे विमोपाधिब । तिरिछ्याए पस
 तिळाक पस चळतराए पस पडाका० बिसेसाडिया । तिर्यळकाळे पसवसातगुणा बिसाळे पसवसातगुणा खड्काक पसवसातगुणा पडाकाक विमोप
 दिब । खिन्नापुन्नाए सवसाका पुठवोबाइया पपळतया सळुकायतिरिबसाए पडाकायतिरिबसाए बिससाडिया । पचनोमसे सवसाका पुठवोबा
 या पचवोता खड्काक तिरछेसाळे भावनापाळसो परे । खड्काक पडाकाक विमोपाधिब । तिरिबसाए पस तिळाक पस सळुकाए भसखि० ।
 तिरछेनाक पसवसातगुणा बिसाळे पसवसातगुणा खड्काळे पसवसातगुणा । पडाकाए बिससाडिया । पडाकाळे विमोपाधिब । खिन्नापुन्नाए सवसा
 का पुठवोबाइयपपळतया सळुकायतिरिबसाए । पचनोमसे सवसाका पुविबोबाइयापर्याना खड्काळे तिरछ्याक भावनापाळसो परे । पडाकायतिरि
 बसाए बिसेसाडिया । पडाकाळे विमोपाधिब तिरछेसाळ । तिरिछ्याए पस तिळाक पस० सळुकाए पस० पडाकाए बिसेसाडिया । तिरछेसाळ

याया वैमानिष्यत्तरन्मोतिष्कविद्यापरचारकमुनितियगुपर्वद्वियाका मुदलोके तिर्यग्लोके च गमभागमने फुर्यता मऽचिरुतप्रतरद्वयस्पर्धात् तेभ्य
 खेसोक्ष्य वैसोक्ष्यसपरशिनः सख्ययगुणाः कथ मितिभूत यतो ये जवनपातव्यत्तरज्योतिष्कवैमानिका विद्याधरा वा ऽधोसोक्तस्याः कृतवैक्रियसमुद्र
 पाता कथाविषयप्रवृत्तया दूयुसोर्कावचिसालप्रदक्षवहा सा श्रीमऽपि लोकांन् स्पृष्टती ति सख्ययगुणा साभ्यो ऽधोसोक्ततियगुलाक प्रतरद्वय
 रूप सख्ययगुणा बहवोद्विष्यतराः स्वस्याभप्रत्यासक्ततया जवनपतय सियगुलोक्त छटुसोक्तेवा व्यतरज्योतिष्कवैमानिका दवा अथोलीकिकपामपु च
 मवसरबादा ऽधोसोक्ते लीलादिनिर्मलं च गमभाषममकरवत स्या समुद्रपु कर्चनियगुपर्वद्वियाः स्वस्याभप्रत्यासक्ततया अपर तदव्यासितकृत्रा
 भित्ततया यथोक्त प्रतरद्वय स्पृष्टति तत संख्ययगुणा तभ्यो ऽधोसोक्ते सख्ययगुणा नैरयिकाका जवनपत्तीर्नाच तत्रा ऽवस्थानात् तेभ्य सियगु

अपज्जत्तया, तेलोक्ते उहुलीयतिरियलोए अ्सखेज्जगुणा, अ्यहोलीयतिरियलोए सखेज्जगुणा, उहुलीए
 सखेज्जगुणा, अ्यहोलीए सखेज्जगुणा तिरियलाए सखिज्जगुणा खेत्ताणयाएण सव्वत्थोवा पचिदिया पज्जत्ता
 उहुलीए उहुलीयतिरियलोए अ्स०, तेलुक्के अ्स०, अ्यहोलीयतिरियलोए सखेज्ज० अ्यहोलीए सखेज्ज०
 तिरियलोए अ्सखेज्ज०, खेत्ताणयाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया उहुलीयतिरियलोए अ्यहोलीयतिरियलोए

विताज्जाएच सव्वत्तावा पचेदिस अपज्जत्तमा तिक्का । जवनोक्ते सव्वत्तावा पचेद्विद्व अपयोत्ता तिरिक्केविक्काके भावना पावनी परि वडवा । उहु
 लावतिरियकाए चय । उहुलाके तिरिक्केवाक असव्वत्तातगुणा । यहालावतिरियकाए सखिज्जगुणा उहुलाए सखिज्जगुणा यहालाए ३ तिरियकाए
 पयध्विज्जगुणा । यथावाक तिरिक्केवाके सव्वत्तातगुणा उहुलाक यथावाक सव्वत्तातमया तिरिक्केवाके असव्वत्तातगुणा । विताज्जवाएच सव्वत्तावा पचेदि
 सपज्जत्तया उहुला उहुलीयतिरियकाए चर्स । जवनोक्ते सव्वत्तावा पचेद्विद्व अपयोत्ता उहुलाके वैमानिकन मावे तइली उहुलाके तियज्जुलाक च
 रुपातागुणा वेप्रतरपरसे व्यातिपो विद्याधरपारच समने भमनामने । तिक्काक सखिज्जगुणा । विक्काके सव्वत्तातगुणा । यहालावतिरियकाए । च

तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेडुक्के असखेज्ज०, उड्डुलोए असखिज्ज०, अड्डोलोए यिसेसाहिंया । खेसाणु
 याएण सव्वत्थोवा तेडकाइया अपज्जप्तया उड्डुलोयतिरियलोए अड्डोलीयतिरियलोए विसंसाहिंया, तिरि
 यलोए असखेज्जगुणा, तेडुक्के असखिज्जगुणा, उड्डुलोए असखेज्जगुणा, अड्डोलोए विसंसाहिंया । खेसा
 णुयाएण सव्वत्थोया तेडकाइया पज्जप्तया उड्डुलोयतिरियलोए अड्डोलीयतिरियलोए विसंसाहिंया, तिरि
 यलोए असखेज्जगुणा, तेडुक्के असखेज्जगुणा, उड्डुलोए असखेज्जगुणा, अड्डोलोए यिसेसाहिंया । खेसा
 णुयाएण सव्वत्थोवा वाडकाइया उड्डुलोयतिरियलोए अड्डोलीयतिरियलोए विसंसाहिंया । तिरियलोए अ

भोमैसै सव्वत्था तेडकार्वा खरसाक तिक्कुसाक भावभापाळोपरै । पडासायतिरियसाए विमोपाहिंया तिरियसाए प । पडासाके तिरिसेसाके वि
 मेयाधिक्क तिरिसेसाके पसव्वत्थातगुवा । तिक्काके पसं उड्डुत्ताए प पडासाए विसंसाहिंया । बिक्काके पसव्वत्थातगुवा खरसाके पसव्वत्थातगुवा पडा
 साके विमोपाधिक्क । विक्काकायएव सव्वत्थावा तेडकार्वा सव्वत्थावा तडकार्वा पपव्वत्था । खरनोमैसै सव्वत्थावा तडकार्वा पपव्वत्था । उड्डुत्तायतिरियसाए पडासायतिरि
 यसाए विसंसाहिंया । खरसाक तिक्कुसाके पडासाक तिरिसेसाके विमोपाधिक्क । तिरियसाए प तिक्काके प उड्डुत्ताए प पडासाए विसंसाहिंया ।
 तिरिसेसाके पसव्वत्थातगुवा बिक्काके पसव्वत्थातगुवा खरसाके पसव्वत्थातगुवा पडासाके विमोपाधिक्क । विक्काकायएव सव्वत्थावा तेडकार्वा तडकार्वा पपव्वत्थातगु
 वा खरनोमैसै सव्वत्थावा तेडकार्वा पपव्वत्था । उड्डुत्तायतिरियसाए पडासायतिरियसाए विसंसाहिंया । खरसाके तिक्कुसाके पडासाक तिक्कुसाक विमो
 पाधिक्क । तिरियसाए प० तिक्काके प उड्डुत्ताए प । तिक्कुसाके पसव्वत्थातगुवा खरसाके पसव्वत्थातगुवा । पडासाके वि
 वा । पडासाके विमोपाधिक्क खरनोमैसै सव्वत्थावा । वायुकार्वा उड्डुत्तायतिरियसाए । वायुकार्वा खरसाके तिक्कुसाके । पडासायतिरियसाए बिसे
 पडासाके तिरिसेसाक विमोपाधिक्क । तिरियसाए प० तिक्काके प० उड्डुत्ताए प पडासाए विसंसाहिंया । तिरिसेसाक पसव्वत्थातगुवा निक्काक पसव्वत्था

सेसाहिवा तिरियलोए अस्खेज्जगुणां, तेषुक्के अस्खेज्जगुणा, उहुलोए अस्खेज्जगुणा, अहोलोए त्रिसे
 साहिया । खेत्ताणुनाएण सव्वस्योधा आउकाइया अपज्जत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि
 सेसाहिवा तिरियलोए अस्खेज्जगुणा, तेषुक्के अस्खेज्जगुणा, उहुलोए अस्खेज्जगुणा, अहोलोए त्रिसे
 साहिया । खेत्ताणुनाएण सव्वस्योधा आउकाइया पज्जप्पया उहुलोएतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि
 सेसाहिवा, तिरियलोए अस्खेज्जगुणा, तेषुक्के अस्खेज्जगुणा, उहुलोए अस्खेज्जगुणा, अहोलोए त्रिसे
 साहिया । खेत्ताणुनाएण सव्वस्योधा तेउकाइया उहुलीयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसंसाहिया,

पसंप्पातगुणा विषाणे पसंप्पातगुणा अइसाके विमेषाधिक । विप्तासवाएण सव्वस्याना पावकाया उहुलीयतिरियलोए ।
 येवनीमसे सबबाहा पावकाइया यपवीणा अइसाके तिरिक्खेसाके । यहासायतिरिक्खोए विसंसाहिया तिरियलोए यय । यहासाके तिरिक्खेसाके विमेषा
 दिक्क तिरिक्खेसाके पसंप्पातगुणा । तिक्क य उहुलोए य । विमेषे पसंप्पातगुणा अइसाके पसंप्पातगुणा । यहासाए विसमाहिवा विप्तासवाए
 य । यहासाके विमेषाधिक ययनीमसे सबबाहा । पाउकाइयपज्जत्तया उहुलीयतिरियलोए । ययुकाइया ययवीणा अइसाके तिरिक्खेसाके यय वके
 दिइनीपरे मावना । यहासाए तिरियलोए विसंसाहिया । यधोसाके तिरिक्खेसाके विमेषाधिक । तिरियलोए ययउज्जगुणा तिक्काके य । तिरिक्खेसाके
 पसंप्पातगुणा विषाणे पसंप्पातगुणा । उहुलोए यय० यहासाए विसंसाहिया । अइसाके ययसंप्पातगुणा यहासाके विमेषाधिक । विप्तासवाएण य
 लत्तोना पाउकाइयपज्जत्तया । येवनीमसे सबबाहा ययुकाइया ययवीणा । उहुलीयतिरियलोए विसंसाहिया । अइसाके तिरियलोए । यहासायतिरि
 यलोए विसंसाहिया तिरियलोए य । यहासाके तिरिक्खेसाके विमेषाधिक । तिक्काके ययउज्जगुणा । तिक्काके य उहुलोए य यहासाए विसंसा
 हिया । विषाणे पसंप्पातगुणा अइसाके पसंप्पातगुणा यहासाके विमेषाधिक । विप्तासवाएण सव्वस्याना तेउकाइया उहुलीयतिरियलोए । यय

तिरियलोए अस्खेज्जगुणा, तेलुक्की अस्खेज्ज०, उहुलोए अस्खेज्ज०, अहोलोए विसेसाहिंया । खेप्पाणु
याएण सव्वत्थीया तउकाइया अण्णस्यया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विससाहिंया, तिरि
मलोए अस्खेज्जगुणा, तेलुक्की अस्खेज्जगुणा, उहुलोए अस्खेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिंया । खेप्पा
णुयाएण सव्वत्थीया तउकाइया पज्जस्यया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विससाहिंया, तिरि
यलोए अस्खेज्जगुणा, तेलुक्की अस्खेज्जगुणा, उहुलोए अस्खेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिंया । खेप्पा
णुयाएण सव्वत्थीया वाउकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिंया । तिरियलोए अ

भीमेसै सवसावा तेउकाईया ऊरुसाके तिउकाके मावनापावलीये । पञ्चासायतिरियसाए विगोपिवा तिरियसाए अ । पञ्चासाके तिरियसाके वि
येपाधिक्क तिरियेसाके पसव्वतातगुणा । तिसाके पस उहुताए अ पञ्चासाए विसेसाहिंया । पिसाके पसव्वतातगुणा ऊरुसाके पसव्वतातगुणा पञ्चा
साके विगोपाधिक्क । पित्ताकवाएक्क सव्वत्थावा तेउकाइयपपज्जस्यया । अन्नभीमेसै सवसावा तेउकाइया पसव्वता । उहुतायतिरियसाए पञ्चासोवतिरि
यसाए विसेसाहिंया । अरुसाके तियक्कुसाके पञ्चासाके तिरियेसाके विगोपाधिक्क । तिरियलीए अ तिसाके प० उहुताए प० पञ्चासाए विसेसाहिंया ।
तिरियेसाके पसव्वतातगुणा पिसाके पसव्वतातगुणा ऊरुसाके पसव्वतातगुणा पञ्चासाके विगोपाधिक्क । पित्ताकवाएक्क सव्वत्थावा तेउकाइयपपज्जस्यया
अन्नभीमेसै सवसावा तेउकाईयापव्वता । उहुतायतिरियसाए पञ्चासावतिरियसाए विसेसाहिंया । अरुसाके तियक्कुसाके पञ्चासाके तियक्कुसाके विगो
पाधिक्क । तिरियसाए अ तिसाके प० उहुताए प० । तियक्कुसाके पसव्वतातगुणा ऊरुसाके पसव्वतातगुणा । पञ्चासोए वि पित्ताकवाएक्क सव्वत्था
वा । पञ्चासाके विगोपाधिक्क अन्नभीमेसै सव्वता । वायुकार्या उहुतायतिरियसाए । वायुकार्या ऊरुसाके तियक्कुसाके । पञ्चासावतिरियसाए विसे
पञ्चासाके तिरियेसाके विगोपाधिक्क । तिरियसाए अ० तिसाके प० उहुताए अ० पञ्चासाए विसेसाहिंया । तिरियेसाके पसव्वतातगुणा पिसाके पसव्वता

लोके उत्सर्गपदना क्षिपकृपंचंद्रिपमनुष्यत्वरस्योतिष्ठाया भवत्यानात् तदेव मुक्त पंचंद्रियाया मलयबहुत्व मिहानी मेघंद्रिपतेवाना पचिवी
कापिकारीनां पवाना मीपिचपर्याप्तपयोमजेदेन प्रत्येवं नीचित्रीस्य अयबहुत्वाया ता सेतापुनाएवं सव्योवा पुडविद्याया समसोयतिरिय

उहुलोए अस्सखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेप्ताणुवाएण सव्योया वणस्सइकाइया अण्जत्तया
उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए अस्सखिजगुणा, तेलुक्की अस्सखिजगु
णा, उहुलोए अस्सखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेप्ताणुवाएण सव्योया वणस्सइकाइया पण्ज
हया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए अस्सखेजगुणा, तेलुक्की अस्सखे
जगुणा, उहुलोए अस्सखिजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेप्ताणुवाएण सव्योवा तस्सकाइया तेलुक्की

तिवाराया पयवर्ता अह साक तिरिक्काक । पडासायतिरिवकाए विमसाहिया तिरियकाए य तिकोव य । पडासाक तिरिक्काके विमयाधिक ति
रिक्काक बिक्काके पसपरातगुवा । उहुलाए य पडाकाए विसेसाहिया । अह साके पसपरातगुवा पडासाके विमोवाधिक । खित्तापुनाएवं पयवर्तावा
य पडासायतिरियत्तगा । पचनोमेसे सर्वकाका नमसातिनायापयीगा । उहुलोयतिरिवकाए पडाकावतिरियलोए विमसाहिया । अह साके तिरिक्का
क पडासाक तिरिक्काके विमोवाधिक । तिरियकाए य तिकोव य उहुलाए य । तिरिक्काके पसपरातगुवा बिक्काके पसपरातगुवा अह साक य
नमयातगुवा । पडासाएविसेसाहिया खित्तापुनाएवं पयवर्ताया तसकाहिया । पडासाक विमोवाधिक पचनोमेसे सर्वकाका पसपरातगुवा । तिरिक्काके उहु
नावतिरियकाए पस पडासायतिरियकाए संवि । बिक्काके पससे ते इहा पचंद्रियनोपरे भावमा अह साके तिरिक्काके पसपरातगुवा पडासाके तिर
वसाक पसपरातगुवा । उहुलाए संवि पडाकाए संवि तिरिवकाए पस । अह साके सखिजगुणा पडासाके सखिजगुवा तिरिक्काके पसपरात
गुवा । पित्तापुनाएच पयवर्ताया तसकाइय पयवर्तगा । पचनोमेसे सर्वकाका पसपरातगुवा । तिरिक्काके उहुलायतिरियकाय पसं । पडासाय

लोए इत्यादि । इमानि पदस्यार्थमूत्राणि प्रागुक्तैर्द्वयसूत्रवद्वाक्योपनि साग्रत भीषिकप्रसङ्गायापयोपार्श्वसङ्कायसूत्रस्या ४-से साधुवा
एवं सङ्कतोवा तस्यकारणा तलोक्त इत्यादि ॥ इमानि पद्वैद्वयसूत्रवद्वाक्योपनि गत सेत्रद्वार २४ । इदानीं यद्यद्वारं वक्तव्यं यद्योपलक्षितं द्वारं
तदा ४-एवसिद्धं ज्ञत । श्रीशार पाठपरस कम्मस्स वधगाण वधधगाण मिस्सार्थि ॥ इहा युगमयवकार्यपक्षानां पर्यासाऽपर्यासाणां सुप्रकायता

उडुलोयतिरियलोए अस्सस्विज्जगुणा, अहोलीयतिरियलोए सस्वेज्जगुणा, उडुलोए सस्वेज्जगुणा, अहोलीए
सस्वेज्जगुणा, तिरियलोए अस्सस्विज्जगुणा । खेप्पानुयाएण सङ्कतोवा तस्सकाहया अूपज्जत्तया तेलुक्को उडु
लोयतिरियलोए अस्सस्वेज्जगुणा, उडुलोए सस्विज्जगुणा, अहोलीए सस्विज्जगुणा, तिरियलोए अस्सस्वेज्ज
गुणा । खेप्पानुवाएण सङ्कतोवा तसकाहया पज्जत्तया तेलुक्को उडुलोयतिरियलोए अस्सस्विज्जगुणा, अहो
लीयतिरियलोए सस्वेज्जगुणा, उडुलोए सस्विज्जगुणा, अहोलीए सस्विज्जगुणा, तिरियलोए अस्सस्वेज्जगु
णा । द्वार २४ । एएसिणं जते । जीयाण अ्याउस्स कम्मस्स वधगाण अ्यधगाण अ्यपज्जत्ताण पज्जत्ताण

तिरियलोए सस्विज्जगुणा । पिक्कावे उडुकाक तिर्यक्कावे पसयवातगुणा पधाकावे तिर्यक्कावे सस्विज्जगुणा । उडुलोए सस्विज्जगुणा । पद्दोलीए स
स्वि । उडुकावे सयवातगुणा पधाकावे सयवातगुणा तिर्यक्कावे पसयवातगुणा । पिक्काकाएवं सस्वलोका तसकाह यपज्जत्तया, वेपथोमेके सर्वेकाह
पसकाहपद्दोली । तिलोव उडुकाकातिरियकाव पस । पिक्काव उडुकाकतिरियकावे पसयवातगुणा । पद्दोलीयतिरियलोए सस्वि उडुकाएवं स ।
पधाकोकतिर्यक्कावे सयवातगुणा उडुकावे सयवातगुणा । पधाकाएवं स तिरियलोए पस द्वार । पधाकावे सस्विज्जगुणा तिर्यक्कावे पसयवातगुणा
इति तोवे ३ पद २४ । सीनोसमा द्वार काविवा ॥ एएसिद्धं भते जीवावं । इद्वे वधद्वार कथेत्ते—वेमगवन् उडुलोवेने । पाउकअस्सयगाव पद्वसमा
व पज्जत्ताण पपज्जत्ताण । पाउकमगावधने पाठकमेना वधधकमेपर्योता पपद्दोलीयावे । सुतावं जागराव समोवयाव पधमाहयावं । सुतावे जा

ह्यस्यै क्वद्विपान अधिकृत्य वेदितव्य यस्माद् उपयोक्ता सुता एव सत्यते जागराद्यपि, उक्त मूलटीकार्या-अत्राश्रयपक्षता सुता सन्नति, केह अप्यज्ज्ञ
 तना लेखिं बलिष्ठा समया अतीता ते यद्योवा इयर विद्योवणा यव सेवा जागरा पञ्जतगा ते सखिज्जगुणा इति, जागरा पर्याप्ता स्ते न सर्वमे
 यगुणा इति तथा समवहताः स्वस्लोका यतइह समवहता मारणातिजसमुत्पातन परिगृह्यत मारणातिज य समुत्पातो मरणकाले न श्रयकाल
 तथाऽपि न सर्वया मिति स्वस्लोका स्तेऽप्यो असमवहता सकयगुणा जीवज्जासस्या उत्तियदुत्पात् तथा स्वस्लोकाः सातवदका यत इह य
 इवा साचारकशरीरा चरु प्रत्येकशरीरिणः साचारकशरीरा य चरुो असातवदकाः सस्या सातवेदिना प्रत्येकशरीरिणः सुद्रुपास सातवेद
 काः, स्लोका असातवदिन, कतः स्लोकाः सातवदका, स्याज्यो असातवदका सकयगुणा सथा स्वस्लोका इयोपयुक्ता इद्विपोपयोतो हि प्रत्यु
 त्यक्तासविषय सतः तदुपयोजनकास्य स्लोक्तत्वात् पृष्ठासमे स्लोका असाप्यते यदातु तमवाच्यं इद्वियस दृष्टा विचारयत्यो अयसश्रया अपि त
 दा नैद्विपोपयुक्तः स अप्यद्विपते ततो नन्विपोपयोनस्या अतीताऽजागतकासविषयतया बहुकालत्वा स्वक्येयगुणा नोद्विपोपयुक्ता सथा सर्व
 स्लोका अनाकारोपयुक्ता अनाकारोपयोगकास्य स्लोक्तत्वात् साकारोपयुक्ताः स्वक्येयगुणा अनाकारोपयोगकाता त्वाकारोपयोगस्य स्वयपयु

सखेज्जागुणा, सागारीवउप्ता सखिज्जागुणा, नोइदियउवउप्ता यिसेसाहिया, असातावेदगा यिसेसाहिया,
 अ्सनोहिया यिसेसाहिया, जागरा यिसेसाहिया, पञ्जसुगा यिसेसाहिया, अ्याउस्स कम्मस्स अ्यवधगा

ने पर्वाप्ता जागता बहिदे । तेमाटे असेवतातगुणा सर्वलोका समाहित मरचसमवहता चायोसे पविसे मरणातसमवहता मरचकासे इवे । तेमाटे प
 यमाज्जा सययातगवा जे कोवनाकावा वचा माटे सबलोका सातावेदनीय प्रत्येकशरीरी साधारण शरीरो असातावेदकने असययातगुणा सबलो
 का इ द्विबापयुक्त असेवतातगुणा इ द्विबापयुक्त प्रत्यत्यवकासे ते अययागकास कोकासे प्रच्छोसमे अका पामिये मार द्विबापयुक्तकासात्रो अनोतामाग
 ना विवद वचा माटे असेवतातगुणा सर्वलोका अनाकारापयोवनाकास योमाटे । भासासवेवया यि० असमाज्या यि० आमरविसे पञ्चमया यि

कल्यात् इदानीं समुदायगत धूर्तोक्त नऽप्यवदुल प्राप्यते, सयसोका जीवाः आयुःकर्मणो धर्मकाः आयुर्ब्रह्मणसस्य प्रतिनियतत्वात्, तेभ्यो ऽ
 पर्याप्ताः सवयेयगुणा, यस्या उपर्योसा चतुर्गुणान्नवत्रिमाणाद्यऽवस्थाप्राप्यः पारताधिक मायु बलति ततो ह्रीं चित्रागाव स्रजकाल एको यत्र
 काल इति यपकामाद व्यपकासः सत्ययगुणः तत्र रस्ययगुणाद्या उपर्योसा व्यापककल्याः, तस्यो उपर्योस्यः सुप्ता सत्येयगुणायास्माद ऽप
 र्योसपु च पर्यासपु च सुप्ता सत्यते पर्यासाद्या सत्ययगुणा इत्य उपर्योसस्य सुप्ता सत्येयगुणा सत्य समवस्था सत्ययगुणा यदुना

त्रिसेसाद्विया, दार २५। खेत्ताणयाण सवत्यावा पोगला तेलुक्को उहुलोयतिरियलोए स्युणतगुणा स्युहो
 लोयतिरियलोए विससाहिया, तिरियलोए स्यसस्वेज्जगुणा उहुलोए स्यसस्वेज्जगुणा स्युहोलोए त्रिसेसाहिया
 विसाणयाण सवत्यावा पोगला उहुविसाए स्यहोविसाए त्रिसेसाहिया उत्तरपुरिच्छिमेण दाहिणपस्सिच्छि
 मेणय दोवि तुप्ता स्यसस्वेज्जगुणा। दाहिणपुरिच्छिमेण उत्तरपुरिच्छिमेणय दोयि तुप्ता त्रिसेसाहिया पुरिच्छि

पाठकमनुपययना दार। तेहो साका। रोयवाण सवत्यावातमका सनाकारापयाम दो साकारापयामा कास यवा ते पर्यासा विसेसाद्विच पाय कर्म
 ना यदको यत्र विसेसाद्विच एतल यत्रार २५। आ तोले पदे अस्सवस्समीहपूरा दवा। विस्साववाएय सवत्यावा पयस तिसाको सवुत्तायति
 रियवार यत्रतगुणा। विसे पुत्तसहार सवैवे—यत्रने प्रमावेवरो प्रज्जवो के सव्यास्यत्थ ते वेकास्यत्थापो याला पदसखे खंडकाव तिरिक्कोके यत्रतगुणा।
 उहसाकना यदमेमहे एतरनमरवे तेमटे यत्रतगुणा के। यकासायतिरियकाए विसेसाद्विच तिरियकाए सवत्यावा सवुत्ताए यत्रतगुणा।
 तहो यथासाव तिसवत्यावे प्रागज प्राकार येमतरने फरसे विसेसाद्विचमाटे तेहो तिसवत्यावे यत्रत्यातगुणा यत्रपसव्यातगुणा माटे खड सोवे य
 सव्यातगुणा तिसवत्यावको खडकोव यत्रत्यातगुणा माटे। यकासाए विसेसाद्विच विस्साववाए यकादिमाए विसेसा
 द्विच उत्तरपरएत्तमव। यथासीक विसेसाद्विच सवत्यावविच माटे ० रासव्यावविच विसेसाद्विच विसेसाद्विच यत्रा ० रा। प्रमा

एतान् नोद्विषाम् उपिक्त्य वेदितव्यं, यस्माद् उपर्याप्ता सुप्ता एव सन्त्यते जागराद्यपि, सक्त मसटीकाया-जम्भा अपञ्जता सुप्ता सन्ति, नोद्विषाम्
 तना वेत्ति संक्षिप्ता समया प्रतीता ते ययोवा इयर विधोवगा यव सेसा जागरा पञ्जतगा ते सखिज्जगुवा इति, जागराः पर्याप्ता स्ते न संख्ये
 पणुवा इति तथा समवदताः खल्लोवा यतइइ समवदता मारवातिकसमुद्भातम् परिपुष्टत मारवातिक य समुदपातो मरयकासे न कायकाल
 तत्राऽपि न सर्वेया मिति सबलोवा स्तेप्ये असमवदता संख्येयगुवा जीवजकाशस्या अतिवदुत्तान् तथा सबलोकाः सातवेदका यत इइ य
 इका साधारणधरीरा जने प्रत्येकधरीरिः साधारणधरीरा य सर्वो असातवकाः कस्या सातवेदिनः प्रत्येकधरीरिः सुप्तास, सातवेद
 काः, लोका असातवेदिनः, लतः लोकाः सातवदकाः, लप्ये असातवदका संख्येयगुका लपा सबलोका इयोपयुक्ता इद्विपोपयोगे हि प्रत्यु
 त्यन्कासविषय लतः लदुपयोगकास्य लोकात्वात् पृष्ठासमये लोका लताप्यते यदानु तमवापे इद्विषेय वृद्धा विचारयत्यो अथसप्तया अवि त
 दा नोद्विपोपयुक्तः स अयद्विषयते ततो नन्विपोपयोगस्या अतीताऽजागतकासविषयतया वृद्धकालत्वा तस्येयगुवा नोद्विपोपयुक्ता लपा सर्वे
 लोका अनाकारोपयुक्ता अनाकारोपयोगकास्य लोकात्वात् साधारोपयुक्ताः संख्येयगुवा अनाकारोपयोगकासा त्वाकारोपयोगस्य संख्येयगु

सखेज्जगुणा, सागारोवउप्ता सखिज्जगुणा, नोद्विदियउवउप्ता यिसेसाहिया, असातावेदगा यिसेसाहिया,
 अ्समोहिया विसेसाहिया, जागरा यिसेसाहिया, पञ्जसगा यिसेसाहिया, अ्थाउत्स कम्मस्स अ्थधगा

ने पर्याप्ता आमता कहिये । तेमाटे संखेज्जगुणा सबलोका समाहित मरयसमदुधात आयोसे पविसे मरवातसमदुधात मरवातासे इति । तेमाटे स
 समाज्जना सबसातगवा से नोद्विवाजाकास तथा माटे सबसाजा सातावेदगीय प्रत्येकधरीरो साधारण धरीरो पसातावेदकने पसयवातयुवा सबको
 वा इ द्विवाणयुत्त संखेज्जगुणा इ द्विपोपयुक्त प्रत्यत्यवकासे ते तयवाजकास बोकावे प्रत्येकधरे जाडा यामिये मार द्वियापयुक्तकासातो पभोतानाम
 ना विषय तथा माटे पसयवातगुवा सर्वलोका अनाकारोपयोगकास बोवसाटे । आधासवेयगा वि अ्समाज्जना वि जागरविसे पञ्जसगा वि

[illegible][illegible]

बा० पद्मिनीवतिरिचमाद विवेकादियाद उक्तुमात्र असिद्धिप्रमाणेन पञ्चाशत् सख्यगुणाद तिरियाशत् सख्यगुणाद । चेत्तच्छी सख्योठा द्रव्यासो
 पितृव्यादिनिवे मात्रे परस्मात् धर्मादिभागपदगता महात्मासु समष्ट्यामकीर्तने पञ्चिन्ना तोगबोध करत्ते तेन द्रव्याभावात् परमत्तकीर्तने पदवचने प्रत्येक
 रो मोरप्रत्यये परस्मैकरोने चानतमुत्रा पुनै तदयो अत्र साक्षित्यकृतौ यत्किञ्च न उपपन्नमने करत्ते ते परमत्तगुणा इवे । तेनो स्यात्साक्षित्यकृतौ वि

पर्याप्त उपर्यासेषु च मारुतानि कश्चमुद्गातन समवहतानां सदा सप्रमाणत्वात् तेष्व सातावेदका सङ्ख्यगुणा ध्यायुर्यन्यथापर्याप्तस्तु सद्यपि वा तवेदकानां सप्रमाणत्वात् तस्य इन्द्रियोपयुक्ताः सङ्ख्यगुणा यसातवदकामास वि इन्द्रियोपयोगस्य सप्रमाणत्वात्, तेष्वो अनाकारोपयोगोपयुक्ता इन्द्रियोपयोग्यु नो इन्द्रियोपयोग्यु वा अनाकारोपयोगस्य सप्रमाणत्वात् तस्य साकारोपयुक्ता सङ्ख्यगुणा इन्द्रियोपयोग्यु नो इन्द्रियोपयोग्यु पयोग्यु साकारोपयोग्यु नो इन्द्रियोपयोग्यु विद्यापापिका नो इन्द्रियो अनाकारोपयुक्तामा नपि तत्र प्रवेपात् साकाराभाका रोपयुक्तामपि तत्र प्रवपात् अत्र विनयकनामुद्गाथम अस्त्रावस्थापमया निदक्षण मुच्यते-इह सामान्यत किं साकारोपयुक्ता द्विनवत्यधिक इत १८२ तेष किं द्विधा इन्द्रियसाकारोपयुक्ता तत्र इन्द्रियसाकारोपयुक्ताय तत्र इन्द्रियसाकारोपयुक्ता किंसा अतीवसोका इति विद्युतिवक्ष्या कल्प्यन्ते अथ द्विसप्तत्युत्तर इत १८३ । नो इन्द्रियसाकारोपयुक्ता नो इन्द्रिया अनाकारोपयुक्ताय द्विपञ्चाशत्सख्या सत सामान्यतः साकारोपयुक्ते

मेण स्यसखेजगुणा पञ्चच्छिमेण त्रिससाहिया उप्परेण त्रिससाहिया खेप्पणुवाएण
सवत्थावाइ वच्चाइ तेषुक्खे उहुळोयत्तरियलोए छणतगुणाइ अहुळोयत्तरियलोए त्रिससाहिमाइ उहुळोए

[illegible]

स्य इन्द्रियमाकारीपयुक्तं विंशतिरस्येयऽपनीतेषु द्विषणाशास्त्रस्येयुः समाकारीपयुक्तं तेषु सप्त्ये प्रथिमेषु द्वेतेषु अर्धं च स्यचिन्ने नवतः ततः
 साकारीपयुक्तस्यो नाष्टन्द्रियोपयुक्ता विद्यायाधिका साप्त्यो उद्यातवेदका विज्ञेयाधिका उद्यातवेदकात् १० तस्यो उद्यमव
 दता विद्यायाधिकाः सातवेदकानामऽप्युद्यमवदतस्यत्रावातः, तस्यो जागरा विज्ञेयाधिकाः समवदतानामऽपि केयावि ज्ञागरस्यात् १० तस्यो उद्यमव
 पर्वासा विज्ञेयाधिकाः सुप्तानामऽपि केयाधि त्वयोऽप्यसात् सुप्तानि पर्वासाऽप्यसात् पर्वासा एवेति नियमः १२ । तेष्वपि
 ऽपि पर्वासास्य चापु कर्मोऽप्यथा विज्ञेयाधिका अवयोऽप्यसात् कर्मव्यवहारात् १३ । इदमवाऽप्यवदुत्तु विनियमजानुपय्याय स्यापनारा
 शिनि ह्यवदवत इह द्वे पत्नी उद्यमवदतस्येन स्येन तत्रोपरितस्या पत्नी चापु कर्मव्यवहारात् १४ । इदमवाऽप्यवदुत्तु विनियमजानुपय्याय स्यापनारा
 ना समाकारीपयुक्ताः इमेव स्याप्यत तस्या अपसस्या पत्नी तयामेव पठानामपस्यात् यथासक्य सापुरवन्धका पयोसा जागरा असमवदता अप
 सातवेदका नोष्टन्द्रियोपयुक्ताः साकारीपयुक्ताः स्यापनाथय माद्यमिति तत्परिमात्रं स्यापनाथका स्याप्यत ततः सापयवर्गानि किंल ज्ञप्येन सस्य
 पयुवानीति द्विगुणो द्विगुणांशं तेषु स्याप्यत तद्यथा-हो बत्वार-हो योछा इति त्रिगुणं तनु पाणि सर्वाऽपि बीवराणि रत्नानामस्यरूपो ऽप्य
 उत्तरकल्पनया पदपर्यायव्यवहारात्तद्वयपरिमात्रः परिकल्प्यत ततो ऽस्मा त्राक्षेरायुर्वस्यकादिगताः सङ्गा शोधयित्वा यत् क्षेप मऽवतिष्ठति सदापुर

अस्येजः ० अहोछोए अणतगुणाइ तिरियलोए सखिजगुणाइ विसाणयाएण सख्योवाइ दहाइ अहेदि
 साए उहुविसाए अणतगुणाइ उत्तरपुराच्छिमेण दाहिणपच्छिमेण दोवि तुसाइ असखेजगुणाइ दाहिण

वाः पद्मोनीयतिरिक्ताए विज्ञेयाधिकाः उद्यमवदतस्यत्रावातः पञ्चाशत् पञ्चविंशत्युपाद तिरिक्ताः सखिजगुणाइ । चेवात्री सवबोता प्रत्यक्षमो
 मित्रायाधिविने भावे परस्यात् पद्मोनीयतिरिक्ताए पञ्चाशत् पञ्चविंशत्युपाद तिरिक्ताः सखिजगुणाइ । चेवात्री सवबोता प्रत्यक्षमो
 रो वीरद्वयने परसेवरोने पञ्चतमुपा इये तद्वतो उद्यमवदतस्यत्रावातः पञ्चाशत् पञ्चविंशत्युपाद तिरिक्ताः सखिजगुणाइ । चेवात्री सवबोता प्रत्यक्षमो

पर्याप्त उपयोक्तृषु च मारवाणिकसमुद्घातन समवद्वाना सदा सत्यमानत्वात्, तेन सातावेदका बहुयुगा आर्यन्यकापर्याप्तसुसुधवि सा
 एवेदकाभा सत्यमानत्वात् तत्र इन्द्रियोपयुक्ताः सङ्केयगुणा असातवदकानामपि इन्द्रियोपयोगस्य सत्यमानत्वात्, तेनो अनाकारोपयोगोपयु
 क्ताः इन्द्रियोपयोगेनो इन्द्रियोपयोगेन वा अनाकारोपयोगस्य सत्यमानत्वात् तस्य साकारोपयुक्ता सङ्केयगुणा इन्द्रियोपयोगेनो इन्द्रियो
 पयोगेन साकारोपयोगेनो इन्द्रियोपयोगेनो इन्द्रियोपयोगेनो इन्द्रियोपयोगेनो इन्द्रियोपयोगेनो इन्द्रियोपयोगेनो इन्द्रियोपयोगेनो इन्द्रियोपयोगेनो
 रोपयुक्तानामपि तत्र प्रचपात् अत्र विमयवदानुप्रायस्य अष्टावस्यापमया निवद्वानमुच्यते-इह सामान्यतः किञ्च साकारोपयुक्ता द्विनवत्यधिक
 कृत १८२ तैव किस द्विधा इन्द्रियसाकारोपयुक्ता नो इन्द्रियसाकारोपयुक्ता तत्र इन्द्रियसाकारोपयुक्ताः किञ्चाऽतीवस्तोका इति विद्यतिसस्या
 कस्यमे सर्वं द्विसप्तसुतर इति १८२ । नो इन्द्रियसाकारोपयुक्ता ना इन्द्रियाऽनाकारोपयुक्ता इति पञ्चाष्टकस्या सप्त सामान्यतः साकारोपयुक्ते

मेण अस्वस्वज्ञगुणा पञ्चच्छिमेण विससाहिया उत्तरेण विससाहिया खेज्ञाणवाएण
 सस्योवाइ दवाइ तंठुक्के उहुलोयतिरियलोए अणतगुणाइ अहुलोयतिरियलोए त्रिससाहियाइ उहुलोए

च पञ्चाष्टक समधिक ० सातराज कारक विमयाधिक इवे इमानकवे विद्युत्प्रभापयवदानमव कूट तेनो उपरिबनपइह । दाहिपपस्यिससय
 दावितवा पञ्चलज्जगुणा दाहिपपरज्जिमेव उत्तरपस्यिसमवद्वानितवा विससाहिया परस्मिन्वच पस्यिसगुणा पस्यिसमेव विससाहिया दाहिवेव
 विवेदाहिया उत्तरव विससाहिया । दाहिप पस्यिस विससाहिया पस्यिसातगवे दाहिवावे तेनो विस्येव उत्तरपयमे प्रत्येव २ विमयाधिक सस्यान
 ने परकरेसत्ति इहा सोममसर्ववमादनानव कूट तिहा मूकपट्टनस्यमूत उपग्रतावे तेनो पूर्वे पस्यिसातगुणा सस्या पस्यिसातपया माटे तेनो
 पयिमे विमयाधिक पञ्चाष्टकसामने सङ्केमावे सदा पट्टनस्यना ज्ञानकवे दाहिवे विमयाधिक भवनमेस्यमेभावे पट्टनविमयाधिकवे उत्तरपट्टनस्य विमो
 पाचिव मानसरावरवे तेमाटे ज्ञाना पुट्टनस्यना पञ्चाष्टकस्ययो कवेवे । दाहिवाउवाएव सस्यावा इ इवाइ तिसाव उठुवायतिरियसाए पञ्चतगु

नोपाधिबलात् । तत्र पुद्गला विद्योपाधिका क्षेत्र्य छत्तरपूर्वसां दक्षिणपरिमितायाः प्रत्यक्षमऽसुरयेयगुणाः स्वस्थानेतु परस्परं तुल्या सत स्तो हेतु
 यि दिक्षौ कृत्वादिनिगते मुक्तावालिसंस्थिते तिर्यग्स्थोक्तमऽधोक्षोकात्मद्वैलोकांत पयस्यविते तेन चोद्यस्या ऽसङ्केयगुणत्वा तत्र पुद्गला असुरयेय
 गुणाः क्षेत्रतु स्वस्थाने समभिपति पुद्गला अपि स्वस्थान तुल्या स्वान्मोऽपि दक्षिणपूर्वस्या मुत्तरपरिमितायाः प्रत्यक्ष विद्योपाधिकाः स्वस्थानेतु परस्पर

पुरिच्छिमेण उत्तरपरिच्छिमेणय दोवि तुलाइ यिसेसाहियाइ पुरिच्छिमेण स्वसखेज्जागुणाइ पञ्चच्छिमेण यि
 सेसाहियाइ दाहिणण यिसेसाहियाइ उत्तरेण यिसेसाहियाइ । एएसिण जते । परमाणुपोगगलाण सखेज्जाप

प्रथापिब निगारेक ० राज दक्षिणामनो तेहको छत्ताको सखेज्जातगुणा सच सखेज्जातगुणा माटे सधासाको सततगुणा सधासोबयामे संधभासद्वय
 बाधना सततापर्याप माटे तियकृत्वाको कासकृत्वाविशेषाधिक सखेज्जातगुणा इवे । दिसाचवाएच सखेज्जातगुणा इद्वयाइ चोदिसाइ छत्तादिसाइ स
 चतगुणाइ उत्तरपरिच्छिमेच दक्षिणपरिच्छिमेच दावितकाइ सखेज्जातगुणाइ । विवेदिय थायो सामान्यपचे द्रव्यनो पल्लवइलकहेछे—दियिने सनु
 मारे सववाकाइल चोदिय पाककोपरे बयाचयो तेहको छत्तादिय सततगुणा बिम इका साके सननो पाचसंवाजन स्फटिकमयकांछ तिक्का चट्टा
 दिस प्रभायेको छत्ता विसे सततगुणाके तेहको, इमान्मके तथा मेकतिक्के च दक्षिण सरोयाके सेचयो सखेज्जातगुणा माटे । दाहिणपुरिच्छिमेच सत
 रपरिच्छिमेचय दावितकाइ विससाहियाइ । सखेज्जातगुणा सजितकृचे वायकृचेए बसरिय छे येनेदियपाधिकछे विसरप्रममसखेवंत कूटायोधूमकाता
 दि कतपदभद चर्चा कपचे तेमाटे विमोपाधिकछे । परिच्छिमेच सखेज्जातगुणाइ पदच्छिमेच विससाहियाइ दाहिणेच विससाहियाइ उत्तरेच दि ।
 तेहको पूरनोदियिद्वय सखेज्जातगुणा सचसखेज्जातगुणा माटे तेहको पर्यापे विमोपाधिक सधासाकग्यामादि सुखोभासयथा पुद्गलसद्वय रचित तेहको
 दक्षिणे विमोपाधिक परे मुपनैभावे । तेहको उत्तरदिशि विमोपाधिक मानसरावरने विवे जोयद्रव्यनो तेचस्वामच पुद्गलसखेज्जातगुणाइ द्रव्यधवाछे तेमाटे
 विमोपाधिक कहिचे । एरविच भते परमाणुपुमकाण सखिणपरसिवाच सखिणपरसिवाच सखेज्जातगुणाइ सखेज्जातगुणाइ पदसद्वयाए पदसद्वयाए द्रव्यइप

[illegible]

प्रादक्षिण्यं प्रहरं भेते हे अपि प्रहरं तद्वत्सोक्तविर्यसोक्तं उच्यते-तथाऽजनां सङ्ख्येयादेक्षिका समस्तं असङ्ख्यप्रदक्षिका एव
न्यां स्पष्टयन्तीति दृष्ट्वापतया सप्तगुणा साध्यो ऽधोसोक्तविर्यसोक्तमाशुक्तकारस्य प्रहरद्वयस्य विशेषाधिकारं कृत्रस्य साध्यामविष्कम्भाभ्यां भक्ता
कविहोत्रादिबलात् तेष्वं स्तिर्यसोक्तं असङ्ख्यगुणाः सप्तस्याऽसङ्ख्यगुणत्वात् तस्य सङ्ख्यसोक्तं असङ्ख्यगुणा यत स्तिर्यसोक्तस्य दूषुसोक्तस्य न
सङ्ख्यगुणमिति तेष्वो ऽधोसोक्ते विशेषाधिकारं समुक्तोक्तस्य विधेयाधिक्यत्वात् दशोमसप्तसङ्ख्यप्रमाणो ह्यदुलोक समर्थियसप्तसङ्ख्यप्रमा
न सप्तऽधोसोक्तः, सुश्रुतिं दिव्यस्तपातना अष्टादशगुणत्वाद्-दिशामुवाच सप्तत्योवा योगस्य सप्तद्वयस्य इत्यादि यं दिगनुपातेन दिगनुधारण
चित्तस्यानां पुद्गलां सप्तसोका सङ्ख्यविधिः ३३ रज्यप्रमासमन्वितमयेकमप्यं असुप्रमादीयको सप्तसप्तसाहस्रभिगता यत्प्राप्रदेशं सप्तद्वयस्य सप्तो
कानां सप्त सप्त सप्तसोकाः पुद्गला साध्यां ऽधोदिव्ये विधेयापिका असोदिव्यपि कृष्णादेव प्रथममिति तत्तु प्रदद्या याव प्रोक्तानां सप्त सास्यादि

[illegible]

कयरे२ हितो शुप्यावा४ ? गो०, ! सस्रुत्योथा शुणतपदोसिया खंधा दस्रुठयाए परमाणुपोगला दस्रुठयाए शु

परमात्र पुद्गलजनतुलाह । सखिज्जपवसिया साधारणाय सखिज्जमया सर्वास्तिज्जपवसिया साधारणाय चम्पू पयसद्वारा सप्तस्थाना प्रकृत
पदसिवाचरा । संफातप्रदमरुष द्रव्यो सख्यातगुणां सर्वेषां पक्षपातप्रयो एव इत्येको असख्यातगुणां सर्वेषां जननप्रदगाः सुख । परमाणु

रं तुस्या' कथं विशेष्यापिका इति चेत् तच्छते-इह सीमसुखस्यमात्रेणैव सह २ कृटानि विद्युत्प्रभमाल्यवतो अथ २ संपुञ्ज कूटेषु चूमिका शयप्रया
 यादिसूक्ष्मपुद्गलाः प्रभूताः धृत्ववन्ति ततो विशेष्यापिकाः स्वस्थानेन तु स्रजस्य पर्वतादयः सुमामत्वा भुस्या स्तस्यः पूयस्या विक्षिप्तसुखेपगुणा लो
 प्रस्याऽऽस्रस्यपगुणत्वात् तेन्य' पद्यमायां विद्यापयिका शबोसौकिज्यामीयु क्षुपिरप्रभावतो यद्गुणा पुद्गलामागऽवस्थामजावात् तस्यो दक्षिणस्या
 विशेष्यापिका बहुजनवन्मुपिरप्रवादात् तेन्य उत्तरस्या विशेष्यापिकाः यत् उत्तरस्यामाऽयामविप्रप्राप्या सकृदप्योऽनकोटीकोटीप्रमाणा मामसु
 खर स्तत्र ये जलचरा यमकसवासादयश्च सत्त्वा स्ते अतिबहव इति तथा ये तैवसकामश्चपुद्गला स्त अपिकाः प्राप्यते इति पूर्वोक्तस्यो विद्यापयिचि
 काः तदेव पुद्गलविषयमस्त्वपुत्समुच्च मिदार्थी सामान्यतो ब्रह्मविषय सत्त्वानुपातेन साह-हेतायुवायश्च सवृत्त्योवाह दृष्टाहं तैसोक्त इत्यादि ॥ हे
 ब्रामुपातम विग्न्यमानानि ब्रह्मादि सवस्तोकाणि त्रैलोक्यस्वरूपस्योनि यतो जनोस्तिकायाऽप्यर्नास्तिकायाकाष्ठासिकायद्रव्यादि पुद्गलास्तिकायस्य
 महास्त्वन्वावीवादिताकायस्य नारकान्तिकसमुद्भूतता लीला लैलोक्यवद्गता लीला लैलोक्यव्यापिनः स्रजस्ये इति सर्वस्तोकाणि तस्य कहुस्तोक्तियल्लोके
 प्रागुक्तस्वरूपमस्वरूपयात्मके समन्तगुणानि समर्ते पुद्गलद्वये रमते वीवद्वयी तस्य स्वरूपज्ञानात् तस्योऽप्योक्तियल्लोके विज्ञेयापिकानि कटु
 लोकातियल्लोकादबोसोक्तित्वेस्तोक्तस्य ममान् विज्ञेयापिकत्वात् तस्य कहुस्तोके सवृद्धपुण्डानि स्रजस्याऽऽस्रस्येपगुणत्वात् तस्योऽप्योक्तोके स
 मन्तगुणानि' कथमिति चेत् उच्यते इहायोसोक्तपामनु कासोक्ति तस्मिन् कासस्य तदस्वरमासुखस्यपाऽवस्थेयाऽनन्तप्रादेशिकद्रव्यस्येवकासप्रावयया

दैचियाण स्रसस्त्रिज्जपदेसियाण स्रणतपदेसियाणय स्वधाण दक्षथाए पएसथाए दक्षठ पदेसथाए

एकदृष्टाए । शिषे परमाशयपदस्य सज्जातप्रदेय भगतप्रदेयात्री शक्यमशुखलक्षणे-हेमगहन एवने परमाशुपदयश्चद्रव्यने सज्जातप्रदेयी पसस्त्रातप्रदेयोने
 परनतप्रदेयोने खबने द्रव्यवी प्रदेयीवी श्रूयने यके प्रदेयेने द्रव्याश्च प्रदेयाद्यए मादि । कथर २ दितो श्रव्यावा ४ भोदमा सज्जावा पञ्चतपरसिया खया
 दक्षथाए परमाशुपमशाद्व्यदृष्टाए शबंतशुवा । जेहा १ जी भाका बवा ४-चगेतम सयजीवा भगतप्रदेयो मिको गोपनाकप तेवाडा सभापेके द्रव्यको

र तुल्याः कथं विज्ञेयापिक्का इति चेत् उच्यते-इह सौममसगम्यमादेभ्यः सप्त २ फुटानि विशुत्प्रममास्यवती नव २ तेषु च फुटेषु चूम्बिका यवयया यादिभूस्मपुट्रभाः प्रभूताः सन्भवन्ति ततो विज्ञेयापिक्काः स्वस्थानेन सप्तस्य पर्यन्तादेय समानत्वा तुल्या स्तेभ्यः पूवस्या विज्ञा असंख्येयगुणा से प्रस्थाऽसंख्येयगुणत्वात् तेन पयिमाया विज्ञयापिक्का अघोसौदिकप्रामेण्यं शुपिरजावती द्यूना पुट्रलामाभऽवस्थामन्नावात् तस्यो दशिखस्य विज्ञेयापिक्का यदुप्रबन्धशुपिरप्राधात् तेन्य उतरस्या विज्ञेयापिक्काः यत उतरस्याभाऽयामपिक्काया सख्यपयोजनकोटीकोटीप्रभावं मामस सर क्षत्र ये जलचराः पनकसेवात्तादयश्च सत्वा से क्षतियश्च इति तथा ये तैजसकामश्चपुट्रला क्ष अपिक्काः प्राप्यते इति पूर्वोक्तस्यो विज्ञयापिक्काः तदेव पुट्रलविषयमस्त्वबुत्तुत्तुश्च विद्वान् सामान्यतो द्रव्यविषय सञ्चानुपातेन बाह-सेताशुवाएवं सत्त्वयोवाह द्यूना तैलोक इत्यादि ० के शानुपातन चित्त्यमानानि द्रव्यानि सद्वस्तोकाणि विसोक्षसंरपद्यानि यतो जर्मादिकायाऽप्यर्मादिकायाकाशादिकायद्रव्याणि पुट्रलास्तिकायस्य नष्टास्त्वभावीकादिकायस्य भारकान्तिकश्चमुपगतना तीव्रसमवहता बीवा खेसोक्ष्यव्यापिन स्तबास्ये इति सखस्तोकाणि, सस्य जद्वस्तोकातियस्तोके प्राणुजस्वरूपभतरद्वयात्मके जलश्वानुवाणि जगति पुट्रलद्रव्ये रजते बीमद्वर्क सस्य संरपद्यन्तात्, तेभ्यो ऽघोसोकातियस्तोके विज्ञेयापिक्कानि कटु लोकातयस्तोकादघोसोकातिर्यस्तोकास्य मनान् विज्ञयापिक्कत्वात् तस्य जद्वस्तोके अचङ्कयगुणानि चेशस्याऽसंख्येयगुणत्वात्, तेभ्यो ऽघोसोके च नस्यगुणानि कथमिति चेत् उच्यते इहाघोसोकाभंभु कासोक्ति वसाश्च कासस्य तत्त्वत्प्रमादुसखययाऽसंख्येयाऽनन्ताप्रादेशिकद्रव्यसेत्रकासज्जावपर्या

देसियाण अससिआपदेसियाण अणतपदेसियाणय स्वाधाय दसुठयाए पएसठयाए दसुठ पदेसठयाए

यस्युपाय । द्विने परमावपुनरुक्त सख्यातप्रत्यय समतप्रदेशासौ भव्यवृत्त्यवस्थे—हेमगवन् एवने परमावपुनरुक्तद्रव्यने सख्यातप्रदेशयो ससख्यातप्रदेशयोने समतप्रदेशयोने उपने द्रव्ययो प्रत्ययोसौ द्रव्यने भवे प्रत्ययेने द्रव्यान् प्रदेशाय मीहि । कथं २ द्विती अथाथा ४ भोचमा सवत्याथा भर्ततप्रदेशिया यथा द्रव्यनाए परमावपुनरुक्ताद्वयुपाय । केही २ यो पाठा कथा ४ द्वाभौतम सवभौता भर्ततप्रदेशयो भिन्नो नोपनाखंभ तेनाका सभावेके द्रव्ययो

पिपिकारत्तं चेन्नस्य प्राचागया स्वरमाकुणाद्युमलाकुणा सख्या अपि विविधितैकप्रदेशावगाढा प्राचाराचेययोरेप्रेटापवारा देकद्रव्यत्वेन व्ययप्रियत
त इत्यनुता एवमप्रदेशावगाढाः पुद्गलाः पुद्गलद्रव्याणि सवकाकाणि लोकाकात्राप्रद्वयप्रमाकाभीत्यथ नष्टि स कायि दयप्रत प्राकाद्यप्रदेशोस्ति य

णतगुणा सखजपदेसिया खधा दव्वठयाए सखेज्जगुणा अ्सखेज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए अ्सखेज्जगुणा
पदेसठयाए सख्योया अणतपदेसिया खधा पदेसठयाए परमाणुपोगला अणतगुणा सखेज्जपदेसिया
खधा पदेसठयाए सखेज्जगुणा अ्सखेज्जपदेसिया खधा पदेसठयाए अ्सखेज्जगुणा दव्वठपदेसठयाए सख
त्योया अणतपदेसिया खधा दव्वठयाए तेचेय पदेसठयाए अणतगुणा परमाणुपोगला दव्वठपदेसठयाए
अणतगुणा सखिज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए सखिज्जगुणा तेचेय पदेसठयाए सखिज्जगुणा अ्सखिज्ज
पदेसिया खधा दव्वठयाए अ्सखिज्जगुणा तेचेय पदेसठयाए अ्सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! एगपदेसो

यथापदेसठयाए यत्तज्ज सखिज्जपदेसिया खधा पदेसठयाए सखिज्जगुणा । परमाणुपदेसठयाए यत्तज्ज सखिज्जगुणा सख्यातप्रद्वयोखध प्रदेयावेबरो
सख्यातगणा । अस्खिज्जपदेसिया खधा पदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए । अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए
सख्यातगणा यत्तज्ज सखिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए यत्तज्ज सखिज्जगुणा । सख्यातगणा यत्तज्ज सखिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए
इत्यपदेसठयाए यत्तज्ज सखिज्जगुणा । परमाणुपदेसठयाए प्रदेयावेबरो यत्तज्ज सखिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए
सखिज्जगुणा । सख्यातगणा इत्यपदेसठयाए सख्यातगुणा । अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए
पदेसठयाए यत्तज्ज सखिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए
पदेसठयाए । इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए
पदेसठयाए । इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए अस्खिज्जगुणा इत्यपदेसठयाए

एकमेव ज्ञापमाहमपरिखामपरिखतामा परमाश्रयादीना मत्तकान्नाप्रदानपरिखामेन परिखतो भवतते इति । तेन्य" सुख्येयमेवोपायगाढा पुद्गला प्रख्या
पंतमा उदयपनुनाः कथामितिवत् । उच्यते-इहानि सुत्रस्यप्राचात्प्यात् ज्ञानुभाषणनासुखस्यया द्विमवेष्टाधगाढा एकपुत्र्यस्वेन विवक्ष्यते तानि

गढाण सखेज्जपदेसोगाढाण अस्सखिज्जपदेसोगाढाणय पोगगलाण दध्ठयाए पदेसठयाए दध्ठपदेसठयाए
कयरे २ हित्ती अण्णवा १ गोयमा ! सव्वल्योत्रा एगपदेसोघगाढा पुग्गला दध्ठयाए सखेज्जपदेसोघगा
ढा पुग्गला दध्ठयाए सखिज्जगुणा अस्सखिज्जपदेसोगाढा पोगगला दध्ठयाए अस्सखिज्जगुणा पदेसठयाए
सव्वल्योत्रा एगपदेसोगाढा पोगगला पदेसठयाए चखिज्जपदेसोगाढा पोगगला पदेसठयाए सखेज्जगुणा अ
सखिज्जपदेसोगाढा पोगगला पदेसठयाए अस्सखेज्जगुणा दध्ठपदेसठयाए सव्वल्योत्रा एगपदेसोगाढा पोगग
ला दध्ठयपदेसठयाए सखेज्जपदेसोगाढा पोगगला दध्ठयाए सखेज्जगुणा तेवेअ पदेसठयाए सखेज्जगुणा

[illegible]

च तथाभूतानि पुद्गलव्याधि पूर्वोक्तैः सर्वेयगुणानि तथाहि-सर्वलोकाप्रदेशा सात्वतो ऽसुरयोपा अपि असंस्पर्शमया दश परिश्रम्यन्ते ते च प्रत्येकचित्तायां दद्येति दश एव प्रदेशावगाढानि पुद्गलव्याधि सात्वानि तत्त्वेव दशसु प्रदेशान्ययद्व्याप्यमोकाद्वारक द्यवो द्विकसयोगा क्षम्यता इति प्रवरपर्यवश्यावगाढयो द्विप्रदेशावगाढानि पुद्गलव्याधि सर्वेयगुणानि एवं तस्यापि त्रिप्रदेशावगाढानि एवमुत्तरोत्तर माय दुरुरुट सक्षयप्रदेशावगाढानि तत स्थितमतत् एवप्रदेशावगाढव्य सर्वयप्रदेशावगाढपुद्गला द्व्यार्थतया सकृदप्युक्ता इति, एवं तस्यो ऽसक्षयप्रदेशावगाढाः पुद्गला द्व्यापतया सकृदप्युक्ता असङ्कतज्ञेद्विजिह्वात् प्रक्षयापतायून् द्व्यार्थपर्यायार्थतासूत्रं सुममत्वात् स्वयं नाव

असंखिज्जपएसीगाढा पोगगला दक्ष्ठयाए अस्खेज्जगुणा तेथेय पएसठयाए अस्खिज्जगुणा । एएसिग जते । एगसमयठितीयाण सखिज्जसमयठितीयाण अस्खिज्जसमयठितीयाण पोगगलाण दक्ष्ठयाए पदे सठयाए दक्ष्ठपदेसठवाए कयरे २ हितो अप्पाया २ ? गायमा । सव्वत्थोवा एगसमयठिइया पोगगला दक्ष्ठयाए सखेज्जसमयठितीया पोगगला दक्ष्ठयाए सखेज्जगुणा अस्खिज्जसमयठिइया पोगगला दक्ष्ठयाए सखेज्जसमयठिइया पोगगला पदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिइया पोगगला पदेसठयाए सखेज्जसमयठिइया पोगगला

पसवसातप्रदयावमाठ पदवा द्व्यादे । सर्वोक्तगुणा तत्र पदसङ्ख्याए यत् । पसवसातगुणा तिमकोकपदयो पसवसातगुणा पयसिख भन्ते एगसम यद्विदयार्थ सखिज्जसमयठितीया । हेमवचनं ७०० उक्तसमयनो प्रतिमानो सव्वसातसमयनो प्रतिमानो । असखिज्जसमयठितीयासथ पल्लसाण दब्बहुवाण पसखिज्जसमयनो प्रतिमापुक्का इत्यको । पदसङ्ख्याए प इपपसङ्ख्याए । प्रदेयको द्व्यावपदेयाव । कयरे २ विता यथावा ४ गो । किवो २ को पयपया इत्यादि वेगेतम । मज्झिमाका एवममयठितीया पयका दब्बहुवाए । सव्वसाता एवममयनो प्रतिमापदकत्ते तेजयो । सखिज्जसमयठितीया पय या दब्बहुवाए सवि । सव्वसातसमयनो प्रतिमापुक्कत्ते तत्रको सकहातया । पयसखिज्जसमयठितीया पयका दब्बहुवाए यत् । पसवसातसमयनी म

पदेसठयाए सखिजगुणा अखसखिजसमयठिईया पोगगला पवेसठयाए अखसखिजगुणा वखठयपवेसठयाए
 सखिजगुणा एगसमयठिईया पुगगला दखठपएमठयाए सखेजसमयठिईया पोगगला दखठयाए सखेजगुणा
 तेचेव पदेसठयाए सखेजगुणा अखसखिजसमयठिईया पोगगला दखठयाए अखसखिजगुणा तेचेव पदेस
 ठयाए अखसखिजगुणा ! एएसिण नते ! एगगुणकालगण सखिजगुणकालगण अखसखिजगुणकालगण
 अणतगुणकालगणय पोगगलाण दखठयाए पवेसठयाए दखठपवेसठयाए कयर कयरोहेतो अण्पाया ५
 ? गीयमा ! जहा परमाणुपोगगला तहा जाणियह्या, एव सखेजगुणकालयाणयि, एव संसाणवि वखसर

तिमपुत्रकये तहको इव पचवयातगुणा । पचसठयाए सगगला एवसमयठिनीया । मदेयाँ सर्ववाका एवसमयठिनीति । पुमका पचसठयाए सखि
 लसमयठिनीया । पुत्रकमदेयाँ सववातसमयठिनीति । पमका पचसठयाए सखि । पचसठयाए सखि । पचसखिजसमयठिनीया पमका पच
 सठयाए पच दखठपचसठयाए । पचसववातसमयठिनीति । पचसववातगुणा इवमदेयाँ । सखिनीया सवमयठिनीया पुमका दखठपचसठयाए
 सववाका एवसमयठिनीति । तिमन पचसठयाए सखि । सखिजसमयठिनीया पमका दखठयाए सखि । सववातसमयठिनीति । पचसववातसमयठिनीति । पचस
 गुणी । तच पचसठयाए सखि । तिमनीवमदेयाँ सववातगुणा । पचसखिजसमयठिनीया पमका दखठयाए पच । पचसववातसमयठिनीति । पचस
 इवको पचसववातगुणा । तच पचसठयाए पच एसिच मते । तिमनीवमदेयाँ पचसववातगुणा इवमयत् । एगगुणकालगण सखिजसमयठिनीति । पचस
 पचसववातगुणा । तच पचसठयाए पच । पचसखिजगुणकालगणे । पचसखिजगुणकालगणे । पचसखिजगुणकालगणे । पचसखिजगुणकालगणे । पचस
 याए । पचतगुणकालगणे पचसखिजगुणकालगणे । तचसठपचसठयाए कयर रितो अण्पाया ४ को । इवको मदेयाँ विहीर पचस ववा इकादि सेमी ।
 सगगला जहा परमाणुपमका तहा भा० । सववाका तिम सववदियाएवं सखिजगुणकालगणवि एव सेववि पचसववातगुणा भावि

भीषम् आसन्नावसूत्राश्चपि सुवमत्वा रक्षयस्माययितव्यानि नवरः । अथा दीगला तदा प्राचियता इति । यथा ग्राब् सामायत पुद्गला उक्तास्तथा
एकगुणकासकादप्येपि वक्तव्या तेनैव-सहस्रीया अर्धतपरसिया अथा एगमुककासगा परमावुयोगसा दस्रठयाए एगमुककासमा अष्टगुणा
सप्तमपरसिया अथा एगमुककासगा संकज्जमुवा असंकेज्जपरसिया अथा एगमुककासगा असंकेज्जमुवा परसठयाए सप्तत्योवा अष्टतपरसिया
अथा एगपरमावुयोगसा एगमुककासगा अष्टतमुवा इत्यादि । एव सवयगुणकासकामा मनस्तपुकासकामासि वाच्य नैव सेयवगुणरसा अपि
वक्तव्याः । अष्टाष्टपदुगुणतपका रपसा यथा एकप्रदेशाष्टाष्टा प्रविता स्या वक्तव्याः तेनैव-सहस्रीया एगपरसोगाठा एगमुककस्वरुकाठा दस्र
ठयाए सप्तकपरसोगाठा एगमुककस्वरुकाठा दस्रठयाए संकेज्जमुवा इति । एव सवयेगुणककंष्टरपार्थो असम्पद्यगुणककंष्टरपार्थो वाच्या एव
सदुगुणतपव अष्टोपा इत्याद श्रोताद्व रपसा यथा वक्तव्य उक्ता स्या वक्तव्या सप्त पाठोप्यक्तासुसारं सुवमत्वात् अथ प्रावनीयो , गते
पुद्गलद्वारं ० २६ ० इराभी महादठक विवशु पुंसमापुष्कति-अष्टप्रते । त्यादि ० अथ त्रदश ! सवलीवासपथदुल्य सवलीवासपथदुल्यवत्तव्यतात्सक

गंधा नाणियथा, फासाण कस्करुमउगगयउज्जयाण अहा एगपदेसोगाढाण न्नाणिय तथा नाणियहु अय
सेसा फासा जहा वखा न्नायिा तथा नाणियथा वार २६ । अह नते ! सव्वजीवप्यज्ज महावरुय वत्तइ
स्वामि सव्वलोवा गप्पवक्कतियमणुस्सा मणुस्सीन सखेज्जगुणात्ता यावरतेउकाइयापज्जात्तया अस्सिखज्जगुणा

पश्या । इति सर्वथा व्याकल्पित इति वीक्षा यच्च नभरस इव कश्चिदा । आसाय कस्यकमकवगवयस्युवाच । परस्मै कल्पममनुससु । अथाऽगपयसांभा
 दाव नचिद तदाभा । एवमे एकजिम प्रयेयावनाक कश्चो तिमकचिदो । यवसेया आसा तज्जरा यथा भविता तथा भा दार । याकतापरस जिम क
 जा तिम कश्चिदा पदवहार इति ३ पदे २६ दार समाप्त इवे । विने मकार्दककश्चैवे कोवना पकययुम् । यद भते सपयलोप्यबुमनादकय वगदव्यामि
 देममवन् एव सर्वत्रोवतो पठा पागे । समज्यानागभाइकतिवमकुवा । समजावा "लोवगभजममुवा । मकुवोपा सुकिज्जद्वेषांभे भाविततवका । इवपयवयसरा

महादत्तलनं पत्तपिप्यानि रक्षयिण्यामीति तात्पर्यार्थाः, अनेन एतत् स्थापयति-सीयकरानुष्ठानमाश्रयायेत एव प्रगल्भा यक्षपरा मृदुरक्षणा प्रतिप्रय तते मपुन मुताभ्यासपुरस्सरमिति, यद्वैतश्रयापयति कुञ्जस्यपि कश्चि विनेयन गुह्यमनापुञ्जा न प्रवर्तितव्य किन्तु तदनुष्ठापुरस्सर मन्यथा धिने पत्यायोयात् विनेयस्यहि लक्ष्यमिव-गुरानिवर्दिताभ्यायो गुरुजायानुवर्तकः । मुत्तपर्येषदसन्निध्यं सुविनेयः प्रकीर्तितः ॥ १ ॥ गुरुरापि य प्रव्यनी

स्थणुधुरीयवाइया देवा अस्सखेज्जगुणा उअरिमगेवेज्जग देवा सखेज्जगुणा मज्जिमगेवेज्जग देवा सखेज्जगुणा
 गणा हेठिमगेवेज्जग देवा सखेज्जगुणा अच्चुएकप्पे देवा सखेज्जगुणा आरणे कप्पे देवा सखेज्जगुणा पा
 णए कप्पे देवा सखेज्जगुणा आणएकप्पे देवा सखेज्जगुणा अहे सत्तमाए पुठवीए णेरइया अस्सखेज्जगुणा
 ठठीए तमाए पुठवीए नेरइया अस० सहस्सारे कप्पे देवा असखिज्जगुणा महासुक्की कप्पे देवा असखि
 ज्जगुणा पचमाए धूमप्पआए पुठवीए णेरइया अस० लतए कप्पे देवा असखज्जगुणा, चउत्पीए पकप्प

पञ्चविज्यगुणा पञ्चतरोदबाहवा असखिज्यगुणा । तत्रको मनवको सख्यातगुणो २० तत्रो तत्रको बाहुरतेवकायपर्यासा पसख्यातगुणा पसख्यात अनु
 भवापवातदत्ता असंख्यातगुणा । उपरिमगविज्यमाहवा सखिज्यगुणा । तत्रको उपरिवाचिकप्रवेयकवता सख्यातगुणा । मरिभूमगविज्यमाहवा स
 विज्यगुणा द्विद्विमगविज्यगाहवा सखिज्यगुणा । मज्जमेवेयवनिज्जनाहवा सख्यातगुणा तत्रको चेठसाविज्यमाहवा सख्यातगुणा । असुरकप्येदेवा
 सखिज्यगुणा । तत्रको पचयसदव सख्यातगुणा । पारवेकप्येदेवा सखिज्यगुणा पाचएकप्येदेवा सखिज्यगुणा । पानतमाहव सख्यातगुणा । पचेसत्तमाप
 पठरीएभरहा सखिज्यगुणा पठरीपतमाए पठरीएभरहा असखिज्यगुणा । तत्रको नीचे सातमोनरकमानारको सख्यातगुणा छठानरकमानारको प
 सख्यातगुणा । सप्तसारेकप्येदेवा असखिज्यगुणा । तत्रको सप्तसारकखनाहवा पचययातगुणा । मज्जासवेकप्येदेवा असखिज्यगुणा । तेहको मज्जागळ
 माहव असख्यातगुणा । पचमाए धूमपमाए पुठरीएभरहा असखिज्यगुणा । पाचमानरकमानारको पसख्यातगुणा । सतएकरपेदेवा पसाएज्यगुणा

[illegible]

गद्या ज्ञाणियव्हा, फासाण कस्करुमउयगखयलज्जयाण जहा एगपदेसोगाढाण ज्ञाणिय तहा ज्ञाणियव्हु अय
सेसा फासा जहा वखा ज्ञाणिया तहा ज्ञाणियव्हा दार २६ । अह नते ! सव्वजीवप्यज्ज महादरुय वत्तइ
स्वामि सव्वत्योवा गप्पवक्कोतियमणस्सा मणुस्सीठि सखेज्जगुणाठि धादरंतेउक्काइयापज्जासया अयसंखिज्जगणा

दत्ता । इमं सत्त्वा वासुपति इमं बोधा न च तत्परस स च कश्चिदा । काशा च कच्छकमरुतगवयसङ्घराय । फरसुभो वयोरुमदुर्गुलसङ्घ । अङ्गाणवपएहाया
 दार्ढ्यं सचिव तदाभा । पश्यै पक्षजिम प्रवेयावगाठ कछो तिमकश्चिदी । अवसेसा प्राया तजहा नद्या भविता तथा भा नारायावता फरस विम न
 द्या तिम कश्चिदा पङ्कजहार इति ३ पदे २६ द्वार समाप्त इवे । द्विवे मङ्गार्द्धककश्चिदी जीवभा पालयपुल । अत्र अते सख्योपपन्नमङ्गसङ्घय वत्तरह्यामि
 वेमनवन् २४ सवजीवजो पठा धामे । सगत्यानावभासकतियमनुव । अवगाहा जीवगभमनुव । मनुष्योपा सङ्ख्यमनुवापो व्यावर्तकनारिदपव्यक्तया

महादेवता यत्तद्विष्णोर्भि रस्यपिष्णोर्भोति तात्पर्योऽयं, अनेन एतत्त द्वापयति-तीर्थकरानुष्ठानाप्रसाधैश्च एव भगवान् भवधर मुन्नरवना प्रसिद्ध
 भते नमुना मुताभ्यासपुरस्सरमिति, यद्वैतल्लापयति कुशलस्यि क्मवि विनेयन गुसमनापुष्पा न प्रयसितस्य किन्तु तदमुष्मापुरस्सर मस्यवा विने
 यस्यायोपात् विनेयस्याश्च कस्यमिदं-गुरानिबदिताभायो गुरुभावाभुवर्तका । मुत्पार्यैवदृतनित्यं सुविनेयःप्रकीर्तितः ॥ १ ॥ गुरुस्यि यः प्रच्छन्नी

अणुसरोयथाइया देवा अस्सखेज्जगुणा उच्चरिमगेवेज्जगा देवा सखेज्जगुणा मज्जिमगेवेज्जगा देवा सखेज्जगुणा
 गुणा हेठिमगेवेज्जगा देवा सखेज्जगुणा अस्सुएकप्ये देवा सखेज्जगुणा अरणे कप्ये देवा सखेज्जगुणा पा
 णए कप्ये देवा सखेज्जगुणा अणएकप्ये देवा सखेज्जगुणा अहे सत्तमाए पुठवीए णेरइया अस्सखेज्जगुणा
 ठठीए तमाए पुठवीए नेरइया अस्स० सहस्सरि कप्ये देवा अस्सखिज्जगुणा महासुक्की कप्ये देवा अस्सखि
 ज्जगुणा पचमाए धूमप्पमाए पुठवीए णेरइया अस्स० छतए कप्ये देवा अस्सखेज्जगुणा, चउत्थोए पऊप्प

चसखिज्जगुणा पछुत्तरावहाइया चसखिज्जगुणा । तच्चो मज्जवो सक्कातगुवो २० गवो तच्चो वाधरतेववायपर्याता पसक्कातगुवा पसक्कात यनु
 जरापपातइया चसक्कातगुवा । उच्चरिममविज्जमाइया सखिज्जगुणा । तच्चो चपरिक्काविज्जमेववइया सक्कातगुवा । मज्जिममविज्जगाइया स
 विज्जगुणा विट्ठिमगेविज्जमाइया सखिज्जगुणा । मज्जमेवववक्कविज्जमाइया सक्कातगुवा तच्चो ठेठ्ठाविज्जमाइया सक्कातगुवा । पच्चुरक्कमेइया
 चविज्जगुणा । तच्चो पचयवइय सक्कातगुवा । पारमेववमेइया सखिज्जगुणा पाचएकमेइया सखिज्जगुणा । आमतमादेव सक्कातगुवा । पचिउत्तमाए
 पठवीएमरइया सखिज्जगुणा क्खीपत्तमाए पुठवीएनेरइया चसखिज्जगुणा । तच्चो नोचै सातमोनरवनामारवो सक्कातगुवा क्खानरवनामारवो च
 मक्कातगुवा । सहस्सरिक्कमेइया चसखिज्जगुणा । तच्चो सहस्सरक्कमाइया सक्कातगुवा पसक्कातगुवा । तच्चो महाग्ग
 माइय चसक्कातगुवा । पचमाए धूमप्पमाए पुठवीएनेरइया चसखिज्जगुणा । पचिमाजरवनामारवो चसक्कातगुवा । संतएवरपदेवा चसखिज्जगुवा

यः स एव रूपो यमसोचर्मकर्ता च सदा चर्मप्रवणः ॥ सत्वेऽप्योयमक्षात्ताय देशकोणकृष्यते ॥ १ ॥ इति महावक्त्रक वसतिपियामीत्युक्तं ततः प्र
तिष्ठातमेव निर्वाहयति-सहस्रोवा गन्धमवकृतिरयमबुस्यत्यादि ॥ स्वसाक्षा गर्भव्युक्षास्तिका मन्त्र्या सत्येयकोटीकोटीप्रमायत्वात् १ तस्यो मानु
ष्यो मनुमन्त्रियः सङ्कयपुत्राः सप्तविंशतिगुणत्वात् उक्तम्-सत्तावीसगुणापुत्र मन्त्र्यायतद्विद्यावेवसि ॥ २ ॥ ताप्यो वाः इतैवस्कायिकाः पर्यासा
वसङ्केपगुणाः कृतिययवर्ग्यनावमिवायमसमप्रमावत्वात् ३ तस्योऽनुत्तरोपपातिजो वृत्रा वसङ्कयगुणाः कृत्रपस्यापमासङ्केयप्रायवृत्तिमन्त्राः प्रदे
क्षरादिप्रमावत्वात् ४ तस्य वपरितनर्षीवयवकत्रिकदवाः सङ्कयपुत्रा वृत्रतरषेधपत्योपमासङ्केयप्रायवृत्तिमन्त्राः प्रदेक्षरादिप्रमावत्वात् ५ तदपि कयम
वसेय मिति च दुष्यत-विमानवाहुत्वात् तथाऽयमुत्तरवकात्रा पञ्चविंशानामि विमानवात सुपरितनर्षीवयवकत्रिकप्रतिविमानवाऽवङ्केया दवा यथा
२ वाषोवर्षाणि विमानानि तथा २ दवा अपि प्राचुर्येव तस्यन्ते ततोऽवधीयते अमुत्तरवृत्रपत्योपमासङ्केयप्रायवृत्तिमन्त्राः

प्रदधराशिप्रमाणा उपरितनयैवेयकत्रिकदेवा एव मुहुरत्राय प्राधाना कार्या यावदानतकल्पः ५ तस्योप्युपरितनयैवेयकत्रिकदेव्यो मध्यमयैवेयव
त्रिकदेवाः सङ्केयगुणाः ६ तस्योप्यवसानयैवेयकत्रिकदेवा अस्येयगुणाः ७ तस्योप्यव्युतकल्पदेवाः सङ्केयगुणाः ८ तस्योप्यारकल्पदेवाः सङ्के
यगुणा यद्यप्यारणाव्युतकल्पौ समभयोक्तौ समविमानसस्माकीच तथापि कथ्यपाठिका सथास्वाप्ताव्यात् प्राप्नुयैव उचितस्वां दिशि समुत्पद्यन्ते
नातरस्यां बहव य कथ्यपाठिका लोकाः साङ्गपाठिका सतो व्युतकल्पदेवापेक्षया आरकल्प देवाः सस्ययगुणाः ९, तस्योपि प्राकृतकल्पे देवाः
सस्ययगुणाः १० तस्योप्यानतकल्पे देवाः सङ्केयगुणाः प्राधाना आरकल्पव तक्तव्याः ११ तस्योप्यः सप्तमरकल्पयिव्या नैरयिका अस्ययगुणाः
अस्यसङ्केयपन्नागततन्त्र प्रदधराशिप्रमाणात् १२ तस्यः यद्यप्ययिव्यां नैरयिका अस्ययगुणा एतच्च प्रागेव विगमुपातन नैरयिकास्ययगुणाश्चि
न्मायां प्रावित १३, तस्योपि सहस्रारकल्पदेवा अस्येयगुणाः यद्यप्ययिव्यां नैरयिकपरिमाणवत्तु अस्यसङ्केयपन्नागापेक्षया सहस्रारकल्पदेवपरिमाण

वृत्तो- मेस्वसक्यप्रमाणस्या अस्म्येयगत्वात् १४ । तेज्यो मङ्गाश्रुते करणे देवा असत्येयगुणा विमानमाहुत्वात् तथाहि-पठसहस्राणि विमानानां
 सङ्ख्यारकस्य यत्वारिज्ञात् सङ्ख्याणि मङ्गाश्रुक्त अम्यवाप्यविमानवासिनो देवा बहुबुतराः स्तोत्रस्तोत्रतरा योपरितभोपरितनविमानवादिभः
 तत् सङ्ख्यारवेज्यो मङ्गाश्रुत्वरूप देवा असक्ययगुणाः १५ । तज्योपि पण्यमयुमप्राप्तिपाननरकपुचिरया नैरयिका असक्येयगुणाः धृक्कमप्रस्य
 सक्ययजागवर्त्तन-प्रदेशाराशिप्रमाणत्वात् १६ । तेज्योपि साक्तके करणे देवा असक्येयगुणा अतिपुष्टरमेस्वसक्ययजागवर्त्तन-प्रदेशाराशिप्रमा
 यत्वात् १७ । तेज्योपि यत्तुष्यं यत्तुमनायो पुचिष्यं नैरयिका असक्ययगुणा युक्तिप्रागुक्तैव प्रावर्त्तनीया १८ । तज्योपि प्रक्षमसीके करणे देवा असक्य
 यनवा युक्तिप्रागुक्तैव १९ । तज्योपि वृत्तीयस्या वासुकाप्रजायां पुचिष्यां नैरयिकाः सक्ययगुणाः २० । तज्योपि माह्वद्रकस्य देवा असक्येयगुणा
 २१ । तेज्योपि सनत्कुमारकस्य देवा असक्ययगुणा २२ । तज्योपि सनत्कुमारकस्य देवा असक्ययगुणा युक्तिरसक्ययगुणा प्रागुक्तैव २३ । तज्यो द्विती
 यस्या शक्राप्रजायां पुचिष्या नैरयिका असक्येयगुणा यत्तु सप्तमपुचिषीनारकादयो द्वितीयपुचिषीनरकयमनाः प्रत्येक स्वस्थाने चित्त्यमानाः स

नाए पुढथीए नेरइया अस्सखेज्जगुणा यन्नलोए कप्पे देवा अस्सखेज्जगुणा तच्चाए वालुयप्पन्नाए पुढथीए जे
 रइया अस्सखेज्जगुणा माहिंदे देवा अस्सखिज्जगुणा सणकुमारं कप्पे देवा अस्सखेज्जगुणा दोच्चाए सक्कारप्प
 नाए पुढथीए पारइया अस्स० समुच्चिममणुस्सा अस्सखेज्ज० इसाणं कप्पे देवा अस्स० इसाणं कप्पे देवाते

चवत्तीए पंढप्पमा० पठगीएनरइया असविज्जगवा । कीतकद्वता समसुवातगवा तच्चो वाद्योमारकमानारको पसस्यातगुवा । स्वमकारकपदेवा अस
 विज्जमूवा । यत्तुलो० नाइव अससुवातगवा । यथोए पाववपभाए पुढगीएनरइया असविज्जगवा । तोत्रोनरकमारको अससुवातगवा । माइदेवप
 नेया पस सक्कारकपदेवा असविज्जगवा । माइदेवपभाइव अससुवातगवा सनत्कुमारद्व पसस्यातगवा । साधए सक्कारपभाए पुढवोएनर
 या पस समुच्चिममणुस्सा पर्थ० । दोत्रोनरकमानारको पसस्यातगुवा । तेइयो समुच्चिममणु असस्यातगुवा । इसाणं कप्पे देवा असविज्जगुवा

[illegible]

प्रदद्यादशिममाका उपरितनयैवेयकान्त्रिकदेवा एव मुत्तरत्राय प्रासना कायो याचतामतकस्यः ५ तेज्योप्युपरितनयैवेयकान्त्रिकदेवो मध्यमदेवयस्य
त्रिकदेवाः सङ्केयगुणाः ६ तज्यो व्यप्यस्तनयैवयकान्त्रिकदेवा सक्येयगुणाः ७ तज्यो व्यप्युतकस्यदेवाः सङ्केयगुणा ८ तज्यो व्यादकस्यदेवाः सक्ये
यगुणा यद्यप्यारकाव्युतकस्यो समभकीको समविमानसस्याकीच तथ्यापि कथ्यादिका क्षयास्याज्जाभ्यात् प्राच्यैव दसिचस्या दिशि समुत्पद्यन्ते
भातरस्या बहव स कथ्यादिकाः क्षोकाः क्षुद्रपादिकाः सतो व्युतकस्यववापेक्षया चारकस्ये देवाः सक्ययगुणाः ६ तेज्योपि प्रास्तकस्य देवाः
ईस्यगुणाः १० तज्योप्यागतकस्ये देवाः सक्येयगुणा प्रासना चारकस्यस्य लक्षणा ११ तेज्यो ऽप्यसमनरकपुयिभ्या नैरियिना असक्ययगुणाः
अस्यस्येययागततम प्रदत्रादिप्रमादस्यात् १२ तेज्या यष्टपुधिना नैरियिका अस्ययगुणा सतत्र प्रागेव दिगनुपातन नैरियिकास्ययष्टुत्सवि
त्ताया नावित १३, तज्योपि सष्टारकस्येदेवा असक्ययगुणाः यष्टपुधिनीनैरियिकपरिमादस्तुअस्यस्ययपनागापेक्षया सष्टारकस्यद्वमपरिमाण

[illegible]

चिदियतिरिस्कजोणिया पुरिसा सखेज्जगुणा जलयरपचिदियतिरिस्कजोणणीत्त सखिज्जगुणान् वाणमतरा
 देवा सखेज्जगुणा वाणमतरीत्त देयीत्त सखेज्ज० जोइसिया देवा सखेज्जगुणा जोइसिणीत्त देवीत्त सखिज्ज
 गुणान् सखयरपचिदियतिरिस्कजोणिया नपुसया सखिज्ज० थलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया नपुसया स
 खेज्ज० जलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया नपुसया सखे० चउरिदिया पज्झत्तया सखेज्ज० पदिया पज्झत्ता

[illegible]

वेपि पनीकृतसोऽप्रेक्ष्यसंक्षयप्रापवर्तिनः। प्रदेष्टारं शिप्राभावाः प्रसृज्याः केवस मेत्यसंक्षेयप्रागोऽसंक्षेयमेव जिह्वा स्तत इत्यमसंक्षेयगुणतया अथप
 यदुत्थमन्त्रिणीयमानं न विरुध्यति २३ । तज्यो द्वितीयपरकपृथिवीनारकस्यः समुच्छिन्नमनुष्या असंक्षेयगुणा स्ताहि अद्भुतमाथसेप्रदेष्टरासे सम्य
 न्त्रिणि द्वितीयवर्गमूलेन गुणिते प्रथमवर्गमूल यावान् प्रदष्टराणि स्तावत्प्रमाणाणि कण्ठानि यावन्त्यक्तस्यामय प्रादक्षिण्यायसौ प्रवन्ति तावत्प्रमा
 वाः ६४ । तेज्य ईशाने कथप द्वा असंक्षेयगुणा यताद्भुतमात्रप्रदष्टराश्च' सम्यन्त्रिणि द्वितीये वर्गमूल वसीयेन वर्णमूलन गुणिते यावान् प्रदष्ट
 राणि प्रयति तावत्प्रमावा स्तु पनीकृतस्य लोकस्येष्टप्रादक्षिणीयु आचिपु यावन्तो नन प्रदेष्टा स्तावत्प्रमावा इष्टानकपरगतो दवद्वीसमुदाय स्तद्ग

सखे०, सोहम्मे, कप्पेदेवा संखेज्ज० सोहम्मे कप्पे देवीनु सखेज्जगुणानु नत्रणरासीदेवा स्यसखेज्जगुणा न
 धणयासिणीनु देवीनु, सखिज्जगुणानु । इमीसे रयणप्यजाए पुठ्ठीए णेरद्वया स्यसखिज्जगुणा सखचरपचि
 दियतिरिस्कजोणिया पुरिसा स्यसखेज्जगुणा सखचरपचिदियतिरिस्कजोणिणीनु सखिज्जगुणानु थलयरपचि
 दियतिरिस्कजोणिया पुरिसा स्यसखेज्जगुणा थलयरपचिदियतिरिस्कजोणिणीनु सखिज्जगुणानु जलयरप

रमाचकपेदेवीया सखिज्जगुणीया । तेज्जो ईयाननादव असंख्यातगुणा तेज्जो ईयाननोदेवो असंख्यातगुणी । सावन्नेदेवा सखिज्जगुणा सोहम्मेकप्पे
 देवीया सखिज्जगुणीया । तेज्जो सोवमनादव संख्यातगुणा तेज्जो सोवमदो सख्यातगुणी । भवववासीदेवा थस भवववासिणीया देवीया सखि ।
 तेज्जो भवनपतिदेवता असंख्यातगुणा तेज्जो भवनपतिनीदेवो संख्यातगुणी । इमीसेरवववमाए पठ्ठीए णेरद्वया थस थलयरपचिदियतिरिस्कजोणीया
 पुरिसा सखि । तेज्जो रत्तममानारको असंख्यातगुणा तेज्जो थलयरपचिदियतिरिस्कजोणीया स थल
 यरपचिदियतिरिस्कजोणीया पुरिसा स । तेज्जो थलयरपचिदियतिरिस्कजोणीया थानिनीको संख्यातगुणा, थलयरपचिदियतिरिस्कजोणीया सख्यातगुणा । थल
 यरपचिदियतिरिस्कजोणीया स । थलयरपचिदियतिरिस्कजोणीया पुरिसा स । तेज्जो ज

[illegible]

रूपानि उपकानि यावत्स्येकस्मिन् प्रतरे जवति तावन्तः सामान्येन व्यञ्जराः केवलमिह पुरुषाविवक्षिता इति सकलसमुदायापेक्षया किञ्चिद्बहु-
विश्रान्तमनःकस्या वेदितव्यम् । ततो घटते कलशरयुवतिभ्यः सख्येयगुणा ३८ । तेभ्यो व्यञ्जरा सख्येयगुणा इदं । ताभ्यो ज्योतिष-
देवाः सख्येयगुणा स्तौति सामान्यतः पदपञ्चाशत् अचिकशतद्वयाहुलप्रमाणाणि श्रुचीरूपाणि यावत्स्येकास्मिन् प्रतरे जवति तावत्प्रमाणाः ।
परमिह पुरुषा विवक्षितो इति ते सकलसमुदायापेक्षया किञ्चिद्बहुविश्रान्तमनःकस्याः प्रतिपन्नया क्षत उपपद्यते व्यञ्जरीभ्यः सख्येयगुणाः
४० । तेभ्यो ज्योतिषदेव्यः सख्येयगुणा द्वात्रिंशद्व्यस्यत् ४१ । ताभ्यः एषरपञ्चभिन्नयित्यव्योमिकानपुसकाः सख्येयगुणाः द्वात्रिंशत् सख्येयगुणा इ-
तिपाठः स न समीचीनो यत एत एव ययोसप्ततारिन्न्रिया वक्ष्यते तेषां ज्योतिषद्वयापेक्षया सख्येयगुणा एकोपपद्यन्त तथाहि-पदपञ्चाशदधि-
कद्वलद्वयाहुलप्रमाणाणि श्रुचीरूपाणि उपकानि यावत्स्येकास्मिन् प्रतरे जवति तावत्प्रमाणा ज्योतिषाः एता य-क्षप्रकद्वेययागुल सख्येयसहितसद्व

मयाच पाठ्यमो पतोम्याप्युक्त-इसाखेसहत्यायि यहीसगुकाठहोतिदेवींछ । सरोकासोहले तहीपससाप्रवफवासी ॥ १ ॥ २७ । इति तेज्योपि न
स्मिन्नव सौपमबदे दम्यः सुखेयमुक्ता हाविशुयत्वात् । सहत्याविहारी सगुकाठहोतिदेवींछइतिवचनात् २८ । ताज्योप्यसक्ययगुका प्रवमवति
न । कथमितिचत् इव पकुसमाचक्रप्रदयराकाः सम्बन्धिन्यनि मयमे तनेमूल वलीयन तनेमूलेन नुबिते यावाम् प्रदेसराशि प्रवति तावत्प्रमाकायु च
नीरुतस्य लोभस्य पक्षप्रयश्चिबीपु मरिचिपु यावतो जमःप्रदेका साबहयमाभी प्रवमपतिवदेवीसमुदाय तद्वतकिचिदूनद्वान्निद्रागकस्या इ प्रवमप
तयो इवा सुतो पठन्त सौपमदेवीन्त्य को अंरूपपपुकाः पदं । तज्यो प्रवमवांसिमादेव्य स क्ययगुका हाविशुयत्वात् २९ । ताज्यो व्यत्या रव
त्रिसेसाहिद्या येद्वदिद्या पञ्जजा किन्ते ।

त्रिसेसाद्विया येइदिया पञ्जसा विसे० । पचिदिया अपञ्जसा अस्सिखज्जगुणा वउरिदिया अप्पज्जत्तया
यिससाद्विया तेइदिया अपञ्जसा विसेसाद्विया येइदिया अप्पज्जत्तया विसेसाद्विया पत्तेयसरीयाद्वर
णस्सइकाद्विया पञ्जसा अस्सिखज्जगुणा यादरनिगोदा पञ्जसा अस्सिखज्जगुणा यादरपुठयिकाद्विया अप्प
ज्जसा अस्सिखज्जगुणा यादरथाउकाद्विया पञ्जसा अस्सिखज्जगुणा यादरथाउकाद्विया पञ्जसा अस्सिख
द्विपञ्जसा वि । पत्तेद्विय पपसाता थयवसातमुवा रोदिदिअ पपसाता वि ।

[illegible]

माया चम्यत्रोक्ता ललाप्यदुःखाश्चक्रेयमागस्या सक्रेयमेव भिन्नत्वात् वादरपर्यागतप्रत्येकवमस्पतिपरिभाषितानाया मनुकासक्ययज्ञागे उच्यते
 मन्मथीमः परिपद्यत ततो न कविद्विरोधः ५३ । तस्यो वादरनिरोधो दानताकायिकद्वारीरूपया पर्याप्ता असक्ययगुणाः ५४ । तस्योपि वादरप
 विरोधाप्यङ्गाः पर्याप्ता असक्ययगुणाः ५५ । तस्योप पर्याप्तावादाकायिका असक्ययगुणा यथापिच पर्याप्तवादरप्रत्येकवमस्पतिपरिभाषिताऽप्युक्त्यापि
 काः प्रत्येकमनुकासक्ययमागमाशक्तिं कृतीरूपाणि पञ्चानि यावत्प्रत्येकस्मिन् प्रत्येकं तावत्प्रत्येकं अव्यवस्थितयोक्ता साध्याप्यनुकासक्यय
 ज्ञागस्या सक्रेयमवज्ञिकत्वा दित्यमसक्ययगुणा दित्य मन्मथान न कविद्विरोधः ५६ । तस्यो वादरपर्याप्ताकायिकज्यो वादरवायुकायिकाः च
 वादर असक्ययगुणा चलीकृतोकासक्ययमागवत्प्रत्येकवमस्पतिपरिभाषिताः ५७ । तस्यो वादरलक्षणाया अपर्याप्ता असक्रेय

ज्ञागुणा वादरते उकाइया अपजज्ञता असस्वेज्जगुणा पत्तियसरीरयादरवणस्सइकाइया अपजज्ञता अस
 स्विज्जगुणा वादरनिगीदा अपजज्ञता सस्विज्जगुणा वादरपुठयिकाइया अपजज्ञता असस्वेज्जगुणा वाद
 रथाउकाइया अपजज्ञता असस्विज्जगुणा वादरवाउकाइया अपजज्ञता असस्वेज्जगुणा वाद
 अपजज्ञता असस्वेज्जगुणा सुकमपुठयिकाइया अपजज्ञता विससाहिंया सुकमथाउकाइया अपजज्ञता
 विससाहिंया सुकमवाउकाइया अपजज्ञता विससाहिंया सुकमतेउकाइया पजज्ञता असस्विज्ज० सुज

निगाद पर्याप्ता च वादरद्विरोधाकार अपर्याप्ता च । वादर वादकारो अपजज्ञता च । वादर वादकारो अपजज्ञता च । वादर वादकारो अपजज्ञता च ।
 वादरवाउकाइया अपजज्ञता च । वादरवाउकाइया अपजज्ञता च । वादरवाउकाइया अपजज्ञता च । वादरवाउकाइया अपजज्ञता च ।
 सुकमपुठयिकाइया अपजज्ञता च । सुकमपुठयिकाइया अपजज्ञता च । सुकमपुठयिकाइया अपजज्ञता च । सुकमपुठयिकाइया अपजज्ञता च ।
 सुकमवाउकाइया अपजज्ञता च । सुकमवाउकाइया अपजज्ञता च । सुकमवाउकाइया अपजज्ञता च । सुकमवाउकाइया अपजज्ञता च ।
 विससाहिंया अपजज्ञता च । विससाहिंया अपजज्ञता च । विससाहिंया अपजज्ञता च । विससाहिंया अपजज्ञता च ।
 सुकमथाउकाइया अपजज्ञता च । सुकमथाउकाइया अपजज्ञता च । सुकमथाउकाइया अपजज्ञता च । सुकमथाउकाइया अपजज्ञता च ।
 सुकमतेउकाइया अपजज्ञता च । सुकमतेउकाइया अपजज्ञता च । सुकमतेउकाइया अपजज्ञता च । सुकमतेउकाइया अपजज्ञता च ।
 पजज्ञता असस्विज्ज० सुज

पपरं । लोहसिपिहीरहति यद्गुणसङ्गुपनागमाथाविच झूबीरूपादि अयानि यावत्येकस्मिन्प्रतरे ज्ञाति तावत्प्रमाणा यतुरिन्द्रिया तुल्य-प
 ज्ञाप्यता तिति यत्रयसिद्धोद्यद्वरति । अंगुलसङ्ख्याऽस्य व्यसप्तद्वयपुष्ठापपर । अंगुलसङ्ख्यायायथा यद्व्यसप्तद्वयपुष्ठापपर स
 ङ्गुणं ततो ज्योतिषदवापयथा परिभाष्यमाणाः पर्याप्तचतुरिन्द्रियादपि सङ्गुणका एकपटते विपुलः पर्याप्तचतुरिन्द्रियापेक्षया सङ्गुयजागमा
 प्रथमरप्यन्द्रियनपुसका इति ४२ । तज्यापि प्रसन्नरप्यन्द्रियनपुसका सङ्गुयगुणा ४३ । तज्योपि प्रसन्नरप्यन्द्रियनपुसका सङ्गुयगुणाः ४४ । ते
 ज्योपि पर्याप्तचतुरिन्द्रिया सङ्गुयगुणा ४५ । तज्योपि पर्याप्ताः सङ्गुयगुणा विद्यापाचिका ४६ । तज्योपि पर्याप्ता द्वीन्द्रिया
 विद्यापाचिकाः ४७ । तज्योपि पर्याप्ततेइन्द्रिया विद्यापाचिका ४८ । यद्यपि पर्याप्तचतुरिन्द्रियादीना पर्याप्तचतुरिन्द्रियपयस्ताना प्रत्यक्षमङ्गुलासंख्येयजा
 गमाथावि झूबीरूपादि कलानि यावत्येकस्मिन् प्रतरे ज्ञाति तावत्प्रमाणात्त्वमिहोपकाप्यथ वक्ष्यते तथाप्यङ्गुलासंख्येयजागस्य सङ्गुयनदभिज्ञत्वा

दिव्यविद्यापाचिकत्वमुच्यमान न विरुद्ध उच्येत्य मत्पक्षेत्वं मत्पक्षादि तता नपुसक कथपरबलत्वा यत्परबलयरनपुसका यतुरिविय ततुम्कवि
 तपत्त्वमिहोद्यद्वरति ४८ । तज्योपि पर्याप्तद्वीन्द्रियज्योऽपर्याप्ताः पञ्चान्द्रिया सङ्गुयगुणा ४९ । अङ्गुलासंख्येयजागमाथावि यत्कलानि सूचीक
 वावि यावत्येकस्मिन् प्रतरे ज्ञाति तावत्प्रमाणात्त्वान् ५० । तस्य यतुरिन्द्रिया अपर्याप्ताविद्यापाचिका ५० । तज्योपि द्वीन्द्रिया अपर्याप्ता विद्या
 पाचिका ५१ । तज्यो द्वीन्द्रिया अपर्याप्ता विद्यापाचिका यद्यपि आपर्याप्ता यतुरिन्द्रियादयोऽपयोप्तद्वीन्द्रियपयस्तः प्रत्यक्षमङ्गुलस्य सङ्गुयजाग
 माथावि यत्कलानि झूबीरूपादि यावत्येकस्मिन् प्रतरे ज्ञाति तावत्प्रमाणाः पञ्चान्द्रियाविद्योद्योकाः साध्याप्यङ्गुलासंख्येयजागस्य विचित्रत्वा दिव्य वि
 द्यापाचिकत्व मुच्यमान न विरोधमास्तद्वरति ५२ । तेज्योपि द्वीन्द्रियापर्याप्तस्यः प्रत्यक्षवाद्दरवन्नरप्याविद्यापाचिका पर्याप्ता अपर्याप्तगुणा यद्यपि वा
 पर्याप्तद्वीन्द्रियादिबत् पर्याप्तवाद्दरवन्नरप्याविद्यापाचिका अप्यङ्गुलासंख्येयजागमाथावि सूचीरूपादि कलानि यावत्येकस्मिन् प्रतरे ज्ञाति तावत्प्र

प्रोपायिका ५१ । तेज्योपि मूलमनिगोवा अपर्याप्ताः सार्वभौमगुणाः ५२ । तेज्योपि पर्याप्ताः सूक्ष्मनिगोवाः सार्वभौमगुणाः यद्यपिच पर्याप्ततेषां
 रकायिकाइयः पर्याप्तमूलमनिगोदपर्यन्ता अवशिष्टेषां उपपत्त्याऽसंख्येयलोकाणां प्रवेष्टराशिप्रभावा उक्ता स्यादपि लोकाऽपह्नयेत्यस्याऽसंख्येय
 त्रेदन्निष्ठास्यादित्यमस्य दुस्त्वमनिगोवाऽपिच मूलमनिगोवाऽपिच सार्वभौमगुणाः ५३ । तेज्योऽप्यवशिष्टेषां अनन्तगुणा अपह्नयेत्युक्तमन्तकप्रभावात्मा ५४ । तज्यः प्रतिपत्ति
 तस्यैतद्गुणोऽन्तगुणाः ५५ । तज्यः सिद्धा अनन्तगुणाः ५६ । तज्योपि वादरवमरपत्तिनायिकाः पर्याप्ता अनन्तगुणाः ५७ । तेज्योपि सामान्यतो
 वादरपर्याप्ता विज्ञेयायिका वादरपर्याप्तपृथिवीनायिकादीनामपि तत्र प्रवेष्टा ५८ । तेज्यो वादरपर्याप्ततत्त्वतस्तत्त्विकायिका असंख्येयगुणा य
 केकायादरनिगोदपर्याप्तनिष्ठायाऽसंख्येयगुणा वादरपर्याप्तनिगोवाः सार्वभौमगुणाः ५९ । तज्यः सामान्यतो वादरपर्याप्ता विज्ञेयायिका वादरा
 पर्याप्तपृथिवीनायिकादीनामपि तत्र प्रवेष्टा ६० । तज्यः सामान्यतो वादरा विज्ञेयायिकाः पर्याप्ताऽपर्याप्ताना तत्र प्रवेष्टा ६१ ।
 तज्यः मूलमनरपत्तिनायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ६२ । तेज्यः सामान्यतः सूक्ष्मा अपर्याप्ता विज्ञेयायिकाः सूक्ष्माऽपर्याप्त पृथिवी
 कायिकादीनामपि तत्र प्रवेष्टा ६३ । तज्यः मूलमनरपत्तिनायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः पर्याप्तसूक्ष्माणामपर्याप्तसूक्ष्मेभ्यः सूक्ष्मा

विसेसाहिया वादरा विसेसाहिया सुक्ष्मवणस्तइकाइया अपज्जाहया सुक्ष्मा अपज्जाहया
 विसेसाहिया सुक्ष्मवणस्तइकाइया पज्जाहया सखेज्ज० सुक्ष्मपज्जाहया विसेसाहिया सुक्ष्मा विसेसाहि

वि० वादरवणस्तइकाइया अपज्जाहया पज्जाहया विज्ञेयायिका वादरवणस्तइकाइया अपर्याप्ता असंख्येयगुणा । ओवावाधरा अपह्नयतगा
 वि वादराविसेसाहिया । सुक्ष्मवणस्तइकाइया अपज्जाहया पज्जाहया वि । सुक्ष्मवणस्तइकाइया अपर्याप्ता असंख्येयगुणा सत्ता अप
 बाधा विज्ञेयायिका । सुक्ष्मवणस्तइकाइया पज्जाहया स सुक्ष्मपज्जाहया वि । सुक्ष्मवणस्तइकाइया पज्जाहया सार्वभौमगुणा सुक्ष्मपर्याप्ता विज्ञेयायिका ।
 सत्तावि० भवसिद्धिया विसेसाहिया निगायलोवा विज्ञेयायिका तस्यो भवसिद्धिया विज्ञेयायिका तस्यो निगायलोव विज्ञेयायिका ।

गुहा असक्येयसोकाकाशप्रदेशराक्षिममावल्यात् ५८ । तेन्य प्रत्येकशरीरव्यादरवमस्यतिकायिका अपर्याप्ता असक्येयगुहाः ५९ । तेन्योपि व्यादर-
निगोदा अपर्याप्तका असक्यगुहाः ६० । तन्यो व्यादरपृथिवीकायिका अपर्याप्ताका असक्यगुहाः ६१ । तेन्यो व्यादराष्वायिका अपर्याप्ता अस-
क्यगुहाः ६२ । तेन्यो व्यादरवायुकायिका अपर्याप्ता असक्यगुहाः ६३ । तन्य-सूक्ष्मतत्त्वायिका अपर्याप्ता असक्येयगुहाः ६४ । तन्य-सूक्ष्म-
पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विज्ञेयायिकाः ६५ । तन्यः सूक्ष्माष्वायिका अपर्याप्ता विज्ञेयायिकाः ६६ । तेन्य-सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विज्ञे-
यायिकाः ६७ । तन्यः सूक्ष्मतत्त्वायिका अपर्याप्ताका असक्यगुहा अपर्याप्तसूक्ष्मस्य पर्याप्तसूक्ष्माकां स्वप्नावतएव प्राबुध्येत तावात् तयावाह-
कत्वायव मन्त्रायमायां सङ्गठितकार-जीवात्मनऽप्यन्तत्वा बहुतरणावायराकवित्वाया सुदुर्भास्यपञ्चत्वा श्रेयकयतीदिति ६८ ॥ तन्यपि सूक्ष्म-
पृथिवीकायिकाः पर्याप्ता विज्ञेयायिकाः ६९ । तेन्योपि सूक्ष्मायिकाः पर्याप्ता विज्ञेयायिकाः ७० । तेन्योपि सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्ता वि-

मपुढविकाइया पञ्चास्रगा विसंसाहिद्या विसंसाहिद्या सुक्लमथाउकाइया पञ्चास्रगा विसंसाहिद्या सुक्लमथाउकाइया पञ्चा-
स्रगा विसंसाहिद्या सुक्लमणिगोदा अपञ्चास्र अपसखे० सुक्लमणिगोदा पञ्चास्रया सखिजगुणा स्रजवसिद्धि-
या स्रजतगुणा पञ्चवसिद्धि समविद्धी स्रजतगुणा सिद्धा स्रजतगुणा व्यादर वणस्सइकाइया पञ्चास्रगा स्र-
जतगुणा व्यादरपञ्चास्र विसंसाहिद्या व्यादरवणस्सइकाइया अपञ्चास्रया स्रजसखिजगुणा व्यादरस्रपञ्चास्रया

इमवाउकाइय पञ्चतमा वि । सुक्लमणिगोदा सख्यातगुणा स्रजपृथिवीकाइयपर्याप्ता विज्ञेयायिका स्रजपृथिवीका विज्ञेयायिका ।
सुक्लमवाउकाइयपञ्चतमा वि सुक्लमणिगोदा अपञ्चतमा स । सुक्लमणिगोदा विज्ञेयायिका अपर्याप्ता असक्यातगुणा । स्रज-
निगायपञ्चतमा स समवसिद्धि पर्यंतगुणा पञ्चवसिद्धिमन्त्राया स्रज विज्ञेयायिका । सुक्लमणिगोदा सख्यातगुणा तेन्योपि समवसिद्धि समंतगुणा
मतिपतितस्रजवि परंतगुणा सिद्ध परंतगुणा । व्यादरवणस्सइकाइयपञ्चतमा स्रज । व्यादरवणस्सइकाइयपर्याप्ता स्रजतगुणा । व्यादरपञ्चतमा

श्रेयापिका ७१ । तेज्योपि सूक्तनिगोदा अपर्योक्तका पर्यवेयगुणा ७२ । तेज्योपि पर्याप्ताः सूक्तनिगोदा ध्रुवेयगुणा यद्यपिच पर्याप्ततेन
 रकायिकादयः पर्याप्तसूक्तनिगोदपर्यन्ता अवशिेषकाऽन्यथाऽध्वयेयतोकाणां प्रवेष्टारविप्रमाणा उक्ता कथाऽपि सोकाऽध्वयेयत्वस्याऽवश्य्य
 त्रेदन्निमस्यादित्वमव्ययदुत्वमजिबिपमानमुपपन्न इष्टव्यं ७३ । तेज्योऽनवसिद्धिका अनन्तगुणा ७४ । तज्य प्रतिपत्ति
 तस्यगुदुष्टयोऽनन्तगुणाः ७५ । तज्य सिद्धा अनन्तगुणाः ७६ । तज्योपि वादरयनस्यविकायिकाः पर्याप्ताः समस्तगुणाः ७७ । तेज्योपि सामान्यतो
 वादरपर्याप्ता विद्ययापिका वादरपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रवेष्टात् ७८ । तज्यो वादरपर्याप्तवतनस्यविकायिका अध्वयेयगुणा य
 केकादरनिगादपर्याप्तनिमयासर्वव्यगुणाना वादरपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रवेष्टात् ७९ । तेज्यः सामान्यतो वादरापयाप्ता विशेषापिका वादरा
 पर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रवेष्टात् ८० । तेज्य सामान्यतो वादर विद्येयापिका पर्याप्ताऽपर्याप्तामा तत्र प्रवेष्टात् ८१ ।
 तज्यः सूक्तवतनस्यविकायिका अपर्याप्ता अध्वयेयगुणाः ८२ । तेज्य सामान्यतः सूक्ता अपर्याप्ता विद्येयापिकाः सूक्ताऽपर्याप्त पृथिवी
 कायिकादीनामपि तत्र प्रवेष्टात् ८३ । तज्यः सूक्तवतनस्यविकायिका पर्याप्तकाः पर्याप्तसूक्ताणामपर्याप्तसूक्तेभ्यः स्वता

विसेसाहिया वादरा विसेसाहिया सुक्रमनणस्सइकाइया व्यपज्जसया व्यसखेज्जगुणा सुक्रममा व्यपज्जसया
 विसेसाहिया सुक्रमवणस्सइकाइया पज्जसया सखेज्ज ० सुक्रमपज्जसया विसेसाहिया सुक्रममा विसेसाहि

वि० वायव्यवच्छादकः इय अपज्जसया वस । वादरपर्याप्ता विसेयापिच वादरवस्यविकाइय अपर्याप्ता वसव्यातगुणा । ओवावापरा अपज्जसया
 नि वायराविसेसाहिया । सुक्रमवच्छादकाय अपज्जसया वस० सुक्रमपज्जसया वि । सूक्तवस्यविकाइय अपर्याप्ता वसव्यातगुणा सूक्ता अप
 वागता विसेयापिच । सुक्रमवच्छादकाइयपज्जसया सं सुक्रमपज्जसया वि । सूक्तवस्यविकाइयपयाप्ता वसव्यातगुणा सूक्तपर्याप्ता विसेयापिच ।
 सवनादि भवसिद्धिया विसेसाहिया विसेसाहिया । सूक्तविसेयापिच तेज्यो भवसिद्धिया विसेयापिच तेज्यो निगाद्वजोव विसेयापिच ।

गुणा असहयेयसोकाभाद्यमद्विभूतद्विप्रमाणात् ५८ । तेभ्यः प्रत्येकद्वारीरबादरवणस्पष्टिकायिका अपर्याप्ता असहयेयगुणाः ५९ । तेभ्योपि यादर
निगोदा अपर्याप्तका असहयगुणाः ६० । तज्यां बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्ताका असहयगुणाः ६१ । तेभ्यो बादरापकायिका अपर्याप्ता अस
हयगुणाः ६२ । तेभ्यो बादरवायुकायिका अपर्याप्ता असहयगुणाः ६३ । तज्याः सूक्ष्मसप्तस्कायिका अपर्याप्ता असहयेयगुणाः ६४ । तज्याः सूक्ष्म
पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विद्येयायिकाः ६५ । तेभ्यः सूक्ष्मापकायिका अपर्याप्ता विद्येयायिका अपर्याप्ता विद्ये
यायिकाः ६६ । तज्याः सूक्ष्मसप्तस्कायिकाः पर्याप्ताका असहयगुणा अपर्याप्तासूक्ष्मेभ्यः पर्याप्तसूक्ष्माका स्वाभावतएव प्राचुर्येण ज्ञाकात् तथाचाह-
वस्यार्येय प्रज्ञापनाया बहुवृत्तिवारः-जीवाकामऽपञ्चता बहुतरगावायराविलेया सुप्रभासपञ्चता ठेकेयकवतीविति ॥ ६८ ॥ तेभ्योपि सूक्ष्म
पृथिवीकायिकाः पर्याप्ता विद्येयायिकाः ६९ । तज्योपि सूक्ष्मापकायिका पर्याप्ता विद्येयायिका ७० । तज्योपि सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्ता वि

मपुढविकाइया पञ्चस्रगा विसंसाहिद्या सुक्ष्मश्याउकाइया पञ्चस्रगा विसंसाहिद्या सुक्ष्मवाउकाइया पञ्च
स्रगा विसंसाहिद्या सुक्ष्मनिगोदा अपञ्चस्र ० सुक्ष्मनिगोदा पञ्चस्रया सखिज्जगुणा अन्नवसिद्धि
या अणतगुणा पन्निवसिय सम्मतिठी अणतगुणा सिद्धा अणतगुणा यादर वणस्सइकाइया पञ्चस्रगा अ
णतगुणा यादरपञ्चस्र विसंसाहिद्या यादरवणस्सइकाइया अपञ्चस्रया असखिज्जगुणा यादरअपञ्चस्रया

इमपात्रकारय पञ्चतगा वि । सूक्ष्मेककाइकपर्याप्ता सख्यातगुणा धूम्यपुत्रोकाइकपर्याप्ता विशेषाधिक । विशेषाधिक ।
सुक्ष्मवाउकाइकपञ्चतगा वि सुक्ष्मनिगाय अपञ्चतगा च । सुक्ष्मवाउकाइकपर्याप्ता विद्येयायिका सुक्ष्मनिगाय अपर्याप्ता असह्यतगुणा । सुक्ष्म
निगायपञ्चतगा स पन्नवसिद्धिया पन्नतगुणा पन्निवसियसप्तगा अच विद्येयायिका । सुक्ष्मनिगायपराता सख्यातगुणा तेकथी पन्नवसिद्धि पन्नतगुणा
प्रतिपतिसस्यगर्हाट पन्नतगुणा विह पन्नतगुणा । बादरवणपञ्चस्रकाइयपञ्चतगा अच । बादरवणपञ्चस्रकाइयपर्याप्ता पन्नतगुणा । बादरपञ्चतगा

शेषोपाधिकाः ५१ । तेभ्योपि सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ५२ । तेभ्योपि पर्याप्ता सूक्ष्मनिगोदाः सख्येयगुणा मद्यपि पर्याप्ततेषां
 इकायिकादयः पर्याप्तगूढमनिगोदपर्यन्ता अवशिष्टेषां उपपत्त्याऽसंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा सन्ता कथाऽपि लोकाऽसंख्येयत्वस्याऽसंख्येय
 त्रेद्विजगत्यादित्यमस्ययदुल्लभप्रतिषेधमन्त्रिणीयमानधुपपन्न द्रष्टव्यं ५३ । तेभ्योऽनवशिष्टिका अनन्तगुणा अपर्याप्ता अनन्तगुणा ५४ । तेभ्योपि सामान्यतो
 तसम्यग्द्रष्टृपीडनस्तनुकाः ५५ । तस्य चिदा अनन्तगुणाः ५६ । तस्योपि आदरयनरूपतिकायिका पर्याप्ता अनन्तगुणा ५७ । तेभ्योपि सामान्यतो
 यादरपर्याप्ता विशयाचिका आदरपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ५८ । तस्यो धादरपर्याप्तवस्त्वतिकायिका असंख्येयगुणा ए
 नैक्यादरनिगादपर्याप्तनिधयासंख्येयगुणानां यादरपर्याप्तवस्त्वनिगोदानां समवात् ५९ । तेभ्यः सामान्यतो आदरपर्याप्ता विशेषाचिका आदरा
 पर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ६० । तस्यः सामान्यतो आदरा विशेषाचिका पर्याप्ताऽपर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् ६१ ।
 तस्यः सूक्ष्मवस्त्वतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ६२ । तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाचिकाः सूक्ष्माऽपर्याप्ता पृथिवी
 कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ६३ । तस्यः सूक्ष्मवस्त्वतिकायिकाः पर्याप्तकाः सख्येयगुणाः पर्याप्तकाऽनपर्याप्तसूक्ष्मेभ्यः सूक्ष्मा

त्रिसंसाहिया सुक्रमयणस्सहकाइया सुपजाप्तया सुक्रमयणस्सहकाइया सुपजाप्तया सुक्रमयणस्सहकाइया सुपजाप्तया
 त्रिसंसाहिया सुक्रमवणस्सहकाइया पजाप्तया सखेज० सुक्रमपजाप्तया त्रिसंसाहिया सुक्रम त्रिसंसाहिया

वि० वायव्यस्सहकाइय अपव्यसना यस्य । वादरपर्याप्ता विशेषाचिका आदरवस्त्वतिकायिका अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । जीवावावरा अपव्यसना
 वि वायव्यात्रिसंसाहिया । सुक्रमवस्सहकाइय अपव्यसना यस्य सङ्क्रमपव्यसना वि । सूक्ष्मवस्त्वतिकायिका अपर्याप्ता असंख्यातगुणा सूक्ष्मा यस्य
 साधना नियमाधिक । सङ्क्रमवस्सहकाइयव्यसना य सुक्रमपव्यसना वि । सूक्ष्मवस्त्वतिकायिका अपर्याप्ता सख्यातगुणा सूक्ष्मपवाप्ता विशेषाधिक ।
 सङ्क्रमाद० भवसिंहिया त्रिसंसाहिया निगादभोवा विवसाहिया । मन्त्राविमयाधिक तत्रयो भवसिंहिया विशेषाधिक तत्रयो निगादभोव विशेषाधिक ।

गुणा अक्षयेयसोकावाशमद्विशराद्विप्रसायत्वात् ५८ । तेषां प्रत्येकच्छरीरबाह्यदरवत्तत्पत्तिफायाका अपर्याप्ता अक्षयेयगुणाः ५९ । तेभ्योपि बाह्यदर
निर्गोदा अपर्याप्ता अक्षयेयगुणाः ६० । तस्या बाह्यदरपृथिवीकायिका अपर्याप्ता अक्षयेयगुणाः ६१ । तेभ्यो बाह्यदराप्यायिका अपर्याप्ता अक्ष
येयगुणाः ६२ । तेभ्यो बाह्यदरायुकायिका अपर्याप्ता अक्षयेयगुणाः ६३ । तस्य सूक्ष्मतत्त्वायिका अपर्याप्ता अक्षयेयगुणाः ६४ । तस्य सूक्ष्म
पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विद्येयायिकाः ६५ । तस्य सूक्ष्माप्यायिका अपर्याप्ता विद्येयायिकाः ६६ । तस्य सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विद्ये
यस्यैव महापत्ताया बहुविकाराः-जोवावत्तत्त्वायिका अपर्याप्ता अक्षयेयगुणाः ६७ । तस्य सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विद्ये
यविकारिकाः पर्याप्ता विद्येयायिकाः ६८ । तस्योपि सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्ता विद्येयायिकाः ६९ । तस्योपि सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्ता वि

मपुढविकाइया पञ्जस्रगा विसंसाहिद्या सुकमस्याउकाइया पञ्जस्रगा विसंसाहिद्या सुकमवाउकाइया पञ्ज
स्रगा विसंसाहिद्या सुकमणिगोदा अपञ्जस्रा असत्वे० सुकमणिगोदा पञ्जस्रया सखिजगुणा अजवसिद्धि
तगुणा यादरपञ्जस्रा विसंसाहिद्या सुकमणिगोदा सिद्धा अणतगुणा यादर वणस्सइकाइया पञ्जस्रगा अ
मवाउकाइया पञ्जस्रगा वि । एकतेउकाइकापरीप्ता सख्यातगुणा सुकमणिगोदा अक्षयेयगुणा विसंसाहिद्या विसंसाहिद्या । सुकमवाउकाइया पञ्जस्रगा वि सुकमणिगण अपञ्जस्रगा य । सुकमवाउकाइकापरीप्ता विसंसाहिद्या सुकमणिगोदा अपञ्जस्रगा । सुकम
मणिगणपञ्जस्रगा स समवसिद्धिद्या अजवसिद्धिद्या पञ्चसिद्धिद्यस्यपत्ताया यव सिद्धाअण । सुकमणिगोदापरीप्ता सख्यातगुणा तेभ्यो समवसिद्धिद्य अजतगुणा
मणिगणपञ्जस्रगा वि अजतगुणा वि अजतगुणा । बाह्यदरवत्तत्त्वायिका अपर्याप्ता अक्षयेयगुणा । बाह्यदरवत्तत्त्वायिका

सुहमवाउकाइया पञ्जस्रगा वि सुकमणिगण अपञ्जस्रगा य । सुकमवाउकाइकापरीप्ता विसंसाहिद्या सुकमणिगोदा अपञ्जस्रगा । सुकम
मणिगणपञ्जस्रगा स समवसिद्धिद्या अजवसिद्धिद्या पञ्चसिद्धिद्यस्यपत्ताया यव सिद्धाअण । सुकमणिगोदापरीप्ता सख्यातगुणा तेभ्यो समवसिद्धिद्य अजतगुणा
मणिगणपञ्जस्रगा वि अजतगुणा वि अजतगुणा । बाह्यदरवत्तत्त्वायिका अपर्याप्ता अक्षयेयगुणा । बाह्यदरवत्तत्त्वायिका

श्रीयापिकाः ७१ । तेभ्योपि भूस्त्वनिगोदा अपर्याप्तका असहयेयुक्ताः ७२ । तेभ्योपि पर्याप्ताः भूस्त्वनिगोदा असहयेयुक्ता यद्यपिच पर्याप्ततेन
 स्वायिकादयः पर्याप्तभूस्त्वनिगोदपर्यक्ता अविशेषेणाऽप्ययाऽसहयेयुक्तोकाकाप्रदेशराशिप्रमाणा सन्ता साधाऽपि श्लोकाऽसहयेयुक्तस्याऽसहयेय
 नेदनिश्चयादित्यमस्पयुक्त्यमविशेषीयमाममुपपन्न इदृशं ७३ । तेभ्यो ऽजवसिष्ठिका अनन्तगुणा असहयेयुक्तान्नकप्रमाणास्ताः ७४ । तेभ्यः प्रतिपत्ति
 तस्य्यादृष्टयोऽनन्तगुणाः ७५ । तस्य विद्वा अनन्तगुणाः ७६ । तस्योपि वादरवमस्यतिकापिकाः पर्याप्ता अनन्तगुणा ७७ । तेभ्योपि सामान्यतो
 यादरपर्याप्ता विद्यायापिका यादरपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रवेपात् ७८ । तेभ्यो वादरपर्याप्तवतस्परतिकापिका असहयेयुक्ता य
 केयादरनिगोदपर्याप्तनिश्चयासहयेयुक्तातां यादरपर्याप्तपृथिवीका सामान्यतो वादर विधेयापिका पर्याप्ताऽपर्याप्ता वादर
 पर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रवेपात् ७९ । तस्य सामान्यतः भूस्त्वामप्यतः वादर विधेयापिका पर्याप्ताऽपर्याप्ता वादर
 तस्यः भूस्त्वमपरतिकापिका अपर्याप्ता असहयेयुक्ताः ८० । तेभ्य सामान्यतः भूस्त्वामप्यतः वादर विधेयापिका पर्याप्ताऽपर्याप्ता वादर
 कायिकादीनामपि तत्र प्रवेपात् ८१ । तस्य भूस्त्वमपरतिकापिकाः पर्याप्तगुणाः पर्याप्तभूस्त्वायामऽपर्याप्तभूस्त्वैव्यः स्वाप्ता

विसेसाहिया यादरा विसेसाहिया सुक्त्रमयस्सहकाइया छपज्जसया सुक्त्रमा छपज्जसया
 यिसेसाहिया सुक्त्रमवणस्सहकाइया पज्जसया सखेज्ज० सुक्त्रमपज्जसया विसेसाहिया सुक्त्रमा विसेसाहि

वि० वादरवच्छाकाइव अपज्जसना वर० । वादरपर्याप्ता विसेयापिका वादरवणस्सतिकाइव अपर्याप्ता वर० वादरा अपज्जसना
 वि वायराविसेयापिका । सुक्त्रमवणस्सहकाइव अपज्जसया वर सुक्त्रमपज्जसना वि । सुक्त्रमवणस्सतिकाइव अपर्याप्ता वर० वादरा अपज्जसना
 वर० वायरा विसेयापिका । सुक्त्रमवणस्सहकाइव अपज्जसना वर सुक्त्रमपज्जसना वि । सुक्त्रमवणस्सतिकाइव अपर्याप्ता वर० वादरा अपज्जसना
 सुक्त्रमावि० भवसिद्धिया विसेयापिका विसेसाहिया । सुक्त्रमवणस्सहकाइव अपज्जसना वर सुक्त्रमपज्जसना वि । सुक्त्रमवणस्सतिकाइव अपर्याप्ता वर० वादरा अपज्जसना

गुणा असहयेपसोकाकाशप्रदेशाराद्यिप्रमादत्वात् ५८ । तेभ्यः प्रत्येकक्षरीरवाद्दरवदनस्थितिकायिका अपर्याप्ता असह्येयगुणाः ५९ । तेभ्योपि यादर
निगोदा अपपाप्तका असह्ययनकाः ६० । तस्या वादरपृथिवीकायिका अपर्याप्ताका असह्ययगुणाः ६१ । तेभ्यः वादराप्तायिका अपर्याप्ता अस
ह्ययगुणाः ६२ । तेभ्यो वादरवायुकायिका अपर्याप्ता असह्ययगुणाः ६३ । तस्य सूक्ष्मतलस्कायिका अपर्याप्ता असह्येयगुणाः ६४ । तस्य सूक्ष्म
पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विछेयायिकाः ६५ । तस्यः सूक्ष्मायिका अपर्याप्ता विछेयायिका अपर्याप्ता विछे
यायिकाः ६६ । तस्यः सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ताका असह्ययगुणाः ६७ । तस्यः सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विछेयायिका अपर्याप्ता विछे
यायिकाः ६८ । तस्यः सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ताका असह्ययगुणाः ६९ । तस्यः सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ताका असह्ययगुणाः ७० । तस्यः सूक्ष्म
प्रसापनार्थं सङ्कुचिकादः-जोवायमऽपञ्चता बहुतरनावायराकविक्रया सुदुर्भास्यपञ्चता ठहेकयकसीयिति ७१ । तस्यापि सूक्ष्म
पृथिवीकायिकाः पर्याप्ता विछेयायिकाः ६९ । तस्योपि सूक्ष्मायिकाः पर्याप्ता विछेयायिकाः ७० । तस्योपि सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्ता वि

मपुढविकाइया पञ्चगुणा विसंसाहिता सुक्ष्मश्वाउकाइया पञ्चगुणा विसंसाहिता सुक्ष्मवाउकाइया पञ्च
गुणा विसंसाहिता सुक्ष्मनिगोदा व्यपञ्चता व्यसखे० सुक्ष्मनिगोदा पञ्चगुणा सखिजगुणा व्यन्त्रवसिद्धि
या व्यपतगुणा पन्निवसिय सम्मतिठी व्यपतगुणा सिद्धा व्यपतगुणा वादर वणस्सइकाइया पञ्चगुणा व्य
पतगुणा वादरपञ्चता विसंसाहिता वादरवणस्सइकाइया व्यपञ्चगुणा व्यसखिजगुणा वादरव्यपञ्चगुणा

इमवाचकार्य पञ्चतगा वि । व्यपतेजकारकपर्याप्ता सख्यातगुणा सूक्ष्मयवोकारकपर्याप्ता विछेयायिका व्यपेयायिका ।
सुक्ष्मवाचकार व्यपञ्चतगा वि सुक्ष्मनिगाय व्यपञ्चतगा य । सूक्ष्मवाचकारकपर्याप्ता विछेयायिका व्यपेयायिका व्यपेयायिका । सप्तम
निगावपञ्चतगा स पञ्चवसिद्धिदा व्यपतगुणा पन्निवसिय सम्मतिठी व्यपतगुणा सिद्धा व्यपतगुणा वादर वणस्सइकाइया पञ्चगुणा व्य
प्रतिपतितसम्यग्गृहि व्यपतगुणा सिद्ध व्यपतगुणा । वादरवणस्सइकाइया व्यपञ्चतगा व्यप । वादरवणस्सइकाइया व्यपञ्चतगा । वादरवणस्सइकाइया

तुरिन्द्रियैकपक्षेन्द्रियायामपि तत्र प्रवेष्टात् ६१ । तेभ्यः द्युतुगतिजायिनो मिथ्यावृत्तयो विज्ञेयाधिका षड् कल्पिपयाधिरतसम्यग्भूय्याधिसञ्चि-
 श्यतिरुक्तं ज्ञेयाः सर्वेऽपि तितैष्वो मिथ्यादृष्टिचिन्तायां चासस्येयनारकादयः साध प्रसिध्यन्ते ततः क्षियगुणीवरात्रयपेक्षया चतुर्गतिष्ठा मिथ्यादृष्टय
 चिन्तयमाना विज्ञयापिक्ताः ६२ । तन्मोप्यविरता विज्ञयापिक्ता आविरतिसम्यग्भूमीनामपि तत्र प्रकृपात् ६३ । तेभ्यः सकृपायिषो विज्ञेयापिक्ता दे
 शविरतादीनामऽपि तत्र प्रकृपात् ६४ । तभ्यः साध्रत्या विज्ञेयापिक्ता उपकृष्टात्मोद्वादीनामपि तत्र प्रवेष्टात् ६५ । तेभ्यः सयोनिनो विज्ञयापिक्ता
 सयोनिक्षेपसिनामऽपि तत्र प्रकृपात् ६६ । तभ्यः संसारस्या विज्ञयापिक्ता सयोगिषवसिनामऽपि तत्र प्रकृपात् ६७ । तेभ्यः सवञ्जीवा विज्ञयापि
 काः सिद्धानामऽपि तत्र प्रकृपात् ६८ ॥ इति श्री भक्त्यगिरिविरचितया प्रज्ञापनाटीकायां कुरुवृत्ताख्यं तृतीयं पदं समाप्तम् ॥ ३ ॥

व्याख्यातं वृत्तीष्वपदं मिश्रमां चतुर्थमा दन्त्यते-तत्संज्ञायमप्रिकथ्यन्तः इहानन्तरपददिगनुपातादिनाऽल्पबहुत्वसङ्ख्या निद्वीरिता कस्मिन्नु तया
 सत्यबहुत्वसङ्ख्या निद्वीरिताना जीवाना सत्वानो जन्मतः प्रवृत्त्यानरकात् यकारकादिपर्यायरूपं व्यवच्छिन्नं सत्त्वात् त दित्यन्ते, जन्मन स
 न्यग्यभायातस्यास्वेदमादिस त्वं-नेरदयात् जने । केवलय काल तिदृक्कता इति ॥ नेरयिकावा जदन्त । कियन्त काल स्थितिः प्रज्ञप्ताः तत्र स्वी

यज्वसध्वयपदं सम्मत् ॥ ३ ॥ ॥ ॥
 णरद्वयाण जने ! केयद्वय काल तिदं पणप्ता ? गोयमा ! जद्वयेण वसवाससहस्सादं उक्तासेण तस्मीस साग

नेरयिकावां जदन्त । कियन्तं काल स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम । जयम्यन द्वावयसइत्याशुत्कथतरयपत्रिंशत्सागरोपमाणि जयमाधनैर
 डारना मदाईद्वय चत्सवत्तना पद तीक्षा समामवया इत्यभोज पदे यकावत्तल कोपमा कदा २० बार प्रज्ञापना भगवतो मीड ॥ ३ ॥
 नेरद्वयात् भत कवतिव कासठिड य । द्विये यववैपद परीस चरकटकधन्यस्थिति पायुनो कवैले-मारनो इममभन् कतनाकासभोस्त्रितवो । गो-
 जद्वयेणं दसदासवद्वयाड च तितोसमानावमादं । जगौतम जयन्य जाओ द्वावकारवपनो स्त्रितरत्नमभानो जयमाय कद्वयो ततासस गतापस

धतः सहेतु सव्येयगुणतया प्राप्यमाहृत्यात् तद्यादेवसर्वेदोऽनुसृत्योऽऽ । तेऽप्योपि सामान्यतः सूक्ष्माः पर्यायता विज्ञेयापिक्ताः पर्यायतसूक्ष्मपु
 यिबीकायिकादीनामऽपि तत्र प्रवेष्टात् ८३ । तस्य पर्यायताऽपर्यायतविज्ञेयपरिहृताः सूक्ष्मा विज्ञेयापिक्ताः पर्यायतसूक्ष्मपुयिष्यपुतकोवापुधन
 रपतिकायिकायामाऽपि तत्र प्रवेष्टात् ८४ । तस्योऽपि जवसिद्धिका जवे सिद्धि र्यया ते प्रवसिद्धिका जव्याविज्ञेयापिक्ताः जपन्ययुक्तामन्त्रमात्राऽज
 यपरिहारव सबबीबाना प्रत्येयात् ८५ । तस्यः सामान्यतो भिन्नोदकीवा विज्ञेयापिक्ताः ८६ जम्या जप्रग्या द्याऽतिप्रभुयैष वादरसूक्ष्मभिगोद
 बीदराद्यावत प्राप्यत नाऽप्यज्ञाऽप्यथा सर्वपाऽनपि निमित्ता भामवश्यलोकाकाशप्रदेशराशिप्रभावत्वात् जप्रग्याद्य युक्तान्तकस्यामान्त्रपरि
 भाव स्ततो जस्यापक्षया ते किञ्चिन्मात्रा जम्याद्य प्राजऽनत्यपरिहारव चिन्तिता इदानीन्तु वादरसूक्ष्मभिगोदचिन्ताया तेपि प्रसिष्यन्ते इति विज्ञा
 पापिकाः ८७ । तेभ्यः सामान्यतो वनस्पतिबीजा विज्ञेयापिक्ताः प्रत्येकशरीरिकाभ्यपि वनस्पतिबीजाणा तत्र प्रवेष्टात् ८८ । तस्यः सामान्यत एवे
 निद्रिया विज्ञेयापिक्ताः वादरसूक्ष्मपुयिबीकायिकादीनामपि तत्रेयात् ८९ । तेभ्यः सामान्यत सिर्पेभ्योभिक्ता विज्ञेयापिक्ताः पर्यायतापर्यायचिह्नित्रिच

या नवसिद्धिया विसेसाहिद्या निगोदा जीया विसेसाहिद्या वणस्वहजीया विसेसाहिद्या एगिदिया विसे
 साहिद्या तिरिक्कजोणिया विसेसाहिद्या मिच्छदिठी विसेसाहिद्या अयिरया विसेसाहिद्या तउमत्या विसे
 साहिद्या सजोगी विसेसाहिद्या ससारत्या विसेसाहिद्या ससुजीया विसेसाहिद्या ॥ पञ्चवणाए नगवर्हए

वचनशरीरा विसेसाहिद्या दमिहिद्या विसेसाहिद्या । वनस्पतिशरीर विज्ञेयापिक्ता एकेन्द्रिय विज्ञेयापिक्ता । तिरिक्कजोणिया विसेसाहिद्या मिच्छदिठी
 विसेसाहिद्या । तेहको तिर्येवबानिया विज्ञेयापिक्ता तेहको मिच्छाहति विज्ञेयापिक्ता । अनिरतो विसेसाहिद्या सवसाह विसेसाहिद्या जउमत्या विसेसा
 सजोगी विसेसाहिद्या ससारत्या विसेसाहिद्या । तेहको अनिरतो सम्ययहरो विज्ञेयापिक्ता सवसाह विज्ञेयापिक्ता सजोगी विज्ञेयापिक्ता
 व सशरीजीव विज्ञेयापिक्ता । ससुजीया विसेसाहिद्या ८८ पञ्चवणाए नगवर्ह ९० जपन्ययुक्तामन्त्रमात्रा ८९ तत्र प्रवेष्टात् ८८ । तेहको सबलोव विज्ञेयापिक्ता विज्ञेयापिक्ता ८८

तु रिभिन्नयतिपक्षपक्षेन्द्रियाबाधमपि तत्र प्रत्येपात् ८१ । तेभ्यः यत्तु गतिजाभिर्नो मिथ्यादृष्टयो विज्ञेयाधिक्या ॥ कतिपयाविरतसम्यग्बुद्ध्याविसंख्य
भ्यतिरक्त्य द्वेपाः सर्वेपि तियन्त्रो मिथ्यादृष्टिचिन्तायो बाधस्वेयनारकादयः क्षत्र प्रचिप्यन्ते ततः स्तियन्त्रजीवराइयपेक्षया यत्तु गतिजा मिथ्यादृष्टय
विज्ञेयमात्रा विज्ञेयाधिक्या ८२ । तन्मयोप्यविरता विज्ञेयाधिक्या अविरतिसम्यग्बुद्धीनामपि तत्र प्रत्येपात् ८३ । तेभ्यः सुखपायिको विज्ञेयाधिक्या दे
वाविरताद्गीनामऽपि तत्र प्रत्येपात् ८४ । तन्मयः कष्टस्या विज्ञेयाधिक्या उपक्षान्तमोहावीनामपि तत्र प्रत्येपात् ८५ । तेभ्यः सुधोगिनो विज्ञेयाधिक्या
सुधाविज्ञेवालनामऽपि तत्र प्रत्येपात् ८६ । तन्मयः संसारस्या विज्ञेयाधिक्या अयोगिकवलिनामऽपि तत्र प्रत्येपात् ८७ । तेभ्यः सुखबीवा विज्ञेयाधि
काः सिद्धानामऽपि तत्र प्रत्येपात् ८८ ॥ इति श्री मत्स्यगिरिबिराजतायाम् प्रज्ञापनाष्टीकाया बहुवचनव्याख्यं तुलीय पत्र समाप्तम् ॥ ३ ॥
व्याख्यातं तृतीयपदं मित्रार्थं यत्तु यमा रज्यते-तस्य बाधमत्रिभ्यः ॥ इहानन्तरपदं विगनुपातादिनाऽप्यबुद्ध्युत्पत्त्या मिद्वोरिता अस्मिन्नु तथा
अप्यबुद्ध्युत्पत्त्या मिद्वोरितानां जीवानां सुत्वानां ज्ञानतः प्रयस्यामरबात् यकारकार्वाण्योयत्पत्र व्यवच्छिन्नं सर्वस्यान तं विग्न्यते, अन्नं च
व्यग्न्यभावात् तस्यास्येदमादिमं सूत्र-मेरइयात् अते । केवलं कालं टिइपकता इति ॥ नैरविकाणां जहन्त । विपन्न कालं स्थितिः प्रज्ञतां तत्र स्थी

यजुःप्रसन्नयपदं सम्मत्त ॥ ३ ॥ ॥ ॥
 नरहृयाण नृते । केवद्वय कालं हि हिं पणता ? गीयमा ! जहर्णेण दसयाससहससाहं उक्कीसेण तत्तीस साग ॥

नैरपि बाकी नदत्त । विपन्तं बाल स्थितिः प्रसूता ? गीतम् । अपम्येन दशवर्षसहस्राब्दुस्वपत्तयपत्तिश्चात्सागरोपमादि अपमाप्सर्नैर
 दारना मर्दार्दक चत्पदवत्तना पत्त तोषा समामयदा दत्तोत्त परे पन्पदवत्तल कोवना वत्ता २० द्वार प्रज्ञापना भगवतो मोक्ष । ३ ।
 नरदत्तच भेत चप्रतिव काष्ठिठि प । द्विरे चकसेपरे पयोम चरुद्वयपन्पत्ति पायुगो चकसे—भारकोमो वृमभगवन् खतनावाप्तनोभ्यति चको । गो
 नदत्तपं दसवासवद्वारा च तितोससागरावमाह । दगीतम जघन्य बाको द्यवज्ज्वारवत्तनो कितिरत्तपमानो अपम्यद च्छकटो ततासस गरापम

पतः। सदैव सर्वयेयमुद्यतया प्राप्यमाश्रयत्, तथाचैवसेवेदोऽपसंख्योः ८४। तेज्योपि सामाम्यतः सूक्ष्माः पर्यापत्ता विज्ञेयापिक्ता पर्यापत्तसूक्ष्मप
 पिबीकापिकादीनामऽपि तत्र प्रवेयात् ८५। तेज्य पर्यापत्ताऽपर्यापत्तविज्ञेयवद्विहः। सूक्ष्मा विज्ञेयापिक्ता श्रवणीपत्तसूक्ष्मपुण्यिष्यपत्तकोवायुवत
 रपत्तिर्वापिकाभामऽपि तत्र प्रवेयात् ८६। तेज्योऽपि सवचिह्निका धवे चिह्नि र्वेया ते प्रवचिह्निका प्रव्याविज्ञेयापिका वपत्यपुत्तामन्त्रमाश्राऽन
 व्यपरिहारेण सुवचीवानो नश्यत्याश्र ८७। तज्यः सामाम्यतो निगोदकीना विज्ञेयापिक्ताः ८८। तज्यः सामाम्यतो निगोदकीना विज्ञेयापिक्ताः ८९। तज्यः सामाम्यतो निगोद
 कीनराशोवव प्राप्यते नाऽन्यथाऽन्यथा सर्वेयाऽमपि मिसिता नामसंख्यतोकाकाशप्रदेशेऽपिप्रमाश्रयत्। यजमयाद्य युक्तामन्त्रसंख्यामाश्रपरि
 भाव सतो नश्यतापक्षया ते विज्ञेयान्त्रा प्रप्याद्य प्रावऽन्यपरिहारेण चिह्नितता इदानीत्। वादरसूक्ष्मनिगोदविज्ञेयाया तेपि प्रवचिह्निके इति विज्ञे
 यापिक्ताः ९०। तेज्यः सामाम्यतो वनस्पतिबीजा विज्ञेयापिक्ताः। प्रत्यक्षशरीरिकाभपि वनस्पतिबीजाणा तत्र प्रवेयात् ९१। तज्यः सामाम्यत एवे
 न्द्रिया विज्ञेयापिक्ताः। वादरसूक्ष्मपुण्यिबीकापिकादीनामपि तत्रेयात् ९२। तेज्यः सामाम्यत क्षिप्योनिजा विज्ञेयापिक्ताः पर्यापत्तापर्यापत्तद्वित्रिच

या नत्रासिद्धिया विसेसाहिद्या निगोदा जीया विसेसाहिद्या वणस्सहजीवा विसेसाहिद्या एगिदिद्या त्रिसे
 साहिद्या तिरिस्कजीणिद्या विसेसाहिद्या मिच्छादिही विसेसाहिद्या ध्ययिरया विसेसाहिद्या तउमत्या यिसे
 साहिद्या सजीगी यिसेसाहिद्या ससारत्या विसेसाहिद्या सध्वजीवा विसेसाहिद्या ॥ पञ्चयणाए नगवर्द्धए

वणश्चाचोवा विसेसाहिद्या एगिदिद्या विसेसाहिद्या। वनस्पतिबीजा विज्ञेयापिक्ता एवेन्द्रिय विज्ञेयापिक्ता। तिरिस्कजीनिद्या विसेसाहिद्या मिच्छादिही
 विसेसाहिद्या। तेज्यो तिरिक्वाणिद्या विज्ञेयापिक्ता तेज्यो निज्याहति विज्ञेयापिक्ता। पविर्तो विसेसाहिद्या सवसाह विसेसाहिद्या वउमत्या विसेसा
 यरानो विसेसाहिद्या ससारत्या विसेसाहिद्या। तेज्यो पविर्तो सम्यगहो विज्ञेयापिक्ता सवसाह विज्ञेयापिक्ता सयानो विज्ञेयापि
 क ससारोजीय विज्ञेयापिक्ता। सवजीवा विसेसाहिद्या ९८ पञ्चयणाए अगवर्द्ध ए वज्रवतया पर्व सप्यत। तेज्यो सवजीव विज्ञेयापिक्ता विज्ञेयोताए ९८

केवइय काल ठिई पयासा ? गोयमा ! जहखेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण सागरोवम अणपज्जसयरयणप्य
 नापुढविणेरइयाण केवइय काल ठिई पयासा ? गोयमा ! जहखाणावि अतोमुज्जस उक्कोसणयि अतोमु
 ज्जस पज्जसयरयणप्यनापुढविणेरइयाण जते ! केवइय काल ठिई पयासा ? गोयमा ! जहखेण दसवा
 ससहस्साइ अतोमुज्जसूणाइ उक्कोसेण सागरोवम अतोमुज्जतूण । सक्करप्पनापुढविणेरइयाण जत । केव
 इय ठाण ठिई पयासा ? गोयमा ! जहखेण एण सागरावम उक्कोसेण तियि सागरोवमाइ अणपज्जसय
 सक्करप्पनापुढविणेरइयाण जते ! केवइय काल ठिई पयासा ? गोयमा ! जहखेण अतोमुज्जस उक्कोसेण
 यि अतोमुज्जस पज्जससक्करप्पनापुढविणेरइयाण जते ! केवइय काल ठिई प० ? गोयमा ! जहन्तेण साग

विधीनिरयिकाणां जदत्त । कियत्तं काल स्थितिः प्रकृता ? गौतम ! अपत्येताप्यस्तमुद्भूतमुत्कर्षेणाप्यस्तमुद्भूतं पर्याप्तकरवप्रज्ञापुचिधी
 निरयिकाणां जदत्त । कियत्तं काल स्थितिः प्रकृता ? गौतम ! अपत्येन दसवयंसहस्सास्यस्तमुद्भूतानि उत्कर्षेण सागरोपमस्तमुद्भूतानि
 न् । यकाराप्रज्ञापुचिधीनिरयिकाणां जदत्त । कियत्तं कालं स्थितिः प्रकृता ? गौतम ! अपत्येनेन सागरोपममुत्कर्षेण क्रीडि सागरोपमा
 वि, अपपारतकदाकराप्रज्ञापुचिधीनिरयिकाणां जदत्त । कियत्तं काल स्थितिः प्रकृता ? गौतम ! अपत्येनास्तमुद्भूतमुत्कर्षेणाप्यस्तमुद्भूत

न । यस्मिंस्तज्जबो वत्तहो सागरापम यस्मिंस्तज्जम यकारवभासा मारकोनोस्सिति कनयाणाव देवभवन् । यावमा जइय ० मसागरोवमं ।
 यकाविनें तिविसामरावम । इधोतम जइय पवयाधारपम वत्तहो तोमभागरापमो स्सिति । यण्णत्तयकएय्यपुटवीनेरएयाव मते वे । ययवोता
 यकारवभासा मारकोनो वत्तहोस्सिति देवभवन् । नायमा जइय पतामज्जस य पतामज्जस य पतामज्जस वत्तहो यतमज्जस । यण्णत्त
 वत्तएय्यपुटवीनेरएयाव मते क । पर्यामयकारप्रभाविबोम मारकोनोस्सिति देवभवन् केतहोस्सिति वे । नायमा जइय पतामरावम यंतामज्ज

यते उवस्थीपते चनया ऽयुःकर्मजनस्येति स्थिति स्थातिरायु कर्मजनुप्रति जीवेन सिष्यात्वादिनिष्पातानामा क्षमपु

રોયમાઢ સ્વપ્જ્ઞસર્નેરહયાણ જતે ! કેવઢય કાલ ઢિઢે પચ્ચા ? ગોયમા ! જઢસેણ સ્વતોમુજ્ઞસ ઉક્તો
 સેગયિ સ્વતોમુજ્ઞસ પ્જ્ઞસર્ગરહયાણ જતે ! કેવઢય કાલ ઢિઢ પચ્ચા ? ગોયમા ! જઢસેણ દસવાસસ
 હસ્સાહ સ્વતોમુજ્ઞનાહ ઉક્તોસેણ તેષીસ સાગરોત્રમાહ સ્વતોમુજ્ઞનાહ રયણપ્પન્નાપઢવિર્નેરહયાણ જતે !

यिकाणा प्रदत्त । विपत्तः कासं स्थितिं प्रचक्षते । गीतम् । अप्यनान्तर्मुद्रतमुक्त्येवाप्यन्तर्मुद्रतं पर्याप्तकर्मरयिकायां विपत्तः कासं स्थितिः प्रचक्षते । गीतम् । अप्यन्तो दक्षत्रयसहकावि अन्तर्मुद्रतानि उत्पद्यन्तं तानि अन्तर्मुद्रतानि रत्नप्रजापुष्टिं वीनैरयिकायां प्रदत्त । विपत्तं कासं स्थितिं प्रचक्षते । गीतम् । अप्यन्तो दक्षत्रयसहकास्तुत्पद्यन्तः सागरोपमम्, अपर्याप्तरत्नप्रपाद

नो स्थिति तमतमा दुबिबोनी उपपावे । अपज्जनन गररगाव मत वेवतिय कासठिर प । अपयीसागरकोनी जतवावासासोस्थितिबडो । गा खड
 यव यतामइत उकासबि यतामइत । जेनीतम जवगेविच यतमुइत जतवेविच अतमइत । पज्जननगररबाव भते वेवतिय कासठिर प । पयीसा
 गरकोनी जतवावासासोस्थितिबडो । या जववेव दमवाससइछार । जेनीतम जवगेदमइकादव । यतामइत पूर उकोसेप तेनीससागरदो
 माइ यतामइत पूर । यंतमइतलको उरउतेनीससागरपम यंतमुइतलको । रववपमाप मुठवोए नेरइरावभतेकव । रजप्रमा दुबिबोनी नारकांनी
 देभगदइ जतवावासासोस्थिति । गावमा जववेव दसवाससइछार उकासेव सागरावमे । जेनीतम जवगेदमइकादव जारवथ उरउते एवसागरीपम । अपज्ज
 नरववपममुठवोनेररबाव मते के । अपयीसा रजप्रमाणा गरकोनी जेतकोस्थिति देममव । गावमा जववेववि यतामइत उकासेवि यतो मुइत ।
 जेनीम जवगेविच यतमुइत कासठेविच यतमुइत । पज्जननरववपममुठवोनेररबाव मते के । पयीसा रजप्रमाणा नारकोनी जेतकोस्थिति देभम ।
 भीयमा जववेव दमवाससइछार । जेनीतम जवगेदमइकादव । यतामइत पूर उकासेव सागरावमे यतामुइत जववपममुठवोनेररबाव मते

केवइय काल ठिई पणसा ० गोयमा । जहणेण दसथाससहस्साइ उक्कोसेण सागरीवम अणज्जहरयणप्य
 नापुढविणरइयाण केवइय काल ठिई पणसा ० गोयमा । जहणेणअथ अतोमुज्जत उक्कोसणयि अतोमु
 ज्जत पज्जत्तयरयणप्यनापुढविणरइयाण जते । केवइय काल ठिई पणसा ० गोयमा । जहणेण दसथा
 समहस्साइ अतोमुज्जसूणाइ उक्कोसेण सागरीवम अतोमुज्जतूण । सक्करप्पनापुढविणरइयाण जत । केव
 इय ठाण ठिई पणसा ० गोयमा । जहणेण एग सागरावम उक्कोसेण तिण्णि सागरीवमाइ अणज्जत्तय
 सक्करप्पनापुढविणरइयाण जते । केवइय काल ठिई पणसा ० गोयमा । जहणेण अतोमुज्जत उक्कोसेण
 यि अतोमुज्जत पज्जत्तसक्करप्पनापुढविणरइयाण जते । केवइय काल ठिई प० ० गोयमा । जहन्तेण साग

यिबीनरिकाकां जदत्त । कियत्त काल स्थितिः प्रपन्ता ० गीतम । अपत्येनाप्यत्तमुद्रुतमुत्कर्षेवाप्यत्तमुद्रुते पर्योत्तकरवप्रप्रापयिषी
 नेरिकाकां जदत्त । कियत्त काल स्थितिः प्रपन्ता ० गीतम । अपत्येन दशवर्षसहस्राव्यत्तमुद्रुतीनाणि उत्कर्षेत सावरोपमस्तमुद्रुतीनि
 म् । शकराप्रभापयिषीनरिकाकां जदत्त । कियत्त काल स्थितिः प्रपन्ता ० गीतम । अपत्येनैवं सागरोपममुत्कपत खीदि सागरोपमा
 दि, अपयाप्तकक्षराप्रभापयिषीनरिकाकां जदत्त । कियत्त कालं स्थितिः प्रपन्ता ० गीतम । अपत्यनात्तमुद्रुतमुत्कर्षेवाप्यत्तमुद्रुते

व । पर्युद्रुतकवो वट्ठहो सामरापम अतमुद्रुतम गकरप्रभाभा नारकोनोस्सिति कनकाकाक हेमगवन् । मायमा जइय ० यसागरोवमं ।
 पडाधेवं तिक्कमागताम । इभीतम जइय पक्कसायरापम वट्ठहोतीनमागारापमनो स्सिति । अपत्यत्तकक्षरापमपुडवोनेररयाच मते के । अपयसा
 यकरप्रभाभा नारकोनो वतथोस्सिति हेमगवन् । मायमा जइय ० यतामज्जत व यतामुद्रुत । इगीतम जइय ० यतमज्जत वट्ठहो यतमज्जतं । पज्जत्तग
 सक्करप्पमपठवोनेररयाचं मते के । पर्यासायकरप्रभापयिषीभा नारकोनोस्सिति हेमगवन् वेतथोस्सितिक्कहो । मायमा जइय ० सागरावम यतामुद्रु

नृजानां प्राणावरणीयादिकूपतया परित्यक्ता यदवस्थान सा स्थिति रितिप्रसिद्ध तथापि भारकादिव्यपदेशेत्तरायुःकर्मभूजति स्तथाहि-यथापि
 मरकतपिपम्बेन्म्रियवात्यादिनामकर्मद्वयाद्यो नारकात्त्वपर्याय स्तथापि नारकायुःप्रथमसमयसेवेककालस्यैव तत्किञ्चनमनारकदेशमप्राप्सोपि नारक
 स्य उपदेशो सन्नगते । तथाच धीमीश्वर प्रवचन-नेरद्वयस्य मत । नेरद्वयसु उच्यते अमरद्वय नेरद्वयसु उच्यते अमरद्वय नेरद्वयसु उच्यते
 न्नाह नो अनरद्वय मरद्वयसु उच्यते इत्यादि, उता, सेवायु कर्मभूजति दिह यथात्म्युत्पत्त्या स्थिति रतिपीयते इति, अत्र निर्वचनमाह-नो
 यमेत्यादि ॥ मतस्य पर्याप्तपर्याप्तविज्ञानावावेन सामान्यत उक्त यदा तु पर्याप्तपर्याप्तभागेन विना तदेवं सूत्र-अप्यज्जनेरद्वयस्य प्रते । इत्यादि ॥
 इहापयोसा द्विविधा लक्ष्या करिष्ये तत्र नेरयिका देवा सङ्क्षेपपर्यायस्य स्थिरमनुष्याः करिष्येराऽपयोसा न लक्ष्यालक्ष्यऽपयोसकाना तेषु मध्ये
 उत्पादासम्भवात् तत एते उपपातकालस्य करिष्येः विद्यन्त काल मपर्यासा इत्युच्यते उपपातु तियमनुष्या लक्ष्या अपर्यासा उपपातकाले च, उ
 च्यते-नारगद्ववातिरिमसु पगतमकाक्षेयसुखासाक । एष्यज्जनेरद्वयस्य ॥ १ ॥ सवायतिरियमनुष्या लक्ष्यपयोववायकालेय । दुष्टे
 विद्यन्तद्ववा पञ्चतिपरेयविद्यवपणं ॥ २ ॥ अपयोप्रका य जप्यत उत्कर्षतोवाकमुद्रते मत उक्त-गीयमा । अत्रैव उक्तोवेकवि अतामुद्रत ॥
 अपर्यासादुपापगम च द्वेयकालः पर्यासादु तत उक्त पर्याप्तसूत्रे-गीयमा । अत्रैव दसवाससद्वसाई अतोमुद्रतककाई उक्तोवेयं ततोच सागरोय
 माह अतोमुद्रतककाई ॥ एषच पृथिव्यऽविज्ञानेन चिन्तित सम्मति पृथिवीविज्ञानेन चिन्तयति-रयज्जप्यजापुदविनरद्वयस्य प्रते । इत्यादि सुन

मा । जह्वनेण तित्ति सागरोयमाह अतोमुद्रतूणाह उक्तोसेण सप्तसागरोयमाह अतोमुद्रतूणाह पकप्य

म्यन त्रीपि सामरोपमादि अन्तर्भूतोमानि उत्कर्षतः सप्तसागरोपमादि अन्तर्भूतोमानि । पञ्चपञ्चापृथिवीनारोयकाया प्रदत्त । विद्यम्य

हेममन्त्र केतसा आकनो स्थिति करो म । उत्तर हेमोतम जगद्वय अन्तर्भूत नो उत्कृष्ट पिण अन्तर्भूत नो करो । पञ्चतय पकप्यभक्ति । पञ्चोता
 पञ्चमापृथिवीना नारकोनो च मगमन् केतसा आकनो स्थिति करो म । उत्तर हेमोतम जगद्वय अन्तर्भूत म्यन सात सागरोपम उत्कृष्ट अन्तर्भूत

रोयम अथोमुञ्जत्तूण उक्कोसेणं तिण्णि सागरोयमाइं अथोमुञ्जत्तूणाइं धालुयप्पन्नापुठविनेरइयाण जते !
 केअइय काल ठिईं पणत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण तिण्णि सागरोयमाइ उक्कोसेण सत्त सागरोयमाइ अय
 ज्जस्ययालुयप्पन्नापुठविनेरइयाण जत ! केअइय काल ठिईं पणत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अथोमुञ्जत्त
 उक्कोसेणयि अथोमुञ्जत्त । पज्जास्ययालुयप्पन्नापुठविनेरइयाण जते ! केअइय काल ठिईं पणत्ता ? गोय

म् । पर्याप्तकाराप्रजापृथिवीनिरयिकाका जदत्त । कियत्त काल स्थिति प्रकप्ता ? गीतम् । अपन्यमानमुहूर्त्तानि सागरोपम मुत्कप्यतोस्त
 मुहूर्त्तानि श्रीवि सागरोपमावि । धालुकाप्रजापृथिवीनिरयिकाका जदत्त । कियत्त कालं स्थिति प्रकप्ता ? गीतम् । अपन्येन श्रीवि सा
 गरोपमावि उत्कप्येन सत्तसागरोपमावि । अपन्येन सत्तसागरोपमावि । कियत्त कालं स्थिति प्रकप्ता ? गीतम् ।
 अपन्यमानमुहूर्त्तमुत्कप्यतोप्यन्तमुहूर्त्तम् । पर्याप्तकाराप्रजापृथिवीनिरयिकाका जदत्त । कियत्त काल स्थिति प्रकप्ता ? गीतम् । अप

न तिषिमानरावमाइ पतामउत्तूराइ । इभगवन् अवयव एकसागरापम अतमङ्गलकवो उत्तुष्टोतीनसागरापम अतमङ्गलकवो । वासवपमपुठ
 नरइवाच भते वे । वासवप्रमाना नारकोनो कनकोक्खित इभगवन् । गोवमा अवसेव तिविसागरावमाइ उ सत्तसागरोवमाइ । इगोतम ज
 ये भोनसागरापम उत्तुष्टेवातसागरापम । अपन्यमानावयवमपुठवोनरइयाच भते क । अपन्यमाना वासवप्रमाना नारकोनो कतकोक्खित इभगवन्
 यमा अवयवं पतामङ्गल उवा पतमङ्गल । इगोतम अवयव अतमङ्गल उत्तुष्टेवातसागरापम । पणत्तयवाक्यपपुठवोनरइवाच भते वे । पर्याप्ततावा
 वप्रमाना नारकोनो कतकोक्खित इभगवन् । गोवमा अवयव तिविसागरावमाइ अतोमङ्गलवाइ । इगोतम अवयवतो नसागरापम अतमङ्गलकव ।
 सत्तसागरीवमाइ पतामउत्तूराइ । उत्तुष्टेवातसागरापमनो अतमङ्गलकवो । पणत्तयपुठवोनरइयाच भते क । पणत्तयाना नारकोनो कतकोक्खित
 दो प्र० । उत्तर इगोतम अवयव सत्त सागरोपम उत्तुष्टेव सागरोपमो क्खित कवो । अपन्यतयवपमति । अपन्यतयवप्रमाना नारकोनो

उक्तीसेण सतरसागरोयमाइ । अपज्जत्तयधूमप्पन्नापुठ्ठियिणेरइयाण जत्ते ! केवइय काल ठिइ पणत्ता ? गो
यमा ! जहन्नाणयि अतोमुज्जत्त उक्तीसेणयि अतोमुज्जत्त । पज्जत्तयधूमप्पन्नापुठ्ठियिणेरइयाण जत्ते ! केवइय
काल ठिइ पणत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण दससागरोयमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ उक्तीसेण सतरसागरोयमाइ
अतोमुज्जत्तूणाइ , तमप्पन्नापुठ्ठियिणेरइयाण जत्ते ! केवइय काल ठिइ पणत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण सत
रसागरायमाइ उक्तीसेण आयीससागरोयमाइ । अपज्जत्तयतमप्पन्नापुठ्ठियिणेरइयाण केवइय काल ठिइ प०
? गोयमा ! जहन्नेणयि अतोमुज्जत्त उक्तीसेणयि । अतोमुज्जत्त पज्जत्तयतमप्पन्नापुठ्ठियिणेरइयाण जत्ते ! केव

पयापुत्तधूमप्रज्ञापुच्छिबीनैरयिकाणां जदन्त । कियन्त काल स्थितिं प्रच्छप्ता ? गीतम् । अपग्यन् दश सागरोपमास्सत्तमुद्भूतानानि उरकटतः
सप्ततन्नासागरोपमास्सत्तमुद्भूतानानि तमप्रज्ञापुच्छिबीनैरयिकाणां जदन्त । कियन्त काल स्थितिं प्रच्छप्ता ? गीतम् । अपग्यन् सप्ततन्नासाग
रोपमास्सत्तयता हाविश्रुतिं सागरोपमाणि । अपयापयतमप्रज्ञापुच्छिबीनैरयिकाणां जदन्त । कियन्त काल स्थितिं प्रच्छप्ता ? गीतम् । अपग्यन् सप्ततन्नासा
पुत्तमरत्तयधूमप्पन्नापुत्तमुद्भूतम् । पयापयतमप्रज्ञापुच्छिबीनैरयिकाणां जदन्त । कियन्त काल स्थितिं प्रच्छप्ता ? गीतम् । अपग्यन् सप्ततन्नासा

उरकट बाबीन सागरापम ना कह्यो । अपज्जत्तयतममति । अपयर्थात्त तममति । उरकट बाबीनो स्थितिं कह्यो म । उ
तर उ गीतम् अपग्य विन यत्तमुद्भूत नो उरकट विन यत्तमुद्भूत नो कह्यो । पज्जत्तयतममति । पयोर्थात्त तममति । उरकट बाबीनो जे भगवन्
वतन्ना बाबीनो स्थितिं कह्यो म । उत्तर जे गीतम् अपग्य यत्तमुद्भूत ग्यन् सतर उरकट यत्तमुद्भूत ग्यन् वावाय सागरापम नो कह्यो
पदमत्तनति । यथासातमो उरकटो ना नारकोनो जे भगवन् कतन्ना बाबीनो स्थितिं कह्यो म । उत्तर उ गीतम् अपग्य बा । म सागरापम नो उरकट
ततोस सागरापम नो प्रकरो । अपज्जत्तय उरकटमति । अपयर्थात्त नाच सातमो उरकटो ना नारकोनो कतन्ना बाबीनो स्थितिं प्रकरो म । उत्तर

नापुढविनेरडयाण जते । केवडय काल ठिई पखसा ? गोयमा ! जहखेण सत्तसागरोवमाइ उक्कीसेण
 दससागरोवमाइ । अपजत्तयपकप्पजापुढविनेरडयाण जते । केवडय काल ठिई पखसा ? गोयमा ! ज
 हन्नेण स्यतोमुज्झ उक्कीसेणवि स्यतोमुज्झ । पजत्तयपकप्पजापुढविनेरडयाण जते । केवडय काल ठिई
 पखसा ? गोयमा ! जहन्नेण सत्तसागरोवमाइ स्यतोमुज्झणाइ उक्कीसेण दससागरोवमाइ स्यतोमुज्झ
 णाइ धूमप्पजापुढविनेरडयाण जते ! केवडय काल ठिई पखसा ? गोयमा ! जहखेण दससागरोवमाइ

काल स्थितिः प्रश्नः ? गीतम् । अपग्येन सत्तसागरोवमाइ उत्तरयतो दससागरोवमाइ अपर्याप्तपङ्कजजापुढविनेरडयाण जदन्त ।
 विपन्न काल स्थितिः प्रश्नः ? गीतम् । अपग्यतो पन्नमेवमुत्तरयतोप्यन्तमुत्तम् पर्याप्तपङ्कजजापुढविनेरडयाण जदन्त । किय
 मत् काल स्थितिः प्रश्नः ? गीतम् । अपपन्न सप्तसागरोवमाइ सत्तमुत्तरमात्रे उत्तरयतो दससागरोवमाइ सत्तमुत्तरमात्रे । धूम
 प्रजापुढविनेरडयाण जदन्त । कियन्तं कालं स्थितिः प्रश्नः ? गीतम् । अपग्यन्त इत्ता सागरोवमास्युत्तरयतः सप्तदश सागरोवमाइ ।
 अपर्याप्तपन्नजापुढविनेरडयाण जगन्तम् । कियन्त काल स्थितिः प्रश्नः ? गीतम् । अपग्यन्ताप्यन्तमुत्तम् उत्तरयतोप्यन्तमुत्तम् ।

न म्यम् इय सागरायम नो करो । धूमपमन्ति । धूमपमापुढविनेरडयाण जदन्त । अपग्यन्त काल जदन्त । अपग्यन्त काल जदन्त ।
 इय सागरायम नो उत्तरयत उत्तरयत सागरायम नो करो । अपग्यन्त धूमपमन्ति । अपग्यन्त धूमपमात्रे उत्तरयतोप्यन्तमुत्तम् ।
 नो स्थितिः करो म । उत्तरय गीतम् अपग्यन्त विषय पन्नमुत्तरय नो उत्तरय विषय पन्नमुत्तरय नो करो । पन्नमुत्तरय म ।
 नारकोनो के मयमन्त उत्तरय नारकोनो स्थितिः करो म । उत्तरय धीतम् अपग्यन्त उत्तरय नारकोनो उत्तरय धूमपमात्रे उत्तरय
 रायम करो । तमपमन्ति । तमपमात्रे उत्तरय नारकोनो के मयमन्त उत्तरय नारकोनो उत्तरय धीतम् उत्तरय उत्तरय

समहस्साइ उक्तीसेण तप्तीस सागरोधमाइ । अण्णसप्तदेवाण नते ! केवइय काल ठिइ प० ? गोयमा ।
जहण्ण अतोमुज्झस उक्तीसेणयि अतोमुज्झस । पज्जासदेवाण नते ! केवइय काल ठिइ प० ? गोयमा ।
जहण्ण दसयाससहस्साइ अतोमुज्झणाइ उक्तीसेण तप्तीस सागरोधमाइ अतोमुज्झस उणिमाए । देवीण
नते ! केवइय काल ठिइ प० ? गोयमा । जहण्ण दसयाससहस्साइ उक्तीसण पणपन्नपलित्तममाइ । अण्ण
सगदवीण नते ! केवइय काल ठिइ प० ? गोयमा । जहण्ण अतोमुज्झस उक्तीसणयि अतोमुज्झस
पज्जासयदेवीण नते ! केवइय काल ठिइ प० ? गोयमा । जहण्ण दसयाससहस्साइ अतोमुज्झणाइ

गरोपमाणि । अपयासदेवानां नदत्त । विद्यन्तं कास स्थितिः प्रश्नाः ? गीतम् । अण्येनात्तमुद्धतमुत्तपतोप्यत्तमुद्धतम् । पर्याप्तदेवा
नां नदत्त । विद्यन्तं कास स्थितिः प्रश्नाः ? गीतम् । अप्यस्य दशवयसश्चापि यत्तमुद्धतमाणि उत्तयेतत्रयस्त्रिंशस्सागरोपमाणि यत्तमु
द्धतानाम् ० देवीनां नदत्त । विद्यन्तं कास स्थितिः प्रश्नाः ? गीतम् । अण्यस्य दशवयसश्चास्मत्पर्यन्तः पञ्चपञ्चाशत्पत्योपमानि, अप
र्याप्तदेवीनां नदत्त । विद्यन्तं कास स्थितिः प्रश्नाः ? गीतम् । अण्येनाप्यत्तमुद्धतमुत्तपतोप्यत्तमुद्धतम् । पर्याप्तदेवीनां नदत्त । वि

पिब यत्तमुद्धत मो कहो । पञ्चसदेवावर्त्त । पर्याप्ता देवतानो के मगवन् अतथा काखनो स्थिति कहो प्रय । उत्तर के गीतम अण्य यत्तमुद्धत
म्यून दय इकार वयनो उत्तुट यो यत्तमुद्धत म्यून तनीठ सानरायम मो कहो । देवो मो के मगवन् अतथा काखनो स्थिति कहो
प्रय । उत्तर के गीतम अण्य दय इकार वयनो उत्तुट पञ्चायम मो कहो । अण्यत्तदेवोवर्त्त । पर्याप्ता देवो मो के मगवन् अतथा
काखनो स्थिति कहो प्रय । उत्तर के गीतम अण्य पिब यत्तमुद्धत उत्तुट पञ्च यत्तमुद्धत मो कहो । पञ्चसदेवोवर्त्त । पर्याप्ता देवो मो के मगवन्
अतथा काखनो स्थिति कहो प्रय । उत्तर के गीतम अण्य यत्तमुद्धत म्यून दय इकार वयनो उत्तुट यत्तमुद्धत म्यून ५५ पञ्चायम पञ्चायम मो क

इय काल ठिइ पन्तत्ता ? गोयमा । जहन्नेण सतरसागरोवमाइ अतोमुज्जुणाइ उक्कोसेण चावीस साग
 रायमाइ अतोमुज्जुणाइ । अहे सत्तमपुठविनेरइयाण जते । केअइय काल ठिइ प० ? गोयमा । जहन्नेण
 चावीस सागरोवमाइ उक्कोसेण तेहीस सागरोवमाइ । अपज्जत्तयअहेसत्तमपुठविनेरइयाण जते । केअइय
 काल ठिइ प० ? गोयमा । जहन्नेण अतोमुज्जुस उक्कोसेणवि अतोमुज्जुस । पज्जत्तयअहेसत्तमपुठविनेर
 इयाण जते ! केअइय काल ठिइ प० ? गोयमा । जहन्नेण चावीससागरोवमाइ अतोमुज्जुणाइ उक्कोसेण
 तेहीस सागरावमाइ अतोमुज्जुणाइ ॥ देवाण जते ! केअइय काल ठिइ प० ? गोयमा । जहन्नेण दसवा

सागरोवमास्सत्तमु इत्तानाम्पुत्तपता हाविस्सति । सागरापमास्सत्तम इत्तानामि । अपस्सत्तमापुत्तितानेरियिकाया जवत्त । कियत्त काल
 स्थिति प्रपप्ता ? गीतम । अपम्यन हाविस्सति । सागरोवमास्सत्तकयत्तकयत्तसागरोवमास्सत्त । अपर्याप्तकायस्सत्तमापुत्तितानेरिय
 कायां जवत्त । कियत्त काल स्थिति प्रपप्ता ? गीतम । अपम्येनात्तमु इत्तमुत्तयत्तमात्तमु इत्तमु । पर्याप्तकायस्सत्तमापुत्तितानेरिय
 नेरियिकायां जवत्त । कियत्त काल स्थिति प्रपप्ता ? गीतम । अपम्यन हाविस्सति । सागरोवमास्सत्तमु इत्तानामि उत्तपत्त कयत्तकय
 रसागरोवमास्सत्तमु इत्तानामि । देवाणा जवत्त । कियत्त काल स्थिति प्रपप्ता ? गीतम । अपम्येन दवावयवत्तमात्तमुत्तयत्तकयत्तितानेरिय
 के भीतम अपम्यन पत्तमुत्तम नो वरत्तपट पित्त पत्तमुत्तम नो कयो । पत्तम पत्तमत्तमत्तम । पर्याप्त नोच सातमो दविदोना नारकोनो इ मगवन्

जगवा कामनो स्थिति कयो म । उत्तर के गीतम अपम्यन पत्तमुत्तम मन् दवावोस सागरायम वरत्तपट पत्तमुत्तम मन् ग्यन तेतोस मागरोपम नो प्रकयो
 देशत्त मतेति । देवतामो के मगवन् जेतका कायको स्थिति कयो म । उत्तर के भीतम अपम्यन दम वज्जार वयमो वरत्तपट तेतोस सागरोपम नो
 प्रकयो । अपम्यन देवावति । अपर्याप्त देवतामो के मगवन् जेतका कायको स्थिति प्रकयो मय । उत्तर के भीतम अपम्यन विव पत्तमुत्तम नो वरत्तपट

मसहस्साह उक्तीसेण तप्तीस सागरोधमाह । अथज्ज्ञप्तदेवाण जते ! केवइय काल ठिइ प० ? गोयमा ।
 जहणेण अतोमुज्जस उक्तीसेणयि अतोमुज्जस । पज्जप्तदेवाण जत ! केवइय काल ठिइ प० ? गोयमा ।
 जहयाण दसयाससहस्साह अतोमुज्जसूणाह उक्तीसेण तप्तीस सागरोधमाह अतोमुज्जस उणियाए । देवीण
 जते । केवइय काल ठिइ प० ? गोयमा । जहयाण दसयाससहस्साह उक्तीसेण पणपत्तपलित्तमाह । अथज्ज्ञ
 सगदवीण जत ! केवइय काल ठिइ प० ? गोयमा । जहयेण अतोमुज्जस उक्तीसेणयि अतोमुज्जस
 पज्जप्तयदेवीण जते ! केवइय काल ठिइ प० ? गोयमा । जहन्तेण दसयाससहस्साह अतोमुज्जसूणाह

नरोपमावि । अपर्याप्तदेवानां जदन्त । विपत्तं कासं स्थितिं प्रज्जप्ता ? गौतम । अपत्येनान्तमुद्धतमुत्तपतोप्यन्तमुद्धतम् । पर्याप्तकदेवा
 नां जदन्त । विपत्तं कासं स्थितिं प्रज्जप्ता ? गौतम । अपप्यग दसयपसइआवि अन्तमुद्धतमाणि उत्तर्पेतअयलिअत्सागरोपमावि अन्तमु
 दूर्तमाणि । देवीनां जदन्त । विपत्तं कासं स्थितिं प्रज्जप्ता ? गौतम । अपत्येण दसवपसइआअुत्तर्पेत । पणपत्ताअुत्तर्पेतोपमानि, अप
 र्याप्तकदेवीनां जदन्त । विपत्तं कासं स्थितिं प्रज्जप्ता ? गौतम । अपत्येनाप्यन्तमुद्धतमुत्तपतोप्यन्तमुद्धतम् । पर्याप्तदेवीनां जदन्त । वि

पिव पन्तमुद्धत नो अहो । पण्णतदेवावति । पर्याप्ता देवानां नो अमवन् कतसा आसन्नो स्थितिं अहो प्रय । उत्तर हे गौतम अज्जइय अन्तमुद्धत
 भूत्त इय अकार वपनो उत्तमुद्धत यो अन्तमुद्धत अन्त तपोव सागरायम नो अहो । देवीनां नो अमवन् कतसा आसन्नो स्थितिं अहो
 प्रय । उत्तर हे गौतम अज्जइय इय अकार वपनो उत्तमुद्धत पचावन् ३५ पयवापमनो अहो । अपण्णतदेवीवति । अपर्याप्ता देवीनां नो अमवन् कतसा
 आसन्नो स्थितिं अहो प्रय । उत्तर हे गौतम अज्जइय पिव अन्तमुद्धत पिव अन्तमुद्धत उत्तमुद्धत ३५ पयवापमनो अहो । अपण्णतदेवीवति । पर्याप्ता देवीनां नो अमवन्
 कतसा आसन्नो स्थितिं अहो प्रय । उत्तर हे गौतम अज्जइय पण्णतदेवावति ३५ पयवापमनो अहो । अपण्णतदेवीवति । पर्याप्ता देवीनां नो अमवन्

उक्तीसेनं पणपन्तपल्लिनुग्रमाहं स्थितोमुज्जत्तणाइ । जवणयासीण जत्ते । देवाण केयइय काल ठिई प० ?
 गोयमा । जहन्तण दसयाससहस्साइ उक्तीसेण सातिरेग सागरोधम । अपज्जासयजवणवासीण जत्ते ! दे
 वाण केयइय काल ठिई प० ? गोयमा ! जहन्तणवि स्थितोमुज्जत्त उक्तीसेणवि स्थितोमुज्जत्त । पज्जत्तयज
 यणवासीण जत्ते । देवाण केयइय काल ठिई प० ? गोयमा । जहन्तेण दसयाससहस्साइ स्थितोमुज्जत्तूणा
 इ उक्तीसेण सातिरेगे सागरोधम स्थितोमुज्जत्तूण । जवणवासीणिण जत्ते । देवीण केवइय काल ठिई प०

वर्त काल स्थितिः प्रश्ना ? गीतम् । जपस्यनालभुर्दूर्तानि दक्षवपसश्चाखि उत्कपत् पञ्चपद्याष्टस्योपमान्यलभुर्दूर्तानि ॥ प्रधन
 वासिदेवानां नदत् । कियन्त कास स्थितिः प्रश्ना ? गीतम् । जपस्यम दक्षवपसश्चाखि उत्कपत् सातिरेक सागरोपमम् । य
 पर्याप्तजनधमवासिदेवानां नदत् । कियन्त कास स्थितिः प्रश्ना ? गीतम् । जपस्येनाप्यलभुर्दूर्तगुत्कर्पतो प्यलभुर्दूतम् । पर्याप्तजनधम
 वासिदेवाना नदत् । कियन्त कास स्थितिः प्रश्ना ? गीतम् । जपस्यम दक्षवपसश्चाख्यलभुर्दूर्तानि उत्कपत् सातिरेक सागरोपमम
 लभुर्दूर्तानम् । नवनयासिनीनां दूवीनां नदत् । कियन्त कास स्थितिः प्रश्ना ? गीतम् । जपस्यम दक्षवपसश्चाप्युरधर्पता ऽद्वपञ्चमानि

ही । मयववासीव भर्तति । मयमवासा दूवतानो हे भगवन् केतसा काकनो क्खिती क्खी मत्त । उत्तर गीतम जवन्थ वी उग्रद्वकार वर्यनो उत्कृष्ट वी
 पातिरेव सागरापम क्खी । अपञ्चनभमववासीवर्त । यययाग मवनवावी देवतानो केतसा काकनो क्खिती क्खी म उत्तर गीतम जवन्थ वी विच
 पल्लुद्दन् उत्कृष्ट वी पि व पग्गर्मुद्दत्त । पञ्चनभमववासीवर्त । पयात्त मयववासी देवतानो हे भगवन् केतसा काकनो क्खिती क्खी म उत्तर
 गीतम जपस्य धो इग इजार वपनो पग्गर्मुद्दत्त व्थु उत्कृष्ट वी पग्गर्मुद्दत्त व्थु सातिरेक सागरापम । मयववासीववात् । मयववासी देवीनो
 हे भगवन् केतसा काकनो क्खिती क्खी म उत्तर हे गीतम जवन्थ वी इग इजार वपनो उत्कृष्ट वी काठे वार पयथापम नो क्खी । अपञ्चनवा

? गोयमा ! जहणेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण अरुपचमाइ । पलिन्धमाइ अपज्झियाण जते !
 जयणवासिणीण देवीण केयइयं काल ठिई प० ? गोयमा ! जहन्तेणवि अतोमुज्जत उक्कोसेणवि अतोमु
 ज्जत । पज्झाप्तियाण जते ! जयणवासिणीणं देवीण केयइय काल ठिई पणसा ? गोयमा ! जहणेण दसवा
 ससहस्साइ अतोमुज्जतूणाइ उक्कोसेण अरुपचमाइ पलिन्धमाइ अतोमुज्जतूणाइ । असुरकुमाराण जते !
 देवाण केयइयं काल ठिई पणसा ? गोयमा ! जहणेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण साहरेण सागरावम
 अपज्झाप्तिअसुरकुमाराण जते । देवाण केयइय काल ठिई पणसा ? गोयमा ! जहणेणवि अतोमुज्जत

(सादृशतः) पम्पोपमानि । अपयाम्पन्नमवाचिदेवीना जवन । कियत्तं कास स्थितिं प्रपत्ता ? गीतम । अपयमाप्यक्तमुद्रुत मुक्तपेकाप्य
 लमुद्रुतम । पयान्तनयनयाचिदेवीनां जवन । कियत्तं कास स्थितिं प्रपत्ता ? गीतम । अपयम्यन दयधयसस्त्रास्यलमुद्रुतानि उत्कपयो
 द्वपम्यमानि पत्योपमाम्यलमुद्रुतानि ० असुरकुमाराणां जवन । कियत्तं कालं स्थितिं प्रपत्ता ? गीतम । अपन्यतो दशवपंसस्त्रास्युत्थ
 यतः सातिरेक पागरोपमम् । अपयोप्तासुरकुमारदवानां जवन । कियत्तं कालं स्थितिं प्रपत्ता ? गीतम । अपयमाप्यक्तमुद्रुत मुक्तपयो

प भयववासिनीवति । अपवात भवनवासि देवीनो हे भगवन् केतवा भावनो स्थितिं कही प्र उत्तर हे भीतम जवन को पिब परतमुद्रुत परकुट
 नो पिब परतमुद्रुत कही । पव्यनवाच भयववासिनीवति । पयोपत भवनवासो देवीनो हे भगवन् कतवा भावनो स्थितिं कही प्र उत्तर हे भीतम
 जयन यो परतमुद्रुतं मूत्र दय जजार वय परकुट को परतमुद्रुत मूत्र स ठ वार पशपापम नो कही । पररकुमाराव भवेति । असुरकुमारदेवतानो
 व भगवन् कतवा भावनो स्थितिं कही प्र व हे भीतम जवन दयजजार वयनो परकुट को सातिरेक सागरावम नो कही । पपन्नत असुरकुमारा
 वति । पपर्बल पमरकुमार देवतानो हे भगवन् कतवा भावनो स्थितिं कही प्र० उत्तर भीतम जवन यो पिब परतमुद्रुत परकुट पिब परतमुद्रुत

उक्तीसेणवि श्रुतोमुक्त । पञ्जातयश्चसुरकुमाराण जते । केवइय काल ठिई पसप्ता ? गोयमा ! जहन्वेण
 टसत्राससहस्साइ श्रुतोमुक्तूणाइ उक्तीसेण सातिरेग सागरोयम श्रुतोमुक्तूण । श्रसुरकुमारीण जते !
 देवीण केवइय काल ठिई पसप्ता ? गोयमा ! जहसेण दसवाससहस्साइ उक्तीसेण श्ररुपचमाई पलिह
 यमाइ । श्रपञ्जासियाण श्रसुरकुमारीण जते ! देयीण केवइय काल ठिई पसप्ता ? गोयमा ! जहसेणवि
 श्रुतोमुक्त उक्तीसेणवि श्रुतोमुक्त । पञ्जासियाण श्रसुरकुमारीण जते । केवइय काल ठिई पसप्ता ? गो

प्यत्तमुक्तम् । पर्याप्तबासुरकुमाराका देवाना जवत्त । विपत्त काल स्थिति प्रपत्ता ? गीतम् । अपत्येनान्तमु दूतोनानि दशत्रयसहस्रा
 सुदत्रयतः सातिरेग सामरोपमन्तमु दूतोनाम् ॥ असुरकुमार देवीना जवत्त । विपत्त काल स्थिति प्रपत्ता ? गीतम् । अपत्येन दशत्रय
 सहस्रावपुरकपतोवप्यमानि पक्षोपमानि । अपयोपतकासुरकुमारदेवीनां जवत्त । विपत्त काल स्थिति प्रपत्ता ? गीतम् । अपत्येनाप्यन्त
 मुदूतमरकपेबाप्यन्तमु दूतम् । पर्याप्ता सुरकुमारदेवीना जवत्त । विपत्त काल स्थिति प्रपत्ता ? गीतम् । अपत्येन दशत्रयसहस्राप्यन्तमु

नो कहो । पञ्जात यमुरकुमारावति । पर्याप्त असुरकुमार देवतानो के भगवन् केतका काहलो किति कहो प्र० उत्तर के गीतम जवत्त वा श्रुतमुक्त
 नं भूत दय जकार बयनो श्रुतमुक्त दो श्रुतमुक्त ग्बन् कुब पविह सागरापम कहो । असुरकुमारीब भते एवोवति । असुरकुमार देवीनो के भगवन्
 केतका काहलो किति कहो प्र उत्तर के भोतम जवत्त दय जकार बयनो श्रुतमुक्त साठे बार पञ्जापमनो कहो । अपत्यःतथाब असुरकुमारी
 ति । अपर्वात्त यमुरकुमारदेवीना के भगवन् केतका पाडु कहा प्र ० के गीतम जवत्त दो पिब यत्तमुक्त ना श्रुतमुक्त ना
 पञ्जातयाच यमुरकुमारीवति । पर्याप्ता यमुरकुमारनो देवीना कतका पायु कहा प्र ० के भोतम जवत्त दो यत्तमुक्त ग्बन् दय जकार बय
 वरजट दो यत्तमुक्त ग्बन् साठ बार पञ्जापमनो कहा । नागकुमाराच देवताना के भगवन् केतका पाडु कहा प्र ० के गो

यमा ! जहखेणं दसयाससहस्साइ अतोमुज्जत्तणाइ अतोमुज्जत्तणाइ ।
नागकुमाराण जत ! दंवीण केग्रइय काल ठिइ पखसा ? गायमा ! जहखेण दसवाससहस्साइ उक्कोसण
दोयि पलित्तवमाइ देमूणाइ । अपज्जासयाण भत्ते ! नागकुमाराण देवाण केग्रइय काल ठिइ पखसा ?
गायमा ! जहखेण अतोमुज्जत्त अक्कोसणयि अतोमुज्जत्त । पज्जासयाण भत्ते ! नागकुमाराण देवाण केग्रइय
काल ठिइ पखसा ? गायमा ! जहखेण दसवाससहस्साइ अतोमुज्जत्तणाइ उक्कोसण दंखि पलित्तवमाइ
देसूणाइ अतोमुज्जत्तणाइ । नागकुमारीण जत । दंवीण केग्रइय काल ठिइ पखसा ? गायमा ! जहखेण

दूर्तानामपुत्रपुत्रानि पश्यन्पुत्रानि । नागकुमाराणां वदन्त । देवानां क्षियन्तः कालं स्थितिः प्रवृत्ता ? मौनम् । अथ
भयं दद्यात्पुत्रपुत्रानि । अपर्याप्तकालागुमाराणां वदन्त । क्षियन्तः कालं स्थितिः प्रवृत्ता ? मौनम् । अपर्याप्त
तोप्यन्तमपुत्रपुत्रानि । पश्यन्पुत्रानि । नागकुमाराणां वदन्त । नागकुमाराणां वदन्त । देवानां क्षियन्तः कालं स्थितिः प्रवृत्ता ? मौनम् । अपर्याप्त
अथपुत्रपुत्रानि । पश्यन्पुत्रानि । नागकुमाराणां वदन्त । नागकुमाराणां वदन्त । देवानां क्षियन्तः कालं स्थितिः प्रवृत्ता ? मौनम् । अपर्याप्त
तम् । अपर्याप्तपुत्रपुत्रानि । पश्यन्पुत्रानि । नागकुमाराणां वदन्त । नागकुमाराणां वदन्त । देवानां क्षियन्तः कालं स्थितिः प्रवृत्ता ? मौनम् । अपर्याप्त

[illegible]

दसथाससहस्साह उक्तीसेण देसूण पलिद्वयम । अथपञ्चाशियाण नागकुमारीण जते ! देयीण केवहुय काल
 ठिइ प० १ गोयमा ! जहखेण अतीमुज्जस उक्तीसेणवि अतीमुज्जस । पञ्चाशियाण नागकुमारीण जते !
 देयीण केवहुयं काल ठिइ प० १ गोयमा ! जहन्तेण दसथाससहस्साह अतीमुज्जत्तूणाइ उक्तीसेण देसूण
 पलिद्वयम अतीमुज्जत्तूण । सुवय्याकुमाराण जते ! देवाण केवहुय काल ठिइ पयसा १ गोयमा ! जहखेण
 दसथाससहस्साह उक्तीसेण दो पलिद्वयमाह देसूणाइ । अथपञ्चाशियाण पुच्छा १ गोयमा ! जहन्तणवि
 उक्तीसेणवि अतीमुज्जस । पञ्चाशियाणपुच्छा १ गोयमा ! जहखण दसथाससहस्साह अतीमुज्जत्तूणाइ उक्ती

काल स्थित मण्डपा १ गीतम । अथम्वसीप्यनमसुत्तमुत्कपतोप्यनमसुत्तम् । पर्याप्तकजाकुमारीणा जदल । देवीना नियन्त काल स्थितिः
 मण्ड १ गीतम । अथगम दसवयसस्त्रास्यनमसुत्तानि उत्कपतो दक्षीम पस्यापममनमसुत्तानिम् ॥ सुपणकुमाराणा जगवन् । देवाना विज
 म्मं कास स्थितिः मण्ड १ गीतम । अथन्यम दसवयसस्त्रास्यत्कपतो द्व पस्योपम दद्याम । अथर्यात्तकानां पुच्छा गीतम । अथन्यनाप्युरव
 पताप्यगतमसुत्तम् । पर्याप्तकाना पुच्छा गीतम । अथगम दसवयसस्त्रास्यनमसुत्तानि उत्कपतो दक्षीम द्व पस्यापममसुत्तानि । स
 माराकति । पवर्कोम नामकमार देवीना अथगवन् कतसा पासु कक्षा म न न भो अथगव विव वनमसुत्तम उत्कट विव पत्तमुत्तम । पञ्चतिबाव
 नागकुमारीव । पर्याप्त नागकुमारी देवीना हे भगवन् कतसा पासु कक्षा म न न हे भो अथगव पत्तमुत्तम ग्युन दसवयसस्त्रा उत्कट पत्तमुत्तम
 ग्युन दद्याम पञ्चापम । अथन्यमाराकति । अथव कमार दद्यातो कतको किति कको म कतर न गीतम अथगव भो दसवयसस्त्रा वय उत्कट को द
 याम दस पञ्चापम । अथपत्तियाव पुच्छा, अथवात सुवयसमारना म न कोपा कतर हे गीतम अथगव भो विव उत्कट को विव पत्तमुत्तम । पञ्चत
 वाव पुच्छा । पद्यातना म कोपा कतर हे गीतम अथगव भो पत्तमुत्तम ग्युन दसवयसस्त्रा उत्कट को पत्तमुत्तम ग्युन दद्याम दाय पञ्चापम । सुव

सेण दी पलिउंयमाइ देसूणाइ अतोमुज्झूणाइ । सुगणकुमारीण देवीण पुच्छा ? गोयमा ? जहण्ण देसवा
 ससहस्साइ उक्कोसेण देसूण पलिउंयम । अपज्जासियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अ
 तोमुज्झ । पज्जासियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण देसथासहस्साइ अतोमुज्झूणाइ उक्कोसेण देसूण
 पलिउंयम अतोमुज्झूण, एव एण अज्जिलाणेण उहियअपज्जासपज्जासुत्तय देवाण देवीणय णेयस्स जाव
 थणियकुमाराण जहा नागकुमाराण । पुढाविकाइयाण जते ! केवइय काल ठिइ प० ? गो० ! जहण्णेण अतो
 मुज्झ उक्कोसेण द्वावीस वाससहस्साइ । अपज्जासयपुढाविकाइयाण जते ! केवइय काल ठिइ प० ? गो० !

पण्डुमारदेवीमा पुच्छा नीतम । अपयसकसुपयकुमारदेवीमा पुच्छा, नीतम ।
 अपयसकसुपयकुमारदेवीमा पुच्छा नीतम । अपयस दसवयवकास्यलमुहूर्त्तानि सत्त्वपती दशोन
 पयोपेनाप्यत्त्वपतीप्यममुहूर्त्तम् । पयोपेनाप्यत्त्वपयकुमारदेवीमा पुच्छा नीतम । अपयस दसवयवकास्यलमुहूर्त्तानि सत्त्वपती दशोन
 पयोपममलमुहूर्त्तानिम् । पयमतेनाप्रसापेनोपकापयोप्यपयोप्यसुवय दवाना देवीमाप्य द्वातस्य यावत्सन्नितकुमाराका यथा नागकुमा
 रायाम् । पृथिवीकायिकानो प्रदत्त । विद्यत्काल स्थिति प्रश्न० ? नीतम । अपयसकसुपयकुमारदेवीमा पुच्छा, नीतम ।

कुमारीण पुच्छा । सववकुमारीना प्रश्न कोषा उत्तर के नीतम जसस्य दशवकारवय उत्तरकृष्ट दशान पकापम । अपयसकसुपयकुमारदेवी
 माप्यत्त्वपतीप्यममुहूर्त्तम् । पयोपेनाप्यत्त्वपयकुमारदेवीमा पुच्छा नीतम । अपयस दसवयवकास्यलमुहूर्त्तानि सत्त्वपती दशोन
 पयोपममलमुहूर्त्तानिम् । पयमतेनाप्रसापेनोपकापयोप्यपयोप्यसुवय दवाना देवीमाप्य द्वातस्य यावत्सन्नितकुमाराका यथा नागकुमा
 रायाम् । पृथिवीकायिकानो प्रदत्त । विद्यत्काल स्थिति प्रश्न० ? नीतम । अपयसकसुपयकुमारदेवीमा पुच्छा, नीतम ।

जहन्नेनाय उक्तीसेणवि अतोमुज्जस । पज्जस्यपढविकाइयाण नते । केवडयं काळं ठिईं प० ? गोयमा ।
 जहन्नेण अतोमुज्जस उक्तीसेण यायीस वाससहस्साइ अतोमुज्जसुणाइ । सुज्जमपढविकाइयाण पुच्छा ?
 गोयमा ! जहणणवि उक्तीसेणवि अतोमुज्जस अपज्जस्यसुज्जमपढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा । जह
 न्तेणवि उक्तीसेणवि अतोमुज्जस । पज्जस्यसुज्जमपढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा । जहन्नेणवि उक्तीसे
 णवि अतोमुज्जस । यादरपुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा । जहन्नेण अतोमुज्जस उक्तीसेण यायीस वा
 ससहस्साइ । अपज्जस्ययादरपुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणवि उक्तीसेणवि अतोमुज्जस ।

कपपिबीकायिकाना नदत्त । कियत्कासं स्थितिः प्रश्नः ? नीतम । जपयतोप्युत्कपतोप्यभर्तुहूतम् । पर्याप्तकपपिबीकायिकाना नदत्त ।
 कियत कासं स्थितिः प्रश्नः ? नीतम । जपयमानभर्तुहूर्तं सुत्कपतो द्वाविष्टातिर्कपसहस्रभर्तुहूर्तानि । पर्याप्तकपपिबीकायिकाना पुच्छा,
 नीतम । जपयतोप्यभर्तुहूर्तमुत्कपतोप्यभर्तुहूर्तम् । जपयतोप्यभर्तुहूर्तमुत्कपतोप्यभर्तुहूर्तम् । पर्याप्तकपपिबीकायिकाना पुच्छा,
 नीतम । जपयतोप्यभर्तुहूर्तमुत्कपतोप्यभर्तुहूर्तम् । जपयतोप्यभर्तुहूर्तमुत्कपतोप्यभर्तुहूर्तम् ।

जे भगवन् कतका पावु वज्जे पत्र उत्तर इभीतम, जपयतोप्यभर्तुहूर्तमुत्कपतोप्यभर्तुहूर्तम् । जपयतोप्यभर्तुहूर्तमुत्कपतोप्यभर्तुहूर्तम् ।
 जपयतोप्यभर्तुहूर्तमुत्कपतोप्यभर्तुहूर्तम् । जपयतोप्यभर्तुहूर्तमुत्कपतोप्यभर्तुहूर्तम् । जपयतोप्यभर्तुहूर्तमुत्कपतोप्यभर्तुहूर्तम् ।
 जपयतोप्यभर्तुहूर्तमुत्कपतोप्यभर्तुहूर्तम् । जपयतोप्यभर्तुहूर्तमुत्कपतोप्यभर्तुहूर्तम् । जपयतोप्यभर्तुहूर्तमुत्कपतोप्यभर्तुहूर्तम् ।
 जपयतोप्यभर्तुहूर्तमुत्कपतोप्यभर्तुहूर्तम् । जपयतोप्यभर्तुहूर्तमुत्कपतोप्यभर्तुहूर्तम् । जपयतोप्यभर्तुहूर्तमुत्कपतोप्यभर्तुहूर्तम् ।

पञ्चस्रयवाद्पुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहय्येण अक्कोसेण उक्कोसेण वाससहस्साइ अं
तोमुज्जत्तगाइ । अउकाइयाण नते । केयइय काल ठिई प० ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत्त उक्कोसे
ण सत्तयासहस्साइ । अपज्जस्रयअउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहय्येणयि उक्कोसेणयि अतोमुज्ज
त्त । पज्जस्रयअउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहय्येण अतोमुज्जत्त उक्कोसेण सप्तवासहस्साइ अंतो
मुज्जत्तज्जिअइ । अउकाइयाण णेहियाण अपज्जस्रयाण जहा सुज्जमपुढविकाइयाण तहा ना

मुहुत्तमुत्तकपतो हायिस्सुत्तिवर्पसइस्सावि । अपयोसखवाद्दरपुचिषीकारियकानां पुच्छा गीतम । अपग्यमाप्यन्तमुहुत्तमुत्तकपतोप्यन्तमुहुत्तमु
पयोसखवाद्दरपुचिषीकारियकाना पुच्छा, गीतम । अपन्यनाग्तमुहुत्तमुत्तकपतो हाविस्सुत्तिवर्पसइस्साप्यन्तमुहुत्तानामि ॥ अप्कायिकाना जद
त्त । विवन्त काल स्थितिः प्रश्न० ? गीतम । अपग्येनाग्तमुहुत्तमुत्तकपतः सप्तवर्पसइस्सावि । अपयोप्लाकाप्यिकाना पुच्छा, गीतम । अथ
ग्येनाप्युत्तकपताप्यन्तमुहुत्तम् । पयोप्लाकाप्यिकाना पुच्छा गीतम । अपग्यमात्तमुहुत्तमुत्तकपतः सप्तवर्पसइस्साप्यन्तमुहुत्तानामि । अप्का

गीतम अथवा यो पत्तमुहुत्त ना उत्तकट्ठो वायोसइस्सावर्धं ना । अपत्तस्यवाद्दरपुठविवायिवाचति । अपयोस वाद्दर पुचिषीकारियको प्रय को
था उत्तर के गीतम अथवा यो पिब उत्तकट्ठो यो पिब पत्तमुहुत्त ना । पत्तस्यवाद्दरपुठविवायिवाचति । पयोस वाद्दरपुचिषीकारियको ना प्र कोथो उत्तर के गो
तम अथवा यो पत्तमुहुत्त ना उत्तकट्ठो यो पत्तमुहुत्त ना वायोसइस्सावर्धं ना । वात्तकाइयावर्धं मते ति । अप्कायिक को के भगवन् कोतको पायु
कट्ठो प उत्तर के गीतम अथवा यो पत्तमुहुत्त ना उत्तकट्ठो यो वात्तकाइयावर्धं ना । अपत्तस्यवात्तकाइयावर्धं ना । अपयोसवात्तकायिक को प्र कोवा
उत्तर के गीतम अथवा यो पिब उत्तकट्ठो यो पिब पत्तमुहुत्त ना उत्तकट्ठो । पत्तस्य वात्तकाइयावर्धं ना । पयोस वात्तकायिक को प्र कोथो उत्तर के गीतम
अथवा यो पत्तमुहुत्त उत्तवर्धं यो वात्तकाइयावर्धं ना । वात्तकाइयावर्धं ना । अप्कायिक योचिक्क १ अपयोस २ पयोसने जिम स

णियसु । यादरथाउकाडयाण पुच्छा ? गीयमा ! जहन्तेण अतीमुज्जत्त उक्कीसेण सत्तवाससहस्साइ अुपज्जा सयथादरथाउकाडयाण पुच्छा ? गीयमा । जहणेणवि उक्कीसेणवि अतीमुज्जत्त । पज्जात्तयाण पुच्छा ? गीयमा । जहन्तेण अतीमुज्जत्त उक्कीसेण सत्तवाससहस्साइ अतीमुज्जभूणाइ । तेउकाडयाण जते ! केवइय फालं ठिई पणसा ? गीयमा । जहन्तेण अतीमुज्जत्त उक्कीसेण तिसि राइदिथाइ । अुपज्जात्तयाण पुच्छा ? गीयमा । जहणेणवि उक्कीसेणयि अतीमुज्जत्त । पज्जात्तयाण पुच्छा ? गीयमा । जहन्तेण अतीमुज्जत्त

यिकानाभीपिकानामपर्याप्तकाना यथा सुल्लपुण्वीकायिकाना "जचितं" तथा जचितव्यम् । वादराप्कायिकाना पुच्छा गीत म । अपग्यनाम्मुदुत्तमुत्कपत्तः सुप्तवपसइसावि । अपर्याप्तवादराप्कायिकानां पुच्छा गीतम । अपग्येभाप्युत्कपतोप्यन्तमुदुत्तं । पर्याप्तका ना पुच्छा , गीतम । अपग्येनाम्मुदुत्तमुत्कपत्तः सुप्तवपसइसाक्कमुदुत्तानि । तेउक्कायिकाना जदत्त । कियत्त काल स्थितिः प्रद्व० ? गीतम । अपग्यनाम्मुदुत्तमुत्कपत्तलीवि रात्रिदिवानि । अपर्याप्तकानां पुच्छा गीतम । अपग्येनाप्यन्तमुदुत्तमुत्कपतोप्यन्तमुदुत्तम् । पर्या प्तकाना पुच्छा गीतम । अपग्यनाम्मुदुत्तमुत्कपत्तलीवि रात्रिदिवानि अन्तमुदुत्तानि । सुल्लतउक्कायिकाना पुच्छा , गीतम । अपग्ये

अ दु/बयो कादिकन कद्या तिम कइवा । वादरपावुकारकार्थवि । वादर अपक्कायिकना म कोवा हे गीतम अथग्ग वी अन्तमुदुत्त उरवृष्ट वी सात इज्जारप वी कद्या । अपग्यत्तववादर पाउकार्थवाचति । अपर्याप्तवादर अपक्कायिक ना प्रत्य उत्तर हे गीतम अथग्ग वी पिण उत्कप वी पिण अन्तमुदु त् । पक्कत्तयाचति । पर्याप्तक ना म कोवा उत्तर हे गीतम अथग्ग वी अन्तमुदुत्त उत्कप वी भातइज्जारवप अन्तमुदुत्त अज कद्या । तेउकाइवाचति । तेउक्काव ना म कोवा उत्तर हे गीतम अथग्ग वी अन्तमुदुत्त उत्कप वी तोन पकाराव । अपग्यत्तिवाचति । अपर्याप्त तेउक्कायिक ना म कोवा उ हे गीतम अथग्ग वी पिण उत्कप वी पिण अन्तमुदुत्तं । पक्कत्तियाचति । पक्कात्त तेउक्कायिक ना म कोवा उ हे गीतम अथग्ग अन्तमुदुत्त ना कल्या

उक्तीसेणं तिरिण राइदियाइं अतोमुजसूणाइं । सुजमतेउकाइयाण पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणवि उक्तीसेणवि
 अतामुजस । अणजसपजसाण सुजमाण पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणवि उक्तीसेणवि अतोमुजसं । थायरते
 उकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुजस उक्तीसेण तिरिण राइदियाइ । अणजसयाण पुच्छा,
 ? गायमा ! जहणेणवि उक्तीसेणवि अतोमुजस । पजसयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेण अतोमुजस
 उक्तीसेण तिरिण राइदियाइ अतोमुजसूणाइ । वाउकाइयाण जंत ! केअइय काल छिइं प० ? गोयमा !
 जहन्नेण अतोमुजस उक्तीसेणं तिरिण थाससहसाइं । अणजसयाउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणे

भापुत्तर्पकापकामुदूतम् । अपयाजपयोत्तमूत्तमैअस्कायिकामां पुच्छा, गीतम । अयमेनापुत्तकपताप्यत्तमुदूतम् । वादरतअस्कायिकामां
 पुच्छा गीतम । अपग्यनात्तमुदूतमुत्तर्पतस्त्रीणि राविदिकान । अपयोत्तकवादरतजस्कायिकाना पुच्छा गीतम । अपग्यनोत्तकपतोप्यत्त
 मुदूतम् पयोत्तकवादरतअस्कायिकामां पुच्छा गीतम । अयमेनात्तमुदूतमुत्तर्पतस्त्रीणि राविदिकानि अत्तमुदूतीमान । वायुकायिकामां

अ वो तोम राविदिन । सदमतेउकाइयावति । सूकतेअस्कायिक मा प्र बोधा उत्तर के गीतम अअग्य वो विअ उलय वो विअ अत्तमुदूत मा अस्का ।
 अपजसतापजसावं बुइमाअ । अपयसि पयसि सूका तेअस्कायिक मा प्र बोधा उत्तर के गीतम अअग्य वो विअ उलय वो विअ अत्तमुदूत मा । वाद
 रतेअकाइयावति । वादरतेअस्काअ मा प्र बोधा उत्तर के गीतम अअग्य अत्तमुदूतं उत्तराठ तोम अइराअ । अपजसयावति । अपयसि वादरतेअ
 स्काय मा प्र बोधा उत्तर के गीतम अअग्य वो विअ अत्तर्प वा विअ अत्तमुदूत । पजसावति । पयसि वादर तेअस्काअ मा प्र बोधा उत्तर के गी
 तम अअग्य वो अत्तमुदूत उत्तराठ वो तोम राविदिन अत्तमुदूतं जम । वाउकाइयावति । वायुकायिक वो के अयमम् जेतथा वाकमा स्थिति कइो ।
 गीतम अपग्यवो अत्तमुदूतं वो उत्तराठ वो तोम अआएव वो । अपजसवायुवाकावति । अपयसि वायुकायिक मा प्र बोधा उत्तर के गीतम अअ

गयि उक्तीसंगयि अतोमुज्जस । पज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा । जहसेण अतोमुज्जस उक्तीसेण तियि या
 ससहस्साइ अतोमुज्जसूणाइ । सुज्जमयाउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहसे गवि उक्तीसंगयि अतोमु
 ज्जस । अथपज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा । जहसेगयि उक्तीसंगयि अतोमुज्जस । पज्जसयाण पुच्छा ? गो
 यमा ! जहसेगयि उक्तीसंगयि अतोमुज्जस । यादरथाउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेण अतोमुज्ज
 स उक्तीसंग तियि वाससहस्साइ । अथपज्जसयादरथाउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेगयि उक्तीसे

पुच्छा गीतम् । अपत्यनालमुहुत्तमुत्कपतकीरि वयसइस्साहि । अथयोसकवायुकायिकामा पच्छा गीतम् । अपत्येभापुत्कपतोप्यल्लमुहुत्त
 म् । अथपसकानां पुच्छा गीतम् । अपत्येनालमुहुत्तमुत्कपतकीरि वयसइस्साप्यल्लमुहुत्तमानि ॥ सुल्लवायुकायिकामा पच्छा गीतम् । अ
 पत्योत्पूरकपतोप्यल्लमुहुत्तम् । अथपसकामा पुच्छा गीतम् । अपत्यतोप्यत्कपतोप्यल्लमुहुत्तम् । अथपसकानां पुच्छा गीतम् । अपत्यना
 पुत्तहर्देवाप्यल्लमुहुत्तम् । वादरवायुकायिकामा पुच्छा गीतम् । अपत्येनालमुहुत्तमुत्कपतकीरि वयसइस्साहि । अथयोसकवायुकायिकामा

१३ को पिय उरकूठ को पिय दग्ग मुग्ग । पज्जसावति । परीस वायवायना म काधा उतर हे गीतम् अवय्य को पत्तमुहुत्त उरकूठ यो तोनइकार
 अप पत्तमुहुत्त' जन । सुज्जमयायुकाय ना प्रज्ञ काधा उ हे गीतम् अवय्य को पिय उरकूठ को पिय पत्तमुहुत्त । पपज्जतिवाय
 तित । अथयोस सुल्लवायुकायिवा ना प्रत्य कोषो उतर हे गीतम् अवय्य को पिय उरकूठ यो पिय पत्तमुहुत्त । पज्जसावति । पयसि सुल्लवायुकाय ना
 प्रत्य कोषा उतर हे गीतम् अवय्य को पिय उरकूठ यो पिय पत्तमुहुत्त । वादर वासुकाय नी प्रत्य कोषा उतर हे गीतम् अ
 पत्य यो पत्तमुहुत्त उरकूठ तोनइकारवय ना । पपज्जसवायुकाय ना प्र कोषो उतर हे गीतम् अ
 पिय उरकूठ यो पिय पत्तमुहुत्त । पज्जसावति । अथयोसवायु ना प्रत्य कोषा उतर हे गीतम् अवय्य को पत्तमुहुत्त उरकूठ यो तोन

नयि अतोमुक्तसं । पञ्जसथावरघाउकाहयाण पुष्का ? गोयमा ! जहणेण अतोमुक्तसं उक्कोसेण तिणि
 याससहस्साह अतोमुक्तानूणाह । घणस्सहकाहयाण नत । केयइय काळ णिइ पयसा ? गोयमा ! जहणेण
 अनोमुक्तसं उक्कोसेण दसयाससहस्साह । अपञ्जसयाण पुष्का ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि
 अतोमुक्तसं । पञ्जसयाण पुष्का ? गोयमा ! जहणेण अतोमुक्तसं दसवाससहस्साह अतोमुक्त
 अतोमुक्तसं । सुजामयणस्सहयाकाहण ठहियाण अपञ्जसापञ्जसाणय अतोमुक्तसं । यादरवणस्सहकाहयाण
 नूणाह । सुजामयणस्सहयाकाहण ठहियाण अपञ्जसापञ्जसाणय अतोमुक्तसं । यादरवणस्सहकाहयाण

[illegible][illegible]

णिथि उक्कोसेणवि अतोमुक्कत्त । पज्झाण पुक्खा ? गोयमा ! जहणेण अतोमुक्कत्त उक्कोसेण तिथि या
 ससहस्साइं अतोमुक्कत्तूणाइ । सुज्झमयाउकाइयाण पुक्खा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोम
 ज्जत्त । अपज्झत्ताण पुक्खा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमुक्कत्त । पज्झसयाण पुक्खा ? गो
 यमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमुक्कत्त । धादरयाउकाइयाण पुक्खा ? गोयमा ! जहणेण अतोमुक्क
 त उक्कोसेण तिथि धाससहस्साइ । अपज्झसयादरयाउकाइयाण पुक्खा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसे

[illegible]

नयि श्रुतोमुज्ज । पञ्जसचावरयाउकाश्वयार्णं पुच्छा ? गोयमा ! जहयोण श्रुतोमुज्ज उक्कोसेण तिरिया
याससहस्साइ श्रुतोमुज्जत्तूणाइ । वणस्सहकाइयाण भत्त । केयइय काल छिद पयसा ? गोयमा ! जहयोण
श्रुतोमुज्जत्तं उक्कोसेण दसथाससहस्साइ । अपज्जसयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहयेणवि उक्कोसेणवि
श्रुतोमुज्जत्त । पञ्जसयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण श्रुतोमुज्जत्त उक्कोसेण दसथाससहस्साइ श्रुतोमुज्ज
त्तूणाइ । सुज्जमयणस्सइयाकाइण ठीहियाण अपज्जसापज्जसाणय श्रुतोमुज्जत्त । यावरवणस्सहकाइयाण

[illegible][illegible]

पुच्छा ? गो० ! जहन्तेण अतोमुज्जत्त उक्कोसेण वसवाससहस्साइ । अपज्जसथावरवणस्सइकाडयाण पुच्छा ? गो० ! जहन्तेण उक्कोसेणचि अतोमुज्जत्त । पज्जसथावरवणस्सइकाडयाण पुच्छा ? गो० ! जहन्तेण अतोमुज्जत्त वसवाससहस्साइ अतोमुज्जत्तसूणाइ । केयइय काल ठिई पयत्ता ? णवि उक्कोसेणचि अतोमुज्जत्त उक्कोसेण वारस सवच्छराइ । अपज्जसथेइदिवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहखे सवच्छराइ अतोमुज्जत्त । पज्जसथेइदिवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहखेण अतोमुज्जत्त उक्कोसेण वारस सवच्छराइ अतोमुज्जत्तसूणाइ । तेइविवाण जत्ते । केयइयं काल ठिइ पयत्ता ? गोयमा ! जहखेण अतोमुज्जत्त मुंइत्तम् । पर्याप्पवाटवत्तस्सपात्तिकाविकामा पुच्छा भीतम ! अपम्यनात्तमुंइत्तमुत्थपतोदयवपसइसास्सत्तमुंइत्तानि ।

न । कियन्तं कात्तं स्वितिः प्रश्न० ? भीतम ! अपम्यनात्तमुंइत्तमुत्थपतो द्वादश सबररात्ति । अपर्याप्तद्वीप्त्रियाका पुच्छा भीतम ! अपर्याप्तद्वीप्त्रियाका पुच्छा भीतम । अपम्यनात्तमुंइत्तमुत्थपतो द्वादश सबररात्ति अत्तमुंइत्तानि ॥ द्वीप्त्रिया कां प्रदत्त । कियन्त कात्तं स्वितिः प्रश्न० ? भीतम ! अपम्यनात्तमुंइत्तमुत्थपत एकोनपच्चाब्बद्वाविक्किवाणि । अपपाप्तत्रीप्त्रियाकां प्रदत्त ।

काथा हे भीतम जवरव को पिब वरकर्म को विच पकर्मइत्त । पज्जत्तवाटव वपच्छासाथावत्ति । पर्याप्त वाटव वनस्सतिक्काव मा प्र कोवा उत्तर हे भीतम जवरव को पगतर्मइत्त वरकर्म को दयइकाएव मा पगतर्मइत्त गण् । वेइदिवात्ति । वेइइयको हे भगवन् कत्तवा काखनो स्विति कहे प्रत्त उत्तर हे भीतम जवरव को पगतर्मइत्त वरकर्म को वारेवय । अपज्जत्तयाव वेइ विवात्ति । अपर्याप्त द्वीप्त्रिया मा प्र कोवा उत्तर हे भीतम जवरव को पगतर्मइत्त । पज्जत्तवाटव विवात्ति । पर्याप्त वेइ द्विय मा प्र उत्तर हे भीतम जवरव वरतमुत्त वरकर्म को वारे वय पगतर्मइत्त जत्त । तेइ दिवात्ति । तारिइवभी व भगवन् वेत्तवा काखनो स्विति कहे प्र उत्तर व भीतम जवरव को पगतमुत्त वरकर्म को पयत्त

उक्तीसेण एगूणवणराइदियाइ । अप्पजसत्तेइदियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्तीसेणवि स्यतोमु
 क्तस । पजसत्तेइदियाण पुच्छा ? गोयमा ! स्यतोमुक्तस जहणेण उक्तीसेण एगूणवणराइदियाइ स्यतोमु
 क्तसूणाइ । चउरिदियाण नत ! केवइय काल ठिइ पणसा ! जहणेण स्यतोमुक्तस उक्तीसेण
 वग्गसा । अप्पजसत्तयचउरिदियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्तीसेणवि स्यतोमुक्तस । पजसत्तयचउ
 रिदियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण स्यतोमुक्तस उक्तीसेण वग्गसा स्यतोमुक्तसूणा । पविदियतिरिस्क
 जोणियाण नत ! केवइय काल ठिइ प० ? गोयमा ! जहणेण स्यतोमुक्तस उक्तीसेण तिसि पलित्तमाइ ।

पुच्छा भीतम । अपप्येनोत्त्वयत सान्तमुद्धतम् । पयोमन्नीन्द्रियाका पुच्छा भीतम । अपप्येनालमुद्धतमुत्त्वयत एकोमपप्याद्यद्रात्रिविवानि
 सन्तमुद्धतानि । ततुरिन्द्रियाका पुच्छा भीतम । अपप्येनालमुद्धतमुत्त्वयतः पयसासा । अपयोमकचतुरिन्द्रियाणां पुच्छा, भीतम । अप
 यमाप्युत्त्वयतोप्यलमुद्धतम् । पयोमन्नीन्द्रियाका पुच्छा भीतम । अपप्येनालमुद्धतमुत्त्वयतः पयसासा सन्तमुद्धतानाः ॥ पप्येन्द्रिय

वास चकाराच । पप्ययत्ततइ दिवावति । पयोमति तेरिद्रिय ना प्र उत्तर हे भीतम अघग्ग वो पिय सत्तमुद्धत । पप्ययत्ततइ दिवाव
 ति । पयोम तेरिद्रिय ना प्र बोवा उत्तर हे भीतम अघग्ग वो सत्तमुद्धत सत्तमुद्धत पकाराच सत्तमुद्धत व्वम । चउरिदियावति । च
 रिद्रियनो हे भनवन् वेतवा कावनो सिति कहो प्र० उत्तर हे भीतम अघग्ग वो सत्तमुद्धत सत्तमुद्धत वो ज मासको कहो । अपप्ययत्तयत्तउरिद्रियः
 ति । अपयोम चउरिद्रियनो वेतवा कावनो सिति कहो प्र० उत्तर हे भीतम अघग्ग वो पिय सत्तमुद्धत कहो । पप्ययत्तचउरिद्रिया
 वति । पयोम चउरिद्रियनो वेतवा कावनो सिति कहो प्र० उत्तर हे भीतम अघग्ग वो सत्तमुद्धत सत्तमुद्धत वो सत्तमुद्धत ग्यून ज मास । पविदियति
 रिस्कजोवियावति । पवेद्रिदितैव दानिकनो हे भनवन् वेतवा कावनो सिति कहो प्र उत्तर हे भीतम अघग्ग वो सत्तमुद्धत सत्तमुद्धत वो तोम पयो

स्यपञ्जसपचिद्विपतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमुजस , पञ्जसप
 चिद्विपतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण अतोमुजस उक्कोसेण विवि पठिनुयमाइ अतो
 मुजसुणाइ । समुच्छिमपचिद्विपतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुजस उक्कोसेण
 पुष्टकोनी । स्यपञ्जसपसमुच्छिमपचिद्विपतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि
 अतोमुजस । पञ्जसपसमुच्छिमपचिद्विपतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुजस उ

[illegible]

क्लोसेण पुष्टुमीनी अतोमुज्झूणा । गक्षत्रक्लौतियपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गो० । जहखेण अतोमु
 ज्झ अक्कोसेण तिखि पलिठयमाइ । अपज्जासगस्यक्लौतियपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गोयमा ।
 जहखेणयि अतोमुज्झ अक्कोसेणयि अतोमुज्झ । पज्जासगस्यक्लौतियपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ?
 गोयमा ! जहखेण अतोमुज्झ अक्कोसेण तिखि पलिठमाइ अतोमुज्झगाइ । जलयरपचिदियतिरिस्क
 जोगियाण केयइय काल ठिइ पणसा ? गोयमा ! जहखेण अतोमुज्झ अक्कोसेण पुष्टुमीनी । अपज्जास
 जलयरपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहखेणयि अक्कोसेणयि अतोमुज्झ । पज्जासयज

मुहुत्तमुत्कथत खीचि पत्थोपमानि । अपयोसजसयुत्ताग्निकपम्बेन्द्रियतियग्योनिकागा पुच्छा गीतम । अपग्यत उरकपंतवात्तगुहुत्तम् ।
 पयोधमसत्तुत्ताग्निकपम्बेन्द्रियतियग्योनिकागा पुच्छा गीतम । अपग्यनात्तमुहुत्तमुत्कथत खीचि पत्थोपमानयत्तमुहुत्तानि । जलयरप
 च्चेन्द्रियतियग्योनिकागा पुच्छा, गीतम । अपग्येनात्तमुहुत्तमुत्कथत पुष्टुमीनी । अपयोसजसयरपम्बेन्द्रियतियग्योनिकागा पुच्छा, गीतम ।
 अपग्यत उरकपंतयात्तमुहुत्तम् । पर्याप्तजसयरपम्बेन्द्रियतियग्योनिकागा पुच्छा गीतम । अपग्येनात्तमुहुत्तमुत्कथत । पुष्टुमीनीटिरत्तमेहुत्तौ

पवेद्व तिक्क वागवना म ज गीतम अयम्बो यत्तमुहुत्त उरकप यो तोम पर्त्तापम । अपज्जासगस्यक्लौतियति । अपयोध गमअत्तक्लौतिय पचिन्द्रिय
 तियपयानिकना म च ज गीतम अयम्बो उरकप यो पिक्क यत्तमुहुत्त । पर्याप्तगमअत्तक्लौतिय पचे द्रव्य तियक्कयानिकना म उ० ज गीतम अयम्बो यो
 यत्तमुहुत्त उरकप यो तोम पत्तापम यत्तमुहुत्त जम । अलयरपायादयातरिक्कजाविय वति । जलयरपचिन्द्रिय तियक्क यानिकना म भग० न् जलसा
 वासनी स्खिति यो मय उत्तर जे गीतम अयम्बो यत्तमुहुत्त उरकप यो यत्तमुहुत्त । अपज्जास अलयरपचिदियति । अपयोध जलयर पचेन्द्रिय ति
 येपवानिक ना म उत्तर जे भोदम अयम्बो यो पिक्क उरकप यो पिक्क यत्तमुहुत्त ना । पज्जासप च्चेन्द्रिय । पर्याप्त अलयर पचेन्द्रिय तियक्कयानिक नी

अथ पञ्चसप्तपदिविधितिरिस्कजोणियाणः पुच्छा ? गोयमा ! अहयोगेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जस , पज्जसपे
 चिविदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! अहयोगेण अतोमुज्जस उक्कोसेण तिरिस्स पल्लिन्नमाइ अतो
 मुज्जत्तुणाइ । सम्मूष्किमपेचिविदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! अहन्नेण अतोमुज्जस उक्कोसेण
 पुह्मकोही । अथ पञ्चसप्तपदिविदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! अहयोगेणवि उक्कोसेणवि
 अतोमुज्जस । पञ्चसप्तपदिविदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! अहन्नेण अतोमुज्जस उ

[illegible][illegible]

गियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणयि उक्कोसेणयि अतोमुज्जत । पज्जातगस्यक्कतियजलयरपचिदियतिरि
 रकजोगियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्कोसेण पुञ्चकीली अतोमुज्जतूणा । चउप्पय
 थलयरपचिदियतिरिक्कजोगियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्कोसेण तिस्सिपलिनुवमाइ
 अापज्जातयचउप्पयथलयरपचिदियतिरिक्कजोगियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणयि उक्कोसेणयि अतोमु
 ज्जत । पज्जातयचउप्पयथलयरपचिदियतिरिक्कजोगियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण अतोमुज्जत उक्को
 सेण तिस्सि पलिनुवमाइ अतोमुज्जतूणाइ । समुप्पिमचउप्पयथलयरपचिदियतिरिक्कजोगियाण पुच्छा ,

रत्तालिकजलयरपचिदियतिरिक्कजोगियाण पुच्छा गीतम । अपम्यनालमुहुत्तमुत्तपतोत्तमुहुत्ताना पुवकोटिः । चतुप्पदस्यलयरपचिदिय
 तियग्गेनिकाना पुच्छा गीतम । अपम्यनालमुहुत्तमुत्तपत कीचि पस्यापमानि । अपयामिस्सलयरपचिदियतिरिक्कजोगियाण पुच्छा गीत
 म । अपम्यत उत्तपतयालमुहुत्तम् । पयोसपचतुप्पदस्यलयरपचिदियतिरिक्कजोगियाण पुच्छा गीतम । अपम्येनालमुहुत्तमुत्तपतत्तीणि प
 त्योपम्यनालमुहुत्तानानि । समुप्पिमचउप्पयथलयरपचिदियतिरिक्कजोगियाण पुच्छा गीतम । अपम्येनालमुहुत्तमुत्तपत अतुरक्कोतिथप

रत्तालिक जलयरपचिदियतिरिक्कजोगियाण पुच्छा गीतम । अपम्यनालमुहुत्तमुत्तपतोत्तमुहुत्ताना पुवकोटिः । चतुप्पदस्यलयरपचिदिय
 पति । पयोस गम्यत्तागितम जलयरपचिदियतिरिक्कजोगियाण पुच्छा गीतम । अपम्येनालमुहुत्तमुत्तपतत्तीणि प
 त्योपम्यनालमुहुत्तानानि । समुप्पिमचउप्पयथलयरपचिदियतिरिक्कजोगियाण पुच्छा गीतम । अपम्येनालमुहुत्तमुत्तपत अतुरक्कोतिथप
 पत्योपम्यनालमुहुत्तानानि । समुप्पिमचउप्पयथलयरपचिदियतिरिक्कजोगियाण पुच्छा गीतम । अपम्येनालमुहुत्तमुत्तपत अतुरक्कोतिथप
 पत्योपम्यनालमुहुत्तानानि । समुप्पिमचउप्पयथलयरपचिदियतिरिक्कजोगियाण पुच्छा गीतम । अपम्येनालमुहुत्तमुत्तपत अतुरक्कोतिथप
 पत्योपम्यनालमुहुत्तानानि । समुप्पिमचउप्पयथलयरपचिदियतिरिक्कजोगियाण पुच्छा गीतम । अपम्येनालमुहुत्तमुत्तपत अतुरक्कोतिथप

लयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्झ उक्कोसेण पुञ्चकोढी अतोमुज्झ
सूणा । सम्मच्छिमजलयरपचिटियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्झ उक्कोसेण
पुञ्चकोढी । अपज्झसयसम्मच्छिमजलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणोवि उक्को
सेणवि अतोमुज्झ । पज्झससम्मच्छिमजलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण
अतोमुज्झ उक्कोसेण पुञ्चकोढी अतोमुज्झसूणा । गप्पवक्कतियजलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ,
गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्झ उक्कोसेण पुञ्चकोढी । अपज्झसयगप्पवक्कतियजलयरपचिदियतिरिस्कजो

मा । सप्तमूष्वनजसवरपञ्चन्निपातयशोमकामां पृच्छा भीतम । अपन्यनात्कमुद्रुतमुत्कर्षेण पूषकोटि । अपर्याप्तसप्तमूष्वनजसवरपञ्चन्नि
यतिययोनिनामा पृच्छा भीतम । अपन्यत उत्कर्षेत द्याकमद्रुतम् । पर्याप्तसप्तमूष्वनजसवरपञ्चन्निप्रयतिययोनिनामा पृच्छा, गीतम् ।
अपन्यनात्कमुद्रुतमुत्कर्षेण पूषकोटिरत्कमुद्रुतीना । गजवत्स्नात्तिजसवरपञ्चान्प्रयतिययोनिनामा पृच्छा गीतम् । अपन्यनात्कमुद्रुतम्
उत्कर्षेण पूर्वकोटि । अपर्याप्तगजवत्स्नात्तिजसवरपञ्चन्निपातयशोमकामां पृच्छा, गीतम् । अपन्यत उत्कर्षेत द्याकमुद्रुतम् । पर्याप्तगजवत्

[illegible]

पुच्छा ? गोयमा । जहन्तेणयि उक्कोसेणयि अतोमुज्जस अतोमुज्जस पज्जसगप्पवक्कतियच्चउप्पयथलयरपचिंदियतिरि
रक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा । जहणेण अतोमुज्जस उक्कोसेण तिया पल्लवमाइ अतोमुज्जसूणाइ ।
उरपरिसप्पयलयरपचिंदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा । जहन्तेण अतोमुज्जस उक्कोसेण पुच्च
कोली अयज्जसयउरपरिसप्पयलयरपचिंदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा । जहणेणयि उक्कोसे
णयि अतोमुज्जस । पज्जसगउरपरिसप्पयलयरपचिंदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा । जहन्तेण
अतोमुज्जस उक्कोसेण पुच्चकोली अतोमुज्जसूणा । समुच्छिमसामयपुच्छा कायहा, गोयमा । जहन्तेण

न्त्रिवविगयोनिक्काना पुच्छा भीतम । अपग्यनात्तमुहुत्तभुत्तवेतच्छोवि पस्योपमाव्यलमुहुत्तानि । उरपरिसप्पयलयरपचिंदियतिरिक्कजोनि
क्काना पुच्छा, गीतम । अपग्यनात्तमुहुत्तभुत्तभुत्तः पूवकोटिः । अपयोत्तकोरपरिसप्पयलयरपचिंदियतिरिक्कजोनिक्काना पुच्छा, भीतम ।
अपग्यनात्तमुहुत्तभुत्तयत यान्तामुहुत्तम् । पर्याप्तकोरपरिसप्पयलयरपचिंदियतिरिक्कजोनिक्काना पुच्छा, गीतम । अपग्यनात्तमुहुत्तभुत्त
यतोत्तमुहुत्ताना पूवकोटिः । समुच्छिमसामयपुच्छा गीतम । अपग्यनात्तमुहुत्तभुत्तयतच्छिपप्पाहपसइत्तावि । अपयोत्तभसम्पुच्छिंमो
हे गीतम अपगप यो पिब उरभय यो पिब यत्तमुहुत्त । पज्जसगपमइत्तज्ज उरभययत्तयत्त । पर्याप्त गम्यत्तज्जगत्त योपइ उरभय पचिंदिय तिर्यप्य
निक्क ना पत्त उरभय हे गीतम अपगप यो यत्तमुहुत्त उरभय यो तोन पक्कापम यत्तमुहुत्त यत्तम् । उरपरिसप्पयलयरपचिंदिय पचिंदिय
तिर्यय यानिक्कना म गीतम अपगप यो यत्तमुहुत्त उरभय यो पूवकोली । अपगप यत्तमुहुत्त उरपरिसप्पयलयरपचिंदिय पचिंदिय तिर्यय
यानिक्क ना पत्त उरभय हे गीतम अपगप यो यत्तमुहुत्त उरभय यो पिब यत्तमुहुत्त । पज्जसगउरपरिसप्पयलयरपचिंदिय पचिंदिय
तिर्यय यानिक्क ना म 'उ' हे भीतम 'अपगप यो यत्तमुहुत्त उरभय यो पूवकोली यत्तमुहुत्त यत्तम् । समुच्छिमसामयत्त । समुच्छिमसामय पुच्छा

? गीयमा ! जहन्नेणं अतोमुक्तास उक्कोसेण चउरासीइ वाससहस्साइं अपज्जासयसम्मूच्छिमचउप्यययलय
 रपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गो० । जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमुक्तास पज्जात्तगसम्मूच्छिम चउप्य
 ययलयरपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गो० । जहन्नेण अतोमुक्तास उक्कोसेण चउरासीइ वाससहस्साइ
 अतोमुक्तासूनाइ । गप्पअकूतियचउप्यययलयरपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गीयमा ! जहन्नेण अ
 तोमुक्तास उक्कोसेण तिग्ग पल्लंथमाइ । अपज्जासगसमअकूतियचउप्यययलयरपचिदियतिरिस्कजोगियाण

सहस्सावि । अपर्याप्तसम्मूच्छिमस्यसवरचतुप्यदपय्यन्निरपतियग्योनिकाना पुच्छा गीतम । अपय्यनोत्कर्षतद्यान्तमुद्धतम् । पर्याप्तसम्मूच्छिम
 चतुप्यदस्यसवरपय्यन्निरपतियग्योनिकाना पुच्छा गीतम । अपय्यमानामुद्धतमुद्धपतयतुरयीतिवर्षसहस्साएतान्मुद्धतानि । गज्ज्युत्था
 न्तिवचतप्यदस्यसवरपय्यन्निरपतियग्योनिकाना पुच्छा गीतम । अपय्येमानामुद्धतमत्कपतययीवि पयोपमानि । अपर्याप्तकगजज्युत्थान्ति
 चतुप्यदस्यसवरपय्यन्निरपतियग्योनिकाना पुच्छा, गीतम । अपय्यनोत्कर्षतद्यान्तमुद्धतम् । पर्याप्तकगजज्युत्थान्तिवचतप्यदस्यसवरपय्य

गीतम पञ्चापम अतमुद्धतं ज्ञान । सम्पाच्छिममवस्यवसवरपचिद्विद्वति । सम्पाच्छिममवस्यवसवरपचिद्विद्वति तिवैषयोनिक मा प्र उत्तरं के गीतम
 अन्व यो अतमुद्धतं अन्व यो योरासो सहस्रं प गो । अपय्यतसपाच्छिममवस्यवसवरपचिद्विद्वतिरिक्तति । अपर्याप्त सम्पाच्छिममवस्यवसवर
 चान्द्रिक्क तिवैषयानिक मा प्र उत्तरं के गीतम अपय्य यीरियव करकय को पिय अतमुद्धत मा । पय्यतसपाच्छिममवस्यवसवरपचिद्विद्वतिरिक्त
 वदाव पुच्छा । पर्याप्त सम्पाच्छिममवस्यवसवरपचिद्विद्वति तिवैषयानिक मा प्रत्य स के गीतम अपय्य को अतमुद्धत करकय को योरासो अन्व य
 तमुद्धतं ज्ञान । अपय्यकतियवस्यवसवरपचिद्विद्वति । अभयतज्जागितकोपद अन्व यो तिवैषयानिक मा प्रत्य उत्तरं के गीतम अपय्य यो
 अतमुद्धतं करकय यो तोन पञ्चापम । अपय्यतयगजवसवरपचिद्विद्वतिरिक्तवसवरपचिद्विद्वति । अपर्याप्त अभय योपदवसवरपचिद्विद्वति तिवैषयानिक मा प्रत्य । उत्तर

पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणञ्चि उक्कोसेणयि अत्तीमुज्जस अत्तीमुज्जस पज्जसगसुवक्कतियच्चउप्पयथलयरपचिंदियतिरि
रक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अत्तीमुज्जस उक्कोसेण तिसि पालिउवमाइ अत्तीमुज्जसूणाइ ।
उरपरिसप्पयलयरपचिंदियतिरक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अत्तीमुज्जस उक्कोसेण पुच्च
फोढी अत्तीमुज्जसउरपरिसप्पयलयरपचिंदियतिरक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसे
णयि अत्तीमुज्जस । पज्जसगउरपरिसप्पयलयरपचिंदियतिरक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण
अत्तीमुज्जस उक्कोसेण पुच्चफोढी अत्तीमुज्जस । समुच्चिमसामयपुच्छा कायद्या, गोयमा ! जहन्नेण

[illegible]

अतोमुक्तं उक्तोसेण तेवयावाससहस्साइ । अपज्जत्तगसम्मूच्छिमउरपरिसप्पयलयरपचिदियतिरिक्कजोणि
 याण पुच्छा ? गोयमा ! जहयाणवि उक्तोसेणवि अतोमुक्तं । पज्जत्तगसम्मूच्छिमउरपरिसप्पयलयरपचि
 दियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहयाण उक्तोसेण तेवयं वाससहस्साइ अतोमु
 क्तं । गस्रवक्कांतियउरपरिसप्पयलयरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहयाण अतो
 मुक्तं उक्तोसेण पुष्टकोही । अपज्जत्तगगस्रवक्कांतियउरपरिसप्पयलयरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ?
 गोयमा ! जहयाणवि उक्तोसेणवि अतोमुक्तं । पज्जत्तगगस्रवक्कांतियउरपरिसप्पयलयरपचिदियतिरिक्क

रापरिवसत्तवरपप्पेन्द्रियतिपयोनिबाना पुच्छा भौतम । जपयेनोत्कपंतवात्तमुत्तम । ययोत्तकसम्मूच्छिमोरपरिसप्पयलयरपप्पे
 न्द्रियतिपयोनिबाना पुच्छा भौतम । जपयेनानामुत्तमुत्तमपत्तकिपप्पाशपसवसास्सलमुत्तमानि । गज्जत्तुत्तान्तिओरपरिसप्पयल
 यरपप्पेन्द्रियतिपयोनिबाना पुच्छा भौतम । जपयेनानामुत्तमुत्तमपत्तः पुष्टकाटि । ययोत्तकगमशुत्तान्तिओरपरिसप्पयलयरपप्पे
 न्द्रियतिपयोनिबाना पुच्छा भौतम । जपयेनानामुत्तमुत्तमपत्तोत्तममुत्तम । ययोत्तकगज्जत्तुत्तान्तिओरपरिसप्पयलयरपप्पेन्द्रियति

वरओ । ज भौतम जपयव ओ यत्तमुत्तम उक्तय ओ यपज्जत्तसयप्पिम्मवरपरिसय्यति । यपयोत्तसम्मूच्छिम उरपरिसय जसवर
 पप्पेन्द्रिय तिर्व यानिब मा प्र उत्तर केगीतम जपयव ओ उत्तरवर्क ओ पिब यत्तमुत्तम । पप्पत्तगज्जत्तुत्तवरपरिसय्यति । ययोत्तसम्मूच्छिम उरपरिसय
 जसवर पप्पेन्द्रिय यिययोनिब मा प्र उ० के भौतम जपयव ओ यत्तमुत्तम उत्तरवर्क ओ यपज्जत्तुत्तम । यपज्जत्तुत्तम उरपरिसय
 यभयत्तान्तिब उरपरिसय यज्जत्तुत्तम पप्पेन्द्रिय तिबवओनिब मा प्र उ० के भौतम जपयव ओ यत्तमुत्तम उत्तरवर्क ओ यपज्जत्तुत्तम उरपरिसय
 यभयत्तान्तिब उरपरिसय यज्जत्तुत्तम पप्पेन्द्रिय तिबवओनिब मा प्र उ० के भौतम जपयव ओ यत्तमुत्तम उत्तरवर्क ओ यपज्जत्तुत्तम उरपरिसय

जोगियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण अतोमुज्जस उक्कोसेण पुव्वकोमी अतोमुज्जसणा । नुयपरिसप्यथ
लयरपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जस उक्कोसेण पुव्वकोमी । अपज्जत
यनुयपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणयि उक्कोसेणयि अतोमुज्जस
पज्जतयनुयपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण अतोमुज्जस उक्कोसेण
पुव्वकोमी अतोमुज्जसणा । सम्भूच्छिमनुयपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गोयमा !
जहणेण अतोमुज्जस उक्कोसेण आयालीस वाससहस्साइ । अपज्जतयसम्भूच्छिमनुयपरिसप्यथलयरपचिदि

यय्योनिजाना पुच्छा गीतम । अपन्येनात्तमुदूतमुत्थपत पुव्वकोठिरत्तमुदूतीना । पुत्रपरिसपत्थलवरपवेन्नियतियग्योनिजाना पुच्छा गी
तम । अपय्यनात्तमुदूतमुत्थपतः पुव्वकोठ । अपयाप्तनुकपरिसपत्थलवरपवेन्नियतियग्योनिजाना पुच्छा गीतम । अपन्येनात्तमुत्थपतो
व्यत्तमुदूतम् । पयोत्तनुकपरिसपत्थलवरपवेन्नियतियग्योनिजाना पुच्छा गीतम । अपन्येनात्तमुदूतमुत्थपत पुव्वकोठिरत्तमुदूतीना । स
म्भूच्छिमनुयपरिसपत्थलवरपवेन्नियतियग्यानिजाना पुच्छा गीतम । अपन्येनात्तमुदूतमुत्थपता विवत्थारिअपसहस्साइ । अपय्योमसम्भू

तमअत्रव्रतियहरपरिसपति । पवीत मअत्र हरपरिमप अत्रवर पवेद्वव तिय व यानिअ मा प्र व गीतम अवन्य मा अत्रमईअत हरवय को पने
काओ वगर्म्मईअत ग्वत् । मअपरिसप्यवहरति । मअपरिसप वलवर पवाअय तिय व योनव मा प्र व गीतम अवरव मा अत्रमईअत हरवय को
पुव्वकोओ । पवज्जतयमअपरिसपति । अपवीत मअपरिसप वलवर पवेद्वव तिय व योमव मा प्र व गीतम अवरव को पिय हरवय को पिय
पत्तमुदूत । पवीतव मअपरिसप मलवर मा प्र व गीतम अवन्य को अत्रमईअत हरवय को पुव्वकोओ अत्तमुदूत ग्वत् । सम्भूच्छिम मअपरिसप
पवेद्वय मा प्र व गीतम अपग्य को पत्तमुदूत हरवय को वेताओस वआरयप । अपज्जतयसम्भूच्छिममअपरिसपति । अपय्यित वव्वत्थम मअ

यतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणे गति उक्कोसे गति अतोमुक्त । पञ्जासगसम्भूच्छिमनुजपरि
 सप्ययलयरपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण अतामुक्त उक्कोसेण वायालीस वा
 ससहस्साह अतोमुक्तनुगाह । गम्भत्रकृतियनुयपरिसप्ययलयरपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गो
 यमा ! जहणेण अतोमुक्त उक्कोसेण पुष्टकोली । अथपञ्जासगम्भत्रकृतियनुयपरिसप्ययलयरपचिदियति
 रिस्कजोगियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमुक्त । पञ्जासगम्भत्रकृतियनुजपरिस
 प्ययलयरपचिदियतिरिस्कजोगियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण अतामुक्त उक्कोसेण पुष्टकोली अतोमु

च्छिमनुजपरिमपस्यसवरपचिद्विदातयग्यानिजाना पुच्छा गीतम । अपयनाप्युरकपतोप्यलमुक्तम् । पर्याप्तसम्भूच्छिमनुजपरिसपस्यसवर
 पयान्द्रपतिपयोगिनानां पुच्छा गीतम । अपयनालममुक्तमुक्तपतो हिहस्थारिदाहपसस्त्रास्यलमुक्तानामि । गनवपुष्कान्तिबज्जपरिस
 पस्यलवरपंचन्निदातयग्योनिजानां पुच्छा गीतम । अपयनालमुक्तमुक्तपतः पुष्टकोलि । अपयोप्तयनवपुष्कान्तिबज्जपरिसपस्यसवरप
 चेन्निद्वयतिपयोगिनाना पुच्छा गीतम । अपयत वरकवतपयलमुक्तम् । पर्याप्तयनवपुष्कान्तिबज्जपरिसपस्यसवरपचेन्निदातयग्योनिजाना

परिमप सवरपचेन्निद्वयतिपच वाजिक मो म च ज्योतम अवयव जा विव वरकव जो पिय यलमुक्त । पयलसगस्य वलमभजपरिमपयि । पर्या
 दनकमम्भिम भजपरिमप वरकवर पचेन्निद्वयतिपच वाजिकजा म च ज्योतम अवयव जो यलमुक्त वरकव जो यलसोम वरकव यलमुक्त । उल
 यमभजतिवमवपरिमपयि । दभज्जज्जतिव भुजपरिमप यलवर पचेन्निद्वयतिपच वाजिक मो म च ज्योतम अवयव जो यलमुक्त वरकव जो यल
 यलो । परवर्तनक दभज्जज्जतिव भजपरिमप वरकवर पचेन्निद्वयतिपच वाजिकजा म च ज्योतम अवयव जो पिय वलमुक्त । पयल
 यलसगस्यतिवमवपरिमपयि । पर्याप्त दभज्जज्जतिव भुजपरिमप यलवर पचेन्निद्वयतिपच वाजिकजा म च ज्योतम अवयव जो यलमुक्त वलव

ज्ञाना । स्वहयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण नते । केयइयं कालं छिई पणत्ता ? गोयमा । जहणोणं अ
 तोमुज्जत उक्कोसेण पालिनुग्रमस्स अस्सखेज्जनागो । अपजासयस्वहयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ?
 गोयमा । जहन्तणायि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । पजासयस्वहयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गो
 यमा । जहन्तेण अतोमुज्जत उक्कोसेण पालिनुग्रमस्स अस्सखेज्जनागो अतोमुज्जत । सम्मूच्छिमस्वहयर
 पचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा । जहन्तेण अतोमुज्जत उक्कोसेण यावत्परिवाससहस्साणि ।
 अपजासयसम्मूच्छिमस्वहयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा । जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अतो

ना पूच्छा गीतम । अपगयनात्तमुद्गतमुत्कपतः पूर्वकोटिरत्नमुद्गता । स्वहरपचिदियतियम्योणिकाना प्रवत्त । वियत्त कालं स्थिति प्र
 प्रप्ता । गीतम । अपगयेनात्तमुद्गतमुत्कपत पत्तोपमस्सासङ्केपाज्ञाणः । अपयोसस्वहरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा । गीतम । अपपना
 पुत्तवतोप्यत्तमुद्गत् । पर्याप्तस्वहरपचिदियतिरिस्कजोणिकाना पूच्छा गीतम । अपगयनात्तमुद्गतमुत्कपत पत्तोपमस्सासङ्केपाज्ञाणो ज्ञातो ज्ञत
 मुद्गता । सम्मूच्छिमस्वहरपचिदियतियम्योणिकाना पूच्छा गीतम । अपगयनात्तमुद्गतमुत्कपतो द्विसप्ततियपसवस्सास्यत्तमुद्गता । नत्तवत्तकालिख
 व्बिमसवरपचिदियतियम्योणिकाना पूच्छा गीतम । अपगयेनात्तमुद्गतमुत्कपतो द्विसप्ततियपसवस्सास्यत्तमुद्गता । नत्तवत्तकालिख

धो पूर्वकाधो पगतमुद्गत ज्ञत । स्वहरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा । गीतम । अपगयनात्तमुद्गतमुत्कपत पत्तोपमस्सासङ्केपाज्ञाणो ज्ञातो ज्ञत
 ना असप्यातभी भात । अपगयनात्तमुद्गतमुत्कपत पत्तोपमस्सासङ्केपाज्ञाणो ज्ञातो ज्ञत । अपगयनात्तमुद्गतमुत्कपत पत्तोपमस्सासङ्केपाज्ञाणो ज्ञातो ज्ञत
 दूत । पज्जनायस्वहरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा । गीतम । अपगयनात्तमुद्गतमुत्कपत पत्तोपमस्सासङ्केपाज्ञाणो ज्ञातो ज्ञत । अपगयनात्तमुद्गतमुत्कपत पत्तोपमस्सासङ्केपाज्ञाणो ज्ञातो ज्ञत
 पत्तोपम ना असप्यातभी भात । अपगयनात्तमुद्गतमुत्कपत पत्तोपमस्सासङ्केपाज्ञाणो ज्ञातो ज्ञत । अपगयनात्तमुद्गतमुत्कपत पत्तोपमस्सासङ्केपाज्ञाणो ज्ञातो ज्ञत

कुम्भमा । खहरपरपिदियतिरिक्कजोणियाण जते । केयइयं काल छिई पणसा ? गोयमा ! जहणोणं छं
 तोमुज्जत उक्कोसेण पलित्थमस्स अस्सखेज्जागो । अपज्जात्तयस्वहरपरपिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गो
 गोयमा ! जहन्तणयि उक्कोसेणयि अतोमुज्जत । पज्जात्तयस्वहरपरपिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गो
 यमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्कोसेण पलित्थमस्स अस्सखिज्जागो अतोमुज्जतूणे । सम्मुच्छिमस्वहर
 पिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण उक्कोसेण द्वावसरियाससहस्साणि ।
 अपज्जात्तयस्सम्मुच्छिमस्वहरपरपिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसेणयि अतो

मा पुच्छा ? गीतम । अपग्येनात्तमुहुत्तमुत्कपत्तः पूर्वकोटिरत्तमुहुत्ताना । खहरपचन्द्रियतियगोणिकाना प्रदत्त । विपत्ता काळ स्थिति प्र
 सप्तः ? गीतम । अपग्येनात्तमुहुत्तमुत्कपत्त पत्तोपमस्यासङ्कुणोच्चाणः । असमोसखहरपरपचन्द्रियतियगोणिकाना पुच्छा गीतम । अपग्येना
 पुरस्वतोप्यत्तमुहुत्तम् । पर्वात्तखहरपचन्द्रियतियगोणिकाना पुच्छा गीतम । अपग्येनात्तमुहुत्तमुत्कपत्तः पत्तोपमस्यासङ्कुणो
 मुहुत्तानि । सम्मुच्छिमस्वहरपरपचन्द्रियतियगोणिकाना पुच्छा गीतम । अपग्येनात्तमुहुत्तमुत्कपत्तः द्विषत्तितिवपसहसास्सत्तमुहुत्तानि । अपग्येनात्तानि
 विपत्तमस्वहरपरपचन्द्रियतियगोणिकाना पुच्छा गीतम । अपग्येनात्तमुहुत्तमुत्कपत्तः द्विषत्तितिवपसहसास्सत्तमुहुत्तानि । अपग्येनात्तानि

वा पुच्छाओ पत्तमुहुत्त ज्ञान । पत्तमुहुत्त पत्तितिवपसहसास्सत्तमुहुत्तानि । अपग्येनात्तमुहुत्तमुत्कपत्तः पत्तोपमस्यासङ्कुणोच्चाणः । असमोसखहरपरपचन्द्रियतियगोणिकाना पुच्छा गीतम । अपग्येना
 मा पत्तमुहुत्तानि । पत्तमुहुत्त पत्तितिवपसहसास्सत्तमुहुत्तानि । अपग्येनात्तमुहुत्तमुत्कपत्तः पत्तोपमस्यासङ्कुणोच्चाणः । असमोसखहरपरपचन्द्रियतियगोणिकाना पुच्छा गीतम । अपग्येना
 पुच्छा । पत्तमुहुत्त पत्तितिवपसहसास्सत्तमुहुत्तानि । अपग्येनात्तमुहुत्तमुत्कपत्तः पत्तोपमस्यासङ्कुणोच्चाणः । असमोसखहरपरपचन्द्रियतियगोणिकाना पुच्छा गीतम । अपग्येना
 पत्तमुहुत्तानि । पत्तमुहुत्त पत्तितिवपसहसास्सत्तमुहुत्तानि । अपग्येनात्तमुहुत्तमुत्कपत्तः पत्तोपमस्यासङ्कुणोच्चाणः । असमोसखहरपरपचन्द्रियतियगोणिकाना पुच्छा गीतम । अपग्येना

मुञ्जत । पञ्जत्तयसम्भूच्छिमस्यहयरपचिदियतिरिक्कजो णियाण पुष्का ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुञ्जत
उक्कोसेण थायसुरियासहस्माइ अतोमुञ्जत्तणाइ । गप्पत्रक्कतियखहयरपचिदियतिरिक्कजो णियाण पुष्का
? गोयमा ! जहणेण अतोमुञ्जत उक्कोसेण असखेज्जाइजगे । अपज्जासयगप्पवक्कतियखह
यरपचिदियतिरिक्कजो णियाण पुष्का ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमुञ्जत । पज्जासयगप्पयक्का
तियखहयरपचिदियतिरिक्कजो णियाण पुष्का ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुञ्जत उक्कोसेण पलिट्ठवमस्व
असखज्जाइजगो अतोमुञ्जत्तगो । मणुस्साण जते ! केवइय काल ठिइ पण्णा ? गोयमा ! जहन्नेण

उचरपचिद्विपत्तिपप्पोनिकानां पुष्का ? गीतम । अपययमानमुद्दुत्तमुत्कपतो पत्तोपमस्याउवस्सये जग । अपयोत्तगज्जह्युत्कानिकउचरप
चिद्विपत्तिपप्पोनिकानां पुष्का ? गीतम । अपययमानमुद्दुत्तमुत्कपतयालमुद्दुत्तम् । पयोत्तकगज्जह्युत्कानिकउचरपचिद्विपत्तिपप्पोनिकाना पुष्का ?
गीतम । अपयेनालमुद्दुत्तमुत्कपतः पत्तोपमस्याउवस्सयेजमे जग उल्लमुद्दुत्तने । मनुप्याका अवगत । विपत्त काल स्थिति मञ्जस्ता ? गी
तम । अपययमानमुद्दुत्तमुत्कपतच्छिपि पत्त्यापमान । अपयोत्तकमनुप्याका पुष्का ? गीतम । अपयोत्तकपतयालमुद्दुत्तम् । पयात्तज्जमनु
प्याका पुष्का ? गीतम । अपयेनालमुद्दुत्तमुत्कपत छीवि पत्त्यापमानि जलमुद्दुत्तानामि । समुच्छिममनुप्याका पुष्का ? गीतम । अपयेना

मञ्ज उ हे भोतम अपय यो जगतमज्जल उरकय यो वड्ढतर उज्जार वय । अपयत्तमसम्भूच्छिमस्यहयरपचिदियति । अपयोत्त मसम्भूच्छिमस्यहयर पचेन्द्रिय
गतयेव योनिक ना प्र कतर हे भोतम अपय यो पिय उरकय यो पिय यल्लमुद्दुत्त । पयल्लमसम्भूच्छिमस्यहयरपचिदियति । पयोत्त समुच्छिमस्यहयर
पचेन्द्रिय नियज्ज जानिक ना प्र उ हे भोतम अपय यो यल्लमुद्दुत्त उरकय यो वड्ढतर उज्जार वय जगतमज्जल ग्यून । मञ्जकतियज्जहयरपचिदियति
ममज्जुत्तजानिक उचर पचेन्द्रिय तियेव जानिक ना प्र उ हे भोतम अपय यो यल्लमुद्दुत्त उरकय यो यल्लाप ना जसज्जात मा भाग । अपयल्लपम

अतोमुज्जत उक्कोसेण तिणि पलिउवमाइ । अपज्जसगमणस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणयि उक्को
 सेणयि अतोमुज्जत । पज्जसयमणस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्कोसेण तिणि पलिउ
 यमाइ अतोमुज्जतूणाइ । समुच्छिमणस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणयि उक्कोसेणयि अतोमुज्जत
 गम्वक्कतियमणस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्कोसेण तिणि पलिउवमाइ । अपज्जस
 गम्वक्कतियमणस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणयि उक्कोसेणयि अतोमुज्जत । पज्जसगम्वक्कतियमण
 स्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्कोसेण तिणि पलिउवमाइ अतोमुज्जतूणाइ । याणमतराण

पुरवर्पतयात्तमइत्तम् । नर्त्तयुत्तान्तिक्कमप्याया पुच्छा गीतम् । अपय्येमाऽन्तमुत्तमुत्तरकयत्तखीयि पस्यापमानि । अपय्योत्तगज्जगुत्तान्ति
 क्कमप्यायां पुच्छा गीतम् । अपय्यनापुत्तपतयात्तमुत्तम् । पयात्तगज्जुत्तान्तिक्कमप्यायां पुच्छा, गीतम् । अपय्यनात्तमुत्तमुत्तरकयत्त
 खीयि पस्यापमानि अतमुत्तान्ति । वामव्यन्तरायां देवामा प्रदश्य । कियत्त कास स्थिति प्रदप्या गीतम् । अपय्येन दस वयसवस्सा

प्रदशतियद्वद्वरति । अपय्योत्त गज्जुत्तान्तिक्क खर पवेद्विय तिक्क वाजिक ना प्र उत्तर के गीतम् अखर यो पिय उत्तरकय यो पिय अतमुत्तम् ।
 पयत्तममशवतिवद्वरति । पयात्त गज्जुत्तान्तिक्क खर पवेद्विय तिक्क वाजिक मो प्रय उत्तर के गीतम् अखर यो पयत्तमुत्त उत्तरकय यो पस्यापम
 ना पसप्यात्तमा माग अतमुत्तम् । मनुष्य मो के मगवज केतवा कास मो स्थिति कयो प्र उत्तर के गीतम् अखर यो पया
 मुत्त उत्तरकय यो तोम पस्यापम । अपय्यत्तगमवसाव पच्छा । अपय्यति मनुष्य ना प्र च गीतम् अखर यो पिय उत्तरकय यो पिय अतमुत्तम् । पय
 तयमवप्याव ति । पयत्त मनुष्य ना प्र० कोटी उत्तर के गीतम् अखर यो पयत्तमुत्त उत्तरकय यो तोम पस्यापम अतमुत्त म्यत् । सम् एतममवप्या
 व पुच्छति । सम्विचम मनुष्य ना प्रय उत्तर के गीतम् अखर यो पयात्तमुत्त उत्तरकय यो पिय तेद्विक्क । गज्जवत्तियमपुच्छां पुच्छा । गम्व मनुष्य

भते । देवाण केवद्वय काल ठिदं पणता ? गोयमा । जहन्नेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण पल्लिन्नयम ।
 व्यपज्झसायणमतरदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जह्णेणयि उक्कोसेणयि अतोमुज्झत्त । पज्झसयवाणमतर
 देवाण पुच्छा ? गोयमा । जहन्नेण दसवाससहस्साइ अतोमुज्झन्नाइ उक्कोसेण पल्लिन्नयम अतोमुज्झ
 न्नाण । वाणमतरीण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जह्णेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण अरुपल्लिन्नयम । अ
 पज्झत्तियाण भते । वाणमतरीण देवीण पुच्छा ? गोयमा । जह्णेणयि उक्कोसेणयि अतोमुज्झत्त । पज्झ

वि उत्कपत पस्वोपमम् । अपर्याप्तकामाव्यन्तर देवाना पृच्छा गीतम् । अपर्याप्ताप्युत्कपतोप्यर्तमुद्भूतम् । पर्याप्तकामाव्यन्तराद्या देवा
 ना पृच्छा गीतम् । अपर्याप्त इव अपर्याप्तत्वादि अन्तर्मुद्भूतानि उत्कपतोप्यर्तानि पस्यापमम् । कामाव्यन्तरीणा दधीना पृच्छा गीत
 म । अपर्याप्त दस वर्षसहस्रादि उत्कपतोप्यर्तानि प्रदत्त । पृच्छा गीतम् । अपर्याप्तानाव्युत्कपतयानामुद्भूतम् ।
 पर्याप्तकामाव्यन्तरीणां प्रदत्त । पृच्छा गीतम् । अपर्याप्त दस वर्षसहस्रादि अन्तर्मुद्भूतानि उत्कपतादुपस्यापमम् । अन्तर्मुद्भूतानि
 ज्योतिष्काणां प्रदत्त । देवाना कियत्त कालं स्थितिं प्रदत्ता, गीतम् । अपर्याप्त पस्वोपमाव्यन्तरीणा उत्कपत पस्यापमं वपसहस्राव्यधिकम् ।

ना अन्य उत्तर हेगीतम् अद्यत्त को अन्तर्मुद्भूत उत्कप को तोम पस्वोपम । अपर्याप्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम्
 उत्तर हेगीतम् अद्यत्त को विष उत्कप को विष अन्तर्मुद्भूतम् । पस्वोपमाव्यन्तरीणा उत्कप अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम्
 को अद्यत्तम् उत्कप को तोम पस्वोपम अन्तर्मुद्भूतम् । अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम्
 को प्र न हे गीतम् अद्यत्त को अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम्
 अपर्याप्त को विष अद्यत्त को विष अन्तर्मुद्भूतम् । पस्वोपमाव्यन्तरीणा अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम् अद्यत्तम्

सियाण जते ! घाणमतरिण पुच्छा ? गोयमा ! जइणेणं दसथासहससाई अतीमुज्जुणाई । उक्खोसेणं
 अउपलिच्छेम अतोमुज्जुण । जोइसियाण जते ! देयाण कवइय काल ठिई पसात्ता ? गोयमा ! जह
 याण पलिच्छेममठनागो उक्खोसेण पलिच्छेम वाससयसहससमप्पहिय । अउज्जतयजोइसियाण पुच्छा ?
 गोयमा ! जहयाणयि उक्खासणयि अतोमुज्ज । पज्जतयजोइसियाण पच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं पलि
 च्छेममठनागो अतोमुज्जुणो उक्खोसण पलिच्छेम वाससयसहससमप्पहिय अतोमुज्जुण । जोइसियाणीण

उपवासोत्तमाया पुच्छा गीतम । अउपमाप्युरकवसखान्नेमुइत्तम् । पर्याप्तकव्योतिफाखा पुच्छा गीतम । अवगयेन पत्तोपमाएज्जागम
 न्नेमुइत्तान्नेमुस्वपतः पस्यापमे वयससहसस्त्राप्यचिकनन्नेमुइत्तान्नेम् । ज्योतिषकवीर्णा पुच्छा, गीतम । अवन्ततः पत्तापमाएज्जाग सरकप

ग्गुम दग्गद्वार अपेमा कल्पे यो पस्यापम चत्तमुइत्त ग्गुन । वागमतरौचं देवाचंति । वागम्यतर ववो मो प्र व गीतम अवगव धो दग्ग द्वाारवय
 वरकव धो वय पस्यापम । अपल्लत्तिवाच भत वागमतराव ववोच ति । अपयीस वागम्यतर देवो ना व भगवन् कतका पायु कट्ठा दे गीतम अवगव
 धो पिय वरकव धो पिय चत्तमुइत्त । कल्लत्तिवाच भते वागमतरौच ववोचं ति । पर्याप्त वागम्यतरनी देवो ना प्र व गीतम अवगव धो दग्गद्वार
 दग्ग चत्तमुइत्त ज्जन वरकव धो पय पस्यापम चत्तमुइत्त ग्गुन । जाइसियाव भत दवाचति । जातिव्वा देवता मो दे भगवन् कंनसा वासनी स्थिति
 कइो प्र व गीतम अवगव धो पय पस्यापम ना चाठमा भाग वरकव धो पस्यापम पक्खसाव वय अधिक्क । पयल्लत्तवज्जाइसियाव पुच्छा । अपयीस
 जातिव्वा ना प्र व दे गीतम अवगव धो पिय वरकव धो पिय चत्तमुइत्त । पल्लत्तयज्जाइसियावति । पर्याप्त जातियो ना प्र व वत्तर दे गीतम अवगव
 धो पस्यापम ना चाठमी मास चत्तमुइत्त ग्गुन वरकव धो पस्यापम साव वय अधिक्क चत्तमुइत्त ग्गुन । जाइसियोचं भते ववोच ति । जातिव्वा देवो
 ना प्र व गीतम अवगव धो पस्यापम ना चाठमा भाग वरकव धो पय पस्यापम पपास द्वाारवय अधिक्क । अपल्लत्तिवाच जाइसियोचति । प

जते । देवीग पुच्छा ? गायमा । जहण पाएछियमठजागो उक्कीसेण अरु पलिछियम पयासवाससहस्स
 मझ्हिय । अपज्जत्तियाण जोहसिणीण पुच्छा ? गीयमा ! जहन्तेगवि उक्कीसेणवि अतोमुज्जत्त । पज्जा
 त्तियाण जोहसिणीण पुच्छा ? गीयमा । जहणोण पलिछियमठजागो अतोमुज्जत्तूणो उक्कीसेण अरु पलि
 छियम पयासवाससहस्सेहि अझ्हिए अतोमुज्जत्तूण । चदविमाणण जते ! देवाण पुच्छा ? गीयमा ।
 जहणोण चउजागपलिछियम उक्कीसेण पलिछियम थाससयसहस्समझ्हिय । चदविमाणेण जते । अपज्जत्तयाण
 देवाण पुच्छा ? गीयमा ! जहन्तेगवि उक्कीसेणवि अतोमुज्जत्त । चदविमाणेण जते ! पज्जत्तयाण देवाण

तोउहे पत्थोपम पज्जाज्जद्वयसहस्राव्यविकम् । अपयोमकस्योतिफदवीना पुच्छा गीतम । अपज्जत्त उरकयतद्यात्ममुज्जत्तम । पयासव्योतिफद
 वीमां पुच्छा गीतम । अपज्जत्त । वस्यापमाटमजागोममुज्जत्तन उरकयतोहपत्थोपम पज्जाशाहुपसहस्रैरपिकमत्तमुज्जत्तनम् । चन्द्रविमाने जद
 त्त । देवानो पुच्छा गीतम । अपज्जत्त जलजोण पस्यापममुत्त्वयत्त । पस्यापम वयसहाव्यविकम् । चन्द्रविमान जदत्त । अपयोमकदेवाना
 पुच्छा गीतम । अपयेतापुत्त्वयतोव्यविकमुज्जत्तम् । चन्द्रविमाने जदत्त । पयोमकानां देवाना पुच्छा गीतम । अपयेन पत्थोपमचतुर्जागम

पयात जातिक्क दबो ना प्र व हे भोगम कसम्ब को जहण को पिय चत्तमुज्जत्त । पज्जत्तिवाहे कोरुखोवति । पयोम जातिक्क दबो ना प्र व ७० व
 गीतम कसम्ब को पयापम ना पाठमा भाग चत्तमुज्जत्त नून उरकट को चत्तमुज्जत्त उन पयास ककारवय चधिच पव पयोपम । चंदविमानव भते
 दत्तवति । चन्द्रविमान मदत्त देवतानो कपळा कासो खिति कडो मत्त उत्तर व भोगम कसम्ब को चतुर्भाग पयापम उरकप को पयापम शाख
 बव पयिच । चंदविमानेव मते अपज्जत्तयाव' दत्तवति । चन्द्रविमान मा हे भगवन् अपयोम सेवनी पुच्छा हे गीतम कसम्ब को पिय उरकप को पिय
 चत्तमुज्जत्त । चंदविमानव भते पज्जत्तयावति । चन्द्रविमान मा देवतानो हे भगवन् केवळा पायु मत्त उत्तर हे गीतम कसम्ब को चतुर्भाग पयापम

नं ० गीयमपि सुगम मापदपरिजमाप्त भर्त्तरं चदविभाषेचं ज्ञेते । देवावधित्यादि ॥ चन्द्रविमाने चन्द्र उत्पद्यते क्षीपाय तत्परिवारभूता सप्त तत्परिवारभूताभिः प्रपत्यतस्तुलनां पस्वोपमप्रमाणा उत्सृज्यतः कथाचिदिन्द्रशासानिकादीनां उपलक्ष्याभ्यापिष्य पक्षोपमे चन्द्रदेवस्य तु यथोक्तमुत्तरं

पुच्छा ? गीयमा ! जहृणोण चउन्नागपलित्तंयम अतोमुज्जत्तुण उक्कोसंण पलित्तंयम वाससयसहस्समप्लिहिय अतोमुज्जत्तुण । चदविमाणेण देवीण पुच्छा, गीयमा ! जहन्तेण चउन्नागपलित्तंयम उक्कोसण अरुपलित्तंयम पणासाए वाससहस्सेहि अस्सहिहिय । चदविमाणेण अण्णसियाण देवीण पुच्छा ? गीयमा ! जहस्सेण वि उक्कोमणत्रि अतोमुज्जत्त । चदविमाणेण पण्णसियाण देवीण पुच्छा ? गीयमा ! जहन्तेणं चउन्नागपलित्तंयम अतोमुज्जत्तुण उक्कोसण अरुपलित्तंयम पणासाए वाससहस्सेहि अस्सहिहिय अतोमुज्जत्तुण । सूरत्रि

लभुदूर्तानुत्तरकृतः पस्वोपम तथैसत्वाभ्यापिष्यकमन्तुदूर्तानम् । चन्द्रविमाने देवीना पुच्छा गीतम् । जहन्त्येत पस्वोपमचतुर्लोकगमुत्सृज्यतोलोच पस्वोपमं पणासाद्वर्षसहस्त्रैरपिष्यम् । चन्द्रविमान अण्णसियाण देवीना पुच्छा गीतम् । जहन्त्येतोत्सृज्यतोलोचमुदूर्तम् । चन्द्रविमाने यथोत्तरकदे वीना पुच्छा गीतम् । जहन्त्येत पस्वोपमचतुर्लोकगमन्तुदूर्तानमुत्सृज्यतोलोच पस्वोपमं पणासाद्वर्षसहस्त्रैरपिष्यकमन्तुदूर्तानम् । नूयैविमाने जह पन्तुर्मुदूर्तं जह करकय को पण्णसापम वापयकय अविष्य पन्तुर्मुदूर्तं जह । चदविमाने देवीयति । चन्द्रविमान मा देवीना प्रत्य उत्तरं च गीतम् उत्तरं को पण्णसापम मा चोवा माग करकट वी पण्णसा पण्णसापम । चदविमाने अण्णसियाण देवीयति । चन्द्रमा मा विमाने विष्य पण्णसापम देवीनो विमाने मा प्रत्य च गीतम् उत्तरं वी पण्णसापम को पण्णसापम । चदविमाने पण्णसियाण देवीयति । चन्द्रमा मा विमाने विमाने विष्य पण्णसापम देवीनो विमाने मा प्रत्य उत्तरं च गीतम् उत्तरं वी पण्णसापम मा चोवा माग पण्णसापमं अण्णसापमं प्रत्य उत्तरं च गीतम् पण्णसापमं चारवक अविष्य पण्णसापम । सूरविमाने विष्य पण्णसापमं अण्णसापमं प्रत्य उत्तरं च गीतम् उत्तरं च गीतम्

माणेण ज्ञते ! देवाण केवडय काल ठिइ पण्णा ? गोयमा ! जहन्नेण चउत्तागपलित्तम उक्कोसेण पलित्त
 त्तम आससहस्समस्मिहिय । सूरियमाणे अण्डसदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउत्तागपलित्तम उक्कोसेणवि अतो
 मुज्जत । सूरियमाणेण पण्डित्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउत्तागपलित्तम अतोमुज्जतुण उक्को
 सेण पलित्तम आससहस्समस्मिहिय अतोमुज्जतुण । सूरियमाणेदेवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउ
 त्तागपलित्तम उक्कोसेण अण्डपलित्तम पचहि आससण्हि अण्डसिहिय । सूरियमाणे अण्डसिहियाण देवीण
 पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । सूरियमाणे पण्डित्तयाण देवीण पुच्छा ? गो

न । दवाना कियत्ता कालं त्विति । प्रकृष्टा २ गीतम् । अपत्येन पश्योपमबतुनागमुत्कर्षतः पश्योपम वयसहस्राभ्याधिकम् । सूर्यविमान उप
पासदेयानां पुष्पा गीतम् । अपत्येनात्कथयतात्ममुद्भूतम् । सूर्यविमाने ययोसदेवानां पुष्पा गीतम् । अपत्येन वतुनागपश्योपममन्तमुद्भू
तीन् नु उदकयता पहयोपम वयसहस्राभ्याधिकमन्तमुद्भूतम् । सूर्यविमाने देवीना पुष्पा गीतम् । अपत्येन पल्यापमबतुनागमुत्कर्षयतीदृ
पहयोपमं पञ्चान्नवपक्षैरधिकम् । सूर्यविमान उपपासदेवीना पुष्पा, गीतम् । अपत्येनोदकयतात्ममुद्भूतम् । सूर्यविमाने ययोसहस्रीना पृ

तम जङ्गल की चौब माये परबपमने छरछट परबपम ज्वारवम अधिब । मरबिमाथि सपखनदेवावति । सून्या बिमानने बिधि सपर्याप्त देवकी प्रग
॥ हे भौतम जङ्गल की पिब छरछट की पिब अतमुहुत् । मरबिमाथि सपखनदेवावति । सून्या बिमानने बिधि सपर्याप्त देवकी प्रग ७ हे भौतम जङ्गल
की पनमुहुत् गून परबपमभा चौबा भाग छरछट की अतमुहुत् गून ज्वारवम अधिब परबपम । मरबिमाथि दबोवति । सून्या बिमानने बिधि द
बाभा प ७ हे भौतम जङ्गल की परबपमभा चौबा भाग छरछट की प ७ अधिब अर परबपम । मरबिमाथि सपखनदेवावति । सून्या
बिमानने बिधि सपर्याप्त देवकी प्र ७ हे की जङ्गल की पिब छरछट की पिब अतमुहुत् । मरबिमाथि सपखनदेवावति । सून्या बिमानने बिधि

यमा ! जहन्नेण चउत्तागपलिठवम अत्तोमुज्जत्तूण उक्कोसेण अरुपलिठवम पयहि वाससएहि अस्सहिंयं
 अत्तोमुज्जत्तूण । गहविमाणे देवाण पुच्छा ? गो० ! जहणेण चउत्तागपलिठवम उक्कोसेण पलिठवम । गहवि
 माणे अापज्जत्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणयि उक्कोसेणयि अत्तोमुज्जत्त । गहविमाणे पज्जत्तदेवा
 ण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण चउत्तागपलिठवम अत्तोमुज्जत्तूण उक्कोसेण पलिठवम अत्तोमुज्जत्तूण ।
 गहविमाणे देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउत्तागपलिठवम उक्कोसेण अरुपलिठवम । गहविमाणे
 अापज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणयि उक्कोसेणयि अत्तोमुज्जत्त । पज्जत्तियाण गहविमाणे

च्छा गीतम । अपन्येन चतुर्नागपस्योपमममममुदूर्तामस्तुपतोदुपरयोपमं पञ्चप्रियपञ्चत्तरिपिक्कमत्तमुदूर्तमम् । यद्विमान देवाना पुच्छा,
 गीतम । अपन्येन चतुर्नागपस्योपममस्तुपतः परयोपमम् । यद्विमानेऽपपासदेवामा पुच्छा गीतम । अपन्येनात्कपतस्त्यात्तमुदूर्तम् । यद्वयि
 माने पर्याप्तदेवाना पुच्छा गीतम । अपन्येनात्कपतः परयोपममस्तुपतः परयोपममस्तुपतः परयोपममस्तुपतः परयोपममस्तुपतः परयोपममस्तुपतः
 गीतम । अपन्येन चतुर्नागपस्योपममस्तुपतः परयोपमम् । यद्विमानेऽपपासदेवामा पुच्छा, गीतम । अपन्येनात्कपतस्त्यात्तमुदूर्तम् । यद्व

पर्याप्त देवाना स्मिति मा प्र ४ हे भोतम अथग्य वो चतुर्मुदूर्त गहन परयापम मा बोधा माग उत्थाव वो पांच यव पश्चिम परयापम चतुर्मुदूर्तं ग्य
 म । गहविमादि देवाचं पुच्छा । यद्वना विमाने विधि देवता मा प्र ४ हे भो अथग्य वो परयापमना वावा भाग उत्तरय वो परयापम । गहविमादि
 चपज्जत्तदेवाचं वि । यद्वना विमान मां चपर्वात्त देवता मा प्र ४ हे भोतम अथग्य वो पिक्क चतुर्मुदूर्त । गहविमादि पञ्चत्तरिपिक्क
 पुच्छा । यद्वना विमाने विधि पर्याप्त देवता मा प्र ४ हे भोतम अथग्य चतुर्मुदूर्तं गहन परयापम मा बोधा माग उत्तरय वो परयापम चतुर्मुदूर्तं छाग
 गहावमादि देवाच पुच्छा । यद्वना विमाने विधि देवता मा प्र ४ हे गीतम अथग्य वो परयापम चतुर्भांन उत्तरय चतुर्मुदूर्त । गहविमादि चपज्ज

देवीण पुच्छा ? गीयमा ! जहखेणं चउजागपलिउंथम अंतोमुज्झूणं उक्कोसेण अरुपलिउंथम अंतोमुज्झू
ण । नरकसंविमाणे देवाण पुच्छा ? गीयमा ! जहखेण चउजागपलिउंथम उक्कोसेण अरुपलिउंथम । न
रकसंविमाणे अपज्झयाण देवाण पुच्छा ? गीयमा ! जहखेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुज्झू । नरकसंवि
माणे पज्झयाण देवाण पुच्छा ? गीयमा ! जहखेण चउजागपलिउंथम अंतोमुज्झू उक्कोसेण अरुप
लिउंथम अंतोमुज्झूण । नरकसंविमाणदेवीण पुच्छा ? गीयमा ! जहखेण चउजागपलिउंथम उक्कोसेण

विमाने पर्याप्तदेवीनां पुच्छा गीतम । जण्येनात्तमुत्तं पस्योपमवतुजांगमुत्त्वयतो ह पस्योपममत्तमुत्तं । नरकविमाने देवाना पु
च्छा गीतम । जण्येन वतुजांगपस्योपमवतुजांगमुत्त्वयतो ह पस्योपमम् । नरकविमान उप्याप्तदेवाना पुच्छा गीतम । जण्येनोत्त्वयतद्यात्तमुत्त
म् । नरकविमान पर्याप्तदेवीनां पुच्छा गीतम । जण्येन वतुजांगपस्योपममत्तमुत्तं पस्योपममत्तमुत्तं । नरकविमाने
देवीना पुच्छा, गीतम । जण्येन वतुजांग पस्योपममुत्त्वयतस्वातिरेकं वतुजांगपस्योपमम् । नरकविमाने उप्याप्तदेवीना पुच्छा, गीतम ।

तिशय दशेव पुच्छा । पञ्चविमाने विष अपर्वात्त देवीना म च हे भोतम जण्येन या विष वरकव को विष वरुमुत्तं । पञ्चविमाने । पर्वत
पञ्चविमानो देवाना म च हे भोतम जण्येन को वरुमुत्तं वरु पञ्चापम वतुजांग वरकव को वरुमुत्तं वरु पञ्चापम । नरकविमाने देवा
पुच्छा । नरक विमाना देवता ना म च हे भोतम जण्येन को वरुजांग पञ्चापम वरकव को जह वरुजापम । नरकविमाने अपज्झयाण देवावति
नरकना विमाने विषे अपर्वात्त देवता ना म च हे भो जण्येन को विष वरुजांग पञ्चापम वरुजांग पञ्चापम । नरकविमाने विमान
ने विष पर्यात्त देवता ना म च हे भो जण्येन को वरुजांग पञ्चापम वरुजांग पञ्चापम । नरकविमाने विमान
पुच्छा । नरकना विमाने विष देवीना म च हे भोतम जण्येन को वरुजांग पञ्चापम वरुजांग पञ्चापम । नरक विमाने

सातिरेग चउन्नागपलिनुयर्म । नस्कस्रियिमाणे अण्डस्रियमाणे देव्रीणं पुच्छा ? गो० । जहयेंगावि उक्कीसेगावि अतोमुज्जस्र । नस्कस्रियिमाणे पञ्चास्रियाण देव्रीण पुच्छा ? गो० । जहयेंग चउन्नागपलिनुयर्म अतोमुज्जत्तूण उक्कीसण सातिरेग चउन्नागपलिनुयर्म अतोमुज्जस्र । तारायिमाणे देवाण पुच्छा ? गो० । जहयेंग अठन्नागपलिनुयर्म उक्कीसेणं चउन्नागपलिनुयर्म । तारायिमाणे अण्डस्रियमाणे पुच्छा ? गो० । जहयेंगावि उक्कीसेगावि अतोमुज्जस्र । तारायिमाणे पञ्चास्रियमाणं पुच्छा, गो० । जहयेंग अठन्नागपलिनुयर्म अतोमुज्जत्तूण उ

अपत्यनाम्युरकपथोलप्यक्तमुद्रुतम् । नष्टत्रविमाने पयाहबदवीनां पृष्ठा गीतम् । अक्षमुद्रुतीनं चतुर्जागपश्योपमस्तुक्पथोऽक्तमुद्रुतीनं स्याति
रेखं चतुर्जागपश्योपमम् । ताराविमानं देवानां पृष्ठा गीतम् । अपश्येनाहजानं पश्योपमस्तुक्पथोऽक्तमुद्रुतीनं स्याति
सदेवानां पृष्ठा गीतम् । अपत्यतद्योत्कपथोलप्यक्तमुद्रुतम् । ताराविमानं पर्याप्तदवानां पृष्ठा, गीतम् । अपश्येनाहजानं चतुर्जागपश्यो
पमस्तुक्पथोलप्यक्तमुद्रुतम् । ताराविमानं देवानां पृष्ठा, गीतम् । अपश्येनाहजानं पश्योपमस्तुक्पथोऽक्तमुद्रुतीनं स्यातिरेकमहजानं स्यात्

[illegible]

ण । न । चउन्नागपलिन्नम स्यतोमुज्जसू । तारायिमाणे देवीण पुच्छा ? गो० । जहखेण स्यन्नागपलिन्नम
स्कुत्ताण साइरग स्यन्नागपलिन्नम । तरायिमाणे अपज्जासियाण देवीण पुच्छा, गो० । जहखेणवि उक्को
माणे र स्यतोमुज्ज । तारायिमाणे पज्जसयाण देवीण पुच्छा ? गोयमा । जहखेण स्यन्नागपलिन्नम
लिन्नयत्तण उक्कोसेण साइरग स्यन्नागपलिन्नम स्यतोमुज्जसू । वेमाणियाण ज्ञत ! देवाण केवइय
— ई पखासा ? गोयमा ! जहखेण पलिन्नम उक्कोसेण तत्तीस सागरीयमाइ । अपज्जासयवेमाणिया
विमाने ! पुच्छा ? गोयमा ! जहखेणवि उक्कोसेणवि स्यतोमुज्ज । पज्जासवेमाणियाण पुच्छा ? गोयमा

[illegible]

जहणेण पलिउयम अतोमुज्झण उक्कोसेण तेहीस सागरोवमाइ अतोमुज्झणाइ । धेमाणिणीण जते !
 देयीण कयइय काल ठिइ पयात्ता ? गोयमा ! जहन्नेण पलिउयम उक्कोसेण पणपन्त पलिउयमाइ । अण
 ज्ञासियाण देयीण धेमाणिणीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्झ । पज्जासयाण वेमा
 णिणीण देयीण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण पलिउयम अतोमुज्झण उक्कोसेण पणपया पलिउयम अतो
 मुज्झण । सोहम्मेण जत ! कप्पे देयाण केयइय कालं ठिइ पयात्ता ? गोयमा ! जहन्नेण पलिउयम उक्को
 सेण दो सागरोवमाइ । सोहम्मे कप्पे अणपज्जात्तदेयाण पुच्छा, गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतो

? गीतम । अण्येन पत्तोपममुत्कथंतः पण्यपण्णाद्यत्तपत्तोपमानि । अण्योसकथेमानिकदधीना पुच्छा गीतम । अण्येनाप्युत्कथयतोप्यस्तमुदु
 तम् । पर्याप्तकथेमानिकदधीना पुच्छा गीतम । अण्येन पत्तोपममलामुदुर्तनमुत्कथत पण्यपण्णाद्यत्तपत्तोपमानान्यस्तमुदुर्तनानि । सीचमे
 नदत्त । करप दवानां कियत्त कास स्थितिः प्रकृता ? गीतम । अण्येन पत्तोपममुत्कथतो द्वे सागरोयमे । सीचमे कथे अण्येनाप्युत्कथयतो
 पुच्छा, गीतम । अण्येनाप्युत्कथयतोप्यस्तमुदुर्तनम् । सीचमे कथे पर्याप्तकदवाना पुच्छा गीतम । अण्येन पत्तोपममलामुदुर्तनमुत्कथयतो

त सागरापम । वेमाचोच भति दूरोचति । वेमानिकनो दूरोना द्वे भयवम् कतथा यायु कथा म उ व दो अथन्य वा परबापम कथय वा पयाजन
 पदवापम । पण्यत्तिनाय वेमाचोचति । अण्योसकथेमानिकनो दूरोना प्र० उ व गीतम अथन्य दो पिय कथय दो विव पत्तमुदुत्त । पण्यत्तिनाय
 यमाचोच दूरोचति । पर्याप्त वेमानिक दूरोना प्रय कतर व गीतम अथन्य दो पत्तमुदुत्त अथन्य पत्तोपम कथय दो अत्तमुदुत्त अथन्य पयाजन पत्तोपम
 मादप्य भति । भोचम दूरोचकन विवे द्वे भयवम् वेदनाभो वेदना कायभो स्थिति कथो प्रय कतर द्वे गीतम अथन्य दो परबापम कथय दो दो
 यानरापम । वाचन्य कथे पण्यत्तदेयाचति । अथन्य देयकाकने विवे अण्योस देवना म कतर द्वे गीतम अथन्य दो पिय कथय दो पिय पत्तमुदुत्त ।

जहणें पलित्रयम अतोमुज्जुण उक्कीसेण तेहीस सागरोयमाइ अतोमुज्जुणाइ । वेमाणिणीण जते !
 देवीण कयइय काल छिई पणत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण पलित्रयम उक्कीसेण पणपन्ना पलित्रयमाइ । अप
 ज्ञासियाण देयाण वेमाणिणीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कीसेणवि अतोमुज्जुण । पञ्चासयाण वेमा
 णिणीण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहणें पलित्रयम अतोमुज्जुण उक्कीसेण पणपणा पलित्रयम अतो
 मुज्जुण । सोहम्मैण जते ! कप्पे देयाण केयइयं काल छिई पणत्ता ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कीसेणवि अतो
 सेण दो सागरोयमाइ । सोहम्मै कप्पे अपज्जत्तदेयाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कीसेणवि अतो

? गीतम । अपम्यम पस्योपममुत्कथतः पञ्चपञ्चाधरपस्योपमानि । अपर्याप्तकथेमानिकथीनां पुच्छा, गीतम । अपर्येनाप्युरकथयतीप्यन्तमुद्र
 तम् । पर्याप्तकथेमानिकथेयीनां पुच्छा गीतम । अपर्येन पस्योपममन्तमुद्रतीनमुरकथतः पञ्चपञ्चाधरपस्योपमाप्यन्तमुद्रतीनाति । सीर्यने
 प्रदत्त । कथे देवानां कियन्तं काल स्थितिः प्रदत्ता ? गीतम । अपर्येन पस्योपममुत्कथेतीरे दे सागरोयम । सीर्यने कथे देवापममन्तमुद्रतीनमुत्कथती
 पुच्छा, गीतम । अपर्येनाप्युरकथयतीप्यन्तमुद्रतम् । सीर्यने कथे पयोप्रकथेयामा पुच्छा, गीतम । अपर्येन दो पदबापम उरकथ दो पवावन
 स धामरापम । वेमा(बी)व मते दूबोचति । वेमा(बि)कनो दूबोका ने भगवन् कतका यासु कथा प्र० ७ क भी० कथन्य दो पदबापम उरकथ दो पवावन
 पञ्चापम । पञ्चत्रिंशदाथ वेमा(बी)चति । अपवात्त वेमानिकनो दूबोका प्र० ७ क भी० कथन्य दो पदबापम उरकथ दो पवावन पञ्चापम । पञ्चत्रिंशदाथ
 वेमा(बी)व दूबोचति । पवति वेमानिक दूबोका प्र० ७ क भी० कथन्य दो पदबापम उरकथ दो पवावन पञ्चापम । पञ्चत्रिंशदाथ वेमा(बी)चति । अपवात्त वेमानिकनो दूबोका प्र० ७ क भी० कथन्य दो पदबापम उरकथ दो पवावन पञ्चापम । पञ्चत्रिंशदाथ
 वेमा(बी)व दूबोचति । पवति वेमानिक दूबोका प्र० ७ क भी० कथन्य दो पदबापम उरकथ दो पवावन पञ्चापम । पञ्चत्रिंशदाथ वेमा(बी)चति । अपवात्त वेमानिकनो दूबोका प्र० ७ क भी० कथन्य दो पदबापम उरकथ दो पवावन पञ्चापम । पञ्चत्रिंशदाथ

मुञ्जत । सोहम्मे कप्पे पज्झप्तदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहद्वेण पालिच्छम स्यतोमुञ्जत्तूण उक्कोसेण दो सागरोयमाइ स्यतोमुञ्जत्तूणाइ । सोहम्मे कप्पे देवीण पुच्छा, गोयमा । जहद्वेण पालिच्छम उक्कोसण प त्तास पालिनुयमाइ । सोहम्मे कप्पे स्यपज्झत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा । जहन्ने गवि उक्कोसेणात्र स्यतो मुञ्जत (ग्रन्थाग्र २५००) सोहम्मे कप्प पज्झत्तियाण देवीण पुच्छा, गोयमा । जहन्नेण पालिनुयम स्यतोमुञ्जत्तूण उक्कोसेण पत्तास पालिनुयमाइ स्यतोमुञ्जत्तूणाइ । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण देवीण पु

द्व सागरोपमेऽक्षमुद्भूतान् । सीधर्मै कश्यप देवी ।। पृच्छा भीतम् । अथग्यन पत्न्योपममुत्कपत पृच्छाश्रितपत्न्योपमानि । सीधर्मै कश्यपेऽपथयाम कद्वीना पृच्छा भीतम् । अथग्यनाप्युत्कपतोप्यन्तमुद्भूतम् । सीधर्मै कश्यपयोऽसकद्वीना पृच्छा, गीतम् । अथग्यनात्तमुद्भूतान् पत्न्योपममुत्कपतः पत्न्यपृच्छाश्रितपत्न्योपमाम्गममुद्भूतानान् । सीधर्म कश्यप परिग्रहीतामा द्वीना पृच्छा गीतम् । अथग्यन पत्न्यापममुत्कपतः सप्तपत्न्योपमानि । सीधर्मै कश्यपे परिग्रहीतानामपयोऽसकद्वीना पृच्छा, गीतम् । अथग्येनाप्युत्कपतोप्यन्तमुद्भूतानम् । सीधर्मै कश्यपे परिग्रहीत

[illegible]

पृच्छा, गोयमा । जहन्तेण पलिउवम उक्कोसेण सप्त पलिउवमाइ । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण अप्पज्जासि
 याण पुच्छा, गोयमा । जहन्तेणयि उक्कोसेणयि स्यतोमुज्जात्त । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण पज्जासियाण
 देवीण पुच्छा, गोयमा । जहन्तेण पलिउवम स्यतोमुज्जात्त उक्कोसेण सप्त पलिउवमाइ स्यतोमुज्जात्तुणाइ
 सोहम्मे कप्पे अप्परिग्गहियाण देवीण पुच्छा, गोयमा । जहन्तेण पलिउवम उक्कोसेण पन्नासपलिउव
 माइ । सोहम्मे कप्पे अप्परिग्गहियाण अप्पज्जात्तियाण देवीण पुच्छा, गो० । जहन्तेणवि उक्कोसेणयि स्यतो
 मुज्जात्त । सोहम्मे कप्पे अप्परिग्गहियाण पज्जात्तियाण देवीण पुच्छा, गोयमा । जहन्तेण पलिउवम स्यतो

पयासकदेवीना पुच्छा, गीतम । अपग्गव पत्थोपममत्तमुत्तुत्तानिमुत्तुत्तयत्त । सप्तपत्थोपमाम्बत्तमुत्तुत्तानि । सोचमे कस्पउपरिपद्दीतात्ता देवी
 नां पुच्छा गीतम । अपग्गव पत्थोपममुत्तुत्तयत्त । पन्नासपत्थोपमानि । सोचमे कस्पउपरिपद्दीतात्तामपर्यासकाना देवीना पुच्छा गीतम ।
 अपग्गवःपुत्तुत्तयत्तमुत्तुत्तयत्त । सोचमे कस्पउपरिपद्दीतात्तां पयासकाना देवीना पुच्छा गीतम । अपग्गव पत्थोपममत्तमुत्तुत्तानिमुत्तुत्तयत्त

साइय कस्प परिपद्दीतात्त दशेवति । सोचम कल्पने विधि परिपद्दीत पर्यासक देवीना प्र उ हे गीतम अवग्ग बो सप्तमुत्तुत्त सप्त
 पद्दापम उरग्ग बो सप्तमुत्तुत्तं छन सात पद्दापम । साइय कस्प परिपद्दीतात्त देवीवति । सोचम कल्पने विधि अपरिपद्दीत देवीना प्र० उत्तर हे
 गीतम अवग्ग बो पद्दापम उरग्ग बो पद्दापम पद्दापम । साइय कस्प परिपद्दीतात्त अपग्गवतिदशेवति । सोचम कल्पन विधि अपरिपद्दीत
 पद्दापम देवीना प्र उत्तर हे गीतम अवग्ग बो पद्दापम देवीवति । साइय कस्प परिपद्दीतात्त पज्जात्तियात्त पज्जात्तियात्त देवीवति ।
 सोचम कल्पने विधि अपरिपद्दीत पर्यासक देवीना प्र उत्तर हे गीतम अवग्ग बो पद्दापम सप्तमुत्तुत्त बो पद्दाप पद्दापम सप्तमु
 त्तुत्त सप्त । साइय कल्पने विधि पद्दीतात्ता प्र० उत्तर हे गीतम अवग्ग बो सातिरेव पद्दापम उरग्ग बो सातिरेव सा

मुञ्जसूनाइ । ईसाने कप्ये देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहखेण साहरेग पलिनुम उक्कोसेण साइरेगाइ दो
सागरोवमाइ । इसाणे कप्ये अप्पज्झयाण देयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहखेणवि उक्कोसेणवि अतोमुञ्जसू
इसाने कप्ये पज्झयाण देयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहखेण सातिरेग पलिनुम अतोमुञ्जसू उक्कोसेण
सातिरेगाइ दो सागरोयमाइ अतोमुञ्जसूनाइ । ईसाने कप्ये देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहखेण सातिरेग
पलिनुम उक्कोसेण पणपखपलिनुममाइ । इसाण कप्ये देवीण अप्पज्झसियाण पुच्छा, गोयमा ! जहखे
णवि उक्कोसेणवि अतोमुञ्जसू । ईसाने कप्ये पज्जात्तियाण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण साइरेग

पब्बाधत्तपसोपमान्यभुमुदूर्तानि । इद्याने कप्ये देवाना पुच्छा गीतम । अपग्येन सातिरेकं पसोपमसुत्तयत सातिरेके द्वे सागरोपमे ।
इद्यान कस्येऽपयोसकदवानां पुच्छा गीतम । अपग्येनाप्युत्कर्वतोप्यन्तमुदूर्तम् । इद्याने कप्ये देवाना पयासकाना पुच्छा गीतम । अपग्ये
न सातिरेकं पसोपमसन्तमुदूर्तानि । उत्कर्वतः सातिरेके द्वे सागरोपमेन्तमुदूर्तानि । इद्याने कप्ये देवीना पुच्छा, गीतम । अपग्यतः साति
रेकं पसोपमसुत्तयतः पब्बाधत्ताद्यत्तपसोपमानि । इद्याने कस्येऽपयोसकदेवीना पुच्छा गीतम । अपग्येनाप्युत्कर्वतोप्यन्तमुदूर्तम् । इद्याने

सागरोपम । ईयावे कप्ये पप्पत्तिदावं दशवति । ईयाज कस्यने विपे पपर्वात्तक देवकी प्र त द्वे भीतम जजग्ग सो पिब कटक्कय सो पिब कटक्कय
इत । ईयावे कप्ये पप्पत्तयाव दशवति । ईयाज कस्यने विपे पपर्वात्तक देवतामा प्र क० द्वे भीतम जजग्ग सो सातिरेक पसवापम पत्तमुदूर्त खन
दावव सो सातिरेक राव सागरापम पत्तमुदूर्त खन । ईयावे कप्ये देवीवति । ईयाज कस्यने विपे देवीना प्र कटक्क दे भीतम जजग्ग सो सातिरेक
दशवपम कटक्क सो पंदावन पसोपम । ईयावे कप्ये पप्पत्तियदेवीवति । ईयाज कस्यने विपे पपर्वात्तक देवीना प्र क० द्वे भीतम जजग्ग सो
पिब कटक्क सो पिब कटक्कय । ईयावे कप्ये पप्पत्तियदेवीवति । ईयाज कस्यने विपे पपर्वात्तक देवीना प्र कटक्क दे भीतम जजग्ग सो सातिरेक

पलिष्ठत्रयम श्रुतोमुक्तज्ञान उक्तीसेणं पणपयापलिष्ठत्रयमाइ श्रुतोमुक्तज्ञानाई । ईसाणे कप्ये परिगगहियाण
 देधीण पुच्छा ? गायमा ! जहन्नेण साइरग पलिष्ठत्रयम उक्तीसेण नय पलिष्ठत्रयमाइ । ईसाण कप्ये परि
 गगहियाण अपपञ्जसियाण देधीण पुच्छा ? गीयमा ! जहन्नेगधि उक्तीसेणधि श्रुतोमुक्तज्ञान । ईसाणे कप्ये
 परिगगहियाण पञ्जसियाण देधीण पुच्छा ? गीयमा ! जहन्नेण साइरग पलिष्ठत्रयम श्रुतोमुक्तज्ञान उक्ती
 सेण नय पलिष्ठत्रयमाइ श्रुतोमुक्तज्ञानाइ । ईसाण कप्ये अपपरिगगहियाण देधीण पुच्छा ? गीयमा ! जह

कस्य पर्याप्तकवोना पुच्छा गीतम । अपग्येन सातिरेकं पश्योपममलमुदूर्तानमुरकपंत पञ्चपण्याद्यत्पस्यापमान्यलसुदूर्तानि । इशाने
 कस्य परिपरीताना देवीनां पुच्छा, गी० । अपग्येन सातिरेकं पस्यापममुरकपतो नय पस्यापमम । इशाने कस्य परिपरीतानामपयाप्तम
 देवीनां पुच्छा गीतम । अपन्यनाप्युक्तकपताप्यलमुदूर्तम् । इशाने कस्य परिपरीताना पर्याप्तकवोनां पुच्छा गीतम । अपग्येन सातिरेक
 पश्योपममलमुदूर्तानमुरकपतो नयपश्योपमान्यलमुदूर्तानि । इशाने कस्य परिपरीताना देवीनां पुच्छा गीतम । अपग्येन सातिरेक
 पस्यापम लसुदूर्तान् । कस्य को पस्यापम पस्यापम पञ्जः । इशाने कस्य परिपरीताना देवीनां पुच्छा गीतम । अपग्येन सातिरेक
 वीनां पुच्छा गीतम । अपन्य को सातिरेक पस्यापम कस्य को नय पस्यापम । इशाने कस्य परिपरीताना देवीनां पुच्छा गीतम । अपग्येन सातिरेक
 विद्य परिपरीताना पस्यापम देवीनां पुच्छा गीतम । अपन्य को पश्य कस्य को पश्य कस्य को पश्य परिपरीताना देवीनां पुच्छा गीतम । अपग्येन सातिरेक
 ईशाने कस्ये विद्य परिपरीताना पस्यापम देवीनां पुच्छा गीतम । अपन्य को पश्य कस्य को पश्य कस्य को पश्य परिपरीताना देवीनां पुच्छा गीतम । अपग्येन सातिरेक
 पुच्छा । ईसाणे कस्ये अपपरिपरीताना देवीनां पुच्छा । ईशाने कस्ये विद्ये अपपरिपरीताना देवीनां पुच्छा । ईसाणे कस्ये अपपरिपरीताना देवीनां पुच्छा
 वा पस्यापम पस्यापम । ईसाणे कस्ये अपपरिपरीताना देवीनां पुच्छा । ईशाने कस्ये विद्ये अपपरिपरीताना देवीनां पुच्छा । ईसाणे कस्ये अपपरिपरीताना देवीनां पुच्छा ।

त्तेण सादरेण पलिठ्वम उक्कोसेण पणपणपलिठ्वमाइ । ईसाणे कप्पे अपपरिगगहिंयाण अपज्झसिंयाण
 देवीण पुच्छा, गो० ! जहखेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्झत । इसाणे कप्पे अपपरिगगहिंयाण पज्झसिंयाण
 देवीण पुच्छा, गोयमा । जहखेण सादरेण पलिठ्वम अतोमुज्झम उक्कोसेण पणपणपलिठ्वमाइ अतो
 मुज्झणाइ । सणकुमारं कप्पे देवाण पुच्छा, गोयमा ! जहखेण दो सागरोयमाइ उक्कोसेण सत्त सागरो
 यमाइ । सणकुमारं कप्पे अपज्झाण देवाण पुच्छा, गोयमा ! जहखेण दो सागरोयमाइ अतोमुज्झत । स
 णकुमारं कप्पे पज्झाण देवाण पुच्छा, गोयमा । जहखेण दो सागरोयमाइ अतोमुज्झाणाइ उक्कोसेण

पयोपममुत्कथ पणपणपलिठ्वमाइ । इसाण कल्पऽपरिपहीतानामपयोसकदेवीना पुच्छा गीतम । अयम्यमोत्कथतद्याल्लमुत्तम् ।
 इसाण कल्पऽपरिपहीतानां पयोसकदेवीनां पुच्छा गीतम । अयम्यम सातिरेक पयोपममल्लमुत्तम् । पणपणपलिठ्वमाइ अतोमुज्झत । स
 णकुमारं कल्प देवाना पुच्छा गीतम । अयम्येन द्वे सागरोयमे उत्कथत । सत्त सागरोयमिति । सत्तकुमारं कल्प ऽप
 योसकदेवाना पुच्छा गीतम । अयम्येन कल्प पयोसकाना देवाना पुच्छा गीतम । अयम्यम द्वे सागरो

भो० अद्वय दो विन बलव दो विन बलमर्द्धम । इसाणेऽप्ये अपरिपहीतानां पज्झसिंयाण देवीकति । इसाण कल्पदेवसाकने विन अपरिपहीत पयो
 सक देवीना म उत्तर द्वे गीतम अद्वय दो सातिरेक पयोपम अतमर्द्धत अम कथय दो पंचावन पयोपम अतमर्द्धत अम । सत्तकुमारं कल्प देवाय
 पच्छा । सत्तकुमार कल्पने विन देवताना म उत्तर द्वे गीतम अद्वय दो द्वौय पानरापम कथय दो सात सागरापम । सत्तकुमारं कल्प पणपणपलि
 ठ्वमाइ । सत्तकुमार कल्पदेवसाकने विधि पयोसक देवताना म उ द्वे दो अद्वय दो विन कथय दो विन अतमर्द्धत । सत्तकुमारं कल्प देवतानामिति
 सत्तकुमार कथयने विन पयोस देवता म उ द्वे गीतम अद्वय दो अतमर्द्धत अम द्वायसागरापम कथय दो अतमर्द्धत अम सातसागरापम । सा

सप्त सागरोयमाइं अतीमुक्तभूणाइ । माहिंदे कप्पे देत्रीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण साहरेगाइ दो सा
 गरीत्रमाइ उक्तीसेण सप्त साहियाइं सागरोयमाइ । माहिंदे अपज्झाण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जह
 णेणयि उक्तीसणयि अतीमुक्तस । माहिंदे पज्झाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण साहरेगाइ दो सागरो
 यमाइ अतीमुक्तभूणाइ उक्तीसण सप्तसाहियाइ सागरोयमाइ अतीमुक्तभूणाइ । अज्झोए कप्पे देवाण
 पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण सप्तसागरोयमाइ उक्तीसेण दससागरोयमाइ । अज्झोए अपज्झाण पुच्छा ,

पमेत्तमुत्तरेण उरकपंत । सप्तसागरोपमास्यत्तमुत्तरेणानि । माहेन्द्रे कश्यप देवाना पुच्छा, गीतम । अपग्येन सातिरेके ह सागरोपम सत्त
 त सप्तसागरोपमानि सापिकाणि । माहेन्द्रे कश्यपे उपवासकदेवाना पुच्छा, गीतम । अपग्येनोत्पत्तयत्तमुत्तरेणानि । माहेन्द्रे कश्यप ययोस
 कानां देवानां पुच्छा, गीतम । अपग्येन सातिरेके हे सागरोपमेत्तमुत्तरेणानि सत्तयत्त । सप्तसागरोपमास्यत्तमुत्तरेणानि । पुत्तसोले कश्यपे दे
 वानां पुच्छा गीतम । अपग्येन सप्तसागरोपमास्यत्तमुत्तरेणानि । पुत्तसोले कश्यपे उपवासकानां पुच्छा, गीतम । अपग्येनोत्पत्तयत्त

विदकाप दवाचति । माहेन्द्रे दवाकने विष दवातामा प उ हे गीतम अवाय बो सातिरेक साह सागरोपम उरकक दो पक्षिक सात सागरोपम ।
 माहिंदे कश्यपे अपग्येनयदेवाचति । माहेन्द्रे दवाकने विषे यपर्याप्त दवातामा प० उ हे गीतम अवाय दो विष सत्तमुत्तरेणानि । माहिंद
 पत्तनाप पुच्छा । माहेन्द्रे दवाकने विषे यपर्याप्त दवातामा प० उ हे गीतम अवाय दो सातिरेक साहसागरोपम पत्तमुत्तरेणानि । अवाय दो साते पवि
 त्र उरकसागरोपम पत्तमुत्तरेणानि । यभकाप कश्यपे देवाचति । माहेन्द्रे दवाकने विषे यपर्याप्त दवातामा प० उ हे गीतम अवाय दो सात सागरोपम उरकक
 दो कश्यप सागरोपम । यभकाप अपग्येनयदेवाचति । माहेन्द्रे दवाकने विषे यपर्याप्त दवातामा प० उरकक दो विष सत्तमुत्तरेणानि । यभकाप पत्तनाचति । माहेन्द्रे दवाकने विषे यपर्याप्त दवातामा प० उरकक दो सात सागरोपम पत्तमुत्तरेणानि । यभकाप उरकक दो कश्यपे दो कश्यप

१ गीयमा । जहणेणियि उक्कोसेणियि व्यतोमुज्जस । यचलोए पज्जसाण पुच्छा, गीयमा । जहन्तेण सत्त
सागरोवमाइ व्यतामुज्जसूणाइ । उक्कोसण वससागरोवमाइ व्यतोमुज्जसूणाइ । छंतए पुच्छा ? गो० । अह
न्तेण वससागरोवमाइ उक्कोसेण वउदससागरोवमाइ । छंतए व्यपज्जसाण पुच्छा ? गीयमा । जहसेणियि
उक्कोसणियि व्यतोमुज्जस । छंतए पज्जसाण पुच्छा, गीयमा । जहन्तेण वससागरोवमाइ व्यतोमुज्जसूणाइ
उक्कोसण वउदससागरोवमाइ व्यतोमुज्जसूणाइ । महासुक्खं वेत्ताण पुच्छा, गीयमा । जहन्तेण वउदससा
गरावमाइ उक्कोसेण सत्तरसागरोवमाइ । महासुक्खं व्यपज्जसाण पुच्छा, गीयमा । जहन्तेणियि उक्कोसे

[illegible]

वस येनमृदुत यो लज्ज । सुतद पुण्या । सुतकना प्र कतर हे गीतम । कषुख यो इस सागरायम उरकय धी चढे सागरायम । सुतए अप्प
 णति । सुतक दशकोत्तरी विष यययति टवताभी प्र कतर हे गीतम । कषुख यो पिण उरकय यो पिण यत्तमृदुत । सुतए पप्पताचति ।
 णति विष ययति टवताभा प्र कतर हे गीतम । कषुख यो इस सागरायम पप्पमुदुत यो लज्ज उरकय यो यत्तमृदुत यो लज्ज चढे सागरायम ।
 दानवेदनाचति । मदासुख देवकाक्षी विष येवताभा प्र कतर हे गीतम । कषुख यो चढे सागरायम उरकय यो यत्तमृदुत यो लज्ज चढे सागरायम । मदासुख

णयि श्रुतीमुज्जत । महासिद्धौ पञ्जज्ञाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेण धीदस्ससागरोयमाइ श्रुतीमुज्जतूणाइ
 उक्खोसंण सत्तरसागरोवमाइ श्रुतीमुज्जतूणाइ । सहस्सारे देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण सत्तरसाग
 रोयमाइ उक्खोसंण श्रुत्तरसागरोवमाइ । सहस्सारे अपज्झाणाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेणवि उक्खोसे
 णयि श्रुतीमुज्जत । सहस्सारे पज्झाणाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण सत्तरसागरोवमाइ श्रुतीमुज्जतूणाइ
 उक्खोसंण श्रुत्तरस सागरोवमाइ श्रुतीमुज्जतूणाइ । श्रुणाए देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण श्रुत्तरस

लभुमुत्तानि । सहस्सर देवानां पुच्छा । गोतम ! अपम्येन कसवस्य सागरोपमासुत्तवर्षतोष्टादशसागरोपमाणि । सहस्सरऽप्यर्षासकानां पुच्छा ।
 गौतम ! अपम्येनोरकपलद्याल्लभुतम् । सहस्सारे पर्याप्तकानां पुच्छा । गोतम ! अपम्येन कसवस्य सागरोपमास्यल्लभुतान्मास्युत्कपयो एादद्या
 सागरोपमास्यल्लभुतानि । श्रान्त कस्य देवानां पुच्छा । गोतम ! अपम्येनाष्टादशसागरोपमास्युत्कपयत एकोनयिञ्चतिः सागरोपमाणि । आ
 न्त कस्यऽपर्याप्तकानां देवानां पुच्छा, गौतम ! अपम्येनोरकपलद्याल्लभुतम् । श्रानते कस्ये पर्याप्तदेवानां पुच्छा, गौतम ! अपम्येना एा
 पयज्जतावति । सहास्रस्य दशकाकमे विभे अपर्वात देवतानां प्र एतत्तरे गौतम अवगम्य वो पिय तत्तवर्ष वो पिय पल्लमुत्त । सहास्रस्ये पञ्च
 नावति । सहास्रमुज्जत विभे पर्याप्त देवतानां प्र ए हे गोतम अवगम्य वो वरुदे सागरापम । अतर्म्मूत्त वरि जल तत्तवर्ष यो सत्तरे सागरोपम अत
 र्म्मूत्त वरि जल । सहस्सारे देवावति । सहस्सर देवकाकमे विभे देवतानां प्र एतत्तरे गौतम अवगम्य वो सत्तरस सागरापम तत्तवर्ष यो सत्तरे सा
 गरापम । सहस्सारे अपयज्जतावति । सहस्सरकस्यमे विभे अपर्वात देवतानां प्र ए हे गोतम अवगम्य यो पिय तत्तवर्ष वो पिय पल्लमुत्त । सहस्सारे
 पयज्जताव देवावति । सहस्सारे कस्यमे विभे पर्याप्त देवतानां प्र एतत्तरे गौतम अवगम्य वो सत्तरस सागरापम अतर्म्मूत्त जल तत्तवर्ष यो सत्तरे
 सागरापम पल्लमुत्त जल । आस्ये कपयति । श्रानतकस्ये देवतानां प्र ए हे गोतम अवगम्य वो सत्तरे सागरापम तत्तवर्षे समयोस सागरापम ।

? गीयमा ! जहसेणयि उक्कोसेणयि अतोमुज्जत्त । यज्जलोए पज्जसाण पुच्छा , गीयमा ! जहन्तेण सत्त
 सागरोधमाइ अतोमुज्जत्तणाइ । उक्कोसेण वससागरोधमाइ अतोमुज्जत्तणाइ । उतए पुच्छा ? गो० । जह
 न्तेण वससागरोधमाइ उक्कोसेण चउदससागरोधमाइ । उतए पज्जसाण पुच्छा ? गीयमा ! जहसेणयि
 उक्कोसेणयि अतोमुज्जत्त । उतए पज्जसाण पुच्छा , गीयमा ! जहन्तेण वससागरोधमाइ अतोमुज्जत्तणाइ
 उक्कोसेण चउदससागरोधमाइ अतोमुज्जत्तणाइ । महासुक्को वेधाण पुच्छा , गीयमा ! जहन्तेण चउदससा
 गराधमाइ उक्कोसेण सत्तरसागरोधमाइ । महासुक्को अपज्जसाण पुच्छा , गीयमा ! जहन्तेणयि उक्कोसे

धानमुदुत्तम् । पुज्जसोत्थ वसेपर्यासकानां पुच्छा गीतम् । अपश्यन् सत्तसागरोपमास्यन्मुदुत्तानि सत्त्वपता वयसागरोपमास्यन्मुदुत्तानि
 नाति । सान्नास पुच्छा नौ० । अपन्येन दद्यासागरोपमास्यन्मुदुत्तानि सत्त्वपता वयसागरोपमास्यन्मुदुत्तानि सत्त्वपता वयसागरोपमास्यन्मुदुत्तानि
 दानमुदुत्तम् । सान्नास वयसासकाना पुच्छा , गीतम् । अपन्येन दद्यासागरोपमास्यन्मुदुत्तानि सत्त्वपता वयसागरोपमास्यन्मुदुत्तानि सत्त्वपता
 शून्यदेवानी पुच्छा गीतम् । अपन्येन दद्यासागरोपमास्यन्मुदुत्तानि सत्त्वपता वयसागरोपमास्यन्मुदुत्तानि सत्त्वपता वयसागरोपमास्यन्मुदुत्तानि
 ग्यनोत्तपतपानमुदुत्तम् । महासुक्त पर्यासकानां पुच्छा गीतम् । अपश्यन् वतुदद्यासागरोपमास्यन्मुदुत्तानि सत्त्वपता वयसागरोपमास्यन्मुदुत्तानि
 तावय येनमुदुत्त को छन । सत्तप पुच्छा , सत्तपता न कतार के गीतम् सत्त्वपता वयसागरोपमास्यन्मुदुत्तानि सत्त्वपता वयसागरोपमास्यन्मुदुत्तानि
 तावति । सत्तप दद्याकने विदे वयसासकानां पुच्छा गीतम् । अपन्येन दद्यासागरोपमास्यन्मुदुत्तानि सत्त्वपता वयसागरोपमास्यन्मुदुत्तानि
 तावति विदे पर्यासकानां पुच्छा गीतम् । अपन्येन दद्यासागरोपमास्यन्मुदुत्तानि सत्त्वपता वयसागरोपमास्यन्मुदुत्तानि सत्त्वपता वयसागरोपमास्यन्मुदुत्तानि
 तावति विदे पर्यासकानां पुच्छा गीतम् । अपन्येन दद्यासागरोपमास्यन्मुदुत्तानि सत्त्वपता वयसागरोपमास्यन्मुदुत्तानि सत्त्वपता वयसागरोपमास्यन्मुदुत्तानि

गोयमा । जहन्तेण धीससागरोवमाइ अतोमुज्जुत्तूणाइ उक्कोसेण एकथीस सागरोवमाइ अतोमुज्जुत्तूणाइ ।
 अत्तुएकप्ये देवाण पुच्छा ? गोयमा । जहन्तेण एकवीस सागरोवमाइ उक्कोसेण वावीससागरोवमाइ ।
 अत्तुए अपजाप्ताण देवाण पुच्छा ? गोयमा । जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जुत्तू । अत्तुए पज्जसाण
 देवाण पुच्छा ? गोयमा । जहन्तेण एकवीस सागरोवमाइ अतोमुज्जुत्तूणाइ उक्कासेण थाथीस सागरोवमाइ
 अतोमुज्जुत्तूणाइ । हेठिम हेठिम गेधिज्जदेवाण पुच्छा ? गायमा । जहयेण वावीससागरोवमाइ उक्को
 सेण तथीससागरोवमाइ । हेठिम हेठिम अपज्जसदेवाण पुच्छा, गोयमा । जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अतो
 मुज्जुत्तू । हेठिम २ पज्जसदेवाण पुच्छा ? गोयमा । जहन्तेण वावीससागरोवमाइ अतोमुज्जुत्तूणाइ उक्को

देवताना म व हनेो जयय को विव उरउह को विव अत्तमुत्त । पारविषय पज्जसगदवा पृच्छति । पारवक्कदहन विने पर्याग्त देवतानो म व
 व हो जयय को बीससागरापम अत्तमुत्त छन उरउह को इववोस सागरापम अत्तमुत्तज्ज । अत्तएवय दवाय पृच्छति । अत्तुतकसने विव देव
 ताना म व हनेो जयय को इववोस सागरापम अत्तमुत्त छन उरउह को वावीससागरापम अत्तमुत्तज्ज । अत्तएवय अत्तमुत्तदेवाय पृच्छति ।
 अत्तएवयवि विव अत्तमुत्त देवताना म व हेनेो जयय को विव उरउह को विव अत्तमुत्त । अत्तएवय पज्जसावति । अत्तपुत कसने विव पर्याग्त
 देवताना म व हेनेो जयय को इववोस सागरापम अत्तमुत्त छन उरउह को वावीस सागरापम अत्तमुत्त । विविमहिमि देवाय
 पृच्छति । हेठिमहिमि देवताना म व हेनेो जयय को वावीस सागरोपम उरउह को विव तवोस सागरापम । विविमहिमि अत्तमुत्त ।
 विविमहिमि अत्तमुत्त देवताना म व उरउह को विव अत्तमुत्त । विविमहिमि अत्तमुत्त । विविमहिमि अत्तमुत्त । विविमहिमि अत्तमुत्त ।
 ना म व हेनेो जयय को वावीस सागरोपम अत्तमुत्त छन उरउह को तवोस सागरोपम अत्तमुत्त छन । विविमहिमि अत्तमुत्त पृच्छति ।

सागरोवमाइ उक्कोसेण एगूणथीस सागरोवमाइ । आणए अणपज्जाणा देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहखे
 णयि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । आणए पज्जाणा देवाण पुच्छा, गोयमा ! जहखेण अठारस सागरोव
 माइ अतोमुज्जत्तूणाइ उक्कोसेण एगूणवीस सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ । पाणए कप्पे देवाण पुच्छा,
 ? गोयमा ! जहन्तेण एगूणवीस सागरोवमाइ उक्कोसेण वीससागरोवमाइ । पाणए अणपज्जाणा देवाण
 पुच्छा ? गोयमा ! जहखेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । पाणए पज्जाणा देवाण पुच्छा ? गोयमा ! ज
 हखेण एगूणवीस सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ उक्कोसेण वीससागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ । आरणे
 देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण वीससागरोवमाइ उक्कोसेण एकवीस सागरोवमाइ । आरणे अणपज्जा
 णाण देवाण पुच्छा, गोयमा ! जहखेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । आरणे पज्जाणा देवाण पुच्छा,

इयवागरोपमास्यत्तमुत्तानि उरुवयत्त दत्तां वदति सागरोपमास्यत्तमुत्तानि । अणपज्जाणा देवाण पुच्छा, गोयमा ! जहखेण वि

सागरोवमाइ उक्कोसेण एगूणथीस सागरोवमाइ । आणए अणपज्जाणा देवाण पुच्छा, गोयमा ! जहखेण अठारस सागरोव
 माइ अतोमुज्जत्तूणाइ उक्कोसेण एगूणवीस सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ । पाणए कप्पे देवाण पुच्छा,
 ? गोयमा ! जहन्तेण एगूणवीस सागरोवमाइ उक्कोसेण वीससागरोवमाइ । पाणए अणपज्जाणा देवाण
 पुच्छा ? गोयमा ! जहखेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । पाणए पज्जाणा देवाण पुच्छा ? गोयमा ! ज
 हखेण एगूणवीस सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ उक्कोसेण वीससागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ । आरणे
 देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण वीससागरोवमाइ उक्कोसेण एकवीस सागरोवमाइ । आरणे अणपज्जा
 णाण देवाण पुच्छा, गोयमा ! जहखेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । आरणे पज्जाणा देवाण पुच्छा,

ज्जदेवाण पज्झाणा पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेण चउवीस सागरोयमाइ अतोमुक्कसूणाइ उक्कोसेण पणयीस सागरोयमाइ अतोमुक्कसूणाइ । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहयेण पचवीस सागरोयमाइ उक्कोसेण ढवीस सागरोयमाइ । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण अपज्झाण पुच्छा ? गोयमा ! जहयेण येणयि उक्कोसेणयि अतोमुक्कस । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण पज्झाण पुच्छा, गोयमा ! जहयेण पणयीस सागरोयमाइ अतोमुक्कसूणाइ उक्कोसेण ढवीस सागरोयमाइ अतोमुक्कसूणाइ । मज्झिमर गोयि

[illegible][illegible]

सेण तेयीस सागरोयमाइ स्थुतीमुज्जुणाइ । हिठिममज्जिम गोविज्जदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण
 तेयीस सागरोयमाइ उक्खीसेण चोवीस सागरोयमाइ । हिठिममज्जिम अपज्जस्यदेवाण पुच्छा , गो० !
 जहणेणपि उक्खीसेणपि स्थुतीमुज्जुस । हिठिममज्जिम पज्जस्यदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण तेयीस
 सागरोयमाइ स्थुतीमुज्जुणाइ उक्खीसेण चोवीस सागरोयमाइ स्थुतीमुज्जुणाइ । हिठिमउवरिमगोविज्जद
 याण पुच्छा , गोयमा ! जहन्तेण चउवीस सागरोयमाइ उक्खीसेण पणवीससागरोयमाइ । हेठिमउवरिम
 गोविज्जदेवाण अपज्जसाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणपि उक्खीसेणपि स्थुतीमुज्जुस । हेठिमउवरिमगोवि

तुर्विज्जसागरोपमास्युत्त्वर्तः पण्यविज्जितसागरोपमापि । अथसो परिताम गेयकदेवामामपयीसाभा पुच्छा गीतम । अपन्येनोरकपत

इडिमइडिम पेयवके देवताभा प्रत्यु च हे गो अथन्य को पिय तेवीस सागरोपम कल्लव को पिय चोवीससागरापम । हेडिमहेडिम अपज्जस्यदेवाकति ।
 इडिमहेडिम पेयवकने विवे पपयीत देवताभा प्रत्यु च हे गीतम अथन्य को पिय कल्लव को पिय चत्तमुज्जुस । इडिमइडिमगोविज्जदेवाच पुच्छेति ।
 हेडिममध्यम पेयवके देवताभा प्रत्यु च हे गीतम अथन्य को पिय तेवीस सागरापम कल्लव को पिय चोवीस सागरापम । हेडिममज्जिम अपज्जस्यदेवाच
 ति । इडे मध्यम पपयीत देवताभा प्रत्यु च हे गीतम । अथन्य को पिय कल्लव को पिय चत्तमुज्जुस । हेडिममज्जिम पज्जस्यदेवापति । हेठिम मध्यम
 पयीत देवताभा प्र च च गीतम अथन्य को तेवीस सागरोपम चत्तमुज्जुस अथ कल्लव को चोवीस सागरोपम चत्तमुज्जुस अथ । इडिम चवदिसगवि
 ज्जदेवाकति । हेठिम अपरिमपेयवक देवताभा प्र च हे गीतम अथन्य को पयवीस सागरोपम कल्लव को पयविज्जति सागरापम । हेठिम चवदिसग
 विज्जदेवाच अपज्जसाकति । हेठिम चवदिसपेयवक देवता अपयीसा भा प्र च हे गीतम अथन्य को पिय कल्लव को पिय चत्तमुज्जुस । हेडिमचवदिर
 मगोविज्जदेवाच पज्जसाच पुच्छति । इडिमअपरिम पेयवकदेवा कवीस देवताभा प्र कल्लव को गीतम अथन्य को चोवीस सागरापम चत्तमुज्जुस अथ

ज्जट्टेयाण पज्जहाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेण चउवीस सागरोयमाइ अतोमुक्कसूणाइ उक्कोसेण पणयीस सागरोयमाइ अतोमुक्कसूणाइ । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहसेण पचयीस सागरोयमाइ उक्कोसेण तवीस सागरोयमाइ । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण अपज्जहाण पुच्छा ? गोयमा ! जह गेणवि उक्कोसेणवि अतोमुक्कस । मज्झिमहिठिमगेविज्जदेवाण पज्जहाण पुच्छा, गोयमा ! जहसेण पणयीस सागरोयमाइ अतोमुक्कसूणाइ उक्कोसेण तवीस सागरोयमाइ अतोमुक्कसूणाइ । मज्झिम२ गेवि

बालमुहूर्तम् । अपस्तम्भो परितन्मयेव्यदेवानां पर्यासाभा पुष्पा, नी० । अपन्येन वतुविद्यतिसागरोपमास्यस्तमुहूर्तानि उत्कर्षेण पुष्प
विद्यति सागरोपमास्यस्तमुहूर्तानि । मध्यमाचक्षन्मयेव्यदेवाना पुष्पा गीतम् । अपन्येन पुष्पविद्यतिसागरोपमास्यस्तमुहूर्तानि । अपन्येन पुष्प
सागरोपमादि । मध्यमाचक्षन् मयेव्यदेवानाचक्षयोमाना पुष्पा गीतम् । अपन्येन पुष्पविद्यतिसागरोपमास्यस्तमुहूर्तानि । अपन्येन पुष्प
देवाना पुष्पा गीतम् । अपन्येन पुष्पविद्यतिसागरोपमास्यस्तमुहूर्तानि उत्कर्षेण पुष्पविद्यतिसागरोपमास्यस्तमुहूर्तानि । मध्यममध्य
मयेव्यदेवानां पुष्पा, नीतम् । अपन्येन वतुविद्यतिसागरोपमादि उत्कर्षेण वतुविद्यतिसागरोपमादि । मध्यममध्यमयेव्यदे वपयोसानां दे

उदबब को पवीय सागरापम पत्तमुदुत्तं जन । मन्निमकडिममबिज्जदेवावति । मध्यम केडिममैवेदय देवताना प्र कत्तर के गीतम जवम्व वी प
वीस सागरापम उदबब को लोय सागराप । मन्निम केडिममबिज्जग जपव्वनदेवावति । मध्यम केडिम सोवेदबना अपयीस देवतानो प्र कत्तर के
भीतम जवव्व को पिब उदबब को पिब पत्तमुदुत्त । मन्निमकेडिममबिज्जदेवाव पव्वनावति । मध्यम केडिम सोवेदबना पर्यास देवतानो प्र कत्तर
के भीतम जवव्व को पवीय सागरापम पत्तमुदुत्त जन उदबब को ज्वीम सागरापम पत्तमुदुत्तं जन । मन्निम २ मेविज्जदेवावति । मध्यम २
पेवेदब देवताना प्र० कत्तर के मीतम जवव्व को ज्वीस सागरापम उदबब वी सत्तावीस सागरोपम । मन्निम २ मेविज्जपपव्वनदेवावति । मध्यम २

सेण तेयीस सागरोयमाइ स्थितोमुज्जसूणाइ । हिठिममज्जिम गेविज्जदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहयोण तेयीस सागरोयमाइ उक्कोसेण षोवीस सागरोयमाइ । हिठिममज्जिम अपज्जासयदेवाण पुच्छा, गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि स्थितोमुज्जस । हिठिममज्जिम पज्जासदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहयोण तेवीस सागरोयमाइ स्थितोमुज्जसूणाइ उक्कोसेण षोवीस सागरोयमाइ स्थितोमुज्जसूणाइ । हिठिमउवरिमगेविज्जाद याण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण षउवीस सागरोयमाइ उक्कोसेण पणवीससागरोयमाइ । हेठिमउवरिम गेविज्जदेवाण अपज्जत्ताण पुच्छा ? गायमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि स्थितोमुज्जस । हेठिमउवरिमगेवि

तुर्वैर्मतिखागरोपमा स्फुट्यंतः पञ्चविध्वित्तिखागरोपमाणि । अथसन्नो परित्तम चैवेयकवेद्यामपयसांनार पुष्पा नीतम ! अथग्येनोत्कपत

[illegible]

लज्जदेवाण पञ्जस्राण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेण चउवीस सागरोयमाइ अतोमुज्झूणाइ उक्कोसेण पणयीस
 सागरोयमाइ अतोमुज्झूणाइ । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहस्सेण पचयीस सागरो
 यमाइ उक्कोसेण ठहीस सागरोयमाइ । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण अण्णस्राण पुच्छा ? गोयमा ! जह
 सेणयि उक्कोसेणयि अतोमुज्झू । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण पञ्जस्राण पुच्छा, गोयमा ! जहस्सेण
 पणयीस सागरोयमाइ अतोमुज्झूणाइ उक्कोसेण ठहीस सागरोयमाइ अतोमुज्झूणाइ । मज्झिमर गोयि

बालमुहूर्तम् । अथस्तनो परितनयेवैयकदेवानां पर्याप्ताना पुच्छा नो० । अथग्येन बहुविद्यवित्सागरोपमास्यस्तमुहूर्तानाति उत्सर्वैव पञ्च
 विद्यति सागरोपमास्यस्तमुहूर्तानाति । मध्यमाचस्तनयेवैयकदेवाना पुच्छा गीतम् । अथग्येन पञ्चविद्यवित्सागरोपमास्यस्तमुहूर्तानाति पञ्चिद्यति
 सागरोपमाति । मध्यमाऽपस्तन येवैयकदेवानामपर्याप्तानां पुच्छा गीतम् । अथग्येनाप्युत्सर्वैयकदेवानास्तमुहूर्तम् । मध्यमाचस्तनयेवैयकपर्याप्त
 देवाना पुच्छा गीतम् । अथग्येन पञ्चविद्यवित्सागरोपमास्यस्तमुहूर्तानाति उत्सर्वैव पञ्चिद्यति सागरोपमाति । मध्यममध्यम
 येवैयकदेवाना पुच्छा, गीतम् । अथग्येन पञ्चविद्यवित्सागरोपमाति उत्सर्वैव सप्तविद्यवित्सागरोपमाति । मध्यममध्यमयेवैयके अपर्याप्ताना दे

उत्तर ७० पचोय सागरापम पञ्चमुहूर्तं जन । मज्झिमहठिमगविज्जदेवाति । मज्झम हेठिमगैवेयक देवताना प्र उत्तर ७१ गीतम् अथस्व खी प
 चोस सागरापम उत्तर ७२ खीस सागराप । मज्झिम हठिमगैवेयक अपञ्चस्तदेवाति । मज्झम हेठिम येवैयकना अपर्याप्त देवताना प्र उत्तर ७३
 गीतम् अथस्व खी पच उत्तर ७४ खी पच उत्तर ७५ मज्झिमहेठिमगविज्जदेवा पञ्चस्तदेवाति । मज्झम हेठिम येवैयकना पर्याप्त देवताना प्र उत्तर
 ७६ गीतम् अथस्व खी पचोय सागरापम पञ्चमुहूर्तं जन उत्तर ७७ खीस सागरापम पञ्चमुहूर्तं जन । मज्झिम २ गेविज्जदेवाति । मज्झम २
 येवैयक देवताना प्र० उत्तर ७८ गीतम् अथस्व खी पचोय सागरापम उत्तर ७९ खीस सागरापम उत्तर ८० खीस सागरापम । मज्झिम २ गेविज्जपञ्चस्तदेवाति । मज्झम २

मेण तेयीस सागरोयमाइ स्थतोमुक्तुणाइ । हिठिममज्जिम गेयिऊदेयाण पुच्छा ? गोयमा । जइखेण तेयीस सागरोयमाइ उक्कोसेण बोवीस सागरोयमाइ । हिठिममज्जिम अपजासयदेवाण पुच्छा, गो० ! जइखेणयि उक्कोसेणयि स्थतोमुक्तु । हिठिममज्जिम पज्जसदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जइखेण तेयीस सागरोयमाइ स्थतोमुक्तुणाइ उक्कोसेण बोवीस सागरोयमाइ स्थतोमुक्तुणाइ । हिठिमउवरिमगेविऊदयाण पुच्छा, गोयमा ! जइन्तेण चउयीस सागरोयमाइ उक्कोसेण पणवीससागरोयमाइ । हेठिमउवरिमगेविऊदेवाण अपज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा । जइन्तेणयि उक्कोसेणयि स्थतोमुक्तु । हेठिमउवरिमगेवि

तुर्घटयति सागरोपमास्युत्सर्गवतः पञ्चविंशति सागरोपमाणि । अथ सप्तमो धरितल ग्रंथे यक्षशैलानामप्यप्राप्तानां पृष्ठा नीतम् । अथ गेयोहोहकपत

[illegible]

ण सहायीस सागरोवमाइ व्यतोमुक्तूणाइ उक्कोसेण अथावीसं सागरोवमाइ व्यतोमुक्तूणाइ । उवारि
 महेठिमगेयिज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहणेण अथावीस सागरोवमाइ उक्कोसेण एगूणतीससागरोव
 माइ । उवारिमहेठिमगेयिज्जदेवाण अपज्झाण पुच्छा, गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि व्यतोमुक्तू ।
 उवारिमहेठिमगेविज्जदेवाण पज्झाण पुच्छा, गोयमा ! जहणेण अथावीस सागरोवमाइ व्यतोमुक्तूणाइ
 उक्कोसेण एगूणतीस सागरोवमाइ व्यतोमुक्तूणाइ । उवारिममज्जिमगेविज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जह
 णेण एगूणतीस सागरोवमाइ उक्कोसेण तीससागरोवमाइ । उवारिममज्जिमगेविज्जदेवाण अपज्झाण

पक्षमयैवेयदेवाना पृष्ठा गीतम् । अप्यना अष्टाविंशतिसारोपमादि तत्त्वैव एकोनचिह्नसंख्यारोपमादि । उपरितनायकनयैवेयदे
वानाम पर्याप्तानां पृष्ठा, गीतम् । अप्यनाप्युक्तपदानामुद्भूतम् । उपरितनायकनयैवयदेवाना पर्याप्ताना पृष्ठा, गीतम् । अथ
त्येना अष्टाविंशति सारोपमास्यमुद्भूतीनामि तत्त्वैव एकोनचिह्नसंख्यारोपमास्यमुद्भूतीनामि । उपरितनमप्यम यैवेयदेवाना पृष्ठा,
अथैव अत्र तत्त्वैव रोपमास्यमुद्भूतीनामि ।

[illegible]

ज्ञदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहखेण ढहीस सागरोवमाइ उक्कीसेण सत्तावीस सागरोवमाइ । मज्झिम २
 गेयिज्जादेवाण अणपज्जासाण पुच्छा ? गोयमा ! जहखेणवि उक्कीसेणवि अतोमुज्झ । मज्झिम २
 याण पज्जासाण पुच्छा ? गोयमा ! जहखेण ढहीस सागरोवमाइ अतोमुज्झसाण उक्कीसेण सत्तावीस सा
 गरोवमाइ अतामुज्झसाण । मज्झिमउवरिमगेयिज्जादेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहखेण सत्तावीस सागरो
 वमाइ उक्कीसेण अठावीस सागरोवमाइ । मज्झिमउवरिमगेयिज्जादेवाण अणपज्जासाण पुच्छा, गोयमा !
 जहखेणवि उक्कीसेणवि अतोमुज्झ । मज्झिमउवरिमगेयिज्जा देवाण पज्जासाण पुच्छा, गोयमा ! जहखे

वातां पुच्छा, गीतम । अपयेनाप्युत्कथयतामुद्भूतम् । पर्याप्तानां तत्रैव पुच्छा गीतम । अपच्यन पट्ठिगतिसागरोपमास्यन्तमुद्भूतानि
 उरुवयत स्ससविंशतिसागरोपमास्यन्तमुद्भूतानि । मध्यमोपरितन्तपुंयकदेवानां पुच्छा गीतम । अपच्यन सप्तविंशतिसागरोपमासि उरुव
 यथा ऽष्टविंशतिसागरोपमासि । तत्रैवापर्याप्तानां पुच्छा गीतम । अपच्येनाप्युत्कथयतोप्यन्तमुद्भूतम् । मध्यमोपरित सप्तविंशतिदेवानां पर्याप्ता
 नां पुच्छा, गीतम । अपच्येन सप्तविंशतिसागरोपमासि सप्तमुद्भूतानि उत्सर्वथा ऽष्टविंशतिसागरोपमास्यन्तमुद्भूतानि । उपरितता

पैवेयकता उपर्याप्ति देवतानां प्र उत्तर हे गीतम अपच्य यो पिब उरुवय यो पिब उरुवय । मज्झिम २ गदिय्यदेवाव वच्यतान्वति । मध्यम २
 पैवेयकता पर्याप्त देवतानां प्र उत्तर हे गीतम अपच्य यो खाबोस सागरापम यत्तमुद्भूत सप्त उरुवय यो खाबोस सागरापम पैवेयकता उत्तम ।
 मज्झिमउवरिमगविज्जादेवावति । मध्यमउपरिम पैवेयकता देवतानां प्र उत्तर हे गीतम अपच्य यो खाबोस सागरापम उरुवय यो खाबोस साग
 रापम । मज्झिमउवरिमगेयिज्जा अणपज्जादेवावति । मध्यम अपरिमपेयकता अपकर्णित देवतानां स प्र हे गीतम अपच्य यो पिब उरुवय यो पिब
 यन्तमुद्भूत । मज्झिमउवरिमगविज्जा पज्जासद्वशावति । मध्यमउपरिम गरीयवकता वर्यात देवतानां प्र उ हे गीतम अपच्य यो खाबोस सागरोवम

उक्तीसेण एकूतीसं सागरोवमाइ स्थितोमुज्जुणाइ । विजयेजयंतजयंतअपरजिएसुणं जंते देवाण केवइ
य फालं ठिइ पयाप्ता २ गोयमा ! अहयेण एकूतीस सागरोवमाइ उक्तीसेण तेहीस सागरोयमाइ । वि
जयेजयंतजयंतअपरजिएसुणं पुष्ठा, गोयमा ! अहन्तणवि उक्तीसेणवि स्थितोमुज्जुस ।
त्रिजयेजयंतजयंतअपरजिएसुणं पुष्ठा, गोयमा ! अहयेण एकूतीस सागरोयमाइ स्थितोमु
ज्जुणाइ उक्तीसेण तेहीस सागरोयमाइ स्थितोमुज्जुणाइ । सख्ठसिद्धगदेवाण जंते ! केवइय कालं ठिइ
पयाप्ता २ गोयमा ! अहन्तमणुक्तीसेण तेहीस सागराधमाइ ठिइ पयाप्ता । सख्ठसिद्धगदेवाण अपज्जाप्ताण

तेषु प्रदत्त । देवानां विपत्तं कालं स्थितिः प्रसप्ता २ गीतम् । अपन्वेनैकत्रिंशद्वासागरोपमाभ्युदयतस्त्र्यष्टिश्चसागरोपमावि । विजयवैजय
न्नाजयन्नापराजितदेवानामपवासानां पुष्ठा गीतम् । अपयेनाभ्युदयत्तुं पुत्तम् । विजयवैजयन्नाजयन्नापराजितेषु पर्याप्तदेवानां पु
ष्ठा, गीतम् । अपयेनैकत्रिंशद्वासागरोपमाभ्युदयतस्त्र्यष्टिश्चसागरोपमाभ्युदयत्तुं पुत्तम् । सर्वायसिद्धदेवानां प्रद
त्तम् । विपत्तं कालं स्थितिः प्रसप्ता २ गीतम् । अपन्वेनाभ्युदयत्तुं पुत्तम् । सर्वायसिद्धदेवानां प्रदत्तम् । सर्वायसिद्धदेवानां प्रदत्तम् ।

अवगतं पपराजितं विमानं ना ददतामा २० ७ ८ गीतम् अवगतं को एकोस सागरापमं उदयय को तेनोस सागरापमं । विजयवैजयन्तजयन्त पप
राजितदेवानां पपज्जाप्ता । विजय वैजयन्त अवगतं पपराजितनां पपराजितं देवतानां प्र ७ ८ गीतम् अवगतं को एकोस सागरापमं । विजय वैजयन्त
विजयवैजयन्तजयन्तपपराजितउदयाव पज्जाप्ता । विजय वैजयन्त अवगतं पपराजितं विमाननां पपराजितं देवतानां प्र ७ ८ गीतम् अवगतं को
उदयोस सागरापमं पपतमुदयं एव उदयय को तेनोस सागरापमं पपतमुदयत्तुं पुत्तम् । सख्ठसिद्धगदेवानां जंते कोरायति । सर्वायसिद्ध विमाननां देवतानां
७ भगवन् जित्वा काशनां स्थितिः कही प्र ७ ८ गीतम् अवगतं पपराजितं तेनोस सागरापमं को कही । सख्ठसिद्धदेवाव पपज्जाप्ता । सर्वा

पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुक्काह । उवरिममज्जिमगेयिज्जगदेवाण पज्जाप्ताण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण एगुणतीस सागरोयमाह अतोमुक्कत्तूणाह अतोमुक्काह सागरोयमाह । उवरिम २ गेयिज्जगदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण तीस सागरोयमाह उक्कोसेण एकतीस सागरोयमाह । उवरिम २ गेयिज्जगदेवाण अपज्जाप्ताण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुक्काह । उवरिम २ गेयिज्जगदेवाण पज्जाप्ताण पुच्छा, गोयमा जहन्नेण तीस सागरोयमाह अतोमुक्काह ।

[illegible]

इस । अवरिमन्त्रिणमग्निविज्जमहेराय पञ्चजायति । अवरिममच्छ गरेवेयकना पर्वोत्त देवता ना म च हे शीतम ज्वलन् को पयुषकोस सामरोपम
पैतृमुक्ता छन कटक्य को योस सागरापम सन्तमुक्ता छन । अवरिम २ गविज्जमहेराय देवता ना मञ्च च हे शीतम ज्वलन्
को नास सामरापम चत्वर्य को एककोस सायरापम । अवरिम २ गविज्जमहेराय पयज्जतायति । अवरिम २ गरेवेयकना सपर्वोत्त देवता ना म च हे
भीतम ज्वलन् को पिब कटक्य को पिब चत्वर्यमुक्ता । अवरिम २ पञ्चतदेवायति । अवरिमोप रम गरेवेयकना पर्वोत्त देवता ना म च हे भीतम
वय को योस सागरापम पैतृमुक्ता छन कटक्य को एककोस सामरोपम अतमुक्ता छन । विज्जमहेरायतज्जयापराज्जित्ति कु देवायति । दिव्यवेयकजगत

वाचाभीवाय इत्यादि, द्रव्यसत्त्वं चेदं "गुणपर्यायवद्द्रव्यामिति, ततो जीवाजीवपर्यायेतावयमाद्यमेवं घटवान् सप्ताथ प्रगयानपि निर्वङ्गमेव माह-गा० । दुविद्वा पञ्चशा य ल-जीवपञ्चाश य जीवपञ्चाश य इति ० तत्र पर्याया गुणा विप्रपाचमा इत्यनर्थाभार ननु सध्यन्त्यमतिपादय तन्मूलं इदम्योदयिकादिनावाद्यपर्यायपरिमणाऽत्रपारण्य इति श्रीवैयक्यादयस्य ताया जीवाशया कतो जीवपमाया एय मय्यारो एय वास्तिवियपनमये हयानामपि पर्याया उक्ता कतो न सुदराः सम्यस्य तत्रयुक्तमभिप्रायापारणात् श्रीवैयक्योहि प्रायः पुद्गलवृत्तिरपि लक्षति ततो जीवाजीवप्रदेभोदयिकतावस्य द्वेविप्या ता सम्यस्य, कथ न निवचनमूशयो विरोधः । सम्मति सध्यन्त्यपरिमाणावाशमाय पृच्छति-जीवपञ्चाश ज्ञते । किं सरोक्षा इत्यादि ० इह यस्माद्वनस्पतिविद्वजं सर्वपि नैरपिज्ञादयः प्रत्येकमसङ्केपा मनुष्यस्यसङ्कयत्व समूहिसमनुष्यापेक्षया धनस्पतयः विद्वान् प्रत्येकमनन्ता कतः पर्यायिकामनन्ता न्नयस्यनन्ता जीवपर्यायाः तद्वत् गीतमेव सामान्यतो जीवपर्यायाः पृहा प्रगयानपि

दुविद्वा पण्ठा, तजहा-जीवपञ्चाश य श्रुजीवपञ्चाश य । जीवपञ्चाश ज्ञते ! किं सखेज्जा श्रुसखेज्जा श्रुणता ? गीयमा ! नोसखेज्जा नो श्रुसखेज्जा श्रुणता । से केणठेण ज्ञते ! एध वुच्चह-जीयपञ्चाश नो सखेज्जा नो श्रुसखेज्जा श्रुणता ? गीयमा ! श्रुसखेज्जा गेरइया श्रुसखेज्जा श्रुसुरा श्रुसखेज्जा नागा

येडा याजीवपण्ठा । जीवपण्ठा सदत्त । किं कडुया श्रुसुरा यनन्ता ? गीतम । मोसखेया नोऽसखेया यनन्ताः । एय कतायेन ज्ञदत्त । श्रुमप्यत-गीवपण्ठा नो सखेया नो सखेया यनन्ता ? गीतम । श्रुसखेया नैरपिवा श्रुसखेया श्रुसुरा श्रुसखेया नामा श्रुसखेयाः

द पर्वीद के भगवन् एय यनन्ता ययन्ता यनन्ताके प्रत्यु कतर ० गीतम कोब पगीय सख्याता जयो ययन्ताता पिव जयो यनन्ताके । तेन प्यामा टे के भगवन् इम कडा मोदयर्वादि सख्याता जयो ययन्ताता पिव जयो यनन्ताके प्रत्यु कतर ० गीतम श्रुसख्याता नारकोटे पसख्याता श्रुसखे पस प्याता नामवे पसख्यात मुश्रुपण्ठमारवे पसख्याता विद्वान्प्रमारवे पसख्याता यनिकुमारवे पसख्याता होपण्ठमारवे पसख्याता वदधिकुमा

गात्रं यय मूषादि विमाभेयपि प्राक्कीय । इतिभी मलयगिरिदिविताया प्रज्ञापमाहीक्षायां चतुर्थे स्थितास्य एव समाप्तः ॥ ४

इदं व्याख्यातं चतुष्टयमिदानीं पञ्चममारभ्यते तस्य भाष्यमात्रसंख्यन्तः इदानीमारभ्यत्वात् आरकादिपर्यायरूपं सत्यानामवस्थितिसंज्ञा इष्टत्वात् । विष्णोः पशुमिच्छायावत्तावायपर्यायावधारणं प्रतिपाद्यते तत्र च दमादिसंज्ञा-कविज्ञातं प्रत्येकं । पञ्चमा पदमा इति । अथ क्रमानुसारेण भीतमप्यादिना प्रगणानय एव । उच्यते-उक्तमादौ प्रथमपदे प्रज्ञापना द्विविधाः प्रज्ञप्ता साद्याया-जीवप्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापमाविति तत्र जी-

पुच्छा, गोयमा ! जहृषेणयि उक्तासेणवि अतोमुज्जस । सस्रुठसिद्धदेयाण पञ्जज्ञाण केवइय काल ठिइ पयससा ? गोयमा । अजहन्ममणुक्तांसंण तंभीस सागरीयमाइ अतोमुज्जतूणाइ ठिइ पयससा । पयससा जाए नगवतीए चउत्य ठिइपद समस ॥ ४ ॥ कइविहाण जते ! पजावा पयससा ? गोयमा !

ना पृथ्वा भीतम । अपग्यनाप्यरूपलोप्यकमुज्जसम् । सर्वापेविदुक्तेवाना जहत् । पर्याप्तकाला पृथ्वा, भीतम । अजपन्यानुत्कर्षेण च यावत्तत्सगरीयमास्यत्वेमुहूर्तीनाति स्थितिः प्रज्ञप्ता । इति श्रीप्रज्ञापनायुक्तरक्तानुवादे रामचन्द्रगण्डिविनयन मानकचक्रेण विरचितं चतुर्थे स्थितिपदं सम्पूर्णम् ॥ ४ ॥ कतिविधा जहत् । पयसा, प्रज्ञप्ता, ? भीतम । द्विविधाः प्रज्ञप्तासाद्याया-जीवप-

प्रमिद विमानना उपर्वाति ददताना हे भगवन् क्षेत्रज्ञा काकभो स्थिति कश्चो म उ हे भीतम अथय्य को पितृ वरकपं को पितृ यन्मर्मुहून भो कश्चो मर्मुहूनिदगदेशात् यत्फलमिति । सर्वाविविध विमानना पर्याप्त देवतानो जतसा काकभो स्थिति कश्चो म उतर हे भीतम यत्तदय्य को यन्मर्मुहूय को तंभीस सागरीयम यन्मर्मुहून रक्तम भो कश्चो । एतस्य प्रज्ञापना भो योया स्थिति यन् पूजयता । ४ । यतश्च पदमे विधि नारकादि पर्याप्तं गो जीव भो स्थिति कश्चो इह पयस यस्मिन् विधि तो योद्विज सायापयमिज यावत्त भाव जायो पर्याप्त मा यत्तवारव यत्तैवे-अति विहाव भेति । यतस्य भदे हे भगवन् पर्याय कक्षा मय उतर हेभीतम यत्तवारव भगवार्णा कक्षा ते कथिते-भीव पर्याप्त यने यत्तैव पर्याप्त । भीवपयसवाच भतति । को-

एव पर्यायायामागत्य कथं पठते इति पृष्ठे तदेव पर्यायायामागत्य यथायुस्तुपपन्नं प्रवर्तते तथा निश्चयमीयं ज्ञास्यत्, ततः केनाभिप्रायेण जग-
 पाभेवं नियन्तमवाचि नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्याद्यतया तुल्य इति । उच्यते एकमपि द्रव्यभनन्तपर्यायमित्यस्य न्यायस्य प्रदक्षनाय तत्र यस्मादि-
 दमपि नारकजीवद्रव्यमेकसङ्ख्योऽव्यक्तमिदमिति नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यो द्रव्यभेवार्थो द्रव्यार्थे सङ्गातो द्रव्याद्यतया तथा तुल्य एव तावद्द्रव्या-
 यतया तुल्यत्वमनिश्चितं मिदानीं प्रदेष्टार्यतामपिकस्य तुल्यत्वमाह परसदृशाय तुल्ये ॥ इदमपि नारकजीवद्रव्यं सौकाकाप्रवृत्तपरिमाणप्रदेशमिति
 प्रदद्यायतयापि नैरयिको नैरयिकस्य तुल्यः प्रदक्षयथायः प्रदेष्टार्यताः तथा प्रदेष्टार्यतया कस्मादनिश्चितमिति चत् ? उच्यते-इ-
 व्यैविध्यप्रदर्शनार्थं तथाहि-द्विविधं द्रव्यं प्रदेष्टवत् समदृशवत्, तत्र परमाणुरप्रदेष्टो द्विप्रदक्षारिक तु प्रदेष्टवत् एतच्च द्रव्यद्वैविध्यं पुद्गलास्ति

एण्णठेण गोयमा । एव बुद्धि-तेण णोसखेज्जा नो अस्सखिज्जा अणता । णेरइयाण जते ! केवइया प
 जावा पण्णा ? गोयमा ! अणता पजावा पण्णा । से केणठेण जते ! एव बुद्धि-णेरइयाण अणता प
 जावा पण्णा ? गोयमा ! णेरइए णेरइयरच्च दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले उग्गाहणठयाए सियहीणे

यथा यद्वैचर्या तातव्यत्तरा कस्येयेया ज्योतिष्का कस्येयेया वैमानिका कनन्ताः चिदा कस्येयेया गौतम । एवमुच्यते-ते (जीवपर्यंकाः) नै-
 य सख्यया निवासक्येया कनन्ताः । नैरयिकाका जवत्ता । कियत्ताः पयवाः प्रण्णाः ? गौतम । यनन्ताः पयवाः प्रण्णा । अथ कस्येयेया जव-
 त्त । एवमुच्यते-नैरयिकाकाननन्ताः पयवाः प्रण्णाः ? गौतम । नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेष्टार्यतया तुल्योऽवगाह्यार्थतया

गौतम सपञ्चाता नको पञ्चपञ्चाता पिच नको यनन्ताहो । नारको माहि इ भगवन् कतका पर्याय कज्जा प्र कतर इ गौतम यनन्ता पर्याय कज्जा । ते
 कवे पर्ये दे भववन् इम कज्जे क नारको ना पर्याय यनन्ताहो प्र कतर दे गौतम नारको नारकोमे द्रव्याय पचे करो तुल्ये पचे करो प्रदद्याय पचे करो
 दिव नारको नारकोने समवे नारक जीव द्रव्य काकायामप्रदेय परिमाण प्रदेष्टोते तेनो यवगाहनायतये करो कदाचित् नोन आलो यवगाहना

अ सामायेन निषेधनमुक्तवान् इदानीं विधेयव्ययप्रसन्नौ तस्य आह-भेदव्याख्यं करोते । केवद्वया पञ्चमाहति ॥ अथ कनाभिप्रायेणैव गीतमः पृष्ठवान् ? उच्यते-पूर्वं हि तस्य सामान्यप्रसन्नो पर्यायिकामनस्तत्वात् यत्र पुन पर्यायिकामनस्तस्य नास्ति घत्र कथमिति पृच्छति भेदव्याख्यमित्यादि ॥ तथापि निषेधनोपशमनाहति यत्रैव जातसंशयः प्रसन्न इति शेषेऽप्युच्यते । अथ कनार्थेन कान् कारकान् ज्ञान इतुना नदत्त । एवमुच्यते-भेदव्याख्यं पणाय एव सन्नका इति प्रगवाभाह-गीतमा । भेदव्य भेदव्यस्तस्य दक्षव्याय तुल्ये इत्यादि ॥

असखेजा सुत्रया असखेजा विज्जुकुमारा असखेजा अगिकुमारा दीवकुमारा असखेजा
उदहिकुमारा असखेजा विसाकुमारा असखेजा वायुकुमारा असखेजा याणिकुमारा असखेजा पुठवि
काइया असखेजा अउकाइया असखेजा तेउकाइया असखेजा वाउकाइया अणता वणस्सइकाइया
असखेजा येइविया असखेजा तेइविया असखेजा वउरिविया असखेजा पच्चिदियतिरिक्कजीणिया
असखेजा मणुस्सा असखेजा धाणमतरा असखेजा जोइसिया असखेजा वेमाणिया अणता सिद्धा से

तुषर्का असस्येया विष्टुत्तुनारा असस्येया अम्बिजुनारा असस्येया इपिजुनारा असस्येया उदञ्चिजुनारा असस्येया दिङ्गुनारा असस्येया वा
यकुनारा असस्येयाः समित्तुनारा असस्येयाः पृथिवीकायिका असस्येया सप्तकायिका असस्येया सप्तकायिका असस्येया वायकायिका अ
नन्ता वनस्पतिकायिका असस्येया ह्रीन्त्रिया असस्येया यतुरिन्त्रिया असस्येया पञ्चान्त्रियतियायोमिका असस्येया मन्त्र

[illegible]

[illegible]

एएणठेण गोयमा ! एव बुच्चइ--तेण णीसस्वेज्जा नो अस्सस्विज्जा अणता । णेरइयाण भत्ते ! केवइया प
ज्जावा पयाहा ? गोयमा ! अणता पज्जाया पयाहा । से केणठेण भत्ते ! एव बुच्चइ--णेरइयाण अणता प
ज्जावा पयाहा ? गोयमा ! णेरइए णेरइयरस वव्वठयाए तुल्ले उग्गाहणठयाए सिंघहीणे

या असुरयेया यातव्यन्तरा असुरयेया ल्योतिष्ठा असुरयेया वैभानिका अनन्ताः सिद्धा सातनार्थेन गीतम् । एवमुच्यते-ते (सीधपयवाः) ने
व सूरयेया निवासुरयेया अनन्ताः । नैरयिकाया अनन्ताः । कियन्ताः पयवाः प्रच्छसाः ? गीतम् । अनन्ताः पयवाः प्रच्छसाः । अय कौर्ण्येन सद्
व । एवमुच्यते नैरयिकायानन्ताः पयवाः प्रच्छसाः ? गीतम् । नैरयिकी नैरयिकस्य ब्रह्मार्थतया सुखः प्रदेशार्थतया सुखोऽवगादनार्थतया

र्गद्वय स्वयंवाता नखो यस्यवाता पिब नखो नारको माद्वि ह भगवन् कतला पर्याय कक्षा प उत्तर ह भोतम यनन्ता पर्याय कक्षा । ते
 नखे धर्मे हे भगवन् इम कक्षो ल नारको ना पर्याय यनन्ताये प उत्तर हे भोतम नारको नारकोने प्रस्थाप पवे करो तुल्यहे धर्म प्रस्थाप पवे करो
 विव नारको नारकोने समवे नारक कोन पूरा काकावागमप्रदम् परिमाप प्रवेगोह तेको प्रस्थापनायतये करो कदाचित् भीम पाको प्रवगाइना

य सामाग्येन निर्ध्वजमुत्तमान् । इदानीं विशेषविषयप्रश्न गौतम आह-नेरहयार्थं व्रते । केवहया यज्यया पयसा इति ॥ अथ कनानिप्रयायेत्येव गौ-
तमः पृष्ठयान् ? उच्यते-पूर्वं किल साम व्यग्रसे पयायिषामनन्तत्वात् पयायिषामानन्त्यं नास्ति तत्र कथमिति पृ-
च्छति-नेरहयाद्यमित्यादि ॥ तत्रापि निवर्तनमिदमन्ता इति अत्रैव जातसंशयः प्रश्न इति चेत्केवहेव व्रते । इत्यादि ॥ अथ कनार्थेन कन कार-
कन कन इतना प्रदत्त । एवमुच्यते-नेरविश्राया पयाया एव मन्ता इति जगन्नामाह-गोपमा । नेरहय नेरहपस्व ववहयाए तुल्ये इत्यादि ॥

असखेज्जा सुत्रया असखेज्जा त्रिज्जुकुमारा असखेज्जा अग्गिकुमारा असखेज्जा दीवकुमारा असखिज्जा
उदहिक्कुमारा असखेज्जा दिसाकुमारा असखेज्जा वायुक्कुमारा असखेज्जा यणियक्कुमारा असखिज्जा पुठवि
काइया असखिज्जा आउकाइया असखेज्जा तेउकाइया असखेज्जा वाउकाइया अणता वणस्सइकाइया
असखेज्जा वेइदिया असखेज्जा तेइदिया असखेज्जा चउरिदिया असखेज्जा पचिदियतिरिक्कजोणिया
असखेज्जा मणुस्सा असखेज्जा वाणमतरा असखेज्जा जोइसिया असखेज्जा वेमाणिया अणता सिद्धा से

तुपवी असखया विट्ठुक्कुमारा असखेया अग्गिकुमारा असखया उदचिक्कुमारा असखेया दिक्कुमारा असखया वा
यक्कुमारा असखयाः सन्निक्कुमारा असखयाः पयिक्कीकायिका असखया अक्कायिका असखया स्तेरक्कायिका असखया वायकायिका अ-
न्ता वनरपयिकायिका असखया हीन्धिया असखयाक्कीन्धिया असखया दतुरिन्धिया असखेया पयिन्धियतियग्योमिक्का असखेया मनु-

रथे पयप्पात दियाक्कुमार असखता वायुक्कुमार पयप्पाता सन्निक्कुमार पयप्पाता पयिक्कीकायिका असखयात अरक्कायिका असखयाता मक्का
विक्क पयपयाता वायुकायिका वनपयिकायिका असखयाता वेरिक्को असखयात तरिक्को असखयाता चोरिक्को असखयाता पचिन्धिय तिरक्क यो
मिक्क पयपयाता मनुक्क पयपयाता वागअन्तर पयपयाता जातियो असखयाता वेमाणिका असखयात विक्क ते तेने कर्णे वे सोतम इम मक्का जीवना प

एष पयापाशमामगत्य क्षय पठते इति पृष्ठे तदेव प्रयायाशमामगत्य यथागुणमुपपन्नं ज्ञाति तथा निर्वचनीयं नाम्नात्, ततः केमान्निप्रयोष जग
 वानेयं निवेद्यमवाचि नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्यायतया तुल्य इति ? उच्यते एकमपि द्रव्यमनन्तपर्यायमित्यस्य व्याप्यस्य प्रदशनाय तत्र यस्मादि
 दमपि नारकजोषद्रव्यमेकसङ्ख्योऽवस्तुमिदमिति नैरयिकस्य द्रव्यायतया तुल्यो द्रव्यमेवाथो द्रव्यायतया तया तुल्य एव तावद्द्रव्या
 यतया तुल्यत्वमप्रिहितमिदानीं प्रवेशार्थतामपिकृत्य तुल्यत्वमाह यत्समुपाय तुल्ये । इदमपि नारकजोषद्रव्यं लोकाकाशाप्रवृत्तपरिमाणप्रवेशमिति
 प्रदशनायतयापि नैरयिको नैरयिकस्य तुल्यः प्रदशनायतया, प्रवेशार्थता तया प्रवेशायतया यस्मादनिहितमिति चेत् ? उच्यते-द्र
 व्यैवियमप्रदशनाय तयाहि-द्विविधं द्रव्यं प्रवेशवत् समदशवत्, तत्र परमादुरप्रदेशो हिमरश्मिरिति तु प्रवेशवत् यत्तत्र द्रव्यैविविध्यं पुनस्तस्मिन्

एणठेण गोयमा ! एव बुद्ध-तेण गोसखेज्जा नो असखिज्जा अणत्ता । णेरइयाण ज्ञेते ! केवइया प
 ज्जावा पणत्ता ? गोयमा ! अणत्ता पज्जावा पणत्ता । से केणठेण ज्ञेते ! एव बुद्ध-णेरइयाण अणत्ता प
 ज्जावा पणत्ता ? गोयमा ! णेरइए णेरइयस्स वव्वठयाए तुल्ले उग्गाहणठयाए सिंयहीणे

या असवयया वानव्यन्तरा असक्येया छ्योतिष्सा असक्येया तैमानिका अनन्ताः सिद्धा सातनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते-ते (जीवपयवा) ने
 व सवयया तैवासंख्येया अनन्ताः । नैरयिकाणां ज्ञेयता । नित्यताः पयवाः प्रकृताः ? गौतम ! अनन्ताः पयवाः प्रकृताः । अथ कानार्थेन ज्ञे
 यता । एवमुच्यते नैरयिकाशामनन्ताः पयवाः प्रकृताः ? गौतम ! नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्यायतया तुल्यं प्रवेशार्थतया तुल्योऽवगाहनायतया

र्गं ससंज्ञाता नको असंज्ञाता पिब नको अनन्ताः । नारको माहि च भगवन् ज्ञातवा पर्याय ज्ञाता य उतर च गौतम अनन्ता पयाय पञ्चा । । ते
 कथे पयं के भगवन् इमं कथो च नारको मा पर्याय अनन्ताः य उतर से गौतम नारको नारको नैरयिकस्य द्रव्याय पयं करो तुल्यं यने पदयाय पयं करो
 पिब नारको नारकोने समं नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्यायतया पयं पदयाय पयं करो अनन्ताः पयवाः प्रकृताः ? गौतम ! अनन्ताः पयवाः प्रकृताः । अथ कानार्थेन ज्ञे

य सामाग्येन निवचनमुत्तमान् इदानीं विशेषविषयप्रश्न नीतम आह-नरहर्याणं व्रते । केवद्वया पण्णवा पण्णसा इति ॥ अथ केमाप्तिप्रायेकेषं गी
तम् पुरुषान् ? उच्यत पूर्वं क्षित्ताम व्यप्रप्ते पर्यायिणामनन्त्यात् पर्यायाद्यामाभक्त्यसुख यत्र पुनः पर्यायिणामानस्यं नास्ति सत्र कथमिति प
र्युति-नरहर्याणमित्यादि ॥ तत्रापि निवचनसिद्धमन्ता इति अप्रैत्र जातसद्यः प्रश्न इति सेकेष्वेक व्रते । इत्शरि ॥ अथ कनार्चनं कन कार
पुन कन इतुना जदन्त । एवमुच्यते-नैर्यिद्याका पर्याया एव भवन्ता इति जगद्विद्याह-गीयमा । नैरहर्य नैरहर्यस्य वद्विद्याए तुझे इत्यादि ॥

असखेज्जा सुत्रया असखेज्जा त्रिज्जुकुमारा असखेज्जा अग्गिकुमारा दीवकुमारा असखेज्जा
उदहिकुमारा असखेज्जा विसाकुमारा असखेज्जा वायुकुमारा असखेज्जा धणियकुमारा असखेज्जा पुढवि
काइया असखेज्जा आउकाइया असखेज्जा तेउकाइया असखेज्जा वाउकाइया अणता वणस्सइकाइया
असखेज्जा येइदिया असखेज्जा तेइदिया असखेज्जा षउरिविया असखेज्जा पच्चिदियतिरिस्कजोणिया
असखेज्जा मणुस्सा असखेज्जा वाणमतरा असखेज्जा जोइसिया असखेज्जा वेमाणिया अणता सिद्धा से

तुपर्वा असक्यया बिष्टारकुमारा असक्येया अग्निकुमारा असक्यया ह्रीपङ्कमारा असक्येया दिङ्कुमारा असक्यया वा
पुङ्कमारा असक्ययाः समितकुमारा असक्ययाः पृथिवीवापिका असक्यया सप्तस्कायिका असक्यया वायवायिका अ
मला वनरपतिवापिका असक्यया ह्रीन्त्रिया असक्यया खोन्त्रिया असक्यया धनुर्त्रिया असक्येयाः पञ्चान्न्रियतिययोमिका असक्येया मनु

[illegible]

७०
 अथ पर्वापाद्यामानस्यं कथं पठते इति पृष्ठे तादेव पथायायामागत्य प्रवर्तते तथा नियन्त्रणीयं नाम्बन्तु, ततः केमात्रिप्रायेण जग
 माभेव नियन्त्रणमवाचि नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्याद्यतया तुल्य इति । उच्यते-एकमपि द्रव्यमनन्तपर्यायमित्यस्य व्याप्यस्य प्रदर्शनाये तत्र यस्मादि
 दमपि नारकनीजद्रव्यमेकचङ्कुराऽवसदुमिदमिति नैरयिकस्य द्रव्याद्यतया तुल्यो द्रव्यमेवार्थो द्रव्याद्यतया तुल्यो द्रव्याद्यतया तुल्य एवं तादृशद्रव्या
 द्यतया तुल्यत्वमिदमिति निदर्शनी प्रदेष्टार्यतामधिकृत्य तुल्यत्वमाह-परमपुण्याय तुल्ये ॥ इदमपि नारकनीजद्रव्यं सोकाकाशप्रवक्ष्यपरिभाषप्रदेशमिति
 प्रदर्शयार्थतयापि नैरयिको नैरयिकस्य तुल्यः प्रदेष्टव्यत्वात् प्रदेष्टार्यत्वात् तया प्रदेष्टार्यतया कस्मादिति श्रुतिमिति तत् ? उच्यते-द्र
 व्यद्वैविध्यप्रदर्शनाये तथाहि-द्विविधं द्रव्यं प्रदेष्टवत् समप्रवक्ष्यत्वं, तत्र परमाक्षुरप्रदेशो हि प्रदर्श्यादिकं तु प्रदेष्टवत् एतत् द्रव्यद्वैविध्यं पुद्गलास्ति

एरण्ठेण गोयमा ! एव बुद्धे-तेण णीसखेज्जा नो अस्संखिज्जा अणत्ता । णेरइयाण जत्ते ! केवइया प
 ज्जाया पणत्ता ? गोयमा ! अणत्ता पज्जाया पणत्ता । से केण्ठेण जत्ते ! एव बुद्धे-णेरइयाण अणत्ता प
 ज्जाया पणत्ता ? गोयमा ! णेरइए णेरइयस्स वड्ढंठयाए तुल्लं पदेसंठयाए तुल्लं उग्गाहणंठयाए सिंयहीणे

या असकपया दानव्यन्तरा असकपेया ज्योतिष्का असकपेया वेसानिका अनन्ताः सिद्धा सातनार्थेन गौतम । एवमुच्यते-ते (श्रीवपर्ययाः) ने
 य स कपया नैवासकपेया अनन्ताः । नैरयिकायां प्रदत्त । कियन्तः पयवाः प्रदत्ताः ? गौतम । अनन्ताः पयवाः प्रदत्ताः । अथ केनार्थेन प्रद
 त्त । एवमुच्यते-नैरयिकायामनन्ताः पयवाः प्रदत्ताः ? गौतम । नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्याद्यतया तुल्यः प्रदेष्टार्यतया तुल्योऽवगाहनाद्यतया

र्थांश्च उपपात्ता नको पयवपात्ता पिय नको पयवपात्ता । नारको माहि च मगवन् कतता पर्याय कथा प्र कतर ॥ गौतम यनन्ता पयाय कथा । ते
 कवे यमे वे मगवन् इम कटो च नारको ना पर्याय यनन्ताये प्र कतर हे भौतम नारको नारकोने द्रव्याद्यतया पये करो तुल्यत्वे पने प्रदद्याव पये करो
 पिय नारको नारकोने समये नारक कोव द्रव्य साकाशायपदेय परित्माच प्रदर्शयते तेवो यनमाहनायताये करो कदाचित् होन आळो पयमाहना

च सामायेन निर्वचनमुक्तवान् । इदानीं विद्येयविषयप्रसंगे गौतम आह-नेरहयाह जते । केवहया पणवथा पणवता इति ॥ अथ कनाप्रिप्रायेस्येय गी
 तमः पृष्टवान् ? उच्यते पूर्वै किल साम्प्रत्ये पयोयिषामनत्वात् पयोयाहामनत्वात् यत्र पुनः पयोयिषामनत्वं नास्ति सत्र कथमिति प
 र्याति परहयाहमित्यादि ॥ तत्रापि भिवचनमिदममन्ता इति अत्रैय जातसत्रय प्रसंगेति सेसेषठेय जते । इत्यदि ॥ अथ कनार्चन कन कार
 नन कन इतुना जदन् । एवमुच्यते-नेरयिषाया पयाया एव मनन्ता इति जगवानाह-गोयमा । नेरहय नेरहयस्स ववठयाए तुमे इत्यादि ॥

अस्सखेज्जा सुत्रणा अस्सखेज्जा त्रिङ्गुकुमारा अस्सखेज्जा दीविकुमारा अस्सखिज्जा
 उदहिङ्गुकुमारा अस्सखेज्जा विसाङ्गुकुमारा अस्सखेज्जा वायुकुमारा अस्सखेज्जा धणियकुमारा अस्सखिज्जा पुढावि
 काइया अस्सखिज्जा आउकाइया अस्सखेज्जा तेउकाइया अस्सखेज्जा वाउकाइया अणता वणस्सइकाइया
 अस्सखेज्जा येइदिया अस्सखेज्जा तेइदिया अस्सखेज्जा चउरिदिया अस्सखेज्जा पच्चिदियतिरिक्कजीणिया
 अस्सखेज्जा मणुरसा अस्सखेज्जा वाणमतरा अस्सखेज्जा जोइसिया अस्सखेज्जा वेमाणिया अणता सिद्धा से

पिकीया स्यात् सङ्ख्येयजागात्पिकीया संख्येयगुणापिकीया संख्येयगुणापिकीया कल्पमिति धनुष्यते-एकः किल भारक उचैस्त्वेन पञ्चपञ्च अतानि
अपरस्ताभ्येवाहुताः संख्येयजागर्हानामि अङ्गुलासङ्ख्येयजागः पञ्चानां यन्नु अतामासङ्ख्येय जागे वसते तेन सोऽङ्गुलासंख्येयजागहीनः पञ्चपञ्चः
ज्ञातप्रमाको परस्य परिपूत्रपञ्चपञ्चः ज्ञातप्रमाखस्यापत्रया संख्येयजागहीन इतररिखंतरायेण्या असंख्येयजागाध्यधिकः तथा एकः पञ्चपञ्चः अता
अङ्गुलेश्वना उपरसु तागयेव द्वादशं त्रिजिर्वा यन्नुमिग्येमानि त च हे श्रीवि वा यन्मूयि पञ्चानां यन्नु अतानां संख्येयजाग वसते ततः सोपरस्य
परिपूत्रपञ्चपञ्चः ज्ञातप्रमाखस्यायेण्या संख्येयजागहीनः अपरसु परिपूत्रपत्रपञ्च अतप्रमाखसवेण्या असंख्येयजागापिक एक पञ्चविंशति
यन्नु ज्ञातमुचैस्त्वेना उपरः परिपूत्रानि पञ्चपञ्च अतानि पञ्चविंश च यन्नु अतं यन्नुमिगुचितं पञ्चपञ्चः अतानि सवन्ति ततः पञ्चविंशत्यधिकयन्नु अ

असत्वे जागृणी वा । अहं अस्मि हि एव असत्त्वागमस्य हि एवा असत्त्वे जागृणमस्मि हि ए

स्वादीनः स्वाभुत्यः स्यादभ्यपिबो यदि हीनोऽवस्यप्रागहीनो वा सत्त्वेप्रागहीनो वा सत्त्वयुगहीनो वा । स्यादभ्यपिबो यदि हीनोऽवस्यप्रागहीनो वा सत्त्वेप्रागहीनो वा सत्त्वयुगहीनो वा । स्यादभ्यपिबो यदि हीनोऽवस्यप्रागहीनो वा सत्त्वेप्रागहीनो वा सत्त्वयुगहीनो वा ।

काय यय जगति प्रपाति तु पर्मांतिवायादीनि द्रव्याणि भियमा त्थमदेशानि ॥ उगाहणसपाय सिय होवे इत्यादि ॥ नैरयिकोऽसङ्कृतप्रदेशोऽ
 परस्य नैरयिकस्य तुल्यप्रदेशस्य चकगाहनमवगाहं करीरोष्णयोवगाहनमवगार्थोऽवगाहनार्थस्तद्भावो वगाहमायता तथा चवगाहनायतया ॥ सिय
 होवे इत्यादि ॥ स्याच्छब्दः प्रत्यक्षदित्तविवारविचारथाऽनवान्तसंशयप्रसादिवर्ण्यपु सथाऽनकान्तघोतकस्य यएवं स्याहो नो नैकातेन हीन इत्य
 यः स्यात्तुल्यो नैकातेन तुल्य इत्यर्थः । स्यादप्यपि को नैकान्तान्वयपि क इति ज्ञाव कथमितिवत् ? उच्यते-यस्मादुच्यते-रत्नप्रप्रापुधियो नैरयि
 काका नवपरखीयस्य पैत्रियसुरीरस्य जपम्यनावनाहमाया अङ्गुलस्यासङ्केपो ज्ञाग उत्कर्षतः समभूर्मपि ययोइक्षाः पट्वाङ्गुलानि उत्तरोत्तरास्तु
 च पचिधीनु द्विगुलं २ पावटसममपचिधीनैरयिकाया जपम्यतो वगाहनाऽङ्गुलस्यासङ्केपोज्ञाग उत्कर्षतः पचपचमु स्तानतीति तच्च ॥ अङ्गीकृत्यादि ॥
 यदि हीन स्ततोऽसङ्केपप्रागहीनोवा स्या स्वङ्केपप्रागहीनो वा संक्षयगुणहीनो वा स्यात् असङ्केपगुणहीनोवा अप्याप्यपि क स्ततोऽसङ्केपजागाज्य

सिय तुल्ये , सिय व्युत्पत्तिरु यदि हीने अ्यसखेज्जानागहीने वा सखेज्जानाग हीनेवा संखेज्जगुणहीने वा

कदाचित् मन कदाचित् कचित् चवगाहना हुवे ते विम रत्नममाना नारकोने भवचारकोव वेकोव प्ररीर नो अवच चवमाहना अंगुलने चवचयातवे
 भाग वरकम को घात धनुष सोन दाव च अंगुलको कही इम पावे पागे उत्तरोत्तर पचिधीमा येवच वगुण कही वावस्तातमो पचिधीना नारकोनो
 जवच चवमाहना अंगुलने चवचयातवे भाग वरकम को पाचसे धनुष कही । अङ्गीके चवखेज्जानागहीनेवा । जो हीन हुवे तो अंगुलने चवचयातवे
 भागहीन हुवे एव नारको १ से धनुषनो चवगाहनागा धपो हुवे १ नारको अंगुलने चवचयात भागे ध्वन होवे ते चवचयात भाग हीन कहीवे ।
 सखचयवहीवेति । तथा एव नारकोने ४८८ चारसे घठाव धनुषनो चवगाहना हुवे ते ५ पाचसे धनुषनो चवगाहना ना नारको को चवचयात भा
 ग हीन कहीवे । सखिज्जमुच होवेका । एव नारको एकसो पकोस धनुष जवपचिखे यने चक नीको परित्पु पाचसो धनुष जवपचिखे पचसी पचोचने
 चारमुना करवायो पाचसो मूराकाव ते हेतु पाचको धनुष चवपचा मो चपेसावे एकसो पकोस धनुष चवपचा हो नारको ते चवचयातमुचहीन कचि

वया चरुवयेपनागहीन । परिपूषे, त्रयस्त्रिंशत्सागरीपमस्थितिः सतु तदपेक्षया चरुवयेपनागाऽप्यपि । सागरीपमापेक्षया ऽमस्येपनागमा
 यन्मातुं तथाप्यऽसंख्येयै समये रक्षाऽवसिका सस्याता निरावसिका निररु उच्छासनिः स्वासकातः सप्तनिरुच्छासनिः घ्रासैररुः स्तोमः ममनि स्तोमै
 रको मयः समप्रसत्वा ३३ तवाभासैकोमुद्रुतः प्रियता मुद्रुतैरहोरात्रः पच्यक्षत्रिरहोरात्रैः पचो द्वाप्या पक्षाप्या भासो द्वादशानि मासैः संबरसर-
 चमदपये चरुमरेः पक्षोपमसागरीपमावि समयान्वसिकोच्छासमुद्रुतदिवसाहोरात्रपक्षभाससंबरसरमुद्रुतः परिपूषास्थितिकनारक्षापक्षमाऽव
 चययनागहोना नयति तदपेक्षयास्त्रिंशत्सोमस्येयमागाऽप्यपि । तथा सकस्य त्रयस्त्रिंशत्सागरीपमावि स्थितिः परस्य ताप्यव पक्षोपमैन्मूमानि द
 शानि पक्षोपमकाटाकोटिनिररु सागरीपमं निप्यद्यत ततः पक्षोपमैन्मूमास्थितिकः परिपूषास्थितिकनारक्षापेक्षया सङ्ख्येयमागहीनः परिपूषास्थिति
 बन्तु तदपेक्षयासङ्ख्येयमागाप्यपि । तथा एकस्य सागरीपमस्य स्थितिरपरस्य परिपूषानि त्रयस्त्रिंशत्सागरीपमावि तत्रैकसागरीपमस्थितिकः प

ज्ञाहनागहीन या सखेजगुणहीने वा अस्सिजगुणहीने वा । अह अस्मिहि ए अस्सखेजगुणहीने वा । अह अस्मिहि ए अस्सखेजगुणहीने वा

म्बु तत्रोस सागरापम स्थितिक नारकोष्ठे ते तत्रोससागरापम स्थितिक नारकोष्ठो अपेक्षया चरुवयातभास होनके, समय चादि के च ते सागरापमने
 पमपशति मागेके तिमर दवादेव --- पमपशत समरको र पावनिका मस्यातो पावनिकायो र उर्यासनिद्यास सात उर्यासनिद्यासको र स्नात सात
 म्याव यो र चरुमरुतचरुवको र ममन नोस मुद्रुत को र चकाराच पननय चकाराच को र पक्ष उाय पक्ष को र सात चार मासयो र संबरसर पक्ष
 चकाराच यो पक्षापम सागरापम काव के, समय पावनिका उर्यासनिद्यास ममन दिवस चकाराच पक्ष मास संबरसर युन रत्यादि यो होन ते
 नोस सागरापम स्थितिक नारको पूर्व र र सागरापम स्थितिक नारको यो पमपशत भाग होन चदिबाय । एवमो अपेक्षया रतर पतका साटे समस
 पादि अत्र स्थितिक नारको नो पपेक्षया बीजा के पक्ष तेनास सागरापम नो स्थिति मा नारको के ते पसंयगात भाग पचिक छे । तथा पक्ष नारको
 नो तत्रोस सागरापम यो स्थिति छ यने बीजा नो पक्षोपम रभन् तत्रोस सागरापम नो स्थिति-द्वये इय पक्षोपम काटार्काको यो एक सागरापम वाय

[illegible]

सखेज्जगुणमसुद्धिपूवा । छिडए सियहीणे सियतुखे सियमसुद्धिपू । जइहीण सुसखेज्जइनागहीणे वा सखे

[illegible]

[illegible]

ससंज्ञहनागमस्यैह वा ससंज्ञगुणमस्यैह वा । कालधण्डपञ्चार्वाह सियहीणे

गाचिको वा सहायेप्रायापिको वा उहायेपुजापिका वा सहायगुहापिको वा । कासवपयवै । स्वाहीनः स्यात्सुत्यः स्यादप्यपिभः । यदि

क, एहनी उपेवाये बीका पूब स्थिति नारकी पसबहातगुन अधिकोह । हम एक नारकने पस बोका नारकनी उपवावे द्रबकी प्रदयाव बी तस पवा कहिवा । सव बी उपमाइना मा होनादिक पवे करो वताखानपति पवा काह बी पिब स्थिति मा होनादिक पवे करो वतु खानपति पवा कइया डिने भाव पानी होनादिक पवा कहता कहैले—क माटे समष्ट कोव द्रब पयवा अजीव द्रब परस्पर द्रव्येष काह भाव को विभाविये कम घट द्रव्यी एक माटीभा बोका साना पयवा बीदीना सबो कीकय हेयना नोपमा एक पाटकोपुन मा नोपना काह बी एक पाक मा नोप ना एक मतकाइना नोपना भाव बी एक नीका पस बोका पीक 'चादि एम अन्य पिब काहवा तिहो प्रथम मुहक विपावि नामकमौदक निमित्त जोवान भीदएक भावायो होनादिक पंवा कहैले—आसबकपंवेवि सिधहोवे इत्यादि । एहनी पसर घटना पवनो परे साबवो कदाचित् होन

रिपुन्त्युत्थितिकनारकापेक्षया सुख्येयगुणहीना एकस्य सागरोपमस्य भ्रयखिन्नाता गुह्ये परिपूषास्थितिकत्वप्राप्तेः परिपूषास्थितिकत्वं तदपेक्षया भुङ्क्तेयगबाध्यपिका तथा एकस्य द्भ्रयवर्षादस्यापि स्थितिरपरस्य त्रयखिन्नासागरोपमायं दृष्टव्यवसहस्राख्यसङ्ख्यरूपं गुह्यकारण गुह्यतानि प्रयोक्तृगारसानरापयादि प्रवर्तिता दक्षावपसहस्रस्थितिकखयखिन्नासागरापमस्थितिकनारकापक्षया असङ्ख्येयगुणहीनस्तदपक्षया तु त्रयस्थिद्वय एकागरोपमस्थितिकोऽसङ्ख्येयगुणाभ्यधिक इति तद्वधमकस्य भारकस्याऽपरभारकापक्षया द्रव्यतां द्रव्यापक्षया प्रदक्षापक्षया च तुल्यत्वमुक्तं सोऽत्र सोऽवगादनं प्रति हीनापिक्त्वाने चतुःस्थानपतितस्य कासलोपि स्थितितो हीनापिक्त्वान् चतुःस्थानपतितत्वमिदानीं प्राधाभ्यं हीनापिक्त्वान् स्मृतिपाद्यते यत् सुकलमव जीवद्वयमजीवद्वयं वा परस्परतो द्रव्यतत्राकाशजायैविद्विजन्त्यते यथा घटः तथाहि घटो द्रव्यत एको मातृकोऽयं काच्य तिमो राजतादिवो चक्रत एव इत्येवो पर पाटलिपुत्रकः कासल एकोऽद्यावनोऽन्यस्त्वैपमः पक्षतनो वा भावत एकः स्यामोऽपरस्तु रक्षादिवन

तिष्ठति पञ्चापमने सखातगुणा ब्रह्माद्यो ११ सागरीपमं घाय ते मातृ कश्चिदं जे पञ्चापमं गृह्ण ११ सागरापमं स्फितिं नारको जे तौपरिपूषं ११
 सागरापमं स्फितिं नारको नो अपेक्ष्योऽहो। सखातमात्रं ॥ पिब पूष तेषोससागरापमं स्फितिं नारको जे ते पञ्चापमं गृह्ण तेषोस सागरापमं
 स्फितिं नारको अपेक्ष्योऽहो सखातमात्रं ॥ तदा एव नारको एव सागरापमं स्फितिं नारको जे तौपरिपूष तेषोस सागरापमं नो तिष्ठति
 त्र पञ्चापमरीपमं स्फितिं नारको जे ते परिपूष ११ सागरापमं स्फितिं नारको अपेक्ष्योऽहो सखातमात्रं ॥ तदा एव नारको एव सागरापमं गृह्ण तेषोस
 यथा ब्रह्मा यो परिपूष ११ सागरीपमं घाय' तिष्ठति जे परिपूष ११ सागरापमं स्फितिं नारको जे ते १ सागरीपमं स्फितिं नारको अपेक्ष्योऽहो स
 खातमात्रं यद्विधा है। तदा एव नारको जे परिपूष ११ तेषोस सागरापमं जे ते एव ब्रह्मा एव जे ते ते पञ्चापमं
 मन्त्रं तिष्ठति मुखां यो ११ सागरीपमं घाय ते मातृ कश्चिदं जे पञ्चापमं गृह्ण ११ सागरापमं स्फितिं नारको जे तौपरिपूषं ११

प्रागङ्गार्यु नामो द्वियते लब्धे हे शते : ययोऽस्ययेयतमोऽनाम कात्रैकस्य कृष्णतणपर्याया दशासहस्राणि शतद्वयेन हीनानि ८०००
 अपरस्य परिपूर्वाणि दशासहस्राणि १०००० तत्र यः क्षातपुण्यहीनश्चसहस्रप्रभावरूपप्रवचपर्यायः स परिपूर्वकृष्णतणपर्यायानारकारपेक्षया अस्यपय
 प्रागहीनः पारपूर्वकृष्णतणपर्यायस्तु तद्वचनयाऽस्यपयप्रागाधिक्यः २ । तथा तस्यैव कृष्णतणपर्यायाशो दशसहस्रसक्याकसोत्पुसहस्रयकपरिमात्र
 कल्पितान दशाकपरिमाणान प्रागङ्गार्यु नामो द्वियते लब्धे सहस्र ययः किल सङ्क्रातमनोप्रागः तत्रैकस्य भारकस्य किल कृष्णतणपर्यायपरिमाणं
 नवसहस्राणि ८००० अपरस्य दशासहस्राणि १०००० नवसहस्राणि तु दशासहस्राणि सहस्रं हीनानि सहस्रं सकयेयतमो प्राग इति नवसह
 स्रप्रमाणतन्त्रवचवायपरिपूर्वकृष्णतणपर्यायानारकारपेक्षया संकयेयतास्तितर संकयेयतायाधिक्यः तत्रैकस्य भारकस्य किल कृष्ण
 तणपर्यायपरिमाणं सहस्रं अपरस्य दशासहस्राणि तत्र सहस्रं कलेनोत्पुसहस्रप्रभावरूपमेव गुणित दशासहस्रसक्याक सत्वतीति सहस्रसक्यकृष्णव

ज्जगुणहीने वा असस्रैज्जगुणहीने वा अणतगुणहीने वा । अह अक्षहिणु अणतनागममङ्गु वा असस्रैज्ज

हीनो उननाजगहीनो वा अत्रयेयजगहीनो वा सकयेयजगहीनो वा अस्ययगुणहीनो वा अस्ययेयगुणहीनो वा उनत्तगुण हीनो वा । अथा

गुण पक्षिण लब्धः पल्लगुण पक्षिण इव । गुणन लब्धानि विवे ता अह अह यो सख्यातगुण इवे तत्र तद्वचिभूत दशह्र संकवेयतना गुणवा यो
 यतवा इवे तैतका लीचवा । अह अह यो पमल्यातगुणो इवे ता तैतने तद्वाधभूत इवे समसय साक्षात्प्राग्देय प्रमाण गुणाकार यो गुणिव गुणवा
 , अह अतवा इवे तैतका लीचवा , अह अह यो पल्लगुण इवे तद्वचिभूत इवे सय कोवाभक्त यो गुणताक्षिणा जेनया इवे तैतस प्रमाणे लीचवी, सरी
 प्रत पक्षीम युनमो मावना लब्धे—तिङ्गी लब्धवच पर्याय परिमाण तल्लो अल्लसयवावय भो क्ते तथापि पक्षिणवस्थापना यो दशह्रकार परिमाणे
 दपया तैतने सनजोवातल्लकने प्रत परिमाण लब्धमाये अरो तहयो भाग देवा लब्ध १ तिङ्गी एव नारकोन लब्धवच पर्याय पारमाण दशह्रकार
 इवे पने योजाने १ अह दशह्रकार इवे एतस ८८ प्रत इवे तैतने सनजोवातल्ल भागङ्गारकयपयवा यो अल्लततम भाग इवे तैमाट प्रत लब्ध दय

गुणकारेण गुह्यते मुखितं सत् यावद्भवति सद्वर्तयेय यच्च प्रसाधनमनुबन्धं तदर्थचिन्तां संवशीवान्नाकरूपेण गुणकारेण भूष्यते मुखिन सत् यावद्भवति तावदाप्रमाणं द्रष्टव्यं तथाप्येतदेव कमप्रकृतिसङ्ग्रहितम् । यदस्यामन्त्ररूपवाक्यसरे ज्ञानधारगुणकारस्वरूपमुपवक्षितम्-सर्वजीवाश्च तमसुरासोगसंज्ञेन परम ब्रह्मरस जागो तितु गच्छाविति इति ॥ समन्वयिपिकृतसूक्तयद्रूपस्थानपतितत्वं जाव्यते-सत्र कृष्णवक्त्रपर्यायपरिमाणं तत्त्वतो न भवद्भात्मकमप्य ब्राह्मण्यापन्नया किञ्च दशसहस्राणि १०००० तस्य सर्वजीवान्मात्रेण शतपरिमाणपरिकल्पितेन जागो प्रियत सख्यं श्रुत १०० तत्रैकस्य चिक्ष मातरस्य हस्तवक्त्रपरिमाणं दशसहस्राणि अपरस्य ताम्रमेघ द्वारेन कीमानि ६२०० श्रुत च सर्वजीवान्नजागङ्गावलब्धात्यादिनमतसीजान्गततो यस्य शतान् हीनानि दशसहस्राणि सोपरस्य परिपूर्वदशसहस्रप्रमाणकृष्णवक्त्रपरिमाणस्य मातरस्यपञ्चपा नक्तजागहीन स्तदपेक्षयानु सोपरः कथं दशपर्वापोऽनन्तजानामभ्यधिकः स्या कृष्णवक्त्रपर्यायपरिमाणस्य दशसहस्रसङ्काकस्या सक्रियसौखाद्याश्रमदेशप्रमाणपरिकल्पितेन पञ्चाशत्यपरिमाणेन

सियतुल्ले सियमझाहिण । जदि हीणे अणतजागहीणे वा अखेजागहीणे वा सखेजागहीणे वा सखि

[illegible]

परलोयादिभक्तस्योपपन्नप्रावाश्रयेण तदुपपन्नपति-आग्निविद्योद्विपञ्जवोह इत्यादि ॥ पूयवत् प्रत्येकमाग्निविद्योपिकादिषु पदस्याभपतितत्वं ज्ञा
 यभीप इह द्रव्यतत्त्वस्य वदता समुच्चितसमप्रवृत्तिर्नैद्वीजं ममूरुयइतरसदृजनिधियस्यैश्वर्यासम्पत्त्यप्यद्विज्ञापनेऽपरिबर्तीयं प्रख्यामि
 त्यायदितं यवगाइमया वतस्यानपतितत्वमप्रिचयता चेन्नतः सङ्कीर्णविद्योपपन्नोपात्ता न तु द्रव्यप्रदेशसङ्ख्याया इति दक्षितम् उक्तप्येतदस्य
 यि विवक्तुमशुद्धीजनयो भक्तोद्भवप्रदेशसम्पाया दृष्टिर्दोषोक्तः चेन्नतस्तु तावाम्भक्तस्यारिस्त्या वतु स्थानपतिसत्त्व वदता आमुःकमस्थितिभि
 वतकागमजायसायस्थानामामूरुयार्थपदं वृत्तिरुपदांशोता सम्यया स्थित्या वतुस्थानपतितत्वायोगात् आयुक्तमवोपतसत्त्वं तन च वधेकमस्थिति
 निवृत्तलेग्यदमायेरकवर्षकपवृत्तिरवसातव्या कृष्णादिपर्ययोः पदस्थानपतितत्वमुपपदयिता एवस्यापि भारकस्य पर्याया क्लमसाः किम्पुन सर्वथा

सुप्तिगधपञ्जवोह दुस्तिगधपञ्जवोह त्रिभिरसपञ्जवोह कुरुपरसपञ्जवोह कसायरसपञ्जवोह
 अग्नित्रिरसपञ्जवोहं मज्जरसपञ्जवोहं लठानवोहं । कस्कफासपञ्जवोहं मज्जायफासपञ्जवोहं गरुयफा
 सपञ्जवोहं लज्जायफासपञ्जवोहं सीतफासप० उसिणफासपञ्जवोहं निरुफासपञ्जवोहं लुक्फासपञ्जवोहं
 य लठानवोहं । आग्निनिग्रोहियनाणपञ्जवोहं सुयनाणपञ्जवोहं ऐहिनाणपञ्जवोहं मइस्थानाणपञ्जवोहं

तिक्तसपपयैः कटुकरसपयैः कपायरसपयै रस्रसपयै मंपुररसपयैः पदस्थानपतितः । ककमसपसपयै मंभुकरसपयैः पयैः गुरुकसपस
 पयैः सपुसपसपयैः क्षीतसपसपयैः क्लमसपसपयैः चिदासपसपयैः कुरुसपसपयैः पदस्थानपतितः । आग्निनिग्रोहियनाणपयैः अत

करोः कपायरम पर्वयिकरोः कसरस पर्वयिकरो मंपुरस पर्वयिकरो पिष प्रत्येके पटस्थान पतित कइवा । ककमसपसपयै रत्नादि । ककमसप
 पर्वयिकरो कामसपसपयैः पर्वयिकरो भारोवेक्यार्थं तेजने पर्वयिकरो कपुसपस पर्वयिकरो क्लमसपस पर्वयिकरो कुरुसपस पर्वयिकरो
 पिष पटस्थान पतित कइवो । आग्निनिग्रोहियनाणपसपयै रत्नादि । मतिज्ञान पर्वयिकरोः यवविज्ञान पर्वयिकरोः सतिपज्ञान

तन्मयादौ गारको दशमद्वन्द्वमस्याककप्रः षडपर्यायभारमावेक्षया संख्येयगुणहीन सन्नेषेक्षया परिपूषकप्रः षडपर्यायसंख्येयगुणस्य चिह्नं तथा यदस्य
 चिह्नं नारकस्य कृप्यवर्णपर्यायाय द्विंशते उपरस्य परिपूषको नि दशसहस्राणि द्विंशते संख्येयलोभाभागाग्रदेष्टपरिमाणा प्रक्षिप्तेन पष्पादात्परिमा
 एव गुणभारगुणितम दश सहस्राणि जायन्ते ततो द्विंशतपरिमाणाकृप्यवर्णयो गारकाः परिपूषकप्रः षडपर्यायभारकापेक्षया षडसहस्रगुणहीन
 सन्नेषेक्षया त्रिंशतरोऽसंख्येयगुणाग्र्याधिकः ५ तथैकस्य किंस भारकस्य कृप्यवर्णपर्यायपरिमाणा षडसहस्राणि सन्नेषेक्ष सर्वोद्गीवान्मात्रपरि
 मण्यवितेन गुणकारेण गुणित जायन्ते दशसहस्राणि ततः षडपरिमाणाकृप्यवर्णपर्यायो गारकाः परिपूषकप्रः षडपर्यायभारकापेक्षया उत्तमगुणहीन इ
 तरेण तदपेक्षया उत्तमगुणाग्र्याधिको यथा कृप्यवर्णपर्यायानधिकृत्य द्वासी एवौ ष पदस्यानपतितत्वमुक्तं मेवं षडपर्यायभारकस्यैवैरपि प्रत्येक पद
 स्यान्नपतितत्वं प्राप्तनीय तदेव पुनरस्यैवैकमेवमकर्मोदयचिह्नितकोवौदयिभाजायास्य च पदस्यानपतितत्वमुपदर्शितं मिदानीं श्रीविचिपाकिज्ञाना

जागमन्नुहं वा सखजानागमन्नुहं वा संख्येयगुणमन्नुहं वा अणतगुणमन्नुहं
 ए न । नीलनलपञ्चवेदि लोहियवन्तपञ्चवेदि पीयवन्तपञ्चवेदि सुक्लिषवन्तपञ्चवेदि च ठाणवन्ति ।

अपि को अलमनापि को वा असंख्येयगुणापि को वा संख्येयगुणापि को वा असंख्येयगुणापि को वा उत्तमगुणापि का
 वा । मोनवत्तपर्यवे नैदितवर्णपर्यवेः पीतवर्णपर्यवेः शुक्लवर्णपर्यवेः य पदस्यानपतितः । सुरभिगन्धपर्यवेः सुरभिगन्धपर्यवेः पदस्यानपतितः ।

इभार छन्दस्य पर्याय परिमाणा गारको च ते एष पृथक् इभार परिमाणा षडपर्यायभारको चो यमन्त भागे दोमन्ते तेदमो षडपदावे
 पृथ परिमाणा पर्यायै यमन्तो गारको यमन्तभावा अधिभोक्षे, यम पात्रे भावना टीका चो जायन्ते । मोक्षवत्पञ्चवेदिति । येन छन्दस्य पर्यायको मा
 यना कश्चो तेमन्त मोक्षवर्ण पर्यायको तदा साहित्यवत् पर्यायको गारको तथा पीतवर्णपर्यवेः करो गुणमन्त पर्यायिकरो यदस्यान पतित चक्षवा । सुभिगन्ध
 पञ्चवेदिति । सरमियस्य पर्यायिकरो सुरभिगन्ध पर्यायिकरो इत्यादि । तिस्रस्य पर्यायिकरो षट्चरस पर्याय

परबोयादि कमसुपोपशमप्रावाशयेय तदुपदक्षयति-आग्निनिधोऽपिपञ्चवेहि इत्यादि ७ पूर्ववत् प्रत्येकमाग्निनिधोऽपिपञ्चवेहि पदस्थानपतितत्वं प्रा
यभीय इह द्रव्यतस्तत्त्व वदता शुम्भन्ति तथैव प्रपन्नद्वितीयं असुरायुधरसवदननिधिव्यक्षदशकाशक्यमप्रत्ययवदुविशयेऽपरिवर्तयोग्य द्रव्यमि
त्यायदितं यद्यथाहमया चतुस्थानपतितत्वमभिधत्ता चेन्नत सङ्कोचविबोधपरमोद्यात्मा न तु द्रव्यप्रदेशसङ्ख्या इति इतिवत् ७ उक्त्येतदस्यत्रा
पि विवक्षितमङ्गुलमयो नक्षोद्रव्यप्रदेशसस्याया युद्धिद्वीषीक क्षेत्रतस्तु तावाम्भगस्तस्मादित्यत्या चतु स्थानपतितत्वं वदता आयुःकमस्थितिभि
वतकानामप्यवसायस्यानामुरादयोपकषंतिरुपदक्षिता अल्पया स्थित्या चतुस्थानपतितत्वायोगात् आयुःकमचोपलक्ष्यं तान च सर्वेकमस्थिति
निवृत्तमेव व्यशयेरकषावृक्षपवृत्तिरवकाश्या कक्षादिपर्ययोऽपि पदस्थानपतितत्वमुपदक्षयिता एवस्यापि भारकस्य पर्याया अनसा किन्मुन सर्वेषां

सुन्निगधपञ्चवेहि दुस्निगधपञ्चवेहि तिस्ररसपञ्चवेहि कनुररसपञ्चवेहि कसायरसपञ्चवेहि
अग्निहरसपञ्चवेहि मञ्जररसपञ्चवेहि य त्ठानवहि १ कर्करुफासपञ्चवेहि मञ्जयफासपञ्चवेहि गत्यफा
सपञ्चवेहि लङ्गयफासपञ्चवेहि सीतफासप० उसिणफासपञ्चवेहि णिम्फासपञ्चवेहि लुक्फासपञ्चवेहि
य त्ठानवहि १ आग्निनिधोऽपिपञ्चवेहि सुयनाणपञ्चवेहि त्ठिनाणपञ्चवेहि मइस्थानाणपञ्चवेहि

तिक्करसपयवेः कनुररसपयवेः कपापरसपयवे रत्नरसपयवे मंपुररसपयवेः पदस्थानपतितः । कर्करुफासपयवे मंजुकरसपयवे मंजुकरसपयवे
पयवे लपुसरसपयवेः क्षीतरसपयवे रुजसपयवेः पदस्थानपतितः । आग्निनिधोऽपिपञ्चानपयवेः अत

करा कसायरस पर्यायेकरो अक्षरस पर्यायेकरो मधुररस पर्यायेकरो पिप प्रत्येके षटस्थान पतित कक्षया । कर्करुफासपञ्चवेहि रत्नादि । कर्करुफास
पर्यायेकरो कामकस्य पर्यायेकरो मारोलेप्यं तेनने पर्यायेकरो लघुकाश पर्यायेकरो अणुकाश पर्यायेकरो कक्षस्य पर्यायेकरो
पिप षटस्थान पतित कक्षयो । आमिबिबाहियनाथपञ्चवदि रत्नादि । मतिज्ञान पर्यायेकरो पयविज्ञान पयविज्ञान पयविज्ञान मतिपञ्चान

दुययाया तारको उद्गानरुखमवपाकमप्राप्तपर्यायमारुणावेत्तया संखयेयगुणानीन सारपेक्षया परिपूरकपृथगुपर्यायसंखयेयगुणाप्यधिकं तस्या एकस्य
 भिन्न नारकस्य कृष्णवस्त्रपयायाग दृष्टते उपरस्य परिपूरकानि दशसहस्राणि दृष्टते संयमयलोकाद्याग्रमेअपरिमाण प्रकल्पितेन पद्म्याद्यत्परिमा
 यन गुणकारगुचितेन दश सहस्राणि आयत्ते, ततो द्विजतपरिमाणकृष्णवस्त्रपयायो नारकाः परिपूरकपृथगुपर्यायनारकापेक्षया असंखयगुणकरीन
 सारपेक्षया त्वितरोऽसंखयेयगुणाप्यधिकः ५ तथैवस्य किं नारकस्यपृथगुपर्यायपरिमाण ज्ञानमपरस्य दशसहस्राणि क्षतेषु सर्वव्रीधानस्तकपरि
 मन्वितेन गुणकारेण गुचिते आयत्ते दशसहस्राणि तत क्षतपरिमाणकृष्णवस्त्रपयायो नारकः परिपूरकपृथगुपर्यायनारकापेक्षया असंखगुणरीन इ
 तरेण तदपेक्षयाऽनन्तगुणाप्यधिको यथा कृष्णवस्त्रपयायामप्येकस्य इतरी एवैव पदस्थानपतितत्वमुक्त मेयं ज्ञापवर्गगन्धरसरसपञ्चैरपि प्रत्येक पट
 स्थानपतितत्वं प्रावनीय तदेव पुद्गलविपाकेनामकर्मवयवनिर्वाहोदयिकाप्रायाप्रयत्न पदस्थानपतितत्वमुपदर्शित मिदानी क्षीवविपादिज्ञाना

ज्ञागमपञ्चङ्ग या संखेज्ज्ञागमपञ्चङ्ग वा संखेज्ज्ञागमपञ्चङ्गि वा अस्वेज्ज्ञागमपञ्चङ्गि वा अष्टातगुणमपञ्चङ्गि वा
 ए वा । नीलवन्तपञ्चवेहिं लोहियवन्तपञ्चवेहिं पीयवन्तपञ्चवेहिं सुक्लितवन्तपञ्चवेहिं हिय लठागव्यक्रिण् ।

प्यापको अलप्रागाधिको वा असंखयज्ज्ञागाधिको वा संखयेयगुणाधिको वा असंखयेयगुणाधिको वा अलगुणाधिको
 वा । नीलवस्त्रपयैर्निहितवस्त्रपयैः पीतवस्त्रपयैः कृष्णवस्त्रपयैः पटस्थानपतितः । सुरभिगन्धपयैः दुरभिगन्धपयैः पदस्थानपतितः ।

इकार लक्ष्यत्र पर्याय परिमाण नारको ज्ञेय तत्पर पूर दशहजार परिमाण लक्ष्यत्र पर्यायना नारको यो यमल भागे दोलये तेदमो यमप्राये
 पूर परिमाण पर्याये वर्तते नारको यमलभाग अधिको, यम प्रागे भावना टोका यो जायते । नोदवस्त्रपञ्चवेहिं हिति । जेम लक्ष्यत्र पर्यायमो मा
 वना करो तिमल नोदवस्त्र पर्यायमो तदा काचितवस्त्र पर्यायमो करो तथा पीतवस्त्रपयैर्निहित करो गलत्र पर्यायेकरो पटस्थान पतित करो वा । सुरभिगन्ध
 पयैरेहिं हिति । सुरभिगन्ध पर्यायेकरो दुरभिगन्ध पर्यायकरो पटस्थान पतित करो वा । तित्तरवस्त्रपञ्चवेहिं इत्यादि । तित्तरवस्त्र पर्यायेकरो कटुवस्त्र पर्याय

योकायिकादीनामबगवमाया
 मनुमासहेयप्रागप्रमायाचयि
 नतुःस्वागपतितत्य तदनुसासहेयप्रागस्यासहेयमद्विजलत्यादस्येय स्थित्या हीनस्य
 मपिबलस्य प्य त्रित्यामपतित न नतुः स्वागपतितमसहेयमनुसवद्विहाग्यो रसम्भवात् स्य तयोरसम्भय इतिचत् सच्यते-इह प्रयिप्यादीना सयपप

केणठेण ज्ञते ! एव बुद्धइ—असुरकुमारण खणता पज्जाया पग्गप्पा ? गोयमा । असुरकुमारं अस्सुरकुमार
 स्स वद्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले तगाहणठाए वउठाणवअणिए, ठिईए वउठाणवअणिए, कालयन्तपज्जा
 वेहि उठाणवअणिए, एव नीलयन्तपज्जावेहि लोहिलहालिव्वयणपज्जावेहि सुक्खिलयणपज्जावेहि सुग्गिगधपज्जा
 वेहि दुग्गिगधपज्जावेहि तित्तरसपज्जावेहि ककुवरसपज्जावेहि कसायरसप० खयिलरसप० मज्जरसपज्जावेहि

[illegible][illegible]

नारकाद्यामिति दक्षितं, अथ नारकाणां पर्यायानामस्य पृष्टेन जगत्ता तदेव पर्यायानामस्य यत्कथं नत्वस्यत् ततः किमर्थं द्रव्योपेक्षासन्नायाभिप्रा-
नमिति-तदयुक्तमभिप्रायापरिहानात् इव न सर्वथा सर्वस्वपर्याया समसस्या किन्तु पदस्यानपत्तिता एतद्वानन्तरमव दक्षितम् तच्च पदस्यान-
पत्तितत्त्वं परिणामित्वमन्तरं न प्रवर्तत तच्च परिणामित्वं यथोक्तसदृशस्य द्रव्यस्येति द्रव्यतत्त्वस्यत्वमभिहितं तयान कक्षादिपर्यायेरेव पर्यायवान्
भीक्षुः किन्तु तच्चत् वेद्यनदुष्पेक्षिवोच्यतेतथापि तथा तत्तदप्यवशायस्यामयुक्ततयापीति स्वापमार्थे कृत्रकालाभ्या यत्तु स्यानपत्तितत्त्वं सुकृमिति
कृतं प्रसङ्गं तदवमवसितं नैरपिकाणां पर्यायानामस्यमिदानीमसुरकुमारेषु पर्यायाद्यपिपुष्टिपुराह-असुरकुमाराद्य जने । केवद्वया पल्लवा प०
इत्यादि । उक्त्यववाचः प्रायः सर्वव्यप्यसुरकुमारारिषु ततः सकलमपि यत्तु वैश्वं क्षतिदवदवसूत्रं मायद्वावनीयं, यस्तु विक्षेप उपदृश्यते तत्र यत् पृथि

सुयश्चन्नाणपञ्जर्वेहि विजगन्नाणपञ्जर्वेहि चरकुटसणपञ्जर्वेहि अथरकुटसणपञ्जर्वेहि त्रिहिदसणपञ्जर्वेहि
तथाणयन्निह । से तेण्ठेण ? गोयमा ! एव दुस्सुड-णेरइयाण नो सखेज्जा नो अ्सखेज्जा अणता पज्जा
वा पयससा । असुरकुमाराण जने ! केवइया पज्जाया पयससा ? गोयमा ! अणता पज्जावा पयससा । से

ज्ञानपर्यवे रवचिच्छानमपयवे मंत्यज्ञानमपयवे विनङ्गज्ञानमपयवे सद्दुद्वेदनमपयवे रवचिद्वेदनमपयवे पदस्यानपत्ति
त स्तत्तेनार्थेन । भीतम् । एवमुच्यते-नैरपिकाणां नो सख्येया नो असख्येया ज्ञानताः पर्ययाः प्रकृताः । असुरकुमाराणां ज्ञानं । कियन्ता प
यवाः प्रकृताः ? भीतम् । अन्ता पयवाः प्रकृताः । एवमुच्यते-असुरकुमाराणां समस्तः पर्यवाः प्रकृताः ? भीतम् ।

पर्यायेकरो युव यज्ञान पर्यायेकरो विमग्नज्ञान पर्यायेकरो अष्टवग्न पर्यायेकरो अष्टवग्न पर्यायेकरो पिय प्रत्यये पटस्यान
पत्तित कश्चो । ते तवे चर्चे दे भीतम् इमं यज्ञा नैरपिकाणां पर्याय सख्याता नवो ययज्जाता नवो यजन्तावे । असुरकुमाराण्य मते केवद्वया पयसा
रति । असुरकुमाराने चे मगदम् जेतका पर्याय यज्ञा मय कतर चे भीतम् । यजन्ता पर्याय यज्ञा । ते केच चर्चे विमग्नम् इमं यज्ञो-अं असुरकुमाराना

स्त्राणि चपरस्य तास्येव समयन्यूनानि ततः समयन्यूनगुणद्विधाभिवर्धयत्सहस्रस्थितिकः परिपूरकद्विधिशिवपेसहस्रस्थितिकापेक्षया षष्ठद्वेयप्रागहीनस्त्य
 रवेक्षयास्थितरोऽमद्वेयतागचिह्नः । तथा एकस्य परिपूरकानि द्वाविधशिवपेसहस्राणि । त्वति रपरस्य तास्येयानामुद्भूतावि नोभानि यानामुद्भूता
 दिक् द्वाविधशिवपेसहस्राणां संख्ययतमो भागः ततोऽन्यमुद्भूतादिन्यूनद्विधशिवपेसहस्रस्थितिकः परिपूरकद्विधिशिवपेसहस्रस्थितिकापेक्षया

णेरइया जहा असुरकुमारा तहा नागकुमारायि जाच यणियकुमारा । पुठविकाइयाण जते ! केवइया प
 ज्ञाया पणसा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पणसा । से केणठेण एव सुसुद्ध-पुठयिकाइयाण अणता पज्जवा
 पणसा ? गोयमा ! पुठयिकाइए पुठयिकाइयस्स वसुठयाए तुहे, पेवेसठयाए तुहे, ठेगाहणठयाए सिय
 हीणे सिय तुहे सिय अस्सहिए । जइ हीणे असुखेज्जजगहीणे या सखेज्जजगहीणे या सखेज्जगहीणे या
 असुखिज्जगुणहीण या । अइ अस्सहिए असुखेज्जजगअस्सइए वा सखेज्जजगअस्सहिए वा सखेज्जगुण
 मस्सहिए वा असुखिज्जगुणमस्सहिए वा । ठिइए सियहीण सियतुहे सियअस्सहिए, जइ हीण असुखिज्ज

प्रसाः । एव यथा नैरयिका यथा असुरकुमारास्तथा नागकुमारा अपि यावत्स्थानितकुमाराः । पृथिवीकायिकाना ज्वन्त । कियन्तः पयवाः
 प्रप्रसा ? गीतम । यमन्ता यययाः प्रप्रसाः । अय कनार्थमेव मुप्यते-पृथिवीकायिकाना मन्तः पयवाः प्रप्रसाः ? गीतम । पृथिवीकायि
 क पृथिवीकायिकस्य इव्यायतया तुल्यः अयगाइमार्थतया तुल्यः स्यात्तुल्यः स्यात्तुल्यः । यदि हीनो अंशकयेयता

ज्वात मागे अधिक हुवे सत्तात मागे अधिक हुवे यवता सत्तातगुण अधिक हुवे यवता सत्तातगुण अधिक हुवे । क्खित्तिने विप निरयान पवित
 दया कदाचित् भोग कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे । जइहेवे इत्यादि । आ भोग हुवे ता अंशक्यात भाग भोग हुवे यवता संख्यात भाग भोग
 इय ययया सत्तातगुण भोग हुवे । यइ अमभहिए इत्यादि । आ अधिक हुवे ता अंशक्यात भाग अधिक हुवे यवता संख्यात भाग अधिक हुवे यय

व्यमायुः शुभजनवयवार्थं शुभजनवयवस्य परिमादभावसिक्तानां देवते यदप्यन्वाक्षादधिके मुमुर्षे य द्विपटिकाप्रभादे सयसङ्गुपा शुभजनवयवप्रधाना
 पञ्चपटिसङ्ख्यादि पञ्चशतानि यद्विद्वद्विपटिकानि ईश्वरार्थं "सकल-द्विपटिकानि ईश्वरार्थं" सङ्ख्या-द्विपटिकानि ईश्वरार्थं । आवासिसपमादेव सुखलाग्नय
 गङ्गावर्ष ॥ १ ॥ पञ्चद्विपटिकानि पञ्चद्विपटिकानि । सुखलाग्नयगङ्गावर्षात् । एते मुमुर्षेर्षं पृथिव्यादीनां च स्थितिसङ्ख्यायतोपि सङ्ख्या
 ययंप्रमादाः ततोमासङ्गुपाद्विद्वान्यो समस्तः शेषविविधमित्रिकावमात्यर्थ-एकस्य चित्त पृथिवीकायस्थितिः परिपूर्वाणि द्वाविंशतिवर्षसह

कर्ककफासपञ्चवेहिं मउयफासपञ्चवेहिं गकयफासपञ्चवेहिं लङ्कायफासप० सीतफासप० उसिणफासप०
 निरुफासपञ्चवेहिं सुस्कफासपञ्चवेहिं स्यानिनिग्रोहियनाणपञ्चवेहिं सुयनाणपञ्चवेहिं उहिनाणप० मङ्ग
 सुन्नाणप० सुयस्युष्माण० विजगनाणपञ्चवेहिं चस्कुदसणपञ्चवेहिं स्यचकुदसणपञ्चवेहिं उहिदसणपञ्च
 वेहिंय ठठाणवक्रिण् । से तेणठेण ? गोयमा ! एवं मुचुठं-स्यसुरकुमाराण स्युणता पञ्चवा पञ्चसा । एतं जहा

पयवेः कपायरसपयवे रत्नरसपयवे मेपुसरसपयवे कर्ककपञ्चवे मुदुरपञ्चपयवे गुरुकस्यपयवे सपुवरपञ्चपयवे क्षीतरपञ्चपयवे रुजस्य
 स्यपयवेऽपिग्नरपञ्चपयवे रुजस्यपञ्चपयवे रासिनिग्रोहियनाणपयवे सुतज्जालपयवे रवपिज्ञानपयवे मत्यज्जालपयवे सुतज्जालपयवे विजङ्गुवा
 नयवे सुसुदसणपयवे रवसुवर्णनपयवे रवचिद्वर्णनपयवे यदस्यानपतित क्षतेनार्चनं भीतम । एवमुच्यते-असुरकुमाराणामन्ताः पर्यवाः प्र

स्थानिकमारु कने कइवो । मुदुविक्का । यार्च भंते केवइवा यस्सवा य इत्थादि । पृथिवी कादिकज के भवन्तं केतवा पययि कइवा म च० वे गो
 तम । यज्जता यर्वाय कइवा ते कइवे-यव केवे भवे के भवन्तं इमकइवा जे पृथिवी कायमा यज्जता यर्वाय वे-वे गोतम पृथिवी कायिक पृथिवी
 कादिकने इत्थाय पवे रुज के प्रसेमाक पवे पिय रुज के यज्जतायमायताये कदाचित् रुज कदाचित् पथिकजे । कइवेवे इत्थादि । का जोम
 इवे ता यज्जताय भाग जोम इवे भववा संज्जात मानसोम इवे संज्जातगुण केमइवे, यज्जता यज्जतायगुण पथिक इवे । को पथिक इवे ता यव

वयसद्वयस्वितिकापयसा सस्वेनयुषीनं तदयेवया तु परिपूषणविज्ञातिवयसद्वयस्वितिका सद्देययुष्याप्यपिका । एवमप्यापिकादीनामपि च
 तुरिन्द्रियपयपन्तानी स्वस्थोत्तरद्वयस्वितिकानुसारं स्थित्या त्रिस्थानपतितत्वं ज्ञातव्यम् । तिर्यकपञ्चद्विधाणां अनुव्याणा च वतुःस्थानपतितत्वं तेषां
 द्युत्कर्षत रीति पत्तोपमानि स्थितिः पत्तोपम व्यासद्वयवर्षषष्ठदशमावमतो ऽसक्येयगुणवृद्धिद्वयो रपि सम्भवा दुपपद्यते-वतुःस्थानपतितत्वं
 एवं व्यवहारावामपि तेषां प्रपञ्चतो वृद्धवर्षषष्ठद्विधितत्वा दुरत्कर्षतः पत्तोपमस्थितिः स्योतिषवैभानिधानां पुनः स्थित्या त्रिस्थानपतितत्वं यतो

? गीयमा ! व्याउकाइए व्याउकाइयस्व दक्ष्णयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले, उग्गाहणठाए वउठाणवक्रिए
 ठिइए तिठाणवक्रिए, वत्तगधरसफासमइअणाणसुयअयाणअथस्कुदसणपज्जावेहिय वउठाणवक्रिए । ते
 उकाइयाण पुच्छा, गीयमा ! अणतपज्जावा पणत्ता । से केणठेण भत्ते ! बुद्धइ-तेउकाइयाण अन्नता प
 ज्जावा पणत्ता ? गीयमा ! तेउकाइए तेउकाइयस्व दक्ष्णयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले, उग्गाहणठाए चउ

द्यार्थतया तुल्लोऽवगाहनार्थतया चतुस्स्थानपतितः । स्थितौ त्रिस्थानपतितः । वर्षात्परस्परज्ञानं तत्त्वज्ञानमुत्ताद्यानामवशुर्द्वैतपर्यवेद्यं पदस्थान
 पतितः । तैत्तिरीयानां पुच्छा भौतम् । अन्नम् । पर्यवाः प्रज्ञाः । अथ ज्ञानार्थेन ज्ञेयम् । एवमुच्यते-तेष्वप्यापिकानामन्ना पर्यवाः
 प्रज्ञाः ? भौतम् । तेष्वप्यापिकोऽवस्थापिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्लोऽवगाहनार्थतया चतुस्स्थानपतितः स्थितौ त्रिस्थानप

द्यार्थे करो तुल्ले प्रज्ञाये करो विषय तत्त्व ज्ञे, अवगाहनार्थतया चतुस्स्थान पतित एतत्वे ज्ञेयं पृथिवीकायिक तिस्र ज्ञातव्ये । स्थितिने विधेविज्ञान
 रतित ज्ञेयं पृथिवीकायिकतिस्र, अथ अन्त एव अण्य मति चक्षान अत चक्षान चने चणपदयन पर्याये करो पटस्थान पतित वद्ववा । तेववा
 र्यावति । तत्रस्थाव ना प्रत्य च हे भौतम् तेजस्कायिकने अन्नम् पर्याय वद्ववा । ते ज्ञेये ज्ञेये हे भगवन् इम वद्ववा ज्ञे तेजस्काय ज्ञे चनम्मा पर्याय
 ने प० ४ हे भौतम् तेजस्काय तेजस्कावने द्रव्यार्थे तुल्ले प्रज्ञाये करो वतु ज्ञान पतित ज्ञे, स्थितिने विधे विज्ञान पतित

समुद्रपञ्चावहीनः तदपठया तु इतरः सङ्गुप प्रागाप्यपिबः तथा यत्सदृगधिंशतिथयसहस्राद्ये स्थितिरपरस्यान्तमुद्भूतं माघी यये षपसहस्र या
 सप्तमुद्भूतादिभ निपतपरिमाळया सप्तया मुखित द्वाविंशतिथयसहस्रस्थितिप्रमाणं प्रवर्तिते तेनाक्तमुद्भूतादिप्रमाणस्थितिक परिपूषद्भावित्रालि

जागहीणे वा सखेज्जागहीणे वा सखेज्जागहीणे वा । अहं अस्मिद्वि ए अस्खेज्जागस्थस्मिद्वि ए वा सखेज्जा
 इजागस्थस्मिद्वि ए वा सखेज्जागुणमस्मिद्वि ए । वयोहि गधेहि रसेहि फासेहि मइष्टान्ताणपज्जवेहि सुयस्यसाण
 पज्जयेहिं अचस्कंदसणपज्जयेहिं लठाणवोद्वि ए । आउक्काइयाण नते ! केइइया पज्जवा पसुत्ता ? गो
 यमा ! अणता पळवा पसुत्ता । से केणठण नते ! एउ वुसइ—आउकाइयाण अणता पज्जवा पसुत्ता

[illegible]

बा सवयातगाव अधिका इवे पुर्वीची यादि पर्व्यागृह ने वरकथ की पिब स्थिति सवयातगाव भसासे कही तेमाट सवयातगाव भानि सन सुदि सभ
 वे नवी पवसे पिस्मान पतित कडवा माकना टोका की जाकवी । ववेदिं मवेदिं रवेदिं इत्यादि । सव पाप की मध की रस की रस की मतिपमान
 बर्बाये करो यतपमान पर्याये करो सवसवमान पर्याये करो बटखान पतित कडवा । पाचकायनी के भगवन् कतसा पर्याये क
 मा के मोतम सनमा पर्याये कमा । ते सव पर्ये के भगवन् इस कमा के सवकावना सनमा पर्याये कमा य उ० के मोतम पर्याये कमा पर्याये कमा

वयसश्च स्थितिकापेक्षया धृष्टेऽनुबन्धीनं तदपेक्षया तु परिपूरकगणितियपसहस्रस्थितिकः सङ्केतगुणान्यधिकः । एयमप्यापिकादीनामपि न
तुरिन्निमपमानो स्वस्योरुष्टस्वित्पनुसारं स्थित्या त्रिस्त्रासपतितत्वं प्रायगीयम् । तिर्यकपञ्चान्त्रियाका समुपाकां च यतुः स्थानपतितत्वं तेषां
दुर्बलं योऽपि पत्न्योपमानि स्थितिः पत्न्योपम आसद्दुपवर्षसहस्रप्रमासमतो ऽध्वन्येयगुणवृद्धिभावो रपि समवा दुपपद्यते - यतुः स्थानपतितत्वं
एवं व्यन्तराजामपि तेषां प्रपञ्चतो दृष्टावर्षसहस्रस्थितिकत्वा दुरुक्तपतः पत्न्योपमस्थितिः ज्योतिषवैमानिकाया पुनः स्थित्या त्रिस्त्रासपतितत्वं यतो

? गीयमा ! आउकाइए आउकाइयस्स दसुठयाए तुल्ले, उग्गाहणठाए चउठाणयकिणिए
ठिइए तिठाणबकिणिए, वन्तगधरसफासमइअण्णाणसुयअखाणअचस्कुदसणपज्जवेहिय उठाणबकिणिए । ते
उकाइयाण पुच्छा, गीयमा ! अणतपज्जावा पयससा । से केणठेण जत्ते ! सुसुइ-तेउकाइयाण अणता प
ल्लवा पयससा ? गीयमा ! तेउकाइए तेउकाइयस्स दसुठयाए तुल्ले, उग्गाहणठाए चउ

प्राचयतया तुल्योऽवगाहनाचयतया चतुस्त्याजपतितः । स्थितौ त्रिस्थानपतितः । सर्वगत्यरसस्पर्शमस्यज्ञानयुताज्ञानाचतुर्दशपर्यवस्य यदस्यान
पतितः । तत्ररक्षाधिकानां पुच्छा भोतम । समन्ताः पर्यवाः प्रपञ्चाः । अय कनार्थम जदत्त । एकमुच्यते-तेजस्वापिकानामनन्ता पर्यवाः
प्रपञ्चाः ? गौतम । तजस्वायिकस्तेजस्वायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यं प्रवशाचयतया तुल्योऽवगाहनाचयतया चतुस्त्याजपतितः स्थितौ त्रिस्थानप

द्रव्याये करो तुल्यं प्रवेगार्थे करो पित्तं तुल्यं ते, अवगाहनाचयतया चतुस्त्याजपतितः पतसे तेन पूर्वोक्तायिच तेनज जायते । स्थितिने विधेविज्ञान
गतित तेन पूर्वोक्तायिचतिमज्ज, अय मय इय अय मति पञ्चाम अत पञ्चान अने अणवणमन पर्याये करो यटस्यान पतित कज्जवा । तेवका
रयार्थति । तत्रस्वाय ना प्रउ च ते भोतम तेजस्वायिकने अमल पर्याय कज्जा । ते केवे यत्ते ते मगमन् इम कज्जो जे तेजस्वाय ने समन्ता पर्याय
ते प० च० ते भोतम तेजस्वाय तेजस्वायने द्रव्याये तुल्यं प्रवेगार्थे तुल्यं ते, अवगाहनाये करो चतुस्त्याज पतित ते, स्थितिने विधे विज्ञान पतित

समुद्रप्लवङ्गपत्तागद्दीनः तदपक्षया तु इतरः समुद्र प्रागाप्यपि न तथा गच्छत्यद्वा विक्षतिव्यसहस्यारि स्थितिरपरस्यान्तमुद्गते माद्यो धर्मे व्यपसहस्र या

नागदीने वा सखेजानागहीणे वा सखेजागुणहीणे या । अह अस्मिहि ए अस्खेजानागअस्मिहि ए वा सखेजा
इनागअस्मिदि ए वा सखेजागुणमस्मिदि ए । ययोहि गधेहि फासेहि मइअन्नागपजावेहि सुमअस्याण
पजावेहि अचरकुदसणपजावेहि ठठाणवफि ए । आठक्काइयाण नते ! केवइया पजना पससा ? गो
यमा । अणता पळवा पससा । से केणठण नते । एव बुसइ-आउकाइयाण अणता पजावा पससा

नहीनो वा सख्येयनामहीनो वा सख्ययगुणायपिको वा । अथाप्यपिकोऽसख्येयनामहीनो वा । सख्येयनामप्यपिको वा सख्येयगुणायपिका वा । सख्ययगुणायपिको वा । स्थितौ स्याद्विनास्तस्मात्सख्ययपिक । यदि हीनोऽसख्येयनामहीनो वा सख्येयनामहीनो वा सख्ययगुणायपिको वा । अथाप्यपिकोऽसख्ययनामप्यपिको सख्येयगुणायपिको वा । यद्येगश्चैरेवेस्त्वप्यस्य सख्यययैः श्रुताद्यानयैर्वैरचक्षुर्दृष्टानयैः । पदस्वानयति । अथाप्यपिकानां प्रदत्त । अथवाः प्रदत्ताः ? गीतम् । अथवाः पर्यवाः प्रदत्ताः । अथवाः पर्यवाः प्रदत्ताः ? गीतम् । अथाप्यपिकानामनाः पर्यवाः प्रदत्ताः ? गीतम् । अथाप्यपिकस्य द्रव्यायं तथा तुल्यः प्रदे

[illegible]

છુણતા પજ્ઞાવા પચાત્તા ! સે કેળઠેળ જતે ! એવ વુચ્છહ વળસ્સહકાદ્ધયાણ સ્થુણતા પજ્ઞાવા પચાત્તા ? ગોય
 મા ! વળસ્સહકાદ્ધ વળસ્સહકાદ્ધયસ્સ વસ્થઠયાણ તુલ્લે પવેસઠયાણ તુલ્લે ! તંગાહણઠયાણ ઘઠઠાણવક્કિણ
 ઠિદ્ધય તિઠાણવક્કિણ ! વન્તગધરસપાસમહ્ધુન્નાણસુયસુન્નાણસ્યધ્ધવક્કુવસણપજ્ઞાવેહિય તઠાણવક્કિણ સે
 તેણઠળ ? ગોયમા ! વળસ્સહકાદ્ધયાણ સ્થુણતા પજ્ઞાવા પન્તત્તા ! એદ્ધવિયાણ પુચ્છા , ગોયમા ! એદ્ધવિ
 યાણ સ્થુણતા પજ્ઞાવા પન્તત્તા ! સે કેળઠેળ જતે ! એવ વુચ્છહ એદ્ધવિયાણ સ્થુણતા પજ્ઞાવા પન્તત્તા ? ગો
 યમા ! એદ્ધવિણ એદ્ધવિયસ્સ વસ્થઠયાણ તુલ્લે પવેસઠયાણ તુલ્લે ! ઉગ્ગાહણઠયાણ સિયદ્ધીણે સિયતુલ્લે સિયથ્થ

[illegible]

ठाणवन्निणु ठिईणु तिठाणवन्निणु । वसुगधरसफासमइसुन्ताणसुयसुन्ताणसुचरकुदसणपज्जवेहिंय लठाण
 वन्निणु । वाउकाइयाण पुच्छा, गीयमा ! वाउकाइयाण सुणता पज्जवा पसुप्ता । से केणठेण नत्ते !
 एव युप्पइ-वाउकाइयाण सुणता पज्जवा पसुप्ता ? गायमा ! वाउकाइए वाउकाइयस्स वसुठयाए तुप्पे
 पदेसठयाए तुप्पे उंगाहणठयाए वउठाणवन्निणु ठिईणु तिठाणवन्निणु वसुगधरसफासमइसुन्ताणसुयसुन्ता
 णसुचरकुदसणपज्जवेहिंय लठाणवन्निणु । वणरसडकाइयाण नत्ते ! केवइया पज्जवा पसुप्ता ? गीयमा !

तिव । वरुणस्वरसपर्यसपञ्चानमुत्तानाचतुर्दशपर्यवे । वायुकायिकाता पुच्छा, गीतम् । वायुकायिकातामनन्ताः पर्ये
 वाः प्रज्ञता । अथ क्ताचैन नदन्त । एव मुच्यते-वायुकायिकानामनन्ताः पर्यधाः प्रज्ञताः ? गी० । वायुकायिको वायुकायिकस्य द्रव्यार्थतया
 तुल्यः प्रदयार्थतया तुल्यो ऽवयावमाद्यतया चतुस्त्वानपतितः । स्थितौ त्रिस्त्वानपतितः । वरुणस्वरसपर्यसपञ्चानमुत्तानाचतुर्दशपर्यवे
 च चटस्त्वानपतितः । वनस्पतिकारिकाता नदन्त । त्रिचयन्तः पर्यधाः प्रज्ञताः ? गीतम् । अमन्ताः पर्यधाः प्रज्ञताः । अथ केनार्चैन नदन्त ।

कइवा, वच नञ्च एव स्पष्टमिति चञ्चान नुत चञ्चान अचचदयन वयाये करो पटुञ्चान पतित वे । वाउकाइयाचति । वाउकायिक ना प्रत्यु क्त
 र वे गीतम् वायुकायिकने चनन्ता पर्याय कइवा । ते केवे चवे वे मगवन् एम कइवा वाउकाइिकने चनन्ता पर्याय वे गीतम् वाउकाय वायुकाइने
 द्रव्यावे तुल्य प्रदयार्थे करो पित तद्व वे अवयावमाद्यतावे करो चतुस्त्वान पतित । क्तिने बिदे त्रिस्त्वान पतित, वच नञ्च एव स्पष्टमिति च
 चान नत चञ्चान अचचदयन पर्याये करो पटुञ्चान पतित वे । वचछाएवाइयाचति । वनस्पतिकारिकातावे मगवन् केतका पर्याय कइवा प्र च वे
 भोतम् चनन्ता पर्याय कइवा । ते केवे चवे वे मगवन् कइवा वनस्पतिकारिका वनस्पतिकारिका
 द्रव्यावे तुल्य प्रदयार्थे पित तुल्य वे, अवयावमाद्यतावे चतुस्त्वान पतित । क्तिने बिदे त्रिस्त्वान पतित । वच नञ्च एव स्पष्टमिति चञ्चान नुत च

છૂણતા પજ્જવા પચ્છા ! સે કેળઠેળ નતે ! એથ વુચ્છહ ઘળસ્સહકાહયાણ છૂણતા પજ્જવા પચ્છા ? ગોય
 મા ! ઘળસ્સહકાહુ ઘળસ્સહકાહયસ્સ વ્વછઠયાણુ તુલે ! ઉગાહણઠયાણુ વ્વછઠયાણુ તુલે
 ઠિહય તિઠાણયઠિહુ ! વન્તગધરસપાસમહચ્છન્નાણસુચચ્છન્નાણચ્છમ્મસ્ફુવસણપજ્જાવંહિય વ્વછઠયાણુ તુલે
 તેણઠણ ? ગોયમા ! ઘળસ્સહકાહયાણ છૂણતા પજ્જવા પન્તત્તા ! વેહ્વિયાણ પુચ્છા , ગોયમા ! વેહ્વિ
 યાણ છૂણતા પજ્જયા પન્તત્તા ! સે કેળઠેળ નતે ! એથ વુચ્છહ વેહ્વિયાણ છૂણતા પજ્જયા પન્તત્તા ? ગો
 યમા ! વેહ્વિહુ વેહ્વિયસ્સ વ્વછઠયાણુ તુલે પવેસઠયાણુ તુલે ! ઉગાહણઠયાણુ સિયદ્દીણે સિયતુલે સિયચ્છ

[illegible]

स्मिहिए । यदिहीने अस्वेज्जनागदीने वा सखेज्जनागदीने वा सखेज्जगुणहीने वा अस्वेज्जगुणहीने वा ।
 अह अस्मिहिए अस्वेज्जनागमस्मिहिए वा सखेज्जनागमस्मिहिए वा सखेज्जगुणअस्मिहिए वा अस्वेज्जगुणअस्मि
 हिए वा छिहिए तिठाणवक्रिए । वन्तगंधरसफासअज्ञाणिओहियनाणसुअनामतिसुअनाणसुअनाणसुअ
 खुदसणपज्जवेहिय लठाणवक्रिए । एवं तहदियाणवि । एवं चउरदियाणवि, जवर दो दसणा चकुद
 सण अचकुदसणपज्जवेहिय लठाणवक्रिए । पचिदियतिरिक्कओणियाण पज्जवा जहा जेरइयाण तहा
 नाणियइहा । मणुस्साण जत ! केवइया पज्जवा पक्कप्पा ? गीयमा ! अणता पज्जया पक्कप्पा । से केणठे
 ण जते ! एवं दुच्चइ मणुस्साण अणता पज्जवा प०, गीयमा ! मणुस्सस्स वच्चठयाए तुह्वे पवेसठयाए

येम जदप्पा । एवमुच्यते-हीन्द्रियाकामज्जाः पयवाः ? गीतम । हीन्द्रियो हीन्द्रियस्य प्रव्यापयतया तुल्यो प्रवेणापयतया तुल्यो ववाइभापयतया
 स्याद्दीनाः स्यात्तुल्यः स्यादव्यापयकः । यद्वि हीनोऽसक्येयज्जागदीनो वा सखेयज्जागदीनो वा सखेयगुणहीनो वा । असक्ययगुणहीनो वा । अया
 व्यधिकोऽसक्ययज्जागधिको वा सखेयज्जागधिको वा सखेयगुणधिको वा । स्थितौ चित्तानपतितः । वक्कमन्तरस

एवं तदवियाकवि । तेहद्रीने यदि इमज कज्जवा । एवं चउरदियाकवि । वीरिइहीने पचि एमज कज्जवो एतका विमोह इगम हाय अचुइमन पने अ
 पचउरयन पवांचे करी वटक्कान पतित कज्जवो । पचिदियतिरिक्क ओरिकापति । पचिअय तियक्क ओरिका जे पचाय चिम मारको जे कज्जा विम
 कज्जवा । मवप्पाय भतेति । ममचने के मगबन् केतका पर्याय कज्जा म चत्तर केरोतम चमक्का पर्याय कज्जा । ते केने पवे के ममबन् इम कज्जा
 ममचने चमक्का पर्याय कज्जा म चत्तर के रोतम ममचने ममच प्रव्याये करी तुवव प्रवेयाये करी पिय तुवव चयकाकमाये करी चतक्कान पतित
 स्थितिचे करी चतुक्कान पतित वच गण्ठ रस एवम मतिक्कान सुतप्पान अकवि ममपयम ज्ञान पवांचे करी पदक्कान पतित कज्जवा सिक्कप्पान पवांचे

न्योतिषाया अपश्यमायु पत्योपमायुनाग वरकर्म्यती धर्पलक्षणाधिके पत्योपमं धैमाविद्वानो अपश्यं पत्योपमं उत्कृष्टं त्रयप्रिंश्रस्रस्रगरीपमाणि दशको
टाकोटीधस्योपपन्नमाद्य च सागरीपमत सायाभ्य धर्मेणुबुद्धिहास्यसम्पदाय स्थितिः त्रिस्थामपतितता सुपसुत्रज्ञानात् सुगमत्वात्
स्वयं सावनीया तद्व च सामान्यतो नैरधिकारीनां प्रत्यक्षपर्यायानर्थं प्रतिपादितमिदानीं जपस्याद्यवगाहनाद्यपि कृत्य तेवामेव प्रत्यक्ष पर्यायाय

तुल्ये उगाहणठार चउठाणवक्रिण् । ठिइण् चउठाणयक्रिण् । वन्तगधरसफासक्यान्निणिद्योहियनाणसुयनाण
उहिनाणमगपज्जयनाणपज्जवहिय ठठाणयक्रिण्, केवलनाणपज्जवोह तुल्ये तिहिं सुक्काणहि तिहिं दसणेहि
ठठाणयक्रिण् केवलवसणपज्जवोह तुल्ये । वाणमतरा उगाहणठार ठिइण् चउठाणवक्रिया वन्तादीहि ठठाण

रपशोत्रिनिबोपिबज्जानमुतज्जानमत्तज्जानमुताज्जानाचउदसंनपवयेय पट्स्थानपत्तिः । एव श्रीश्रयाशामपि । एव चतुरिन्निवाशामपि, नवर
इइशाने चउरइशानाचउदसंनपवयेः पट्स्थानपत्तिः । पण्यन्निवयितमयोनिबाना पयवा यथा नैरधिकार्या तथा नैरधिकार्या । मगुय्याः ॥ १०॥
किपत्ताः पयवाः प्रसन्ताः ॥ गौतमः । जलताः पयवाः, तस्मेनाऽर्थेन जदन्ता । एवमुच्यत मनुय्याशामनन्ताः यथा प्रसन्ताः ॥ गौतमः । मनुय्यो
मनुय्यस्य द्रव्यायेतया तुल्यः प्रदशार्थकया तुल्योऽवगाहनाचउदसंनपवयेः पट्स्थानपत्तिः । स्थितौ चतुःस्थानपत्तिः । वणमन्तरस्वपशान्निनिबोपिबज्जान
प्रतज्जानादपिज्जानममः पयवज्जानमपर्यवेः पट्स्थानपत्तिः । कवलज्जानमपर्यवेः पट्स्थानपत्तिः । वक्रिण्ठारान्निनिबोपिबज्जान
यवज्जुल्यः । मानयान्तराः अवगाहनाचउदसंनपवयेः पट्स्थानपत्तिः । वक्राविक्रिणः पट्स्थानपत्तिः । व्यातिक्रयेमानिकावपि एवमेव नवर
करो तद्व च चज्जान च च इयमे करो पट्स्थान पत्तिः केवलज्जानम पर्याये करो तद्व छे । मापमंतरति । मानयान्तर यथाज्ञानाये करो स्थितिचे

करो जत स्थानपत्ति यव पादिके करो वट्स्थान पत्तिः । वादसिधयेमाविवाचित । व्यातिक्रये मानिका पित् एमका कदवा एतसा विमये स्थिति
ने विव निस्साम पत्ति कदवा । अवगाहनाचउदसंनपवये नैराद्यावति । अवयव यवगाहना का नारकोने के भगवन् कतसा पर्याय कथा म० जगर हेयो

क्रिया जोड़िसियेमाणियायि एवचेव नवर ठिईए खउठाणवक्रिया । जहन्तीगाहणाण
 जते । णेरइयाण केयइया पख्खा पयासा ? गोयमा ! श्रणता पजावा प० । से केणठेण जते । एव बुच्चइ-
 जहन्तीगाहणाण जते णेरइयाण केवइया पजावा पयासा ? गोयमा ! श्रता पजावा पयासा । से केण
 ठण जते । एव बुच्चइ जहन्तीगाहणाण णेरइयाण अनता पटावा पयासा ? गायमा ! जहन्तीगाहण
 ए णेरइए जहन्तीगाहणस्स णेरइयस्स दसठयाए तुल्ले उमाढणठयाए तुल्ले ठिईए खउ
 ठाणयक्रिए । वणगधरसफासपख्खवेहि तिहि नाणेहि तिहि श्रणाणेहि तिहि दसणेहि वठाणयक्रिए । उ

[illegible][illegible]

प्रतिपादयिषुराह-ब्रह्मयोगसूत्रार्थं प्रते । प्रत्यादि ॥ सुगम ॥ मवरंठिहैएबसठाखकिए ॥ इति ॥ अपन्यावगाहनी हि दशत्रयं सख्खादिस्त्रिस्त्रिंशोपि
नवति रथमत्राया मुस्तुष्टिस्थितकोपि सप्तमभरकपूचिष्यातोत्रोपपद्यते, स्थित्या ननुःस्थानपतितत्वात् ॥ तितिं नाखादिं तितिं सखावाहिति ॥ इव

क्षोसोसाहणयाण नते । नेरहुयाण केवहुया पज्जवा पयससा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पयससा । से के
णठेण नते । एयं दुच्चड-उक्कोसोसाहणयाण नेरहुयाण अणता पज्जवा पयससा ? गोयमा ! उक्कोसोसाह
णए नेरहुए उक्कोसोसाहणस्स नेरहुयस्स दधुठयाए तुल्ले पंदसठयाए तुल्ले । उग्गाहणठयाए तुल्ले । ठितीए
सियमहीणे सियतुल्ले सियअस्सहिए । यदि हीणे अस्सखंअइनागहीणे वा सखेअइनागहीणे वा । अह अस्स
हिए अस्सखेज्जागअस्सहिए वा सखेज्जागमस्सहिए वा यत्तगधरसफासपज्जवेहि तिति नानेहि तिति अ
याणंहि तितिं दसणेहि ठठाणवकिए । अजहुकुक्कोसगाण नते ! केवहुया पज्जवा पयससा ? गोयमा !

रक्तमार्चनं नदन्त । एवमुच्यते उत्कर्षार्थोऽवगाहनकामा निरयिकाशाननन्ताः पयवाः प्रपसाः ? नीतम । उत्कर्षायमाह नक्तनीरयिक उत्कर्षायमाह न
क्तेनिरयिकस्य द्रव्यापत्तया तस्यः प्रदेष्टायेतया तुल्योऽवगाहनायतया तुल्यः स्थितौ स्वाद्वीनाः स्वातुल्यः-स्वावप्यचिकः । यदि हीनोऽसुखेया
गहीनोऽना सुहुयप्रागहीनोऽवा अयाध्यपिकः अथवेयसागाध्यपिकः सखेयप्रागाध्यपिको वा , अथवत्तरसपययवेद्विनिश्चोनेतिप्रिप्रप्रागे
विनिश्चिनैः पदस्थानपतितः । अत्रपत्योरुत्कर्षावमाह नकाणा नीरयिकाया नदन्त । अयन्ताः पयवाः प्रपसाः ? नीतम ! अयन्ताः पयवाः

तित्ये करो कर्णादिन् हीन कदाचित् सम कदाचित् पचिक । से हीन इवे अथयगत भागहीन इवे सखतात भाग हीन इव । से पचिक इवे ते प
नयपात भाग पचिक इवे सखतात भाग कचिक इवे । अथ गत्य रस रपय पचीये करो अक ज्ञाने करो अथ अज्ञाने करो अथ दशने करो पटस्याम प
तित कचरो । पचअमुखासगालं नरयाजति । मध्यम अवगाहना ना मारको ने से मयवन् मोतसा पर्याह कच्चा प्र० उत्तर से मोतम चमन्ता पर्याय

यदा गर्भमुच्छान्तिवसन्निद्रिया भवेत्पूत्यहस्ते तदा स मारकापु-संवेदमप्रथमसमयस्य पूर्वगहीतीदारिकाशरीरपरिचाटं करोति तस्मिन्नेव सम-
सम्पदुर्ध्वे स्त्रीचि ज्ञानानि निष्प्रादुर्ध्वे स्त्रीचि ज्ञानानि समुत्पद्यन्ते ततोऽविद्यहेतवियद्येष्वेव वा गत्वा वैक्रियशरीरसहात करोति यस्तु सम्पूर्णम-
वस्मिन्पञ्चन्द्रिये भरकचरपथात् तस्य तदानीं विप्रकृष्टान् नास्तीति ज्ञापयामाह तस्या ज्ञानया द्रष्टव्यानि ह त्रीचिचिंति । उत्कृष्टगण-
मनये सित्या शानौ युद्धौ च द्विस्त्यामपतितत्त्व तद्यथा-असंख्येयप्रागहीनत्वं वा संख्येयप्रागहीनत्वं वा तथा असंख्येयप्रागहीनत्वं वा संख्येयता
वापिबल्य वा ननु सख्येयाऽवस्थयगुणवृद्धिप्राप्ती कस्या विधिचे दुष्यते-उत्कृष्टगणवद्वाचि नैरयिका । पञ्चयगु-शतप्रमाणाः त य सप्तसप्तदशयु-

सृणता पञ्चया यन्त्रज्ञा । से केणठेण जन्ते ! एव सुसुह-सृजहन्नुक्कोसगाण गेरइयाण सृणता पञ्चवा
पयसहा ? गोयमा । सृजहन्नुक्कोसए गेरइएसृजहन्नुक्कोसगस्स गेरइयस्स वसूठयाए तुह्मे पदेसठयाए तुह्मे
उगाहणठयाए तुह्मे । ठिहए सियहीणे सियतुं सियस्यस्रहिए । जदि हीणे स्यसखिज्जइनागहीणे वा
सखेज्जइनागहीणे था , सृहस्यस्रहिए स्यसखेज्जइनागस्यस्रहिए सखेज्जइनागस्यस्रहिए या वन्तगधरसफा
सपज्जवेहि तिहि नाणेहि तिहि स्यन्ताणेहि तिहि दसणेहि ठाणवन्तिए । सृजहन्नुक्कोसोगाहणगाण

प्रपत्ताः अजपप्पोत्कृष्टगणवद्वाचिनेरविकोऽवपप्पोत्कृष्टगणवद्वाचिनेरविकस्य इवार्थतया तुल्य प्रवेसायतया तुल्योऽवगाहनायतया स्या
दीनः स्यात्तुस्य । स्यादव्यपिच । यदि हीनोऽववेयप्रागहीनो वा संख्येयप्रागहीनो वा संख्येयगुणवदीनो वा । अथा
अधिकोऽवकवप्रागाधिको वा संख्येयप्रागाधिको वा संख्येयगुणाधिको वा । स्थितौ स्मादीनः स्यात्तुस्य । स्याद
अथा , ते कवे पदे से मसकम् इय कक्षा ने मध्यम पञ्चगङ्गा ना मारको ने सज्जा पय्यीच कक्षा म कसर से शीतस मध्यम पञ्चगङ्गा ना मार
को मध्यम पञ्चगङ्गा ना मारको ने तुल्य के इव्याच पदे करो प्रवेसाच पदे तुल्य वा पञ्चगङ्गाये करो अद्यापि चीन कद्याचित्तुस्य अद्यापि य

पिब्या तत्र चपम्या स्थितिं वृत्तिशक्तिसागरोपमादि उत्प्लुष्टा भवद्विंशस्तसागरोपमादि ततो सहेयास्येयजागणानियतिरेय पटेते न सहेयगुणसहा
 नियुद्दी तथा चोररुहावगाहनाभां ग्रीवि घातानि ग्रीण्यपमानि वा भियमा हेवितव्यानि न प्रजनया प्रजनयाहृतोः समुप्यिमासस्त्रिपप्यन्त्रियोत्पा
 दस्य तेषामसम्भवात् अजपन्तोरुहावगाहनासूत्रे यदवगाहनाय चतुःस्वामपतितत्वं सर्वय-अजपम्योत्प्लुष्टावगाहनादि स्ववक्ष्यम्याङ्गुलासहेयजागण
 त्वरतो मनात् पुरस्तराङ्गुलासहेय जागणा वारज्य याधदङ्गुलासहेयजागणानि पप्यन्तु यतानि तावदवसथः तत सामान्यमैरयिकसूत्रव्याघ्राप्युपप

नते ! जेरहुयाण केवहया पज्जाया पयसा ? गोयमा ! अणता पज्जाया पयसा । से केणठेण नते । एव
 सुस्रह-अजहन्तुक्कोसोगाहणाण अणता । पज्जाया पयसा ? गोयमा ! अजहन्तुक्कोसोगाहणाण जेरहुए
 अजहन्तुक्कोसोगाहणस्स जेरहुयस्स वसूठयाए तुल्ले उगाहणाए सिय हीणे सिय तुल्ले
 सिय अण्णहिए । जइ हीणे अससेज्जइजागहीणे वा सखेज्जइजागहीणे वा असखिज्ज
 गुणहीणे या । अह अण्णहिएवा असखिज्जागमण्णहिए वा सखेज्जइजागमण्णहिए वा सखिजागुणअण्णहिए

ल्यपिबः । यदि हीनोऽवश्यपन्नागहीनो वा सख्यपन्नागहीनो वा असख्यपन्नागहीनो वा । अद्याप्यपिक्कोऽवश्यपन्नामा

दिक् च । जइ हीने इत्यादि । जे हीन हुवे असपदात भागहीन जे पयवा सदातात भागहीन हुवे सपदात गुण हीन हुवे पयवा असदातात गुण हो
 न हुवे । पय पयदिदति । जे पयिक् हुवे उठयात भाग पयिक् हुवे पयवा सदातात भाग पयिक् हुवे सदातात गुण पयिक् हुवे पयवा असदा
 ता गुण पयिक् हुवे स्थितिने विवे कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् पयिक् हुवे, जे हीन हुवे असदातात भाग हीन हुवे पयवा सदातात भा
 ग हीन हुवे पयवा असदातातगुण हीन हुवे पयवा सदातात गुण हीन हुवे, अत जे पयिक् हुवे असदातात भाग पयिक् हुवे सदातात भाग पयिक्
 हुवे पयवा सदातातगुण पयिक् हुवे पयवा असदातात गुण पयिक् हुवे, पय गम्य रस रपय पयिक् हुवे, पय पयानि करो पय पयानि करो पय दग्गे

गाह्यगण नैरड्याण अग्रता पञ्जाया पणत्ता । जहण्ठि ईयाणं जते ! नैरड्याण केवइया पञ्जाया प०
 ? गीयमा । अग्रता पञ्जाया पणत्ता । से केगठेण जते ! एव युच्चइ-जहण्ठि ईयाण नैरड्याण अग्रता
 पञ्जाया पणत्ता ? गीयमा ! जहण्ठि तीए नैरड्याण जहण्ठि तीए नैरड्याण जहण्ठि तीए नैरड्याण जहण्ठि तीए
 तुहे उगाहणत्ताए चउठाणत्ताए । ठिईए तुहे वन्तगधरसफसपञ्जावेहि तिहि नाणेहि तिहि तिहि अन्वाणेहि
 तिहि दत्तणेहि उठाणत्ताए । एव उक्कोसठिईए । अजहण्ठि तीए । एव नवर सठाणे चउठाणत्ताए
 जहण्ठि तीए । नैरड्याण केवइया पणत्ता ? गीयमा ! अग्रता पञ्जाया पणत्ता । से
 केगठेण जते ! एव युच्चइ - जहण्ठि तीए नैरड्याण अग्रता पञ्जाया पणत्ता ? गीयमा । जहण्ठि तीए

आवो विवत्त पयसाः प्रपसा । गीतस । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा ।
 प्रपसाः ? गीतस । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा ।
 स्थितो तुर्य । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा ।
 अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा ।
 अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा ।

अ विव तदय वव गन्ध रस अग्र पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा ।
 विव नारको ने पासाया ववसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा ।
 अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा । अग्रताः पयसाः प्रपसा ।

[illegible]

या असस्वेज्जगुणस्यप्रहिण्वा । छिद्रेण सियहीने सियतुस्वे सियथ्यप्रहिण् । जदि हीने असस्वेज्जनागहीने वा
सस्वेज्जनागहीने वा असस्वेज्जगुणहीने वा सस्वेज्जगुणहीने वा । अह अस्यप्रहिण् असस्वेज्जनागस्यप्रहिण्वा
सस्वेज्जनागस्यप्रहिण् वा सस्वेज्जगुणस्यप्रहिण् वा सस्वेज्जगुणस्यप्रहिण् वा सस्वेज्जगुणस्यप्रहिण् वा
नेहि तिहिं स्यन्नाणेहि तिहिं वसणेहि ठागवन्निण् । से तेणठेण एव युच्चह ? गोयमा ! अजहन्नुकोसो
पिबो वा बंसेयजानापिबो वा सस्वेयजानापिबो वा सस्वेयजानापिबो वा

बद्धस्यानपतितस्तत्तर्पाय न नीतम् । सकथम्योक्तुष्टावगाहकानां भेदप्रियायात्मनाः प्रयथाः प्रसस्ताः । अप्राम्यत्यितिकानां ज्ञानम् । भेदवि
चरो षट्ज्ञान पतित इवे ते तेषु ज्ञेयेषु भौतस्य ज्ञानं ज्ञायमानम् ।

तिना नारको ने से सगबन्ध कितसा पर्याव कछा प्र कपार के गीतस सनका पर्याव कछा ते केवे पर्ये इम कछो जयन्त कितिमा नारको ने बन
ना पर्याव प० ४ के गीतस जयन्त कितिमा नारको जयन्त कितिब नारको न द्रव्याये तुल्य बहेयाये तुल्य सवगाहनाये ननु काम पतित, किति

तस्य समयापि ब्रह्मवयसश्च चारुभ्योत्कपत समयो न त्रयस्त्रिंशत्कारोपमाणा मवाप्यमानत्वात्, अप्यप्युक्तकालसिद्धादिभूतानि सुप्रतीतानि

वा पण्यता । से केणठेण भते । एव युष्मद्—जह्णुअग्निणोहियनाणीण नेरुहयाण स्युणता पज्जावा पम्भहा गोयमा । जह्णुअग्निणोहियनाणीनरुहए जहन्ताग्निणोहियनाणिस्स नेरुहयस्स वस्सठयाए तुल्ले पवस ठयाए तुल्ले उग्गाहण्ठयाए चउठाणवन्निए । ठितीए चउठाणवन्निए । वयुग्गधरसफासपज्जवेहि वठाण वन्निए । स्याअग्निणोहियनाणपज्जवेहि तुल्ले सुयनाणत्तिनाणपज्जवेहि वठाणवन्निए । एव उक्खोसाज्जिणि ओहियनाणीयि । स्युजह्णुअमणुक्खोसाग्निणोहियनाणीवि एवचेय नधर स्याअग्निणोहियनाणपज्जवेहि स

प्रज्ञा ? गौतम । यत्तस्माः पयवाः प्रज्ञा सात्कर्णार्थेन जवन्ता । एवमुच्यते—अप्यग्निनिबोधिकाजिना निरयिकावामन्ताः पयवाः प्रज्ञाः ? गौतम । अप्यग्निनिबोधिकाजिनिरयिको अप्यग्निनिबोधिकाजिनिरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेष्टव्यतयावा तुल्योऽवगाहना यतया बहु स्थानवर्तितः । स्थितौ यत्तु स्थानवत्त्वपयवैः पदस्थानवर्तितः । अग्निनिबोधिकाजिनापयवैः स्तुल्यः सत्तत्त्वानां यत्पिज्ञानपयवैः पदस्थानवर्तितः । एवमुक्तुष्टाग्निनिबोधिकाजिनोपि । अत्राप्यनुत्प्लुष्टाग्निनिबोधिकाज्यप्यव वैव नधरमाज्जिनिबोधि

नारकोने वेभनवन कतवा बर्बाद कट्ठा य उत्तर वेीतम यत्तस्मा पर्याय कट्ठा, ते खवे जेतं वे भवन्तु इम कट्ठा—अवन्वाभिनिबोधिक् ज्ञानो ना रकोने यत्तस्मा पर्याय कट्ठा य उत्तर वेीतम अवन्वा अभिनिबोधिक् ज्ञानो नारको अवन्वा अभिनिबोधिक् नारको ने द्रव्यार्थे तद्वत् प्रदेष्टव्ये तद्वत् पदगाहनायै चतुस्थान वर्तितः । स्थितिन विधे चतुस्थान वर्तितः । यच्च गण्ड रस अय्य पर्यायै करो पटस्थान वर्तितः । अभिनिबोधिक् ज्ञान पर्यायै करो नद्वत् युत्तज्ञान यत्त पर्यायिज्ञान पर्यायै करो पटस्थान वर्तितः । यच्च कट्ठायाभिनिबोधिक् ज्ञानो वि । एवम् उक्कट्ठा अभिनिबोधिक् ज्ञानो पिय कट्ठा वा । यत्तद्वत्तत्त्वज्ञानाभिनिबोधिक् ज्ञानो वि एवं वेवर्तितः । मध्यमा अभिनिबोधिक् ज्ञानो ने यच्च एवम् आहवा एतत्तो विधेय अभिनिबोधिक् ज्ञान प

गकालए नेरुए जहन्तगुणकालगस्स नेरइयस्स दञ्जठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले ठंगाहणठयाए चउठाण
यहिण । ठितीए चउठाणवहिण । कालवयपज्जवेहि तुल्ले अयससंहि वयग ररसफासपज्जवेहि तिहि ना
णेहि तिहि अन्नाणेहि तिहि ठसणेहि ठठाणवहिण सेतेणठेण गोयमा । एउ युसुह - जहन्तगुणकालया
ण नेरइयाण अणता पज्जवा पयाता । एव उक्कोसगुणकालएयि । अजहसमणुक्कोसगुणकालएवि एवचेव
नयरे कालवयपज्जवेहि ठठाणवहिण । एव अयससा चत्तारि वया दो गथा पच रसा अठ फासा ज्ञाणि
यहा । जहन्तानिणिथोदियनाणीण जने । नेरइयाण केवइया पज्जवा पयहा ? गोयमा । अणता पज्ज

नेरपिको वयगगुणकालगस्स नेरपिकस्स ब्रह्मावतवा सुवण प्रदद्यायेतपायि तुस्सोऽवगाहनायतया वत स्वासपतित । त्वितो वतुस्वामपतित ।
कालवयपयेवे सुवणाऽवयेवेववन्तरसस्पकापयवेकिप्रिष्टानेकिप्रिष्टाने पट्ठयामपतितस्वामार्चन भवत्त । एवमुच्यते-अयमगुण
कालगस्सनेरपिकावयनत्ताः पयवा प्रज्जता । एवमुच्यगुणकालकोयि । अयमगुणकालकोयवन्तेव नवर कालवयपयवे पट्ठयामपतित
एवमवयवावत्तारोवहाः द्वौ मयौ पन्थ रसा अठो रूपदो जयितव्याः । जयम्यानिनिबोचिकघागिना भवत्त । नेरपिकावा विपत्तः पयवाः

एव इम कक्षा जयन्तगुण कालग मारको न यजन्ता पर्याय कक्षा प्र व हे गौतम जयन्तगुण कालग मारको जयन्तगुण कालग मारकोनि द्रव्यावे
तव प्रयेये तस्य यवतावकोवे वतस्थान पतित । स्थितिने विष वतुस्थान पतित काववर्ण पर्याये तव, यथयेय वर मय रस यय पर्याये करो नव
यान नव यज्ञाने करो नव यज्ञाने करो पटस्थान पतित । तेव तेवे येयेगौतम इम कक्षा जयन्तगुणकालग मारकोने यजन्ता पर्याय यहा । एव कक्षास
नवकाववर्चति । इमज वत्तवट गुण कालगन पवि ववहा । यजन्तयमवकावति । मध्यम गुण कालगने पवि यजन्त ववहा पतता विपिय काल ग
पर्यायेकरो पटस्थान पतित । एमज यथयेय चार नव रागवज्ज पोच एव पाठ परव ववहा । जयवाभिनिवाविपति । अयम पभिनिवाविप यो

नम्य भूमपापिकदशवपसद्वेन्य धारप्योरकपत सस्योनत्रयविहारसागरोपभाषा भवाप्यमानत्वात्, अप्यगुणवशात्तिसूत्राणि सुप्रतीतानि

वा पणप्ता । से केणठेण चते । एव युच्चद—जहसुअन्निणिथोहिंयनाणीण नेरुडयाण अणता पज्जाया पसप्ता
गोयमा । जहसुअन्निणिथोहिंयनाणीनरुडए जहन्वाअन्निणिथोहिंयनाणिस्स नेरुडयस्स दसुठयाए तुल्ले पदस
ठयाए तुल्ले उग्गाहणठयाए चउठाणवअणिए । ठितीए चउठाणवअणिए । ययागधरसफासपज्जयेहि त्ठाण
वअणिए । अन्निणिथोहिंयनाणपज्जयेहि तुल्ले सुयनाणठिंनानाणपज्जयेहि त्ठाणवअणिए । एव उक्कोसाअन्निणि
थोहिंयनाणीवि । अज्जहसुअणुक्कोसाअन्निणिथोहिंयनाणीवि एवचेय नधर अन्निणिथोहिंयनाणपज्जयेहि स

प्रसप्ताः ? गीतम् । यमत्ताः पयवाः प्रसप्ता कात्कर्तार्यम् नरत्त । एवमुच्यते—अपम्याभिनिबोधिकात्तानि नैरपिकायामनत्ता पयवाः प्रस
प्ताः ? गीतम् । अपम्याभिनिबोधिकात्तानि नैरपिको अयम्याभिनिबोधिकात्तानि नैरपिकस्य द्रव्यायेतया तुल्यः प्रदेयग्यतयावा तुल्योऽवगाहना
यतया चतु स्थानपतितः । स्थितौ चतुःस्थानपतितः । अणन्तरखरुपशोपयवैः पटस्थानपतितः । आभिनिबोधिकात्तानपयवै स्तुल्यः अतस्ताना
वपिप्रानपयवै पटस्थानपतितः । एवमुक्तुहाअन्निबोधिकात्तानि नैरपि । अयम्याभ्युत्पृष्टाअन्निबोधिकात्तान्यप्येवं नैव नवरमाभिनिबोधि

नारकाणि केभमवन कतवा ययाद कट्टा म अतर केगीतम अमत्ता पयाद कट्टा त कचे कचे के भयवन् इम कट्टा—अयम्याभिनिबोधिकात्तानो ना
रकोन यमत्ता पयाद कट्टा म अतर के गीतम अयम्य आभिनिबोधिकात्तानो नारको अयम्य आभिनिबोधिकात्तानो नै द्रव्याये तुल्य प्रदेयार्थे तस्य
यममाहमाये चतुस्थान पतितः । स्थितेन त्रये चतस्थान पतितः । एव यम्य रस अयम्य पयाये करो पटस्थान पतितः । आभिनिबोधिकात्तान पयाये करो
तस्य तुल्यप्रान यम पयविप्रान पयाये करो पटस्थान पतितः । एव उक्तासाभिनिबोधिकात्तानो वि । एवम्य अटल्लट्ट आभिनिबोधिकात्तानो पिय कट्ट
य । एवम्यम्युत्पृष्टाआभिनिबोधिकात्तानो नै पयि एवम्य आचयो एतलो विमयेय आभिनिबोधिकात्तान प

नवरं ॥ जस्स नाया तस्स पयाया नत्थि ॥ यस्य धानानि तस्याधानानि न सन्तीति यतः सम्यग्दृष्टे धानानि भिष्यादृष्टे रक्षानामि सम्यग्दृष्टित्वं ॥ भिष्यादृष्टत्वोपमर्दनं प्रवर्तति भिष्यादृष्टत्वमपि सम्यग्दृष्टत्वोपमर्दनं प्रवर्तति ततो धानसद्भावे भक्षानासाव एवमक्षानसद्भावे धानासाव तत्त उक्तं-अहा नाया तहा पयायवि प्राणियहा नवर जस्स पयाया तस्स नाया नप्रवत्ति इति ॥ अथ पाठविधुमेवमसुरकुमारविभूनास्वपि

ठाणे ठाणवक्रिए । एव सुयनाणी । ठाहनाणीवि एवचेव नवरं जस्स नाणा तस्स सुखाणा नत्थि जहा नाणा तहा सुखाणावि जाणियहा नवर जस्स सुखाणा तस्स नाणा नत्थि । जहसुचक्रदुसणीण जते ! नेरइयाण केवइया पजाथा पयत्ता ? गोयमा ! सुणता पयत्ता । से केण्ठण जते ! एव सुसुइ । जइयाचक्रदुसणीण नेरइयाण सुणता पजाथा पयत्ता ? गोयमा । जहन्मचक्रदुसणीण नेरइए जहन्मचक्रदुसणीणस्स नेरइयस्स दइठयाए तुहे पदेसठयाए तुहे ठगाहण्ठयाए चउठाणवक्रिए । ठिईए चउठा

क्षानपययैः स्वस्थान पदस्थानपवितः । एव सुतक्षान्यर्थापि नवर यस्य धानानि तस्याधानानि न सन्ति यथा धानानि तद्याऽधाना अपि नवित्वानि नवरं यस्याधानानि तस्य धानानि न सन्ति । अपम्यचक्रदुसनिना प्रदन्त । नेरयिकाया कियत्तः पर्यवाः प्रपत्ताः ? गो तम । धनन्ताः पयथा प्रपत्ताः । अपयत्ता-अपम्यचक्रदुसनिना नेरयिकायामन्ता पर्यवाः प्रपत्ताः ? गोतम । अथ

ययि करो सक्काने पटक्कान पतित । एव सुयमाको व्यादि । सम सुतक्षानो जने पवविधानो ने पवि पवक्कता कज्जो यत्ता विरय जेइने धान इवे तज्जे पयान न इवे जम धान, तेम पयान पिव कइया यत्ता विरय जजने पयान तेइने धान नको । जइय चक्रदुस नेरइयावत्ति । अयम्य पयुद यन नारको ने दे मयान् कवका पकीव कइया के गोतम पयन्ता पकीव कइया । ते केवे पयै के मयान् इम कइया अयम्य पयुदयन नारको ने पयन्ता पर्याय कइया के गोतम अयम्य पयुदयन नारको ने अयम्य पयुदयन नारको इयावे करो तुव पवि तुव पवमाइनाये करो चत एव

परं ० खरस नाथा तस्स पञ्चाणा नत्विति ॥ यस्य धामानि तस्याधामानि न समीति यतः सम्यग्दृष्टे चोनानि मिथ्यादृष्टे रक्षानानि सम्यग्दृष्टे
 दृष्टे च मिथ्यादृष्टिस्वोपमर्देन प्रवर्ति मिथ्यादृष्टित्वमपि सम्यग्दृष्टिस्वोपमर्देन प्रवर्ति ततो ध्यानसङ्गाव ययमज्ञानसङ्गावे धानाज्ञान
 तत उक्त अहं नाथा तदा यथावति प्राविपत्वा नवरं जस्स पञ्चाणा तस्स नाथा नप्रवर्ति इति ॥ सोप पाठविहमेवमसुरकुमारादिसूत्रास्वपि

छाणे ठठाणवन्ति ॥ एवं सुयनाणी । ठिहिनानीवि एवचेव नवरं जस्स नाणा तस्स अस्साणा नत्विय जहा
 नाणा तहा अस्साणावि जाणियहा नवर जस्स अस्साणा तस्स नाणा नत्विय । जहणुचरकुदसणीण नते !
 नेरइयाण केवइया पज्जाथा पयुत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जाथा पयुत्ता । से केणठण नते । एव बुद्धं ।
 जहणुचरकुदसणीण नेरइयाण अणता पज्जाथा पयुत्ता ? गोयमा । जहन्मचरकुदसणीण नेरइए जहन्मच
 रकुदसणीणस्स नेरइयस्स दक्खिठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले ठगाहणठयाए चउठाणवन्ति ॥ ठिहिए चउठा

वपानपयवेः अस्यान पदस्यानपवित्त । एव भुतज्ञान्यबाधिज्ञान्यपि नवरं यस्य ज्ञानानि तस्याज्ञानानि न सन्ति यथा ज्ञानानि तयाऽज्ञाना
 न्यपि प्रवित्तयानि नवरं यस्याज्ञानानि तस्य ज्ञानानि न सन्ति । अपग्यबधुदक्षिणा जदन्त । नेरयिकावा विपत्तः पर्यवाः मज्झसाः ? की
 तम । समन्ताः पर्यवाः मज्झसाः । अपकेनार्थेन जदन्त । एवमुच्यते-अपग्यबधुदक्षिणा नेरयिकावामन्ताः पर्यवाः मज्झसाः ? गीतम । अथ

बाटे करो अस्याने पटप्पान पत्तिन । एव सुयनाको स्वादि । एव भुतज्ञानो जमे अवधिज्ञानो न परि पटप्पता कश्चो एतथा विमये जेहने ज्ञान इवे
 तेहने पञ्चान न इवे कम ज्ञानमेव पञ्चान पिच कश्चा एतथा विमये जेहने पञ्चान तेहने ज्ञान नको । जहण चरकुदसव नेरइयावति । अथवा चसुट
 मज्झानको ने हे मज्झन् चवत्ता परीय कश्चा हे नीतम पमन्ता परीय कश्चा । ते खेवे अर्थे हे भजनम् इम ज्ञाणा अथवा चसुदयन नारको ने पमन्ता
 परीय कश्चा हे नीतम अपमन्त चसुदयन नारको ने अपमन्त चसुदयन नारको प्रख्याये करो तुल्ल पम्याये करो परि तुल्ल पम्यावमाये करो चम एव

पिबोकापिकबूये तावितं पर्यापविंसायामशाने एवमत्यर्थाजसुखागच्छये यत्तव्ये तेषा सम्यक्तास्पृशीपि तेषु मध्ये सम्यक्तासहितस्य चोत्था

से केणठेण जते । एव धुचुइ-अह्मोसोगाहणमाण पुठविकाइयाण स्युणता पज्जवा पयुत्ता ? गोयमा ! जह
खोगाहणए पुठयिकाइए जहन्तोगाहणगस्स पुठविकाइयस्स ददुठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले । उग्गाहण
ठयाए तुल्ले । ठितीए तिठाणवन्निए । धन्तगंधरसफासपज्जवेहि दोहि स्युखानेहि अचस्कुइसणपज्जवेहि
वठाणयन्निए । एव उक्खोसोगाहणएवि । अजहसुमण्णोसोगाहणएवि एवचेय नत्तर सठाणे चउठाणव
न्निए । अहन्तठितीयाण जते ! पुठविकाइयाण पुच्छा , गोयमा ! अणता पज्जवा पयुत्ता । से केणठेण

प्रपत्ता : ! गौतम ! अपगयावगाइमकः पुंथिबीकापिको अपगयावगाइमकस्य पुंथिबीकापिकस्य इत्यावसया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाह
नायतया तुल्यः । स्थितौ चिरयानपतितं यत्वेगंधरसरपञ्चपर्यये द्वीभ्यामज्ञानाध्यामचचुरर्शनपर्यये स पदस्थानपतितः । एवमुत्कर्षोवगाह
नकपुंथिबीकापिकोपि । अत्रयन्यामुत्कर्षावगाहनकपुंथिबीकापिकोव्येव श्लेष नत्तर स्वरयान वत्तु इयानपतितः । अपम्यस्थितिकाना भवन्त ।
पुंथिबीकापिकाना पुच्छा गौतम ! अमत्ताः पयवाः प्रपत्ता । अप कनार्थेन जदन्त । एवमुच्यते-अपम्यस्थितिकाना पुंथिबीकापिकानामन

दम अज्जा अघरव चववाइना ना पुंथिबीकापिक न यनन्ता पर्याय कज्जा म क क भौतम अघरव चववाइना ना इमावाकापिक अघरव चववा
इना ना पुंथिबीकापिक ने इत्यायं करो तुल्ल प्रथमं वे करो पवि तस्य चववाइनाये करो पवि तुल्लं वे । स्थितिये करो निस्सान पतित कइवा स
व्यातथय पाहुपवा यको । यव जध रस परव पयानि करो दाय पञ्चाने करो चवचुक्कम पयानि करो पटस्सान पतित कइवा । एव चकासागाहुण
विनि । एम चरउट पवमाइना ना पुंथिबी कापिकने जावाया कइवा । अज्जए मणुक्कासरवि एवेवेवन्ति । मध्यम चववाइना ना प्रायवोकापिक न
पवि एमम कइवा एववा विमप सत्थाने वत्तुस्सान पतित वे । अइसठिविवाए पुठविकापियावन्ति । अघरव स्थितिना पुंथिबीकापिकने क भमवन्

णए अस्सुरकुमारे जहखीगाइणगस्स अस्सुरकुमारस्स दसुठयाए तुल्ले उम्गाइणठयाए तुल्ले
 ठिइए चउठाणवफिए । वखादीहिं लठ्ठाणवफिए । अजिणिमोहियनाणसुयनाणउहिनानपज्जवेहि तिहि
 नाणेहि तिहि अन्नाणेहि तिहि दसणेहिय लठ्ठाणवफिए । एव उक्कोसोगाहणएवि । एव अजहसमणुक्को
 सोगाइणएवि नवरं उक्कोसोगाहणएवि अस्सुरकुमारठितीए चउठाणवफिए । एव जाव धणिअकुमारो ।
 जहन्तोगाइणगाण नत्ते ! पुढविक्काइयाण केवइया पज्जवा पससा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पससा !

नदत्त । अथभ्यावगाहनकानामसुरकुमारः प्रपत्ताः ? नीतम् । अथभ्यावगाहनकोऽसुरकुमारो अथग्यावगाहनकस्यासुरकुमारस्य
द्वयाप्यतया तुल्यः प्रदेयार्पतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः । स्थितौ चतुःस्थानपतित । यथोदिजि पदस्थानपतित । अग्निनिर्वाचिक
पानभुक्तानामवधिद्वामपर्यवेक्षिनिष्ठाभिरक्षानैकाजिर्द्वाने पदस्थानपतित । एवमुत्कपीवगाहनकोपि । एवमप्रथग्यानुत्कपीवगाह
नकोऽप्यसुरकुमारस्थितौ चतुःस्थानपतितः । एवं यावत्तन्निर्गुमारः । अथभ्यावगाहनकाना नदत्त । पुष्पिवीक्षायिकाना क्षिपन्तः पर्य
यः प्रपत्ताः ? नीतम् । अतस्तः प्रपत्ताः प्रपत्ताः प्रपत्ताः । अथ कनार्थेन नदत्त । एवमुच्यते-अथग्यावगाहनकाना पुष्पिवीक्षायिकानामनन्ताः प्रपत्ता

हे नो अवश्य अवगाहना ना परस्परकार अवश्य अवगाहना ना परस्परकारने द्रव्याद्यै पवि तुल्य अवगाहना नो तुल्य छै । स्थिति
 नो नतुप्यान पातत छै । सर्वादिष्वे करो वटस्यान पतित कइवा । आग्निबाधिक ज्ञान नतुप्यान अवधिप्राप्त पर्याये करो तोन ज्ञान तोन अपमान
 तोन हमने करो वटस्यान पतित हवे । एव कक्षासामाहचरदि । पसज वटछट अवगाहना ना परस्परकार कइवो । एमज मज्जम परस्परकारने न
 हवा एतको विमोय वटछट अवगाहना ना परस्परकार स्थितिये नतुप्यान पतित पसज बावटस्थमित कुयार छगे कइवा । अवगाहना कइवा नते पुठ
 विचारयाचति । अवश्य अवगाहना ना प्रविधौकादिक भे हे मगवन् जेतवा पर्याय कइवा । पसजता पर्याय कइवा । तेइ जेहे जेहे हे मगवन्

पिबोकापिकवने भावितं पर्वापरिचितायामशाने एवमत्यशानमुत्पन्नानलशये यस्मिन्नेतत्तु शाने तेषां सम्यक्सांस्पर्शोपि तेषु मध्ये सम्यक्सांस्पर्शितस्य योत्वा

से केणठेण जते ! एवं युच्चइ-जइयोगाहणगाण पुठविकाइयाण अणता पज्जवा पसुत्ता ? गोयमा ! जह
योगाहणए पुठविकाइए जहन्तोगाहणगस्स पुठविकाइयस्स दसठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले । उग्गाहण
ठयाए तुल्ले । ठितीए तिठाणवन्निए । धन्तगंधरसफासपज्जनेहि दोहि अण्णाणेहि अचस्कुदसणपज्जनेहि
वठाणवन्निए । एय उक्खोसोगाहणएत्थि । अजहणमणुक्खोसोगाहणएयि एववेय नअर सठाणे अउठाणअ
न्निए । जहन्तितीयाण जते ! पुठविकाइयाण पुच्छा , गोयमा ! अणता पज्जवा पसुत्ता । से केणठेण

अप्रसा : ? गौतम ! अपगयावनाइमकः पुचिबीकापिको अपगयावगाइमकस्य पुचिबीकापिकस्य इव्यावतया तुल्यः प्रदेसार्चतया तुल्योऽवगाह
मावतया तुल्य स्थितौ विरयानपठितं वरुणथरसरपञ्चपर्यवे होव्यामसागाल्यामबुदुर्जनपर्यवे य पदरथानपठितः । एवमुत्कर्षादगाह
नअपुचिबीकापिकोपि । समपम्पानुरूपपावयाइमकपुचिबीकापिकोप्येव अवेव नअर स्वरयान वतु इयानपठितः । अपम्यदियत्तिकामा जदन्त ।
पुचिबीकापिकामा पुच्छा गौतम ! अनन्ताः पयया अप्रसाः । एय कनार्चनं जदन्त । एवमुच्यते-अचम्यस्थितिकामा पुचिबीकापिकामामन

इम अन्ता अचम्य पवनाइना ता पुचिबीकापिके नी पमन्ता पर्याय अन्ता म ए ज गौतम अपगह पवगाइना नो पुचिबीकापिक अचम्य पवगा
इना ना पुचिबीकापिक नी इव्यावे करो तुल्य प्रथम वे करो पवि तस्य पवगाइनाये करो पवि तुल्ये । स्थितिसे करो विस्साम पठित अइवा ए
व्यातवप पापुपवा यको । वअ नअ रअ पारअ पर्याये करो इय पप्राने करो अचमुकुअन पर्याये करो पट्ठाम पठित अइवा । एव अन्तायागाइमप
विन्ति । एम अउठट पवगाइना ना पुचिबी कापिके नी भावाया यइवा । अअइय मअज्जासएवि एववेवन्ति । मअम पवगाइना ना पुचिबीकापिक र
पवि एमअ अइवा एवका विअप असाणे वतुस्साम पठिते । जइअठितियाव पुठविवाविसावति । अचम्य स्थितिना पुचिबीकापिकेने ए मगमन

णए अस्सुरकुमारे जहन्तोगाहणगस्स अस्सुरकुमारस्स वसुठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले उग्गाहणठयाए तुल्ले
ठिइए चउठाणघाफिए । अयादीहिं ठठाणघाफिए । अग्निणिधोहियनाणसुयनाणउहिनाणपज्जवेहि तिहि
नाणेहि तिहि अन्ताणेहि तिहि दसणेहिय ठठाणघाफिए । एव उक्कोसोगाहणएवि । एव अजहसमणुक्को
सोगाहणएवि नवरं उक्कोसोगाहणएवि अस्सुरकुमारठितीए चउठाणघाफिए । एव आव धणिअकुमारो ।
जहन्तोगाहणगाण जते । पुढविक्काइयाण केवइया पससा ? गोयमा ! अणता पज्जावा पससा ।

प्रदत्त । अथवायगाहनकामामसुरकुमारोकावमन्ताः पयवाः प्रज्जताः ? गीतम् । अथवायगाहनकोऽसुरकुमारो अथस्यावगाहनकस्यासुरकुमारस्य
इत्यापयया तुल्यः प्रदेशायतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः । स्थितौ यतः स्थानपतितः । बर्बादिति पदस्थानपतितः । आग्निनिबोधिक्
ज्ञानभूतज्ञानावधिज्ञानपर्यवेकिमिधोमैत्रिरक्षानैकिमिदक्षमैः पदस्थानपतितः । एवमुत्कर्षावगाहनकापि । एवमअपय्याभुत्कर्षावगाह
नकोऽप्यसुरकुमारस्थितौ बहूः स्थानपतितः । एवं यावत्स्थानितकुमारः । अथस्यावगाहनकाणा जदन्त । धृषिधीकायिकाना कियन्त पर्यं
वाः प्रज्जताः ? गीतम् । अतन्ताः पयवाः प्रज्जता । अथ कनार्थम् प्रदत्त । एवमुच्यते-अथवायगाहनकाणा धृषिधीकायिकानामन्ताः पर्यंवा

हे सो अथव पदमाहना ना अथरकुमार अथव पदमाहना ना असुरकुमारे इत्याद्ये पञ्च प्रदेशाये पञ्च तुल्य अवगाहना बो तुल्य जे । किति
बो जत्तुप्यान पातत जे । बर्बादिये करो पटकाण पतित कहवा । आग्निनिबोधिक् ज्ञान युतज्ञान अथधिज्ञान पर्याये करो तोन ज्ञान तोन पञ्चान
तोन दम्ये करो पटकाण पतित हुये । एव कडासाभाहकएवि । एमज पटकाट अवगाहना ना असुरकुमार कहवो । एमज मज्जम अमुरकुमारने क
हवा पतथो विमेष पटकाट पदमाहना ना अथरकुमार कितिहे बहूस्तान पतित एमज यावत्स्थानित कुमार कणे कहवा । अथकाभाहकनाच मते पुठ
विबारायावति । अथव अवगाहना ना धृषिधीकायिकुमै हे भगवन् जेतवा पर्यंवा कहवा । अतोतम् । अतन्ता पर्यंवा कहवा । तेव जेवे जेवे हे भगवन्

गुणकालगाण पृथिवीकाडयाण स्युगता पञ्जाया पयात्ता ? गोयमा , जहन्गुणकालए पुठ्विकाडए
जहन्गुणकालागस्स पुठ्विकाडयस्स दव्वठयाए तुल्ले पवेसठयाए तुल्ले उगाहणठयाए चउठानमहिण । ठि
तीण तिठानमहिण । काउयणपज्जग्रहि तुल्ले स्युगसरोहिं थणगधरसफासपज्जग्रहि लठानमहिण । दोहि
स्युगणेहिं स्युचकुदंसणपज्जग्रहिंय तठानमहिण । एव उक्खोसगुणकालएहिं । स्युअणमत्तो वगुणकाल
एयि एयचेण गधर सठान तठानमहिण । एव पचग्रन्ता दोगया पचासा स्युठकासा न गियव्व । जह
यामइस्युन्ताणीण जत्ते । पुठ्विकाडयाण पुच्छा , गोयमा ! स्युगता पज्जाया पयात्ता । से के गठेण जत्ते ।

स्युगुणकालक पृथिवीकापिडो अपस्युगुणकालकस्य पृथिवीकापिडस्य इकापयतया तुल्लो प्रदद्यायंथया तुल्लो यगाएनायतया वत्ता स्यान्नपत्तिता ।
रित्तो यित्तागपत्तिता । कामयकपयये तुल्लो उपसंपिपर्यगत्तरपस्यपयये, पट्स्यानपत्तिता । द्वाभ्यामप्यागाभ्यामवपुरगणपयये य पट्स्यान
पयो रूप्यां प्रवित्तव्याः । अपस्युगुणकालकपयुवकासकोप्येयं येव भवर सस्याने पट्स्यानपत्तिता । एय पंच पयां द्वी गन्धी पस्य रया
पयात्ता । अपस्युगुणकालकपयुवकासकोप्येयं प्रदद्या । पृथिवीकापिडाना पुच्छा , गोयमा ! यतस्ताः पयथा मयात्ता । यथउत्तापयन जदत्त ।

कथा—अद्वयगत काविक इतिवोकादिक ने पनत्ता पयाय कथा प्रय उत्तर ए गौतम अपयगुणकालक पृथिवीकापिड अपयगुणकालक पृथिवी
कादिक ने पूजाये करो तव्य प्रदेगाये करो तव्य पवगासुताये करो जलस्यान पत्तिता छे । स्थितिने विवे चिस्सान पत्तिता । काविक पयादे करो तव्य
पवगव वव मभ रम परम पमये करो पटस्यान पत्तिता । दा पयाये करो अपयद्वयन पयाये करो पटस्यान पत्तिता कटयो । एव उजागुणकालकपि
डि । एवम उरउरगुणकालक ने पवि जलस्यता कटयो । पज्जकस्यमुकापयगुणकालकपिडि । अपयगुण कालकने पवि एगम जायवा पतथा विशेष
पस्याने पटस्यान पत्तिता इहे । एव पय पया वा मया इति । एम पवि वय दाय मय पवि रस पाठ परउ भयवा । अरणमपयवाकोवं भत्ते पृथुमि

जने । एन चुच्चइ-जहन्नाठितीयाण पुढविक्काडयाण स्युणता पजावा पणसा ? गोयमा । जहन्नाठितीए पु
 ठात्रिकाडए जहन्नाठितीयस्स पुढात्रिकाडयस्स दसुठयाए तुल्ले पदंसठयाए तुल्ले नेगाहणठयाए घउठाणवक्रिए
 ठिठए तल्ले । वय्थगधरसफासपल्लवेहि मतिअन्नाणसुयस्यन्नाणस्यवस्कुदसणपज्जमहिंय ठठाणवक्रिए एव
 उक्कासठितीगवि । अजहन्नामणुक्कासठितीएवि एउधेय नय्यर सठाणे तिठाणयक्रिए । जहन्नागुगकालयाण
 जत । पुढविक्काडयाण पुच्छा, गोयमा । स्युणता पजावा पणसा । से केणठेण जते । एव चुच्चइ-जहन्ना

ताः पयया प्रसप्ता ? गौतम । अपगयस्थितिस्स पुपिबीकायिस्सो अपगयस्थितिकस्स पुपिबीकायिक्कस्स वुव्वायसमा तुल्लं प्रदेमायसमा तुल्लो
 ज्वाहामायसमा यत्तु स्थानपत्तिः । स्थिती तस्यः । वय्थगयस्सपययवेसत्थपानमसाप्तामाचसुदसणपययवेय पदस्यानपत्तिः । एवमुत्तपत्तिय
 तावपि । यउपमानुस्सपत्तितावप्येव न्नेव नय्यरं अस्यान त्रिस्थानपत्तिः । अपगयगुणवासकामा ज० । पुपिबीकायकामा पुच्छा गौतम ।
 यमन्ता पययाः प्रसप्ता । अय कमारोण जवन्ता । एवमुच्यत अपगयगुणवासकामा पुपिबीकायिकामामन्ताः पयसा प्रसप्ताः ? गौतम । अय

केतसा पर्याय प्रत्युत्तर हे भोतम अवगच्छस्मिन्ता एविबोकायिक ने यमन्ता पर्याय कप्ता । तेइ केवे पर्ये इ भगवन् इत कप्ता अवगय स्थितिना एवि
 विबोकायिक ने यमन्ता पर्याय कप्ता प्रत्युत्तर हे भोतम अवगच्छस्मिन्ता एविबोकायिक अवगच्छस्मिन्ता एविबोकायिक ने इत्थाने करो तुल्लं
 दयावे करो एवि तुल्लं यवगाइमावे करो यतकान पत्ति यवन्ता । स्थितिने विये तुल्लं । यव गंध रस फरस पवावे करो मति यवन्ता यत यवन्ता
 यवन्ता पवावे करो यतकान पत्ति कवन्ता । एवमवगच्छस्मिन्ता एविबोकायिक ने कवन्ता । अयउच्यतयवसासठितोएवि
 एवं वेवत्ति । मय्यमस्थिति ना मारवो ने एवि यमन्ता कवन्ता एतसा वियेय अस्यान ने विये विज्जान पत्तिः । अवगच्छस्मिन्ता एविबोकायिक
 र्वत्ति । अयउच्यत एविबोकायिकने इ भगवन् केतसा पर्याय कप्ता प्रत्युत्तर हे भोतम यमन्ता पर्याय कप्ता । तेइ केवे पर्ये इ भगवन् इ

रासमगान् " कसप्रमाणो पुढ्याइपुढितिकलान् , चतयेतदेवोक्तमत्र-दोहिंकावहि इति ॥ अपभ्यावगाइमहीत्त्रियमन्त्रे ॥ दोहिं मातेहिं दोहिं
अयावेहिं इति ॥ हुन्त्रियावाहि कयाब्बिन् अपर्यासावस्यायां सास्वादमसम्पन्नमवाप्यते सम्पदृष्टस्य ग्रामे सस्यते प्रापाका मगाम तत उक्त-हास्या
ग्रामाभ्या द्वाभ्या मगामाभ्यामिति, उक्तप्रावगाइनायांत्यपर्यासावस्याया अत्रावात् सासादमसम्पन्नं नावाप्यते तत सत्र ग्रामे मवस्यते तथा चाइ-

? गीयमा ! अणता पज्जाया पखत्ता । से केणठेण ज्ञते । एव सुच्चइ-जह्खोगाइणगाण वेइदियाण अण
णता पज्जाया प० ? गीयमा ! जह्खोगाइणए वेइदिए जह्खोगाइणगस्स वेइदियस्स दइठयाए तुहे
पदेसठयाए तुहे । ठंगाइणठयाए तुहे । ठितीए तिठाणवहि । वण्णगधरसफासपज्जावेहि दोहि नाणेहि
दोहि अण्णाणहि अचरकुदसणपज्जावेहि ठठाणवहि । एव उक्खोसोगाइणएवि नवरं णाणा नत्थि । अण्

न्त्रियावां पज्जा, गीयम । अनन्ताः वयसाः प्रप्राप्ताः । अयकमार्येन भवन्त । एवमुच्यते-अपभ्यावगाइमगामा हुन्त्रियावामनन्ताः पर्ययाः प्र
प्रप्ताः ? गीतम । अपभ्यावगाइमको हुन्त्रियो अपभ्यावगाइमकस्य हुन्त्रियस्य द्रव्यायतया तुल्यः प्रवेक्षार्यतया तुल्योवगाइमार्थतया तुल्यः ,
स्थितौ विस्वामपतितः । वर्तन्त्यरसरसप्रापयवे द्वाभ्या अत्राभ्या एवपुदोर्नपयवेः पदस्थानपतितः । एवमुक्तप्रावगाइ

याइत् वतकतिवाय कने एव जाकया । जह्खोगाइमगाव वेइदियावति । अयस्य अवगाइमा ना वेइदियमा प्रय उक्कर भे भौतम अनन्ता पर्याय क
या । त अण चवे के मगवन् एव कज्जा अयन्त अवगाइमा ना वेइदो न कलता पर्याय प्रय उक्कर के भौतम अयन्त अवगाइमा ना वेइदो अयस्य प
वगाइमा ना वेइदिय ने द्रव्याये करो पुदव प्रदेमाये करो तयस्य अवगाइमाये करो तुल्य स्थितिने विपे विस्वाम पतित । अय गध रस पुरस पर्याय
करो दाव ग्राम दाव अग्राम अचपुदयम अरयि करो पटस्थान पतित । एव उक्खोसागाइमगवि । एम उक्कट अवगाइमा ना दोहिद्व पवि एतथा
विमप ग्राम मयो । अजइस मनुक्खोसागाइमग कथा कइकोसाइव पति । मध्यम अवगाइमा ना वेइदो जित्त अयस्य अवगाइमा ना वेइदो एतसा

एव वुचं०-जहन्तमतिशुन्नाणीपुठविकाइए जहन्तमतिशुन्ताणिणस्स पुठविकाइयस्स दसुठयाए तुझे पदे सठयाए तुझे ठंगाढनठयाए चउठाणवणिए । ठितीए तिठाणवणिए वन्तगधरसफासपज्जवेहि लठाणव बणिए । मतिशुन्नाणपज्जवेहि तुझे सुयशुन्नाणपज्जगहि श्चचस्सुदसणपज्जवेहि लठाणवणिए । एव उक्को समतिशुन्नाणीयि । श्चअहसमणुक्कोसमतिशुन्नाणीवि एवचेव नयर सठाणे लठाणवणिए एव सुयशुन्नाणीवि । श्चचस्सुदसणीयि एवचेव । एवं जाय वणस्सइकाइया । जहणोगाइणगाण नते ! वेइदियाण पुच्छा ,

[illegible][illegible]

तनाज्ञाने एव सम्पत्ते न ज्ञाने नरकटुस्वितिषु पुनर्मन्यो सासादनसम्पत्तसिद्धीप्युत्पद्यते इति तस्मिन्ने ज्ञाने उच्चाभे च बन्धस्ये तथाचाप-एवं उक्ती

अन्तान्गेहि अथरुदंसणपञ्चयेहिं वरुणवक्रिण । एव उक्तीसठितीएवि नवर दो नाणा अञ्जहिहा । अथ
जहयमणुक्षोसठिनीए जहा उक्तीसठितीए नवर ठितीए तिठाणवक्रिण । जहयगुणकालयाण जते । वेइ
दियाण पुच्छा , गोयमा ! अणता पञ्जावा पयासा । च केणठेण जते । एव वुच्चंड-जहयगुणकालयाण
येइदियाण अणता पञ्जावा पयासा ? गोयमा । जहयगुणकालए येइदिए जहयगुणकालगरस येइदियस्स
वद्युठयाए तुसे पदेसदयाए तुसे उग्गाहणद्वयाए सवठाणवक्रिण ठितिए तिठाणवक्रिण । कालवसपञ्चवेहि

मुरकर्वस्वित्तिकोपि । नवर हे ज्ञानउज्जपिडे । अजपय्यामुरकपस्वित्तिको यथोरवर्पस्वित्तिको नवर स्थित्या निरयानपतितः । अथन्यगुणका
नवानां हीन्द्रियाणां एवा नीतम् । अथताः पयसाः प्रपसाः सत्कनार्चनं नदन्त । एवमुच्यते-अथन्यगुणकालमात्रा हीन्द्रियाणामनन्ताः पय
साः प्रपसाः । नीतम् । अथन्यगुणकासकको हीन्द्रियो अथन्यगुणकासकस्य हीन्द्रियस्य इवायतया तुस्य प्रवेद्यार्थतया तुस्य वयादुनार्थतया
अनु रयानपतितः । स्थित्या निरयानपतितः । काकववपयये सुत्वाऽयमप्ये वयन्यरसरुपार्थपयये होत्या धानास्या द्वाभ्यामद्यामचजुदे

हे करो मात्र पदान पन अथपुवजन पयये करो वटरवान पतित । एव उक्तीसठितीएवि । एव उक्तीसठितीएवि पञ्च काववा यतका विजय दाव
ज्ञान पविड । अथअथमचकासठितीए जहा उक्तीसठि । माजम स्थितिक येम उरकट स्थितिक येम उरकट स्थितिये करो विरवान पतित । अथ
यगवकासवावति । अथयगुण कासक वरुणो मा प्रय उरर हे नीतम् पयसा पयसा । तथ कवे पयये हे मगवत् इम कक्षा-अथग्व गुण का
अथ वाग्गा ने पयसा पययि कक्षा । अ ह भीतम् अथग्व गव कासक वेइरुओ अथग्वगण कासक वे इग्गोम इग्गोम इग्गोम करो तस्य य
यनाइमावे करो अनु रवान पतित । स्थितिवे करो विरवान पतित । कासवर्प पयये करो तुस्य, अथयग्व पञ्च गव रस करस पययि करो मे ज्ञाने क

यप इच्छोसिनीगोपुत्राय वि नवर माया नव्यतिथ तया अत्राप्योदकगुणादना फल प्रथमसमयादूहं स्थिति इति अपर्याप्तावस्थायामपि तस्यास
 भगवत् सासादनसम्यक्प्रवर्तनी प्रान अग्नया वासाने इति ज्ञानेवाज्ञाने च वस्तुन्ये तथाचाह-भजकभुक्तोसोसाहवाए अथा अह्योसाहवाए इति
 तथा अप्यस्थितिभूये द्वे अग्राने एव वस्तुन्ये न तु ज्ञाने यतः सर्वप्रपन्यस्थितिको सग्न्यपर्याप्तको प्रवर्तति न च सग्न्यवप्राप्तदपु मध्य सासादनसम्य
 मृष्टिपुपपद्यत वि कारवमिति च दुष्यते सग्न्यवप्राप्तकोहि अवधारकः सासादनसम्यग्दुष्टिष मनाङ्गुलप्रवरिखाम स्ततः स शेपु मध्ये नोत्पद्यते

अह्यसमन्त्रोसोसाहवाए अहा अह्योसाहवाए नवर सठाने सगहणाए अउठाणवक्रिए । अह्यसठितीयाण
 नते येइदियाण पुक्का, गोयमा ! छुणता पज्जाया पयसा । से केणठेण अते एव बुद्धइ अह्यसठितीयाण
 येइदियाण छुणता पज्जाया पयसा गोयमा ! अह्यसठितीयस्स येइदियस्स उह्ठया
 ए तुल्ले पदेउठयाए तुल्ले सगहणठयाए अउठाणवक्रिए । ठितीए तुल्ले । वयसगधरसफासपज्जावेहि दोहि

नकोपि नवर ज्ञानानि नवन्ति । अजपन्यानुस्कर्पोयगाइमको यया अघग्गयावगाइमको नवर स्वस्थान उवगाइनार्थतया वतु स्वामपतित ।
 अघग्गस्थितिकानां अइम ! द्वीन्द्रियाणां पुक्का गोतम ! अमन्ताः पर्यया प्रज्जायाः । अथ कानार्थेण अइम । एवमुच्चत-अपग्न्य स्थितिकाना
 द्वीन्द्रियाकाममन्ता पयवाः प्रज्जायाः ? गौ० । अघग्गस्थितिको द्वीन्द्रियो अपग्न्य स्थितिकस्य द्वीन्द्रियस्य द्रव्याद्यतया नुस्य प्रदद्यार्थतयापि
 नुस्योऽयनाइनार्थतया वतु स्वामपतितः । स्थित्या तुल्यो वयसगधरसस्पर्शोपयवे द्वीन्द्रियमन्त्राभावात्प्रामादुर्ज्ञानपर्ययोः पदस्थानपतितः । एव

विशेष ध्यानं अहमाइनाये करो यतकाम पतित । अइम ठितितवाकति । अघग्ग स्थितिक येइमो ने के ममइम जेतथा पयाय यय उत्तर के भोत
 म पमन्ता पयाइ । तेव केवे पये के ममपन् इम कज्जा अघग्ग स्थितिक येइमो न यमन्ता पयाय न नोतम अघग्ग स्थितिक येइमो अघग्ग स्थिति
 ना वेइन्द्रिय ने द्रव्याये करो तुल्य प्रदेयाये करो तुल्य अमनाइनाये करो वतु काम पतित । अइम करो विज्जाम पतित । अथ गम्य रस प्यमं पव

तनाङ्गाने एव सन्यते न चाने नरकसुखितिषु पुनर्भवो सासादनसम्पन्नसहितोप्युत्पद्यते इति वरधुत्रे ज्ञाने उद्गामे च धर्माद्ये सयाथाह-एव वक्तुं

[illegible]

मुरुकवस्थितिकोपि । तवर हे घानेऽव्यपिबे । अत्रयग्याभुटवपस्थितिको यथास्वपेरियतिको तवर रियत्या त्रियानपतितः । अय-यगुख्वा
लकाना द्वीन्त्रिबाबा पच्याः नीतन । अयता ययबा मप्रसाग सफनार्थेन अइता । एवमुच्यते-अपन्यगुख्वासकाना द्वीन्त्रियावासनताः पय
बाः मप्रसाग ? नीतन । अपग्यगुख्वाको द्वीन्त्रियो अपग्यगुख्वासकस्य द्वीन्त्रियस्य द्व्यापयतया सुत्स्य मदेद्यायंतया सुत्स्या वगादनायंतया
वतु रयानपतितः । रियत्या त्रियामपतित । कालवकययै कुत्स्योऽयद्यपै वरगभरसस्वष्टीपयै ह्रीन्त्या घानाव्या हाव्यामद्यानाव्यामपचुदे

ये करो दाद पञ्चान सन बचददमन पर्याये करो बटरबान पतित । पय कडासहुतोएवि । पमक छपछट स्थितिक पय काथवा पतका विप्रय दाद
पान पविह । बककवमकयामहुतोह कडा लकीसति । मज्जम स्थितिक जेम छपछट स्थितिक पतको विप्रय स्थितिहै करो विवरान पतित । छद
यगनकासयावति । अकयगय कासक बरगुो मा प्रय छतर के भोवम पनन्ता पर्याय कडा । तद कके पर्ये के भलबन् इम कडा—अवगद गुण का
सक बान्ना ने पनन्ता पबवि कडा न क ए भोतम अवगद गय कासक बेरगुो अवगगुण कासक ने इगुोने पुण्यये तहय प्रदगाये करो तसुन क
बगादनाये करो बनुवबान पतित । स्थितिहै करो विवरान पतित । कासकण पर्याये करो तहय, पयमय वय गध रस करस पर्याये करो ये प्राने क

[illegible]

युवदक्षीवितीगाहदाएवि नवर नाखा मत्थिति । तथा अजपयोत्तरावगाहना स्थित प्रथमसमयादूह भवति इति अपर्याप्तवस्थायामपि तस्यास
भयात् सासादनसम्पन्नता प्राप्ते अग्न्यां चाद्याने इति, प्राप्तेवाद्याने च वक्तव्ये तथाचाह-अजपयोत्तरावगाहनाए वडा अद्वयोगाइयाए इति
तथा अपत्यस्थितियुगे दृष्टान्ते युव वक्तव्ये न तु ज्ञाने यत् सर्ववपन्यास्थितिको लक्षणपर्याप्तको भवति न च लक्षणपर्याप्तकपु मध्य सासादनसमय
मृदुद्वययद्यते किं कारवमिति च दुष्यते लक्षणपर्याप्तकोहि सर्ववक्तव्यः सासादनसमयदृष्टिच ननाभ्युन्नपरिणाम स्तसः स हेतु मध्ये नोत्पद्यते

अहयामगकुसोसोगाहणाए अहा जहयोगाहणाए नवर सठाणे रंगाहणाए अठाणावक्रिए । जहयाठितीयाण
भते येइदिंयाण पुक्खा, गोयमा । अणता पज्जाया पयसा । से केणठेण भते एव बुद्धं जहयाठितीयाण
येइदिंयाण अणता पज्जाया पयसा गोयमा । जहयाठितिए येइदिंए जहयाठितियस्स येइदिपस्स दसुठया
ए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले रंगाहणठयाए अठाणावक्रिए । ठितीए तुल्ले । वयुगधरसफासपजायेहि दोहि

नकोवि नवर प्राप्ताणि नदन्ति । अजपन्यानुत्तरावगाहनाको यथा अपग्यावगाहनाको नवर सस्याम अवगाहनायतया चतु स्थानपतित ।
अपग्यस्थितिकाना नदन्ता । द्वीन्द्रियाणां पुक्खा गोयमा । यमताः पयसा प्रज्जायाः । यथा कमार्येन वदन्त । एवमुच्यत-अपग्य स्थितिकाना
तुल्लोऽपग्यावगाहनायतया चतुस्थानपतितः । स्थित्या तुल्लो वयुगधरसफासपयसे द्वीप्यामद्यानाभ्यामवचुदुष्टानपर्ययेः पदस्थानपतितः । एव
विमय स्वकाने यववाहनाये करो यत्तस्मान् पतित । अहय ठितिकावति । अहय स्थितिक वेगम्हो न च अगन्तु जेतका यवयि मन्तु कतर हे भोत
म यमता पयाव । तेह जेहे पये हे मज्जन् इम कज्जा अवग्य स्थितिक वेगम्हो न यमता पयाव च भोतम अवग्य स्थितिक वेगम्हो अवग्य स्थिति
ना वेगम्हो न इव्याये करो तुल्ल पयेयाये करो तुल्ल यववाहनाये करो चतु स्थान पतित । जितिये करो विज्जान पतित । यव गम्य रस फार्य पवो

[illegible]

ਠਠਾਨਯਨਿਐ । ਤਕੁਸੋਸੀਗਾਫਾਨਐਵਿ ਐਵਚੇਤ੍ਰ ਨਤ੍ਰਰ ਤਿਹਿ ਨਾਨੇਹਿ ਤਿਹਿ ਆਧਾਨੇਹਿ ਤਿਹਿ ਵਸਨੇਹਿ ਭਠਾ
ਨਯਨਿਐ । ਜਹਾ ਤਕੁਸੋਸੀਗਾਫਾਨਐ ਤਹਾ ਆਹਥਮਨੁਕੁਸੋਸੀਗਾਫਾਨਐਯਿ ਨਥਰ ਏਗਾਹਨਠਿਨੀਐ ਬਤਠਾਨਵਛਿਐ

[illegible]

बनि करो व ज्ञान करो ने पद्मान करो ये द्मन करो घटस्थान घतित हुवे । कसासाभाहृषयवि एव चवन्ति । चरुहृष चरगाहना ना पचेन्द्रिय तितवच
 बानिज ने पवि पमल कहना दतका विमोह पच ज्ञान पच पद्मान घने पच युगे करो घटस्थान घतित । जेम चरुहृष चरगाहना ना पचेन्द्रिय तेम
 पमपम पनुरुहृष पचभावन ना मो पचेन्द्रिय तितवच बानिज पवि जाचना एतका विमोह चरगाहनायतावे करो चतु स्थान पवित हुवे । ठितोए चरगा

याद्यपि वस्तुव्या महरं चतुरिन्द्रियाणां चतुरेदंशनमपिब्रमन्त्या यदुरिन्द्रियत्वाऽयोगादिति तेषां चतुरेदंशनविषयमपि मूत्र यत्तत्राप्य ज्ञपग्यावगाह
मतिर्ब्रह्मपद्येन्द्रियसुत्रे-ठिर्द्वैपठितावमिद्वदिति ॥ इह तिथगपन्निन्द्रियसङ्गुपवर्षाद्युक्त एव ज्ञपग्यावगाहनी ज्ञवति नो सङ्गुपवर्षाद्युक्त किं तार

चतुरिन्द्रियाणवि एवचेत्र नत्रर धरकुदसुण अस्मिद्विह्य । जह्मयोगाहणगाण ज्ञते । पचिद्वियतिरिस्कजोगिण्या
ण केवद्वया पजावा पयुक्ता ? गोयमा ! अणता पञ्चया पयुक्ता । से केणठेण ज्ञते ! एव बुच्चह-जह्मसो
गाहणगाण पचिद्वियतिरिस्कजोगियाण अणता पजावा पयुक्ता ? गोयमा ! जह्मसोगाहणए पचिद्वियति
रिस्कजोगिए जह्मयोगाहणगस्स पचिद्वियतिरिस्कजोगियस्स दसुठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले उगाहणठया
ए तुल्ले छितीए तिठाणवकिए । बक्कगधरसफासपञ्चवेहि दोहि नानेहि दोहि अस्साणेहि दोहि दसजेहि

इदमनन्त्यपिबं । ज्ञपग्यावगाहमफाणा ज्ञदत्त । पद्येन्द्रियतियग्योमिकानां चियत्त पयवा प्रचसा ? नीतम । ज्ञमस्ता पर्यवा प्रचसा ।
अप केतार्थेन ज्ञदत्त । एवमुच्यते-ज्ञपग्यावगाहनफाणा पद्येन्द्रियतियग्योमिकानामन्ता पर्यवा प्रचसा ? नीतम । ज्ञपग्यावगाहमक्तः
पद्येन्द्रियतियग्योमिकोपपग्यावगाहनक्तस्य पद्येन्द्रियतियग्योमिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्य प्रदेष्टव्यतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः । स्थित्या
त्रिस्थानवर्तितः । वक्कगधरसस्यष्टापर्यवेहिं ग्यामपानान्या हान्या ज्ञानान्या दान्या दानान्या पदस्थानवर्तित । उरपावगाहगोप्यप व्यैव

ति । चतुरिन्द्रिय ने पचि पमज उतको विमय अद्यद्यम अधिका कइवा । जह्मयोगाहणगाण भंते पद्येन्द्रियतिरिस्कजाविद्याय केवद्वया इति । अपग्या
वगाहन के मयवन् पद्येन्द्रिय तिरव जामिक ने खबसा पर्याव कइवा ॥ उतर के नीतम पमन्ता पर्याव कइवा । तेह केचे पजे के मयवन् इम कइवा-
ज्ञपग्यावगाहन पद्येन्द्रिय तिरव कीजिक न पमन्ता पर्याव कइवा म कभर के नीतम ज्ञपग्यावगाहनकर्पयेन्द्रिय तिरवजामिक ज्ञपग्यावगाहन
पद्येन्द्रिय तिरव जामिक ने प्रव्यावे अये तुल्य पद्येगामि करो तुल्य पमन्तावगाहये करो तुल्य । ज्ञितिये करो निज्जान पतित । पम मज रद अद्य प

[illegible]

लठ्ठाण्यनि । उक्कोसोगाहणएवि एवचेत्र नत्रर तिहि नाणेहि तिहि अखाणेहि तिहि वसणेहि लठ्ठा
 ण्यनि । जहा उक्कोसोगाहणए तहा अजहसमकुकोसोगाहणएयि नधर दगहणठिनीए भउठाण्यनि ।

[illegible]

भीये करो ब ज्ञान करो बे अप्राम करो वे द्यन करो पटस्थान पतित हुवे । कलासायाहृषपि एव चर्चति । कष्टहृष चदगाहना ना पचेन्द्रिय तिरण
 बानिब ने पचि एमक कदवा एतका बिमेष बच ज्ञान बल अप्राम एने सब द्यने करो पटस्थान पतित । जेम कष्टहृष चदगाहना ना पचेन्द्रिय तेम
 एमपत्य प्रनरकट चदगाहना नो पचेन्द्रिय तिरण खानिब पचि जांचको एतका बिमेष चदगाहनाचताये करो चतु स्थान पतित हुवे । ठितीए चका

ररुटाबनाइन्ने-स्वित्वा चत-स्वानपतितो यतो अपथीरुहावगाइओऽधुपयर्थापुकोवि सप्र्यते तत्रोपपद्यते प्रागुक्तयुत्पाः चतुः स्थानपतितस्य
अपथम्यस्वित्तिपक्षपञ्चमिन्द्रियधरे हेऽपान एव वक्तव्ये प्रतुः ज्ञान यतोसो अपथम्यस्वित्तिको स्रग्धपयार्थस्य एव अर्वाति न तन्मये सासादमस्य
मृदुदल्लाद इति उरुदृष्टस्वित्तित्येवपञ्चमिन्द्रियधरे ॥ दो मावा दो ववावा इति ॥ उरुदृष्टस्वित्तिकोऽहं तिर्यक्पञ्चेन्द्रियत्रयस्योपमरिपत्तिको

ठितीए चउठाणयन्निए । अहस्रुठितीयाण पचिदियतिरिस्कजोणियाण केअइया पज्जावा पसुप्ता ? गोयमा
अणता पज्जावा पसुप्ता । से केणठेण नत्ते ! एव युप्पइ-अहस्रुठितीयाण पचिदियतिरिस्कजोणियाण स्य
णता पज्जावा पसुप्ता ? गोयमा । अहस्रुठितीए पचिदियतिरिस्कजोणिए अहस्रुठितीयस्स पचिदियतिरि
स्कजोणियस्स वव्वठमाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले उग्गाइणठयाए चउठाणवन्निए । ठितीए तुल्ले । वस्रुगधरस्स
पज्जावेहिं दोहि अखाणेहिं दोहि वसणेहिं वठ्ठाणयन्निए । उक्खोचठितीएवि एवचेअ नवर दोअस्रु

अपर्थेनार्थेन नदत्त । एवमुच्यते-अपथम्यस्वित्तिकानां पञ्चेन्द्रियस्वित्तिकानां नानाः पर्यवाः प्रवृत्ताः । गोतमः । अपथम्यस्वित्तिकः पञ्चेन्द्रि
यस्वित्तिकानिर्वाचनार्थमस्वित्तिकस्य पञ्चेन्द्रियस्वित्तिकस्य द्रव्याद्यतया तुल्यः प्रवेष्टार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुः स्थानपतितः । स्वित्
त्वा तुल्यो बर्हन्त्यरबपयवे इन्द्रियमपानाज्यां द्वाभ्यां सर्वनाज्या यदुत्थानपतितः । उरुदृष्टस्वित्तिकोऽप्येवन्मैव नवरं हेऽपाने व वव्वठाने हे इत्युक्ते ।

अवद्वि । स्वित्तिके करो चतुः स्थान पतित इवे । अहस्रुठितीयाण अते पचिदियतिरिस्कजोनिवाचति । अत्राप्यस्वित्तिक पचिद्वि तत्राप्यस्वित्तिक ने हे
मगवन् अपथा पर्याय कथा य च हे गोतम । अपथम्यस्वित्तिक पचिन्द्रिय त्रयस्य ने पनत्ता पर्याय कथा । तेन केचे अवे हे मगवन् एव कथा के अप
थ स्वित्तिक पचिन्द्रिय त्रयस्य ने पनत्ता पर्याय कथा न च हे गोतम अपथम्य स्वित्तिक पचिन्द्रि तत्राप्यस्वित्तिक पचिन्द्रि त्रयस्य ने
द्वयार्थे करो तुल्य मदेकाने करो तुल्य अने पचिद्विवाचने करो चत-स्थान पतित इवे । स्वित्तिक करो तुल्य इवे नच तन्म एव कथ पचिद्वि करो वि वा

मयति तस्य च दृष्टाने साव त्रियमेव यदा पुन' पशमासाविजोपयुषमानिकेषु यद्वाग्युक्ती प्रथमि तदा तस्य हे शाने सन्त्येत यत सत्त्व-हे शाने
दृष्टान इति च अतपयोरकटुस्थितिश्चातियगुप्यग्निद्रियसूत्र-ठिर्षए चउठावाकिए इति च अतपयार्कटुस्थितिश्चो हि तिर्यक्यप्यग्निद्रियसूत्रेयववा
पुकोवि सन्त्येते, चसहुयवपायुक्तापि सनपानम्विपस्यापमस्थितिक ततमनु'रथानपलितता अतप्याचिनिजाचिकतियक्यप्यग्निद्रियसूत्रे-ठिर्षए चउठा

णा दो दसणा । अजहृणमणुक्कोसठितीएयि एधचेत्र नयर ठितीए चउठाणवकिए । तिखि नाणा तिखि
अयाणा तिखि दसणा । जहृणगुणकालगाण जते । पचिदियतिरिक्कजीणिगाण पुक्का , गोयमा ! अ
णता पज्जया प० । चे कैगठण जत । एय बुच्चड ? गो० । जहृणगुणकालगाण पचिदियतिरिक्कजीणिगाण
अणता पज्जया प० ? गोयमा ! जहृणगुणकालए पचिदियतिरिक्कजीणिए जहृणगुणकालगस्स पचिदि

अतपयानुरक्तस्थितकोप्यव ज्येथ नयर स्थित्या चतुस्स्थानपतित । श्रीवि शानानि श्रीस्यशानानि श्रीवि दर्शनानि । अतपयगुणकालगाना
मन्ता । पच्यग्निद्रियतिसय्यो'मन्तानो पुक्का गीतम । अमन्ता' ययवाः प्रज्जसाः अयकनार्थेन जदत्ता । एवमुप्यस-अतपयगुणकालकाना पज्जे
निद्रियतिसय्यो'मन्तानामन्ता ययवाः प्रज्जसा' ० गी० । अतपयगुणकालक पच्यग्निद्रियतिययो'मिओअतपयगुणकालकस्य पच्यग्निद्रियतिययो'मिक्कस्य

न च अय न कदा च दयत कदा पटयानपातत पुत्र । चउठाट'सातदे करो पाप एमक पससा'विजय च शान च अय न वे इयत पुत्र । अतपयस्य
आवाङ्मो'वि ०वचवत्ति । अतपयस्य अजकक स्थितदे करो पवि एमक एतथो विजिय स्थितिरो करो चतु स्थान पतित पुत्र । यव शान नय अयान
न च दयत पुत्र अतपयगुणकालका ज भते । पाचिदिय तिरिक्कजादियाच पुक्का , अतपय गुण कालक ना चे अगवन् पचेद्रिय तियय यानिक्क ना प्रज
वतर इ भोतम यमन्ता यसाय कज्जा । तेच कचे पय के अयवत् एम कज्जा जे पचेद्रिय तियय यानिक्क अतपयगुण कालक न यमन्ता ययाय कज्जा प्र
वतर दे गीतम अतपयगुणकालक पच'ग्निद्रिय तिय च यानिक्क अतपयगुणकालक पच'ग्निद्रिय तियय यानिक्क जे प्रयाय करो तुयय प्रदग्गये अरा पय तपय

यातारस्कजाणिपस्स उव्वठयाए तुल्ले पदसठयाए तुल्ले उगाढणठयाए चउठाणवन्निए । ठितीण चउठाणय
 णिण । कालाणपज्जेनेहि तुल्ले अयनमाहे ययागधरसफासपज्जेनेहि तिहि नाणेहि तिहि अस्साणेहि तिहि द
 सणेहि उठाणयन्निए । एय उक्कोसगुणकारण्ये । अजहन्वमणुक्कोसगुणकालएय एयचय नवर सठाण
 उठाणयन्निए । एय पथ वयाा दो गधा पच रसा अठ फासा । जहन्वाजिणिद्योहियनाणीण जत्ते । पचि
 दियतिरिस्सुजोणियाण केवडया पज्जाया पसन्ना ? गोयमा । अणता पज्जाया पसन्ना से केणठेण जत्ते ।
 एय वुच्चुह-गायमा । जहन्वाजिणिद्योहियनाणीपचिदियतिरिस्सुजोणिए जहन्वाजिणिद्योहियनाणिस्स पचि

द्वयापतया तुल्ले प्रदक्षापतया तुल्ले उगाढयापतया अमु स्थानपतित । स्थित्या अत स्थानपतित । कालत्रयपयैस्सल्लस्योऽवशोपेयसगम्यर
 सपयपययै स्थितिपाने स्थितिरथाने स्थितिपाने पदस्थानपतित । एवमुक्तपयवकासकोपि । अकचपयानुत्सपयवकासकोप्यवस्वेव सदर
 रास्थान पदस्थानपतितः । यदे पयव यदा ही गभी पचरसा यदौ स्वका जकितव्या । अथप्याप्रिमिवाचिकपानिमा जदत्त । पचन्निप्य
 तियम्यानिकाना विपत्ता पयवा प्रसन्ना ? गीतम । अमन्ता पयवा प्रसन्ना । अथकनार्थेन जदत्त । एयमथ्यते-अवस्थानिनिबोधिक्कानि

पचमाह ये करो अत स्थान पतित छ । स्थितिहे करो अतुरवान पतित छ । कासवकपययि करो तद्वर छे । अथपय पच गम्य रस अग पययि करो
 य अत य अ पय न पच देयने करो अटस्थान पतित छे । एय अकासगुणकाकागिति । एय अकट गुण काका पचमिद्वय तियसु यानिक पच का
 यका । अकटमवकासगुणकाकागिति उक्कवति । अथपय अकट मय काका पचेद्विद्व तिय च यानिक पच एमअ एतका विगय स्वस्थाने अटका
 म अति । एम प प वच दे तय पनि रस पाट परस आववा । अकामिनिवाहियनाणीअ अते पचेद्वियतिरिस्सुजोनिवाचति । अथप्य पाभिनि
 वाचिअ ने हे मगमन् पचेद्विय तिय च यानिक न जेतका पयव कया म० अतार हे भोतम पचम्या पययि कया । तव कले पये हे मगमन् एम प चया

दियतिरिक्तजोगियस्स दसुठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले रंगानठयाए षउठानयक्रिए । ठितीए षउ०
 यन्तगधरसफासपल्लयहि ठठानयक्रिए । अयानिगियोहि यनाणपल्लयहि तुल्ले । सुग्गनाणपल्लयहि ठठान
 क्रिए । अरुदसुणपल्लयहि अचरुदसुणपल्लयहि ठठानयक्रिए । एव उक्कोसानिगियोहि यनाणीयि णयर
 ठितीए तिठानयक्रिए । तिरिया नाणा तिरिया अयसाणा तिरिया दसणा । सठानं तुल्ले सससु ठठानयक्रिए
 अजहदुक्कोसानिगियोहि यनाणी जहा उक्कोसानिगियोहि यनाणीयि नयर ठितीए षउठानयक्रिए । एव

पंचेन्द्रियतिययोनिवस्स अजसतग पयसा प्रससा ॥ नौ ॥ १ ॥ अण्णयात्रिगियोणिउक्कानिपचेन्द्रियतिययोनिवसा अण्णयात्रिगियोनिवसा
 चेन्द्रियतिययोनिवस्स इव्वायमयातस्य प्रदयाअतया तस्योयगाअनार्यतया अतु स्यानपतितः । स्थितो अतु स्यानपतितः । अर्धेनस्वरसपश
 पयवे पदस्यानपतितः । यानिनिदोपिउक्कानपययेलस्य । द्युतयानपयवे पदस्यानपतितः । अहुदयानपयवे रचयुदयानपयवे पदस्यानपतितः ।
 यमगुरुपानिनिदोपिउक्कानपयवि नवर स्थित्या त्रिस्थानपतितः । आविउक्कानि त्रीस्थानपतितः । अविउक्कानि त्रीस्थानपतितः । अविउक्कानि त्रीस्थानपतितः ।
 स्थानपतितः । अत्रपमोरकपर्यातिनियोपिउक्कानि पयोस्कर्पात्रिगियोपिउक्कानि नवर स्थित्या अतु स्यानपतितः । एव सुतथापयि । अण्णया

१० ॥ ४ ॥ भोतम जसस्य यामिनिवाधिव ज्ञानो पचेन्द्रिय तिय व जामिनि अवन्य यामिनिवाधिव ज्ञानो पचेन्द्रिय तिय व यामिनि न इव्वावे अरा त
 य प्रदयावे करो तुल्ल सवगाअनाये करो अतस्यान पतित स्थितिं करो अतस्यान पतितः । अर्धे नय रच फरस पयवे करो पटस्यान पतितः । यामि
 निवोधिअ ज्ञान पयवे करो तुल्ल अण्णयान पयवे करो पटस्यान पतितः । अहुदयान पयवे करो पटस्यान पतितः । एव उक्कानिवाधिव
 विवगावो विवितः । एम वरुअए यामिनिवाधिव ज्ञानो पच जाअवा एतको विजये स्थितिं करो विवगाव पतित इवे । अत्र ज्ञाने करो अत्र एव ज्ञाने
 रा एवामे तुल्ल एम यय स्थाने विवे पटस्यान पतित इवे । अत्रपमोरकपर्यातिनियोपिउक्कानि पयोस्कर्पात्रिगियोपिउक्कानि नवर स्थित्या अतु स्यानपतितः । एव सुतथापयि । अण्णया

यतिरिक्कजोगियस्स दञ्चठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले उगाढगठयाए चउठाणवफिए । ठितीण चउठाणय
 फिए । काळायपज्जेवेहि तुल्ले अवनमसाहे त्रयगधरसफाचपज्जेवेहि तिहि नाणेहि तिहि अस्साणेहि तिहि द
 सणेहि ठठाणवफिए । एव उक्कीसगुणकालएवि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवचय नवर सठाण
 ठठाणवफिए । एव पच यस्सा दो गथा पच रत्ता अठ फासा । जहन्नाजिणियोहियनाणीण जत्ते । पचि
 दियतिरिक्कजोगियाण केयइया पज्जाया पणप्पा ? गोयमा ! अणता पज्जाया पणप्पा से केणठेण जत्ते ।
 एव दुच्चइ-गोयमा । जहन्नाजिणियोहियनाणीपचिदियतिरिक्कजोगिए जहन्नाजिणियोहियनाणस्स पचि

इत्थायतया तुस्य प्रवृत्तायतया तुल्योवगाइयायतया चतु स्थाययतित । स्थित्या चत स्थानपतित । कासद्वयपर्यवस्योऽवज्ञोपेयवगमथर
 वरपद्यपर्यये एतन्निर्वाते विनिरुद्धानि स्थित्तिर्वाद्यनैः पदस्थानपतित । एवमुत्तरकपणवकासोपि । अतएवापानुत्तरकपणवकासोप्यवच्छेद मवर
 तियय्योनिकाता विपत्ताः पयसा प्रवृत्ता ? गौतम ! अमन्ता पयसाः प्रवृत्ता । अथकनार्थेन जदत्ता । एवमन्वयत-अथम्यान्निमिबोचिकछानि

पयसाइन्वे करो चत स्थान पतित छ । स्थित्ये करो चतुद्वयान पतित छ । कासद्वयपर्यय करो तदय छे । पयसाय वक गम्य रस अय पर्यवे करो
 वरपद्यान च पद्यान च पद्यान पतित करो चटस्थान पतित करो । एव चटस्थानपतित । पम चटस्थान गम्य अथक पचमिदय तियस यानिक पच का
 यथा । पचकपणममुखायमवकासोवि पयचवत्ति । पचकपण्य पमरज्जव जप कायक पचेद्विज तिय च कानिक पच एमण एतत्ता विजय अस्साने अटक्का
 न पति । अम प च मच के मन्थ पाच रस पाठ परव जानवा । अचकामिपिकाइयनाकोच भत्ते पचेदियतिरिक्कजोगियाणति । अचक्य चाभिनि
 वाधिय ने के मयदवन् पचेद्विज तिय च यानिक न केतसा पर्याय कट्टा म चतर के गौतम पणत्ता पर्याय कट्टा । तच्च पचे पचे के मगधज इम कट्टा

द्विपतिरिरुजोगियस्स वड्ठयाए तुल्ले पदेचठयाए तल्ले रीगाहणठयाए चउठाणवळिए । ठितीए चउ०
यत्तगधरसफासपज्जावेहि ठठाणवळिए । अण्णिणियोहियनाणपज्जावेहि तुल्ले । सुयनाणपज्जावेहि ठठाणव
ळिए । यरुदुसणपज्जावेहि अचरुदुसणपज्जावेहि ठठाणवळिए । एव उक्कोसाजिणियोहियनाणीवि नयर
ठितीए तिठाणवळिए । तिण्णि नाणा तिण्णि धुखाणा तिण्णि दसणा । सठाणे तुल्ले सससु ठठाणवळिए
अअहदुक्कोसाजिणियोहियनाणी जहा उक्कोसाजिणियाहियनाणीवि नयर ठितीए चउठाणवळिए । एव

पंचत्रिपतिपद्मो निरुक्तस्य समन्ताः पययाः प्रपन्नाः २ गौतम । अपर्याप्तिनियोचिकक्षानिपद्योनिर्गोचिक्क्षानिपदं
वेन्द्रियतिययानिक्तस्य द्रव्याद्यतयात्तस्य प्रदशाद्यतयाः तत्त्वोद्यगाद्वानद्यतयाः चतुःस्थानपतितः । स्थितौ चतुःस्थानपतितः । चतुर्गन्धरसुरपद्म
पदबैः प्रदस्थानपतितः । आतिनियोचिकक्षानपययेकस्य । द्युतक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य ।
चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य ।
स्थानपतितः । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य ।
स्थानपतितः । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य । चतुर्दक्षानपययेकस्य ।

प० ३ । उभोतम अवस्थया अभिनिवादिष्यन् प्रानो परोक्षेति च वाजिनः न दृष्ट्याये कदापि
 च प्रवृत्त्याये करो तुल्य प्रवृत्त्याये करो अतस्मान् पतित स्थितिं करो अतस्मान् पतित । आभि
 निवादिष्यन् प्रानो करो तुल्य अतस्मान् पतित । अतस्मान् पतित । अतस्मान् पतित । अतस्मान् पतित ।
 दिव्यताको विनि । एव वरकट अभिनिवादिष्यन् प्रानो पच आचका एतन्तो विग्रीय स्थितिं करो विव्यान पतित पुन । अथ प्राने करो अथ दग्ने क
 रा एतान्मे तुल्य एव मेद स्थाने विष्व पटस्यान पतित पुन । अतस्मान् अभिनिवादिष्यन् प्रानो पच आचका एतन्तो विग्रीय स्थितिं करो विव्यान पतित पुन । अथ प्राने करो अथ दग्ने क

सुयनाणीयि । जहृषोहिनाणीण नते । पचिदियतिरिस्कजोणियाण पुष्कू, गीयमा । अणता पज्जवा प०
 से फेणठेण नते । एव वुच्चह ? गीयमा ! जहृषोहिनाणी पचिदियतिरिस्कजोणिए जहृषोहिनाणिणस्स
 पचिदियतिरिस्कजोणियस्स वृद्धयाए तुल्ले पदेसठयाए अउठाणवन्निए । ठितीए ति
 ठाणवन्निए । वसुगधरसफासपज्जवेहि अण्णिणियोहियनाणसुअनाणपज्जवेहि ठठाणवन्निए । ठिहिनाणप
 ज्जवेहि तुल्ले अण्णाणा नत्थि । चस्कुदसणपज्जवेहि ठठाणवन्निए । एव उक्खोसाहि

वपिअनिनां नदत्त । पंचनिदियतिर्ययोमिकाणा पुष्का नोत्तम । अनता पर्यवा । मज्झमा । अथकेमार्गेण नदत्त । एवमुच्चात् ० गीतम । अथ
 स्वावचिअानियचन्द्रियतिर्ययोमिकोअथग्यावापिअानियचन्द्रियतिर्ययोमिकस्य द्वय्याथतयातुल्य मर्यादतया तुल्यो अवगाहनापर्यंतया यतुः
 स्थानपतितः । स्वित्वा त्रिस्थानपतित । वसुगधरसपज्जपयवेदराजिमियाचिकमुत्तमतपयवेद पदस्थानपतित । अथचिअानपर्यवेत्तुस्थाऽद्या
 नानि न सन्ति । वसुद्वंद्वनपयवेदरश्चद्वंद्वनपयवेद पदस्थानपतितः । एवमुत्कर्षोन्निमिबोचिककाम्यपि । अथपर्यामुत्कर्षोन्निमिबोचिअास्यप्येवैव
 नवरं स्वस्थाने पदस्थानपतितः । यथाप्रतिनिवापिककामी तथा नत्थिअानी तथा विजहुअानीय । वसुद्वंद्वस्यप

रश्च चामिनिबोचिक अानी तमथ एतका विअप विमिबो चतस्मान पतित । एम अतअानी परि अतअानी । अथवाअिनाबोअति । अथत्त चवचिअ
 मो ना के ममवन् पचेद्विद तिय च चाजिअ ना मत्त वत्तर के भीमम चमत्ता पर्याय कद्धा । तेष अवे पर्ये के मगवन् इम कद्धा—अपम्य चवचिअ ना
 न दमत्ता पर्याय के नोत्तम अदत्त चवचिअानी पचेद्विद तिय च चाजिअ कवस्य चवचिअानी पचेद्विद तिय च जोजिअ ने द्रव्याये करो तुम्य पदेयाये
 करो तुम्य पदगाहमाये करो चतस्मान पतित । अतिवे करो विअान पतित । अथ नत्थ इम यथ पर्याये करो चाभिनिवाचिककाम अतअान पर्या
 ये करो वटप्यान पतित, अथचिअान पर्याये करो तम अअान भो । पचवसुद्वम चवद्वयमे करो पदस्थान पतित । एवं कद्धासोअिनाबोअति । ए

चयद्विषय इति ॥ अथमुपययोपि चि तियर्षवर्षिष्यस्य सन्नूतिकानुसारेण अथग्ये माप्रिनिबोधिष्यतज्ञाने सस्येते सत सस्येयवर्षयोपयोऽथ
 स्वययवर्षयोपय अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या पतुस्यमानपतितः । अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानस्य स्थित्या य थिरयानपतितता
 वाप्या यत इह यत्थोरगए आप्रिनिबोधिष्यतज्ञाने च गियमार्षद्वयवर्षयोपय स्थित्या त्रिस्थानपतित एय यथाच प्राप्-वर्षपिन्ने यितङ्गमू
 ये पि स्थित्या त्रिस्थानपतितता किदुरखमितिप दुष्यते-अथस्येयवर्षयोपयोऽथचियिष्यतज्ञानसमस्तज्ञान-उपिष्यतज्ञानसु निमगा
 तिहासवर्षिष्य त्रिस्थानपतितता अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति, अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति ॥ तियक्
 चस्येन्द्रयवर्षयोपि अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति, अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति ॥ यदा
 यदा कश्चित्परीक्षरोनुतरोपयतिर्द्वयो वा अमतिपतितेमावर्षिष्यतज्ञानेन अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति ॥ तियक्
 प्राने रिरपुषः । विनङ्गज्ञानसहितस्तु नारकादुहृतीअथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति ॥ तियक्

नाणीयि । अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति, अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति ॥ तियक्
 तहा मतिश्च्यवर्षयोपि अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति, अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति ॥ तियक्
 जहा अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति, अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति ॥ तियक्

सुदृष्टनी च यथाप्रिनिबोधिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति, अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति ॥ तियक्
 यथ द्यर्षनं तत्र प्रामाण्यप्यप्रामाण्यपि यथीति अखितम् । अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति ॥ तियक्

मम अतएव यवर्षिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति, अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति ॥ तियक्
 न पतित दुरे । अतः यथाप्रिनिबोधिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति, अथग्यानिनियोपिष्यतज्ञानसमस्तज्ञानस्य स्थित्या यति ॥ तियक्

सुयनाणीधि । जह्णोहिनाणीण भते । पचिदियतिरिक्खजोणियाण पुक्खा, गोयमा, श्रुणता पज्जावा प०
 से केणठेण भते ! एव बुद्धइ ? गोयमा । जह्णोहिनाणी पचिदियतिरिक्खजोणिए जह्णोहिनाणिणस्स
 पचिदियतिरिक्खजोणियस्स दध्ठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले उगाहणठयाए खउठाणवक्किए । ठितीए ति
 ठाणवक्किए । वक्खगधरसफासपज्जावोहं श्रान्तिणिद्योहिंयनाणसुश्रुणपज्जावोहं वठाणवक्किए । उहिंनाणप
 ज्जावोहं तुल्ले श्रुणाणा नत्थि । चस्कुदसणपज्जावोहं श्रुचस्कुदसणपज्जावोहं वठाणवक्किए । एव उक्खोसोहि

वपिप्पानिना जइत्त । पचन्निपयितय्योनिक्काना पुक्खा गीतम । वज्जवा पर्यवाः प्रवसाः । पयल्लेनार्येन जइत्त ! एवमुच्यत ॥ गीतम । अप
 म्वायचिप्पानिपचन्निपयितय्योनिक्कानावपिप्पानिपचन्निपयितय्योनिक्कस्य वज्जायतपात्तस्य प्रवसार्यतया तुल्लो उवगाहणार्थतया वतुः
 स्थानपतितः । किंत्वा प्रिस्थानपतित । वज्जगन्धरवरपक्षपयवैरात्रिनिधायिकमुत्तदानपयवैय पदस्थानपतित । अवापिप्पानपर्यवेस्तुल्लो उवा
 नानि न पान्ति । वज्जुरंजनपयवैरश्शुद्धर्मपयवैय पदस्थानपतितः । एवमुत्त्वर्णत्रिभिर्बोधिक्काम्यपि । वज्जपग्यानुत्त्वर्णवचिप्पानम्यप्येवैव
 तवरं स्वर्याने पदस्थानपतितः । ययात्रिभिर्बोधिक्काम्नी तथा मत्तप्पान्नी सुताप्पान्नी च । यथावचिप्पान्नी यथा विज्जकूप्पान्नी च । वज्जुरंजनपय

उउर चामिनिर्बोधिक्क पानो ततक्क एतक्का विग्रह म्विग्रहो चतस्मान पतित । एम अतप्पानो पाक्क जाववा । जह्णोहिनाबोक्कि । अथक्क चवधिप्पान
 नो ना हे भनवन् पवेद्विक्क तियक्क च दानिक्क मा मत्त कत्तर हे भीतय चमत्ता पर्याय कप्पा । तेइ कवे पर्ये हे मगवन् इम कप्पा—अथक्क चवधिप्पान मा
 म पनत्ता पयाइ हे भीतम अथक्क चवधिप्पानो पवेद्विक्क तियक्क च दानिक्क कवक्क चवधिप्पानो पवेद्विक्क तियक्क च दानिक्क ने द्रव्याये करो तय्य पट्टेयाये
 करो तुल्ल चववाइमाइ करो चतस्मान पतित । किंत्वे करो विज्जान पतित । चक्क मज्ज एव क्कय पर्याये करो चामिनिक्काधिकप्पान अतप्पान पवर्वा
 ये करो पटप्पान पतित, चवधिप्पान पर्याये करो तुल्ल चप्पान नको । पचप्पुद्वयम चप्पुद्वयेन करो पट्टप्पान पतित । एवं चक्कासोहिनाबोक्कि । प

[illegible]

नाणीयि । अहन्तुक्कोसोहिनाणीयि एवचेव नवर सठाणे ठठाणयक्रिए । जहा अाचिणियोहियनाणी
 तहा मतिअत्ताणी सुयअत्ताणीय । जहा ठहिनाणी तहा यिअगनाणीय । अस्कदंसणी अचस्कदंसणीय
 जहा अाचिणियोहियनाणी । ठहिदसणी जहा ठहिनाणी । जत्य नाणा तत्य अत्ताणा नतिय जत्य अत्ता

सुदृशनी च वयात्रिनियोपिब्रह्मज्ञानी । स्रजपिद्वाभी यथावधिप्रज्ञानी । यत्र ज्ञानानि तत्राद्यानामि स्रजं ज्ञानानि न स्रजि
 १७७ दृश्यं तत्र ज्ञानागम्यप्यज्ञानागम्यपि स्रजोतिं ज्ञप्तिव्यम् । अणुव्याख्या क्रियस्तः पञ्चाङ्गः प्रज्ञप्ताः । गीतम् ।

[illegible]

णा तस्य नाणा नोत्ये । जस्य दसणा तस्य नाणात्रि श्रुत्याणांवि श्रुत्यिदं नाणिबन्धु । जहस्योगाहणगाण
 जन । मणुस्साण केवडया पज्जा पयससा ? गोयमा । श्रुणता पज्जाया पयससा । से केणठेण जत । एव
 युचुड--जहस्योगाहणगाण मणुस्साण श्रुणता पज्जाया पयससा ? गोयमा । जहस्योगाहणए मणस जहस्यो
 गधरमुफापपज्जात्रिहि तिहि नाणेहि दोहि श्रुन्ताणेहि तिहि दसणाहि वठानवक्रिए । उक्खोसोगाहणएवि
 वनना पयसा प्रससा । यपकमापेन प्रटल । यवमुच्यत--अथयथावगाहनकासा मनुयावासवला पर्यायः प्रससा ? गौतम । जपय्याव

गाहनका मनुयावपय्यावगाहनकस्य मनुयस्य इत्याद्यतया तुल्यं प्रदेष्टायेतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तस्य । स्थित्या त्रिर्यामपतित । बर्ष
 गधरमुफापपयससापयससाया त्रिभिदसने पदस्यानपतित । उत्कर्षायागाहनकोप्यय श्वेव मकर स्थित्या स्यादीनः स्यातुल्यः
 स्यादन्त्ययिका । यदि शीमोऽवहृपनाहीनीयास्यचिकोऽर्कयेयनायाचिको वृष्टाने वृष्टाने वृष्टाने । अथपन्त्युत्सवावगाहनकोप्येव श्वेव

को वयस्यस्ये जम चाभिमिदधिज ज्ञानो अवावदशने जम अविज्ञाना कक्षा तेम जायसा । जस्य नाचा तस्य अद्यावा नत्यति । जिकी ज्ञान
 दे तिहा पद्यान नहवे, जिकी पद्यान इवे तिहा ज्ञान इवे तिहा ज्ञान पणि इवे पद्यान पणि इवे । एम अहरो । जहसागाह
 याव भत मकसाकात । अथय पयसाहना ना मनुय ते के भववन् जतथा पर्याय कक्षा प्र क जगौतम यमका पर्याय कक्षा । तेव येवे पद के
 गान् इम कक्षा अथय पयसाहना ना मनुय न यमका पर्याय प्र क जगौतम अथय पयसाहना ना मनुय अथय पयसाहना ना मनुय ने प्रत्याये
 रो तुल्य प्रदेयाये करो तुल्य पयसाहनाये करो तुल्य स्थितिय करो तुल्य पयसाहना ना मनुय पयसाहना ना मनुय ने प्रत्याये
 गने करो पटप्यान पतित इवे । कक्षायागाहवदवि एवं वदति । अन्तर पयसाहना ना मनुय ने पणि इमज कक्षा पयसाहना ना मनुय ने प्रत्याये
 करो वयस्यस्ये जम चाभिमिदधिज ज्ञानो अवावदशने जम अविज्ञाना कक्षा तेम जायसा । जस्य नाचा तस्य अद्यावा नत्यति । जिकी ज्ञान

नाप्यादिर्युक्तं उरतस्यावगाहमनूयमन्त्रे-टिहए सिधबीदे सिधतुले सिधचद्विहिए खीये असयेउजनागदीले जंइ अयदिग असयेउजनागपद्म
 दिग ॥ उरउहावगाहना हि मनुष्या विगण्यवाष्पया विगण्यनामो स्थिति शीपगयतः पत्नोपमासस्ययजागदीनामि श्रीवि पत्नोपमानि सरुचयतया
 म्येउ परिपूजानि त्रीवि पत्नोपमानि "सप्तम्य जीवाभिगम-उरतकुसरेयजुराय मणुरसाय मते । कथइय कास ठिइ पञ्जना गोयमा । सइस्य
 तिवि पत्निउमार्द पत्निउमवस असरउभायडीकाइ उकुसय तिवि पत्निउमार्दति, पत्न्यापमासस्येयजागय अयाका पत्न्यापमानामसस्यय
 तमानाग इति पत्नोपमासस्ययजागदीनाः पत्न्यापमत्रय स्थितिव परिपूयेपत्नोपमत्रयस्थितिविहिएया असययजागदीत इतरस्त तदपेयपाउस
 वयजागापिकाः ज्ञाया युद्धिहानया न गत्यस्त ॥ इतो नाका दो बभावा इति ॥ उरउहावगाहना हि असयववर्पायुचो असयववर्पायुपा चाउत्र
 विविनद्रासम् । सदास्यानाका दोहो हू यव ज्ञाने हू वापान इति तथा अत्रयगोरनृपुहावगाहन संशेयवर्पायुकोपि नवत्यसयववर्पायुकोपि
 नस्युताइपस्युताइपस्युतावगाहनयापि चतु र्यानपतितत्वं स्थित्याप तथाऽऽद्यैयुत्तिसत्तमुतावचिमल पयवकपेज्जाने पदस्थानपतिता स्तेषां चतु

एवचैय नत्रर टितीए सिध हीण सिध तुले सिध अश्वहिए । सइ हीण असंखेअइजागहीणे । अइह अश्व
 हिए अरउरउजनागमस्रुहिण । दो नाणा दो अयाणा दो वसणा । अअहस्यमगुक्कोखीगाहणएवि एवचै
 व नत्रर टंगाहणठयाए चउठाणवक्रिण । ठितीए चउठाणवक्रिण । आइसहि चउहि नाणेहि उठाणवक्रि

मयउरउगाहनायतना चतु स्थानपतिता ॥ यदिमैयुत्तियाने पदस्थानपतित । केवलदमत्रपयवैस्तुल्यदिभिर
 दाविन् दोन कटावत् तत्र कटाणि चविज इवे । जे दोन हुवे असस्यात भाग दोन ज्ञा, ज वाधिक सव असस्यात भाग यधिक ज्ञान व ज्ञान स
 यज्ञान ये दयान इवे । अअहस्ययासागाहव यदि एव चवति । असयवव अरउरउ चवगाहना ना मनज्जने पवि एमज एतहा विग्रय पवगाहनायताव
 करा चत सान चतित हुवे । स्थितिये करो चतु सान पतित हुवे । याउकहिता । आदिम मति युत अचि चने मनपयय प्राप्त करा पटस्रान पतित

णा तस्य नाणा नस्य । जस्य दसणा तस्य नाणात्रि क्षणाणां च अत्यन्तं नाणिवत् । जहस्यो गाहणमाणा
 जन । मणुस्साण केवडया पज्जाया पयसता ? गोयमा । अणता पज्जाया पयसता । से केणठेण जत । एव
 युवुड-जहस्यो गाहणमाणा मणुस्साण अणता पज्जाया पयसता ? गोयमा । जहस्यो गाहणए मणुस जहस्यो
 गाहणमांस मणुस्स मणुस्स दसठयाए तुल्ले ठंगाहणठयाए तुल्ले ठितीए तिठाणवक्रिए । यस्मा
 मघरसफाए पज्जायेहि तिहि नाणेहि दोहि अन्नाणेहि तिहि दसणाहि लठाणवक्रिए । उक्खोसो गाहणए वि

धमत्ताः पयसा मसता । पयसमार्येण अरत्ता । यवमुच्यते-अपगयावगाहमात्मना मणुष्याणां समन्ता पर्यवत् । मसताः ? गीतस । अपगयाव
 गाहमर्को मणुष्योऽपगयावगाहकस्य मणुष्यस्य इत्याद्यतया तुल्य मदेष्टार्यतया तुल्योऽवगाहमार्यतया तस्य । स्यत्या चित्तानपत्तिः । यत्
 मत्परमवशापयवैरिभिस्तान् ह्राप्यामहात्मानां चित्रिदृष्टान् पदस्वानपत्तिः । उत्कर्षावगाहनकोप्यव भवेत्तत्परिचयः स्याद्वीन स्यात्तुल्यः
 स्यादप्यपि । यदि शीतोऽसह्यप्रगर्हीभोषामपिकोऽवस्वेपनामापिको दृष्टाने दृष्टाने द्वे दृष्टाने । अत्रपस्युत्कर्षावगाहनकाप्येव भवेत्

नो चपचपयशो जम चाभिनिवाधिक ज्ञानो, अवविदमनो जम अवविदमना ज्ञाना तेम ज्ञानया । ज्ञान नाया तस्य पदावा मत्ति । चिकी ज्ञान
 इव तिक्का पज्ञान मडवे, चिकी पज्ञान इवे तिक्का ज्ञान इवे तिक्का ज्ञान पचि कुवे पज्ञान पचि कुवे । एम कडको । जहस्यो गाह
 वगाहं भते मकसाकति । जहस्य पवगाहना मा मणुष्य ने के मवमन् जतया पयसि ज्ञाना य ज भोतस पमन्ता पयसि ज्ञाना । तेह केवे पयसि के
 मवमन् इम ज्ञाना अपगय पवगाहना मा मणुष्य ने पमन्ता पयसि य ज भोतस जघरव पवगाहना मा मणुष्य जघरव पवगाहना मा मणुष्य ने पयसि के
 करो तुल्य मदेष्टार्ये करो तुल्य पवगाहनाये करो तुल्य स्मिन्ति करो तुल्य पवगाहनाये करो तुल्य पवगाहना मा मणुष्य ने पयसि के
 दग्गेने करो पटप्पान पत्ति कुवे । पटप्पानावक्रिए एवं चरति । अत्रभूट पवगाहना मा मणुष्य ने पयसि इमज कडका पटप्पाना विमिय स्मिन्ति करो करो

ग्राने ऋजुश्रितिमनुष्यमन्त्रे-ही नाशा ही अशाया इति । उत्कृष्टस्थितिकाहि मनुष्या स्त्रियस्त्रीपमामुपसोया च्य तावदृष्टाने भियमेम पदा पुनः पवमासुतग्रायया वैमानिकय घट्टायुप क्षान्त सम्यक्पात्रात् द्वे चाम ज्ञायत अवपिबिजङ्गुएवासुयवप्रयाया न स्त इति श्रीविद्यानानि श्रीरूपानामोतिभोक्त यत्रपथारजस्थितिकमनुष्यसूत्र मजपयोत्कृष्टावगाहनमनुष्यसूत्रमिय प्रावगीय । अयन्यानिनिवापिप्रमनुष्यसूत्र द्वे चान य

मणुक्कासिद्धितीएसि एव चेत्य नथर ठिहण थठ्ठाणवणिण । तुंगाहणठयाए थठ्ठाणवणिण । आइसिहि च
चहि नाणेहि ठठ्ठाणवणिण । केवलनाणपज्जवाहि तुस । तिहि थ्यसाणेहि तिहि वसणेहि ठठ्ठाणवणिण
केवलदसणपज्जवाहि तुस । जहन्तगुणकालयाण जत । मणस्साण कधइया पज्जवा पणप्पा ? गोयमा ।
थ्यणता पज्जवा पणप्पा । से कणठ्ठण जत । एव वुसइ ? गोयमा । जहयागुणकालए मणम जहयागुणका

पूर्वमन्त्रकपस्थितिकोपि मन्त्रं हृद्यानि दुःश्राने हे वृक्षम । अत्रयगुणानुस्कर्षस्थितिशोष्यव न्निव मन्त्र स्थित्या वस्तुस्थानपतितः । अत्रयगु
 इनाम्यतया चतुःस्थानपतितः । आदिमन्त्रुर्नष्टानि पदस्थानपतितः । केवलपानपर्ययेष्टुल्यकिमिरिचान्निस्त्रिजिद्वर्गं पदस्थानपतित
 अवतलवृक्षमपयवस्तुम् । अत्रयगुणकालकाला मन्त्रम् । मन्त्रप्यावा क्रियन्ता पयवाः प्रपन्ता ? गौतम । अतन्ता पयवाः प्रपन्ता ।
 पयव कर्तायेन तन्ता । पदमुच्यते अत्रयगुणकालकालमनुपस्थानता पयवाः प्रपन्ता ? गौतम । अत्रयगुणकालकालमनुपस्थानकालकालस्य

[illegible]

पापं विद्यानामा मन्त्रद्वयविद्यापस्योपशमवैविध्यतात्तारतम्यजायतकवसदानपयवैसास्या नि शीपसाधरस्यपतः प्राप्नुतस्य केवलप्राप्तस्य
 प्रजाताकात शीप सुगम म अपग्यस्त्विति मनुष्यमनु-द्विष्टि अन्नाद्येति इति ॥ ह्याप्यामन्नाभाप्या मन्वाकामयुतापामरुपाभ्या पदस्यामपसितता
 पदप्या नत प्रानाभ्या कस्यादिति हेतुव्यक्त-अपग्यास्त्वितिका मनुष्या सन्तुर्धमाः सम्बन्धिममनुष्या नियमतो मिष्याप्युपगतलोपामन्नाप्य एव न
 ए । कथयन्नागपञ्चवेहि तुल्ये । तिहि श्रयाणेहि दसणेहि ठठाणयकिए । केवलदसगपञ्चवेहि तुल्ये । ज
 हण्ठितीयाण अत । मणुस्साण केवलदया पञ्चया पञ्चसा ? गोयमा । श्रयाता पञ्चया पञ्चसा । चे केग
 सठयाए तुल्य ठगाहणठयाए अठठाणयकिए । ठितीए तुल्ये । अथगारसफासपञ्चवेहि दीहि श्रयाणेहि
 दीहि दसणेहि ठठाणयकिए । एव उक्खोसठितीएयि नवर दो नाणा दो श्रयाणा दा दसगा । अजहण
 मानेद्वनः पदस्यामपतित । कथमद्वेनपयवेस्तुल्य । अपग्यस्त्वितिकाना अदत्त । मनुष्याणा कियत पर्यवा प्रसमाः ? गीतम । अजहण
 पर्यवाः प्रसमाः । अथवेनार्थेन अदत्त । एवमुच्यते । गीतम । अपग्यस्त्वितिकोमनुष्योअपग्यस्त्वितिकस्य मनुष्यस्य इव्यायतया तुल्य प्रदद्याप
 तया तुल्योऽवगाहनायतया अतुल्यमपतित । स्त्वित्या तुल्योवगमनभरसरपञ्चपयवेद्वेद्विज्जामन्नाभाप्या ह्याप्या इज्जानाभ्या पदस्यामपतित ।
 अथ, केवलदस म पञ्चवे करो तुल्य इवे पञ्च ज्ञान पने पञ्च दशम करो पदस्याम पतित इवे । अथल दशम पर्याय करा तुल्य इव । अथल दशमया म
 मथस्यापति । अथल स्त्वितिक मप्य न वे मगवन् अतथा पर्याय कथा म न वे गीतम पञ्चमा पर्याय कथा, तद एवे पदे वे मगवन् इम व
 ता अथल स्त्वितिक मप्य नि पञ्चमा पर्याय कथा म अथर वे गीतम अथल स्त्वितिक मप्य नि पञ्चमा पर्याय कथा, तद एवे पदे वे मगवन् इम व
 ता पञ्चगाहनाये करो अतुल्यम पतित । स्त्वितिये करो वे पञ्चाने करो वे इयने करो वे पदस्याम पतित ।

प्राप्ते षट्शतस्थितिमनुष्यमेव-ती माता ही बलाका इति । षट्शतस्थितिकाहि मनुष्या स्त्रियस्योपमायुषस्योपा ब्य सायदृष्टाने नियमेन यदा पुनः पञ्चमासागच्छापायया येमानिक्षय यद्वाप्य सादा मम्यज्ञायाजात् हे ज्ञान मप्यस्य अयथिविज्ञायासाययवर्षायुया न स्त इति श्रीवि ज्ञानानि श्री सपञ्चानानोतिनात् षट्शतस्थितिकमनुष्यमूय मज्जपग्नोत्कृष्टावगाहममनुष्यमश्रमिष प्रावनीय । अयस्यानिनिषाधिकमनुष्यसूत्र हे ज्ञान य

मणक्कासिद्धितीएञ्चि एव खेत्र नवर ठिइए अठठाणवक्रिए । उगाहणठयाए अठठाणवक्रिए । अठठवेहि च उहि नाणेहि ठठाणवक्रिए । केवलनाणपञ्जवहि तुल्ले । तिहि अय्याणेहि तिहि वसणेहि ठठाणवक्रिए । केवलदमणपञ्जवहि तुल्ले । जहन्तगुणकालयाण जत । मणुस्साण कयइया पज्जवा पयसा ? गोयसा । अण्णता पज्जवा पयसा । से कणठेण जत । एव युच्चइ ? गोयसा । जहयगुणकालए मणुम जहयगुणका

एवमरकपस्थितिकोपि नवर इ प्राप्ते इच्छाने हे वसन्त । अजयग्यानुत्कर्षस्थितिकोप्यव खेत्र नवर स्थित्या वतुःस्थानपतितः । अजया इमायतया वतुःस्थानपतित । आदिमैधनुभिन्नाने पट्स्थानपतितः । केवलज्ञानपयवैधुस्यस्त्रिमिरिज्ञानेक्किनिर्दयने पट्स्थानपतित मयनदमणपयवकुस्य । अययगुणकालकाना जदल । मनुष्याया विवक्तः पर्यवाः प्रचक्षाः ? गोयसा । अयन्ता पयवाः प्रचक्षा । अय कनार्येन जदल । मनुष्यय अययगुणकालकमनुष्यस्थानता पर्यवाः प्रचक्षाः ? गोयसा । अययगुणकालकोमनुष्यो अययगुणकालकस्य

पवं ककोपद्वितीएविति । इम कठक स्थिति न विषे पय वमज ठतका विषेइ व ज्ञान व अज्ञान अत न इयन इव । पयइव मयकोपद्वितीएवि पय अयति । अजययव पञ्चकप क्षितिज विषे पय वमज ठतका विषय क्षिति करो जत स्थान पतित । अजयाइमायतावे करो जतस्थान पतितइवे । पाइद्विजितः पद्विजा चार प्राप्ते करो वट्स्थान पतित इवे । केवलज्ञान पर्यवे करो तएइ इवे । पय अज्ञान अय दयने करो वट्स्थान पतित इ । केवल दयन पर्यवे करो तएइ इवे । अययगुणकालकवर्ति । अयय ग्राह्य वाक्य ने हे मणवन् मनुष्य ने केतका पर्याव इवे म कतर हे गोतम

यानिपि ज्ञानानां तन्मद्गुणान्ध्यापवसथोपशमवैविध्यतातारतम्यनावास्तव्यलज्जानपयवैकुल्यानां निक्षेपस्थावरणक्षयतः प्राञ्जलस्य केवलप्राप्तस्य
प्रदानावाप्तं शेषं सुगमं च अपगम्यन्वितिकमनुष्यमूत्र-दोहि इति च अत्र खण्ड इति च हास्यामच्छाभाभ्यां सत्यज्ञानश्रुताद्यानरूपाभ्यां पटस्यानपत्तितया
पत्राभ्यां नत ज्ञानाभ्यां कस्मादिति चेदुच्यते-अपगम्यास्त्यक्तिका मनुष्याः समुच्छिन्नाः समुच्छिन्नास्त्येव नियमतो भिष्यादृष्टयस्तत्तत्तेषाममज्ञानएव न

ए । कथं एतानां पञ्जवैहि तुषे । तिहि श्रुत्याणेहि दसणेहि वठ्ठाणवैहि । केवलदसणपञ्जवैहि तुषे । ज
हस्यठ्ठितीयाणं नत । मणुस्साणं केवलदया पञ्जवा पससा ? गोयमा । श्रुणता पञ्जवा पससा । से केण
ठेण नते । एव बुच्चइ ? गोयमा ! जहस्यठ्ठितीए मणुस्स जहस्यठ्ठितीयस्स मणुस्सस्स वसूठयाए तुषे पदे
सठयाए तुषे वंगावणठयाए वठ्ठाणवैहि । ठितीए तुषे । यस्यगरसफसपञ्जवैहि दोहि श्रुत्याणेहि
दोहि दसणेहि वठ्ठाणवैहि । एव उक्कोसठ्ठितीएयि नवर दो नाणा दो श्रुत्याणा दा दसगा । श्रुजहस्य

प्रतिद्वयनः पटस्यानपत्तित । कथं नद्वयनपदेस्तस्य । अपगम्यस्त्वितिकानां जदत्त । मनुष्याणां कियत्ता पर्यवा प्रससाः ? गोतम । यमन्ताः
पयवा प्रससाः । अपदेनार्थेन जदत्त । एवमुच्यते ? गोतम । अपगम्यस्त्वितिकोमनुष्योऽपगम्यस्त्वितिकस्य मनुष्यस्य बुद्ध्याचतया तुल्यं प्रदद्याद्य
तया तुल्याऽपगम्यार्थतया चतुल्यानपत्तितः । स्थित्या तुल्योऽपगम्यस्त्वितिकस्य पर्यवेदुस्त्वामपानाभ्यां द्वाभ्यां वद्वानाभ्यां पटस्यानपत्तितः ।

इदं, केवलं न पत्रावै करो तत्त्व इवै च ज्ञान एते च वद्वयनं करो वट्ठानं पत्तितं इव । अवस्य दयान पर्याय करो तत्त्व इव । अवस्य इति यावत् अ
तं सचच्यावति । अवस्य स्त्वितिक मणुष्येन के भगवन् कतया पर्याय कक्षा प्र च से गोतम यमन्ता पर्याय कक्षा, तत्र कचे पदे के भगवन् इमं क
या अवस्य स्त्वितिक मणुष्येन यमन्ता पर्याय कक्षा प्र कत्तर के गोतम अवस्य स्त्वितिक मणुष्येन कियत्ता मणुष्येन द्रव्यावै करो तत्त्व प्रदद्यावै क
रो तत्त्व पदमादमावै करो चतुस्मानं पत्तितः । स्त्वितिये करो तत्त्व । च यमन्ता एव यावत् पर्याय करो के दयाने करो वट्ठानं पत्तितः ।

लब्धे हे दत्ते विचाररभिति हे दृष्टते अपन्यानिनिबोधोपिकादि कीवो नियमादबचिमम पर्यवसानविकसः प्रवसमानावरयस्मर्तदियमज्ञायादव्याया
 उपपत्त्यानिमिदोपिकप्रामत्यायोगात् ततः प्रपद्यामरश्चानासप्रवादाचिनिबोधोपिकप्रानपर्यवे सुख्युतप्रामपयवे द्वाभ्या दक्षनाभ्या च पदस्यामपचित
 ता उक्ता सररुष्टानिनिबोधोपिकप्रवे-तिहए तिष्ठायबक्षिएइति ० सररुष्टानिनिबोधोपिकप्रवे नियमा स्वरूपवपर्यायुरवरहुयवपर्यायुर स्तथा नवस्त्राप्राम्या

गोयमा ! श्रुणता पञ्जया पणशा । से केणठेण भते । एव युञ्जइ ? गोयमा । अहन्ताजिनिबोधोहियनाणी
 मणस्स जहणानिनिबोधोहियनाणस्स मणस्सस्स दञ्जठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले उगाहणठयाए चउठाण
 यक्रिए । ठितीए चउठाणवक्रिए । वत्तगधरसफासपञ्जवेहि ठठाणयक्रिए । श्रान्तिनिबोधोहियनाणपञ्जवेहि
 तुल्ले । सुयनाणपञ्जवेहि दोहि दसणेहि ठठाणवक्रिए । एव उक्कोसान्तिनिबोधोहियनाणीवि नवर श्रान्ति
 निबोधोहियनाणपञ्जवेहि तुल्ले । ठितीए तिठाणयक्रिए । तिहि नाणेहि तिहि दसणेहि ठठाणवक्रिए । श्र

यथया तुल्लोउगगाइनाचंतया चतुस्सामपतित । स्थिता चतु स्सामपतितः । वत्तन्तरसरस्सपञ्जपवेः पदस्सामपतित । श्रान्तिनिबोधोपिकप्र
 नपचवेरुत्तः सुतप्रानपर्यवेद्वीभ्या इच्छनाभ्या पटस्यामपतित । एवमुत्सर्पोजिनिबोधोपिकप्रामप्यपि नवर श्रान्तिनिबोधोपिकप्रामप्याये रतुस्स-
 रित्त्या प्रिरयानपतित । त्विनिप्राने त्विनिइजने वदस्यामपतितः । अक्षयग्यामरुत्तर्पोजिनिबोधोपिकप्रामी यथोरक्यानिनिबोधोपिकप्रामी

नो मत्तने हे भगवन् चतुसा चर्वाय कञ्जा प्र च हे भोतम । चमत्ता पयाव कञ्जा । तद कवे पदे हे भगवन् इम कटो ० चतर हे भोतम अथ
 च पाभिनिवधिक प्र नो मत्त चकत्त पाभिनिवाधिक प्रानो मत्तने प्रुत्ताये करो तुत्त पदयाये करो पत्त तत्त चकत्ताइमाव करो चतु स्साम
 पतित इवे । त्वितिहे करो चतु स्साम पतित इवे । वत्त गध रस कय पर्वीये करो पटस्साम पतित इवे । पाभिनिवाधिक प्रान पर्वीये करो तुत्त प्र
 वे । दूतप्रान पयाये करो वे दग्गेने करो पटस्साम पातत इवे । एम चरकट पाभिनिवाधिक प्रानो पत्त एतत्ता विग्रय पाभिनिवाधिक प्रान पयाय

रगस्स मणस्सस्स दव्वठयाए तुल्ले पट्टेसठयाए तुल्ले ठेगाहणठयाए चउठानवअणिए । कालवअणपज्जवेहि तु
 ले अयसेमहि वणुगधरसफासपज्जवेहि ठठानवअणिए । चउहि नाणेहि ठठानवअणिए । कवलनाणपज्जवे
 हि तुल्ले तिहि अन्ताणेहि तिहि दसणेहि ठठानवअणिए । कवलदसणपज्जवेहि तुल्ल । एअ उक्कोसगुणका
 लएअि । अज्जहन्तमण्कोसगुणफालएअि एअ खेव नअर सठाने ठठानवअणिए । एअ पच वअा दो गधा
 पच रसा अठ फासा ज्ञाणियअ । जइअानिबोहियनाणेण जत । मणस्साण केवइया पज्जवा पणअा

मनयस्स इअार्यतया तुल्ले पट्टेसठयाए तुल्ले ठेगाहणठयाए चउठानवअणिए । कालवअणपज्जवेहि तुल्ल ।
 नपतित । चउहि नाणेहि ठठानवअणिए । कवलनाणपज्जवेहि तुल्ल । एअ उक्कोसगुणका
 लएअि । अज्जहन्तमण्कोसगुणफालएअि एअ खेव नअर सठाने ठठानवअणिए । एअ पच वअा दो गधा
 पच रसा अठ फासा ज्ञाणियअ । जइअानिबोहियनाणेण जत । मणस्साण केवइया पज्जवा पणअा

चउठानवअणिए । कालवअणपज्जवेहि तुल्ल । एअ उक्कोसगुणका लएअि । अज्जहन्तमण्कोसगुणफालएअि
 एअ खेव नअर सठाने ठठानवअणिए । एअ पच वअा दो गधा पच रसा अठ फासा ज्ञाणियअ । जइअानिबोहियनाणेण
 जत । मणस्साण केवइया पज्जवा पणअा

तस्यै दे देवोने दिङ्कारपरमितिदे दृश्यते अपत्याग्निमियोचिकादि जीवो नियमावबचिमम पर्यवक्ष्यामिचकसः प्रथमस्तद्विनाशपर्यवक्ष्यामिदयसद्भावादन्यथा
अपत्याग्निमियोचिकादिप्रकृतावस्थायादीनामप्यवै श्रुत्यमुत्तमागपर्यवै द्वाप्या दशभाष्यां च पदस्थानपतित
ता एता एतद्विनाशपर्यवक्ष्यामिचिकादि विषयमा एवमुपवर्णयपुरस्कृत्यपर्यायुप दाया ज्ञयस्त्राभाष्या

गोयमा । अणुता पञ्जया पञ्चमा । सं केणठेन जते । एव वुञ्जइ ? गोयमा । जहन्नाग्निणिथोहियनागी
मणुत्स जह्नुणाग्निथोहियनागिस्स मणुत्सस्स वञ्चठयाए तुल्ले णगाहणठयाए चउठाण
वक्रिए । ठितीए चउठाणवक्रिए । वन्तगधरसफासपञ्चवैहि ठठाणयक्रिए । अ्याग्निथोहियनागपञ्चवैहि
तुल्ले । सुयनागपञ्चवैहि दोहिं वसणेहि ठठाणवक्रिए । एव उक्खीसाग्निथोहियनागीचि नवर अ्याग्नि
णिवोहियनागपञ्चवैहि तुल्ले । ठितीए तिठाणयक्रिए । तिहि नाणेहि तिहि वंसणेहि ठठाणवक्रिए । अ्य

यतया तुल्लोऽवगाहनाचैतया चतुस्त्वानपतितः । स्थित्वा चतुस्त्वानपतितः । सर्वेन्यरसस्पर्शपर्यवैः पदस्थानपतितः । आग्निनिर्वाणिकपञ्च
नपयवैस्तस्यः भूतज्ञानपयवैर्द्वीत्या पदस्थानपतितः । एवमुत्सर्पाग्निमियोचिकाप्यपि नवर आग्निनिर्वाणिकपञ्चानपयवै स्तस्य
स्थित्वा शिश्चानपतितः । त्विप्रिप्राग्ने त्विप्रिदमग्नेः पदस्थानपतितः । अन्तर्गम्यानुस्कर्पाग्निमियोचिकाप्यपि यथोत्कर्पाग्निमियोचिकाप्यपि

मो मज्जम दे भगवन् वतवा वदंवि कञ्जा म च व भोतम । यजन्ता एवाव कञ्जा । तह कवे पयें व ममएन् एम कञ्जो म वगर दे भोतम अप
अ याभिनिर्वाणिक अ मो मज्जम अद्वय आभिनिर्वाणिक ज्ञानो मज्जम मे द्वाप्येवै करो एव तव पवगाहनाव करो एतु खान
पतित इवे । त्विनिदे करो चतु खान पतित इवे । सर्वे गव एव कञ्ज पययि करो पदस्थान पतित इवे । आभिनिर्वाणिक ज्ञान पदवि करो तुय व
वे । भूतज्ञान पययि करो वे दग्गेन करो पदस्थान पतित इव । एम एतद्वि आभिनिर्वाणिक ज्ञानो पच एतसो विजय आभिनिर्वाणिक ज्ञान पययि

एगस्स मणुस्सस्स ठण्ठयाए तुल्ले पटेसठयाए तुल्ले एगाहणठयाए चउठाणवणिए । कालचणपज्जवेहि तु
 ले श्वघसेमहि यसागधरसफासपज्जवेहि ठठाणवणिए । चउहि नाणेहि ठठाणवणिए । कयलनाणपज्जवे
 हि तुल्ले तिहि श्यन्ताणेहि तिहि दसणेहि ठठाणवणिए । कयलदसणपज्जवेहि तुल्ल । एव उक्कोसगुणका
 लण्वि । श्चजहन्तमणुक्कोसगुणफालएवि एय चव नवर सठाणे ठठाणवणिए । एव पच वखा दो गधा
 पच रसा श्चठ फासा ज्ञाणियम्हा । जह्म्यानिणिघोहियनाणीण जत । मणुस्साण केवहुया पज्जवा पयाहा

मनप्यस्य द्रव्यायतया तुल्य' प्रदर्शार्थतया तुल्योक्ताग्राह्यायतया चतुस्त्वानपत्तिः । आलम्बयपर्यवैश्वरूपोऽवस्तैर्पदैर्बेगन्तरसरूपार्थपर्यवै पदत्वा
 नपत्तिः । अनुमिप्राप्ते पटभ्यानपत्तिः । अलम्बानन्दयद्वैतसुखं स्थितिरक्षामे स्थितिरक्षामे पदत्वात्मपत्तिः । अलम्बद्वयनपर्यवै श्रुत्स्य
 द्रवमृत्कयगुणवासयोप । अजपर्याप्तमद्वयगुणवासकाप्यवच्छेदं नवर स्वस्थाने पदस्थानपत्तिः । एव पच्य वखा द्वी गन्ती पच्य रसा
 चट्टोरपम्हो ज्ञावितव्याः । अपर्याप्तनिनिबोधिचिक्छानिर्ना नदत्त । अनुप्याको क्षियत्ताः पयवा' प्रच्छप्ताः । गीतम । अतन्ताः पयवा प्रच्छप्ताः ।
 अप्य कनार्पन नदत्त । पधुप्युत्ते ? गीतम । अपर्याप्तनिबोधिचिक्छानिमनुयोकपण्यानिनिबोधिचिक्छानिमनुप्यस्य द्रव्यायतया तुल्य' प्रदर्शार्थ

पप्रज्ञा पर्याय इव । तद्वच्चैः पदैः के भवन्ति इमं वक्ता तैदिव वदन्ना के गीतम अलम्बगुण काश्चान् अनुप्य लक्ष्यगुण काश्चान् नमप्य नै द्रव्यापि करो
 मप्य प्रदर्शयै करो तद्वच्च वदन्ना इनादताय करो पत प्यान पत्तिः इवे । आलम्बय पर्याये करो तस्य अपयोगे च व गध रस स्यय पर्याये करो पटस्थान
 पत्तिः । चार ज्ञाने करो पटस्थान पत्तिः । अलम्ब ज्ञान पर्याये करो तस्य च पत्राग च सज्जे करो पटस्थान पत्तिः इव । अलम्बद्वयन पर्याये करो
 तद्वच्च इवे । एवं वक्तापमदकाकपविनि । एव चट्टोरपमदकाक च काश्चा । पचपच्य चनरहद्वयनकाश्चान् पच एमप्य पतका चियेप फलानि पट
 प्यान पत्तिः इवे । एम पर्याय च के गन्तु वीच रस पाठ फलस्य वदन्ना । अलम्बानिनिबोधिनाकोच भते । समुप्यायति । अलम्ब पानिनिबोधिचिक्छा

जन्मे हे दृष्टेने विंकारमिति हे दृष्ट्यते अपस्याज्जिनिबोधिक्काहि कीनो नियमादुच्चिमम पर्यवधानावरयुक्कमर्दियमुग्गायादुप्यया
अपस्याज्जिनिबोधिक्कमान्तायोगात् तत् अपस्यामदुग्गासप्रधाटाज्जिनिबोधिक्कप्रानपयवे सुत्थयुतसाधनपयवे द्वाभ्या दशमाभ्या च पदस्थामपतित
ता वत्ता उररुष्टाज्जिनिबोधिक्कयुवे-ठिहए तिठादुबकिएइति ० उररुष्टाज्जिनिबोधिक्कोहि नियमा रसुक्कपवपीपुरसुक्कयवपीयुम क्षया ज्ञपस्त्रानाभ्या

गोयमा ! श्रुणता पज्जाया पच्छमा । से केणठेण ज्ञते । एव बुच्चइ ? गोयमा । जहन्ताज्जिणिबोहि यनाणी
मणस्स जह्णान्निणिबोहि यनाणिस्स मणस्सस्स दव्वठयाए तुसि पदसठयाए तुसि ठगाहणठयाए चउठाण
यक्किए । ठितीए चउठाणवक्किए । वन्तगधरसफासपज्जवेहि छठाणयक्किए । श्रान्निबोहि यनाणपज्जवेहि
तुसि । सुयनाणपज्जवेहि वोहि दसणेहि छठाणवक्किए । एव उक्कोसाज्जिणिबोहि यनाणीवि नवर श्रान्नि
णिबोहि यनाणपज्जवेहि तुसि । ठितीए तिठाणयक्किए । तिहि नाणेहि तिहि दसणेहि छठाणवक्किए । श्र

यतया तुसवोडवगाइमार्यतया चतुस्सामपवित्त । स्थित्वा चतुस्सामपवित्तः । सर्वगत्यरसरस्यपवयैः पदस्थामपवित्तः । श्रान्निबोधिक्कप्र
मपववैस्तुत्थ । सुतज्ञानपयवैर्द्वीप्सा दद्याभाभ्या पदस्थामपवित्तः । एवमुत्तरवर्षाज्जिनिबोधिक्कप्राम्यपि नवर श्रान्निबोधिक्कप्रानपययै रतुत्थ
स्थित्वा त्रिरस्यानपवित्तः । त्विनिप्रामे त्विनिप्रामे पदस्थामपवित्तः । प्रत्यक्षपयानुत्तरवर्षाज्जिनिबोधिक्कप्रामे पयोररुक्कपरं चिनिबोधिक्कप्रामे

मो मत्तमम हे भयवन् वतथा वर्याय कथा ० च च मोतम । यजन्ता पयाव कथा । तद्वत्तये भये च भयवन् इम कथो म उतर हे मोतम जघ
न च श्रान्निबोधिक्क प्र मो मत्तम कथय श्रान्निबोधिक्क प्रानो मत्तम ने दृष्ट्याने करो तुत्त प्रस्थाये करो पय तत्त चवमाइनाम करो चतु स्त्रान
पवित्त इवे । ज्जितिये करो चतुस्त्रान पवित्त इवे । सर्व गथ रस ज्ञय पक्कवे करो पटस्त्रान पवित्त इवे । श्रान्निबोधिक्क प्रान पक्कवे करो तुत्त इ
वे । सुतज्ञान पयवै करो ये दग्गे करो पटस्त्रान पवित्त इवे । एम उररुष्ट श्रान्निबोधिक्क प्राना पय एतथा विमप श्रान्निबोधिक्क प्रान पयाव

उगस्स मणस्सस्स दधुठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले रोगाहणठयाए चउठाणवणिए । कालवग्गपज्जवेहि तु
 खे अयसेमहि वयाग'रसफासपज्जवेहि लठ्ठाणवणिए । चउहि नाणेहि लठ्ठाणवणिए । कयलदसणपज्जवेहि तुल्ल । एव उल्लोसगुणका
 हि तुल्ले तिहि अत्ताणेहि तिहि दसणेहि लठ्ठाणवणिए । कयलदसणपज्जवेहि तुल्ल । एव उल्लोसगुणका
 एणधि । अजहन्मणक्कोसगुणकालएवि एव चव नअर सठाणे लठ्ठाणवणिए । एव पख वखा दो गधा
 पख रवा छठ फासा ज्ञाणिपखा । जहयाज्जिणिबोहिपनाणीण जत । मणस्साण केवडया पज्जवा पयात्ता

मणव्य द्रव्यापतवा तुल्य' प्रव्यार्थतया तुल्योद्योगाहमापेतया चतुस्थानपतितः । आसवखपयवेसुखयोऽवस्यवेसंअरसरसपत्रापयवे पदस्य ।
 नपातत । अतुजिजाने पदस्यानपतितः । अरसवानदयेस्सुख खिजिरजाने खिजिदसने पदस्यानपतित । अरसवखानपयवे सुख
 पदमूकपयज्जकालोपि । अरसपयानुअरसवखानकोपयज्जकाले अरस सुखाने पदस्यानपतित । एवं पख वखा द्वी मन्वी पख रवा
 योरीपट्ठी प्रवित्तयाः । अपय्याजिनिबोपिककज्जाना प्रवित्त । अनुप्याका कियत्ता पयवा प्रवित्त । अरसता पयवा प्रवित्त ।
 अय ज्ञेतापन नदत्त । पयमुप्यते ? गौतम । अपय्याजिनिबोपिककज्जानामनुप्याक प्रव्यार्थतया तुल्य' प्रवेत्ता

प्रवित्त । पयवा रव । तव ज्ञे पय के अरसव । एम वखा नेदिक वडवा इ गौतम अरसवगुण काकक समुप अरसवगुण कासुख मनप्य ने द्रव्यावे करो
 पदस्य प्रवित्त । करो तव पयगाइनाअताये करो वत खान पतित इवे । आसवख पयावे करो तव अरसव पख मख रस अय पयवे करो पट्ठाम
 पतित । पार पाने करो पट्ठाम पतित । अरस प्रान पयाये करो तव अरस अज्जान मख लयने करो पट्ठाम पतित इवे । अरसवख मनप्य ने द्रव्यावे करो
 पदस्य प्रवित्त इवे । एम पयवा मख काकक पय ज्ञेतापन नदत्त । पयमुप्यते ? गौतम । अपय्याजिनिबोपिककज्जानामनुप्याक प्रव्यार्थतया तुल्य' प्रवेत्ता
 पतित इवे । एम पयवा मख काकक पय ज्ञेतापन नदत्त । पयमुप्यते ? गौतम । अपय्याजिनिबोपिककज्जानामनुप्याक प्रव्यार्थतया तुल्य' प्रवेत्ता

तन्मे हे दत्तमे विचारवमितिश्च दृष्यते अपत्याग्निघोषिबोहि बीनो निषमावबधिमन पर्यवहानविकृतः प्रथमाग्निनावरवकर्मोदयसुप्रपादस्यथा
अपत्याग्निघोषिबोहि ततः अपप्रानददनासुनवादाग्निमियोषिकानपयमे सुस्यमुत्तमानपर्यवे द्वाभ्यां दशनाभ्या च पदस्थानपतित
ता तदा वरकृष्टाग्निमियोषिकयूथे-दिदय तिष्ठायबलियइति ॥ वरकृष्टाग्निमियोषिकहि नियमा स्वहुपवर्षापुरवहुपवर्षासुप लाया प्रयत्नाप्राप्या

गोयमा । व्युणता पञ्जथा पयसा । से केणठेण भते । एव युसुइ ? गोयमा ! जहन्नाग्निणिग्रोहियनाणी
मणुस्स जह्णाग्निणिग्रोहियनाणस्स मणुस्सस्स दसुठयाए तुसि पदेसठयाए तुसि उगाहणठयाए चउठाण
यक्रिए । ठितीए चउठाणवक्रिए । वन्तगधरसफासपञ्जवेहि उठाणयक्रिए । व्याग्निणिग्रोहियनाणपञ्जवेहि
तुसि । सुयनाणपञ्जवेहि दोहि दसणेहि उठाणवक्रिए । एव उक्कोसाग्निणिग्रोहियनाणीवि नवर व्याग्नि
णिग्रोहियनाणपञ्जवेहि तुसि । ठितीए तिठाणयक्रिए । तिहि नाणेहि तिहि दसणेहि उठाणवक्रिए । ॥

यवया तुसवोउदगाहनार्थतया बहुस्वानपतितः । स्थित्वा बहु स्वानपतितः । वर्णमन्वरसरपर्वपर्ववैः पदस्वानपतितः । व्याग्निनिग्रोषिकप्रा
तपयवेस्तुत्यः सुतप्तानपयवेद्वाभ्यां पदस्थानपतितः । एतन्वरकर्मोषिकमियोषिकप्राप्त्यपि नवर व्याग्निनिग्रोषिकप्रागपययै स्तुत्यः
स्थित्वा त्रिस्थानपतितः । त्विमिपाने त्विमिपाने पदस्थानपतितः । यत्तपयानुवरकर्मोषिकमियोषिकप्राप्त्यपि यत्तपयानुवरकर्मोषिकप्राप्त्यपि

नो मन्थन हे भगवन् वतन्वा बर्वाय कक्षा म व व भोतम । यन्मन्वा पयाव कक्षा । तत्र कवे पर्वे व भगवन् इम कक्षो म वरर हे भोतम अप
य पाभिमिव विव म नो मन्थन कक्ष्य पाभिमिव विव ग्रानो मन्थन हे द्वाभ्यां करो तुसव प्रद्व्याये करो पय तसव यवमाइताव करो वतु स्वान
पतित इवे । त्विमिपाने करो वतु प्याग पतित इवे । वर्णमन्वर रस यम पर्वये करो पदस्थान पतित इवे । व्याग्निनिवाधिव ग्रान पर्वये करो तुसव व
वे । वृत्तग्रान पयवे करो ये इमने करो पदस्थान पतित इवे । एम वरकृष्ट व्याग्निनिवाधिव ग्राना पय एतन्वा विवय पाभिमिव विव ग्रान पर्वये

इमया त्रिस्थानतितो ब्रह्मणः ब्रह्म सर्वप्रपञ्चोऽपि यथोक्तमरूपो मनुष्याणां पारमार्थिको न प्रवर्तते किंतु सद्ब्रह्मण्यथी सोऽपि यथासावस्थायाऽ
पर्यासावस्थायां तद्योग्यविशुच्यतायात् 'उत्कृष्टोप्यवपि प्रोयतादारियिग स्तनी जपस्यावपिपरकृष्टावापकाऽवगाहनाया विस्थानयति स जपस्या

पञ्चवंदि तृष्ठाणयक्रिण । तिहि वसणेहि तृष्ठाणवक्रिण । एव उक्खोसोहिनालीति ।
अजहया मणुक्कोचोहिनाणीयि एवच नवर तृगाहणठयाए चउष्ठाणवक्रिण । सठ्ठाणे तृष्ठाणवक्रिण । जहा
उहिनाणी तहा मणपज्जवनाणीवि जाणियहो । नयर तृगाहणठयाए तिष्ठाणवक्रिण जहा अज्जिणिप्रोहिय
नाणीतहा तुयथ्यन्नाणीय जाणियहो । जहा उहिनाणी तहा विजगनाणीयि जाणियहो । चरुदसणी अच
रुदसणी य जहा अज्जिणिप्रोहियनाणी उहिदसणी जहा उहिनाणी । जल्य नाणा तस्य अस्साणा नत्थि ,

निशोपिज्जगन्धपि । सपय्यामुरकसोत्तिनिशोपिज्जगन्धोऽपि नवर अथगाहया पतुःस्यामवपित । सस्याने पदस्यामवपितः । ययाव
पिप्रानो तथा मुत्तज्जगपि जदितब्धोनवरमयगाहमया त्रिस्थानपातत । यथानिधोचिक्कज्जानी तथा मुत्ताज्जगपि जदितल्य । ययावधि
प्रानो तथा विज्जगन्धपि जदितल्य । अपुरकस्यबसुदसनीय यथानिधोचिक्कज्जानी । यथपिदसनी ययावधिक्कज्जानी । यथ ज्ञानानि तथा
जहावाम पतित उव । यथविज्ञान पथाय करो तस्य अनवयऽज्ञान पथाये करो पटरयाम पतित उवे । यथ दयने करो पटरयान पतित उवे । एवं
जहावाहिनाशो विनि । एव उत्कृष्ट यथविज्ञानो पथ जायथा । यथपयय जगत्कट यथविज्ञाना पथ एवम एतथा विनय यथाहनाये जल रक्षानय
तित उवे । सस्याने पटरयाम पतित । जेम यथविज्ञानो तम ममपययज्ञानो पथ कटथा, एतथा विनय यथाहनाये विनय पामत उव । जल य मि
नवावज्जगानो तम यन पज्ञानो पथ कटथा । जम यथाय ज्ञानो तम विमम ज्ञानो पथ कटथा । यथ दयने करो यथपदमनो जेम यथानिया
यथ जगा कटो । पादि दयने चहावाहिनाशो । यथवि दयना जम यथवि ज्ञाना । जिहा प्राग उवे । तिहा अज्ञान म इव जिहा यम न इवे

तु. सर्वोत्कृष्टाभिनिर्गोपिकप्रामसप्रकाश, सङ्केतपर्योपपद्य प्रागुक्तयुक्तेः स्थित्या विस्मानपतितता इति ॥ अपत्यावधिमुने वल्कलावधिमुने च अत्रगा

जहन्ममगुक्तीसान्निगियोहियनाणी जहा उक्तीसान्निगियोहियनाणी नत्रर ठितीए चठठाणवक्रिए । सठाणे
यि ठठाणवक्रिए । एव सुयनाणीयि । जहन्तोहिनाणीण जत । मणसाण केवडया पज्जाया पसुत्ता ? गो
यमा । झुणता पज्जाया पत्तप्ता । से केणठेण जते । एव युञ्जइ ? गोयमा ! जहन्तोहिनाणी मणसे जह
न्तोहिनाणिस्स मणसस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले ठगाहणठयाए तिठाणवक्रिए । ठितीए तिठा
णवक्रिए । यणगधरसफासपज्जयेहि दोहि नांजेहि ठठाणवक्रिए । ठिहिनाणपज्जयेहि तुल्ले मणपज्जावनाण

नवरं स्थित्या ननुःस्थानपतितः । स्वरपानेन च पदस्थानपतितः । एव सुतच्छान्तिना जदत्त । ममुयावा कियत्त पय
भा, मप्रप्ता, ? गीतम् । अनन्ताः पयवाः प्रप्ताः । अयकमार्यम् जदत्त । एवमुच्यते ? गीतम् । अयग्यावधिज्ञानी ममुयो अयन्यावधिज्ञानि
नोममुच्यन्त्य दृव्यायतया तुल्यः प्रदद्यायतया तुल्यः अग्यावध्यायतया त्रिरयानपतितः । स्थित्या चिरयानपतितः । वसगभरसपर्यपयवर्द्धन्या
प्राप्तान्त्वा पदस्थानपतितः । अयचिदानपर्यवेस्तुतो मनापर्यवच्छानपर्यवेः पदस्थानपतितः । अत्रिर्द्वयेः पदस्थानपतितः । एवमुक्तपर्याजि

करो तुल्यः । स्थितिवे करो विस्मान पतित भवे । नच ज्ञान नच दयने करो पदस्थान पतित भवे । अयवत्ताः नरवर्षाभिनिवाधिय ज्ञानो अय वरवर्षा
भिनिवाधिय ज्ञानो वरवर्षा विग्रह स्थितिरे करो ननुस्मान पतित भवे । अहाकेन अहावर्षावर्षाणि । अस्मान मे विद्ये यच्च पदस्थान पतित भवे । एव
तुल्यज्ञानो यच्च ज्ञानाः । अयवादिनाकोच भते । ममुयावति । अयवत्त पयचिज्ञानो न के भयवन् मलय न जववा पर्याय जज्ञा नय कतर के कोतम च
मभा पर्याय जज्ञा । तेद ववे पर्ये के भयवन् इम जज्ञा प्रय कतर के गीतम् । अयवत्तचिज्ञानो मज्ज अयवत्तचिज्ञानो ममुच मे द्रव्याये करो तु
रर पदेयावे करो रर तुल्य पयवादिनाये करो विस्मान पतित भवे । स्थितिवे करो नच वरवत्त पतित भवे । नच भव रर कय पर्याय को य ज्ञानि न

इदमपि त्रिस्थानमिति वक्तव्यम् । अतः सर्वत्र प्रत्यक्षोपपत्तिरिति न प्रवर्तते किन्तु तद्वद्विषयो योऽपि च परोक्षोपपत्तिरिति वक्तव्यम् । अतः सर्वत्र प्रत्यक्षोपपत्तिरिति न प्रवर्तते किन्तु तद्वद्विषयो योऽपि च परोक्षोपपत्तिरिति वक्तव्यम् ।

पञ्चवेदि तृष्ठाण्यक्रिय । तिहि दसणेहि तृष्ठाण्यक्रिय । एव तृक्ष्णे सोहिना नीति ।
 अजहय मणुक्ष्णे सोहिना नीति । एवच नवर तृगाहण थ्याए । सृष्टाणे तृष्ठाण्यक्रिय । अहा
 तृहिना नीति । तहा मणपञ्चवना नीति । नवर तृगाहण थ्याए । तृष्ठाण्यक्रिय । अहा अत्रिणि मोहि
 ना नीति । तहा सुपय्यना नीति । नवर तृहिना नीति । तहा विजगना नीति । चरकुवसणी अच
 रकुवसणी । अहा अत्रिणि मोहिना नीति । तृहिदसणी । जल्य नाणा तल्य अत्रिणा नीति ।

[illegible]

रट्टराडागिं च पारत्रिभोपि सुख्यति ततोऽप्यग्राह्यत्वायामऽपि तस्य भूमायात् अत्राप्योरकृष्टावधिरयगाहमया चतुःस्थानपतितः स्थित्या
 गुः प्रत्यापि नरत्तग्राहपिरत्तग्राहत्वात् स्थित्यापतितः । अस्योयत्रर्पायामयऽरयभवात् सुख्येययर्पायुषा य विस्थानपतिनत्वात् अ
 प्यमम पयवप्रागो वरत्तममपयवप्रागो अक्षयव्यारत्तममः पर्यवप्रागो स्थित्या विस्थानपतितः पारित्रिभोमेवमपयवप्रागनासदायात् पारित्रि
 वाचमस्येयययुक्त्यात् अक्षयव्यारत्तमममूत्रतु-मुनादृष्टायाय पञ्चाक्षयक्रियद्विति ॥ अक्षयसमुद्भातः पतीत्य तयादि-केगतिवसुद्भातगतः अक्षयनी दाय
 क्रान्तिन्योऽनहेयगुयाऽवगाहत्वात्तया श्रेयाः केवन्तिनोऽसहेयत्वावहीनावगाहताः स्वस्थानेन श्रेयाः अक्षयिनिश्चित्यापतिना इति स्थित्या

जत्य शुन्नाणा तत्य नाणा नत्ति । जत्य दत्तणा तत्य नाणां नि शुन्नाणां वि । केवलनाणीण जते ! मणु
 रत्तना केवलहया पञ्चवा पञ्चाज्ञा ? गीयमा । अणता पञ्चाया पञ्चाज्ञा, से कंणठेण जते ! एव बुद्ध-
 केवलनाणीण मणुस्साण अणता पञ्चाया पञ्चाज्ञा, गीयमा । केवलनाणी मणुस्स केवलनाणिस्स मणुस्सस्स
 दंष्ट्रयाए तुल्ले पदंष्ट्रयाए तुल्ले नेगाहणठयाए चउठाणयक्रिए । ठिहए तिठाणयक्रिए । वदगधरसफा

प्राप्ताति न सन्ति यथाश्रमानि तत्र चानानि न सन्ति । यत्र वर्तमानि तत्रश्रमानान्यप्यश्रमास्यपि । केवलश्रानिना जदस्य । मनुष्याणां वि
 यन्तः पदवा प्रपञ्चाः ? गौतम । अमन्ताः पदवाः प्रपञ्चाः । अय केनार्थेन जदस्य । अयमुच्यते-कवलश्रानिमनुष्याः पामन्ताः पयया । प्रपञ्चा
 ? गौतम । केवलश्रानिमनुष्यो कवलश्रानिमनुष्यस्य द्रव्यायतया तुल्यः प्रदेशायतया तुल्यः प्रदेष्टावतया तुल्यः अतस्त्वनपतितः । द्रव्यात्मा विस्था

जदो प्रात न दवे । निदर्शो दयान जदे तिहो प्रात यनि पञ्चाज पयि वेष्ट जवे । अयथावदिति । अयथावदो मे के ममवन् मनुष्य मे
 अना दवाय चत्ता प्रउ वनर ए कोतम यमन्ता पदाय चत्ता । तत्र चदे पयं के ममवन् इय न द्वा-केवलश्रानो ममय मे यमन्ता पदाय चत्ता म
 वनर ए भोतम यमन्ता प्रागो मनुष्य यमन्ता प्रागो मनुष्य मे द्रव्याय करो तुल्य प्रदयाय करो पयि तुल्य यदयावगाये करो पत रत्तान पातन जने । दिव

त्रित्वात्पतितस्य सद्रूपमप्यपक्वत्वात् व्यभूता यथा क्षुरकुमाराः ज्योतिष्का वैमानिका अपि तथैव नगरं ते स्थित्या त्रित्वात्पतिता यस्तस्याः
 पतनं प्राप्य तावन्तं उपसङ्गरमाह-तत्त जीवपञ्चाभा ॥ ते जीवपर्यायाः [पञ्चाग ५००] सम्मन्वयश्रीवपयायान् पृच्छन्ति-पञ्चीवपञ्चागइत्या
 दि ॥ कृषिपञ्चीवपञ्चाग अरुविचञ्चीवपञ्चाग इति ॥ रूपमिति उपलपयमेतत् तस्यन्यरूपपञ्चाग विद्यते येषां ते कृषिपञ्चाग ते जीवपञ्चाग
 पञ्चीना सोपां पर्याया रूप्यजीवपयाया इत्यथ तद्विपरीता धर्म्यश्रीवपर्याया समूह्यऽजीवपर्याया इति ज्ञात ॥ धर्म्यत्वात् इत्यादि ॥ यमां

सपञ्चागोहं तठागवन्निर्णयः । केवलनाणपञ्चागोहं केवलदसुणपञ्चागवन्निर्णयः । एव केवलदसुणीवि मणुस्से ज्ञा
 णियन्ते । याणमतरा जहा क्षुरकुमारा एव जोहसिया वेमाणिया नवर सठाणे ठिइए त्तिठाणत्रिणि
 ज्ञाणियन्ते । सप्त जीवपञ्चाग । क्षुरजीवपञ्चाग जते ! कडविहा पणत्ता ? गोयमा ! दुविहा प०, त०
 कृषिपञ्चीवपञ्चाग अरुविचञ्चीवपञ्चाग । क्षुरजीवपञ्चाग जते ! कतिविहा पणत्ता ? गो
 यमा ! दसविहा पणत्ता, तजहा-धर्म्यत्वात् धर्म्यत्वायस्स दसे धर्म्यत्वायस्स पदेसा । अथम्मत्थिय

गपतितः । यद्यन्यरूपस्यार्थपदे पदस्यापतितः । केवलदसुणपर्यवेः केवलदसुणपर्यवेः । एव केवलदसुणीवि मणुयो जतिवत् । बोध
 व्यभूता यथाक्षुरकुमाराः । एव ज्योतिष्का वैमानिका नवर स्वस्यात् स्थित्या त्रित्वात्पतिता जतिवत् ॥ समासा जीवपयाः ॥ अजीवपया
 मदन्त । कतिविधा मणुसाः ? गौतम । द्विपिपाः मणुसासाद्या-रूप्यभावपर्यवाद्या-रूप्यजीवपयासा । अरूप्यजीवपयासा । कतिवि
 तिचे करो विरयान् पतित इवे । अथ अग्न रथ सग पयावे करो पटरयान् पतित ज्ञात पयावे करो पने केवल पान पयावे करो तस्य इवे । एव
 नवरयानो मणय एव जडवाः । नाणमत्तरति । नाणमत्तर जम यमरकुमारने कणा । एव ज्ञातियो पने वैमानिक एव ज्ञातिया पतिका विजय स्वरयान
 रिबतिवे करो विरयान् पतित इवे । एतत्त जीव पयाय कणा । दिव पञ्चीव पर्याय कड इ-एषो न पञ्चाग भवति । यजोव पया

पित्रमपमासिकाये शाकात्रादिकाये च प्रावर्त्तय, एतावता चाम्पोत्पामभमात्मकायपामशयिसारूपं चमासिजायादिकं वरित्वा प्रतिपादितं
 दृगभोऽदृगं पश्यन् नन्वय पर्वाया धनुमपञ्चान्ता कारकप ह्यव्यमशोयत्वासाः सतः, उच्यते-पयायपयायिदो कथयिन्नुपदस्यापार्थः, एवमुत्तरोपि
 ग्रन्थं चार च मूसटीकाकारं अथ सयय चमायपयायिदो कथयिन्नुपदस्यापयायमित्य नूत्रोपगमाय इति परमायतस्थेऽवदृष्टस्य चमासिजायत्वं
 चमासिजावदेत्याय चमासिजायप्रदेष्टव्यमित्यादि ॥ तच्च सतः किं वसत्या इत्यादि ० इत्यत्रादयः प्रत्यक्षं चिं चिं सहेया नवसहेया अनन्ताः १ जगज्जाता
 य-चतन्ता एतदेव प्राययति-से अक्षरं सतः ॥ इत्यादि पाठयितुं सम्मतिं दयइकथमस्य परमाद्युपुद्गलादीना पर्वायापित्तनीयादयइकथनयावं प्रय
 मताः ताताग्येन परमायकादवाहनाभोका अदनन्तरं एव एकप्रदयाद्यवयादा एतत् एकसमयादित्स्वित्तिः तदनन्तरं केनूवज्जालन्नादयः ततो अथ
 न्याद्यवगात्माप्रकारं तदनन्तरं अथरत्नित्यत्यादिदेदन ततो अथग्यगवदासादिकमेव तदनन्तरं अथम्यमदेसादिना जदमति उच्छन्न-अधुमार्धे
 दिमाचं एतादियदयसंभवार्थः ॥ तद्व्यायगाश्चार्थं च येन अत्रादिदेसाय ० १ ॥ यस्या अचरनसत्तिः प्रथमतोऽववादीनापिन्विताकृत्या तदनन्तरं
 ससिञ्जपदेसिया स्वाधा ध्यनता अथसिञ्जपदेसिया अथ

ससिखजपदेसिया स्वधा ध्यनता ध्यसखिजपदेसिया स्वधा ध्यनता ध्यनतपदेसिया स्वधा से तेणठेण ? गो
यमा ! एधं युचुड-तेण नो सखेळा नो ध्यसखिजा ध्यनता । परमाणुपोगलाण जते । केथइया पट्ठवा
उदना धनता द्विपदिया । स्वधा यावज्जना तवाज्जना

[illegible][illegible]

रुगादिप्रदेशमद्भुतानां अगदिज्जाटारकानमनायपरिरुहः ततोऽयमर्थे प्रथमतः क्षेत्रप्रदेशे रेखादिभिः सङ्गतामाभ्यास्ताः अर्धव्या घटनन्तरं कात्तम
 ग्राह्यादिगममेकतोप्रावप्रदेशैरुपगुयकासखादिभिरेति तदमन्तरं अघग्यावगाह्यादीनामिति यात्राविशब्देन मध्यमोत्कृष्टावगाह्या अपरममध्य
 मानमभिव्यति नपस्यमप्यारुहगुयकासिखादिवशा परिरुहः ततो जघग्यादिप्रदेशाणां अघग्याप्रदेशाणां मध्यमप्रदक्षामाम अपरयोत्कृष्टप्रदेशानामि
 ति अथ प्रथमतः कपच परमारशादीनां चित्ता गुयकाह-परमाणुयोगलाघ जते । इत्यादि ॥ स्थित्या चतु स्वामवतिसत्त्व । परिमाणोः समयादार
 त्वाहपतोऽनुरूपकालमवस्थाननावात् कालादिवशपर्याये पदस्थानवतितत्त्वता एवस्यापि परिमाणो पर्यायान्तात्पारोधात् ननु परिमाणुरम

पयात्ता १ गीयमा । परमाणुपोगलाण अणुता पञ्जत्रा पञ्जत्रा । से छेणठेण जते । एव बुद्धिह-परमाणु
 पोगलाण अणुता पञ्जत्रा पञ्जत्रा १ गीयमा । परमाणुपोगले परमाणुपोगलस्स दव्वठयाए तुह्वे पदेस
 ठयाए तुह्वे वंगगहणठयाए तुह्वे । ठिइए सिय ह्रीणे सिय तुह्वे सिय अस्सहिण । जइ हीण सखेज्जइनागही

पयगो मपमा १ गीतम । परमाणुपुद्गलानामनन्ता पयवा मपमाः । अथ केनार्थेन जदन्त । एवमुच्यते-परमाणुपुद्गलानामनन्ताः पर्यव्याः
 मपमाः १ गीतम । परमाणुपुद्गलः परमाणुपुद्गलस्य द्रव्यायतया तुल्यः प्रदयायतया तुल्योऽवगाहमायतया तुल्यः । स्थित्या स्वाधीनः स्यात्तु
 ल्यः स्यादन्यपिदः । यदि हीनः संशयप्रागर्हीनायाऽमस्ययत्नागर्हीनोवाऽसहस्रगुणहीनोवा । अथान्यपिदोऽसहस्रगुणतागाधि

मा-परमाणु पदवने वनता वर्षाय कथा प्रशुच से भी परमाणुपुद्गल परमाणुपुद्गले द्रव्याये करो तुल्य प्रदयाये करो पय तस्य अवगाहमाये करो
 तुल्य प्यित्तिपे करो कदाचित् हीन कदाचित् तस्य कदाचित् पथिक जने, के हीन जने ते सख्यात भागे हीन जन्म अथवा असख्यात भागे हीन जने पथिक
 मप्यत मवहीन जने पयवा पयप्यातगुणहीन तुल्य । अथ के पथिक जने असख्यात भागे पथिक जने असख्यात भागे पथिक जने पथिक जने पथिक
 मय पथिक जने अथवा असख्यातगुणः पथिक जने । आकाश पदवि करो कदाचित् तुल्य कदाचित् तुल्य पथिक जने । के हीन जने पयप्या

श्रेयादिप्रदेशमद्वयानां अथादिद्वयात्कामप्रापयपरिग्रहः सतोऽपमर्थ- प्रथमतः श्रेयप्रदेशे रेषादिति सुज्ञानमागच्छात् कर्तव्या सर्वतन्त्र काक्षप्र
 गौरवः अत्रिममैकतोत्रावमदेयैरङ्गुलकासकादिभिरिति, तदनन्तर अथयथावगाहनादीनामिति अत्राविग्रहदेन मध्यमोरुहाधगाहना नपश्यमध्य
 पात्रप्रभिविति अपत्यमप्यमारुह्युल्लिखितद्वयः परिरुहः तथा अथ्यादिप्रदेशाभा लपत्यप्रदेशाभा मध्यमप्रदेशाभा लपत्योक्तप्रदेशानामि
 ति इव प्रथमतः क्रमव परमावगाहनादीनां पिना क्रयकाह-परमाणपगमलाण जते । इत्यादि ॥ स्थित्या चतु स्थानपतितस्य । परिमाणोः समयादार
 त्यावगतोऽत्र द्वैयवासमवस्थानतायात् कासादिब्रह्मपर्वये पदस्थानवतितत्त्वता यवस्यापि परमाखी पवायानत्याविरोधात् ननु परिमाणुरप्र

पयासा १ गीयमा ! परमाणुपोगलाण श्रुणता पज्जया पयासा । से ह्मेणठेण जते । एव बुद्धिह-परमाणु
 पोगलाण श्रुणता पज्जया पयासा ? गीयमा ! परमाणुपोगले परमाणुपोगलस्य दव्वठयाए तुल्ले पदेस
 ठयाए तुल्ले ठगाहणठयाए तुल्ले । ठिहंए सिय ह्मीणे सिय तुल्ले सिय श्रुम्विहंए । जह ह्मीण सखेज्जहागही

पयसा प्रपसा १ गीतम । परमाणुपुद्गलानामनन्ता पयसा प्रपसा । अथ केनार्थेन जदन्त । एवमुच्यते-परमाणुपुद्गलानामनन्ताः पयसाः
 प्रपसाः १ गीतम । परमाणुपुद्गलः परमाणुपुद्गलस्य द्रव्याप्यतया तुल्यः प्रदगार्थतया तुल्यः अत्राहमाप्यतया तुल्यः । स्थित्या स्वाक्षीमः स्यात्
 त्वः स्यादन्त्यपिहः । यदि हीनः सस्ययत्नामहीनायाऽमस्येयत्नामहीनाया सखीयगुहरीनोवाऽमकुपगुहरीनोवा । अथाप्यपिहोऽमकुपयत्नामपि

प्रो-परमाणव पदवने पजन्ता वशीय कथा प्रश्न ४ के भो परमाणुपदक परमाणुपदकमे द्रव्याये करो तुल्य प्रयगाये करो पय तुल्य अत्राहमाप्यतया करो
 गुण स्थितिरेकरो कदापि न
 पयान मयहीन
 मय अधिन
 पय जे अधिन इव यमप्यात मागे अधिन इवे अत्राहा सप्यात भागे अधिन इवे पयका सप्यात
 भागे अधिन इवे पयका सप्यात भागे अधिन इवे पयका सप्यात भागे अधिन इवे पयका सप्यात
 भागे अधिन इवे पयका सप्यात भागे अधिन इवे पयका सप्यात भागे अधिन इवे पयका सप्यात

एसहीणे या । अह अस्मिहि ए पदेसमस्मिहि ए या एव जात्र दसपदेसि ए नयर ठंगाहणा ए पदेसपरियुही काय
 हा जाय दसपदेसि ए नयरं पदेसहीणेसि । सखेज्जापदेमियाण पुच्छा, गोयमा ! अणता पज्जाया प० ।
 सेकेंगठग जत । एव बुसुह-गोयमा । सखेज्जापदेसि ए सखेज्जापदेसियसस वड्ठया ए तुझे पदेसठया ए
 मिय हीणे मिय तुझे सियमस्मिहि ए । जड हीणे सखेज्जागहीणे या सखेज्जागहीणे या । अह मस्मिहि ए एवचेव
 ठंगाहणठयायि तुठाणवळि ए, ठिती ए चउठाणवळि ए, वन्तादिउत्ररिसे चउफासपज्जावेहि ए लठाणवळि ए ।
 अ्सखेज्जापदेसियाण पुच्छा, गायमा ! अणता पज्जाया प० । से केंगठग जत ! एव बुसुह-गोयमा ।

यदि कतत्ता यावदुसाप्रदेशिजा नयरं प्रदक्षणीन इति । सकयप्रदेशिकाणा पुच्छा गौतम । जलन्ताः पयवा प्रज्जाया । अय कमार्येन सद
 म् । पबमुण्यत-? गौतम । सकयप्रदेशिकाः सकयप्रदेशिकस्य द्वव्याचतया तुस्यः प्रदक्षार्चतया स्यादीन स्यात्तुस्यः स्यादप्यपिक्क यदि
 प्रोक्ता सकयेयनायदीनो या सकयपुण्डरीना या, अधाप्त्वपिक्क एवं येवाकनादनायतयापि द्विस्थानपतितः स्त्वित्या अतु-स्थानपतितः । वर्या
 दिमिठपरिमैद्युत्तुमि-रपद्योच यदस्थानपतितः । असकयप्रदेशिकाणा पुच्छा, गौतम । जलन्ताः पयवाः प्रज्जाया । अय कमार्येन प्रदक्ष । ए

इहे । आ पविक्क इव ता प्रदम पविक्क इवे एम वाचत्ता म्मा प्रदक्षिक्क कम कइवा एतत्ता विमय पयवाकनाने विम प्रदम परित्वुशे करवो वाचत्ता दमप्र
 दक्षिक्क कने पत्तमा विमय प्रदमकोम कइवा । संपुअ पदविद्यावं पच्छा । सकयान प्रदक्षिक्क ना प्रय कत्तर इ गौतम पनत्ताः पयविय कइवा । ते इ कवे
 पये हे भगवन् इम कइवा प्रय कत्तर हे गौतम सकयान प्रदेगो ने प्रव्याये करो तुक्क प्रसगये करो कदाचित् कोन कदाचित् तुक्क क
 दाचित् पविक्क इवे । ज कोम इवे सकयान भाज कोम इवे पयवा सकयान गुव कोम इव । पविक्क पवि पयवा पयवाकनाये करो पवि द्विस्थान प
 तित इवे । स्थितिं करो वत्तु स्थान पतित इव । पविक्क करो पविक्क चार जगे करो लक्ष्मान इतित इवे । पयसुअपदविद्यावति । पयसयान

द्वयम्भनया नीलो न जयतीति ननु आत्मनाशान्त्यामिति "अपमयोदसुहपायुड इतिग्रन्थमात्, ततः द्वास्तवावाप्या सप्रदेशस्थेपि न कश्चिद्दोषः सत्या प
रमाण् टीनामसुहृतप्रदमरकथपयस्ताभा कपापिदमलप्रदगजानामपि रुक्म्याना तथा एवप्रदेशावागताना यावत्सुहृतप्रदेशावगाताना त्रीती

ठेय १ गोयमा । एय युच्चुड-परमाणुपीगगलाण स्थणता पज्जाया पयसाता । दुपदेसियाण पुच्छा, गोयमा ।
थणता पज्जाया पयसाता, से केणठेण जते । एव युच्चुड-गोयमा । दुपदेसिये दुपदेसियरस वसुठयाए तुल्ले
पएसठयाए तुल्ले, उग्गाहणठयाए चिय हीणे सिय तुल्ले सिय स्थप्पहिण । अह हीणे पदेसहीणे । स्थुह
स्थप्पहिण पदसमप्पहिण । ठितीए घउठाणवहिण । वन्तादीहि उवरिल्लेहि चउफासहिण वउठाणवहिण ।
तियपणिणियि नयर उग्गाहणठाए सिय हीण सिय तुल्ले सिय स्थप्पहिण । अह हीण पदेसहीणे वा दुप

प्रदग्निजाना पयसा । गोतम । यमत्ता पयसा मज्जा । एय केनार्थेन प्रदत्त । एवमुच्यते ? गोतम । द्विप्रदेशिभो द्विप्रदेशिभस्य द्रव्याप्यतया
तुल्यः प्रदग्नाप्यतया तुल्यो उज्जवाहनाप्यतया स्वादीना स्वातुल्यः स्वातुल्यपिचः । यदि हीनः प्रदग्नाहीनः । अथाप्यपिचः प्रदग्नापिचः । स्थि
त्या चतुःस्थानपतितः । यथादिस्मिन्नपरिमै एतु रपणं पदस्थानपतितः । द्विप्रदेशिभो एव नवरमवगाहनाया स्वाहीनः स्वातुल्य स्वातुल्यपि
च । यदि हीनः प्रदग्नाहीनो या द्विप्रदग्नाहीनो ना । अथाप्यपिचो वा प्रदेगाप्यो वा एव यावत्सुहृतप्रदेशिभो नवरमवगाहनाप्यतया प्रदेसपरि

ता पर्याय कथा । तड वच पदे के मयमम् इम कथा य कतर के भीतम य पदेगी एव य प्रयोगो एव न द्रव्यापे करो तत्त्व प्रदग्नापे करो पच तुल्य
अवगाहन के करो कटाचित् भीन कटाचित् तत्त्व कटाचित् पथिच कुवे । एव डाम कुवे प्रयोगे करो भीन कुवे । एव पथिच कुवे तो पदेगे पथिच कुवे ।
स्थितिमे करो च स्थान पतित इम । यथाकोटि ति । यथाकोटि करो यन पथिचा नार समे करो कटव्यान पतित कुवे । नच प्रदग्नाप्य चय पच ०
मत्र एवका विमय चयमाहनादे करो कटाचित् भीन कटाचित् तुल्य कटाचित् पथिच कुवे । को भीन कुवे तो प्रदग्नाप्यो न दवे पयसा विमदग्ना कोन

एसहीणे वा । अह अस्मिहि ए पदेसमस्मिहि ए पदेसपदेसि ए नवर ठंगाहणा ए पदेसपरिवृही काय
 हा जाव दसपदेसि ए नवर पदेसहीणेसि । सखेजपदेसियाण पुच्छा , गोयमा ! अणता पज्जात्रा प० ।
 सकेणठग जने ! एव वुसुइ-गोयमा ! सखेजपदेसि ए सखेजपदेसियस दउठया ए तुझे पदेसठया ए
 न्मिय हीणे मिय तुझे सियमस्मिहि ए । जड हीणे सखेजानागहीणे वा सखेजगुगहीणेया । अह मस्मिहि ए एवचेव
 ठंगाहणठयादि ठुठाणघकि ए, ठिती ए चउठाणघकि ए, वन्तादिउवरिसि चउफासपज्जावेडिय ठुठाणवकि ए ।
 अस्सखेजपदेसियाण पुच्छा , गायमा ! अणता पज्जात्रा प० । से केणठेण जत ! एव वुसुइ-गोयमा ।

वृद्धि- कतळा पावद्दाप्रदेशिको नवर प्रदशाहीन इति । संवयप्रदेशिकाणा पुच्छा गीतस । अनलाः पर्यवाः प्रसप्ताः । अथ कनार्थेन प्रद
 ला । यवमुप्यत-? गीतस । संवयप्रदेशिकः संवयप्रदेशिकस्य प्रगायतया तुल्यः प्रदशार्थतया स्वाधीनः स्वातुल्यः स्वावज्यपिकः यदि
 शोनः संवयप्रदापदीनो वा संवयप्रदापिक एव वेदावगाणमार्थतयापि द्विस्थानपतितः त्वित्या चतुस्थानपतित । ययो
 दिनिहपरिमैशतुनि- स्पष्टीच पदस्थानपतितः । असंवयप्रदेशिकाणा पुच्छा गीतस । अनलाः पर्यवाः प्रसप्ताः । अथ कनार्थेन प्रदन्त । ए

इति । आ पधिक इव ता प्रदग पधिक इवे एम नावत् इया प्रदागव अग कइवा एतळा विषय चवगाइनाजे विष प्रदग परिवृही करवो नावत् दम
 दामक कमे पतळा विमय प्रदमशोन कइवा । मंपुअ पदविषयाव पुच्छा । संवयान प्रदमिक मी प्रग कनर क भोतम अनलाः पर्यय कणा । ते क कवे
 पदे हे भयवत् इम कणा प्रग कनर के भोतम संवयान प्रदगो संवयानप्रदगो जे इक्कावे करो तुवर प्रदगोवे करो कडावत् शोन कडावत् तुवर क
 दावित् पधिक इवे । ज शोन इवे संवयान भाग जोन इवे चकवा संवयान गुण शोन इव । पदिक पवि एमक चवगाइनाक करो पवि दिखान प
 तित इवे । कितिये करो चतु स्थान पतित इव । वरीदिक करो पदिका चार कागे करो छकाम पतित इवे । संवयप्रदविषयावति । संवयान

प्रतिप्रपञ्चनया यत्पारम्यं इति तेरेव परमास्वादीनां पदस्याप्यपत्तिताता यत्तस्या न कोपैः द्विपदेक्षारूपसूत्रे-छेगाह्यपुयाप सिप्य पीक्षे
 विप्य नुप सिप्य चत्त्रिहिय इत्यादि ० यदा ह्यप्यपि द्विपदशब्दो रक्त्यो द्विपदशावगाढायक्रमदेशावगाढी या प्रवृत्तस्तदा तुस्यावगाढनी यदास्ये को
 द्विपदशावगाढस्तदा पञ्चमदशावगाढो द्विपदेशावगाढापेक्षया प्रदक्षीणो द्विपदशावगाढस्तु तदपक्षया प्रदक्षान्यपिचः कोप प्राणवत् त्रिपदशा
 रक्त्यभूते छेगाह्यपुयाप सिप्य पीक्षे इत्यादि ० यदा ह्यापि त्रिपदशब्दो रक्त्यो त्रिपदशावगाढो द्विपदशावगाढायक्रमदेशावगाढी वा तदा तु
 स्यो यदास्ये चत्त्रिपदशावगाढा द्विपदेशावगाढो वा तदा द्विपदशावगाढो रक्त्यो द्विपदशावगाढो रक्त्यो द्विपदशावगाढो यथास्त
 म त्रिपदेशावगाढो द्विपदशावगाढापक्षया एकप्रदक्षीणो त्रिपदशावगाढो द्विपदशावगाढो तु तदपक्षया एकप्रदेशावगाढो यदास्ये चत्त्रिपदशावगाढा

अमर्षेक्षपदेसिपु खधे असत्येक्षपदसिप्यस्स खधस्स दक्ष्ठयाए तुल्ले पदेसठयाए चउठाणवन्निपु । छेगा
 हणठयाए चउठाणवन्निपु । यन्तादिठवरिल्ले चउफासिहिय ठठाणवन्निपु । अणतपदेसियाण पुच्छा , गो
 यमा ! अणता पक्षाया पं० । से केणठेण जत । एव वुञ्जइ-गोयमा ! अणतपदेसिपु खधे अणतपदेसि

वमुच्यते ? गौतम । असत्यप्यप्रदक्षिणस्य रक्त्यस्य द्रव्याद्यतया तुल्यः प्रदक्षायतया चतुस्त्वनपवित । अथगाह्यत
 या चतस्त्वनपवित । अथादिमिहपरिमै धातुर्नि स्पष्टीय पदस्यानपवितः । अन्तप्रदक्षिणाया पुच्छा गीतम । अन्ताः पयथाः प्रचक्षा ।
 अप्य कर्त्तार्येन जन्त । पञ्चमुच्यत-१ गौतम । अन्ताप्रदक्षिणा रक्त्यो अन्ताप्रदक्षिणस्य रक्त्यस्य द्रव्याद्यतया तुल्य प्रदक्षायतया पदस्यानप
 पञ्चमिह ना पञ्च उत्तर ८ गौतम अन्ता पयथाः पयथाः कथा । तत्र कथे पयथे हे भगवन् इमं कथा पञ्च उत्तर हे भोगम पयथाः प्रदक्षायः खद पयथाः प्रमे
 मो गुपने दध्याप करो तुदद पदयाये करो चतुस्त्वनपवित । अथगाह्याये करो चतुस्त्वनपवित । अर्थादिच करो यत्ते पदियाः चार पयथे उत्तरो पट
 प्याम पवित इति । अणतपदविषयाच ति । अन्ताप्रदक्षिणा पञ्च उत्तर हे गौतम अन्ता पयथाः पयथाः कथा । तत्र कथे पयथे हे भगवन् इमं कथा पञ्च उत्तर

यस्स संघस्स दसुठयाए तुल्ले पदेसठयाए ठठाणयकिए ठगाहणठयाए चउठाणयकिए ठितीए चउठा
 णयकिए यत्तगधस्सफासपज्जयेहि ठठाणयकिए । एगपदेसोगाढाण पोगगलाण पुच्छा, गोयमा ! अण
 ता पज्जया प० । स केणठेण जेत ! एव वुच्चुड—गोयमा । एगपदेसोगाढे पोगगले एगपदेसोगाढस्स पो
 गगलस्स दसुठयाए तुल्ले पदेसठयाए ठठाणयकिए ठगाहणठयाए तुल्ले ठितीए चउठाणयकिए वत्ताठिउव
 रिस्सचउफासेहिय ठठाणयकिए एव दुपएसोगाढंयि जाय दसपदेसोगाढं । सखेअपदेसोगाढाण पुच्छा, गो

तितः । यवगाइनायतया बहु स्थानपतितः क्खित्वा बहु स्थानपतितः यवगणवरसुखापर्यये, पट्स्थानपतितः । एवमदेशायागाइना पुन
 नाना पुच्छा गीतम् । अतन्ना पयवाः प्रज्जसा । अय कनाचैन जवन् । एवमुच्यते ? गीतम् । एवमदेशायागाइः पुद्गलः एवमदेशायागाइस्य
 पुद्गलस्य दृव्यायतया तुल्यः प्रवक्ष्यायतया पट्स्थानपतितः । अतन्ना कनायतया तुल्यः । अतन्ना कनु स्थानपतितः । यवगदिजिसपरिसे यतुः एव
 स्मि पट्स्थानपतितः । एव हिमदशायागाढापि पावसुखमइआवगाढं । एवमेवमदेक्षिकाना पुच्छा गीतम् । अतन्ना प्रज्जसा । अय कनाचै

व गीतम् यमस्तमदयो एव यमस्तमदयो एवमेव दृव्याये करो तुल्य मदेयाये करो पट्स्थानपतित इवे । यवगाइनाये करो बहु स्थानपतित इवे कि
 णिसे करो बहु स्थानपतित इवे । यवगवरसमस्य यवोयेकरो पट्स्थानपतित इवे । एगपदसावाठाव पावसाव पच्छा । एव मदेयावनाउपदवन्तो म
 वनर हे गीतम् एवमप्रव्यावनाउपदवन्तो यमन्ता यवोव अद्या तेव कवे पवे हे भगवन् इम अद्या म वनर व भीतम् एवमदेशायागाइपदव एवमदेया
 वनाउ पदवमे दृव्यायेकरो तुल्य मदेय येकरो पट्स्थानपतित इवे । यवगाइनाये करो तुल्य इवे स्मितोयेकरो वत स्थानपतित इवे यवगदिजि करो पने पद
 वायाः एवो करो पट्स्थानपतित इवे । इम वायन् हिमप्रव्यावनाउछा एवमदेय वगाठवये कवपा । अणुअणुसोगाढाव पच्छा । मव्यात मदेयायगाठ
 ना मय कोवा वनर व गीतम् सख्याव मदेयावगाठना यमन्ता यवोव अद्या तेव कवे पवे भगवन् इम अद्या म वनर हे गीतम् सख्यातमदेयावनाउ

प्रतिग्राह्यपञ्चग पत्न्यारम्य स्या इति तेरेव परमाख्यादीनां पदस्थानमप्यतितता वक्तव्या न शोचैः द्विप्रदेशैश्चकन्त्यमत्रे-मुगाह्वयहुपाए मिय हीचे
विय मुन मिय चत्तदिम इत्यादि ॥ यथा ह्यत्रापि द्विप्रदेशको रक्त्थो द्विप्रदेशावगाढावकप्रदेशावगाढी या जत्रतस्तदा तुस्यावगाढनी यदात्येको
द्विप्रदेशावगाढस्तदा एकप्रदेशावगाढो द्विप्रदेशावगाढोपेक्षया प्रदद्यादीनो द्विप्रदेशावगाढस्तु तदपक्षया प्रदद्याप्यधिकः सोय प्राग्वत् द्विप्रदेश
इत्यम्यं मुगाह्वयहुपाए मिय हीचे इत्यादि ॥ यथा ह्यत्रापि द्विप्रदेशको रक्त्थो द्विप्रदेशावगाढो द्विप्रदेशावगाढावकप्रदेशावगाढी वा तदा तु
स्त्री यदात्येकद्विप्रदेशावगाढा या द्विप्रदेशावगाढा उपरस्तु द्विप्रदेशावगाढ एकप्रदेशावगाढो वा तदा द्विप्रदेशावगाढो एकप्रदेशावगाढी यथाक
न द्विप्रदेशावगाढो द्विप्रदेशावगाढापक्षेन एकप्रदेशावगाढो द्विप्रदेशावगाढो न तदपक्षया एकप्रदेशावगाढो न तदपक्ष्यावगाढावगाढा

अनर्गलपदसिंखे अस्तस्यैजपदसिंखे स्वधस्स दसुठयाए तुल्ले पवेसुठयाए चउठाणवन्निए । उगा
हणठयाए चउठाणवन्निए । वन्तादिठवरिल्ले घउफासिहिय ठठाणवन्निए । अणतपदेसियाण पुच्छा, गो
यमा । अणता पज्जाया प० । से केणठेण नत । एव वुसुह-गोयमा । अणतपदेसिंखे अणतपदेसि

[illegible]

यस्स स्रधस्स दह्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए ठठाणयकिंए ठंगाहणठयाए चउठाणवकिंए ठितीए चउठा
णयकिंए यन्तगधरसफासपज्जायोहि ठठाणवकिंए । एगपदेसोगाढाण पोगलाण पुच्छा, गीयमा । अण
ता पज्जाया प० । स केणठेण जेतं ! एव बुद्ध-गीयमा । एगपदेसोगाढे पोगलं एगपदेसोगाढस्स पो
ग्गलस्स दह्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए ठठाणवकिंए ठंगाहणठयाए तुल्ले ठितीए चउठाणयकिंए वन्नाविउव
रिद्धिचउफासेहिंय ठठाणयकिंए एव दुपएसोगाढेयि जान दसपदेसोगाढे । सस्सेज्जपदेसोगाढाण पुच्छा, गी

तित्तः । चउठाणयकिंए तुल्ले पदेसठयाए ठठाणयकिंए ठंगाहणठयाए चउठाणवकिंए ठितीए चउठा
णयकिंए यन्तगधरसफासपज्जायोहि ठठाणवकिंए । एगपदेसोगाढाण पोगलाण पुच्छा, गीयमा । अण
ता पज्जाया प० । स केणठेण जेतं ! एव बुद्ध-गीयमा । एगपदेसोगाढे पोगलं एगपदेसोगाढस्स पो
ग्गलस्स दह्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए ठठाणवकिंए ठंगाहणठयाए तुल्ले ठितीए चउठाणयकिंए वन्नाविउव
रिद्धिचउफासेहिंय ठठाणयकिंए एव दुपएसोगाढेयि जान दसपदेसोगाढे । सस्सेज्जपदेसोगाढाण पुच्छा, गी

तित्तः । चउठाणयकिंए तुल्ले पदेसठयाए ठठाणयकिंए ठंगाहणठयाए चउठाणवकिंए ठितीए चउठा
णयकिंए यन्तगधरसफासपज्जायोहि ठठाणवकिंए । एगपदेसोगाढाण पोगलाण पुच्छा, गीयमा । अण
ता पज्जाया प० । स केणठेण जेतं ! एव बुद्ध-गीयमा । एगपदेसोगाढे पोगलं एगपदेसोगाढस्स पो
ग्गलस्स दह्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए ठठाणवकिंए ठंगाहणठयाए तुल्ले ठितीए चउठाणयकिंए वन्नाविउव
रिद्धिचउफासेहिंय ठठाणयकिंए एव दुपएसोगाढेयि जान दसपदेसोगाढे । सस्सेज्जपदेसोगाढाण पुच्छा, गी

यमा ! अणता प० । से केणठेण जते ! एव बुच्चं गीयमा ! सखेज्जपदेसोगाढे पोगगले सखिज्जपदेसोगा
 दस्स पोगगलस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए त्ठणायकिए । उगाहणठयाए त्ठणायकिए । ठिईए चउठा
 णयकिए । उणादिउवरिस्सिचउफासंहिय त्ठणायकिए । असखेज्जपदेसोगाढाण पुच्छा, गीयमा ! अणता
 पज्जाया प० । उकेणठेण जते ! एव बुच्चं गीयमा ! असखेज्जपदेसोगाढे पोगगले असखज्जपदेसोगाढ
 स्स पोगगलस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए त्ठणायकिए उगाहणठयाए चउठाणयकिए, ठिईए चउठा

न प्रदत्त । एवमुच्यते । गीतम् । सकस्यप्रदग्गाढनाढः पुद्गलः सकस्यप्रदग्गाढनाढः पुद्गलस्य इत्यर्थतया तुल्यः प्रदेशायतया यदस्यानपत्तिः ।
 प्रदग्गाढनापतया द्विस्थानपत्तिः स्थित्या चतःस्थानपत्तिः । यथाविभिरुपरिर्मेयतुः सार्धं यदस्यानपत्तिः । असक्येयप्रदग्गाढनाढा पृ
 थ्वा गीतम् । अनन्ताः परवाः प्रपन्नाः । अथ केनार्थेन प्रदत्तम् । यवमुच्यते । गीतम् । असक्येयप्रदग्गाढनाढः पुद्गलोऽसक्येयप्रदेशावभाटस्य
 पुद्गलस्य इत्याद्यतया तुल्यः प्रदेशायतया यदस्यानपत्तिः । प्रदग्गाढनार्थतया चतुःस्थानपत्तिः । स्थित्या चतुःस्थानपत्तिः । यथाविष्टपरपक्षैः
 यदस्यानपत्तिः । एकसमयव्यवहिकानो पृथ्वा गीतम् । अनन्ताः प्रपन्नाः । अथ केनार्थेन प्रदत्तम् । एवमुच्यते । गीतम् । एकसमयव्यवहिक
 परव संख्यातप्रदग्गाढनाढपदवने द्रष्टव्ये करो तन्व प्रदग्गाढे करो चटस्थानपत्तिः इमे चतस्रश्चमायेकरो दाव स्थाने पत्तिः पुनै स्थितौवेकरो चतस्रा
 नपत्तिः इमे चकोटिद्वे करो पद्विजा चार अग्रे करो चटस्थान पत्तिः इमे । असखेज्जपदेसोगाढाण पुच्छा । असक्यात प्रदेशायमाडना प्र० उत्तर के जो
 तम पञ्चमा ब्याह कप्पा । तद्द वेवे पद के भगवन् एम कप्पो प्र उत्तर के गीतम् असक्यात प्रदग्गाढनाढ पुद्गल पर्यक्यात प्रदेशायमाड पुद्गलने द्रव्या
 येकरो तन्व प्रदग्गाढे करो चटस्थान पत्तिः इमे । प्रदग्गाढनायेकरो चत स्थान पत्तिः इवे, स्थितौवेकरो चतुःस्थान पत्तिः इवे चर्वादिद्वेकरो पने पाठ
 योगेकरो चटस्थान पत्तिः पुनै । एकसमयव्यवहिकाना प्र० उत्तर के गीतम् चतस्र कप्पा तेष कवे पदे के गीतम् एम कप्पा प्र०

परव संख्यातप्रदग्गाढनाढपदवने द्रष्टव्ये करो तन्व प्रदग्गाढे करो चटस्थानपत्तिः इमे चतस्रश्चमायेकरो दाव स्थाने पत्तिः पुनै स्थितौवेकरो चतस्रा
 नपत्तिः इमे चकोटिद्वे करो पद्विजा चार अग्रे करो चटस्थान पत्तिः इमे । असखेज्जपदेसोगाढाण पुच्छा । असक्यात प्रदेशायमाडना प्र० उत्तर के जो
 तम पञ्चमा ब्याह कप्पा । तद्द वेवे पद के भगवन् एम कप्पो प्र उत्तर के गीतम् असक्यात प्रदग्गाढनाढ पुद्गल पर्यक्यात प्रदेशायमाड पुद्गलने द्रव्या
 येकरो तन्व प्रदग्गाढे करो चटस्थान पत्तिः इमे । प्रदग्गाढनायेकरो चत स्थान पत्तिः इवे, स्थितौवेकरो चतुःस्थान पत्तिः इवे चर्वादिद्वेकरो पने पाठ
 योगेकरो चटस्थान पत्तिः पुनै । एकसमयव्यवहिकाना प्र० उत्तर के गीतम् चतस्र कप्पा तेष कवे पदे के गीतम् एम कप्पा प्र०

बौद्धानुसारेण स्य कथं सङ्गतामप्रेक्ष्यन्मूर्ते उगाहकृत्वापु दुष्काकृत्वापु इति न सङ्केपनागेन सङ्केपगुणेनेति, असङ्गतामप्रेक्ष्यन्मूर्ते-
 उगाहकृत्वापु इति न सङ्केपनागेन सङ्गतामप्रेक्ष्यन्मूर्ते उगाहकृत्वापु इति न सङ्केपनागेन सङ्केपगुणेनेति । असङ्गतामप्रेक्ष्यन्मूर्ते-
 नपतितता अनतमदमात्रगाहनया उभयवर्तो उभयवर्तो अनतजागमनगुणाभ्या दृष्टिवाच्यसम्भवात् युगपदसोपाहाय योगसाध सत इत्यादि ॥ अत्र वृ-
 द्धयाय तत्र पञ्चमदयाय कृताकृतादिय इति । इदमपि त्वचितिकप्रदगावगाह परमाख्यादिक द्रव्यामिद मप्यपरैकप्रदवावगाह द्विप्रदेशादिकं प्र-
 व्यमिति । द्रव्यापतया तुल्यता प्रदगावतया पदस्यामपतितता अनतमदगकस्यापि स्वन्त्यस्य कालिकाशमद्वयवगाह इति प्रसङ्ग-
 मय स्थितिनाकाशयास्यपि सूत्रादि उपपन्न प्रावलीयानि । जहयोगाहकाय तत्र दुपयसियाय मित्यादि ॥ अपस्या द्विप्रदेशकस्य रक्त्यस्या वगा

साणवि यथागधरसफासाण वसस्यया जणियथा जाव छणतगुणलुक्के । जहयोगाहगगाण जते ! दुपदेसि
 याण पुच्छा, गीयमा ! छणता । से केणठेण जते ! एय युसुड ? गीयमा । जहयोगाहगए दुपदेसिए स्वधे
 जहन्तोगाहगगस्स दुपदेसियस्स स्वधस्स दसुठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले ठिइए चउठाणयकिए कालवन्न

गन्धरवरसफासाण जणियथा जाव छणतगुणलुक्के । अपस्यावगाहकाना जदत्त । द्विप्रदेशिकाना पुच्छा गीतम । अनन्ता पर्यवा
 प्रसङ्ग । अथ केनार्थेन जदत्त । यवमुच्यते ? गीतम । अपन्यावगाहनको द्विप्रदेशिको अपन्यावगाहनकस्य । द्विप्रदेशिकस्य स्वन्त्यस्य द्रव्या-
 तया तुल्य प्रदगावतया तुल्यः स्थित्या चानुस्थानपतितः । कासवर्धपयवै पदस्यामपतितः । अपयवर्धगन्धरसरस्यछेपयवै पदस्यामपतितः । छी
 मन् अपदामबाह पच्छा गादमा । अथवा पदगाहनाना के ममबन् द्विप्रदेशान् कतथा पयाह ज गीतम । अपता पयवा प सेवचदुह मते । अनन्ता
 पयार तामादि इम कथो । प गावमा जहयोगाहनपददमिप रुधे । के गीतम कतथा पयगाहनाना केप्रदेशीकथ । जहयोगाहनप दपटमियमखेप
 म । अपय पदगाहनाना द्विप्रदेशीकपने । दवदयाए तुल्ल पपकृत्वाए तुल्ले प्रस्वार्थसरोया पदगार्थसरोया । कथादवदुधयाए तुल्ले ठिइए चउठाणयकिए

ये वा दुपपक्षीके वा प्राव नत्रपयसरीये वा । अह छास्रिहिय पयसमप्रादिह वा तुपयस मनुदिह वा आव नत्रपयसमप्रादिह इति ॥ प्रावना ८

एत्र नुचुड ? गोथमा । एगगुणकालए पोगने एगगुणकालगस्स पुगलस्स वसुठयाए तुल्ले पदेसठयाए
वठानवन्दिण दुगाहणठयाए वठानवन्दिण ठिडए वठानवन्दिण, कालवणपज्जावहि तुल्ले अत्रसेसेहि
वयागधरसपल्लवहि वठानवन्दिण । अठहि फानहि वठानवन्दिण । एव जाय दसगुणकालए । सखेज्जागु
णकालएयि एववेव नवर सठान दुठानवन्दिण । एव असखिज्जागुणकालएयि नवर सठाने वठानवन्दिण
एव अणतगुणकालएयि नवर सठाने वठानवन्दिण । एव जहा कालवणहस वसव्वाया जगिया, तडा से

दत्त । एवमुच्यते ? नीतम । एकगुणकालक पुट्टव एकगुणकालसकस्य पट्टसस्य द्रव्यापत्तया तस्य प्रवशापत्तया पट्स्थानपत्तितो उवगाहमाय
तथा ननु स्थानपत्तिः स्थित्या ननु स्थानपत्तिः । कालवर्त्यपयवेकुत्था उवस्यैव वगन्तरसपयवे पट्स्थानपत्तिः । अपुत्रि रपक्षे पट्स्थान
पातत एव यावद्दुवगुणकालकः । बहुगुणकालकाप्येव नवर स्वस्थान पट्स्थानपत्तिः । एवमसक्ययगकालकोवि नवर स्वस्थान व
नु स्थानपत्तिः । एवमनन्तरगुणकालकोप नवर स्वस्थान पट्स्थानपत्तिः । एव यथा कालवर्त्यस्य वस्तव्यता प्रकृता तथा प्राप्यामपि वय

नायकरो वत स्थान पातत इव । स्थिति की वत स्थान पातत इवे । कावयव पर्यायेकरो तत्त्व इवे एवमेव नवर गदरव पर्यायेकरो पट्स्थान पत्ति
इव । पाठ अय करो पट्स्थान पत्तिन इव एम यावत् इय गुण कावा इवे ठही इय वज्जया । सकज्जगुणकावाविति । सक्कागुणे कावा पुट्टव एव
एमव एतका विषय सम्मानने विदे वा स्थाने पत्तिन इव । एव पर्यायेज्जगुणकावाविति । एमव पर्यायेज्जगुणकावा एतका एतका विमो
व पर्यायेज्जगुणकावाविति । एव पर्यायेज्जगुणकावाविति । एमव पर्यायेज्जगुणकावा एतका एतका विमो
इवे एम विम कावयवतो वज्जयता करो तमव मेव पर्यायेज्जगुणकावाविति । एमव पर्यायेज्जगुणकावा एतका एतका विमो
इवे एम विम कावयवतो वज्जयता करो तमव मेव पर्यायेज्जगुणकावाविति । एमव पर्यायेज्जगुणकावा एतका एतका विमो

शान्तिका मध्यमा द्विविधा द्विविधप्रवेक्षात्मिका त्रिप्रदेशानिमा य एव च सति मध्यमायगाहन एतु प्रदेशको मध्यमायगाहनपतुः प्रदेशका पेश

सोगाहणएवि एवचेय, एव अजहनमणुक्कोसोगाहणएवि । जहणोगाहणगाण जते । चउपदेशियाण पुच्छा
२ गोयमा । जहणोगाहणए दुपदेशिए तहा उक्कोसोगाहणए चउप्यएसिएवि एव अजहणमणुक्कोसोगा
हणएवि चउप्यदसिए पायर उग्गाहणठयाए सियहीण सियतुहे सियमपुहिए जहणीण पदेशहीणे अह अ
पुहिए पदेशअपुहिए एव जाव दसपदेशिए जेयह । नवर अजहणमणुक्कोसोगाहणए पदेशपरियुहणीकाय

रसप्राप्तपादनकोवि । जपत्यायगाहनकाना जवत्त । पतुःप्रदेशिकाना एक्का गौतम । यथा जपत्यायगाहनको द्विप्रदेशिका तथा सरकपायगाह
मरु एतुःप्रदेशिकापि । एवमजपत्यानुरूपोयगाहनकापि एतु प्रदेशको नवर अयगाहनायतया स्यादीनः स्यात्तुल्य स्यादभ्यधिकः यदिदीनः
प्रदेशीनः अयाम्यधिक प्रदेशान्यधिक एव यावद्द्विप्रदेशिक प्राप्त्य-मयरमजपत्यानुरूपोयगाहनक प्रदेशपरियुहि कसप्या यायत् दसम

मोने जपत्य अयगाहन काना उरउह अयगाहना को तिम । उक्कासागाहणाएवितेय एव अजहनमणुक्कासागाहणाएवि । तिम सबसहिवा इम अज
पत्य अजहणटने विव इमदासीरिना । अजहणत्याहणाअ भन अजहणदियाअ पच्छा गायमा । अजहण अयगाहना उ प्रदेशोखवने कतका पर्याह के
नोतम । जहणानाअव दुपदसिए कडा अजहणगाहणअव अकट्टमिगि । जपत्य अयगाहनामदमो तिम अमत्य अयगाहनाना एतु प्रदेशोसापिया
एव अजहणानाअवदुपदसिए तन्ना उक्कासागाहणाएव अजहणदियाएवि । इम विम उरउह अयगाहनामा दुपदगो तिम उरउह अयगाहनामा एउ
प्रदगो विव कहिवा । एव नमदसमणुक्कासागाहणाएवि अजहणदियाएवि अजहणदियाएवि । इम अजहण अयगाहनामा एउ
उगाए विवउरीय । अयगाहनाए केर होन । यिय तनु यियमअदिए जहणीवे पणसोण । अह अजहण पणसमअदिए एव जाव दसपदिए अण्णाअव य
अर । पयपाअकाहुने ता विव प्रदेशे यधिक इमका सय दयप्रदगतार सापिया ए विवप । अजहणमणुक्कासागाहणाएव पणसपरियुहणीकायखा । जाव

गात्मिका मयमा द्विविधा द्विविध्याप्रदेशात्मिका त्रिप्रदेशात्मिका च मय च सति तप्यमायमाहन एतु प्रदेशको मयमायमाएतनपतु प्रदेशका पेश

सोगाहणएयि एयचेय, एत्र अजहन्तमकुक्षीसोगाहणएवि । जहयोगाहणगाण भते । चउपदेशियाण पुच्छा
७ गोयमा । जहन्तोगाहणए दुपदेशिए तथा उक्खीसोगाहणए चउपएसिएवि एय अजहयमणकुक्षीसोगा
हणएयि चउपएसिए पवर उग्गाहणठयाए सियहीण सियतुखे सियमप्लहिए जहणीण पदेशहीणे अह ह्य
प्लहिए पदेशअप्लहिए एत्र जाव दसपदेशिए णेयध्व । नवर अजहणमणकुक्षीसोगाहणए पदेशपरिवुद्धीकाय

रतपावगाहमकोपि । जपस्यावगाएतकाना जहन्त । सतु प्रदेशात्मिका एवञ्चा गोसम । यथा जपस्यावगाएतको द्विप्रदेशात्मिका तथा चरकवावगाह
नञ्च एताःप्रदेशिकापि । एयमजपस्यानुरकपावगाहमकापि चत प्रदेशको नवर अवगाहनार्थतया स्थायीतः स्थासुत्य स्वादन्यपिचः यदिहीनः
प्रदेशहीनः तप्याप्यपिचः प्रदेशात्मिका एय यावद्द्विप्रदेशात्मिका प्राप्तव्य मयमजपस्यानुरकपावगाएतक प्रदेशपरिवुद्धिः कसप्या यावत् दसम
योने जपस्य अवगाहन काना उत्तर पदगाहना कको तिम । कखासामान्या एवितचेय एय जपस्यमयकासागाहनाएवि । तिम सवकाहना इम जप
पस्य जपस्यत्तने विच इमहाकाविधा । जहन्त व्याहवाण भन चउपएसिया च पच्छा गावमा । जपस्य अवगाहनाना ४ प्रदेशोसुधने जातका पयसि हे
भोतम । जहणानादवग दुपवसिय जहञ्चा जहणानादवग चउपएसिएवि । जपस्य अवगाहनानामदयो तिम जपस्य अवगाहनाना चतु प्रदेशोसाविधा
इम अहञ्चा कखासामान्यादवगदुपदसिए तथा कखासामान्यादवग चउपएसिएवि । इम जिम उत्तर पदगाहनाना दुपदयो तिम उत्तर पदगाहनाना पठ
प्रदेशो विच कदिवा । एय जपस्यमणकुक्षीसोगाहणएवि चउपएसिए चवर । इम जपस्य चउत्तर पदगाहनाना चतु प्रदेशो विच कदिवा । एय जपस्य
उवाण विगलीय । पदवाहनानाये केर होम । सिय तपु विचमभादिए जालीके पठसहोच । पद अभादिए पदसमभादिए एवं जाव दसपएसिएवावकाय प
भरे । पयपविधानादुने ता विच मह्ये पविच इमजो सगे दयमदयतादे साविधा ए विचप । अजहमणकुक्षीसोगाहणए पदपरिवुद्धीकावका । जप

या यदि भीम स्तब्धिं प्रददातो भीनो प्रवर्तते । अथा अयिच्छ स्तब्धः प्रदेगतो ऽपिक्का एव पञ्चप्रदेक्षादिषु स्फुर्येणु मध्यमाशगाहना मपिक्त्य प्रदे
 दापरिपुन्या वृद्धि होमिय तावदृक्त्या याव दृष्टाप्रदक्षान स्कन्ध सप्तप्रदक्षपरिपुद्धिं साधे य मत्तया । अजहसमधुक्कोसोगाहस्य दसपयसिप अम
 इयमधुकोयोगाहसस दसपयसिपस्य सचरस संगाहसथाय । सयवीर्य सिय अझ्झिदिय अह हीस पयसहीण दुपयसहीण आवसतपयस
 भीण । अह चझ्झिदिय पयसमझ्झिदिय दुपयसमझ्झिदिय आव सतपयसमझ्झिदिय इत ० योय सूत्र स्य मूपपरिप्रायनीय सुगमस्थात् मय्यर मननप्रद

व्या जाय दसपदेसियस्स सप्तपएसा परिपुद्धिज्जाति । अहसोगाहणगण नते । सखेज्जापदेसियाण पच्छा
 ? गोयमा ! अणता । से केणठेण नते । एव बुद्धइ ? गोयमा । अहसोगाहणए सखज्जापएसिए जहन्नागा
 हगणस्स सखेज्जापदेसियस्स दसठयाए तुल्ले पदेसठयाए दुठ्ठाणयन्निए रोगाहणठयाए तुल्ले ठिहए चउठ्ठाण
 यन्निए यन्तादिचउफासपज्जावेहि ठ्ठाणयन्निए एव उक्कोसोगाहणएवि । अजहन्तमणुक्कोसोगाहणएवि एव

दञ्चिकस्य सप्तप्रदक्षापरिवदन्ते । अपन्यावगाहनकाना प्रदत्त । सक्यातप्रदेविकाना पञ्चा, गीतम । अनन्ता सात्कनार्थेन प्रदत्त । एवमुच्य
 त ? गीतम । अपन्यावगाहनकः सक्यातप्रदक्षिको अपन्यावगाहनस्य सस्यातप्रदेविकस्य द्रव्यायतया तुल्य प्रदक्षार्थतया द्वित्वान्नपत्तिः अथगा
 हनार्थतया तुल्यः स्थित्या चतु स्यान्नपत्तिः यत्नादिचतुरर्थपयवैः पदस्यान्नपत्तिः एकमुत्कर्षार्थवगाहनकोपि । अजपन्यानुत्कर्षार्थवगाहनको

दमपयसिचक्षत वववापरिवउठोच्चति । जांसमे दमप्रदगातप्रदेगहडिवाये इम प्रदग्दग्म सातप्रदेगविश्वारवा । अहवाभाडपाच भते सखिज्जपयसिया
 च पञ्चा साहमा । अहस्य चवगाहनाना सक्यातप्रदेयोने अतन्ना पयार्थ गीतम । अचता प सखचउह भते प । अनन्ता पयार्थ तेमाटे इम चझो ।
 प्रदयागाहनाए सखिज्जपयसिए । अहस्य चवगाहनाने सक्यातप्रदेयोने । अहवाभाडववापयसियस्य अहवाण तन्न । अयस्य पदगाहनाने स
 प्यातप्रदेयोने द्रव्याय सरोपा । पयचउहाए दुहाचवज्झिर । प्रदेगवाच सरोपा चिक्कान्नपत्तिः कुवे । अन्वाह इवाए तुल्ल ठिहएचउहाचवज्झिर । अथगाहन

चेन्न नगरं सठाणे दुठाणयन्त्रिण । अहन्तोगाहणगाण जन्ते । अस्सिखिज्जापदेसियाण पुच्छा, गोयमा । अणता । से कंणठेण जन्ते । एव युच्चह ? गोयमा । जहब्बोगाहणए अस्सखिज्जापदेसिए स्वधे जहब्बोगाहणगस्स अस्सिखिज्जापदेसियस्स खधस्स वस्सुठयाए तुस्से पदेसठयाए अउठाणयन्त्रिण उगाहणठयाए तुस्से ठिइए अउठाणयन्त्रिण वस्सादिउवस्सिफासिहि उठाणयन्त्रिण एव उक्कोसोगाहणएवि, अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि एवचेव नवर सठाणे अउठाणयन्त्रिण । अहन्तोगाहणगाण जन्ते ! अणतपदेसियाण पुच्छा ? गोयमा । अणता । से कंणठेण जन्ते ? गोयमा । अहब्बोगाहणए अणतपदेसिए स्वधे जहब्बोगाहणगस्स अणतपदेसियस्स

[illegible][illegible]

नेत्रकण्ठावपाङ्गमाचिन्ताया टिङ्गयिव तुल्ये इति ० उत्कर्षावपाङ्गः किंसावपाङ्गः स्फुटः स सृज्यते यः समस्तसौकम्यापी स चा चित्तमन्त्रः
अः केवचित्सिन्धुपातकमरकण्ठा वा तयो यो उजयो रपि वक्रकपाटमथान्तरपरवक्रकण्ठा यतुः समयप्रमाणते ति तुल्यभासता योय सूत्र माप
गिरिमार्गः प्राणैकजावनानुसारं स्वय भुयस्य पारिजावनीय मवर जपस्यप्रवक्ष्या स्फुटया द्विप्रवक्ष्या सर्वात्म्यज्ञानप्रदशाः

स्वधस्स दसुठयाए तुसैं पदेसठयाए लठाणवक्रिए लंगाहणठयाए तुसैं ठिइए खउठाणवक्रिए वन्नादिस्सउ
 फासेहि लठाणयक्रिए। उक्कोसोगाहणएथि एवचेव नअर ठिइएवि तुसैं। अअहसमणुक्कोसोगाहणगण जत्ते।
 अणतपदेसियाण पुच्छा, गोयमा। अणता। से केणठेण? अअहसमणुक्कोसोगाहणए अणतपदेसिए स्वधे अ
 णटन्तमणुक्कोसोगाहणगस्स अणतपदेसियस्स स्वधस्स दसुठयाए लठाणवक्रिए लंगाहण

गीतम् । अनन्तः । अथ कतार्थेन प्रदत्तः । एवमुच्यते ? गीतम् । अपर्यावगाहनकालमादेयिकस्वन्धो अपर्यावगाहनकस्यामन्तप्रदक्षिणस्य रक्ष
नस्य इव्याप्यतया तुल्यः प्रदक्षार्थतया सदर्यानपतितः अन्गाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या अनुस्थानपतितः वर्णोदिवलुङ्गिः स्पर्शः पटस्थानप
तितः । उरुपर्यावगाहनका प्येव चैव नवरः स्थित्या तुल्यः । अक्षपर्यानुस्पर्शपर्यावगाहनका प्रदत्तः । अन्तःप्रदक्षिणकामा पुष्का भीतम् । अन
न्ताः पयवाः । अथ कतार्थेन प्रदत्तः । एवमुच्यते ? अक्षपर्यानुस्पर्शपर्यावगाहनकालमादेयिकस्वन्धो अक्षपर्यानुस्पर्शपर्यावगाहनकस्या नन्तप्रदक्षि

शब्दिव । इत्येव सरोपा प्रदयाक चत स्मानपतित सुवे । उरमाहवदुसाए नून ठिईए सवशावधद्विए । सवशावधनाय सरोपा स्थितिबरो चतस्यानपतित
 ने । शब्दादिबद्विराकायद्वियकावधद्विए । बर्कादिउपरिवे आयन परबिं कस्यानपतितकव । एव उक्ताभावाकावधपणि । इत उरकाव परवावता पिय
 बइयमपवाकाव्यावधपणि कयवव नवर । यवपव्य पनरकाट सवशावना गिय इमकोज ए बियाय । सहावेववशावधद्विए । अस्याने एतु स्माने पति
 सुवे । जइयोपवावववाव भते पववपएविकारं पुष्पा यावसा । कएव्य पवशावनाई पननपदयोन जेतका पर्याय कसा जे मोतम । पवता प

ठयाए चउठाणवक्रिए ठिईए चउठाणवक्रिए वन्ताविश्वठफासिहि ठठाणवक्रिए । जहन्निठिईयाण भते !
 परमाणुपोगलाण पुच्छा, गीयमा ! झुणता । से केणठेण ? गीयमा । जहन्निठिईए परमाणुपोगले अह
 न्निठिईयस्स परमाणुपोगलस्स दध्ठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले उग्गाहगठयाए तुल्ले ठिईए तुल्ले यन्ताइ
 दुफासिहिय ठठाणवक्रिए एव उक्कोसिठिइएयि । झुजहन्तमणुक्कोसिठिइएयि एवसेव नवर ठिईए चउठाण
 वक्रिए जहन्निठिईयाण दुपदेसियाण पुच्छा, गीयमा ! झुणता । से केणठेण ? गीयमा ! जहन्निठिईए दुप

कस्स । सक्कस्स दुक्कायतया तुल्लः प्रदशायतया पदस्वानपत्तिः चवगाइमायतया चतुस्वानपत्तिः स्थित्या चतुस्वानपत्तिः । वर्याचउवरय
 म्मे पदस्वानपत्तिः । अपगवस्थितिकानो जदक । परमाकुपुद्गलाणा पुच्छा, गीतम । अय क्कायस जदक । एवमुच्यते ? गीत
 म । अपगवस्थितिकपरमाकुपुद्गलो अपगवस्थितिकस्स परमाकुपुद्गलस्स इव्यायतया तुल्लः प्रदेसायतया तुल्लः स्थित्या तु
 ल्लः पयोदिविबिपरपत्तीः पदस्वानपत्तिः । एवमुक्त्वास्त्वितिकोप्ये चैव नवरं स्थित्या चतुस्वानपत्तिः । अ

वचनैव भंत पं मावमा । चमत्ताप्रदय तमाटे इम कट्ठा च गीतम । अइमावाइए चवतपठियसुवे । अपक्क चवगाइमावे चनत्तप्रदमोरब्ध
 जइय माइअए चवतपठियसुवे सुअए दकइयाए । अइक्क चवगाइमाय चमत्ताप्रदेमोखधने दव्यावेसरोया । तल्ले पयइयाए कट्ठाचवक्रिए । प्रदेया
 ये कव्याजपत्तिः इव । अवाइअइयाए तल्ले ठिईएचउठाणवक्रिए । चवगाइमाये सरोया झ्यातकरो चतु ज्ञानपत्तिः इवे । वयादिअकट्ठासिहि
 कट्ठाचवक्रिए । वयादि अ क्कोकरो ज्ञानपत्तिः इव । वयायोमाइयाएपि एवसेव अवर ठिईए तुल्ले । अरकरो चवताइमाये बिअ इम कोक ए बिगोव
 प्पितियरोया । चअकवमनुजामाणाअवयाच भते चवतपठियसुवे पुच्छा मावमा । चअअक्क चवगाइमा चनत्तप्रदेमोने केतसा पयोय इमा
 चवतापक्का भते सेवेरेए प मावमा । एअइअमनुजोसावाइए चवतपठियसुवे । चअअक्क चमत्ताप्रदेमोने चमत्ताप्रदेमोने । चअअ

सियतुल्ले सियस्यस्रहिण् जडहीणे पदेसहीणे स्रह स्रस्रहिण् पदेसठयाए स्रस्रहिण् ठिहण् तुल्ले यन्नाटिचउ
फासोहिय ठठाणयान्णिण् एव चक्कोसोठिहण्णि एवचक्कोसोठिहण्णि एवचक्कोसोठिहण्णि एवचक्कोसोठिहण्णि एवचक्कोसोठिहण्णि
एव जाय दसपदेसिए नवर पदेसपरिवुह्णीकायस्र, ठगाहणठयाए तिसुयि गमएसु जाय वसपदेसिए नर
पदेसा युह्णज्जाति । जहन्नाठिहण्णि जते । सखेज्जापदेसियाण पुक्खा, गो० ! ह्युणत्ता । से केणठेण ? गो० !
जहन्नाठिहण्णि सखेज्जापदेसिए जहन्नाठिहण्णि सखेज्जापदेसियस्स सखस्स वसठयाए तुल्ले पदेसठयाए दुठा

घाहीनः स्यात्पयिकः प्रदेखाप्यपिकः स्थित्या तुल्यः वयोविचतुर्भिः स्पर्शे पदस्थानपतितः । एवमुत्सवस्थितिकोपि । अत्रपम्यानुत्सवस्थिति
वोप्यप्येव नवरं स्थित्या यतुःस्थानपतितः । एव यावदुत्सवस्थितिके नवरं प्रवस्यपरिवृद्धिः कर्तव्याऽवगाहनायतया चित्रपि गमकेषु यावदुत्सव
प्रदेशिक नव प्रदद्या परिचयने । अपग्यस्थितिकाना प्रदद्या । सस्यातप्रदक्षिकाना पुक्खा । गीतम । अलला । सरकेनार्चन प्रदद्या । एवमु
प्यत ? गीतम । अपग्यस्थितिकः सस्यातप्रदक्षिको अपयस्थितिकसङ्घातप्रदेशिकस्य स्वत्वस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेखायतया हि 'स्थानपतित'

यथासंतिरेव यवस्य नवरं तितोऽवच्छिन्नं । यवस्य यवस्य स्थितिकारो यतुःस्थानपतितः । एव जाय दसपएसिए नवर
यवसपरिवृद्धोबाबका । इमं अस्मिन् । प्रदयारवय ए विमोऽप्रदेये २ वृद्धिकरवो । उगाहण्डया० तिसुयिगमएसु जाय दसपएसिए वसपएसावड्डिज्जाति ।
यवगाहनावो तोने पाबावैकरो आसणे । प्रदेय तावये २ प्रदयनवारीने कश्चिो । अहवद्धितोबाब भते सखिज्जापदेसियाच पुक्खा गावमा । अत्रग्य
स्थितिकः सस्यातप्रदेयने, यतवापयवैव हे गीतम । यवता प सखयवैव भते प गावमा । यनन्तापयाय तमाटे इमा कसो हे गीतम । अहवद्धिपयसि
यवपदेसिएपय अहवद्धिदयस । अत्रग्य स्थितिकः सस्यातप्रदेयने अपग्य स्थितिने । सखिज्जापदेसियस्स सुधस्स । सस्यातप्रदेशिकोऽवच्छेने । यवड्डाए तुल्ले
यवड्डाए वड्डावड्डिए । प्रदेये सरोपावै प्रदयावै यतुःस्थानपतितः । उगाहण्डयाए वड्डावड्डिए । यवगाहनावै यतुःस्थानपतितः । ठिहण्णु

पथनि ए उगाहणठया ए दुठाणवनि ए ठिई ए तुझे वयादिचउफासिहिय ठठाणवनि ए एव उक्कीसिठिई ए वि
 अजहन्नमणुक्कीसिठिई ए वि एधचेय नयर ठिई ए चउठाणवनि ए । जहन्नाठिईयाण जते ! अस्सिखिजापदेसियाण
 पुच्छा, गोयमा ! अणता । से केणठेण ? गोयमा ! जहन्नाठिई ए अस्सिखिजापदेसिए जहन्नाठिईयस्स अस्स
 खेजापदेसियस्स वद्धठया ए तुझे पदेसठया ए चउठाणवनि ए उगाहणठया ए चउठाणवनि ए ठिई ए तुझे
 यन्नादिउवरिस्सिचउफासिहिय ठठाणवनि ए एव उक्कीसिठिई ए वि । अजहन्नमणुक्कीसिठिई ए वि एवचेव नयर
 ठिई ए चउठाणवनि ए । जहन्नाठिईयाण अणतपदेसियाण पुच्छा, गोयमा ! अणता । से केणठेण ? गोयमा !

यवभाइनायतया द्विस्वामपतितः स्थित्या तुल्यः वकीदिचतुन्नि स्वर्गो, पदस्वामपतितः । एवमुत्कर्षस्थितिकोपि । अक्षयभ्यामुत्कर्षस्थितिको
 पदेवं वैव नवर स्थित्या चतु स्वामपतितः । अपभ्यस्थितिकाना प्रदत्तः । असस्यातप्रदेशिकाना पुष्पा, गीतम । अनन्ताः । तरक्षेनाचैन जद
 ना । एवमुच्यतः नोबन । अपभ्यस्थितिकोऽसस्यातप्रदेशिको अपभ्यस्थितिकस्या सस्यातप्रदेशिकस्यव्यायतया तुल्यः प्रदेयार्थतया चतु
 स्थानपतितो ऽवगाहनायतया चतुःस्थानवतितः स्थित्या तुल्यः वकीदिचममचतुन्नि, स्वर्गो, पदस्थानपतितः । एवमुत्कर्षस्थितिकोपि । अ
 क्षयभ्यामुत्कर्षस्थितिकोपि एवमव नवर स्थित्या चतुःस्थानपतितः । अपभ्यस्थितिकानामनन्तप्रदेशिकाना पुष्पा, गीतम । अनन्ताः । अ

वकीदिचवतिर्हि वरकासे विववकाचवति ए । क्षितिसे सरोया वकीदिचपरिरेऽस्वर्गो अस्वामपतितः । एव पकासठिए वि पकासमवकोऽठिरेपवि ।
 एव जगदो अस्तिना, पितृ अत्रय्य चतुःकुर पयो । एवचेव नवर वरकाचवति ए । इमकोज ए विषय क्षितिकरो वतःस्वामपतितः । अक्षयठिरेवाय
 मने पमविज्जपरिसिपार्व पुच्छा गोयमा । अथग्व क्षितिना के मगवन् असस्यातप्रदेशीना य के गीतम । अचताप चक इव भते प गावसा । यम
 व्यापयोव तेसाट इम वकी के भोतम । अक्षयठिरे ए असिखिज्जपरिवह चक । अथग्व क्षितिना असस्यातप्रदेशीरवज्ज । अक्षयठिरीयस्स अक्षयज्जपरि

जहन्मठिइए सुगतपदेसिए जह्मठिइयस्स अणंतपदेसियस्स वंशठयाए तुल्ले पदेसठयाए लंठाणवज्जिए
 तुंगाह्मणठयाए खउठाणवज्जिए ठिइए सुल्ले यत्ताविअठफासंहि लंठाणयज्जिए एव उक्कोसठिइएयि । अजहन्म
 मणक्कोसठितीएयि एयधेय नअरं ठिइए खउठाणयज्जिए । जहन्मगुगालयाण परमाणुगालयाण पुच्छा ,

यत्तनार्येन नहन्त । यत्तनुज्जते , गीतम् । अपम्वरियतिकामनप्रदक्षिणे अपम्वरियतिकामनप्रदेशिकस्य द्रव्याच्येतया तुल्यं प्रवक्ष्याथतया
 पदस्त्वानपत्तिनो बणाइनाःयतया यतुःस्थानपत्तित रियत्ता तुल्यः वक्काट्टएवर्त्तो पदस्थानपत्तितः । यत्तुःकर्वरियतिकोवि । अमपययानुरक्त
 वारयपत्तिको प्यक्खेव नअरं रियत्ता यतु स्थानपत्तितः । अपम्वरगुगालकाना परमःगुपुद्गलाना पुच्छा , गीतम् । अतन्ताः । अप यत्तनार्येन

अप सेऽप्य इत्यहदाह तुम् । अथन्यस्मिन्निना यसस्मानप्रदगो रक्कध द्रव्याच्येनराकाङ्क । पयसइयाए वक्कड्डावज्जिए । प्रदेय य यतु स्थानपत्तित इवे ।
 वणाइवक्कड्डाएवज्जिए ठिइएतुम् । यवगाइनाचं यतु स्थानपत्तित इव स्मिन्निनेसरया । यथादिउवरित्त वक्कासड्डिक्क खड्डावज्जिए । यत्तविकपपरि
 का उ अग्य ज्ञानपत्तित भूरे । पक्क वक्कासठिइएयि । इम वरउट्टस्मिन्निना यि ज्ज । यक्कइमक्कासठिरण्वि पक्कव वक्कर ठिइए वक्कड्डावज्जिए ।
 यक्कइम वक्करउट्टस्मिन्निना विव इम डोअ व विमोव स्मिन्निनरो यत्त ज्ञानपत्तित इम् । अक्कसठिइयाः यक्कमेते यत्तपपमावाः व पक्का गाइमा । यपम्व
 स्मिन्निना इ मगइन् वक्कलप्रदगोना इ उ उ गो । यक्कताप मक्कड्डव भत्त गाइमा । यक्कतापमाव भत्त गाइमा । यक्कसठिइए
 यक्कतपदविपपुचे । अथन्य स्मिन्निना यक्कलप्रदगन रक्कध । अक्कसठिइयाप्य यक्कतपदविपपुचे । अक्कसठिइयाप्य यक्कसठिइए
 तम् यक्कसठिइयाए वक्कड्डावज्जिए । द्रव्याच्येकरोपाधे मय्यायं ज्ञानपत्तित इवे । उगाइवक्कड्डाए वक्कड्डावज्जिए । यक्कतापमाव यत्तु स्थानपत्तित भूवे । ठि
 उतम् यथाःदिउउत्राःयदिक्कड्डावज्जिए । स्मिन्निनरो सरोपा यत्तविरि उ अग्यं ज्ञानपत्तित इवे । पक्क वक्कासठिइएयि यक्कइमक्कसठिइएयि यक्कव
 मक्कर ठिइएवक्कड्डावज्जिए । इम वरउट्टास्मिन्निना पक्क यक्कवक्क यक्कड्डावज्जिए । अक्कसठिइयाप्य यक्कसठिइयाप्य यत्तु स्थानपत्तित भूवे । अक्क

गोयमा । अणता । से के गठेण ? गोयमा । जहन्तगुणकालेण परमाणुपोगात्रे जहन्तगुणकालेण परमाणु
 पोगालस्स दसुठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले रोगाठणठयाए तुल्ले ठिडण च उठणठयाए तुल्ले कालयन्तपञ्जायहि
 तुल्ले अत्रसेसा वत्ता नत्थि गधरसदुफासपञ्जायहि ठाणयहि । एव उक्खोसगुणकालेण । एव अज्जहन्तगुण
 क्खोसगुणकालेणिय नत्थर सठाणे ठाणयहि । जहन्तगुणकालयाण जत । दुपदेसियाण पुच्छा ? गोयमा !

नदत्त । एवमुच्यते ० गौतम । अपाणुवकालकः परमाणुपद्मना अपग्यगुणकालकस्य परमाणुगुणलस्य इत्थं यथा तस्य प्रदशार्थतया तुल्यो
 ऽनाहतापतया तस्य स्थित्या चत स्थानपत्तिना । कालवृत्तपथे स्तस्य चसत्रपथसा नास्ति गधरसद्विधिपस्यजपयवे पटस्थानपत्तितः ।
 यमुहपगुणकालकापि । यवमपग्यगुणकालकापि नत्थर स्थापन पदस्थानपत्तिना । अपग्यगुणकालक ना नत्तल । द्विपदेशिका
 मा पुच्छा गौतम नदत्त । ययकनार्थेन जदत्त । एवमुच्यते ० गौतम । अपग्यगुणकालकद्विपदेशिका अपग्यगुणकालकस्य द्विपदेशिकस्य

पगुणकालकापरमाणुवकालक पच्छा गोयमा । अत्थ गुरुकासना परमाणुपद्मना ॥ ५० ॥ उ भो । यत्थताप ते दसदुव भन प गावमा । यन्ता
 पवाव त जने यत्थ ॥ ५१ ॥ उ भो । अत्थ गुरुकासनापरमाणुवकालकस्य परमाणुवकालकासना परमाणुपद्मना अत्थ
 गुरुकासनापरमाणुपद्मने दसदुवगठणपद्मना । इत्थाय सरोपावे पदगोयमरीपावे । कमावकदुवगठण तत्त ठ एवदुववद्विप । यवमावना
 वमरीपावे स्थितिकरी चत स्थानपत्तिनद्वे । कावद्विपपथेति तत्ते यवसकान्थानत्थि काकाअनपथवि सरोपा काकता वयनथो । गधरमकासपन्न
 वद्विप दसदुवगठण । गधरमकासने पयसि खम्भान पत्तिन इवे । एव कमावगुरुकासपथि यवद्विपमथकामगुरुकासपथि । इत्थ उठणठयमजनापि
 पदवत्थ यमुहपगुणकालकापि एव ॥ ५२ ॥ एवपदे यवरी मरुचे उठुववद्विप । एवमिप स्तम्भाने खम्भानपत्तिन इवे । अत्थगुरुकासनाय भते दपदे
 विद चे पच्छा ॥ । अत्थ गुरुकासना उ यववत् द्विपद्विपना ॥ ५० ॥ उ भो । यत्थताप सेवेनेव भत प उ भो । यन्तापयाय तमाटे इत्थ चत्थ

शुणता मे केणठेण १ गीयमा । जहणगगकालए दुपदेसिए जहणगगकालगस्स दुपदेसियस्स वसुठयाए
 तुझे पदेमठयाए तुझे तंगाहणठयाए सियन्हीणे सियत्तुंजे सियअप्पहिण जह हीण पदेमहीणे अह अप्पहिण
 पटसमप्पहिण टिठए चउठाणयहिण कालयसययादिउयखिस्सचउफावडिय उठाण
 यहिण । एय उक्कोसगुणकालचिंवि अजहणमकुसुणकालएवि एयचेव नअर सठाण उठाणयहिण । एअ
 जाय दसपदेसिए नअर पदेसपरियुहु तंगाहणा तंहय । जहणगगकालयाण जते । सखेज्जापदेसियाण पुक्खा ,

द्रव्यापेक्षया तस्यः प्रदेक्षापक्षतया गुरुषोऽङ्गनाशनापक्षतया स्वाक्षेपेन स्वात्मस्य स्वावज्यापिक्क यदि हीनः प्रदेक्षहीनः कथाज्यपिक्क प्रदेक्षाज्य
 पित्तः स्थित्या चतुरायणवपत्तिः आसन्नपययै सुसुप्ते क्षीपवर्क्युपरिमचनुति स्पर्शे धट्स्थानवपत्तिः । यवमुरकपणकालकोटिय १ यव
 पञ्चामुरकपणकालकोटिये कैय नअर उअर्याने पट्स्थानवपत्तिः । यय माकदुसुमद्विचिओ नअर प्रदयपरिवट्टिरवगाइना तथेव । अयन्य

१ यो । अहट्टमवकाजए दुपद्वियेक्ख । अयन्यगुणकाजना विगदेयोनाउअ । अहवगुणकासअदपदुपदेमियदवखुअरव । अयन्यगुणकासअना हिप्रदेगी
 रवने । अहट्टमवकाजने अहमदुगाउतल । द्रव्यापेक्षे मरीय खे अदगादे चरोया । कलाअचकुवाए मियकोके सियतल निअयअहिण । यवगाइनाये काअकोन
 काअचरोयाकोर यधिकअय । अहट्टेक पाअकोके अहवमहिण पयमममहिण १८१७ यअअयहिण । अहोअतेमदियदल ख यधिक तपियप्रदमे यधिक
 स्थितिचरो चतस्यानवपत्ति कुवे । काअअअणअवि तव यविमेमाअस्यादि अविजवअप्पामविअकुवाअहिण । काअअवना पवीट चरोया आवताअवी
 दिअचपरिअ ४ यमे अल्लानवपत्ति कुवे । ७४ अल्लामगुण अउठवि । १४ अउठअंगवकाजना यिव । यअअअमकाअयअणवि एवेचेर अअर अउठअउठो
 अहिण यअअव यअअअगवकाजना यिव १४ योअ यल्ल न अल्लानवपत्ति कुवे । ७४ अय अमपगोए अअर अमपपुपरियवटाअयअ । १४ अ अओअगे
 अयपदेगी वविमप १ अदगादि अगेहदिअउठे । अमहिणानअवमा- अहणगवकाजना अते सविअपरसिवाअ यअ ४० । यवगाइनादिअतिअकोव

गोयमा । व्युणता । से केण्ठेण ? गोयमा ! जह्खण्णुगकालए सखेज्जापदेसिए जह्खण्णुगकालगस्स सखे
 ज्जापदेसियस्स दव्वठयाए तुल्ले पदसठयाए दुठ्ठाणघाए तुगाहणठयाए दुठ्ठाणवणिए ठिइए चउठ्ठाणय
 णिए, काउयणपज्जयहि तुल्ले अण्णदिउवरिस्सचउफासहिं वठ्ठाणयणिए । एउ उक्खोसगुणकाल
 एवि एय अजह्खण्णुक्कोसगुणकाउएवि । एव नवर सठ्ठाणि वठ्ठाणयणिए । जह्खण्णुगकालयाण भत्ते !
 अण्णसखिज्जापदेसियाण पुक्खा, गोयमा ! व्युणता । से केण्ठेण ? गोयमा ! जह्खण्णुगकालए अण्णसखेज्जापदे

गुणकालकामो भवन्ति । उस्मात्तप्रदक्षिणामा पुष्पा गीतम् । अनन्ता सत्स्केनार्चनं प्रदत्त । स्वमुच्यते ? गीतम् । अथगुणकालकः स्वया
 तप्रदेशिको अथगुणकालकस्य स्वयान्तप्रदक्षिणस्व इत्यर्थतया तुल्यः प्रदक्षार्थतया द्विःस्थानपतितो उवगाहभार्थतयापि द्विःस्थानपतितः
 रिपत्वा चतुःस्थानपतित कालवर्षपर्यन्ते साक्ष्यो उवहीयेककोविप्रधमचतुःस्पृष्टः पदस्थानपतितः । एवमुत्कर्षगुणकालकोपि । एवमस्यगुणानु
 रूपगुणकालकोपि नवर स्वरान् पदस्थानपतित । अथगुणकालकानां प्रदत्त । अथकयातप्रदेशिकानां पुष्पा गीतम् । अनन्ता सत्स्केना

अथगतवक्तास्ते सप्मात्तप्रदक्षीनां केतकापकीं प्र च हो । अथगत सखेज्जा भवे प या । अनन्तापवाय तमाटे इम कक्षा वेभो । अथगतवक्ता
 नर वविज्जापदेसिं युव । अथगतवक्ताकगरस्य सविज्जापदेसिंवरस्य सुवरसम् । अथगतवक्ताकामो सप्मात्तप्रदक्षीनां सप्मात्तप्रदक्षी
 रक्कहे इवद्विज्जापदे पदसठ्याए दुठ्ठाणवणिण । इत्यार्थे सरोवा प्रदक्षीये द्विःस्थानपतित भवे । कणाककृवाए वहुववणिण । पदगाहमाटे द्विःस्थानपतित
 भवे । प्पित्तकरो चत सानपतित भवे । काकवसपवववणि नत्ते पविस्साहं पणादित्तववि चउफ सविस्स वहुववणिण । काकवने पर्यायसरोया याक
 ताववादि उपरिसेव अण्ण सरो जम्माभकतितभवे । एव उवगामगुणकालकवि अथगतवक्तापुण्णववि एवमव नवर भट्ट केव्वुवाववणिण । इम वरवव
 गुणकाल पि व वणिण । अथगत वरवव नरवव नरवववि विव । इम सोज ए विमप ज्जाज्जे ज्जाज्जपतित भवे । अथगुणकालकानां भत पसविज्जाप

सिए जहयागुणकालगस्स धुसखेज्जपदेसियस्स दध्ठयाए तुखे पदेसठयाए वउठाणवन्निए ठिडेए वउठा
 णवन्निए कालययापज्जवेहि तुखे धुसखेसहि वयादिउवरिखचउफाचहिइ वउठाणवन्निए । एव उक्खीसगुणका
 लणयि । अजइयासगुक्खीसगुणकालएयि एवचेय , नवर सठाणे वउठाणवन्निए । जहन्तगुणकालयाण जते ।
 अणतपदेसियाण पुच्छा , अणता । से केणठेण ? जते । गोबमा ! जहसगुणकालए अणतपदेसिए जहसगुण

येन प्रदत्त । एवमुच्यते ? गोतम । अपरयगुणकाज्जा सङ्कुताप्रदक्षिणे अपरयगुणकासकस्या उवस्यातप्रदेक्षिस्स इव्वान्येतया तुस्यः प्रदेक्षा
 यतया वतुःस्यानपत्तिता रियत्था वतरयानपत्तिता कासवदेपवे सुस्यः वखोपवखोदिप्रयमपत्तुति स्पष्टः यदस्यानपत्तिता । एवमुक्तप
 गुणकासकायि । अपरयगुणकालगस्सगुणकासको एव चेय नवर सठ्याने यदस्यानपत्तिता । अपरयगुणकासकानामनन्तप्रदक्षिणाका पुच्छा , गो
 तम । वरंताः । अपकमार्येन प्रदत्त । एवमुच्यते ? अपरयगुणकालकालप्रदक्षिणे अपरयगुणकासकस्या नन्तप्रदक्षिणस्य इव्वान्येतया तुस्यः प्रदे
 खेविदाव पुच्छा ना । अपरयगुणकाज्जा वसल्यातप्रदक्षिणे वीतकापर्याय म च ज्जी । यवताप सेवेवइव भते पं गा । यमन्तापर्याय तेमटे इम

वन्ता हे गोतम । अपरयगुणकाज्जे वसलित्तपयसिइ अपरयगुणकाज्जनसं वसलित्तपयसिइ विवरस इव्वान्येतया तन्ने पवेसङ्कुतादे वउठावन्निइ । अपरय
 गुणकासका वसल्यातप्रदक्षिणा अपरय गुणकाज्जा । अपरयगुणकाज्जे प्रदक्षिणा वीत का नपत्तिता हुवे । ठिंवेवइववन्निइ । स्मिति
 करो वतुःस्यानपत्तिता हुवे । कालवपखेदेहि तन्ने वसिसेविख्यादिवरिख वउफासोइव वउठावन्निइ । कासवयनापर्याय वरीया वावतावन्नि
 वपरका व कयं करो वस्यानपत्तिता हुवे । एव वकायगवकाज्जाएवि वजइसमवकासयवकासयवि एवेवेव नवर सङ्कुतावन्निइ । इम वरंतागवका
 मना विव वजइव वतुःकइगवकास विव इम वीतए विमव वस्याने कस्यानपत्तिताइव । वजइगुणकासकाज्जा भत वचता पयसियाव पच्छा गायमा
 लणइ गुणकासका यमन्तप्रदेयो न वतापर्याय हे गोतम । यवताप० वजइवइव भते प गावमा । यमन्तापर्याय तमाट इम वन्ता च गोतम । अपरय

कालगस्म सृणतर्पदसिधस्स दसुठयाए तुल्ले पदेसठयाए ठठाणवकिए वेगाहगठयाए चउठाणवकिए ठिईए
 चउठाणवकिए कालवन्तपल्लवोह तुल्ले अथसेसेदिअ यथादिअठफासहि ठठाणवकिए । एव उक्कोसगुणका
 लएयि, एव अअदसमणुक्कोसगुणकालएव एवच नवर सठाणे ठठाणवकिए । एव नीललोहिअहालिदु
 सुक्किअसुमिगधदुमिगधतिसकहुयकसायअविलमज्जरसपल्लवोहिय वससुया जाणिअसुया नअर परमाणुपो
 गगलस्स सुमिगधस्स दुमिगधो न अयाति दुमिगधोस्स सुमिगधो न अयाति तिसस्स अथसंसा न अयाति,

आपतया पदस्सामपत्ति । अदगाहनापतया अतुरथानपत्ति । स्थित्या अतुरथानपत्ति । कासववपपवे सुत्ताअवोवेवकाअएस्सो पदस्या
 नपत्ति । एव मुक्कपगुणकालकापि अअपम्याअतुक्कप गुणकालको प्यअवेअ नवर अस्यामे पदस्यामपत्ति । एव नीललोहित वारिदु शुकु सु
 रनिगन्ध दुविगन्ध तिस कटव कपाय अतु मयुररस पर्यवेअव्यता जायता नवर परमाणु पुद्गलस्य सुरनिगन्धस्य दुविगन्धा न अस्सय दुवि
 गन्धस्य सुरनिगन्धो न अस्सते तिसस्यावयोपान अस्सते । एव कटुकादीनि विद्याए तत्तयेव । अपत्यगुणकाल कर्कसात्ममननमप्रदेशिकाना

गगलए अथतएसिधएवे । अअद गुणकालानो अमकप्रदयोअव्य । अअवगवकाअकरस अथतवेयोअरस अथरस । अवन्मसुअकालानां अमकप्रदयो
 रअवे । अअदवाए तवे पण्डुवाए अठाअद्वि । इअ्याअ सरोया प्रदयाअ अकान अतिअ हवे । अगाअअवाए अअवाअद्वि । अअगाअनाअ
 अत अमपत्ति हवे । ठि । ए अअवाअद्वि । अतिअरो अतु अमपत्ति हवे । काअवअपय्यअति तव अविअसेअ अयाओ अअवाअद्विअद्विअ ।
 अअवनाअवयोया वाअता । अकीदिअम अरो अकानपत्तिअवे । एव अकोसगवकाअएव । अम अकण्टगवकाअना पिय । अअवमअवाअम
 अवाअद्वि अअर अअर अअवाअद्वि । अअवअ अमकण्ट गुणकाअ पिय अम कोअ ए अियेअ अया न अकानपत्ति हवे । एव अकोकाअद्विअति
 रपुअिअनुभिअधदुमिगधतिसकहुयकसायअविलमज्जरसपल्लवोहिव । अम गोअवअराता योका अरवा अुगअ अुगेअ तिसएव अटुअ अविअ मअ

एव कहुवादी ने विसेसं तथेत् । जहन्तगुणकरकान् अणतपदेसियाणं पच्छा , गोयमा । अणता । से कण्ठेण ? गोयमा ! जह्यागुणकरक अणतपदेसिए जह्यागुणकरकस्स अणतपदेसियस्स दसुठयाए तुत्त पदसठयाए तठाणयन्निए तगाहणठयाए चउठाणयन्निए ठिइए चउठाणयन्निए वयागधरसेहि तठा णयन्निए करकफासपज्जयेहि तुत्तं अत्रसेसहि सप्तफासपज्जयेहि तठाणयन्निए । एव उक्कासगुणकरकने

[illegible]

तेति एयमेव नवर मठाणि तठाणग्रहिण । जहन्तगुगसीनाण दुपदेसिवाण पुच्छा , गोयमा ! अणता ।
 से फेणठे ग जते । गोयमा ! जहन्तगुगसीने दुपटसिए जहन्तगुगसीयस्स दुपदेसियस्स वत्तयाए तस्से प
 देनठयाए तुस्से वेगाहणठयाए सिंयहीणे सिंयतुस्से मिंयत्तुस्से जदि हीग पवेचहीण , एह अस्सहिण प
 देसमस्सहिण तिरेण चउठाणग्रहिण चणुगधरमपज्जवेहि तठाणग्रहिण सोयफासपज्जवेहि तुस्से उंसिगणि
 सुत्तुस्सकतासपज्जवेहि तठाणग्रहिण । एव उहन्तमगुक्कासगुगसीतेति अजहन्तमगुक्कासगुगसीतेति एवचच नवर

गुणस्सीकाना हिमदद्विकाना पुच्छा गीतम । अनन्ता । अथकनार्थेन प्रदत्त । एयमप्यतः गीतम । अथन्यगुगसीने हिमदद्विको अथन्यगु
 गीतस्य हिमदाशकस्य द्रव्याचतया तस्य प्रदत्ताचतया तस्य उवगाहनाचतया स्वादीन स्वाप्तस्य स्वाहम्यधिक्य यदिहीम प्रदत्ताहीन यथा
 प्यधिक्य प्रदत्ताप्यपिच । स्वस्या चतुस्त्वापपतितः वरुणभररुपयवे पदस्यासपतित स्त्रीत स्पष्टपयवे सुस्य उपाखिगचक्ररुपययवे पद
 इगुवमातना पिच रस होम ए रियप स्याने ज्ञानापतित इवे । अहस्यगुवमात्राच भव दिवसमित्राच पञ्चा गायमा । अथन्यगुवमशीतना हिमद्व्याग
 नेनगवडाव न मोतम । यथाप । सक्कवुव भाव मोवमा । यमत्तापडाव तमाटे इम वको वे गीतम । अहस्यगुवमादधिपदसिपसुधे । अहस्य
 गवमोतनादियटगानुत्थना । अहस्यगुवमात्राच सहरव । अहस्य गुवमातनाद्वद्व्याचताने । अहस्यराएतय पणसहस्यराएतम । इन्द्रादिवरीयाए प्रदत्ता
 वरीयाए । वगाहणठयाग सिंयदाव सिंयतुस्स मिंयत्तुस्स । अहस्यगुवमात्राच एव अहस्यगुवमात्राच एव अहस्यगुवमात्राच एव अहस्यगुवमात्राच
 प्रहिण । अहोम पदगहोम इवे ज्ञानापतित इवे । अहस्यगुवमात्राच एव अहस्यगुवमात्राच एव अहस्यगुवमात्राच एव अहस्यगुवमात्राच
 प । यथापिचगुग सीनापतित इवे । सोतफासपज्जवेहि तमः गीतप्यमेने पदावमरोट । अहस्यगुवमात्राच एव अहस्यगुवमात्राच एव अहस्यगुवमात्राच
 नृप अयमेवहीने ज्ञानापतित इवे । एवं उहन्तगुगसीतेति एव । अहस्यगुवमात्राच एव अहस्यगुवमात्राच एव अहस्यगुवमात्राच एव अहस्यगुवमात्राच

एवंचेय नञर सठाने ठठाणयन्नि । जहयागुणसीयाण अस्खेज्जापदेसियाण पुच्छा , गोयमा । अणता से फणठेण जते ? गोयमा । जहयागुणसीते अस्खेज्जापदेसिए जहयागुणसीतस्य असंखेज्जापदेसियस्स दव्वठ याए तुझे पदेसठयाए चउठाणवन्नि उंगाहणठयाए चउठाणयन्नि ठिइए चउठाणयन्नि वयादिपज्जेवे हि ठठाणवन्नि सीतफासपज्जेविहे तुझे णिरुउसिणलुक्कफासपज्जेविहे ठठाणयन्नि । एअ वक्कोसगण

[illegible]

णयक्रिए ठिइए अउठाणयक्रिए वयागिअउठाफासपज्जअहि ठठाणयक्रिए । जहन्तोगाहणगाण जते । पोग्ग
 लाण पुच्छा, गोयमा । अणता से केणठेण २ गोयमा । जहन्तोगाहणए पोग्गले जहन्तोगाहणगस्स पोग्ग
 छस्स ठसुठयाए तुझे पदेसठयाए ठठाणयक्रिए उगाहणठयाए तुझे ठिइए अउठाणयक्रिए वयागिअउठरि
 वफासेहिय ठठाणयक्रिए । उक्कोसोगाहणएयि एवसअ नअर ठिइए तुल्ल । अजहन्तमणुक्कोसो गाहणगाण
 जते ! पोग्गलाण पुच्छा, गो० ! अणता । स केणठेण ? गो० ! अजहन्तमणुक्कोसोगाहणए पोग्गले अज

एव । अदअयतया पदस्यानपवितो उवगाहनार्थेयया अनु स्यामपतितः । अर्थायपरपद्यय्यैः पदस्यानपतितः । अथ
 ग्यावनाहनकाना मदत्त । पुद्गलाना पुच्छा नीतम् । अनन्ताः । अथ केनार्थम् ? नीतम् । अथगावगाहनमपुद्गलो अथगावगाहनकस्य
 पुद्गलस्य इवायतया तुल्य मदअर्थेयया पदस्यानपतितो उवगाहनार्थेयया तस्य स्थित्या अनु स्यामपतितः । अर्थादिप्रयमरपर्यै य पदस्यानप
 तितः । अथगावगाहनको व्येवज्जेव नअर स्थित्या तुल्य । अथगावनुरवर्पोवगाहनकाना मदत्त । पुद्गलाना पुच्छा नीतम् । अनन्ताः । य

अथअनमकापपदमिदस्य सववम् । अथअथ अनुत्तरमदमगोसुवम् । उक्कइयाए तजे पणसइयाए अउठाणयक्रिए । अर्थाय सरोया मदेयार्थ सरोया अस्स
 मपतित इवे । उक्काइअइयाए अनुत्तरमिद । अथगावगाव अतस्यामपतित इवे । ठिंए अउठाणयक्रिए । अर्थादि सरो अत स्यामपतित इवे । अर्थादि
 पुद्गलमपत्येवदिव उक्काइअ उठ । अर्थादि पाठअयमा पर्याये अस्यामपतित इवे । अथगानाउवाअ पुच्छा नीयमा । अथअ अथगाहनाना पदसुअ
 व अअर के नीतम् । अथताए अकअइअ भायमा । अनन्तापर्याय तेमाटे इम के नीतम् । अथगानाउवाए पमाअ अथगानाउवाअ पमअ । अथअ
 अथगानाउवाअ अथअ अथगानाउवाअ पदसुअ । उक्कइयाए तजे पणसइयाए अउठाणयक्रिए । अर्थाय सरोया मदेयार्थ स्यामपतित इवे । उक्काइअइयाए
 अजे ठिंए अउठाणयक्रिए । अथगानाउवायेसरोया अर्थादि अथगानाउवाये अउठाणयक्रिए । अर्थादि अथगानाउवाये अउठाणयक्रिए । अर्थादि अथगानाउवाये अउठाणयक्रिए

णयन्ति । उक्तीसपदेसियाण जते ! खघाण पच्छा, गोयमा ! अणता । से केगठेण ? गोयमा ! उक्ती
सपएसिए खधे उक्तीसपदेसियस्स खधस्स दसुठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले एगाहणठयाए अउठाणअणि
ए ठिइए अउठाणवन्ति ए अयादिअठफासपज्जायेहि उठाणवन्ति । अजहलमणुक्तीसपदेसियाण जते !
खघाण केयहया पज्जाया पयात्ता ? गोयमा ! अणता । स केगठेण ? गोयमा ! अजहलमणुक्तीसपदेसिए
खधे अजहलमणुक्तीसपदेसियस्स खधस्स दसुठयाए तुल्ले पदेसठयाए उठाणवन्ति ए उगाहणठयाए अउठा

पवणभरसीवारम नु सपपय्यवे पदस्सानपत्ति । उरअपअदधिकाभा मदल । रक्कथाभा पच्छा नीवम । अमत्ता । अय केनार्थेन ? गो
तम । उरअपअदधिक स्वत्था अस्सपअदेयिअस्स स्वत्थस्य द्रव्यार्थतया सुत्था । अदेयाअनार्थतया अत स्वानपत्तिः । स्वत्था
अत स्वानपत्तिः । अर्थाहसपय्यवे । पदस्यानपत्तिः । अजपय्यानुस्सपअदधिकाभा मदल । स्वत्थाभा अपिअ पय्येवा । मत्तमा ? नीतम ।
अमत्ता । अय केनार्थेन मदल । उरअपय्यत ? नीतम । अजपय्यानुस्सपअदधिक स्वत्था । अजपय्यानुस्सपअदधिकस्स स्वत्थस्य द्रव्यार्थतया

वत्त अजप सपय्यवत्त अहःअवत्ति । पवणभरस्य अपरिहा । अयमत्ता । पधीयेवरी अज्जानपत्ति अवे । अजापपणसोयाअ अने खवाअं पच्छा गायमा ।
अरअहदयोमा । अवेने केतसा पवीर ह योतम । अजवाप सेअहअ अने प गायमा । अमत्ता पय्याय तमाटे इम अज्जा वे नीतम । अजापपणसिए
अय अजापपणसिय अवरस । अरअह पद्दोअध अज्जट पद्दोअधन । दमअहाए तल्ले पणट्टवाए तल्ले । अमाअअहाए अउठाअवत्ति । अजापे अदेया
ये मरोपा । अजवाअनाये अतस्यानपत्ति अवे । ठिइए अउठाअवत्ति । अजितकरो अतस्यानपत्ति अवे । अयादि अउठाअपय्यवत्ति अउठाअवत्ति ।
अर्थाह अयमने पय्याये अज्जानपत्ति अवे । अजअमअज्जाअअदोयाअ अने खवाअं पुच्छा गाअमा । अजअम अज्जअहदयोमा । केतसा पवीर अज्जा
अ अतर ह योतम । अजवाप सेअहअ गायमा । अमत्तापय्याय ताम वे नीतम । अजअमअज्जाअअपणसोए अय । अजअम अज्जअहदयोमा अवे ।

नकालएयि शुजहन्तमणुक्कोसगुणकालएवि एवचेव नवर सठाणे ठठाणवन्निए । एव जहा कालत्रयपुज्ज
 थाण यससुया नणिया तहा ससाणयि वसुगधरसफासाण वससुया न्नाणियहा , जाव शुजहन्तमणुक्को
 सलुक्के सठाणे ठठाणवन्निए । सेस रुवि शुजीयपुज्जया , सेस शुजीयपुज्जया । इति पन्तत्रणाए त्रिसेस
 पय समस्त ॥ ५ ॥ द्वारसचठवीसाह् सतरयएगसमयकक्षीय उवहुणपरन्निविया उयशुठेयवश्याग

नपत्तिः । एवं यथाकालवर्षव्याघा वल्लव्यता प्रविता सयैव शेषाकामपि वल्लव्यरसरपस्यावा वल्लव्यता नदितव्या यावद्वयपम्यानुत्क
 पदवः स्वस्थाने पदस्थानपत्तिः । समासाः रूप्यवीवपर्यवाः समासा षष्ठीवपर्यवाः ॥ इति श्रीसद्दीपाध्याय रामचन्द्रगणिविनेयेन नाम्ना
 चन्द्रव विरचित श्रीप्रज्ञापनानुवादे पञ्चमं विद्यापदं समाप्तम् ॥ ५ ॥ यावद्वय व वतुर्विधातिः सास्तरमक्समये कृतवो । इति

उवाचचन्द्रए चठवाचहिए । पदगाहमाये पत आनपत्तिहवे । ठिए चठवाचहिए । क्तिवरो पत आनपत्ति हवे । काववपपत्तिवि तजे
 पदचवहि वचमवरमप्रापवववहि क्तिववहि । काववचन पदयि करोया वाकता । वचमवरस रयंन पदविचरो क्तिवनापत्ति हवे । सेतचठव
 र नावना । तमाटे इम हे भोतम । जइसगुपवाकनावं पमकावं । प्रथतापत्तिवा प एव वकासगुपवाकनावं । जवय गुपवाकना पुववने । यन
 तापर्वीव क्तिवा इम उरकठगुपवाकना पिय । यकइमवकासगुपवाकनांवि एवच ववर सठाणे क्तिवाचहिए । यजवठ वमुरकए गुपवाकना पिय
 इम होव ० वियव सस्याने क्तिवापत्ति हवे । एव क्तिवा आठवसुपज्जवाच वल्लव्यता मणिया । इम जवव कासवचना पदविने वल्लव्यता ववो । त
 वावेसाचवि रचगधरमप्रापावं वल्लव्यतामा । विस होव याकता वचमवरसस्याने वल्लव्यता ववो । जाव यजइमवमुवाचमुक्के सठाव क्तिवाचहि
 ० । कामिगे पकवव पमुरकट सूच सस्याने क्तिवापत्ति हवे । यतकरो यकोवपत्तिवा । पयवचाप भमवईए पचमपवं ववपत्ति । इहा ववपर्वीय मनि
 पमुयारे क्तिवा । इति क्तिवा यकोवना पर्वीव क्तिवा प्रज्ञावना भनवतो यवने पाचिमा पद पर्वीव विमय थनास ववा ॥ ५ ॥ वाउउव

